

Hindi



अनुवाद और व्याख्या मौलाना अजीजुल हक उमरी

85 भाषाओं में इस्लाम डिस्कवर
www.collectfreequran.org

Walk-In Islamic InfoCenter

1 Dundas Street west # 2535
Toronto, ON M5G 1Z3, Canada

☎ (647) 994-6807 & (647) 782-2303

✉ info@collectfreequran.org

f WalkInIslamicInfoCenter



सूरह फातिहा - 1

सूरह फातिहा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

1. अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।
2. सब प्रशंसायें अल्लाह के लिये हैं, जो सारे संसारों का पालनहार है।
3. जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।
4. जो प्रतिकार (बदले) के दिन का मालिक है।
5. (हे अल्लाह!) हम केवल तुझी को पूजते हैं, और केवल तुझी से सहायता माँगते हैं।
6. हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा।
7. उन का मार्ग जिन पर तू ने पुरस्कार किया। उन का नहीं जिन पर तेरा प्रकोप हुआ, और न ही उन का जो कुपथ (गुमराह) हो गये।

सूरह बकरह - 2

सूरह बकरह के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदीनी है, इस में 286 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ, लाम, मीम।
2. यह पुस्तक है, जिस में कोई संशय (संदेह) नहीं, उन को सीधी डगर दिखाने के लिये है, जो (अल्लाह से) डरते हैं।
3. जो ग़ैब (परोक्ष) पर इमामान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज़ की स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं।
4. तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक-क़र्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों) पर इमामान रखते हैं। तथा आख़िरत (परलोक) पर भी विश्वास रखते हैं।
5. वही अपने पालनहार की बताई सीधी डगर पर हैं, तथा वही सफल होंगे।
6. वास्तव में जो क़ाफ़िर (विश्वासहीन) हो गये (हे नबी!) उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह इमामान नहीं लायेंगे।
7. अल्लाह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है। और उन की आँखों पर पर्दे पड़े हैं। तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।

8. और कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तथा आखिरत (परलोक) पर ईमान ले आये। जब कि वह ईमान नहीं रखते।
9. वह अल्लाह को तथा जो ईमान लाये, उन्हें धोखा देते हैं। जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परन्तु वह इसे समझते नहीं।
10. उन के दिलों में रोग (दुविधा) है, जिसे अल्लाह ने और अधिक कर दिया। और उन के लिये झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है।
11. और जब उन से कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं।
12. सावधान! वही लोग उपद्रवी हैं, परन्तु उन्हें इस का बोध नहीं।
13. और जब उन से कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाये तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं कि क्या मूर्खों के समान हम भी विश्वास कर लें? सावधान! वही मूर्ख हैं, परन्तु वह जानते नहीं।
14. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं।
15. अल्लाह उन से परिहास कर रहा है। तथा उन्हें उन के कूकर्मों में बहकने का अवसर दे रहा है।
16. यह वे लोग हैं जिन्होंने सीधी डगर (सुपथ) के बदले गुमराही (कुपथ) खरीद ली। परन्तु उन के व्यापार में लाभ नहीं हुआ। और न उन्होंने ने सीधी डगर पाई।
17. उन की दशा उन के जैसी है, जिन्होंने अग्नि सुलगाई, और जब उन के आस-पास उजाला हो गया, तो अल्लाह ने उन का उजाला छीन लिया, तथा उन्हें ऐसे अंधेरों में छोड़ दिया जिन में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता।
18. वह गुंगे, बहरे, अंधे हैं। अतः अब वह लौटने वाले नहीं।
19. अथवा (उन की दशा) आकाश की वर्षा के समान है, जिस में अंधेरे और कड़क तथा विद्युत हो, वह कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं। और अल्लाह, काफिरों को अपने नियंत्रण में लिये हुये हैं।
20. विद्युत उन की आँखों को उचक लेने के समीप हो जाती है, जब उन के लिये चमकती है तो उस के उजाले में चलने लगते हैं, और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े हो जाते हैं। और यदि अल्लाह चाहे तो उन के कानों को बहरा, और उन की आँखों को अंधा कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
21. हे लोगो! केवल अपने उस पालनहार की इबादत (वंदना) करो, जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव है।
22. जिस ने धरती को तुम्हारे लिये

बिछौना तथा गगन को छत बनाया। और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से तुम्हारे लिये प्रत्येक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाये, अतः जानते हुये भी उस के साझी न बनाओ।

23. और यदि तुम्हें उस में कुछ सदिह हो जो (अथवा कुर्आन) हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो उस के समान कोई सूरह ले आओ। और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो, यदि तुम सच्चे हो।
24. और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि (नरक) से बचो, जिस का ईंधन मानव तथा पत्थर होंगे।
25. हे नबी! उन लोगों को शुभ सूचना दो, जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये कि उन के लिये ऐसे स्वर्ग है, जिन में नहरें बह रही होंगी। जब उन का कोई भी फल उन्हें दिया जायेगा तो कहेंगे: यह तो वही है जो इस से पहले हमें दिया गया। और उन्हें समरूप फल दिये जायेंगे। तथा उन के लिये उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी, और वह उन में सदावासी होंगे।
26. अल्लाह, मच्छर अथवा उस से तुच्छ चीज से उपमा देने से नहीं लज्जाता। जो ईमान लाये वह जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से उचित है। और जो काफिर (विश्वासहीन) हो गये वह कहते हैं कि अल्लाह ने इस से उपमा दे कर क्या निश्चय किया है? अल्लाह इस से बहुतों को गुमराह (कुपथ) करता है, और बहुतों को मार्गदर्शन देता है। तथा जो अवैज्ञाकारी हैं, उन्हीं को कुपथ

करता है।

27. जो अल्लाह से पक्का वचन करने के बाद उसे भंग कर देते हैं, तथा जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया, उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव करते हैं, यही लोग क्षति में पड़ेंगे।
28. तुम अल्लाह का इन्कार कैसे करते हो? जब कि पहले तुम निर्जीव थे, फिर उस ने तुम को जीवन दिया, फिर तुम को मौत देगा, फिर तुम्हें (परलोक में) जीवन प्रदान करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाये⁽¹⁾ जाओगे?
29. वही है, जिस ने धरती में जो भी है, सब को तुम्हारे लिये उत्पन्न किया। फिर आकाश की ओर आकृष्ट हुआ, तो बराबर सात आकाश बना दिये। और वह प्रत्येक चीज का जानकार है।
30. और (हे नबी! याद करो) जब आपके पालनहार ने फरिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक खलीफा⁽²⁾ बनाने जा रहा हूँ। वह बोले: क्या तू उस में उसे बनायेगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहायेगा? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं? (अल्लाह) ने कहा: जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते।
31. और उस ने आदम⁽³⁾ को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन को फरिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहा: मुझे इन के नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो।
32. सब ने कहा: तू पवित्र है। हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें सिखाया है। वास्तव में तू अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

33. (अल्लाह ने) कहा: हे आदम! इन्हें इन के नाम बताओ। और आदम ने जब उन के नाम बता दिये तो (अल्लाह ने) कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूँ, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ?
34. और जब हम ने फरिश्तों से कहा: आदम को सज्दा करो तो इब्नीस के सिवा सब ने सज्दा किया, उस ने इन्कार तथा अभिमान किया, और काफिरो में से हो गया।
35. और हम ने कहा: हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो, तथा इस में से जिस स्थान से चाहो मनमानी खाओ, और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे।
36. तो शैतान ने दोनों को उस से भटका दिया, और जिस (सुख) में थे उस से उन को निकाल दिया, और हम ने कहा: तुम सब उस से उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो, और तुम्हारे लिये धरती में रहना, तथा एक निश्चित अवधि⁽²⁾ तक उपभोग्य है।
37. फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उस ने उसे क्षमा कर दिया, वह बड़ा क्षमी दयावान् है।
38. हम ने कहा: इस से सब उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये तो जो मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उन के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।
39. तथा जो अस्वीकार करेंगे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे तो वही नारकी है, और वही उस में सदावासी होंगे।
40. हे बनी इसराईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, तथा मुझ से किया गया वचन पूरा करो, मैं तुम को अपना दिया वचन पूरा करूँगा, तथा मुझी से डरो।
41. तथा उस (कुर्आन) पर ईमान लाओ जो मैं ने उतारा है, वह उस का प्रमाणकारी है, जो तुम्हारे पास है, और तुम सब से पहले इस के निवर्ती न बन जाओ, तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो, और केवल मुझी से डरो।
42. तथा सत्य को असत्य में न मिलावो, और न सत्य को जानत हुये छुपाओ।
43. तथा नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको (रुकू करो)।
44. क्या तुम, लोगों को सदाचार का आदेश देते हो, और अपने आप को भूल जाते हो, जब कि: तुम पुस्तक (तौरात) का अध्ययन करते हो, क्या तुम समझ नहीं रखते?
45. तथा धैर्य और नमाज़ का सहारा लो, निश्चय नमाज़ भारी है, परन्तु विनीतों पर (भारी नहीं)।
46. जो समझते हैं कि: उन्हें अपने पालनहार से मिलना है, और उन्हें फिर उसी की ओर (अपने कर्मों का फल भोगने के लिये) जाना है।

47. हे बनी इसराईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, और यह कि: तुम्हें संसार वासियों पर प्रधानता दी थी।
48. तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस की कोई अनुशंसा (सिफारिश) मानी जायेगी, और न उस से कोई अर्धदण्ड लिया जायेगा, और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी।
49. तथा (वह समय याद करो) जब हमने तुम्हें फिरऔनियों^[1] से मुक्ति दिलाई वह तुम्हें कड़ी यातना दे रहे थे: वह तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, तथा तुम्हारी नारियों को जीवित रहने देते थे, इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से कड़ी परीक्षा थी।
50. तथा (याद करो) जब हम ने तुम्हारे लिये सागर को फाड़ दिया, फिर तुम्हें बचा लिया, और तुम्हारे देखते देखते फिरऔनियों को डुबो दिया।
51. तथा (याद करो) जब हम न मूसा को (तौरात प्रदान करने के लिये) चालीस रात्री का वचन दिया, फिर उन के पीछे तुम ने बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और तुम अत्याचारी थे।
52. फिर हम ने इस के पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।
53. तथा (याद करो) जब हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) तथा फुर्कान प्रदान किया, ताकि तुम सीधी डगर पा सको।
54. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: तुम ने बछड़े को पूज्य

बना कर अपने ऊपर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो, वह यह कि आपस में एक दूसरे^[2] को बध करो, इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है, फिर उस ने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील, दयावान् है।

55. तथा (याद करो) जब तुम न मूसा से कहा: हम तुम्हारा विघ्नास नहीं करेंगे, जब तक हम अल्लाह को आँखों से देख नहीं लेंगे, फिर तुम्हारे देखते देखते तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिस से सब निर्जीव होकर गिर गये)।
56. फिर (निर्जीव होने के पश्चात्) हम ने तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम हमारा उपकार मानो।
57. और हम ने तुम पर बादलों की छाँव की, तथा तुम पर "मन्न" और "सलवा" उतारा, तो उन स्वच्छ चीजों में से जो हम ने तुम को प्रदान की है खाओ और उन्हीं ने हम पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर ही अत्याचार कर रहे थे।
58. और (याद करो) जब हम ने कहा कि इस बस्ती में प्रवेश करो, फिर उस में से जहाँ से चाहो मनमानी खाओ। और उस के द्वार में सजदा करते (सिर झुकाये) हुये प्रवेश करो, और क्षमा-क्षमा कहते जाओ, हम तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे, तथा सुकर्मियों को अधिक प्रदान करेंगे।
59. फिर इन अत्याचारियों ने जो बात उन से कही गई थी, उसे दूसरी

बात से बदल दिया। तो हम ने इन अत्याचारियों पर आकाश से उन की अवैज्ञा के कारण प्रकोप उतार दिया।

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिये जल की प्रार्थना की तो हम ने कहा: अपनी लाठी को पत्थर पर मारो। तो उस से बारह सोते फूट पड़े। और प्रत्येक परिवार ने अपने पीने के स्थान को पहचान लिया। अल्लाह का दिया खाओ और पीओ, और धरती में उपद्रव करते न फिरो।
61. तथा (याद करो) जब तुम ने कहा: हे मूसा! हम एक प्रकार का खाना सहन नहीं करेंगे, तुम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हमारे लिये धरती की उपज, साग, ककड़ी, लहसुन, प्याज, दाल आदि निकाले, (मूसा ने) कहा: क्या तुम उत्तम के बदले तुच्छ माँगते हो? तो किसी नगर में उतर पड़ो, जो तुम ने माँगा है वहाँ वह मिलेगा। और उन पर अपमान तथा दरिद्रता थोप दी गई, और वह अल्लाह के प्रकोप के साथ फिरो। यह इस लिये कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़र कर रहे थे, और नवियों की अकारण हत्या कर रहे थे, यह इस लिये कि उन्होंने ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया।
62. वस्तुतः जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, और सत्कर्म करेगा, उन का प्रतिफल उन के पालनहार के पास है। और उन्हें कोई डर नहीं होगा, और न ही वे उदासीन होंगे।

63. और (याद करो) जब हम ने तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर करके तुम से बचन लिया, कि जो हम ने तुम को दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़ लो, और उस में (जो आदेश-निर्देश है) उन्हें याद रखो, ताकि तुम (यातना से) बच सको।
64. फिर उस के बाद तुम मुकर गये, तो यदि तुम पर अल्लाह की अनुग्रह और दया न होती, तो तुम क्षतिग्रस्तों में हो जाते।
65. और तुम उन्हें जानते ही हो जिन्होंने शनिवार के बारे में (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया, तो हम ने कहा कि तुम तिरिस्कृत बंदर हो जाओ।
66. फिर हम ने उसे, उस समय के तथा बाद के लोगों के लिये चेतावनी, और (अल्लाह से) डरने वालों के लिये शिक्षा बना दिया।
67. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अल्लाह तुम्हें एक गाय बध करने का आदेश देता है। उन्होंने ने कहा: क्या तुम हम से उपहास कर रहे हो? (मूसा ने) कहा: मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में हो जाऊँ।
68. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो? (मूसा ने) कहा: वह (अर्थात: अल्लाह) कहता है कि वह न बूढ़ी हो, और न बछिया हो, इस के बीच आयु की हो। अतः जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है उसे पूरा करो।
69. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें उस

का रंग बता दे। (मूसा ने) कहा: वह कहता है कि पीले गहरे रंग की गाय हो। जो देखने वालों को प्रसन्न कर दे।

70. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बताये कि वह किस प्रकार की हो? वास्तव में हम गाय के बारे में दुविधा में पड़ गये हैं। और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम (उस गाय का) पता लगा लेंगे।
71. मूसा बोले: वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो सेवा कार्य न करती हो, न खेत (भूमि) जोतती हो, और न खेत सींचती हो, वह स्वस्थ हो, और उस में कोई धब्बा न हो। वह बोले: अब तुम ने उचित बात बताई है। फिर उन्होंने उसे बंध कर दिया। जब कि वह समीप थे कि इस काम को न करें।
72. और (याद करो) जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, तथा एक दूसरे पर (दोष) थोपने लगे, और अल्लाह को उसे व्यक्त करना था जिसे तुम छुपा रहे थे।
73. अतः हम ने कहा कि उस (निहत व्यक्ति के शव) को उस (गाय) के किसी भाग से मारो, इसी प्रकार अल्लाह मुर्दा को जीवित करेगा। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो।
74. फिर यह (निशानियाँ देखने) के बाद तुम्हारे दिल पत्थरों के समान या उन से भी अधिक कठोर हो गये। क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे होते हैं, जिन से नहरें फूट पड़ती हैं। और कुछ फट जाते हैं और उन से पानी

निकल आता है। और कुछ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

75. क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे, जब कि उन में एक गिरोह ऐसा था जो अल्लाह की वाणी (तौरात) को सुनता था, और समझ जाने के बाद जान बूझ कर उस में परिवर्तन कर देता था?
76. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी ईमान लाये, और जब एकान्त में आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं कि तुम उन्हें वह बातें क्यों बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली⁽²⁾ है? इस लिये कि प्रलय के दिन तुम्हारे पालनहार के पास इसे तुम्हारे विरुद्ध प्रमाण बनायें, क्या तुम समझते नहीं हो?
77. क्या वह नहीं जानते कि वह जो कुछ छुपाते तथा व्यक्त करते हैं, उस सब को अल्लाह जानता है?
78. तथा उन में कुछ अनपढ़ हैं, वह पुस्तक (तौरात) का ज्ञान नहीं रखते, परन्तु निराधार कामनायें करते, तथा केवल अनुमान लगाते हैं।
79. तो विनाश है उन के लिये जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है, ताकि उस के द्वारा तनिक मूल्य खरीदें। तो विनाश है उन के अपने हाथों के लेख के कारण! और विनाश है उन की कमाई के कारण!
80. तथा उन्होंने ने कहा कि हमें नरक की अग्नि गिनती के कुछ दिनों के सिवा स्पर्श नहीं करेगी। (हे नबी!) उन से

कहो कि क्या तुम ने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है, कि अल्लाह अपना वचन भंग नहीं करेगा? बल्कि तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बातें करते हो, जिन का तुम्हें ज्ञान नहीं।

81. क्यों⁽¹⁾ नहीं, जो भी बुराई कमायेगा, तथा उस का पाप उसे घेर लेगा, तो वही नारकीय है और वही उस में सदावासी होंगे।
82. तथा जो ईमान लायें और सत्कर्म करें, वही स्वर्गीय है। और वह उस में सदावासी होंगे।
83. और (याद करो) जब हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (बंदना) नहीं करोगे, तथा माता-पिता के साथ उपकार करोगे, और समीपवर्ती संबंधियों, अनाथों, दीन-दुखियों के साथ, और लोगों से भली बात बोलोगे, तथा नमाज़ की स्थापना करोगे, और ज़कात दोगे, फिर तुम में से थोड़े के सिवा सब ने मुंह फेर लिया, और तुम (अभी भी) मुंह फेरे हुए हो।
84. तथा (याद करो) जब हमने तुम से दृढ़ वचन लिया कि आपस में रक्तपात नहीं करोगे, और न अपनों को अपने घरों से निकालोगे। फिर तुम ने स्वीकार किया, और तुम उस के साक्षी हो।
85. फिर तुम वही हो, जो अपनों की हत्या कर रहे हो, तथा अपनों में से एक गिरोह को उन के घरों से निकाल रहे हो, और पाप तथा अत्याचार के

साथ उन के विरुद्ध सहायता करते हो, और यदि वे बंदी होकर तुम्हारे पास आयें तो उन का अर्थदण्ड चुकाते हो, जब कि उन को निकालना ही तुम पर हराम (अवैध) था, तो क्या तुम पुस्तक के कुछ भाग पर ईमान रखते हो, और कुछ का इन्कार करते हो? फिर तुम में से जो ऐसा करते हों, तो उन का दण्ड क्या है? इस के सिवा कि सांसारिक जीवन में अपमान तथा प्रलय के दिन अति कड़ी यातना की ओर फेरे जायें, और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

86. उन्होंने ने ही आखिरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन खरीद लिया, अतः उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन की सहायता की जायेगी।
87. तथा हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की, और उस के पश्चात् निरन्तर रसूल भेजे, और हम ने मर्यम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दी, और रूहुल कुदुस द्वारा उसे समर्थन दिया, तो क्या जब भी कोई रसूल तुम्हारी अपनी मनमानी के विरुद्ध कोई बात तुम्हारे पास लेकर आया तो तुम अकड़ गये, अतः कुछ नबियों को झुठला दिया, और कुछ की हत्या करने लगे?
88. तथा उन्होंने ने कहा कि हमारे दिल तो बंद हैं। बल्कि उन के कुफ़्र (इन्कार) के कारण अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। इसी लिये उन में से बहुत थोड़े ही ईमान लाते हैं।

89. और जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक पुस्तक (कुर्आन) आ गई, जो उन के साथ की पुस्तक का प्रमाणकारी है, जब कि: इस से पूर्व वह स्वयं काफ़िरों पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे, तो जब उन के पास वह चीज़ आ गई जिसे वह पहचान भी गये, फिर भी उस का इन्कार कर दिया, तो काफ़िरों पर अल्लाह की धिक्कार है।
90. अल्लाह की उतारी हुई (पुस्तक) का इन्कार कर के बुरे बदले पर इन्हीं ने अपने प्राणों को बेच दिया, इस द्वेष के कारण कि अल्लाह ने अपना प्रदान (प्रकाशना) अपने जिस भक्त पर चाहा उतार दिया। अतः वह प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी बन गये, और ऐसे काफ़िरों के लिये अपमानकारी यातना है।
91. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा⁽³⁾ है, उस पर ईमान लाओ तो कहते हैं हम तो उसी पर ईमान रखते हैं जो हम पर उतरा है, और इस के सिवा जो कुछ है उस का इन्कार करते हैं। जब कि वह सत्य है। और उस का प्रमाणकारी है जो उन के पास है। कहो कि फिर इस से पूर्व अल्लाह के नबियों की हत्या क्यों करते थे, यदि तुम ईमान वाले थे तो?
92. तथा मुसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ ले कर आये। फिर तुम ने अत्याचार करते हुए बछड़े को पूज्य बना लिया।
93. और जब हमने तुमसे अहद लिया और (कोहे) तूर को तुम्हारे सर पर लटकाया और जो हमने दी है मजबूती से लिए रहो और सुनो तो कहने लगे सुना तो हम इसको मानते नहीं और उनकी बेईमानी की वजह से बछड़े की उलफत घोल के उनके दिलो मे पिला दी गई उन लोगों से कह दो कि अगर तुम ईमानदार थे तो तुमको तुम्हारा ईमान क्या ही बुरा हुक्म करता था
94. इन लोगों से कह दो कि अगर खुदा के नजदीक आखेरत का घर खास तुम्हारे वास्ते है और लोगो के वास्ते नहीं है पस अगर तुम सच्चे हो तो मौत की आरजू करो
95. लेकिन वह उन आमाले बद की वजह से जिनको उनके हाथो ने पहले से आगे भेजा है हरगिज मौत की आरजू न करेगे और खुदा जालिमों से खूब वाकिफ है
96. और तुम उन ही को जिन्दगी का सबसे ज्यादा हरीस पाओगे और मुशरिको मे से हर एक शख्स चाहता है कि काश उसको हजार बरस की उम्र दी जाती हालाँकि अगर इतनी तूलानी उम्र भी दी जाए तो वह अल्लाह के अजाब से छुटकारा देने वाली नही, और जो कुछ वह लोग करते हैं खुदा उसे देख रहा है

97. (हे नबी!) कह दो कि जो व्यक्ति जिब्रील का शत्रु है (तो रहे)। उस ने तो अल्लाह की अनुमति से इस संदेश (कुर्आन) को आप के दिल पर उतारा है, जो इस से पूर्व की सभी पुस्तकों का प्रमाणकारी तथा ईमान वालों के लिये मार्गदर्शन एवं (सफलता) का शुभ समाचार है।
98. जो अल्लाह तथा उस के फरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील तथा मीकाईल का शत्रु हो, तो अल्लाह काफिरों का शत्रु है।
99. और (हे नबी!) हम ने आप पर खुली आयतें उतारी हैं, और इस का इन्कार केवल वही लोग करेंगे जो कुकर्मि हैं।
100. क्या ऐसा नहीं हुआ है कि जब कभी उन्होंने ने कोई वचन दिया तो उन के एक गिरोह ने उसे भंग कर दिया? बल्कि इन में बहुतेरे ऐसे हैं जो ईमान नहीं रखते।
101. तथा जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक रसूल उस पुस्तक का समर्थन करते हुये जो उन के पास है, आ गया तो उन के एक समुदाय ने जिन को पुस्तक दी गई अल्लाह की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया जैसे वह कुछ जानते ही न हों।
102. तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे उस का अनुसरण करने लगे। जब कि सुलैमान ने कभी कुफ़ (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ़ तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे, तथा उन बातों का (अनुसरण करने लगे) जो बाबिल (नगर) के

- दो फरिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गईं, और वह दोनों किसी को (जादू) नहीं सिखाते जब तक यह न कह देते कि: हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः तू कुफ़ में न पड़ा। फिर भी वह उन दोनों से वह चीज़ सीखते जिस के द्वारा वह पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें और वह अल्लाह की अनुमति बिना इस के द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे जो उन के लिये हानिकारक हों, और लाभकारी न हों। और वह भली भाँति जानते थे कि जो इस का खरीदार बना परलोक में उस का कोई भाग नहीं, तथा कितना बुरा उपभोग्य है जिस के बदले वह अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं, यदि वह जानते होते।
103. और यदि वह ईमान लाते, और अल्लाह से डरते, तो अल्लाह के पास इस का जो प्रतिकार (बदला) मिलता, वह उन के लिये उत्तम होता, यदि वह जानते होते।
104. हे ईमान वालो! तुम "राइना" न कहो, "उन्जुरना" कहो, और ध्यान से बात सुनो, तथा काफिरों के लिये दुखदायी यातना है।
105. अहले किताब में से जो काफिर हो गये, तथा जो मिश्रणवादी हो गये, यह नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर कोई भलाई उतारी जाये, और अल्लाह जिस पर चाहे अपनी विशेष दया करता है, और अल्लाह बड़ा

दानशील है।

106. हम अपनी कोई आयत निरस्त कर देते अथवा भुला देते हैं तो उस से उत्तम अथवा उस के समान लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे⁽¹⁾ कर सकता है?
107. क्या तुम यह नहीं जानते कि: अकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह ही के लिये है, और उस के सिवा तुम्हारा कोई रक्षक और सहायक नहीं है?
108. क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से उसी प्रकार प्रश्न करो, जैसे मुसा से प्रश्न किये जाते रहे? और जो व्यक्ति ईमान की नीति को कुफ़्र से बदल लेगा तो वह सीधी डगर से विचलित हो गया।
109. अहले किताब में से बहुत से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात् अपने द्वेष के कारण तुम्हें कुफ़्र की ओर फेर दें। जब कि सत्य उन के लिये उजागर हो गया, फिर भी तुम क्षमा से काम लो और जाने दो। यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
110. तथा तुम नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो। और जो भी भलाई अपने लिये किये रहोगे, उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।
111. तथा उन्होंने ने कहा कि कोई स्वर्ग में कदापि नहीं जायेगा, जब तक यहूदी अथवा नसारा (ईसाई) न हों। यह

उन की कामनायें हैं। उन से कहो कि यदि तुम सत्यवादी हो तो कोई प्रमाण प्रस्तुत करो।

112. क्यों नहीं? जो भी स्वयं को अल्लाह की आज्ञा पालन के समर्पित कर देगा, तथा सदाचारी होगा तो उस के पालनहार के पास उस का प्रतिफल है। और उन पर कोई भय नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।
113. तथा यहूदियों ने कहा कि ईसाईयों के पास कुछ नहीं। और ईसाईयों ने कहा कि यहूदियों के पास कुछ नहीं है। जब कि वह धर्म पुस्तक पढ़ते हैं। इसी जैसी बात उन्होंने ने भी कही, जिन के पास धर्मपुस्तक का कोई ज्ञान नहीं, यह जिस विषय में विभेद कर रहे हैं। उस का निर्णय अल्लाह प्रलय के दिन उन के बीच कर देगा।
114. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह की मस्जिदों में उस के नाम का वर्णन करने से रोके। और उन्हें उजाड़ने का प्रयत्न करे, उन्हीं के लिये योग्य है कि उस में डरते हुये प्रवेश करें, उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये आखिरत (परलोक) में घोर यातना है।
115. तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के है, तुम जिधर भी मुख करो, उधर ही अल्लाह का मुख है। और अल्लाह विशाल अति ज्ञानी है।
116. तथा उन्होंने ने कहा कि अल्लाह ने कोई संतान बना ली। वह इस से पवित्र है। आकाशों तथा धरती में जो

- भी है, वह उसी का है, और सब उसी के आज्ञाकारी हैं।
117. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये बस यह आदेश देता है कि "हो जा" और वह हो जाती है।
118. तथा उन्होंने ने कहा जो ज्ञान^[1] नहीं रखते कि अल्लाह हम से बात क्यों नहीं करता, या हमारे पास कोई आयत क्यों नहीं आती। इसी प्रकार की बात इन से पूर्व के लोगों ने कही थी। इन के दिल एक समान हो गये। हम ने उन के लिये निशानियाँ उजागर कर दी हैं जो विश्वास रखते हैं।
119. (हे नबी!) हम ने आप को सत्य के साथ शुभ सूचना देने तथा सावधान^[2] करने वाला बना कर भेजा है। और आप से नारकियों के विषय में प्रश्न नहीं किया जायेगा।
120. हे नबी! आप से यहूदी तथा ईसाई सहमत (प्रसन्न) नहीं होंगे, जब तक आप उन की रीति पर न चलें। कह दो कि सीधी डगर वही है जो अल्लाह ने बताई है। और यदि आप ने उन की आकांक्षाओं का अनुसरण किया, इस के पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह (की पकड़) से आप का कोई रक्षक और सहायक नहीं होगा।
121. और हम ने जिन को पुस्तक प्रदान की है, और उसे जैसे पढ़ते हैं, जैसे पढ़ना चाहिये, वही उस पर ईमान रखते हैं। और जो उसे नकारते हैं वही क्षतिग्रस्तों में से हैं।
122. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो जो तुम पर किया। और यह कि तुम्हें (अपने युग के) संसार-वासियों पर प्रधानता दी थी।
123. तथा उस दिन से डरो जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस से कोई अर्धदण्ड स्वीकार किया जायेगा, और न उसे कोई अनुशंसा (सिफारिश) लाभ पहुँचायेगी, और न उन की कोई सहायता की जायेगी।
124. और (याद करो) जब इब्राहीम की उस के पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली। और वह उस में पूरा उतरा, तो उस ने कहा कि मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ (इब्राहीम ने) कहा: तथा मेरी सन्तान से भी। (अल्लाह ने कहा: मेरा वचन उन के लिये नहीं जो अत्याचारी^[1] हैं।
125. और (याद करो) जब हम ने इस घर (अर्थात: काबा) को लोगों के लिये बार बार आने का केन्द्र तथा शान्ति स्थल निर्धारित कर दिया। तथा यह आदेश दे दिया कि "मकामे इब्राहीम" को नमाज का स्थान^[1] बना लो। तथा इब्राहीम और इसमाईल को आदेश दिया कि मेरे घर को तबाफ (परिक्रमा) तथा एतिकाफ^[2] करने वालों, और सजदा तथा रुकू करने वालों के लिये पवित्र रखो।
126. और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस छेत्र को शान्ति का नगर बना दे। तथा इस के वासियों

को जो उन में से अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखे, विभिन्न प्रकार की उपज (फलों) से आजीविका प्रदान करा (अल्लाह ने) कहा: तथा जो काफिर है उन्हें भी मैं थोड़ा लाभ दूंगा, फिर उसे नरक की यातना की ओर बाध्य कर दूंगा। और वह बहुत बुरा स्थान है।

127. और (याद करो) जब इब्राहीम और ईस्माईल इस घर की नींव ऊँची कर रहे थे। तथा प्रार्थना कर रहे थे: हे हमारे पालनहार! हम से यह सेवा स्वीकार कर ले। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।
128. हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना। तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बना दे जो तेरा आज्ञाकारी हो। और हमें हमारे (हज्ज) की विधियाँ बता दे। तथा हमें क्षमा करा। वास्तव में तू अतिक्षमी दयावान् है।
129. हे हमारे पालनहार! उन के बीच इन्हीं में से एक रसूल भेज, जो उन्हें तेरी आयतें सुनाये, और उन्हें पुस्तक (क़ुर्आन) तथा हिक़्मत (सुन्नत) की शिक्षा दे। और उन्हें शुद्ध तथा आज्ञाकारी बना दे। वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
130. तथा कौन होगा, जो इब्राहीम के धर्म से विमुख हो जाये परन्तु वही जो स्वयं को मूर्ख बना ले। जब कि हम ने उसे संसार में चुन लिया, तथा अख़िरत (परलोक) में उस की गणना सदाचारियों में होगी।
131. तथा (याद करो) जब उस के

पालनहार ने उस से कहा: मेरा आज्ञाकारी हो जा। तो उस ने तुरन्त कहा: मैं विघ्न के पालनहार का आज्ञाकारी हो गया।

132. तथा इब्राहीम ने अपने पुत्रों को तथा याक़ूब ने इसी बात पर बल दिया कि: हे मेरे पुत्रो! अल्लाह ने तुम्हारे लिये यह धर्म (इस्लाम) निर्वाचित कर दिया है। अतः मरते समय तक तुम इसी पर स्थिर रहना।
133. क्या तुम याक़ूब के मरने के समय उपस्थित थे, जब याक़ूब ने अपने पुत्रों से कहा: मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किस की इबादत (वंदना) करोगे? उन्होंने ने कहा: हम तेरे तथा तेरे पिता इब्राहीम और इस्माईल तथा इसहाक के एक पूज्य की इबादत (वंदना) करेंगे, और उसी के आज्ञाकारी रहेंगे।
134. यह एक समुदाय था जो जा चुका। उन्होंने ने जो कर्म किये वे उन के लिये हैं। तथा जो तुम ने किये वह तुम्हारे लिये। और उन के किये का प्रश्न तुम से नहीं किया जायेगा।
135. और वह कहते हैं कि यहूदी हो जाओ अथवा ईसाई हो जाओ, तुम्हें मार्गदर्शन मिल जायेगा। आप कह दें: नहीं। हम तो एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर हैं, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।
136. (हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये, तथा उस पर जो (क़ुर्आन) हमारी ओर उतारा गया। और उस पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याक़ूब, तथा उन की संतान की

ओर उतारा गया। और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया, तथा जो दूसरे नबियों को उन के पालनहार की ओर से दिया गया। हम इन में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

137. तो यदि वह तुम्हारे ही समान ईमान ले आये, तो वह मार्गदर्शन पा लेंगे। और यदि विमुख हों तो वह विरोध में लीन हैं। उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये अल्लाह बस है। और वह सब सुनने वाला और जानने वाला है।
138. तुम सब अल्लाह के रंग (स्वभाविक धर्म) को ग्रहण कर लो। और अल्लाह के रंग से अच्छा किस का रंग होगा? हम तो उसी की इबादत (वंदना) करते हैं।
139. (हे नबी!) कह दो कि: क्या तुम हम से अल्लाह के (एकत्व) होने के विषय में झगड़ते हो? जब कि वही

हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है। फिर हमारे लिये हमारा कर्म है, और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। और हम तो बस उसी की इबादत (वंदना) करने वाले हैं।

140. हे अहले किताब! क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब तथा उन की संतान यहूदी या ईसाई थी? उन से कह दो कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह? और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा। जिस के पास अल्लाह का साक्ष्य हो, और उसे लुपा दे? और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से अचेत तो नहीं है।
141. यह एक समुदाय था, जो जा चुका। उन के लिये उन का कर्म है, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। तुम से उन के कर्मों के बारे में प्रश्न नहीं किया जायेगा।



142. शीघ्र ही मुख लोग कहेंगे कि उन को जिस क़िबले पर वह थे, उस से किस बात ने फेर दिया? (हे नबी!) उन्हें बता दो कि पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। वह जिसे चाहे सीधी राह पर लगा देता है।
143. और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत (समुदाय) बना दिया, ताकि तुम सब पर साक्षी बनो, और रसूल तुम पर साक्षी हों, और हम ने वह क़िबला जिस पर तुम थे, इसी लिये बनाया था ताकि यह बात खोल दें कि कौन (अपने धर्म से) फिर जाता है। और यह बात बड़ी भारी थी, परन्तु उन के लिये नहीं जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान (अर्थात् बैतुलमक़दिस की दिशा में नमाज़ पढ़ने) को व्यर्थ कर दे, वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अत्यन्त करुणामय तथा दयावान् है।
144. (हे नबी!) हम आप के मुख को बार बार आकाश की ओर फिरते देख रहे हैं। तो हम अवश्य आप को उस क़िबले (काबा) की ओर फेर देंगे जिस से आप प्रसन्न हो जायें। तो (अब) अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेर लो, तथा (हे मुसलमानो!) तुम भी जहाँ रहो उसी की ओर मुख किया करो। और निश्चय अहले किताब जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से सत्य है, और अल्लाह उन के कर्मा से असूचित नहीं है।
145. और यदि आप अहले किताब के पास
- प्रत्येक प्रकार की निशानी ला दें तब भी वह आप के क़िबले का अनुसरण नहीं करेंगे। और न आप उन के क़िबले का अनुसरण करेंगे, और न उन में से कोई दूसरे के क़िबले का अनुसरण करेगा। और यदि ज्ञान आने के पश्चात् आप ने उन की अकांक्षाओं का अनुसरण किया तो आप अत्याचारियों में से हो जायेंगे।
146. और जिन्हें हम ने पुस्तक दी है वह आप को ऐसे ही पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं। और उन का एक समुदाय जानते हुये भी सत्य को छुपा रहा है।
147. सत्य वही है जो आप के पालनहार की ओर से उतारा गया। अतः आप कदापि सन्देह करने वालों में न हों।
148. प्रत्येक के लिये एक दिशा है, जिस की ओर वह मुख कर रहा है। अतः तुम भलाईयों में अग्रसर बनो। तुम जहाँ भी रहोगे अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
149. और आप जहाँ भी निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें। निश्चय यह आप के पालनहार की ओर से सत्य (आदेश) है, और अल्लाह तुम्हारे कर्मा से असूचित नहीं है।
150. और आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें, और (हे मुसलमानो!) तुम जहाँ भी रहो अपने मुखों को उसी की ओर फेरो, ताकि उन को तुम्हारे विरुद्ध किसी विवाद का अवसर न मिले। मगर

- उन लोगों के अतिरिक्त जो अत्याचार करें अतः उन से न डरो। मुझी से डरो। और ताकि मैं तुम पर अपना पुरस्कार (धर्मविधान) पूरा कर दूँ और ताकि तुम सीधी डगर पा जाओ।
151. जिस प्रकार हम ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता तथा तुम को शुद्ध आज्ञाकारी बनाता है, और तुम्हें पुस्तक (कूर्आन) तथा हिक्मत (सुख्त) सिखाता है, तथा तुम्हें वह बातें सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे।
152. अतः मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूँगा।⁽²⁾ और मेरे आभारी रहो। और मेरे कृतघ्न न बनो।
153. हे ईमान वालो! धैर्य तथा नमाज़ का सहारा लो, निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।
154. तथा जो अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह जीवित है, परन्तु तुम (उन के जीवन की दशा) नहीं समझते।
155. तथा हम अवश्य कुछ भय, भूक तथा धनों और प्राणों तथा खाद्य पदार्थों की कमी से तुम्हारी परीक्षा करेंगे, और धैर्यवानों को शुभ समाचार सुना दो।
156. जिन पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं, और हमें उसी के पास फिर कर जाना है।
157. इन्हीं पर उन के पालनहार की कृपायें तथा दया हैं, और यही सीधी राह पाने वाले हैं।
158. बेशक सफ़ा तथा मरवा पहाड़ी अल्लाह (के धर्म) की निशानियों में से हैं। अतः जो अल्लाह के घर का हज्ज या उमरह करे तो उस पर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेरा लगाये। और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो निःसन्देह अल्लाह उस का गुणग्राही अति ज्ञानी है।
159. तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अन्तिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को इस के पश्चात् किः हम ने पुस्तक⁽¹⁾ में उसे लोगों के लिये उजागर कर दिया है, छुपाते हैं उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है, तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं।
160. और जिन लोगों ने तौबा (क्षमा याचना) कर ली, और सुधार कर लिया, और उजागर कर दिया, तो मैं उन की तौबा स्वीकार कर लूँगा, तथा मैं अत्यन्त क्षमाशील दयावान् हूँ।
161. वास्तव में जो काफ़िर (अविश्वासी) हो गये, और इसी दशा में मरे तो वही हैं जिन पर अल्लाह तथा फ़रिश्तों और सब लोगों की धिक्कार है।
162. वह इस (धिक्कार) में सदावासी होंगे, उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन को अवकाश दिया जायेगा।
163. और तुम्हारा पूज्य एक ही⁽³⁾ पूज्य

है, उस अत्यन्त दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं।

164. बैशक आकाशों तथा धरती की रचना में, रात तथा दिन के एक दूसरे के पीछे निरन्तर आने जाने में, उन नावों में जो मानव के लाभ के साधनों को लिये सागरों में चलती फिरती हैं, और वर्षा के उस पानी में जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता है, फिर धरती को उस के द्वारा उस के मरण (सूखने) के पश्चात् जीवित करता है, और उस में प्रत्येक जीवों को फैलाता है, तथा वायुओं को फेरने में, और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच उस की आज्ञा के अधीन रहते हैं, (इन सब चीजों में) अगणित निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ बूझ रखते हैं।
165. कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उस का साझी बनाते हैं, और उन से, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं, तथा जो ईमान लाये वह अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं, और क्या ही अच्छा होता यदि यह अत्याचारी यातना देखने के समय जो बात जानेंगे इसी समय जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को हैं। और अल्लाह का दण्ड भी बहुत कड़ा है (तो अल्लाह के सिवा दूसरे की पूजा अराधना नहीं करते।)
166. जब यह दशा होगी कि जिस का अनुसरण किया गया वह

अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे, और उन के आपस के सभी सम्बन्ध टूट जायेंगे।

167. तथा जो अनुयायी होंगे, वह यह कामना करेंगे कि एक बार और हम ससार में जाते, तो इन से ऐसे ही विरक्त हो जाते जैसे यह हम से विरक्त हो गये। ऐसे ही अल्लाह उन के कर्मों को उन के लिये संताप बना कर दिखाएगा, और वह अग्नि से निकल नहीं सकेंगे।
168. हे लोगो! धरती में जो अनुसरण किया गया हलाल (वैध) स्वच्छ चीजें हैं उन्हें खाओ। और शैतान की बताई राहों पर न चलो, वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
169. वह तुम को बुराई तथा निर्लज्जा का आदेश देता है, और यह कि अल्लाह पर उस चीज का आरोप धरो, जिसे तुम नहीं जानते हो।
170. और जब उन से कहा जाता है कि जो (कुर्आन) अल्लाह ने उतारा है, उस पर चलो, तो कहते हैं कि हम तो उसी रीति पर चलेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है क्या यदि उन के पूर्वज कुछ न समझते रहे, तथा कुपथ पर रहे हों (तब भी वह उन्हीं का अनुसरण करते रहेंगे?)
171. उन की दशा जो काफिर हो गये उस के समान है जो उस (पशु) को पुकारता है, जो हॉक पुकार के सिवा कुछ नहीं सुनता, यह (काफिर) बहरे, गुंगे तथा अंधे हैं। इस लिए कुछ नहीं समझते।
172. हे ईमान वाली! उन स्वच्छ चीजों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं। तथा अल्लाह की कृतज्ञता का वर्णन करो। यदि तुम केवल उसी की इबादत (बंदना) करते हो।

173. (अल्लाह) ने तुम पर मुदीर तथा (बहता) रक्त और सुअर का मौस, तथा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो उन को हराम (निषेध) कर दिया है। फिर भी जो विवश हो जाये जब कि वह नियम न तोड़ रहा हो, और आवश्यकता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो तो उस पर कोई दोष नहीं। अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
174. वास्तव में जो लोग अल्लाह की उतारी पुस्तक (की बातों) को छुपा रहे हैं, और उस के बदले तनिक मूल्य प्राप्त कर लेते हैं, वही अपने उदर में केवल अग्नि भर रहे हैं। तथा अल्लाह उन से बात नहीं करेगा, और न उन को विशुद्ध करेगा। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।
175. यही वह लोग हैं जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ खरीद लिया है। तथा क्षमा के बदले यातना। तो नरक की अग्नि पर वह कितने सहनशील हैं?
176. इस यातना के अधिकारी वह इस लिये हुये कि अल्लाह ने पुस्तक को सत्य के साथ उतारा। और जो पुस्तक में विभेद कर बैठे। वह वास्तव में विरोध में बहुत दूर निकल गये।
177. भलाई यह नहीं है कि तुम अपने मुख को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो। भला कर्म तो उस का है। जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया। तथा
- फ़रिश्तों और सब पुस्तकों तथा नबियों पर, तथा धन का मोह रखते हुये, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा याचकों (फ़कीरों) को और दास मुक्ति के लिये दिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा ज़कात दी, और अपने वचन को, जब भी वचन दिया, पूरा करते रहे। और निर्धनता और रोग तथा युद्ध की स्थिति में धैर्यवान रहे। यही लोग सच्चे हैं, तथा यही (अल्लाह से) डरते हैं।
178. हे ईमान वालो! तुम पर निहत व्यक्तियों के बारे में किसान (बराबरी का बदला) अनिवार्य कर दिया गया है। स्वतंत्र का बदला स्वतंत्र से लिया जायेगा, तथा दास का दास से, और नारी का नारी से, और जिस अपराधी के लिये उस के भाई की ओर से कुछ क्षमा कर दिया जाये, तो उसे सामान्य नियम का अनुसरण (अनुपालन) करना चाहिये। निहत व्यक्ति के वारिस को भलाई के साथ दियत (अर्थदण्ड) चुका देना चाहिये। यह तुम्हारे पालनहार की ओर से सुविधा तथा दया है। इस पर भी जो अत्याचार करे तो उस के लिये दुःखदायी यातना है।
179. और हे समझ वालो! तुम्हारे लिये किसान (के नियम में) जीवन है, ताकि तुम रक्तपात से बचो।^[2]
180. और जब तुम में से किसी के निधन का समय हो, और वह धन छोड़

रहा हो तो उस पर माता पिता और समीपवर्तियों के लिये साधारण नियमानुसार वसिय्यत (उत्तरदान) करना अनिवार्य कर दिया गया है। यह आज्ञाकारियों के लिये सुनिश्चित है।

181. फिर जिस ने वसिय्यत सुनने के पश्चात् उसे बदल दिया तो उस का पाप उन पर है जो उसे बदलेंगे। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।
182. फिर जिसे डर हो कि वसिय्यत करने वाले ने पक्षपात या अत्याचार किया है, फिर उस ने उन के बीच सुधार करा दिया तो उस पर कोई पाप नहीं। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।
183. हे ईमान वालो! तुम पर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुम से पूर्व लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो।
184. वह गिनती के कुछ दिन है। फिर यदि तुम में से कोई रोगी, अथवा यात्रा पर हो तो यह गिनती दूसरे दिनों से पूरी करो। और जो उस (रोज़े) को सहन न कर सके वह फिद्या (प्रायश्चित) दे। जो एक निर्धन को खाना खिलाना है। और जो स्वेच्छा भलाई करे वह उस के लिये अच्छी बात है। और यदि तुम समझो तो तुम्हारे लिये रोज़ा रखना ही अच्छा है।
185. रमज़ान का महीना वह है, जिस में कुर्बान उतारा गया, जो सब मानव के लिये मार्गदर्शन है। तथा

मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है। अतः जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित हो तो वह उस का रोज़ा रखे, फिर यदि तुम में से कोई रोगी अथवा यात्रा पर हो, तो उसे दूसरे दिनों से गिनती पूरी करनी चाहिये। अल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता। और चाहता है कि तुम गिनती पूरी करो, तथा इस बात पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करो कि उस ने तुम्हें मार्गदर्शन दिया, इस प्रकार तुम उस के कृतज्ञ बन सको।

186. (हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें, तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वह सीधी राह पायें।
187. तुम्हारे लिये रोज़े की रात में अपनी स्त्रियों से सहवास हलाल (उचित) कर दिया गया है। वह तुम्हारा वस्त्र है, तथा तुम उन का वस्त्र हो। अल्लाह को ज्ञान हो गया कि तुम अपना उपभोग कर रहे थे। उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा याचना) स्वीकार कर ली, तथा तुम्हें क्षमा कर दिया। अब उन से (रात्रि में) सहवास करो, और अल्लाह के (अपने भाग्य में) लिखे की खोज करो, और (रात्रि में) खाओ तथा पीओ, यहाँ तक कि भोर की सफ़ेद धारी, रात की काली धारी से उजागर हो जाये फिर रोज़े को रात्रि (सुर्यास्त)

- तक पूरा करो, और उन से सहवास न करो, जब मस्जिदों में ऐतिकाफ़ (एकान्तवास) में रहो। यह अल्लाह की सीमायें हैं, इन के समीप भी न जाओ। इसी प्रकार अल्लाह लोगों के लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि वह (उन के उल्लंघन) से बचें।
188. तथा आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, और न अधिकारियों के पास उसे इस धेय से ले जाओ कि लोगों के धन का कोई भाग जान बूझ कर पाप द्वारा खा जाओ।
189. (हे नबी!) लोग आप से चन्द्रमा के (घटने बढ़ने) के विषय में प्रश्न करते हैं। कह दें: इस से लोगों को तिथियों के निर्धारण तथा हज्ज के समय का ज्ञान होता है। और यह कोई भलाई नहीं है कि घरों में उन के पीछे से प्रवेश करो, परन्तु भलाई तो अल्लाह की अवैज्ञा से बचना है। और घरों में उन के द्वारों से आओ, तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।
190. तथा तुम अल्लाह की राह में, उन से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हों। और अत्याचार न करो, अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।
191. और उन को हत करो, जहाँ पाओ, और उन्हें निकालो, जहाँ से उन्होंने ने तुम को निकाला है, इस लिये कि फ़ितना (उपद्रव) हत करने से भी बुरा है। और उन से मस्जिदे हराम
- के पास युद्ध न करो, जब तक वह तुम से वहाँ युद्ध न करें। परन्तु यदि वह तुम से युद्ध करें तो उन की हत्या करो, यही काफ़िरो का बदला है।
192. फिर यदि वह (आक्रमण करने से) रुक जायें तो अल्लाह अति क्षमी, दयावान् है।
193. तथा उन से युद्ध करो, यहाँ तक कि फ़ितना न रह जाये, और धर्म केवल अल्लाह के लिये रह जाये, फिर यदि वह रुक जायें, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिये।
194. सम्मानित मास, सम्मानित मास के बदले है। और सम्मानित विषयों में बराबरी है, अतः जो तुम पर अतिक्रमण (अत्याचार) करें तो तुम भी उन पर उसी के समान (अतिक्रमण) करो। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और जान लो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।
195. तथा अल्लाह की राह (जिहाद) में धन खर्च करो, और अपने आप को विनाश में न डालो, तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।
196. तथा हज्ज और उमरा अल्लाह के लिये पूरा करो, और यदि रोक दिये जाओ तो जो कुर्बानी सुलभ हो (कर दो), और अपने सिर न मुँडाओ, जब तक कि कुर्बानी अपने स्थान पर न पहुँच जाये, यदि तुम में कोई व्यक्ति रोगी हो, या उस के सिर में कोई पीड़ा हो (और सिर मुँडा ले) तो उस के बदले में

रोज़ा रखना या दान देना अथवा कुर्बानी देना है, और जब तुम निर्भय (शान्त) रहो तो जो उमरे से हज्ज तक लाभान्वित⁽²⁾ हो वह जो कुर्बानी सुलभ हो उसे करो। और जिसे उपलब्ध न हो तो वह तीन रोज़े हज्ज के दिनों में रखे, और सात जब रखे जब तुम (घर) वापस आओ। यह पूरे दस हुये। यह उस के लिये है जो मस्जिद हुराम का निवासी न हो। और अल्लाह से डरो, तथा जान लो कि अल्लाह की यातना बहुत कड़ी है।

197. हज्ज के महीने प्रसिद्ध हैं, तो जो व्यक्ति इन में हज्ज का निश्चय कर ले तो (हज्ज के बीच) काम वासना तथा अवैज्ञा और झगड़े की बातें न करे, तथा तुम जो भी अच्छे कर्म करोगे तो उस का ज्ञान अल्लाह को हो जायेगा, और अपने लिये पाथेय बना लो, उत्तम पाथेय अल्लाह की आज्ञाकारिता है, तथा हे समझ वालो! मुझी से डरो।

198. तथा तुम पर कोई दोष नहीं कि अपने पालनहार के अनुग्रह की खोज करो, तो फिर जब तुम अरफ़ात से चलो, तो मशअरे हुराम (मुजदलिफ़ह) के पास अल्लाह का स्मरण करो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हें बताया है। यद्यपि इस से पहले तुम कुपथों में थे।

199. फिर तुम भी वहीं से फिरो जहाँ से लोग फिरते हैं। तथा अल्लाह से क्षमा माँगो। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है।

200. और जब तुम अपने (हज्ज के) मनासिक (कर्म) पूरे कर लो तो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों की चर्चा करते रहे, उसी प्रकार बल्कि उस से भी अधिक अल्लाह का स्मरण करो। उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हे हमारे पालनहार! (हमें जो देना है) संसार ही में दे दे। अतः ऐसे व्यक्ति के लिये परलोक में कोई भाग नहीं है।

201. तथा उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हमारे पालनहार! हमें संसार की भलाई दे, तथा परलोक में भी भलाई दे, और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख।

202. इन्हीं को इन की कमाई के कारण भाग मिलेगा, और अल्लाह शीघ्र हिसाब चुकाने वाला है।

203. तथा इन गिनती के कुछ दिनों में अल्लाह को स्मरण (याद) करो, फिर जो कोई व्यक्ति शीघ्रता से दो ही दिन में (मिना से) चल दे, तो उस पर कोई दोष नहीं, और जो विलम्ब करे, तो उस पर भी कोई दोष नहीं, उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह से डरा, तथा तुम अल्लाह से डरते रहो और यह समझ लो कि तुम उसी के पास प्रलय के दिन एकत्र किये जाओगे।

204. हे नबी! लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है जिस की बात आप को संसारिक विषय में भाती है, तथा जो कुछ उस के दिल में है, वह उस पर अल्लाह को साक्षी बनाता है, जब कि वह बड़ा झगड़ालू है।

205. तथा जब वह आप के पास से जाता है तो धरती में उपद्रव मचाने का प्रयास करता है, और खेती तथा पशुओं का विनाश करता है। और अल्लाह उपद्रव से प्रेम नहीं करता।
206. तथा जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अभिमान उसे पाप पर उभार देता है। अतः उस के (दण्ड) के लिये नरक काफी है। और वह बहुत बुरा बिछोना है।
207. तथा लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में अपना प्राण बेच देता है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।
208. हे ईमान वालो! तुम सर्वथा इस्लाम में प्रवेश कर जाओ, और शैतान की राहों पर मत चलो, निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
209. फिर यदि तुम खुले तर्कों (दलीलों) के आने के पश्चात् विचलित हो गये, तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्त्वज्ञ है।
210. क्या (इन खुले तर्कों के आ जाने के पश्चात्) वह इस की प्रतिक्षा कर रहे हैं कि उन के समक्ष अल्लाह बादलों के छत्र में आ जाये, तथा फरिश्ते भी, और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे।
211. बनी इस्राईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दीं? इस पर भी जिस ने अल्लाह की अनुकम्पा को, उस के अपने पास

आ जाने के पश्चात् बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है।

212. काफिरों के लिये संसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है। तथा जो ईमान लाये यह उन का उपहास करते हैं, और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उन से उच्च स्थान पर रहेंगे। तथा अल्लाह जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।
213. (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे। (फिर विभेद हुआ)। तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने, और (अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये भेजा, और उन पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वह जिन बातों पर विभेद कर रहे हैं, उन का निर्णय कर दें, और आप की दुराग्रह से उन्होंने ने ही विभेद किया, जिन को (विभेद निवारण के लिये) यह पुस्तक दी गयी, तो जो ईमान लाये अल्लाह ने उस विभेद में उन्हें अपनी अनुमति से सत्यथ दर्शा दिया। और अल्लाह जिसे चाहे सत्यथ दर्शा देता है।
214. क्या तुम ने समझ रखा है कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, हालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई जो तुम से पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तीगियों तथा आपदाओं ने घेर लिया, और वह झँझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उस पर ईमान लाये गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गया:) सुन लो!

अल्लाह की सहायता समीप है।

215. हे नबी! वह आप से प्रश्न करते हैं कि कैसे व्यय (खर्च) करें? उन से कहो कि जो भी धन तुम खर्च करो, अपने माता पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)। तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भली भाँति जानता है।
216. हे ईमान वालो! तुम पर युद्ध करना अनिवार्य कर दिया गया है, और वह तुम्हें अप्रिय है, हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो, और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो, और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो, और वह तुम्हारे लिये बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।
217. हे नबी! वह आप से प्रश्न करते हैं कि सम्मानित मास में युद्ध करना कैसा है? तो आप उन से कह दें कि उस में युद्ध करना घोर पाप है, परन्तु अल्लाह की राह से रोकना और उस का इन्कार करना, तथा मस्जिदे हराम से रोकना, और उस के निवासियों को उस से निकालना, अल्लाह के समीप उस से भी घोर पाप है। तथा फ़ितना (सत्धर्म) से विचलाना हत्या से भी भारी है। और वह तो तुम से युद्ध करते ही जायेंगे, यहाँ तक कि उन के बस में हो तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें, और तुम में से जो व्यक्ति अपने धर्म (इस्लाम) से फिर जायेगा, फिर कुफ़्र पर ही उस की मौत होगी, तो ऐसों का किया कराया, संसार तथा परलोक में व्यर्थ हो जायेगा। तथा

वही नारकी हैं और वह उस में सदावासी होंगे।

218. (इस के विपरीत) जो लोग ईमान लाये, और उन्होंने हिजरत की, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, तो वास्तव में वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है।
219. हे नबी! वह आप से मदिरा और जूआ के विषय में प्रश्न करते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है। तथा लोगों का कुछ लाभ भी है। परन्तु उन का पाप उन के लाभ से अधिक बड़ा है। तथा वह आप से प्रश्न करते हैं कि अल्लाह की राह में क्या खर्च करें? उन से कह दो कि जो अपनी आवश्यकता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों (धर्मदोषों) को उजागर करता है। ताकि तुम सोच विचार करो।
220. और वह आप से अनाथों के विषय में प्रश्न करते हैं। तो उन से कह दो कि जिस बात में उन का सुधार हो वही सब से अच्छी है। यदि तुम उन से मिल कर रहो तो वह तुम्हारे भाई ही है, और अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम पर सख्ती कर देता। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है।
221. तथा मुशिरक स्त्रियों से तुम विवाह न करो, जब तक वह ईमान न लायें, और ईमान वाली दासी

मुशिरक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो, और अपनी स्त्रियों का विवाह मुशिरकों से न करो जब तक वह ईमान न लायें। और ईमान वाला दास मुशिरक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो। वह तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं तथा अल्लाह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और सभी मानव के लिये अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

222. तथा वह आप से मासिक धर्म के विषय में प्रश्न करते हैं, तो कह दें कि वह मलीनता है। और उन के समीप भी न⁽¹⁾ जाओ जब तक पवित्र न हो जायें। फिर जब वह भली भौंति स्वच्छ⁽²⁾ हो जायें तो उन के पास उसी प्रकार जाओ जैसे अल्लाह ने तुम्हें आदेश⁽³⁾ दिया है। निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।
223. तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिये खेतियाँ⁽⁴⁾ हैं। तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो अपनी खेतियों में जाओ। परन्तु भविष्य के लिये भी सत्कर्म करो। तथा अल्लाह से डरते रहो। और विद्यास रखो कि तुम्हें उस से मिलना है। और ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दो।
224. तथा अल्लाह के नाम पर अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिये रोक⁽⁵⁾ न बनाओ। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

225. अल्लाह तुम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा, परन्तु जो शपथ अपने दिलों के संकल्प से लोगे, उन पर पकड़ेगा, और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।
226. तथा जो लोग अपनी पत्नियों से संभोग न करने की शपथ लेते हों, वह चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर⁽¹⁾ यदि अपनी शपथ से इस (बीच) फिर जायें तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
227. और यदि उन्होंने तलाक़ का संकल्प ले लिया हो तो निःसन्देह अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है।
228. तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी हो वह तीन बार रजवती होने तक अपने आप को विवाह से रोकी रखें। उन के लिये हलाल (वैध) नहीं है कि अल्लाह ने जो उन के गर्भाशयों में पैदा किया⁽²⁾ है, उसे छुपायें। यदि वह अल्लाह तथा आखिरत (परलोक) पर ईमान रखती हों। तथा उन के पति इस अवधि में अपनी पत्नियों को लौटा लेने के अधिकारी⁽³⁾ हैं। यदि वह मिलाप⁽⁴⁾ चाहते हों। तथा सामान्य नियमानुसार स्त्रियों⁽¹⁾ के लिये वैसे ही अधिकार हैं जैसे पुरुषों का उन के ऊपर है। फिर भी पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है। और अल्लाह अति प्रभुत्वशील तत्त्वज्ञ है।
229. तलाक़ दो बार है। फिर नियमानुसार स्त्री को रोक लिया जाये या भली भौंति विदा कर दिया जाये। और तुम्हारे लिये यह हलाल (वैध) नहीं

है कि उन्हें जो कुछ तुम ने दिया है उस में से कुछ वापिस लो। फिर यदि तुम्हें यह भय हो कि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमाओं को स्थापित न रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि पत्नी अपने पति को कुछ देकर मुक्ति^[2] करा लो। यह अल्लाह की सीमायें हैं इन का उल्लंघन न करो। और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेंगे वही अत्याचारी हैं।

230. फिर यदि उसे (तीसरी बार) तलाक़ दे दी तो वह स्त्री उस के लिये हलाल (वैध) नहीं होगी, जब तक दूसरे पति से विवाह न कर लो। अब यदि दूसरा पति (संभोग के पश्चात्) उसे तलाक़ दे दे तब प्रथम पति से (निर्धारित अवधि पूरी कर के) फिर विवाह कर सकती है, यदि वह दोनों समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख सकेंगे। और यह अल्लाह की सीमायें हैं, जिन्हें उन लोगों के लिये उजागर कर रहा है जो ज्ञान रखते हों।
231. और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक़ दे दो और उन की निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने लगे तो नियमानुसार उसे रोक लो, अथवा नियमानुसार विदा कर दो। उन्हें हानि पहुँचाने के लिये न रोको, ताकि उन पर अत्याचार करो, और जो कोई ऐसा करेगा तो वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करेगा। तथा अल्लाह की आयतों (आदेशों) को उपहास न बनाओ। और अपने ऊपर

अल्लाह के उपकार तथा उस पुस्तक (क़ुरआन) तथा हिक्मत (सुन्नत) को याद करो जिसे उस ने तुम पर उतारा है। और उस के द्वारा तुम को शिक्षा दे रहा है। तथा अल्लाह से डरो, और विश्वास रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।

232. और जब तुम अपनी पत्नियों को (तीन से कम) तलाक़ दो, और वह अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षकों!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जब कि सामान्य नियमानुसार वह आपस में विवाह करने पर सहमत हों, यह तुम में से उसे निर्देश दिया जा रहा है जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखता है, यही तुम्हारे लिये अधिक स्वच्छ तथा पवित्र है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।
233. और मातायें अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, और पिता को नियमानुसार उन्हें खाना कपड़ा देना है, किसी पर उस की सकत से अधिक भार नहीं डाला जायेगा, न माता को उस के बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये, और न पिता को उस के बच्चे के कारण। और इसी प्रकार उस (पिता) के वारिस (उत्तराधिकारी) पर (खाना कपड़ा देने का) भार है। फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा परामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई दोष नहीं।

और यदि (तुम्हारा विचार किसी अन्य स्त्री से) दूध पिलवाने का हो तो इस में भी तुम पर कोई दोष नहीं, जब कि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है उस को चुका दिया हो, तथा अल्लाह से डरते रहो। और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो उसे अल्लाह देख रहा है।

234. और तुम में से जो मर जायें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जायें तो वह स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखें। फिर जब उन की अवधि पूरी हो जाये तो वह सामान्य नियमानुसार अपने विषय में जो भी करें उस में तुम पर कोई दोष नहीं। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।
235. इस अवधि में यदि तुम (उन) स्त्रियों को विवाह का संकेत दो अथवा अपने मन में छुपाये रखो तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है कि उन का विचार तुम्हारे मन में आयेगा, परन्तु उन्हें गुप्त रूप से विवाह का वचन न दो। परन्तु यह कि नियमानुसार कोई बात कहो। तथा विवाह के बंधन का निश्चय उस समय तक न करो जब तक निर्धारित अवधि पूरी न हो जाये, तथा जान लो कि जो कुछ तुम्हारे मन में है उसे अल्लाह जानता है। अतः उस से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है।
236. और तुम पर कोई दोष नहीं यदि तुम स्त्रियों को संभोग करने तथा

महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने से पहले तलाक दे दो। (इस स्थिति में) उन्हें कुछ दो। नियमानुसार धनी पर अपनी शक्ति के अनुसार तथा निर्धन पर अपनी शक्ति के अनुसार देना है। यह उपकारियों पर आवश्यक है।

237. और यदि तुम उन को उन से संभोग करने से पहले तलाक दो इस स्थिति में कि तुम ने उन के लिये महर (विवाह उपहार) निर्धारित किया है तो निर्धारित महर का आधा देना अनिवार्य है। यह और बात है कि वह क्षमा कर दें। अथवा वह क्षमा कर दें जिन के हाथ में विवाह का बंधन है। और क्षमा कर देना संयम से अधिक समीप है। और आपस में उपकार को न भूलो। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह सब देख रहा है।
238. नमाज़ों का, विशेष रूप से माध्यमिक नमाज़ (अस) का ध्यान रखो। तथा अल्लाह के लिये विनय पूर्वक खड़े रहो।
239. और यदि तुम्हें भय हो तो पैदल या सवार (जैसे संभव हो) नमाज़ पढ़ो, फिर जब निश्चित हो जाओ तो अल्लाह ने तुम्हें जैसे सिखाया है, जिसे पहले तुम नहीं जानते थे, वैसे अल्लाह को याद करो।
240. और जो तुम में से मर जायें, तथा पत्नियाँ छोड़ जायें, वह अपनी पत्नियों के लिये एक वर्ष तक उन को खर्च देने, तथा (घर से) निकालने की वसियत कर जायें तो

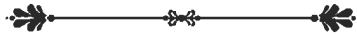
- यदि वह स्वयं निकल जायें तथा सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें, तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह प्रभावशाली तत्वज्ञ है।
241. तथा जिन स्त्रियों को तलाक दी गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप से सामग्री मिलनी चाहिये, यह आज्ञाकारियों पर आवश्यक है।
242. इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर कर देता है ताकि तुम समझो।
243. क्या आप ने उन की दशा पर विचार नहीं किया जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गये, जब कि उन की संख्या हजारों में थी, तो अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ, फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञयता नहीं करते।
244. और तुम अल्लाह (के धर्म के समर्थन) के लिये युद्ध करो, और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।
245. कौन है, जो अल्लाह को अच्छा उधार देता है, ताकि अल्लाह उसे उस के लिये कई गुना अधिक कर दे? और अल्लाह ही थोड़ा और अधिक करता है, और उसी की ओर तुम सब फेरे जावोगे।
246. हे नबी! क्या आप ने बनी इस्राईल के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया, जो मूसा के बाद सामने आया? जब उस ने अपने नबी से कहा: हमारे लिये एक राजा बना दो।
- हम अल्लाह की राह में युद्ध करेंगे, (नबी ने) कहा: ऐसा तो नहीं होगा कि तुम्हें युद्ध का आदेश दे दिया जाये तो अवैज्ञा कर जाओ? उन्होंने ने कहा: ऐसा नहीं हो सकता कि हम अल्लाह की राह में युद्ध न करें। जब कि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं। परन्तु जब उन्हें युद्ध का अदेश दे दिया गया तो उन में से थोड़े के सिवा सब फिर गये। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँति जानता है।
247. तथा उन के नबी ने कहा: अल्लाह ने "तालूत" को तुम्हारा राजा बना दिया है। वह कहने लगे: "तालूत" हमारा राजा कैसे हो सकता है? हम उस से अधिक राज्य का अधिकार रखते हैं, वह तो बड़ा धनी भी नहीं है। (नबी ने) कहा: अल्लाह ने उसे तुम पर निर्वाचित किया है, और उसे अधिक ज्ञान तथा शारिरिक बल प्रदान किया है। और अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी है।
248. तथा उन के नबी ने उन से कहा: उस के राज्य का लक्षण यह है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिस में तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिये संतोष तथा मूसा और हारून के घराने के छोड़े हुये अवशेष हैं, उसे फरिश्ते उठाये हुये होंगे। निश्चय यदि तुम ईमान वाले हो तो इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी (लक्षण) है।
249. फिर जब तालूत सेना ले कर चला, तो उस ने कहा: निश्चय अल्लाह

एक नहर द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। तो जो उस में से पीयेगा वह मेरा साथ नहीं देगा, और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा, परन्तु जो अपने हाथ से चूड़ू भर पी ले (तो कोई दोष नहीं। तो थोड़े के सिवा सब ने उस में से पी लिया। फिर जब उस (जालूत) ने और जो उस के साथ ईमान लाये, उस (नहर) को पार किया, तो कहा आज हम में (शत्रु) जालूत और उस की सेना से युद्ध करने की शक्ति नहीं। (परन्तु) जो समझ रहे थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है उन्होंने कहा: बहुत से छोटे दल अल्लाह की अनुमति से भारी दलों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।

250. और जब वह जालूत और उस की

सेना के सम्मुख हुये तो प्रार्थना की, हे हमारे पालनहार! हम को धैर्य प्रदान कर। तथा हमारे चरणों को (रणक्षेत्र में) स्थिर कर दे। और काफ़िरों पर हमारी सहायता कर।

251. तो उन्होंने ने अल्लाह की अनुमति से उन्हें पराजित कर दिया, और दाबूद ने जालूत का बध कर दिया। तथा अल्लाह ने उस (दाबूद)⁽¹⁾ को राज्य और हिक्मत (नुबूवत) प्रदान की, तथा उसे जो ज्ञान चाहा दिया, और यदि अल्लाह कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा रक्षा न करता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, परन्तु संसार वासियों पर अल्लाह बड़ा दयाशील है।
252. (हे नबी!) यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को सुना रहे हैं, तथा वास्तव में आप रसूलों में से हैं।



253. वह रसूल हैं। उन को हम ने एक दूसरे पर प्रधानता दी है। उन में से कुछ ने अल्लाह से बात की। और कुछ को कई श्रेणियाँ ऊँचा किया। तथा मरयम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दीं। और रूहुलकुदुस द्वारा उसे समर्थन दिया। और यदि अल्लाह चाहता तो इन रसूलों के पश्चात् खुली निशानियाँ आ जाने पर लोग आपस में न लड़ते, परन्तु उन्होंने विभेद किया, तो उन में से कोई ईमान लाया, और किसी ने कुफ़्र किया। और यदि अल्लाह चाहता तो वह नहीं लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।
254. हे ईमान वालो! हम ने तुम्हें जो कुछ दिया है उस में से दान करो, उस दिन (अर्थात् प्रलय) के आने से पहले, जिस में कोई सौदा नहीं होगा, और न कोई मैत्री, तथा न कोई अनुशंसा (सिफ़ारिश) काम आयेगी, तथा काफ़िर लोग ही अत्याचारी हैं।
255. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थाई है, उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है जो उस के पास उस की अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उन के समक्ष और जो कुछ उन से ओझल है सब को जानता है। वह उस के ज्ञान में से वही जान सकते हैं जिसे वह चाहे। उस की

कुर्सी आकाश तथा धरती को समोये हुये है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च महान् है।

256. धर्म में बल प्रयोग नहीं। सुपथ कुपथ से अलग हो चुका है। अतः अब जो तागूत (अर्थात् अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे, तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता। तथा अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।
257. अल्लाह उन का सहायक है जो ईमान लाये। वह उन को अंधेरों से निकालता है। और प्रकाश में लाता है। और जो काफ़िर (विश्वासहीन) हैं। उन के सहायक तागूत (उन के मिथ्या पूज्य) हैं। जो उन्हें प्रकाश से अंधेरों की ओर ले जाते हैं। यही नारकी है, जो उस में सदावासी होंगे।
258. हे नबी! क्या आप ने उस व्यक्ति की दशा पर विचार नहीं किया, जिस ने इब्राहीम से उस के पालनहार के विषय में विवाद किया, इसलिये कि अल्लाह ने उसे राज्य दिया था? जब इब्राहीम ने कहा: मेरा पालनहार वह है जो जीवित करता तथा मारता है तो उस ने कहा: मैं भी जीवित करता तथा मारता हूँ। इब्राहीम ने कहा: अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है, तू उसे पश्चिम से ला दे। (यह सुन कर) काफ़िर चकित रह गया। और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।
259. अथवा उस व्यक्ति के प्रकार जो एक ऐसी नगरी से गुजरा जो अपनी छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी? उस ने

- कहा: अल्लाह इस के ध्वस्त हो जाने के पश्चात इसे कैसे जीवित (आबाद) करेगा? फिर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मौत दे दी। फिर उसे जीवित किया। और कहा: तुम कितनी अवधि तक मुर्दे पड़े रहे? उस ने कहा: एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण। (अल्लाह ने) कहा: बल्कि तुम सौ वर्ष तक पड़े रहे। अपने खाने पीने को देखो कि तनिक परिवर्तन नहीं हुआ है। तथा अपने गधे की ओर देखो, ताकि हम तुम्हें लोगों के लिये एक निशानी (चिन्ह) बना दें। तथा (गधे की) स्थियों को देखो कि हम उसे कैसे खड़ा करते हैं। और उन पर कैसे मांस चढ़ाते हैं। इस प्रकार जब उस के समक्ष बातें उजागर हो गयीं, तो वह पुकार उठा कि मुझे ज्ञान (प्रत्यक्ष) हो गया कि अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
260. तथा (याद करो) जब इबराहीम ने कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दे को कैसे जीवित कर देता है? कहा: क्या तुम ईमान नहीं लाये? उस ने कहा: क्यों नहीं? परन्तु ताकि मेरे दिल को संतोष हो जाये। अल्लाह ने कहा: चार पक्षी ले आओ। और उन को अपने से परचा लो। (फिर उन को बध कर के) उन का एक एक अंश (भाग) पर्वत पर रख दो। फिर उन को पुकारो। वह तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे। और यह जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।
261. जो अल्लाह की राह में अपने धनों को दान करते हैं, उस की दशा, उस एक दाने जैसी है जिस ने सात बालियाँ उगाई हों। (उस की) प्रत्येक

बाली में सौ दाने हों। और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है। तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

262. जो अपना धन अल्लाह की राह में दान करते हैं, फिर दान करने के पश्चात् उपकार नहीं जताते, और न (जिसे दिया हो) दुख देते हैं उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिकार (बदला) है, और उन पर कोई डर नहीं होगा, और न ही वह उदासीन होंगे।
263. भली बात बोलना तथा क्षमा, उस दान से उत्तम है जिस के पश्चात् दुख दिया जाये। तथा अल्लाह निस्पृह सहनशील है।
264. हे ईमान वालो! उस व्यक्ति के समान उपकार जता कर तथा दुख दे कर, अपने दानों को व्यर्थ न करो जो लोगों को दिखाने के लिये दान करता है, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान नहीं रखता। उस का उदाहरण उस चटेल पत्थर जैसा है जिस पर मिट्टी पड़ी हो, और उस पर घोर वर्षा हो जाये, और उस (पत्थर) को चटेल छोड़ दो। वह अपनी कमाई का कुछ भी न पा सकेंगे, और अल्लाह काफ़िरों को सीधी डगर नहीं दिखाता।
265. तथा उन की उपमा जो अपना धन अल्लाह की प्रसन्नता की इच्छा में अपने मन की स्थिरता के साथ दान करते हैं, उस बाग (उद्यान) जैसी है, जो पृथ्वी तल के किसी ऊँचे भाग पर हो, उस पर घोर वर्षा हुई, तो दुगना फल लाया, और यदि घोर वर्षा नहीं हुई, तो (उस के

लिये) फुहार ही बस हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

266. क्या तुम में से कोई चाहेगा कि उस के खजूर तथा अँगूरों के बाग हों, जिन में नहरें बह रही हों, उन में उस के लिये प्रत्येक प्रकार के फल हों, तथा वह बूढ़ा हो गया हो, और उस के निर्बल बच्चे हों, फिर वह बगोल के आघात से जिस में आग हो, झुलस जाये। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम सोच विचार करो।
267. हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से जो तुम ने कमाई है, तथा उन चीजों में से जो हम ने तुम्हारे लिये धरती से उपजाई है, दान करो। तथा उस में से उस चीज को दान करने का निश्चय न करो जिसे तुम स्वयं न ले सको, परन्तु यह कि अदेखी कर जाओ। तथा जान लो कि अल्लाह निःस्पृह प्रशंसित है।
268. शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, तथा निलज्जा की प्रेरणा देता है, तथा अल्लाह तुम को अपनी क्षमा और अधिक देने का वचन देता है, तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है।
269. वह जिसे चाहे प्रबोध (धर्म की समझ) प्रदान करता है, और जिसे प्रबोध प्रदान कर दिया गया, उसे बड़ा कल्याण मिल गया, और समझ वाले ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।
270. तथा तुम जो भी दान करो, अथवा मनौती मानो, अल्लाह उसे जानता

है, तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

271. यदि तुम खुले दान करो, तो वह भी अच्छा है, तथा यदि छुपा कर करो और कंगालों को दो तो वह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है। यह तुम से तुम्हारे पापों को दूर कर देगा। तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उस से अल्लाह सूचित है।
272. उन को सीधी डगर पर लगा देना आप का दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहे सीधी डगर पर लगा देता है। तथा तुम जो भी दान देते हो तो अपने लाभ के लिये देते हो, तथा तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ही देते हो, तथा तुम जो भी दान दोगे, तुम्हें उस का भरपूर प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा, और तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
273. दान उन निर्धनों (कंगालों) के लिये है जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर गये हों कि धरती में दौड़ भाग न कर⁽¹⁾ सकते हों, उन्हें अज्ञान लोग न माँगने के कारण धनी समझते हैं, वह लोगों के पीछे पड़ कर नहीं माँगते। तुम उन्हें उन के लक्षणों से पहचान लोगे। तथा जो भी धन तुम दान करोगे, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली भाँति जानने वाला है।
274. जो लोग अपना धन रात दिन, खुले छुपे दान करते हैं तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास, उन का प्रतिफल (बदला) है। और उन को कोई डर नहीं होगा। और न वह उदासीन होंगे।

275. जो लोग व्याज खाते हैं ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है जिसे शैतान ने छू कर उन्मत्त कर दिया हो। उन की यह दशा इस कारण होगी कि उन्होंने ने कहा कि व्यापार भी तो व्याज ही जैसा है, जब कि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध), तथा व्याज को हराम (अवैध) कर दिया⁽²⁾ है। अब जिस के पास उस के पालनहार की ओर से निर्देश आ गया, और इस कारण उस से रुक गया, तो जो कुछ पहले लिया वह उसी का हो गया। तथा उस का मुआमला अल्लाह के हवाले है, और जो फिर वही करें तो वही नारकी है, जो उस में सदावासी होंगे।
276. अल्लाह व्याज को मिटाता है, और दानों को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी कृतघ्न घोर पापी से प्रेम नहीं करता।
277. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तथा नमाज़ की स्थापना करते रहे, और ज़कात देते रहे तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिफल है, और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न उदासीन होंगे।
278. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और जो व्याज शेष रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो तो।
279. और यदि तुम ने ऐसा नहीं किया, तो अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। और यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो तुम्हारे लिये तुम्हारा मूल धन है
- न तुम अत्याचार करो न तुम पर अत्याचार किया जाये।
280. और यदि तुम्हारा ऋणी असुविधा में हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो। और अगर क्षमा कर दो (अर्थात् दान कर दो) तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है, यदि तुम समझो तो।
281. तथा उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की ओर फेरे जाओगे, फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार दिया जायेगा, तथा किसी पर अत्याचार न होगा।
282. हे ईमान वालो! जब तुम आपस में किसी निश्चित अवधि तक के लिये उधार लेन देन करो, तो उसे लिख लिया करो, तुम्हारे बीच न्याय के साथ कोई लेखक लिखे, जिसे अल्लाह ने लिखने की योग्यता दी है। वह लिखने से इन्कार न करो। तथा वह लिखवाये जिस पर उधार है। और अपने पालनहार अल्लाह से डरो। और उस में से कुछ कम न करो। यदि जिस पर उधार है वह निर्बोध अथवा निर्बल हो, अथवा लिखवा न सकता हो तो उस का संरक्षक न्याय के साथ लिखवाये। तथा अपने में से दो पुरुषों को साक्षी (गवाह) बना लो। यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष तथा दो स्त्रियों को उन साक्षियों में से जिन को साक्षी बनाना पसन्द करो। ताकि दोनों (स्त्रियों) में से एक भूल जाये तो दूसरी याद दिला दे। तथा जब साक्षी बुलाये जायें तो इन्कार न करें। तथा विषय छोटा हो या बड़ा उस की अवधि सहित लिखवाने में आलस्य न करो, यह अल्लाह के समीप अधिक

न्याय है। तथा साक्ष्य के लिये अधिक सहायका और इस से अधिक समीप है कि संदेह न करो। परन्तु यदि तुम व्यापारिक लेन देन हाथों हाथ (नगद करते हो) तो तुम पर कोई दोष नहीं कि उसे न लिखो। तथा जब आपस में लेन देन करो तो साक्षी बना लो। और लेखक तथा साक्षी को हानि न पहुँचाई जाये। और यदि ऐसा करोगे तो तुम्हारी अवैज्ञा ही होगी, तथा अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें सिखा रहा है। और निःसन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है।

283. और यदि तुम यात्रा में रहो, तथा लिखने के लिये किसी को न पाओ तो धरोहर रख दो। और यदि तुम में परस्पर एक दूसरे पर भरोसा हो (तो धरोहर की भी आवश्यकता नहीं) जिस पर अमानत (उधार) है, वह उसे चुका दो तथा अल्लाह (अपने पालनहार) से डरो, और साक्ष्य को न छुपाओ, और जो उसे छुपायेगा तो उस का दिल पापी है, तथा तुम जो करते हो अल्लाह सब जानता है।

284. आकाशों तथा धरती में जो कुछ है सब अल्लाह का है। और जो तुम्हारे मन में है उसे बोलो अथवा मन ही में रखो अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जिसे चाहे दण्ड देगा। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

285. रसूल उस चीज़ पर ईमान लाया जो उस के लिये अल्लाह की ओर से उतारी गई। तथा सब ईमान वाले उस पर ईमान लाये। वह सब अल्लाह तथा उस के फ़रिश्तों और

उस की सब पुस्तकों एवं रसूलों पर ईमान लाये। (वह कहते हैं:) हम उस के रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते। हम ने सुना, और हम आज्ञाकारी हो गये। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे, और हमें तेरे ही पास आना है।

286. अल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता। जो सदाचार करेगा उस का लाभ उसी को मिलेगा, और जो दुराचार करेगा उस की हानि भी उसी को होगी। हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चुक जायें तो हमें न पकड़। हे हमारे पालनहार! हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल जितना हम से पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, और हमें क्षमा कर दे, तथा हम पर दया कर, तू ही हमारा स्वामी है, तथा काफ़ि़रों के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

सूरह आले इमरान - 3

सूरह आले इमरान के संक्षिप्त विषय यह सूरह मदनी है, इस में 200 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़, लाम, मीम।
2. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित नित्य स्थायी है।
3. उसी ने आप पर सत्य के साथ पुस्तक (कुर्आन) उतारी है, जो

4. इस से पूर्व लोगों के मार्गदर्शन के लिये, और फुर्कान उतारा है, तथा जिन्होंने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया, उन्हीं के लिये कड़ी यातना है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला है।
5. निस्सदेह अल्लाह से आकाशों तथा धरती की कोई चीज़ छुपी नहीं है।
6. वही तुम्हारा रूप आकार गर्भाषयों में जैसे चाहता है, बनाता है, कोई पूज्य नहीं, परन्तु वही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
7. उसी ने आप पर यह पुस्तक (क़र्आन) उतारी है जिस में कुछ आयतें मुहकम (सुदृढ़) हैं जो पुस्तक का मूल आधार हैं, तथा कुछ दूसरी मुतशाबिह (संदिग्ध) हैं। तो जिन के दिलों में कुटिलता है वह उपद्रव की खोज तथा मनमानी अर्थ करने के लिये संदिग्ध के पीछे पड़ जाते हैं। जब कि उन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। तथा जो ज्ञान में पकड़े हैं वह कहते हैं कि सब हमारे पालनहार के पास से है, और बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।
8. (तथा कहते हैं): हे हमारे पालनहार! हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुटिल न कर, तथा हमें अपनी दया प्रदान कर। वास्तव में तू बहुत बड़ा दाता है।
9. हे हमारे पालनहार! तू उस दिन सब को एकत्र करने वाला है जिस में कोई सदेह नहीं, निस्सदेह अल्लाह अपने निर्धारित समय का विरुद्ध नहीं करता।
10. निश्चय जो काफ़िर हो गये उन के धन तथा उन की संतान अल्लाह (की यातना) से (बचाने में) उन के कुछ काम नहीं आयेगी, तथा वही अग्नि के ईंधन बनेंगे।
11. जैसे फिरौनियों तथा उन के पहले के लोगों की दशा हुई, उन्हीं ने हमारी निशानियों को मिथ्या कहा, तो अल्लाह ने उन के पापों के कारण उन को धर लिया। तथा अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है।
12. हे नबी! काफ़िरों से कह दो कि तुम शीघ्र ही परास्त कर दिये जाओगे, तथा नरक की ओर एकत्रित किये जाओगे, और वह बहुत बुरा ठिकाना^[1] है।
13. वास्तव में तुम्हारे लिये उन दो दलों में जो (बद्र में) सम्मुख हो गये, एक निशानी थी। एक अल्लाह की राह में युद्ध कर रहा था, तथा दूसरा काफ़िर था, वह अपनी आँखों से देख रहे थे कि यह (मुसलमान) तो दुगने लग रहे हैं। तथा अल्लाह अपनी सहायता द्वारा जिसे चाहे समर्थन देता है। निःसदेह इस में समझ बूझ वालों के लिये बड़ी शिक्षा है।
14. लोगों के लिये उन के मन को मोहने वाली चीज़ें, जैसे स्त्रियाँ, संतान, सोने चाँदी के ढेर, निशान लगे घोड़े, पशुओं तथा खेती, शोभनीय बना दी गई हैं। यह सब संसारिक जीवन के उपभोग्य हैं। और उत्तम आवास अल्लाह के पास है।
15. (हे नबी!) कह दो: क्या मैं तुम्हें इस

- से उत्तम चीज़ बता दूँ। उन के लिये जो डरें। उन के पालनहार के पास ऐसे स्वर्ग हैं। जिन में नहरें बह रही हैं। वह उन में सदावासी होंगे। और निर्मल पत्नियाँ होंगी, तथा अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा है।
16. जो (यह) प्रार्थना करते हैं कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे, और हमें नरक की यातना से बचा।
17. जो सहनशील हैं, सत्यवादी हैं, आज्ञाकारी हैं, दानशील तथा भोरों में अल्लाह से क्षमा याचना करने वाले हैं।
18. अल्लाह साक्षी है जो न्याय के साथ कायम है, कि उस के सिवा कोई पुज्य नहीं है, इसी प्रकार फ़रिश्ते और ज्ञानी लोग भी (साक्षी हैं) कि उस के सिवा कोई पुज्य नहीं। वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
19. निस्संदेह (वास्तविक) धर्म अल्लाह के पास इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो विभेद किया तो अपने पास ज्ञान आने के पश्चात् आपस में द्वेष के कारण किया। तथा जो अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र (अस्वीकार) करेगा, तो निश्चय अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
20. फिर यदि वह आप से विवाद करें तो कह दें कि मैं स्वयं तथा जिस ने मेरा अनुसरण किया अल्लाह के आज्ञाकारी हो गये। तथा अहले किताब, और उम्मियों (अर्थात् जिन के पास किताब नहीं आई) से कहो कि क्या तुम भी आज्ञाकारी हो गये? यदि वह

आज्ञाकारी हो गये तो मार्गदर्शन पा गये। और यदि विमुख हो गये तो आप का दायित्व (संदेश) पहुँचा देना है। तथा अल्लाह भक्तों को देख रहा है।

21. जो लोग अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र करते हों, तथा नबियों को अवैध बध करते हों, तथा उन लोगों का बध करते हों जो न्याय का आदेश देते हैं तो उन्हें दुःखदायी यातना की शुभ सूचना सुना दो।
22. यही हैं जिन के कर्म संसार तथा परलोक में अकारण गये, और उन का कोई सहायक नहीं होगा।
23. हे नबी! क्या आप ने उन की दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाये जा रहे हैं, ताकि उन के बीच निर्णय करे तो उन का एक गिरोह मुँह फेर रहा है और वह है ही मुँह फेरने वाला।
24. उन की यह दशा इस लिये है कि उन्होंने ने कहा कि नरक की अग्नि हमें गिनती के कुछ दिन ही दूरेगी, तथा उन को अपने धर्म में उन की मिथ्या बनाई हुई बातों ने धोखे में डाल रखा है।
25. तो उन की क्या दशा होगी, जब हम उन को उस दिन एकत्र करेंगे, जिस (के आने) में कोई संदेह नहीं, तथा प्रत्येक प्राणी को उस के किये का भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा, और किसी के साथ कोई अत्याचार नहीं किया जायेगा।
26. हे (नबी)! कहो: हे अल्लाह! राज्य के अधिपति (स्वामी)! तू जिसे चाहे राज्य दे, और जिस से चाहे राज्य छीन ले,

- तथा जिसे चाहे सम्मान दे, और जिसे चाहे अपमान दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निस्संदेह तू जो चाहे कर सकता है।
27. तू रात को दिन में प्रविष्ट कर देता है, तथा दिन को रात में प्रविष्ट कर देता है। और जीव को निर्जीव से निकालता है। तथा निर्जीव को जीव से निकालता है, और जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।
28. मुमिनों को चाहिये कि वह ईमान वालों के विरुद्ध काफिरों को अपना सहायक मित्र न बनायें। और जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह से कोई संबंध नहीं। परन्तु उन से बचने के लिये। और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डरा रहा है। और अल्लाह ही की ओर जाना है।
29. हे नबी! कह दो कि जो तुम्हारे मन में है उसे मन ही में रखो या व्यक्त करो अल्लाह उसे जानता है। तथा जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह सब को जानता है। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
30. जिस दिन प्रत्येक प्राणी ने जो सुकर्म किया है, उसे उपस्थित पायेगा, तथा जिस ने कुकर्म किया है वह कामना करेगा कि उस के तथा उस के कुकर्मा के बीच बड़ी दूरी होती। तथा अल्लाह तुम्हें स्वयं से डराता है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।
31. हे नबी! कह दो: यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम करेगा। तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा। और
- अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
32. हे नबी! कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो। फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।
33. वस्तुतः अल्लाह ने आदम, नूह, इब्राहीम की संतान तथा इमरान की संतान को संसार वासियों में चुन लिया था।
34. यह एक दूसरे की संतान है, और अल्लाह सब सुनता और जानता है।
35. जब इमरान की पत्नी ने कहा: हे मेरे पालनहार! जो मेरे गर्भ में है, मैं ने तेरे लिये उसे मुक्त करने की मनौती मान ली है। तू इसे मुझ से स्वीकार कर ले। वास्तव में तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।
36. फिर जब उस ने बालिका जनी तो (संताप से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे तो बालिका हो गई, हालाँकि जो उस ने जना उस का अल्लाह को भली भाँति ज्ञान था-और नर, नारी के समान नहीं होता-, और मैं ने उस का नाम मर्यम रखा है। और मैं उसे तथा उस की संतान को धिक्कारे हुये शैतान से तेरी शरण में देती हूँ।^[1]
37. तो तेरे पालनहार ने उसे भली भाँति स्वीकार कर लिया। तथा उस का अच्छा प्रतिपालन किया। और ज़करिय्या को उस का संरक्षक बनाया। ज़करिय्या जब भी उस के मेहराब (उपासना कोष्ठ) में जाता तो उस के पास कुछ खाद्य पदार्थ पाता वह कहता कि हे मर्यम! यह कहीं से (आया) है? वह कहती: यह

- अल्लाह के पास से (आया) है। वास्तव में अल्लाह जिसे चाहता है अगणित जीविका प्रदान करता है।
38. तब ज़करिय्या ने अपने पालनहार से प्रार्थना की हे मेरे पालनहार! मुझे अपनी ओर से सदाचारी संतान प्रदान कर। निस्सदिह तू प्रार्थना सुनने वाला है।
39. तो फ़रिश्तों ने उसे पुकारा- जब वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था- कि: अल्लाह तुझे "यह्या" की शुभ: सूचना दे रहा है, जो अल्लाह के शब्द (इंसा) का पुष्टि करने वाला, प्रमुख तथा संयमी और सदाचारियों में से एक नबी होगा।
40. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे कोई पुत्र कहाँ से होगा, जब कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। और मेरी पत्नी बाँझ है? उस ने कहा: अल्लाह इसी प्रकार जो चाहता है कर देता है।
41. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण बना दे। उस ने कहा: तेरा लक्षण यह होगा कि तीन दिन तक लोगों से बात नहीं कर सकेगा। परन्तु संकेत से। तथा अपने पालनहार का बहुत स्मरण करता रह। और संध्या, प्रातः उस की पवित्रता का वर्णन कर।
42. और (याद करो) जब फ़रिश्तों ने मर्यम से कहा: हे मर्यम! तुझे अल्लाह ने चुन लिया, तथा पवित्रता प्रदान की, और संसार की स्त्रियों पर तुझे चुन लिया।
43. हे मर्यम! अपने पालनहार की अज्ञाकारी रहो। और सज्दा करो तथा रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करती रहो।
44. यह ग़ैब (परोक्ष) की सूचनायें हैं। जिन्हें हम आप की ओर प्रकाशना कर रहे हैं। और आप उन के पास उपस्थित न थे जब वह अपनी लेखनियाँ फेंक रहे थे कि कौन मर्यम का अभिरक्षण करेगा। और न उन के पास उपस्थित थे जब वह झगड़ रहे थे।
45. जब फ़रिश्तों ने कहा: हे मर्यम! अल्लाह तुझे अपने एक शब्द शुभ सूचना दे रहा है। जिस का नाम मसीह इंसा पुत्र मर्यम होगा। वह लोक-परलोक में प्रमुख, तथा (मेरे) समीपवर्तियों में होगा।
46. वह लोगों से गोद में तथा अघेड़ आयु में बातें करेगा, और सदाचारियों में होगा।
47. मर्यम ने (आश्चर्य से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे पुत्र कहाँ से होगा, मुझे तो किसी पुरुष ने हाथ भी नहीं लगाया है? उस ने कहा: इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है उत्पन्न कर देता है। जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये कहता है कि: "हो जा" तो वह हो जाता है।
48. और अल्लाह उस को पुस्तक तथा प्रबोध और तौरात तथा इंजील की शिक्षा देगा।
49. और फिर वह बनी इसाईल का एक रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पालनहार की ओर से निशानी लाया हूँ। मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से पक्षी के आकार

- के समान बनाऊंगा, फिर उस में फूँक दूँगा तो वह अल्लाह की अनुमति से पक्षी बन जायेगा। और अल्लाह की अनुमति से जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को स्वस्थ कर दूँगा। और मुर्दों को जीवित कर दूँगा। तथा जो कुछ तुम खाते तथा अपने घरों में संचित करते हो उसे तुम्हें बता दूँगा। निस्संदेह इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानियाँ हैं, यदि तुम ईमान वाले हो।
50. तथा मैं उस की सिद्धि करने वाला हूँ जो मुझ से पहले की है "तौरात"। तुम्हारे लिये कुछ चीजों को हलाल (वैध) करने वाला हूँ, जो तुम पर हराम (अवैध) की गयी हैं। तथा मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की निशानी ले कर आया हूँ। अतः तुम अल्लाह से डरो, और मेरे अज्ञाकारी हो जाओ।
51. वास्तव में अल्लाह मेरा और तुम सब का पालनहार है, अतः उसी की इबादत (बंदना) करो। यही सीधी डगर है।
52. तथा जब ईसा ने उन से कुफ़्र का संवेदन किया तो कहा: अल्लाह के धर्म की सहायता में कौन मेरा साथ देगा? तो हवारियों (सहचरों) ने कहा: हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाये, तुम इस के साक्षी रहो कि हम मुस्लिम (अज्ञाकारी) हैं।
53. हे हमारे पालनहार! जो कुछ तू ने उतारा है, हम उस पर ईमान लाये, तथा तेरे रसूल का अनुसरण किया, अतः हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले।
54. तथा उन्होंने ने षड्यंत्र रचा, और हम ने भी षड्यंत्र रचा। तथा अल्लाह षड्यंत्र रचने वालों में सब से अच्छा है।
55. जब अल्लाह ने कहा: हे ईसा! मैं तुझे पूर्णतः लेने वाला तथा अपनी ओर उठाने वाला हूँ। तथा तुझे काफिरों से पवित्र (मुक्त) करने वाला हूँ। तथा तेरे अनुयायियों को प्रलय के दिन तक काफिरों के ऊपर करने वाला हूँ। फिर तुम्हारा लौटना मेरी ही ओर है। तो मैं तुम्हारे बीच उस विषय में निर्णय कर दूँगा जिस में तुम विभेद कर रहे हो।
56. फिर जो काफिर हो गये, उन्हें लोक परलोक में कड़ी यातना दूँगा, तथा उन का कोई सहायक न होगा।
57. तथा जो ईमान लाये, और सदाचार किये तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल दूँगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।
58. हे नबी! यह हमारी आयतें और तत्वज्ञयता की शिक्षा है जो हम तुम्हें सुना रहे हैं।
59. वस्तुतः अल्लाह के पास ईसा की मिसाल ऐसी ही है, जैसे आदम की। उसे (अर्थात् आदम को) मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर उस से कहा: "हो जा" तो वह हो गया।
60. यह आप के पालनहार की ओर से सत्य है, अतः आप संदेह करने वालों में न हों।
61. फिर आप के पास ज्ञान आ जाने के

- पश्चात् कोई आप से ईसा के विषय में विवाद करे, तो कहो कि आओ हम अपने पुत्रों तथा तुम्हारे पुत्रों, और अपनी स्त्रियों तथा तुम्हारी स्त्रियों को बुलाते हैं, और स्वयं को भी, फिर अल्लाह से सविनय प्रार्थना करें, कि अल्लाह की धिक्कार मिथ्यावादियों पर हो।
62. वास्तव में यही सत्य वर्णन है, तथा अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। निश्चय अल्लाह ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
63. फिर भी यदि वह मुँह फेरें, तो निस्संदेह अल्लाह उपद्रवियों को भली भाँति जानता है।
64. हे नबी! कहो कि हे अहले किताब! एक ऐसी बात की ओर आ जाओ जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य है। कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करें, और किसी को उस का साझी न बनायें, तथा हम में से कोई एक दूसरे को अल्लाह के सिवा पालनहार न बनाये। फिर यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि तुम साक्षी रहो कि हम (अल्लाह के) अज्ञाकारी हैं।
65. हे अहले किताब! तुम इब्राहीम के बारे में विवाद क्यों करते हो, जब कि तौरात तथा इंजील इब्राहीम के पश्चात् उतारी गई है? क्या तुम समझ नहीं रखते?
66. और फिर तुम्ही ने उस विषय में विवाद किया जिस का तुम को कुछ ज्ञान था, तो उस विषय में क्यों
- विवाद कर रहे हो जिस का तुम्हें कोई ज्ञान नहीं! तथा अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।
67. इब्राहीम न यहूदी था, न नसरानी (ईसाई)। परन्तु वह एकेधरवादी, मुस्लिम "आज्ञाकारी" था। तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।
68. वास्तव में इब्राहीम से सब से अधिक समीप तो वह लोग हैं जिन्होंने उस का अनुसरण किया, तथा यह नबी, और जो ईमान लाये। और अल्लाह ईमान वालों का संरक्षकभूमित्र है।
69. अहले किताब में से एक गिरोह की कामना है कि तुम्हें कुपथ कर दें। जब कि वह स्वयं को कुपथ कर रहा है, परन्तु वह समझते नहीं हैं।
70. हे अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़ क्यों कर रहे हो, जब कि: तुम साक्षी हो? के विषय में।
71. हे अहले किताब! क्यों सत्य को असत्य के साथ मिलाकर सदिग्ध कर देते हो, और सत्य को छुपाते हो, जब कि तुम जानते हो।
72. अहले किताब के एक समुदाय ने कहा: कि दिन के आरंभ में उस पर ईमान ले आओ जो ईमान वालों पर उतारा गया है, और उस के अन्त (अर्थात: संध्या समय) कुफ़ कर दो, संभवतः वह फिर जायें।
73. और केवल उसी की मानो जो तुम्हारे (धर्म) का अनुसरण करे। (हे नबी!) कह दो कि मार्गदर्शन तो वही है जो अल्लाह का मार्गदर्शन

- हैं। (और यह भी न मानो कि) जो (धर्म) तुम को दिया गया है वैसा किसी और को दिया जायेगा, अथवा वह तुम से तुम्हारे पालनहार के पास विवाद कर सकेंगे। आप कह दें कि प्रदान अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहे देता है। और अल्लाह विशाल ज्ञानी है।
74. वह जिसे चाहे अपनी दया के साथ विशेष कर देता है, तथा अल्लाह बड़ा दानशील है।
75. तथा अहले किताब में वह भी है जिस के पास चाँदी-सोने का ढेर धरोहर रख दो तो उसे तुम्हें चुका देगा। तथा उन में वह भी है कि: जिस के पास एक दीनार भी धरोहर रख दो, तो वह तुम्हें नहीं चुकायेगा, परन्तु जब सदा उस के सिर पर सवार रहो। यह (बात) इस लिये है कि उन्हीं ने कहा कि उम्मियों के बारे में हम पर कोई दोष नहीं। तथा अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।
76. क्यों नहीं, जिस ने अपना वचन पूरा किया और (अल्लाह से) डरा तो वास्तव में अल्लाह डरने वालों से प्रेम करता है।
77. निस्संदेह जो अल्लाह के वचन तथा अपनी शपथों के बदले तनिक मूल्य खरीदते हैं, उन्हीं का अखिरत (परलोक) में कोई भाग नहीं। न प्रलय के दिन अल्लाह उन से बात करेगा, और न उन की ओर देखेगा, और न उन्हें पवित्र करेगा। तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।
78. और बैशक उन में से एक गिरोह ऐसा है जो अपनी जुवानों को किताब पढ़ते समय मरोड़ते हैं ताकि तुम उसे पुस्तक में से समझो जब कि वह पुस्तक में से नहीं है। और कहते हैं कि वह अल्लाह के पास से है जब कि वह अल्लाह के पास से नहीं है। और अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।
79. किसी पुरुष जिस के लिये अल्लाह ने पुस्तक, निर्णयशक्ति और नुबुव्वत दी हो उस के लिये योग्य नहीं कि लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे दास बन जाओ। अपितु (वह तो यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले बन जाओ। इस कारण कि तुम पुस्तक की शिक्षा देते हो। तथा इस कारण कि उस का अध्ययन स्वयं भी करते रहते हो।
80. तथा वह तुम्हें कभी आदेश नहीं देगा कि फ़रिश्तों तथा नबियों को अपना पालनहार (पूज्य) बना लो, क्या तुम को कुफ़र करने का आदेश देगा, जब कि तुम अल्लाह के अज्ञाकारी हो?
81. तथा (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया कि जब भी मैं तुम्हें कोई पुस्तक और प्रबोध (तत्वदर्शिता) दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई रसूल उसे प्रमाणित करते हुये आये, जो तुम्हारे पास है, तो तुम अवश्य उस पर ईमान लाना। और उस का समर्थन करना। (अल्लाह) ने कहा: क्या तुम ने स्वीकार किया, तथा इस पर मेरे वचन का भार उठाया? तो सब ने कहा: हम ने स्वीकार कर लिया। अल्लाह ने कहा

- तुम साक्षी रहो। और मैं भी तुम्हारे साथ साक्षियों में हूँ।
82. फिर जिस ने इस के पश्चात् मुँह फेर लिया, तो वही अवैज्ञाकारी है।
83. तो क्या वह अल्लाह के धर्म (इस्लाम) के सिवा (कोई दूसरा धर्म) खोज रहे हैं? जब कि जो आकाशों तथा धरती में हैं, स्वेच्छा तथा अनिच्छा उसी के आज्ञाकारी हैं, तथा सब उसी की ओर फेरे जायेंगे।
84. (हे नबी!) आप कहें कि हम अल्लाह पर तथा जो हम पर उतारा गया, और जो इब्राहीम और इसमाईल तथा इसहाक और याकूब एवं (उन की) संतानों पर उतारा गया, तथा जो मूसा, ईसा, तथा अन्य नबियों को उन के पालनहार की ओर से प्रदान किया गया है (उन पर) ईमान लाये। हम उन (नबियों) में किसी के बीच कोई अंतर नहीं करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं।
85. और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।
86. अल्लाह ऐसी जाति को कैसे मार्गदर्शन देगा जो अपने ईमान के पश्चात् काफिर हो गये, और साक्षी रहे कि यह रसूल सत्य है, तथा उन के पास खुले तर्क आ गये?? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।
87. इन्हीं का प्रतिकार (बदला) यह है कि उन पर अल्लाह तथा फरिश्तों और सब लोगों की धिक्कार होगी।
88. वह उस में सदावासी होंगे, उन से यातना कम नहीं की जायेगी, और न उन्हें अवकाश दिया जायेगा।
89. परन्तु जिन्होंने ने इस के पश्चात् तौब: (क्षमा याचना) कर ली, तथा सुधार कर लिया, तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
90. वास्तव में जो अपने ईमान लाने के पश्चात् काफिर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते गये तो उन की तौब: (क्षमा याचना) कदापि स्वीकार नहीं की जायेगी, तथा वही कुपथ हैं।
91. निश्चय जो काफिर हो गये, तथा काफिर रहते हुये मर गये तो उन से धरती भर सोना भी स्वीकार नहीं किया जायेगा, यद्यपि उस के द्वारा अर्थदण्ड दे। उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है। और उन का कोई सहायक न होगा।



92. तुम पुण्य नहीं पा सकोगे, जब तक उस में से दान न करो जिस से मोह रखते हो, तथा तुम जो भी दान करोगे, वास्तव में अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।
93. प्रत्येक खाद्य पदार्थ बनी इस्राईल के लिये हलाल (वैध) थे, परन्तु जिसे इसराईल ने अपने ऊपर हराम (अवैध) कर लिया, इस से पहले कि तौरात उतारी जाये। (हे नबी!) कहो कि तौरात लाओ तथा उसे पढ़ो, यदि तुम सत्यवादी हो।
94. फिर इस के पश्चात् जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगायें, तो वही वास्तव में अत्याचारी है।
95. उन से कह दो, अल्लाह सच्चा है, अतः तुम एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर चलो, तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।
96. निस्संदेह पहला घर जो मानव के लिये (अल्लाह की बन्दना का केन्द्र) बनाया गया, वह वही है जो मक्का में है, जो शुभ तथा संसार वासियों के लिये मार्गदर्शन है।
97. उस में खुली निशानियाँ हैं (जिन में) मक़ामे इब्राहीम है, तथा जो कोई उस (की सीमा) में प्रवेश कर गया तो वह शांत (सुरक्षित) हो गया। तथा अल्लाह के लिये लोगों पर इस घर का हज्ज अनिवार्य है, जो उस तक राह पा सकता हों। तथा जो कुफ़र करेगा, तो अल्लाह संसार वासियों से निस्पृह है।
98. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! यह क्या है कि तुम अल्लाह की

आयतों के साथ कुफ़र कर रहे हो, जब कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों का साक्षी है।

99. हे अहले किताब! किस लिये लोगों को जो ईमान लाना चाहें, अल्लाह की राह से रोक रहे हो, उसे उलझाना चाहते हो जब कि तुम साक्षी²¹ हो, और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है।
100. हे ईमान वालो! यदि तुम अहले किताब के किसी गिरोह की बात मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान के पश्चात् फिर तुम्हें काफ़िर बना देगा।
101. तथा तुम कुफ़र कैसे करोगे जब कि तुम्हारे सामने अल्लाह की आयतें पढ़ी जा रही हैं, और तुम में उस के रसूल मौजूद है? और जिस ने अल्लाह को धाम लिया तो उसे सुपथ दिखा दिया गया।
102. हे ईमान वालो! अल्लाह से ऐसे डरो जो वास्तव में उस से डरना हो, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुये ही आनी चाहिये।
103. तथा अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर दृढ़ता से पकड़ लो, और विभेद में न पड़ो। तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे, तो तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया, और तुम उस के पुरस्कार के कारण भाई भाई हो गये। तथा तुम अग्नि के गड़हे के किनारे पर थे, तो तुम्हें उस से निकाल दिया, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।

104. तथा तुम में एक समुदाय ऐसा अवश्य होना चाहिये जो भली बातों की ओर बुलाये, तथा भलाई का आदेश देता रहे, और बुराई से रोकता रहे, और वही सफल होंगे।
105. तथा उन के समान न हो जाओ, जो खुली निशानियाँ आने के पश्चात् विभेद तथा आपसी विरोध में पड़ गये, और उन्हीं के लिये घोर यातना है।
106. जिस दिन बहुत से मुख उजले, तथा बहुत से मुख काले होंगे। फिर जिन के मुख काले होंगे (उन से कहा जायेगा): क्या तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ़र कर लिया था? तो अपने कुफ़र करने का दण्ड चखो।
107. तथा जिन के मुख उजले होंगे वह अल्लाह की दया (स्वर्ग) में रहेंगे। वह उस में सदावासी होंगे।
108. यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को हक्क के साथ सुना रहे हैं, तथा अल्लाह संसार वासियों पर अत्याचार नहीं करना चाहता।
109. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों में और जो धरती में है। तथा अल्लाह ही की ओर सब विषय फेरे जायेंगे।
110. तुम सब से अच्छी उम्मत हो, जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो, तथा बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान (विश्वास) रखते हो। और यदि अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिये अच्छा होता। उन में कुछ ईमान वाले हैं, और अधिकतर अवैज्ञाकारी है।
111. वह तुम को सताने के सिवा कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि तुम से युद्ध करोगे तो वह तुम को पीठ दिखा देंगे। फिर सहायता नहीं दिये जायेंगे।
112. इन (यहूदियों) पर जहाँ भी रहें, अपमान थोप दिया गया, (यह और बात है कि) अल्लाह की शरण अथवा लोगों की शरण में हो, यह अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी हो गये, तथा उन पर दरिद्रता थोप दी गयी। यह इस कारण हुआ कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़र कर रहे थे और नबियों का अवैध बध कर रहे थे। यह इस कारण कि उन्हीं ने अवैज्ञा की, और (धर्म की) सीमा का उल्लंघन कर रहे थे।
113. वह सभी समान नहीं हैं, अहले किताब में एक (सत्य पर) स्थित उम्मत भी है, जो अल्लाह की आयतें रातों में पढ़ते हैं, तथा सज्दा करते रहते हैं।
114. अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हैं, तथा भलाई का अदेश देते, और बुराई से रोकते हैं, तथा भलाईयों में अग्रसर रहते हैं, और यही सदाचारियों में हैं।
115. वह जो भी भलाई करेंगे, उस की उपेक्षा(अनादर) नहीं किया जायेगा और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँति जानता है।
116. (परन्तु) जो काफ़िर⁽²⁾ हो गये, उन

के धन और उन की संतान अल्लाह (की यातना) से उन्हें तनिक भी बचा नहीं सकेगी, तथा वही नारकी है, वही उस में सदावासी होंगे।

117. जो दान वह इस संसारिक जीवन में करते हैं वह उस वायु के समान है जिस में पाला हो, जो किसी कौम की खेती को लग जाये जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया हो, और उस का नाश कर दे। तथा अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।
118. हे ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को अपना भेदी न बनाओ, वह तुम्हारा बिगाड़ने में तनिक भी नहीं चूकेंगे, उन को वही बात भाती है जिस से तुम्हें दुःख हो। उन के मुखों से शत्रुता खुल चुकी है, तथा जो उन के दिल छुपा रहे हैं वह इस से बढ़कर है, हम ने तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन कर दिया है, यदि तुम समझो।
119. सावधान! तुम ही वह हो कि उन से प्रेम करते हो, तथा वह तुम से प्रेम नहीं करते। और तुम सभी पुस्तकों पर ईमान रखते हो, तथा वह जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये। और जब अकेले होते हैं तो क्रोध से तुम पर उँगलियों की पोरें चबाते हैं। कह दो कि अपने क्रोध से मर जाओ, निस्संदेह अल्लाह सीनों की बातें जानता है।
120. यदि तुम्हारा कुछ भला हो तो उन्हें

बुरा लगता है। और यदि तुम्हारा कुछ बुरा हो जाये तो उस से प्रसन्न हो जाते हैं। तथा यदि तुम सहन करते रहे, और आज्ञाकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। उन के सभी कर्म अल्लाह के घेरे में हैं।

121. तथा (हे नबी!) वह समय याद करो जब आप प्रातः अपने घर से निकले, ईमान वालों को युद्ध के स्थानों पर नियुक्त कर रहे थे, तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
122. तथा (याद करो) जब तुम में से दो गिरोहों ने कायरता दिखाने का विचार किया, और अल्लाह उन का रक्षक था। तथा ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये।
123. अल्लाह बद्र में तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब कि तुम निर्बल थे। अतः अल्लाह से डरते रहो, ताकि उस के कृतज्ञ रहो।
124. (हे नबी! वह समय भी याद करें) जब आप ईमान वालों से कह रहे थे: क्या तुम्हारे लिये यह बस नहीं है कि अल्लाह तुम्हें (आकाश से) उतारे हुये तीन हजार फ़रिश्तों द्वारा समर्थन दे?
125. क्यों^[1] नहीं? यदि तुम सहन करोगे, तथा आज्ञाकारी रहोगे, और वह (शत्रु) तुम्हारे पास अपनी इसी उत्तेजना के साथ आ गये, तो तुम्हारा पालनहार तुम्हें (तीन नहीं) पाँच हजार चिन्ह लगे फ़रिश्तों द्वारा समर्थन देगा।

126. और अल्लाह ने इस को तुम्हारे लिये केवल शुभ सूचना बनाया है। और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये, और समर्थन तो केवल अल्लाह ही के पास से है, जो प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
127. ताकि वह काफ़िरोँ का एक भाग काट दे, अथवा उन को अपमानित कर दे। फिर वह असफल वापिस हो जायें।
128. हे नबी! इस विषय में आप को कोई अधिकार नहीं, अल्लाह चाहे तो उन की क्षमा याचना स्वीकार करे, या दण्ड दे, क्यों कि वह अत्याचारी हैं।
129. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह जिसे चाहे क्षमा करे, और जिसे चाहे दण्ड दे तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
130. हे ईमान वालो! कई कई गुणा कर के ब्याज न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि सफल हो जाओ।
131. तथा उस अग्नि से बचो जो काफ़िरोँ के लिये तैयार की गयी है।
132. तथा अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।
133. और अपने पालनहार की क्षमा और उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिस की चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, आज्ञाकारियों के लिये तैयार की गयी है।
134. जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते, और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं। और अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता है।
135. और जब कभी वह कोई बड़ा पाप कर जायें, अथवा अपने ऊपर अत्याचार कर लें, तो अल्लाह को याद करते हैं, फिर अपने पापों के लिये क्षमा माँगते हैं। तथा अल्लाह के सिवा कौन है, जो पापों को क्षमा करे? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़े नहीं रहते।
136. इन्हीं का प्रतिफल (बदला) उनके पालनहार की क्षमा तथा ऐसी स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं, जिन में वह सदावासी होंगे, तो क्या ही अच्छा है सत्कर्मियों का यह प्रतिफल?
137. तुम से पहले भी इसी प्रकार हो चुका है। तुम धरती में फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम कैसा रहा?
138. यह (कूर्आन) लोगों के लिये एक वर्णन तथा मॉग दर्शन, और एक शिक्षा है (अल्लाह से) डरने वालों के लिये।
139. (इस पराजय से) तुम निर्बल तथा उदासीन न बनो। और तुम ही सर्वोच्च रहोगे, यदि तुम ईमान वाले हो।
140. यदि तुम्हें कोई घाव लगा है, तो कौम (शत्रु) को भी इसी के समान घाव लग चुका है। तथा उन दिनों को हम लोगों के बीच फेरते

- रहते हैं। और ताकि अल्लाह उन को जान ले जो ईमान लाये, और तुम में से साक्षी बनाये। और अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।
141. तथा ताकि अल्लाह उन्हें शुद्ध कर दे, जो ईमान लाये हैं, और काफिरों का नाश कर दे।
142. क्या तुम ने समझ रखा है कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे? जब कि अल्लाह ने (परीक्षा कर के) उन्हें नहीं जाना है जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है, और न सहनशीलों को जाना है?
143. तथा तुम मौत की कामना कर रहे थे इस से पूर्व कि उस का सामना करो, तो अब तुम ने उसे आँखों से देख लिया है, और देख रहे हो।
144. मुहम्मद केवल एक रसूल हैं, इस से पहले बहुत से रसूल ही चुके हैं, तो क्या यदि वह मर गये अथवा मार दिये गये, तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे? तथा जो अपनी एड़ियों के बल फिर जायेगा, तो वह अल्लाह को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकेगा, और अल्लाह शीघ्र ही कृतज्ञों को प्रतिफल प्रदान करेगा।
145. कोई प्राणी ऐसा नहीं जो अल्लाह की अनुमति के बिना मर जाये, उस का अंकित निर्धारित समय है, और जो संसारिक प्रतिफल चाहेगा, हम उसे उस में से कुछ देंगे, तथा जो परलोक का प्रतिफल चाहेगा हम उसे उस में से देंगे। और हम कृतज्ञों को शीघ्र ही प्रतिफल देंगे।
146. कितने ही नबी थे जिन के साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने युद्ध किया, तो वह अल्लाह की राह में आई आपदा पर न आलसी हुये, न निर्बल बने और न (शत्रु से) दबे। तथा अल्लाह धैर्यवानों से प्रेम करता है।
147. तथा उन का कथन बस यही था कि उन्होंने ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमारे लिये हमारे पापों को क्षमा कर दे, तथा हमारे विषय में हमारी अति को, और हमारे पैरों को दृढ़ कर दे, और काफिर जाति के विरुद्ध हमारी सहायता करा।
148. तो अल्लाह ने उन को संसारिक प्रतिफल तथा आखिरत (परलोक) का अच्छा प्रतिफल प्रदान कर दिया, तथा अल्लाह सुकर्मियों से प्रेम करता है।
149. हे ईमान वालो! यदि तुम काफिरों की बात मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल फेर देंगे, और तुम फिर से क्षति में पड़ जाओगे।
150. बल्कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है तथा वह सब से अच्छा सहायक है।
151. शीघ्र ही हम काफिरों के दिलों में तुम्हारा भय डाल देंगे, इस कारण कि उन्होंने ने अल्लाह का साक्षी उसे बना लिया है, जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है, और इन का आवास नरक है, और वह क्या ही बुरा आवास है?
152. तथा अल्लाह ने तुम से अपना वचन सच कर दिखाया है, जब तुम उस की अनुमति से उन को काट रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम ने

कायरता दिखायी, तथा (रसूल के) आदेश में विभेद कर लिया और अवैज्ञा की, इस के पश्चात् कि तुम्हें वह (विजय) दिखा दी, जिसे तुम चाहते थे, तुम में से कुछ संसार चाहते हैं, तथा कुछ लोग परलोक चाहते हैं। फिर तुम्हें उन से फेर दिया, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले, और तुम्हें क्षमा कर दिया, तथा अल्लाह ईमान वालों के लिये दानशील है।

153. (और याद करो) जब तुम चढ़े (भागें) जा रहे थे, और किसी की ओर मुड़ कर नहीं देख रहे थे, और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार रहे थे, तो (अल्लाह ने) तुम्हें शोक के बदले शोक दे दिया, ताकि जो तुम से खो गया और जो दुख तुम्हें पहुँचा उस पर उदासीन न हो, तथा अल्लाह उस से सूचित है, जो तुम कर रहे हो।

154. फिर तुम पर शोक के पश्चात् शान्ति (ऊँघ) उतार दी जो तुम्हारे एक गिरोह को आने लगी, और एक गिरोह को अपनी पड़ी हुई थी। वह अल्लाह के बारे में असत्य जाहिलिय्यत की सोच सोच रहे थे। वह कह रहे थे कि क्या हमारा भी कुछ अधिकार है? (हे नबी!) कह दें कि सब अधिकार अल्लाह को है। वह अपने मनों में जो छुपा रहे थे आप को नहीं बता रहे थे। वह कह रहे थे कि यदि हमारा कुछ भी अधिकार होता, तो यहाँ मारे नहीं जाते, आप कह दें: यदि तुम अपने घरों में रहते, तब भी जिन के (भाग्य में) मारा जाना लिखा है, वह अपने निहत होने

के स्थानों की ओर निकल आते। और ताकि अल्लाह, जो तुम्हारे दिलों में है उस की परीक्षा ले। तथा जो तुम्हारे दिलों में है उसे शुद्ध कर दे। और अल्लाह दिलों के भेदों से अवगत है।

155. वस्तुतः तुम में से जिन्होंने दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन मुँह फेर दिया, शैतान ने उन को उन के कुछ कुकर्मों के कारण फिसला दिया। तथा अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया है। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।

156. हे ईमान वालो! उन के समान न हो जाओ जो काफिर हो गये, तथा अपने भाईयों से- जब यात्रा में हों, अथवा युद्ध में- कहा कि यदि वह हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह उन के दिलों में इसे संताप बना दे। और अल्लाह ही जीवित करता तथा मौत देता है, और अल्लाह जो तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

157. यदि तुम अल्लाह की राह में मार दिये जाओ अथवा मर जाओ, तो अल्लाह की क्षमा उस से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

158. तथा यदि तुम मर गये अथवा मार दिये गये, तो अल्लाह ही के पास एकत्र किये जाओगे।

159. अल्लाह की दया के कारण ही आप उन के लिये कोमल (सुशील) हो गये, और यदि आप अकबड़ तथा कड़े दिल के होते, तो वह आप के पास से बिखर जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो, और उन के लिये

क्षमा की प्रार्थना करो, तथा उन से भी मुआमले में परामर्श करो, फिर जब कोई दृढ़ संकल्प ले लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है।

160. यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता। तथा यदि तुम्हारी सहायता न करे, तो फिर कौन है जो उस के पश्चात् तुम्हारी सहायता कर सके? अतः ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये।
161. किसी नबी के लिये योग्य नहीं कि अपभोग करे। और जो अपभोग करेगा, प्रलय के दिन उसे लायेगा फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार (बदला) दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
162. तो क्या जिस ने अल्लाह की प्रसन्नता का अनुसरण किया हो उस के समान हो जायेगा जो अल्लाह का क्रोध लेकर फिरा, और उस का आवास नरक है?
163. अल्लाह के पास उन की श्रेणियाँ हैं, तथा अल्लाह उसे देख रहा है जो वह कर रहे हैं।
164. अल्लाह ने ईमान वालों पर उपकार किया है कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन के सामने उस (अल्लाह) की आयतें सुनाता है, और उन्हें शुद्ध करता है तथा उन्हें पुस्तक (कुर्आन) और हिकमत (सुन्नत) की शिक्षा देता है, यद्यपि

वह इस से पहले खुले कुपथ में थे।

165. तथा जब तुम को एक दुःख पहुँचा जब कि इस के दुगना तुम ने पहुँचाया, तो तुम ने कह दिया कि यह कहाँ से आ गया? (हे नबी!) कह दो: यह तुम्हारे पास से आया। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
166. तथा जो भी आपदा दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन तुम पर आई, तो वह अल्लाह की अनुमति से, और ताकि वह ईमान वालों को जान ले।
167. और ताकि उन को जान ले, जो मुनाफ़िक हैं। और उन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में युद्ध करो, अथवा रक्षा करो, तो उन्हीं ने कहा कि यदि हम युद्ध होना जानते तो अवश्य तुम्हारा साथ देते। वह उस दिन ईमान से अधिक कुफ़्र के समीप थे, वह अपने मुखों से ऐसी बात बोल रहे थे जो उन के दिलों में नहीं थी। तथा अल्लाह जिसे वह छुपा रहे थे, अधिक जानता था।
168. इन्हीं ने ही अपने भाईयों से कहा, और (स्वयं घरों में) आसीन रह गये: यदि वह हमारी बात मानते, तो मारे नहीं जाते! (हे नबी!) कह दो: फिर तो मौत से अपनी रक्षा कर लो, यदि तुम सच्चे हो।
169. जो अल्लाह की राह में मार दिये गये तो तुम उन को मारा हुआ न समझो, बल्कि वह जीवित हैं, अपने पालनहार के पास जीविका दिये जा रहे हैं।
170. तथा उस से प्रसन्न है जो अल्लाह ने

उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है, और उन के लिये प्रसन्न (हर्षित) हो रहे हैं जो उन से मिले नहीं, उन के पीछे³¹ रह गये हैं कि उन्हें कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

171. वह अल्लाह के पुरस्कार और प्रदान के कारण प्रसन्न हो रहे हैं। तथा इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।
172. जिन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार को स्वीकार किया, इस के पश्चात् कि उन्हें आघात पहुँचा, उन में से उन के लिये जिन्होंने सुकर्म किया तथा (अल्लाह से) डरे, महा प्रतिफल है।
173. यह वह लोग हैं, जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे लिये लोगों (शत्रु) ने (वापिस आने का) संकल्प लिया है। अतः उन से डरो, तो इस ने उन के ईमान को और अधिक कर दिया, और उन्होंने ने कहा: हमें अल्लाह बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है।
174. तथा अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ वापिस हुये। उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा। तथा अल्लाह की प्रसन्नता पर चले, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।
175. वह शैतान है, जो तुम्हें अपने सहयोगियों से डरा रहा है, तो उन से न डरो, तथा मुझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो।
176. हे नबी! आप को वह काफिर उदासीन न करें, जो कुफ्र में

अग्रसर हैं, वह अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि आखिरत (परलोक) में उन का कोई भाग न बनाये, तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।

177. वस्तुतः जिन्होंने ईमान के बदले कुफ्र खरीद लिया, वह अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।
178. जो काफिर हो गये, वह कदापि यह न समझें कि हमारा उन को अवसर देना उन के लिये अच्छा है, वास्तव में हम उन्हें इस लिये अवसर दे रहे हैं कि उन के पाप अधिक हो जायें, तथा उन्हीं के लिये अपमानकारी यातना है।
179. अल्लाह ऐसा नहीं है कि ईमान वालों को उसी (दशा) पर छोड़ दे, जिस पर तुम हो, जब तक बुरे को अच्छे से अलग न कर दे, और अल्लाह ऐसा (भी) नहीं है कि तुम्हें गैब (परोक्ष) से सूचित कर दे, और परन्तु अल्लाह अपने रसूलों में से (परोक्ष पर अवगत करने के लिये) जिसे चाहे चुन लेता है। तथा यदि तुम ईमान लाओ, और अल्लाह से डरते रहो, तो तुम्हारे लिये बड़ा प्रतिफल है।
180. वह लोग कदापि यह न समझें जो उस में कृपण (कंजूसी) करते हैं, जो अल्लाह ने उन को अपनी दया से प्रदान किया है कि वह उन के लिये अच्छा है, बल्कि वह उन के लिये बुरा है, जिस में उन्हीं ने कृपण किया है। प्रलय के दिन उसे उन के गले का हार बना दिया

- जायेगा। और आकाशों तथा धरती की मीरास (उत्तराधिकार) अल्लाह के लिये है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से सूचित है।
181. अल्लाह ने उन की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन और हम धनी हैं, उन्होंने ने जो कुछ कहा है हम उसे लिख लेंगे, और उन के नबियों की अवैध हत्या करने को भी, तथा कहेंगे कि दहन की यातना चखो।
182. यह तुम्हारे? कर्तूतों का दुष्परिणाम है, तथा वास्तव में अल्लाह बंदों के लिये तनिक भी अत्याचारी नहीं है।
183. जिन्होंने ने कहा: अल्लाह ने हम से वचन लिया है कि किसी रसूल का विश्वास न करें, जब तक हमारे समक्ष ऐसी बलि न दें जिसे अग्नि खा⁽¹⁾ जाये। (हे नबी!) आप कह दें कि मुझ से पूर्व बहुत से रसूल खुली निशानियाँ और वह चीज़ लाये जो तुम ने कहीं। तो तुम ने उन की हत्या क्यों कर दी, यदि तुम सच्चे हो तो?
184. फिर यदि इन्होंने ने आप को झुठला दिया तो आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये हैं, जो खुली निशानियाँ तथा (आकाशीय) ग्रंथ और प्रकाशक पुस्तकें लाये।
185. प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है। और तुम्हें तुम्हारे (कर्माँ का) प्रलय के दिन भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा तो (उस दिन) जो व्यक्ति नरक से बचा लिया गया
- तथा स्वर्ग में प्रवेश पा गया, तो वह सफल हो गया। तथा संसारिक जीवन धोखे की पूजी के सिवा कुछ नहीं है।
186. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे धनों तथा प्राणों में तुम्हारी परीक्षा अवश्य ली जायेगी। और तुम उन से अवश्य बहुत सी दुःखद बातें सुनोगे जो तुम से पूर्व पुस्तक दिये गये। तथा उन से जो मिश्रणवादी हैं। तथा यदि तुम ने सहन किया, और (अल्लाह से) डरते रहे तो यह बड़े साहस की बात होगी।
187. तथा (हे नबी!) याद करो जब अल्लाह ने उन से दृढ़ वचन लिया था जो पुस्तक दिये गये कि तुम अवश्य इसे लोगों के लिये उजागर करते रहोगे और उसे छुपावोगे नहीं। तो उन्होंने ने इस (वचन) को अपने पीछे डाल दिया (भंग कर दिया) और उस के बदले तनिक मूल्य खरीद लिया। तो वह कितनी बुरी चीज़ खरीद रहे है?!
188. (हे नबी!) जो अपने कर्तूतों पर प्रसन्न हो रहे है और चाहते है कि उन कर्माँ के लिये सराहे जायें जो उन्होंने ने नहीं किये। आप उन्हें कदापि न समझें कि यातना से बचे रहेंगे। तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।
189. तथा आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
190. वस्तुतः आकाशों तथा धरती की

रचना, और रात्री तथा दिवस के एक के पश्चात् एक आते जाते रहने में मतिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) हैं।

191. जो खड़े, बैठे तथा सोये (प्रत्येक स्थिति में) अल्लाह की याद करते, तथा आकाशों और धरती की रचना में विचार करते रहते हैं। (कहते हैं): हे हमारे पालनहार! तू ने इसे व्यर्थ नहीं रचा है। हमें अग्नि के दण्ड से बचा ले।
192. हे हमारे पालनहार! तू ने जिसे नरक में झोंक दिया, तो उसे अपमानित कर दिया, और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।
193. हे हमारे पालनहार! हम ने एक पुकारने वाले को ईमान के लिये पुकारते हुये सुना, कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये, हे हमारे पालनहार! हमारे पाप क्षमा कर दे, तथा हमारी बुराईयों को अन देखी कर दे, तथा हमारी मौत पुनीतों (सदाचारियों) के साथ हो।
194. हे हमारे पालनहार! हम को, तू ने अपने रसूलों द्वारा जो वचन दिया है, हमें वह प्रदान कर, तथा प्रलय के दिन हमें अपमानित न कर, वास्तव में तू वचन विरोधी नहीं है।
195. तो उन के पालनहार ने उन की (प्रार्थना) सुन ली, (तथा कहा कि): निस्संदेह मैं किसी कार्यकर्ता के कार्य को व्यर्थ नहीं करता, नर हो अथवा नारी। तो जिन्होंने हिजरत

(प्रस्थान) की, तथा अपने घरों से निकाले गये, और मेरी राह में सताये गये और युद्ध किया, तथा मारे गये, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देंगे। तथा उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें बह रही हैं। यह अल्लाह के पास से उन का प्रतिफल होगा। और अल्लाह ही के पास अच्छा प्रतिफल है।

196. हे नबी! नगरों में काफिरों का (सुख सुविधा के साथ) फिरना आप को धोखे में न डाल दे।
197. यह तनिक लाभ है, फिर उन का स्थान नरक है। और वह क्या ही बुरा आवास है।
198. परन्तु जो अपने पालनहार से डरे तो उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे। यह अल्लाह के पास से अतिथि सत्कार होगा। तथा जो अल्लाह के पास है पुनीतों के लिये उत्तम है।
199. और निःसंदेह अहले किताब (अर्थात् यहूद और ईसाई) में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं। और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है उस पर भी। अल्लाह से डरे रहते हैं। और उस की आयतों को थोड़ी थोड़ी कीमतों पर बेचते भी नहीं।¹¹ उन का बदला उन के रब के पास है। निःसंदेह अल्लाह जल्दी ही हिसाब लेने वाला है।
200. हे ईमान वालो! तुम धैर्य रखो। और एक दूसरे को थामे रखो। और

जिहाद के लिये तैयार रहो। और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम अपने उद्देश्य को पहुँचो।

सूरह निसा - 4

यह सूरह मद्नी है, इस में 176 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे मनुष्यों! अपने उस पालनहार से डरो, जिस ने तुम को एक जीव (आदम) से उत्पन्न किया, तथा उसी से उस की पत्नी (हव्वा) को उत्पन्न किया, और उन दोनों से बहुत से नर नारी फैला दिये। उस अल्लाह से डरो जिस के द्वारा तुम एक दूसरे से (अधिकार) माँगतें हो, तथा रक्त संबंधों को तोड़ने से डरो, निस्संदेह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है।
2. तथा (हे संरक्षको!) अनाथों को उन के धन चुका दो, और (उन की) अच्छी चीज़ से (अपनी) बुरी चीज़ न बदलो, और उन के धन अपने धनों में मिला कर न खाओ, निस्संदेह वह बहुत बड़ा पाप है।
3. और यदि तुम डरो कि अनाथ (बालिकाओं) के विषय में न्याय नहीं कर सकोगे तो नारियों में से जो भी तुम्हें भायें, दो से, तीन से चार तक से विवाह कर लो। और यदि डरो कि न्याय नहीं करोगे तो एक ही से करो, अथवा जो तुम्हारे स्वामित्व में हों उसी पर

बस करो। यह अधिक समीप है कि अन्याय न करो।

4. तथा स्त्रियों को उन के महर (विवाह उपहार) सप्रसन्नता से चुका दो। फिर यदि वह उस में से कुछ तुम्हें अपनी इच्छा से दे दें तो प्रसन्न हो कर खाओ।
5. तथा अपने धन जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये जीवन स्थापन का साधन बनाया है अज्ञानों को न दो। हाँ, उस में से उन्हें खाना, कपड़ा दो, और उन से भली बात बोलो।
6. तथा अनाथों की परीक्षा लेते रहो यहाँ तक कि वह विवाह की आयु को पहुँच जायें। तो यदि तुम उन में सुधार देखो तो उन का धन उन को समर्पित कर दो। और उसे अपव्यय तथा शीघ्रता से इस लिये न खाओ कि वह बड़े हो जायेंगे। और जो धनी हो तो वह बचे, तथा जो निर्धन हो तो वह नियमानुसार खा ले। तथा जब तुम उन का धन उन के हवाले करो तो उन पर साक्षी बना लो। और अल्लाह हिसाब लेने के लिये काफ़ी है।
7. और पुरुषों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा है, तथा स्त्रियों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो, वह थोड़ा हो अथवा अधिक, सब के भाग निर्धारित हैं।
8. और जब मीरास विभाजन के समय

समीपवर्ती, तथा अनाथ और निर्धन उपस्थित हों तो उन्हें भी थोड़ा बहुत दे दो, तथा उन से भली बात बोलो।

9. और उन लोगों को डरना चाहिये, जो यदि अपने पीछे निर्बल संतान छोड़ जायें, और उन के नाश होने का भय हो, अतः उन्हें चाहिये कि अल्लाह से डरें, और सीधी बात बोलें।
10. जो लोग अनाथों का धन अत्याचार से खाते हैं वह अपने पेटों में आग भरते हैं, और शीघ्र ही नरक की अग्नि में प्रवेश करेंगे।
11. अल्लाह तुम्हारी संतान के संबंध में तुम्हें आदेश देता है कि पुत्र का भाग दो पुत्रियों के बराबर है। और यदि पुत्रियाँ दो से अधिक हों तो उन के लिये छोड़े हुये धन का दो तिहाई (भाग) है। और यदि एक ही हो तो उस के लिये आधा है। और उस के माता पिता के लिये, दोनों में से प्रत्येक के लिये उस में से छठा भाग है जो छोड़ा हो, यदि उस के कोई संतान हो। और यदि उस के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हों और उस का वारिस उस का पिता हो, तो उस की माता का तिहाई (भाग) है, (और शेष पिता का)। फिर यदि (माता पिता के सिवा) उस के एक से अधिक भाई अथवा बहनें हों तो उस की माता के लिये छठा भाग है जो वसियत तथा कर्ज़ चुकाने के पश्चात् होगा। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिताओं और पुत्रों मे से

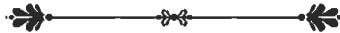
कौन तुम्हारे लिये अधिक लाभदायक है। वास्तव में अल्लाह अति बड़ा तथा गुणी, ज्ञानी तत्वज्ञ है।

12. और तुम्हारे लिये उस का आधा है जो तुम्हारी पत्नियाँ छोड़ जायें, यदि उन के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि उन की कोई संतान हो तो तुम्हारे लिये उस का चौथाई है जो वह छोड़ गई हों, वसियत (उत्तरदान) या ऋण चुकाने के पश्चात्। और (पत्नियों) के लिये उस का चौथाई है जो (माल आदि) तुम ने छोड़ा हो, यदि तुम्हारे कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि तुम्हारे कोई संतान हो तो उन के लिये उस का आठवा (भाग) है, जो तुम ने छोड़ा है, वसियत (उत्तरदान) जो तुम ने किया हो पूरा करने अथवा ऋण चुकाने के पश्चात्। और यदि किसी ऐसे पुरुष या स्त्री का वारिस होने की बात हो जो (कलाला)⁽¹⁾ हो, तथा (दूसरी माता से) उस का भाई अथवा बहन हो तो उन में से प्रत्येक के लिये छठा (भाग) है। फिर यदि (माँ जाये) (भाई या बहनें) इस से अधिक हों तो वह सब तिहाई (भाग) में (बराबर के) साझी होंगे। यह सब वसियत (उत्तरदान) तथा ऋण चुकाने के पश्चात् होगा। और किसी को हानि नहीं पहुँचाई जायेगी। यह अल्लाह की ओर से वसियत है। और अल्लाह ज्ञानी तथा हिकमत वाला है।

13. यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमायें हैं, और जो अल्लाह तथा उस के रसूल का आज्ञाकारी रहेगा तो उसे ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। जिन में वह सदावासी होंगे। तथा यही बड़ी सफलता है।
14. और जो अल्लाह तथा उस के रसूल की अवज्ञा तथा उस की सीमाओं का उल्लंघन करेगा तो उस को नरक में प्रवेश देगा। जिस में वह सदावासी होगा। और उसी के लिये अपमानकारी यातना है।
15. तथा तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्याभिचार कर जायें तो उन पर अपनों में से चार साक्षी लाओ। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तो उन्हें घरों में बन्द कर दो यहाँ तक कि उन को मौत आ जाये अथवा अल्लाह उन के लिये कोई अन्य राह बना दे।
16. और तुम में से जो दो व्यक्ति ऐसा करें तो दोनों को दुःख पहुँचाओ। यहाँ तक कि वह तौबा (क्षमा याचना) कर लें और अपना सुधार कर लें। तो उन को छोड़ दो। निश्चय अल्लाह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।
17. अल्लाह के पास उन्हीं की तौब: (क्षमा याचना) स्वीकार है, जो अनजाने में बुराई कर जाते हैं, फिर शीघ्र ही क्षमा याचना कर लेते हैं, तो अल्लाह उन की तौब: (क्षमायाचना) स्वीकार कर लेता है, तथा अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।
18. और उन की तौब: (क्षमा याचना) स्वीकार्य नहीं, जो बुराईयाँ करते रहते हैं, यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत का समय आ जाता है, तो कहता है, अब मैं ने तौब: कर ली, और न ही उन की जो काफ़िर रहते हुये मर जाते हैं, इन्हीं के लिये हम ने दुःखदायी यातना तैयार कर रखी है।
19. हे ईमान वालो! तुम्हारे लिये हलाल (वैध) नहीं है कि बलपूर्वक स्त्रियों के बारिस बन जाओ। तथा उन्हें इस लिये न रोको कि उन्हें जो दिया हो उस में से कुछ मार लो। परन्तु यह कि खुली बुराई कर जायें। तथा उन के साथ उचित व्यवहार से रहो। फिर यदि वह तुम्हें अप्रिय लगे तो संभव है कि तुम किसी चीज़ को अप्रिय समझो, और अल्लाह ने उस में बड़ी भलाई रख दी हो।
20. और यदि तुम किसी पत्नी के स्थान पर किसी दूसरी पत्नी से विवाह करना चाहो और तुम ने उन में से एक को (सोने चाँदी का) ढेर भी (महर में) दिया हो तो उस में से कुछ न लो। क्या तुम चाहते हो कि उसे आरोप लगा कर तथा खुले पाप द्वारा ले लो?
21. तथा तुम उसे ले भी कैसे सकते हो, जब कि तुम एक दूसरे से मिलन कर चुके हो। तथा उन्हीं ने तुम से (विवाह के समय) दृढ़ वचन लिया है।

22. और उन स्त्रियों से विवाह न करो जिन से तुम्हारे पिताओं ने विवाह किया हो, परन्तु जो पहले हो चुका। वास्तव में यह निर्लज्जा की तथा अप्रिय बात और बुरी रीति थी।
23. तुम पर हराम (अवैध) कर दी गई हैं: तुम्हारी मातायें, तथा तुम्हारी पुत्रियाँ, और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फफियाँ, और तुम्हारी मौसियाँ और भतीजियाँ, और भौजियाँ, तथा तुम्हारी वह मातायें

जिन्होंने ने तुम्हें दूध पिलाया हो, तथा दूध पीने से संबंधित बहनें, और तुम्हारी पत्नियों की मातायें, तथा तुम्हारी पत्नियों की पुत्रियाँ जिन का पालन पोषण तुम्हारी गोद में हुआ हो, जिन पत्नियों से तुम ने संभोग किया हो, और यदि उन से संभोग न किया हो तो तुम पर कोई दोष नहीं। तथा तुम्हारे सगे पुत्रों की पत्नियाँ, और यह कि तुम दो बहनों को एकत्र करो, परन्तु जो हो चुका। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।



24. तथा उन स्त्रियों से (विवाह वर्जित है) जो दूसरों के निकाह में हों। परन्तु तुम्हारी दासियाँ जो (युद्ध में) तुम्हारे हाथ आई हों (यह) तुम पर अल्लाह ने लिख दिया है। और इन के सिवा (स्त्रियाँ) तुम्हारे लिये हलाल (उचित) कर दी गयी है। (प्रतिबंध यह है कि) अपने धनों द्वारा व्यभिचार से सुरक्षित रहने के लिये विवाह करो। फिर उन में से जिस से लाभ उठाओ उन्हें उन का महर (विवाह उपहार) अवश्य चुका दो। तथा महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने के पश्चात् (यदि) आपस की सहमति से (कोई कमी या अधिकता कर लो) तो तुम पर कोई दोष नहीं। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।
25. और जो व्यक्ति तुम में से स्वतंत्र ईमान वालियों से विवाह करने की सकत न रखे तो वह अपने हाथों में आई हुई अपनी ईमान वाली दासियों से (विवाह कर ले)। तथा अल्लाह तुम्हारे ईमान को अधिक जानता है। तुम आपस में एक ही हो। अतः तुम उन के स्वामियों की अनुमति से उन (दासियों) से विवाह कर लो, और उन्हें नियमानुसार उन के महरें (विवाह उपहार) चुका दो, वह सती हों, व्यभिचारिणी न हों, न गुप्त प्रेमी बना रखी हों। फिर जब वह विवाहित हो जायें तो यदि व्यभिचार कर जायें, तो उन पर उस का आधा दण्ड है, जो स्वतंत्र स्त्रियों पर है। यह (दासी से विवाह) उस के लिये है, जो तुम में से व्याभिचार से डरता हो। और सहन करो तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
26. अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिये उजागर कर दे, तथा तुम को भी उन की नितियों की राह दर्शा दे जो तुम से पहले थे। और तुम्हारी क्षमा याचना स्वीकार करे। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।
27. और अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया करे। तथा जो लोग आकांक्षाओं के पीछे पड़े हुये हैं वह चाहते हैं कि तुम बहुत अधिक झुक जाओ।
28. अल्लाह तुम्हारा (बोझ) हल्का करना चाहता है। तथा मानव निर्बल पैदा किया गया है।
29. हे ईमान वालो! आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, परन्तु यह कि: लेन देन तुम्हारी आपस की स्वीकृति से (धर्मविधानानुसार) हो। और आत्महत्या न करो, वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।
30. और जो अतिक्रमण तथा अत्याचार से ऐसा करेगा, समीप है कि: हम उसे अग्नि में झोंक देंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।
31. तथा यदि तुम उन महा पापों से बचते रहे, जिन से तुम्हें रोका जा रहा है, तो हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे। और तुम्हें सम्मानित स्थान में प्रवेश देंगे।

32. तथा उस की कामना न करो, जिस के द्वारा अल्लाह ने तुम को एक दूसरे पर श्रेष्ठता दी है। पुरुषों के लिये उस का भाग है जो उन्होंने कमाया, और स्त्रियों के लिए उस का भाग है जो उन्होंने कमाया है। तथा अल्लाह से उस के अधिक की प्रार्थना करते रहो, निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानता है।
33. और हम ने प्रत्येक के लिये वारिस (उत्तराधिकारी) बना दिये हैं उस में से जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो। तथा जिन से तुम ने समझौता किया हो उन्हें उन का भाग दो। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज़ से सूचित है।
34. पुरुष स्त्रियों के व्यवस्थापक है, इस कारण कि अल्लाह ने उन में से एक को दूसरे पर प्रधानता दी है। तथा इस कारण कि उन्होंने अपने धनों में से (उन पर) खर्च किया है। अतः सदाचारी स्त्रियाँ वह हैं जो आज्ञाकारी तथा उनकी अनुपस्थिति में अल्लाह की रक्षा में उन के अधिकारों की रक्षा करती हों। और तुम्हें जिन की अवज्ञा का डर हो तो उन्हें समझाओ। और शयनागारों (सोने के स्थानों) में उन से अलग हो जाओ। तथा उनको मारो। फिर यदि वह तुम्हारी बात मानें तो उन पर अत्याचार का बहाना न खोजो। और अल्लाह सब से ऊपर, सब से बड़ा है।
35. और यदि तुम को दोनों के बीच वियोग का डर हो तो एक मध्यस्थ उस (पति) के घराने से तथा एक मध्यस्थ उस (पत्नी) के घराने से नियुक्त करो, यदि वह दोनों संधि कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों के बीच संधि करा देगा। वास्तव में अल्लाह अति ज्ञानी सर्वसूचित है।
36. तथा अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, और किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ। तथा माता पिता, समीपवर्तियों और अनाथों एवं निर्धनों तथा समीप और दूर के पड़ोसी, यात्रा के साथी तथा यात्री और अपने दास दासियों के साथ उपकार करो। निस्संदेह अल्लाह उस से प्रेम नहीं करता जो अभिमानी अहंकारी हो।
37. और जो स्वयं कृपण (कंजूसी) करते हैं, तथा दूसरों को भी कृपण (कंजूसी) का आदेश देते हैं, और उसे छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है। और हम ने कृतघ्नों के लिये अपमानकारी यातना तैयार कर रखी है।
38. तथा जो लोग अपना धन लोगों को दिखाने के लिए दान करते हैं, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान नहीं रखते। तथा शैतान जिस का साथी हो, तो वह बहुत बुरा साथी है।
39. और उन का क्या बिगड़ जाता, यदि वह अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान (विश्वास) रखते, और अल्लाह ने जो उन्हें दिया है उस में से दान करते। और अल्लाह उन्हें भली भाँति जानता है।
40. अल्लाह कण भर भी किसी पर अत्याचार नहीं करता, यदि कुछ

भलाई (किसी ने) की हो, तो (अल्लाह) उसे अधिक कर देता है, तथा अपने पास से बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है।

41. तो क्या दशा होगी जब हम प्रत्येक उम्मत (समुदाय) से एक साक्षी लायेंगे, और (हे नबी!) आप को उन पर साक्षी लायेंगे।
42. उस दिन जो काफिर तथा रसूल के अवैज्ञाकारी हो गये यह कामना करेंगे कि उन के सहित भूमि बराबर कर दी जाये। और वे अल्लाह से कोई बात छुपा नहीं सकेंगे।
43. हे ईमान वालो! तुम जब नशे में रहो तो नमाज़ के समीप न जाओ। जब तक जो कुछ बोलो उसे न समझो। और न जनाबत की स्थिति में (मस्जिदों के समीप जाओ) परन्तु रास्ता पार करते हुये। और यदि तुम रोगी हो अथवा यात्रा में रहो, या स्त्रियों से सहवास कर लो, फिर जल न पाओ, तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लो। उसे अपने मुखों तथा हाथों पर फेर लो। वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त (सहिष्णु) क्षमाशील है।
44. क्या आप ने उनकी दशा नहीं देखी जिन्हें पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह कुपथ खरीद रहे हैं, तथा चाहते हैं कि तुम भी सुपथ से विचलित हो जाओ।
45. तथा अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं से भली भाँति अवगत है। और (तुम्हारे लिये) अल्लाह की रक्षा काफी है। तथा

अल्लाह की सहायता काफी है।

46. (हे नबी!) यहूदियों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो शब्दों को उन के (वास्तविक) स्थानों से फेरते हैं। और (आप से) कहते हैं कि हम ने सुन लिया, तथा (आप की) अवज्ञा की, और आप सुनिये, आप सुनाये न जायें, तथा अपनी जुबानें मोड़ कर "राइना" कहते और सत्धर्म में व्यंग करते हैं, और यदि वह "हम ने सुन लिया तथा आज्ञाकारी हो गये", और "हमें देखिये" कहते, तो उन के लिये अधिक अच्छी तथा सही बात होती। परन्तु अल्लाह ने उन के कुफ़ के कारण उन्हें धिक्कार दिया है। अतः उन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।
47. हे अहले किताब! उस (कुर्आन) पर ईमान लाओ जिसे हम ने उन का प्रमाणकारी बना कर उतारा है जो (पुस्तकें) तुम्हारे साथ हैं। इस से पहले कि हम चेहरे बिगाड़ कर पीछे फेर दें अथवा उन्हें ऐसे ही धिक्कार दें जैसे शनिवार वालों को धिक्कार दिया। और अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।
48. निःसंदेह अल्लाह यह नहीं क्षमा करेगा कि उस का साक्षी बनाया जाये, और उस के सिवा जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जो अल्लाह का साक्षी बनाता है तो उस ने महापाप गढ़ लिया।
49. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो अपने आप पवित्र बन रहे हैं? बल्कि अल्लाह जिसे चाहे पवित्र करता है। और (लोगों पर) कण बराबर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

50. देखो यह लोग कैसे अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं! उन के खुले पाप के लिये यही बहुत है।
51. हे नबी! क्या आप ने उन की दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह मुर्तियों तथा शैतानों की इबादत (बंदना) करते हैं और काफिरों के बारे में कहते हैं कि यह ईमान वालों से अधिक सीधी डगर पर है।
52. और जिसे अल्लाह धिक्कार दे तो आप उस का कदापि कोई सहायक नहीं पायेंगे।
53. क्या उन के पास राज्य का कोई भाग है, इस लिए लोगों को (उस में से) तनिक भी नहीं देंगे।
54. बल्कि वह लोगों से उस अनुग्रह पर विद्वेष कर रहे हैं जो अल्लाह ने उन को प्रदान किया है। तो हम ने (पहले भी) इब्राहीम के घराने को पुस्तक तथा हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) दी है।
55. फिर उन में से कोई ईमान लाया, और कोई उस से विमुख हो गया। (तो उस के लिए) नरक की भड़कती अग्नि बहुत है।
56. वास्तव में जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) किया, हम उन्हें नरक में झोंक देंगे। जब जब उन की खालें पकेंगी हम उन की खालें दूसरी बदल देंगे, ताकि वह यातना चर्खें, निःसंदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
57. और जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार किये तो हम उन्हें ऐसे स्वर्गों

में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे, उन के लिए उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी और हम उन को घनी छाओं में रखेंगे।

58. अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि धरोहर उन के स्वामियों को चुका दो, और जब लोगों के बीच निर्णय करो तो न्याय के साथ निर्णय करो। अल्लाह तुम्हें अच्छी बात का निर्देश दे रहा है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनने, देखने वाला है।
59. हे ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा का अनुपालन करो, और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो, तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो, फिर यदि किसी बात में तुम आपस में विवाद (विभेद) कर लो, तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हो। यह (तुम्हारे लिये) अच्छा⁽²⁾ और इस का परिणाम अच्छा है।
60. (हे नबी!) क्या आप ने उन (द्विधावादियों) को नहीं जाना, जिन का यह दावा है कि वह जो कुछ आप पर अवतरित हुआ है तथा जो कुछ आप से पूर्व अवतरित हुआ है, उस पर ईमान रखते हैं, तथा चाहते हैं कि अपने विवाद का निर्णय विद्रोही के पास ले जायें, जब कि उन्हें आदेश दिया गया है कि उसे अस्वीकार कर दें। और शैतान चाहता है कि उन्हें सत्धर्म से बहुत दूर⁽¹⁾ कर दे।
61. तथा जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो (कुर्आन)

- अल्लाह ने उतारा है तथा रसूल की (सुन्नत की) ओर तो आप मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) को देखते हैं कि वह आप से मुँह फेर रहे हैं।
62. फिर यदि उन के अपने ही कर्तूतों के कारण उन पर कोई आपदा आ पड़े, तो फिर आप के पास आकर शपथ लेते हैं कि हम ने तो केवल भलाई तथा (दोनों पक्ष में) मेल कराना चाहा था।
63. यही वह लोग हैं जिन के दिलों के भीतर की बातें अल्लाह जानता है। अतः आप उन को क्षमा कर दें, तथा उन्हें उपदेश दें, और उन से ऐसी प्रभावी बात बोलें जो उन के दिलों में उतर जाये।
64. और हम ने जो भी रसूल भेजा वह इस लिये ताकि अल्लाह की अनुमति से उस की आज्ञा का पालन किया जाये। और जब उन लोगों ने अपने ऊपर अत्याचार किया तो यदि वह आप के पास आते, फिर अल्लाह से क्षमा याचना करते, तथा उन के लिये रसूल क्षमा की प्रार्थना करते तो अल्लाह को अति क्षमाशील दयावान् पाते।
65. तो आप के पालनहार की शपथ! वह कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक अपने आपस के विवाद में आप को निर्णायक न बनायें, फिर आप जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें, और पूर्णतः स्वीकार कर लें।
66. और यदि हम उन्हें आदेश देते कि स्वयं को बध करो, तथा अपने घरों से निकल जाओ तो इन में से थोड़े के सिवा कोई ऐसा नहीं करता। और
- यदि उन्हें जो निर्देश दिया जाता है वह उस का पालन करते तो उन के लिये अच्छा और अधिक स्थिरता का कारण होता।
67. और हम उन को अपने पास से बहुत बड़ा प्रतिफल देते।
68. तथा हम उन्हें सीधी डगर दर्शा देते।
69. तथा जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करेंगे तो वही (स्वर्ग में) उन के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया है, अर्थात् नबियों तथा सत्यवादियों, शहीदों और सदाचारियों के साथ। और वह क्या ही अच्छे साथी हैं?
70. यह प्रदान अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह का ज्ञान बहुत है।
71. हे ईमान वालो! अपने (शत्रु से) बचाव के साधन तय्यार रखो, फिर गिरोहों में अथवा एक साथ निकल पड़ो।
72. और तुम में कोई ऐसा व्यक्ति भी है जो तुम से अवश्य पीछे रह जायेगा, और यदि तुम पर (युद्ध में) कोई आपदा आ पड़े तो कहेगा: अल्लाह ने मुझ पर उपकार किया कि मैं उनके साथ उपस्थित न था।
73. और यदि तुम पर अल्लाह की दया हो जाये, तो वह अवश्य यह कामना करेगा कि काश! मैं भी उन के साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त कर लेता। मानो उस के और तुम्हारे मध्य कोई मित्रता ही न थी।
74. तो चाहिये कि अल्लाह की राह में वह लोग युद्ध करें जो आखिरत

(परलोक) के बदले संसारिक जीवन बेच चुके हैं। और जो अल्लाह की राह में युद्ध करेगा, तो वह मारा जाये अथवा विजयी हो जाये तो हम उसे बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।

75. और तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में युद्ध नहीं करते, जब कि कितने ही निर्बल पुरुष तथा स्त्रियाँ और बच्चे हैं, जो गुहार रहे हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें इस नगर से निकाल दे, जिस के निवासी अत्याचारी हैं। और हमारे लिये अपनी ओर से कोई रक्षक बना दे, और हमारे लिये अपनी ओर से कोई सहायक बना दे।
76. जो लोग ईमान लाये वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं। और जो काफिर हैं वह उपद्रव के लिये युद्ध करते हैं। तो शैतान के साथियों से युद्ध करो। निस्सदेह शैतान की चाल निर्बल होती है।
77. (हे नबी!) क्या आप ने उन की नहीं देखी, जिस से कहा गया कि अपने हाथों को (युद्ध से) रोके रखो, तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो? और जब उन पर युद्ध करना लिख दिया गया तो उन में से एक गिरोह लोगों से ऐसे डर रहा है जैसे अल्लाह से डर रहा हो। या उस से भी अधिक। तथा वह कहते हैं कि हे हमारे पालनहार! हम को युद्ध करने का आदेश क्यों दे दिया, क्यों न हमें थोड़े दिनों का और अवसर दिया? आप कह दें कि संसारिक सुख बहुत थोड़ा है, तथा परलोक उस के लिये अधिक अच्छा है जो अल्लाह से डरा, और उन पर कण भर भी

अत्याचार नहीं किया जायेगा।

78. तुम जहाँ भी रहो, तुम्हें मौत आ पकड़ेगी, यद्यपि दुर्ग दुर्गों में क्यों न रहो। तथा उन को यदि कोई सुख पहुँचता है तो कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है। और यदि कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि यह आपके कारण है। (हे नबी!) उन से कह दो कि सब अल्लाह की ओर से है। इन लोगों को क्या हो गया कि कोई बात समझने के समीप भी नहीं होते?
79. (वास्तविकता तो यह है कि) तुम को जो सुख पहुँचता है वह अल्लाह की ओर से होता है। तथा जो हानि पहुँचती है वह स्वयं (तुम्हारे कुकर्माँ के) कारण होती है। और हम ने आप को सब मानव का रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा है। और (आपके रसूल होने के लिये) अल्लाह का साक्ष्य बहुत है।
80. जिस ने रसूल की आज्ञा का अनुपालन किया (वास्तव में) उस ने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया है। तथा जिस ने मुँह फेर लिया तो (हे नबी!) हम ने आप को उन का प्रहरी (रक्षक) बना कर नहीं भेजा है।
81. तथा वह (आपके सामने कहते हैं कि) हम आज्ञाकारी हैं, और जब आप के पास से जाते हैं तो इन में से कुछ लोग रात में आप की बात के विरुद्ध परामर्श करते हैं। और वह जो परामर्श कर रहे हैं उसे अल्लाह लिख रहा है। अतः आप उन पर ध्यान न दें। और अल्लाह पर भरोसा करें, तथा अल्लाह पर भरोसा काफ़ी है।

82. तो क्या वह कुआँन (के अर्थों) पर सोच विचार नहीं करते? यदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल (बे मेल) बातें पाते?
83. और जब उन के पास शान्ति या भय की कोई सूचना आती है तो उसे फैला देते हैं। और यदि वह उसे अल्लाह के रसूल तथा अपने अधिकारियों की ओर फेर देते तो जो बात की तह तक पहुँचते हैं वे उस की वास्तविकता जान लेते। और यदि तुम पर अल्लाह की अनुकम्पा तथा दया न होती तो तुम में थोड़े के सिवा सब शैतान के पीछे लग जाते।
84. तो (हे नबी!) आप अल्लाह की राह में युद्ध करें। केवल आप पर यह भार डाला जा रहा है, तथा ईमान वालों को (इस की) प्रेरणा दें। संभव है कि अल्लाह काफिरों का बल (तोड़ दे)। और अल्लाह का बल और उस का दण्ड सब से कड़ा है।
85. जो अच्छी अनुशंसा (सिफारिश) करेगा उसे उस का भाग (प्रतिफल) मिलेगा। तथा जो बुरी अनुशंसा (सिफारिश) करेगा तो उसे भी उस का भाग (कुफल) मिलेगा। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।
86. और जब तुम से सलाम किया जाये, तो उस से अच्छा उत्तर दो, अथवा उसी को दुहरा दो। निःसंदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का हिसाब लेने वाला है।
87. अल्लाह के सिवा कोई बंदनीय (पूज्य) नहीं, वह अवश्य तुम्हें प्रलय के दिन एकत्र करेगा, इस में कोई संदेह नहीं।

तथा बात कहने में अल्लाह से अधिक सच्चा कौन हो सकता है?

88. तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफिकों (द्विधावादियों) के बारे में दो पक्ष⁽²⁾ बन गये हो। जब कि अल्लाह ने उन के कुकर्मा के कारण उन्हें औधा कर दिया है। क्या तुम उसे सुपथ दर्शा देना चाहते हो जिसे अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो तुम उस के लिये कोई राह नहीं पा सकते।
89. (हे ईमान वालो!) वे तो यह कामना करते हैं कि उन्हीं के समान तुम भी काफिर हो जाओ, तथा उन के बराबर हो जाओ। अतः उन में से किसी को मित्र न बनाओ, जब तक अल्लाह की राह में हिज्रत न करें। और यदि वह इस से विमुख हों तो उन्हें जहाँ पाओ बध करो और उन में से किसी को मित्र न बनाओ, और न सहायक बनाओ।
90. परन्तु इन में से जो किसी ऐसी कौम से जा मिलें जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, अथवा ऐसे लोग हों जो तुम्हारे पास इस स्थिति में आयें कि उन के दिल इस से संकुचित हो रहे हों कि वह तुम से युद्ध करें, अथवा (तुम्हारे साथ) अपनी जाति से युद्ध करें। और यदि अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर सामर्थ्य दे देता, फिर वह तुम से युद्ध करते, तो यदि वह तुम से बिलग रह गये और तुम से युद्ध नहीं किया, और तुम से संधि कर ली, तो उन के विरुद्ध अल्लाह ने तुम्हारे लिये कोई (युद्ध करने की)

राह नहीं बनाई है।

91. तथा तुम को कुछ ऐसे दूसरे लोग भी मिलेंगे जो तुम्हारी ओर से भी शान्त रहना चाहते हैं, और अपनी जाति की ओर से भी शान्त रहना (चाहते हैं)। फिर जब भी उपद्रव की ओर फेर दिये जायें, तो उस में औंधे हो कर गिर जाते हैं। तो यदि वह तुम से विलग न रहें और तुम से संधि न करें, तथा अपना हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो, और जहाँ पाओ बंध करो। हम ने उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये खुला तर्क बना दिया है।
92. किसी ईमान वाले के लिये वैध नहीं है कि वह किसी ईमान वाले की हत्या कर दे, परन्तु चूक से। तथा जो किसी ईमान वाले की चूक से हत्या कर दे तो उसे एक ईमान वाला दास मुक्त करना है, और उस के घर वालों को दियत (अर्धदण्ड) दे, परन्तु यह कि वह दान (क्षमा) कर दें। फिर यदि वह (निहत) उस जाति में से हो जो तुम्हारी शत्रु है, और वह (निहत) ईमान वाला है तो एक ईमान वाला दास मुक्त करना है। और यदि ऐसी कौम से हो जिस के और तुम्हारे बीच संधि है तो उस के घर वालों को अर्धदण्ड देना, तथा एक ईमान वाला दास (भी) मुक्त करना है, और जो दास न पाये तो उसे निरंतर दो महीने रोज़ा रखना है। अल्लाह की ओर से (उस के पाप की) यही क्षमा है। और अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।
93. और जो किसी ईमान वाले की हत्या जान बूझ कर कर दे तो उस का

कुफल (बदला) नरक है। जिस में वह सदावासी होगा, और उस पर अल्लाह का प्रकोप तथा धिक्कार है। और उस ने उस के लिये घोर यातना तैयार कर रखी है।

94. हे ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिये) निकलो तो भली भाँति परख लो, और कोई तुम को सलाम करे तो यह न कहो कि तुम ईमान वाले नहीं हो। क्या तुम संसारिक जीवन का उपकरण चाहते हो? और अल्लाह के पास बहुत से परिहार (शत्रुधन) हैं। तुम भी पहले ऐसे ही थे, तो अल्लाह ने तुम पर उपकार किया। अतः भली भाँति परख लिया करो, निःसंदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।
95. ईमान वालों में जो अकारण अपने घरों में रह जाते हैं, और जो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, दोनों बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने उन को जो अपने धनों तथा प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, उन पर जो घरों में रह जाते हैं, पद में प्रधानता दी है। और प्रत्येक को अल्लाह ने भलाई का वचन दिया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को उन पर जो घरों में बैठे रह जाने वाले हैं, बड़े प्रतिफल में भी प्रधानता दी है।
96. अल्लाह की ओर से कई (उच्च) श्रेणियाँ हैं। तथा क्षमा और दया है। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
97. निःसंदेह वह लोग जिन के प्राण

फरिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वह अपने ऊपर (कुफ़्र के देश में रह कर) अत्याचार करने वाले हों, तो उन से कहते हैं: तुम किस चीज़ में थे? वह कहते हैं कि हम धरती में विवश थे। तब फरिश्ते कहते हैं: क्या अल्लाह की धरती विस्तृत नहीं थी कि उस में हिज़रत कर जाते? तो इन्हीं का आवास नरक है। और वह क्या ही बुरा स्थान है!

98. परन्तु जो पुरुष और स्त्रियों तथा बच्चे ऐसे विवश हों कि कोई उपाय न रख सकें, और न (हिज़रत की) कोई राह पाते हों।
99. तो आशा है कि अल्लाह उन को क्षमा कर देगा। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञान्त क्षमाशील है।
100. तथा जो कोई अल्लाह की राह में हिज़रत करेगा तो वह धरती में बहुत से निवास स्थान तथा विस्तार पायेगा। और जो अपने घर से अल्लाह और उस के रसूल की ओर निकल गया, फिर उसे (राह में ही) मौत ने पकड़ लिया तो उस का प्रतिफल अल्लाह के पास निश्चित हो गया। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
101. और जब तुम धरती में यात्रा करो तो नमाज़ क़स्र (संक्षिप्त) करने में तुम पर कोई दोष नहीं, यदि तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुम्हें सतायेंगे। वास्तव में काफ़िर तुम्हारे खुले शत्रु हैं।
102. तथा (हे नबी!) जब आप (रणक्षेत्र में) उपस्थित हों, और उन के लिये

नमाज़ की स्थापना करें तो उन का एक गिरोह आप के साथ खड़ा हो जाये, और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहें। और जब वह सज़दा कर लें, तो तुम्हारे पीछे हो जायें, तथा दूसरा गिरोह आये जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी है, और आप के साथ नमाज़ पढ़ें। और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहें। काफ़िर चाहते हैं कि तुम अपने शस्त्रों से निश्चेत हो जाओ तो तुम पर यकायक धावा बोल दें। और तुम पर कोई दोष नहीं, यदि वर्षा के कारण तुम्हें दुःख हो अथवा तुम रोगी रहो कि अपने शस्त्र उतार दो। तथा अपने बचाव का ध्यान रखो। निःसंदेह अल्लाह ने काफ़िरों के लिये अपमान कारी यातना तय्यार कर रखी है।

103. फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर लो, तो खड़े, बैठे, लेटे प्रत्येक स्थिति में अल्लाह का स्मरण करो। और जब तुम शान्त हो जाओ तो पूरी नमाज़ पढ़ो। निःसंदेह नमाज़ ईमान वालों पर निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है।
104. तथा तुम (शत्रु) जाति का पीछा करने में शिथिल न बनो, यदि तुम्हें दुःख पहुँचा है, तो तुम्हारे समान उन्हें भी दुःख पहुँचा है। तथा तुम अल्लाह से जो आशा रखते हो, वह आशा वह नहीं रखते। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।
105. (हे नबी!) हम ने आप की ओर इस पुस्तक (कुआन) को सत्य के साथ उतारा है, ताकि आप लोगों के बीच

उस के अनुसार निर्णय करें, जो अल्लाह ने आप को बताया है, और विश्वासघातियों के पक्षधर न बनें।

106. तथा अल्लाह से क्षमा याचना करते रहें, निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
107. और उन का पक्ष न लें, जो स्वयं अपने साथ विश्वासघात करते हों, निःसंदेह अल्लाह विश्वासघाती, पापी से प्रेम नहीं करता।
108. वह (अपने करतूत) लोगों से छुपा सकते हैं। तथा अल्लाह से नहीं छुपा सकते। और वह उन के साथ होता है, जब वह रात में उस बात का परामर्श करते हैं, जिस से वह प्रसन्न नहीं होता। तथा अल्लाह उसे घेरे हुये है जो वह कर रहे हैं।
109. सूनो! तुम्हीं वह हो कि संसारिक जीवन में उन की ओर से झगड़ लिये तो प्रलय के दिन उन की ओर से कौन अल्लाह से झगड़ेगा, और कौन उन का अभिभाषक (प्रतिनिधि) होगा?
110. जो व्यक्ति कोई कुकर्म करेगा, अथवा अपने ऊपर अत्याचार करेगा, और फिर अल्लाह से क्षमा याचना करेगा, तो वह उसे अति क्षमी दयावान् पाएगा।
111. और जो व्यक्ति कोई पाप करता है तो अपने ऊपर करता है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।
112. और जो व्यक्ति कोई चूक अथवा पाप स्वयं करे, और फिर किसी निर्दोष पर उस का आरोप लगा दे तो उस ने मिथ्या दोषारोपण तथा

खुले पाप का बोझ अपने ऊपर लाद लिया।

113. और (हे नबी!) यदि आप पर अल्लाह की दया तथा कृपा न होती तो उन के एक गिरोह ने संकल्प ले लिया था कि आप को कुपथ कर दें, और वह स्वयं को ही कुपथ कर रहे थे। तथा वह आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। क्यों कि अल्लाह ने आप पर पुस्तक (कुरआन) तथा हिकमत (सुन्नत) उतारी है। और आप को उस का ज्ञान दे दिया है जिसे आप नहीं जानते थे। तथा यह आप पर अल्लाह की बड़ी दया है।
114. उन के अधिकांश सरगोशी में कोई भलाई नहीं होती, परन्तु जो दान अथवा सदाचार या लोगों में सुधार कराने का आदेश दे। और जो कोई ऐसे कर्म अल्लाह की प्रसन्नता के लिये करेगा तो हम उसे बहुत भारी प्रतिफल प्रदान करेंगे।
115. तथा जो व्यक्ति अपने ऊपर मार्गदर्शन उजागर हो जाने के पश्चात् रसूल का विरोध करे, और ईमान वालों की राह के सिवा (दूसरी राह) का अनुसरण करे तो हम उसे वहीं फेर देंगे जिधर फिरा है। और उसे नरक में झोंक देंगे तथा वह बुरा निवास स्थान है।
116. निःसंदेह अल्लाह इसे क्षमा नहीं करेगा कि उस का साझी बनाया जाये, और इस के सिवा जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा। तथा जो अल्लाह का साझी बनाता है वह कुपथ में बहुत दूर चला गया।

117. वह (मिश्रणवादी) अल्लाह के सिवा देवियों को ही पुकारते हैं। और धिक्कारे हुये शैतान को पुकारते हैं।
118. अल्लाह ने जिसे धिक्कार दिया है। और उस (शैतान) ने कहा था कि मैं तेरे भक्तों से एक निश्चित भाग ले कर रहूँगा।
119. और उन्हें अवश्य बहकाऊँगा, तथा कामनायें दिलाऊँगा, और आदेश दूँगा कि वह पशुओं के कान चीर दें। तथा उन्हें आदेश दूँगा, तो वे अवश्य अल्लाह की संरचना में परिवर्तन कर देंगे। तथा जो शैतान को अल्लाह के सिवा सहायक बनायेगा तो वह खुली क्षति में पड़ गया।
120. वह उन को वचन देता, तथा कामनाओं में उलझाता है। और उन को जो वचन देता है वह धोखे के सिवा कुछ नहीं है।
121. उन्हीं का निवास स्थान नरक है। और वह उस से भागने की कोई राह नहीं पायेंगे।
122. तथा जो लोग ईमान लाये, और सत्कर्म किये, हम उन को ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वे उस में सदावासी होंगे। यह अल्लाह का सत्य वचन है। और अल्लाह से अधिक सत्य कथन किस का हो सकता है?
123. (यह प्रतिफल) तुम्हारी कामनाओं तथा अहले किताब की कामनाओं पर निर्भर नहीं। जो कोई भी दुष्कर्म करेगा तो वह उस का कुफल पायेगा, तथा

अल्लाह के सिवा अपना कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेगा।

124. तथा जो सत्कर्म करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान भी रखता होगा, तो वही लोग स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे, और तनिक भी अत्याचार नहीं किये जायेंगे।
125. तथा उस व्यक्ति से अच्छा किस का धर्म हो सकता है जिस ने स्वर्ग को अल्लाह के लिये झुका दिया, और वह एकेधरवादी भी हो। और एकेधरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण कर रहा हो? और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना विशुद्ध मित्र बना लिया।
126. तथा अल्लाह ही का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह प्रत्येक चीज़ को अपने नियंत्रण में लिये हुये है।
127. (हे नबी!) वह स्त्रियों के बारे में आप से धमदिश पूछ रहे हैं। आप कह दें कि अल्लाह उन के बारे में तुम्हें आदेश देता है, और वह आदेश भी है जो इस से पूर्व पुस्तक (कुर्आन) में तुम्हें उन अनाथ स्त्रियों के बारे में सुनाये गये हैं, जिन के निर्धारित अधिकार तुम नहीं देते, और उन से विवाह करने की रुचि रखते हो, तथा उन बच्चों के बारे में भी जो निर्बल हैं। तथा (यह भी आदेश देता है कि) अनाथों के लिये न्याय पर स्थित रहो। तथा तुम जो भी भलाई करते हो अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

128. और यदि किसी स्त्री को अपने पति से दुर्व्यवहार अथवा विमुख होने की शंका हो, तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि आपस में कोई संधि कर लें, और संधि कर लेना ही अच्छा है। और लोभ तो सभी में होता है। और यदि तुम एक दूसरे के साथ उपकार करो और (अल्लाह से) डरते रहो तो निःसंदेह तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उस से सूचित है।
129. ओर यदि तुम अपनी पत्नियों के बीच न्याय करना चाहो, तो भी ऐसा कदापि नहीं कर सकोगे। अतः एक ही की ओर पूर्णतः झुक न जाओ, और (शेष को) बीच में लटकी हुई न छोड़ दो। और यदि (अपने व्यवहार में) सुधार रखो और अल्लाह से डरते रहो तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
130. और यदि दोनों अलग हो जायें तो अल्लाह प्रत्येक को अपनी दया से (दूसरे से) निश्चित कर देगा। और अल्लाह बड़ा उदार तत्वज्ञ है।
131. तथा अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने तुम से पूर्व अहले किताब को तथा तुम को आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो। और यदि तुम कुफ़्र (अवैज्ञा) करोगे तो निःसंदेह जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह निस्पृह⁽³⁾ प्रशंसित है।
132. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है। और अल्लाह काम बनाने के लिये बस है।
133. और वह चाहे तो, हे लोगो! तुम्हें ले जाये और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ला दे। तथा अल्लाह ऐसा कर सकता है।
134. जो संसारिक प्रतिकार (बदला) चाहता हो तो अल्लाह के पास संसार तथा परलोक दोनों का प्रतिकार (बदला) है। तथा अल्लाह सब की बात सुनता और सब के कर्म देख रहा है।
135. हे ईमान वालो! न्याय के साथ खड़े रह कर अल्लाह के लिये साक्षी (गवाह) बन जाओ। यद्यपि साक्ष्य (गवाही) तुम्हारे अपने अथवा माता पिता और समीपवर्तियों के विरुद्ध हो, यदि कोई धनी अथवा निर्धन हो तो अल्लाह तुम से अधिक उन दोनों का हितैषी है। अतः अपनी मनोकामना के लिये न्याय से न फिरो। और यदि तुम बात घुमा फिरा कर करोगे, अथवा साक्ष्य देने से कतराओगे, तो निःसंदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम करते हो।
136. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल, और उस पुस्तक (कुरआन) पर जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है, तथा उन पुस्तकों पर जो इस से पहले उतारी हैं, ईमान लाओ। और जो अल्लाह तथा उस के फ़रिश्तों, उस की पुस्तकों और अन्त दिवस (प्रलय) को अस्वीकार करेगा, तो वह कुपथ में बहुत दूर जा पड़ा।
137. निःसंदेह जो ईमान लाये, फिर

- काफ़िर हो गये, फिर ईमान लाये, फिर काफ़िर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते ही चले गये तो अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें सीधी डगर दिखायेगा।
138. (हे नबी!) आप मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) को शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।
139. जो ईमान वालों को छोड़ कर, काफ़िरों को अपना सहायक मित्र बनाते हैं, क्या वह उन के पास मान सम्मान चाहते हैं? तो निःसंदेह सब मान सम्मान अल्लाह ही के लिये है।
140. और उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए अपनी पुस्तक (कुर्आन) में यह आदेश उतार दिया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया जा रहा है, तथा उन का उपहास किया जा रहा है, तो उन के साथ न बैठो, यहाँ तक कि वह दूसरी बात में लग जायें। निःसंदेह तुम उस समय उन्हीं के समान हो जाओगे। निश्चय अल्लाह मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) तथा काफ़िरों सब को नरक में एकत्र करने वाला है।
141. जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रहा करते हैं, यदि तुम्हें अल्लाह की सहायता से विजय प्राप्त हो, तो कहते हैं: क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और यदि उन (काफ़िरों) का पल्ला भारी रहे, तो कहते हैं कि क्या हम तुम पर छा नहीं गये थे, और तुम्हें ईमान वालों से बचा रहे थे? तो अल्लाह ही प्रलय के दिन तुम्हारे बीच निर्णय करेगा। और अल्लाह काफ़िरों के लिये ईमान वालों पर कदापि कोई राह नहीं बनायेगा।
142. वास्तव में मुनाफ़िक (द्विधावादी) अल्लाह को धोखा दे रहे हैं, जब कि: वही उन्हें धोखे में डाल रहा है, और जब वह नमाज़ के लिये खड़े होते हैं, तो आलसी होकर खड़े होते हैं, वह लोगों को दिखाते हैं, और अल्लाह का स्मरण थोड़ा ही करते हैं।
143. वह इस के बीच द्विधा में पड़े हुये हैं, न इधर न उधर। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तो आप उस के लिये कोई राह नहीं पा सकेंगे।
144. हे ईमान वालो! ईमान वालों को छोड़ कर काफ़िरों को सहायक मित्र न बनाओ। क्या तुम अपने विरुद्ध अल्लाह के लिये खुला तर्क बनाना चाहते हो?
145. निश्चय मुनाफ़िक (द्विधावादी) नरक की सब से नीची श्रेणी में होंगे। और आप उन का कोई सहायक नहीं पायेंगे।
146. परन्तु जिन्होंने ने क्षमा याचना कर ली, तथा अपना सुधार कर लिया, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़ लिया, तथा अपने धर्म को विशुद्ध कर लिया, तो वह लोग ईमान वालों के साथ होंगे। और अल्लाह ईमान वालों को बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा।
147. अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो, तथा ईमान रखो। और अल्लाह बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है।



148. अल्लाह को अपशब्द (बुरी बात) की चर्चा नहीं भाती, परन्तु जिस पर अत्याचार किया गया हो। और अल्लाह सब सुनता और जानता है।
149. यदि तुम कोई भली बात खुल कर करो अथवा उसे गुप्त करो या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी सर्व शक्तिशाली है।
150. जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) करते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उस के रसूलों के बीच अन्तर करें, तथा कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान रखते हैं, तथा कुछ के साथ कुफ़्र करते हैं, और इस के बीच राह बनाना चाहते हैं।
151. वही शुद्ध काफ़िर है, और हम ने काफ़िरों के लिये अपमानकारी यातना तय्यार कर रखी है।
152. तथा जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाये, और उन में से किसी के बीच अंतर नहीं किया, तो उन्हीं को हम उन का प्रतिफल प्रदान करेंगे, तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
153. हे नबी! आप से अहले किताब माँग करते हैं कि आप उन पर आकाश से कोई पुस्तक उतार दें, तो इन्होंने मुसा से इस से भी बड़ी माँग की थी। उन्हीं ने कहा कि हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष दिखा दो, तो इन के अत्याचारों के कारण इन्हें बिजली ने धर लिया, फिर इन्होंने खुली निशानियाँ आने के पश्चात् बछड़े

- को पूज्य बना लिया, फिर हम ने इसे भी क्षमा कर दिया, और हम ने मुसा को खुला प्रभुत्व प्रदान किया।
154. और हम ने (उन से वचन लेने के लिये) उन के ऊपर तूर (पर्वत) उठा दिया, तथा हम ने उन से कहा: द्वार में सजदा करते हुये प्रवेश करो, तथा हम ने उन से कहा कि शनिवार के विषय में अति न करो। और हम ने उन से दृढ़ वचन लिया।
155. तो उन के अपना वचन भंग करने, तथा उन के अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र करने, और उन के नबियों को अवैध बध करने, तथा उन के यह कहने के कारण कि हमारे दिल बंद हैं। (ऐसी बात नहीं है) बल्कि अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है। अतः इन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।
156. तथा उन के कुफ़्र और मर्यम पर घोर आरोप लगाने के कारण।
157. तथा उन के (गर्व से) कहने के कारण कि हम ने अल्लाह के रसूल, मर्यम के पुत्रः ईसा मसीह को बध कर दिया, जब कि (वास्तव में) उसे बध नहीं किया। और न सलीब (फाँसी) दी, परन्तु उन के लिये (इसे) संदिग्ध कर दिया गया। और निःसंदेह जिन लोगों ने इस में विभेद किया वह भी शंका में पड़े हुये हैं। और उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं, केवल अनुमान के पीछे पड़े हुये हैं। और निश्चय उसे उन्हीं ने बध नहीं किया है।
158. बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर

(आकाश) में उठा लिया है, तथा अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

159. और सभी अहले किताब उस (ईसा) के मरण से पहले उस पर अवश्य ईमान लायेंगे, और प्रलय के दिन वह उन के विरुद्ध साक्षी होगा।
160. यहूदियों के (इन्हीं) अत्याचार के कारण हम ने उन पर स्वच्छ खाद्य पदार्थों को हराम (वर्जित) कर दिया जो उन के लिये हलाल (वैध) थे। तथा उन के बहुधा अल्लाह की राह से रोकने के कारण।
161. तथा उन के ब्याज लेने के कारण जब कि उन्हें उस से रोका गया था, और उन के लोगों का धन अवैध रूप से खाने के कारण, तथा हम ने उन में से काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना तय्यार कर रखी है।
162. परन्तु जो उन में से ज्ञान में पक्के हैं, तथा वह ईमान वाले जो आप की ओर उतारी गयी (पुस्तक कुर्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गयी (पुस्तक) पर ईमान रखते हैं, और जो नमाज़ की स्थापना करने वाले, तथा ज़कात देने वाले, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान रखने वाले हैं, उन्हीं को हम बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।
163. (हे नबी!) हम ने आप की ओर वैसे ही वही भेजी है, जैसे नूह और उस के पश्चात् के नबियों के पास भेजी, और इब्राहीम तथा इस्माईल और इस्हाक तथा याकूब और उस की संतान, तथा ईसा और अय्यूब, तथा यूनस और हारून तथा सुलैमान के

पास वही भेजी, और हम ने दावूद को ज़बूर प्रदान की थी।

164. कुछ रसूल तो ऐसे हैं जिन की चर्चा हम इस से पहले आप से कर चुके हैं। और कुछ की चर्चा आप से नहीं की है, और अल्लाह ने मूसा से वास्तव में बात की।
165. यह सभी रसूल शुभ सूचना सुनाने वाले और डराने वाले थे, ताकि इन रसूलों के (आगमन के) पश्चात् लोगों के लिये अल्लाह पर कोई तर्क न रह जाये। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
166. (हे नबी!) (आप को यहूदी आदि नबी न मानें) परन्तु अल्लाह उस (कुर्आन) के द्वारा जिसे आप पर उतारा है, साक्ष्य (गवाही) देता है कि (आप नबी हैं)। उस ने इसे अपने ज्ञान के साथ उतारा है, तथा फ़रिश्ते साक्ष्य देते हैं, और अल्लाह का साक्ष्य ही बहुत है।
167. वास्तव में जिन्होंने ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका वह सुपथ से बहुत दूर जा पड़े।
168. निःसंदेह जो काफ़िर हो गये, और अत्याचार करते रह गये, तो अल्लाह ऐसा नहीं है कि उन्हें क्षमा कर दे, तथा न उन्हें कोई राह दिखायेगा।
169. परन्तु नरक की राह, जिस में वह सदावासी होंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।
170. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से रसूल सत्य

ले कर आ गये हैं। अतः उन पर ईमान लाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, तथा यदि कुफ़र करोगे, तो अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

171. हे अहले किताब (ईसाइयो!) अपने धर्म में अधिकता न करो, और अल्लाह पर केवल सत्य ही बोलो। मसीह मर्यम का पुत्र केवल अल्लाह का रसूल और उस का शब्द है, जिसे मर्यम की ओर डाल दिया, तथा उस की ओर से एक आत्मा है, अतः अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और यह न कहो कि (अल्लाह) तीन है, इस से रुक जाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, इस के सिवा कुछ नहीं कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है, वह इस से पवित्र है कि उस का कोई पुत्र हो, आकाशों तथा धरती में जो कुछ है उसी का है, और अल्लाह काम बनाने के लिये बहुत है।

172. मसीह कदापि अल्लाह का दास होने को अपमान नहीं समझता, और न (अल्लाह के) समीपवर्ती फ़रिश्ते, तथा जो व्यक्ति उस की (वंदना को) अपमान समझेगा, तथा अभिमान करेगा, तो उन सभी को वह अपने पास एकत्र करेगा।

173. फिर जो लोग ईमान लाये, तथा सत्यकर्म किये, तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल देगा, और उन्हें अपनी दया से अधिक भी

देगा। परन्तु जिन्होंने ने (वंदना को) अपमान समझा, और अभिमान किया, तो उन्हें दुःखदायी यातना देगा। तथा अल्लाह के सिवा वह कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेंगे।

174. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण आ गया है। और हम ने तुम्हारी ओर खुली वही उतार दी है।
175. तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये, तथा इस (कुर्आन को) दृढ़ता से पकड़ लिया वह उन्हीं को अपनी दया तथा अनुग्रह से (स्वर्ग) में प्रवेश देगा। और उन्हें अपनी ओर सीधी राह दिखा देगा।
176. (हे नबी!) वह आप से कलाला के विषय में आदेश चाहते हैं। तो आप कह दें कि वह कलाला के विषय में तुम्हें आदेश दे रहा है कि यदि कोई ऐसा पुरुष मर जाये जिस के संतान न हो, (और न पिता और दादा) और उस के एक बहन हो, तो उस के लिये उस के छोड़े हुये धन का आधा है। और वह (पुरुष) उस के पूरे (धन का) वारिस होगा यदि उस (बहन) के कोई संतान न हो, (और न पिता और दादा हो)। और यदि उस की दो बहनें हों (अथवा अधिक) तो उन्हें छोड़े हुये धन का दो तिहाई मिलेगा। और यदि भाई बहन दोनों हों तो नर (भाई) को दो नारियों (बहनों) के बराबर भाग मिलेगा। अल्लाह तुम्हारे लिये (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि तुम कुपथ न हो जाओ, तथा अल्लाह सब कुछ जानता है।

सूरह माइदा - 5

सूरह माइदा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदनी है. इस में 120 आयतें हैं

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे वह लोगो जो ईमान लाये हो! प्रतिबंधों का पूर्ण रूप से पालन करो, तुम्हारे लिये सब पशु हलाल (वैध) कर दिये गये, परन्तु जिन का आदेश तुम्हें सुनाया जायेगा, सिवाये इस के कि तुम एहराम की स्थिति में अपने लिये शिकार को हलाल (वैध) न कर लो, बैशक अल्लाह जो आदेश चाहता है, देता है।
2. हे ईमान वालो! अल्लाह की निशानियों (चिन्हों) का अनादर न करो, और न सम्मानित मासों का, और न (हज्ज की) कुर्बानी का, न उन में से जिन के गले में पट्टे पड़े हों, और न उन का जो अपने पालनहार की अनुग्रह और उस की प्रसन्नता की खोज में सम्मानित घर (काबा) की ओर जा रहे हों, और जब एहराम खोल दो, तो शिकार कर सकते हो, तथा तुम्हें किसी गिरोह की शत्रुता इस बात पर न उभार दे कि अत्याचार करने लगे, क्यों कि उन्हों ने मस्जिदे-हराम से तुम्हें रोक दिया था, सदाचार तथा संयम में एक दूसरे की सहायता करो, तथा पाप और अत्याचार में एक दूसरे की सहायता न करो। और अल्लाह से डरते रहो। निस्सदेह अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

3. तुम पर मुर्दार हराम (अवैध) कर दिया गया है, तथा (बहता हुआ) रक्त और सूअर का मांस, तथा जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो, तथा जो श्वास रोध और आघात के कारण, तथा गिर कर और दूसरे के सींग मारने से मरा हो, तथा जिसे हिंसक पशु ने खा लिया हो, परन्तु इन में से जिसे तुम बध (ज़िह्द) कर लो, और जिसे थान पर बध किया गया हो, और यह कि पांसे द्वारा अपना भाग्य निकालो, यह सब आदेश उल्लंघन के कार्य हैं। आज काफिर तुम्हारे धर्म से निराश हो गये हैं। अतः उन से न डरो, मुझी से डरो। आज मैं ने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है। तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया, और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया। फिर जो भूक से आतुर हो जाये जब कि उस का झुकाव पाप के लिये न हो, (प्राण रक्षा के लिये खा ले) तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
4. वे आप से प्रश्न करते हैं कि उन के लिये क्या हलाल (वैध) किया गया? आप कह दें कि सभी स्वच्छ पवित्र चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दी गयी हैं। और उन शिकारी जानवरों का शिकार जिन को तुम ने उस ज्ञान द्वारा जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, उस में से कुछ सिखा कर सधायो। तो जो, (शिकार) वह तुम पर रोक दें उस में से खाओ, और उस पर

अल्लाह का नाम लो। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

5. आज सब स्वच्छ खाद्य तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दिये गये हैं। और ईमान वाली सतवंती स्त्रियों, तथा उन में से सतवंती स्त्रियों जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं। जब कि उन को उन का महर (विवाह उपहार) चुका दिया हो, विवाह में लाने के लिये, व्याभिचार के लिये नहीं, और न प्रेमिका बनाने के लिये। और जो ईमान को नकार देगा, उस का सत्कर्म व्यर्थ हो जायेगा, तथा परलोक में वह विनाशों में होगा।
6. हे ईमान वालो! जब नमाज़ के लिये खड़े हो तो (पहले) अपने मुँह तथा हाथों को कुहनियों तक धो लो, और अपने सिरों का मसह कर लो, तथा अपने पावों टखनों तक (धो लो) और यदि जनाबत की स्थिति में हो तो (स्नान कर के) पवित्र हो जाओ। तथा यदि रोगी अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई शौच से आये, अथवा तुम ने स्त्रियों को स्पर्श किया हो और तुम जल न पाओ तो शुद्ध धूल से तयम्मूम कर लो, और उस से अपने मुखों तथा हाथों का मसह कर लो। अल्लाह तुम्हारे लिये कोई संकीर्णता (तंगी) नहीं चाहता। परन्तु तुम्हें पवित्र करना चाहता है, और ताकि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दें, और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।
7. तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार और उस दृढ़ वचन को याद करो जो तुम से लिया है। जब तुम ने कहा:

हम ने सुन लिया और आज्ञाकारी हो गये। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह दिलों के भेदों को भली भाँति जानने वाला है।

8. हे ईमान वालो! अल्लाह के लिये खड़े रहने वाले, न्याय के साथ साक्ष्य देने वाले रहो, तथा किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस पर न उभार दे कि न्याय न करो। वह (अर्थात: सब के साथ न्याय) अल्लाह से डरने के अधिक समीप है। निःसंदेह तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से भली भाँति सूचित है।
9. जो लोग ईमान लाये, तथा सत्कर्म किये तो उन से अल्लाह का वचन है कि उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।
10. तथा जो काफ़िर रहे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहा, तो वही लोग नारकी हैं।
11. हे ईमान वालो! उस समय को याद करो जब एक गिरोह ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाना चाहा, तो अल्लाह ने उन के हाथों को तुम से रोक दिया, तथा अल्लाह से डरते रहो, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर निर्भर करना चाहिये।
12. तथा अल्लाह ने बनी इस्राईल से (भी) दृढ़ वचन लिया था, और उन में बारह प्रमुख नियुक्त कर दिये थे, तथा अल्लाह ने कहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ की स्थापना करते, और ज़कात देते रहे, तथा मेरे रसूलों पर ईमान (विश्वास) रखते,

और उन को समर्थन देते रहे, तथा अल्लाह को उत्तम ऋण देते रहे, तो मैं अवश्य तुम को तुम्हारे पाप क्षमा कर दूँगा, और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दूँगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। और तुम में से जो इस के पश्चात् भी कुफ़्र (अविश्वास) करेगा वह सुपथ से विचलित हो गया।

13. तो उन के अपना वचन भंग करने के कारण, हम ने उन को धिक्कार दिया, और उन के दिलों को कड़ा कर दिया, वह अल्लाह की बातों को उन के वास्तविक स्थानों से फेर देते हैं, तथा जिस बात का उन को निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, और (अब) आप बराबर उन के किसी न किसी विश्वासघात से सूचित होते रहेंगे, परन्तु उन में बहुत थोड़े के सिवा जो ऐसा नहीं करते, अतः आप उन्हें क्षमा कर दें, और उन को जाने दें, निस्संदेह अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

14. तथा जिन्होंने ने कहा कि हम नसारा (ईसाई) हैं, हम ने उन से (भी) दृढ़ वचन लिया था, तो उन्हें जिस बात का निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, तो प्रलय के दिन तक के लिये हम ने उन के बीच शत्रुता तथा पारस्परिक (आपसी) विद्वेष भड़का दिया, और शीघ्र ही अल्लाह जो कुछ वह करते रहे हैं, उन्हें बता देगा।

15. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं, जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर

रहें हैं, जिन्हें तुम छुपा रहे थे, और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं, अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली पुस्तक (कुर्आन) आ गई है।

16. जिस के द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का मार्ग दिखा रहा है, जो उस की प्रसन्नता पर चलते हों, उन्हें अपनी अनुमति से अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है, और उन्हें सुपथ दिखाता है।
17. निश्चय वह काफ़िर हो गये, जिन्होंने ने कहा कि मर्यम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है। (हे नबी!) उन से कह दो कि यदि अल्लाह मर्यम के पुत्र और उस की माता तथा जो भी धरती में है, सब का विनाश कर देना चाहे, तो किसी में शक्ति है कि वह उसे रोक दे? तथा आकाशों और धरती और जो भी इन के बीच है, सब अल्लाह ही का राज्य है, वह जो चाहे उत्पन्न करता है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।
18. तथा यहूदी और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह के पुत्र तथा प्रियवर हैं। आप पूछें कि फिर वह तुम्हें तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों देता है? बल्कि तुम भी वैसे ही मानव पुरुष हो जैसे दूसरे हैं, जिन की उत्पत्ति उस ने की है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा आकाशों और धरती तथा जो उन दोनों के बीच है, अल्लाह ही का राज्य (अधिपत्य) है, और उसी की ओर सब को जाना है।
19. हे अहले किताब! तुम्हारे पास रसूलों

के आने का क्रम बंद होने के पश्चात् हमारे रसूल आ गये हैं, वह तुम्हारे लिये (सत्य को) उजागर कर रहे हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया, तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

20. तथा याद करो, जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो कि उस ने तुम में नबी और शासक बनाये, तथा तुम्हें वह कुछ दिया जो संसार वासियों में किसी को नहीं दिया।
21. हे मेरी जाति! उस पवित्र धरती (बैतुल मक़दिस) में प्रवेश कर जाओ, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है, और पीछे न फिरो, अन्यथा असफल हो जाओगे।
22. उन्हीं ने कहा: हे मूसा! उस में बड़े बलवान लोग हैं, और हम उस में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे, जब तक वह उस से निकल न जायें, तभी हम उस में प्रवेश कर सकते हैं।
23. उन में से दो व्यक्तियों ने जो (अल्लाह से) डरते थे, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया, कहा कि: उन पर द्वार से प्रवेश कर जाओ, तुम जब उस में प्रवेश कर जाओगे, तो निश्चय तुम प्रभुत्वशाली होगे। तथा अल्लाह ही पर भरोसा करो यदि तुम ईमान वाले हो।
24. वह बोले: हे मूसा! हम उस में कदापि

प्रवेश न करेंगे, जब तक वह उस में (उपस्थित) रहेंगे, अतः तुम और तुम्हारा पालनहार जाये, फिर तुम दोनों युद्ध करो, हम यहीं बैठे रहेंगे।

25. (यह दशा देख कर) मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! मैं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर कोई अधिकार नहीं रखता। अतः तू हमारे तथा अवैज्ञाकारी जाति के बीच निर्णय कर दे।
26. अल्लाह ने कहा: वह (धरती) उन पर चालीस वर्ष के लिये हराम (बर्जित) कर दी गई। वह धरती में फिरते रहेंगे, अतः तुम अवैज्ञाकारी जाति पर तरस न खाओ।
27. तथा उन को आदम के दो पुत्रों का सहीह समाचार सुना दो, जब दोनों ने एक उपायन (कुर्बानी) प्रस्तुत की, तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से स्वीकार नहीं की गई। उस (दूसरे) ने कहा: मैं अवश्य तेरी हत्या कर दूंगा। उस (प्रथम)ने कहा: अल्लाह आज्ञाकारियों ही से स्वीकार करता है।
28. यदि तुम मेरी हत्या करने के लिये मेरी ओर हाथ बढ़ाओ, तो भी मैं तुम्हारी ओर तुम्हारी हत्या करने के लिये हाथ बढ़ाने वाला नहीं हूँ। मैं विश्व के पालनहार अल्लाह से डरता हूँ।
29. मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी (हत्या के) पाप और अपने पाप के साथ फिरो, तो नारकी हो जाओगे, और यही अत्याचारियों का प्रतिकार (बदला) है।
30. अंततः उस ने स्वयं को अपने भाई की हत्या पर तय्यार कर लिया, और बिनाशों में हो गया।

31. फिर अल्लाह ने एक कौआ भेजा, जो भूमि कुरेद रहा था, ताकि उसे दिखायें कि अपने भाई के शव को कैसे छुपाये, उस ने कहा: मुझ पर खेद है! क्या मैं इस कौआ जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव छुपा सकूँ, फिर बड़ा लज्जित हुआ।
32. इसी कारण हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया कि जिस ने भी किसी प्राणी की हत्या की किसी प्राणी का खून करने अथवा धरती में विद्रोह के बिना तो समझो उस ने पुरे मनुष्यों की हत्या कर दी। और जिस ने जीवित रखा एक प्राणी को तो वास्तव में उस ने जीवित रखा सभी मनुष्यों को। तथा उन के पास हमारे रसूल खुली निशानियाँ लाये, फिर भी उन में से अधिकांश धरती में विद्रोह करने वाले हैं।
33. जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से युद्ध करते हों, तथा धरती में उपद्रव करते फिर रहे हों, उन का दण्ड यह है कि उन की हत्या की जाये, तथा उन्हें फाँसी दी जाये, अथवा उन के हाथ पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिये जायें, अथवा उन्हें देश निकाला दे दिया जाये। यह उन के लिये संसार में अपमान है, तथा परलोक में उन के लिये इस से बड़ा दण्ड है।
34. परन्तु जो तौबा (क्षमा याचना) कर लें, इस से पहले कि तुम उन्हें अपने नियंत्रण में लाओ, तो तुम जान लो कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
35. हे ईमान वालो! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, और उस की ओर वसीला⁽¹⁾
- खोजो, तथा उस की राह में जिहाद करो, ताकि तुम सफल हो जाओ।
36. जो लोग काफिर हैं, यद्यपि धरती के सभी (धन धान्य) उन के अधिकार (स्वामित्व) में आ जायें और उसी के समान और भी हो, ताकि वे, यह सब प्रलय के दिन की यातना से अर्थ दण्ड स्वरूप देकर मुक्त हो जायें, तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जायेगा, और उन्हें दुखदायी यातना होगी।
37. वह चाहेंगे कि नरक से निकल जायें, जब कि वह उस से निकल नहीं सकेंगे, और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।
38. चोर, पुरुष और स्त्री दोनों के हाथ काट दो, उन के करतूत के बदले, जो अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड है और अल्लाह प्रभावशाली गुणी है।
39. फिर जो अपने अत्याचार (चोरी) के पश्चात् तौब: (क्षमा याचना) कर ले, और अपने को सुधार ले, तो अल्लाह उस की तौब: स्वीकार कर लेगा, निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
40. क्या तुम जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे, और जिसे चाहे दण्ड दे, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
41. हे नबी! वह आप को उदासीन न करें, जो कुफ्र में तीव्रगामी हैं, उन में से जिन्होंने कहा कि हम ईमान लाये, जब कि उन के दिल ईमान नहीं लाये और उन में से जो यहूदी हैं, जिन की दशा यह है कि मिथ्या

बातें सुनने के लिये कान लगाये रहते हैं, तथा दूसरों के लिये जो आप के पास नहीं आये कान लगाये रहते हैं, वह शब्दों को उन के निश्चित स्थानों के पश्चात् वास्तविक अर्थों से फेर देते हैं। वह कहते हैं कि यदि तुम को यही आदेश दिया जाये (जो हम ने बताया है) तो मान लो, और यदि वह न दिये जाओ, तो उस से बचो! (हे नबी!) जिसे अल्लाह अपनी परीक्षा में डालना चाहे, आप उसे अल्लाह से बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते। यही वह है जिन के दिलों को अल्लाह ने पवित्र करना नहीं चाहा। उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये परलोक में घोर यातना है।

42. वह मिथ्या बातें सुनने वाले अवैध भक्षी हैं। अतः यदि वह आप के पास आयें, तो आप उन के बीच निर्णय कर दें, अथवा उन से मुँह फेर लें (आप को अधिकार है)। और यदि आप उन से मुँह फेर लें, तो वे आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि निर्णय करें, तो न्याय के साथ निर्णय करें। निस्संदेह अल्लाह न्यायकारियों से प्रेम करता है।
43. और वह आप को निर्णयकारी कैसे बना सकते हैं, जब कि उन के पास तौरात (पुस्तक) मौजूद है, जिस में अल्लाह का आदेश है। फिर इस के पश्चात् उस से मुँह फेर रहे हैं। वास्तव में वह ईमान वाले हैं ही नहीं।
44. निःसंदेह हम ने ही तौरात उतारी जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है, जिस के अनुसार वह नबी निर्णय करते रहे जो आज्ञाकारी थे, उन के लिये जो यहूदी थे। तथा धर्माचारी

और विद्वान लोग। क्योंकि वह अल्लाह की पुस्तक के रक्षक बनाये गये थे, और उस के (सत्य होने के) साक्षी थे। अतः तुम (भी) लोगों से न डरो, मुझी से डरो, और मेरी आयतों के बदले तनिक मूल्य न खरीदो, और जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही काफिर है।

45. और हम ने उन (यहूदियों) पर उस (तौरात) में लिख दिया कि प्राण के बदले प्राण है, तथा आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, तथा कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत, तथा सभी आघातों में बराबरी का बदला है। फिर जो कोई बदला लेने को दान (क्षमा) कर दे, तो वह उस के लिये (उस के पापों का) प्रायश्चित्त हो जायेगा, तथा जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही अत्याचारी है।
46. फिर हम ने उन (नबियों) के पश्चात् मर्यम के पुत्र ईसा को भेजा, उसे सच बताने वाला जो उस के सामने तौरात थी। तथा उसे इंजील प्रदान की, जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है। उसे सच बताने वाली जो उस के आगे तौरात थी तथा अल्लाह से डरने वालों के लिये सर्वथा मार्गदर्शन तथा शिक्षा थी।
47. और इंजील के अनुयायी भी उसी से निर्णय करें, जो अल्लाह ने उस में उतारा है, और जो उस से निर्णय न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो वही अधर्मी है।

48. और (हे नबी!) हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (कुर्आन) उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक है, अतः आप लोगों का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, तथा उन की मन मानी पर उस सत्य से विमुख हो कर न चलें, जो आप के पास आया है। हम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया था, और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही समुदाय बना देता, परन्तु उस ने जो कुछ दिया है, उस में तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है। अतः भलाईयों में एक दूसरे से अग्रसर होने का प्रयास करो, अल्लाह ही की ओर तुम सब को लोट कर जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जिन बातों में तुम विभेद करते रहे।

49. तथा (हे नबी!) आप उन का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, और उन की मन मानी पर न चलें तथा उन से सावधान रहें कि आप को जो अल्लाह ने आप की ओर उतारा है, उस में से कुछ से फेर न दें। फिर यदि वह मुँह फेरें, तो जान लें कि अल्लाह चाहता है कि उन के कुछ पापों के कारण उन्हें दण्ड दे। वास्तव में बहुत से लोग उल्लंघनकारी हैं।

50. तो क्या वह जाहिलियत (अंधकार युग) का निर्णय चाहते हैं? और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है, उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

51. हे ईमान वालो! तुम यहूदी तथा ईसाईयों को अपना मित्र न बनाओ,

वह एक दूसरे के मित्र हैं, और जो कोई तुम में से उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में होगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

52. फिर (हे नबी!) आप देखेंगे कि जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है, वह उन्हीं में दौड़े जा रहे हैं, वह कहते हैं कि हम डरते हैं कि हम किसी आपदा के कुचक्र में न आ जायें, तो दूर नहीं कि अल्लाह तुम्हें विजय प्रदान करेगा, अथवा उस के पास से कोई बात हो जायेगी, तो वह लोग उस बात पर जो उन्हीं ने अपने मनों में छुपा रखी है, लज्जित होंगे।

53. तथा (उस समय) ईमान वाले कहेंगे। क्या यही वह है, जो अल्लाह की बड़ी गंभीर शपथें ले कर कहा करते थे कि वह तुम्हारे साथ है? इन के कर्म अकारथ गये और अंततः वह असफल हो गये।

54. हे ईमान वालो! तुम में से जो अपने धर्म से फिर जायेगा, तो अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देगा, जिन से वह प्रेम करेगा, और वह उस से प्रेम करेंगे। वह ईमान वालों के लिये कोमल तथा काफिरों के लिये कड़े होंगे। अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह की दया है, जिसे चाहे प्रदान करता है, और अल्लाह (की दया) विशाल है और वह अति ज्ञानी है।

55. तुम्हारे सहायक केवल अल्लाह और उस के रसूल तथा वह हैं, जो ईमान लाये, जो नमाज़ की स्थापना करते

तथा ज़कात देते हैं, और अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं।

56. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल तथा ईमान वालों को सहायक बनायेगा, तो निश्चय अल्लाह का दल ही छा कर रहेगा।
57. हे ईमान वालो! उन को जिन्होंने ने तुम्हारे धर्म को उपहास तथा खेल बना रखा है उन में से जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं, तथा काफ़ि़रों को सहायक (मित्र) न बनाओ, और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।
58. और जब तुम नमाज़ के लिये पुकारते हो, तो वे उस का उपहास करते तथा खेल बनाते हैं, इस लिये कि वह समझ नहीं रखते।
59. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! इस के सिवा हमारा दोष क्या है, जिस का तुम बदला लेना चाहते हो, कि हम अल्लाह पर तथा जो हमारी ओर उतारा गया और जो हम से पूर्व उतारा गया उस पर ईमान लाये हैं, और इस लिये कि तुम में अधिकतर उल्लंघनकारी हैं।
60. आप उन से कह दें कि क्या मैं तुम्हें बता दूँ, जिन का प्रतिफल (बदला) अल्लाह के पास इस से भी बुरा है? वह हैं जिन को अल्लाह ने धिक्कार दिया और उन पर उस का प्रकोप हुआ, तथा उन में से बंदर और सूअर बना दिये गये, तथा तागूत (असुर- धर्म विरोधी शक्तियों) को पूजने लगे। इन्हीं का स्थान सब से

बुरा है, तथा सर्वाधि कुपथ हैं।

61. जब वह तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, जब कि वह कुफ़र लिये हुये आये और उसी के साथ वापिस हुये, तथा अल्लाह उसे भली भाँति जानता है, जिस को वह छुपा रहे हैं।
62. तथा आप उन में से बहुतों को देखेंगे कि पाप तथा अत्याचार और अपने अवैध खाने में दौड़ रहे हैं, वह बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।
63. उन को उन के धर्माचारी तथा विद्वान पाप की बात करने तथा अवैध खाने से क्यों नहीं रोकते? वह बहुत बुरी रीति बना रहे हैं।
64. तथा यहूदियों ने कहा कि अल्लाह के हाथ बँधे हुये हैं, उन्हीं के हाथ बँधे हुये हैं। और वह अपने इस कथन के कारण धिक्कार दिये गये हैं, बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हुये हैं, वह जैसे चाहे व्यय (खर्च) करता है, और इन में से अधिकतर को जो (कुर्आन) आप के पालनहार की ओर से आप पर उतारा गया है, उल्लंघन तथा कुफ़र (अविश्वास) में अधिक कर देगा, और हम ने उन के बीच प्रलय के दिन तक के लिये शत्रुता तथा बैर डाल दिया है। जब कभी वह युद्ध की अग्नि सुलगाते हैं, तो अल्लाह उसे बुझा देता है। वह धरती में उपद्रव का प्रयास करते हैं, और अल्लाह विद्रोहियों से प्रेम नहीं करता।
65. और यदि अहले किताब ईमान लाते, तथा अल्लाह से डरते, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देते, और

उन्हें सुख के स्वर्गों में प्रवेश देते।

66. तथा यदि वह स्थापित रखते तौरात और इंजील को, और जो भी उन की ओर उतारा गया है, उन के पालनहार की ओर से, तो अवश्य उन को अपने ऊपर (आकाश) से, तथा पैरों के नीचे (धरती) से जीविका मिलती, उन में एक संतुलित समुदाय भी है। और उन में से बहुत से कुकर्म कर रहे हैं।
67. हे रसूल! जो कुछ आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है उसे (सब को) पहुँचा दें, और यदि ऐसा नहीं किया, तो आप ने उस का उपदेश नहीं पहुँचाया। और अल्लाह (विरोधियों से) आप की रक्षा करेगा, निश्चय अल्लाह, काफ़ि़रों को मार्गदर्शन नहीं देता।
68. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहल क़िताब! तुम किसी धर्म पर नहीं हो, जब तक तौरात तथा इंजील और उस (कुर्आन) की स्थापना न करो, जो तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है, तथा उन में से अधिकतर को जो (कुर्आन) आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है, अवश्य उल्लंघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक कर देगा, अतः आप काफ़ि़रों (के अविश्वास) पर दुखी न हों।
69. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और साबी, तथा ईसाई, जो भी अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, तथा सत्कर्म करेगा, तो उन्हीं के लिये कोई डर

नहीं, और न वह उदासीन होंगे।

70. हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया, तथा उन के पास बहुत से रसूल भेजे, (परन्तु) जब कभी कोई रसूल उन की अपनी आकांक्षाओं के विरुद्ध कुछ लाया, तो एक गिरोह को उन्हीं ने झुठला दिया, तथा एक गिरोह को बध करते रहे।
71. तथा वह समझे कि कोई परीक्षा न होगी, इस लिये अंधे बहरे हो गये, फिर अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया, फिर भी उन में से अधिकतर अंधे और बहरे हो गये, तथा वह जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उसे देख रहा है।
72. निश्चय वह काफ़ि़र हो गये, जिन्होंने ने कहा कि अल्लाह, मर्यम का पुत्र मसीह ही है। जब कि मसीह ने कहा था: हे बनी इसराईल! उस अल्लाह की इबादत (बंदना) करो जो मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया। और उस का निवास स्थान नरक है। तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।
73. निश्चय वह भी काफ़ि़र हो गये, जिन्होंने ने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है, जब कि कोई पूज्य नहीं है, परन्तु वही अकेला पूज्य है, और यदि वह जो कुछ कहते हैं, उस से नहीं रुके, तो उन में से काफ़ि़रों को दुखदायी यातना होगी।
74. वह अल्लाह से तौब: तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जब कि अल्लाह अति

क्षमाशील दयावान् है।

75. मर्यम का पुत्र मसीह इस के सिवा कुछ नहीं कि वह एक रसूल है, उस से पहले भी बहुत से रसूल हो चुके हैं, उस की माँ सच्ची थी, दोनों भोजन करते थे, आप देखें कि हम कैसे उन के लिये निशानियाँ (एकेश्वरवाद के लक्षण) उजागर कर रहे हैं, फिर देखिये कि वह कहाँ बहके जा रहे हैं।
76. आप उन से कह दें कि क्या तुम अल्लाह के सिवा उस की इबादत (बंदना) कर रहे हो, जो तुम्हें कोई हानि और लाभ नहीं पहुँचा सकता? तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
77. (हे नबी!) कह दो कि हे अहले किताब! अपने धर्म में अवैध अति न करो⁽²⁾, तथा उन की अभिलाषाओं पर न चलो, जो तुम से पहले कुपथ हो चुके, और बहुतों को कुपथ कर गये, और संमार्ग से विचलित हो गये।
78. बनी इस्राईल में से जो काफिर हो गये, वह दावूद तथा मर्यम के पुत्र ईसा की जुबान पर धिक्कार दिये

गये, यह इस कारण कि उन्होंने ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की सीमा का) उल्लंघन कर रहे थे।

79. वह एक दूसरे को किसी बुराई से, जो वे करते, रोकते नहीं थे, निश्चय वह बड़ी बुराई कर रहे थे।
80. आप उन में से अधिकतर को देखेंगे कि काफिरों को अपना मित्र बना रहे हैं। जो कर्म उन्होंने ने अपने लिये आगे भेजा है बहुत बुरा है कि अल्लाह उन पर क्रुद्ध हो गया तथा यातना में वही सदावासी होंगे।
81. और यदि वह अल्लाह पर, तथा नबी पर, और जो उन पर उतारा गया, उस पर ईमान लाते, तो उन को मित्र न बनाते, परन्तु उन में अधिकतर उल्लंघनकारी हैं।
82. (हे नबी!) आप उन का जो ईमान लाये हैं, सब से कड़ा शत्रु: यहूदियों तथा मिश्रणवादियों को पायेंगे। और जो ईमान लाये हैं उन के सब से अधिक समीप आप उन्हें पायेंगे, जो अपने को ईसाई कहते हैं। यह बात इस लिये है कि उन में उपासक तथा सन्यासी हैं, और वह अभिमान नहीं करते।



83. तथा जब वह (ईसाई) उस (कुर्आन) को सुनते हैं, जो रसूल पर उतरा है, तो आप देखते हैं कि उन की आंखें आँसू से उबल रही हैं, उस सत्य के कारण जिसे उन्होंने पहचान लिया है। वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हम ईमान ले आये, अतः हमें (सत्य) के साक्षियों में लिख ले।
84. (तथा कहते हैं): क्या कारण है कि हम अल्लाह पर तथा इस सत्य (कुर्आन) पर ईमान (विश्वास) न करें? और हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।
85. तो अल्लाह ने उन के यह कहने के कारण उन्हें ऐसे स्वर्ग प्रदान कर दिये, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, वह उन में सदावासी होंगे। तथा यही सत्कर्मियों का प्रतिफल (बदला) है।
86. तथा जो काफिर हो गये, और हमारी आयतों को झुठला दिया, तो वही नारकी है।
87. हे ईमान वलो! उन स्वच्छ पवित्र चीजों को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल (वैध) की है, हराम (अवैध) न करो, और सीमा का उल्लंघन न करो। निस्संदेह अल्लाह उल्लंघनकारियों से प्रेम नहीं करता।
88. तथा उस में से खाओ जो हलाल (वैध) स्वच्छ चीज़ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान की है। तथा अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, यदि तुम उसी पर ईमान (विश्वास) रखते हो।
89. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी व्यर्थ शपथों

पर नहीं पकड़ता, परन्तु जो शपथ जान बूझ कर ली हो, उस पर पकड़ता है, तो उस का प्रायश्चित्त दस निर्धनों को भोजन कराना है, उस माध्यमिक भोजन में से जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो, अथवा उन्हें वस्त्र दो, अथवा एक दास मुक्त करो, और जिसे यह सब उपलब्ध न हो, तो तीन दिन रोज़ा रखना है। यह तुम्हारी शपथों का प्रायश्चित्त है, जब तुम शपथ लो। तथा अपनी शपथों की रक्षा करो, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) का वर्णन करता है, ताकि तुम उस का उपकार मानो।

90. हे ईमान वालो! निस्संदेह मदिरा, जुआ तथा देवस्थान और पाँसे शैतानी मलिन कर्म हैं, अतः इन से दूर रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।
91. शैतान तो यही चाहता है कि शराब (मदिरा) तथा जूए द्वारा तुम्हारे बीच बैर तथा द्वेष डाल दे, और तुम्हें अल्लाह की याद तथा नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम रुकोगे या नहीं?
92. तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, तथा (उन की अवैज्ञा से) सावधान रहो और यदि तुम विमुख हुये, तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल खुला उपदेश पहुँचा देना है।
93. उन पर जो ईमान लाये तथा सदाचार करते रहे, उस में कोई दोष नहीं, जो (निषेधाज्ञा से पहले) खा लिया, जब वह अल्लाह से डरते रहे, तथा ईमान पर स्थिर रह गये, और सत्कर्म

- करते रहे, फिर डरते और सत्कर्म करते रहे, फिर (रोके गये तो) अल्लाह से डरे और सदाचार करते रहे, तो अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता है।
94. हे ईमान वालो! अल्लाह कुछ शिकार द्वारा जिन तक तुम्हारे हाथ तथा भाले पहुँचेंगे, अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेगा, ताकि यह जान ले कि तुम में से कौन उस से बिन देखे डरता है? फिर इस (आदेश) के पश्चात् जिस ने (इस का) उल्लंघन किया, तो उसी के लिये दुःखदायी यातना है।
95. हे ईमान वालो! शिकार न करो, जब तुम एहराम की स्थिति में रहो, तथा तुम में से जो कोई जान बूझ कर ऐसा कर जाये, तो पालतू पशु से शिकार किये पशु जैसा बदला (प्रतिकार) है, जिस का निर्णय तुम में से दो न्यायकारी व्यक्ति करेंगे, जो काबा तक हद्द (उपहार स्वरूप) भेजा जाये अथवा प्रायश्चित्त है, जो कुछ निर्धनों का खाना है, अथवा उस के बराबर रोजे रखना है। ताकि अपने किये का दुष्परिणाम चखे। इस आदेश से पूर्व जो हुआ, अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया, और जो फिर करेगा, अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।
96. तथा तुम्हारे लिये जल का शिकार और उस का खाद्य हलाल (वैध) कर दिया गया है, तुम्हारे तथा यात्रियों के लाभ के लिये, तथा तुम पर थल का शिकार जब तक एहराम की स्थिति में रहो, हराम (अवैध) कर दिया गया है, और अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, जिस की ओर तुम सभी एकत्र किये जाओगे।
97. अल्लाह ने आदरणीय घर काबा को लोगों के लिये (शान्ति तथा एकता की) स्थापना का साधन बना दिया है, तथा आदरणीय मासों और (हज्ज) की कुर्बानी तथा कुर्बानी के पशुओं को जिन्हें पट्टे पहनाये गये हों, यह इस लिये किया गया ताकि तुम्हें ज्ञान हो जाये कि अल्लाह जो कुछ आकाशों और जो कुछ धरती में है सब को जानता है। तथा निस्संदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का ज्ञानी है।
98. तुम जान लो कि अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है, और यह कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।
99. अल्लाह के रसूल का दायित्व इस के सिवा कुछ नहीं कि उपदेश पहुँचा दे। और अल्लाह जो तुम बोलते और जो मन में रखते हो, सब जानता है।
100. (हे नबी!) कह दो कि मलिन तथा पवित्र समान नहीं हो सकते। यद्यपि मलिन की अधिकता तुम्हें भा रही हो। तो हे मतिमानों! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरो, ताकि तुम सफल हो जाओ।
101. हे ईमान वालो! ऐसी बहुत सी चीजों के विषय में प्रश्न न करो, जो यदि तुम्हें बता दी जायें, तो तुम्हें बुरा लग जाये। तथा यदि तुम उन के विषय में जब कि कुआन उतर रहा है, प्रश्न करोगे, तो वह तुम्हारे लिये खोल दी जायेगी, अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया। और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।
102. ऐसे ही प्रश्न एक समुदाय ने तुम से पहले किये, फिर इस के कारण वह काफिर हो गये।

103. अल्लाह ने बहीरा और साइबा तथा वसीला और हाम कुछ नहीं बनाया है, परन्तु जो काफिर हो गये, वह अल्लाह पर झूठ घड़ रहे हैं, और उन में अधिकतर निर्बोध हैं।
104. और जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो अल्लाह ने उतारा है, तथा रसूल की ओर (आओ) तो कहते हैं: हम को वही बस है, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है, क्या उन के पूर्वज कुछ न जानते रहे हों और न संमार्ग पर रहे हों?
105. हे ईमान वालो! तुम अपनी चिन्ता करो, तुम्हें वे हानि नहीं पहुँचा सकेंगे जो कुपथ हो गये, जब तुम सुपथ पर रहो। अल्लाह की ओर तुम सब को (परलोक में) फिर कर जाना है, फिर वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों से सूचित कर देगा।
106. हे इमान वालो! यदि किसी के मरण का समय हो, तो बसिय्यत⁽²⁾ के समय तुम में से दो न्यायकारियों को अथवा तुम्हारे सिवा दो दूसरों को गवाह बनाये, यदि तुम धरती में यात्रा कर रहे हो, और तुम्हें मरण की आपदा आ पहुँचे। और उन दोनों को नमाज के बाद रोक लो, फिर वह दोनों अल्लाह की शपथ लें, यदि तुम्हें उन पर संदेह हो। वह यह कहें कि हम गवाही के द्वारा कोई मूल्य नहीं खरीदते, यद्यपि वह समीपवर्ती क्यों न हों, और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाते हैं, यदि हम ऐसा करें तो पापियों में हैं।
107. फिर यदि ज्ञान हो जाये कि वह दोनों (साक्षी) किसी पाप के अधिकारी हुये हैं, तो उन दोनों के स्थान पर दो दूसरे गवाह खड़े हो जायें, उन में से जिन का अधिकार पहले दोनों ने दबाया है, और वह दोनों शपथ लें कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सही है, और हम ने कोई अत्याचार नहीं किया है। यदि किया है, तो (निस्संदेह) हम अत्याचारी हैं।
108. इस प्रकार अधिक आशा है कि वह सही गवाही देंगे, अथवा इस बात से डरेंगे कि उन की शपथों को दूसरी शपथों के पश्चात् न माना जाये, तथा अल्लाह से डरते रहो, और (उस का आदेश) सुनो, और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।
109. जिस दिन अल्लाह सब रसूलों को एकत्र करेगा, फिर उन से कहेगा कि तुम्हें (तुम्हारी जातियों की ओर से) क्या उत्तर दिया गया? वह कहेंगे कि हमें इस का कोई ज्ञान नहीं। निस्संदेह तू ही सब छुपे तथ्यों का ज्ञानी है।
110. तथा याद करो, जब अल्लाह ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! अपने ऊपर तथा अपनी माता पर मेरे पुरस्कार को याद कर, जब मैं ने पवित्रात्मा (जिबरील) द्वारा तुझे समर्थन दिया, तू गह्वारे (गोद) में तथा बड़ी आयु में लोगों से बातें कर रहा था, तथा तुझे पुस्तक और प्रबोध तथा तौरात और इंजील की शिक्षा दी, जब तू मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी का

रूप बनाता, और उस में फूँकता, तो वह मेरी अनुमति से वास्तव में पक्षी बन जाता था। और तू जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को मेरी अनुमति से स्वस्थ कर देता था, और जब तू मुर्दा को मेरी अनुमति से जीवित कर देता था, और मैं ने बनी इस्राईल से तुझे बचाया था, जब तू उन के पास खुली निशानियों लाया, तो उन में से काफ़िरोँ ने कहा कि यह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं है।

111. तथा याद कर, जब मैं ने तेरे हवारियों के दिलों में यह बात डाल दी कि मुझ पर तथा मेरे रसूल (ईसा) पर ईमान लाओ, तो सब ने कहा कि हम ईमान लाये, और तू साक्षी रह कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।
112. जब हवारियों ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तेरा पालनहार यह कर सकता है कि हम पर आकाश से थाल (दस्तर ख़ान) उतार दे। उस (ईसा) ने कहा: तुम अल्लाह से डरो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।
113. उन्हीं ने कहा: हम चाहते हैं कि उस में से खायें, और हमारे दिलों को संतोष हो जाये, तथा हमें विश्वास हो जाये कि तू ने हमें जो कुछ बताया है सच है, और हम उस के साक्षियों में से हो जायें।
114. मर्यम के पुत्र ईसा ने प्रार्थना की: हे अल्लाह हमारे पालनहार! हम पर आकाश से एक थाल उतार दे, जो हमारे तथा हमारे पश्चात् के लोगों के लिये उत्सव (का दिन) बन

जाये, तथा तेरी ओर से एक चिन्ह (निशानी)। तथा हमें जीविका प्रदान कर, तू उत्तम जीविका प्रदाता है।

115. अल्लाह ने कहा मैं तुम पर उसे उतारने वाला हूँ, फिर उस के पश्चात् भी जो कुफ़्र (अविश्वास) करेगा, तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूँगा, ऐसा दण्ड कि संसार वासियों में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूँगा।
116. तथा जब अल्लाह (प्रलय के दिन) कहेगा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़ कर मुझे तथा मेरी माता को पूज्य (अराध्य) बना लो? वह कहेगा: तू पवित्र है, मुझ से यह कैसे हो सकता है कि ऐसी बात कहूँ जिस का मुझे कोई अधिकार नहीं। यदि मैं ने कहा होगा, तो तुझे अवश्य उस का ज्ञान हुआ होगा। तू मेरे मन की बात जानता है, और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में तू ही परोक्ष (ग़ैब) का अति ज्ञानी है।
117. मैं ने तो उन से केवल वही कहा था, जिस का तू ने आदेश दिया था कि अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है। मैं उन की दशा जानता था जब तक उन में था और जब तू ने मेरा समय पूरा कर दिया, तो तू ही उन को जानता था। और तू प्रत्येक वस्तु से सूचित है।
118. यदि तू उन्हें दण्ड दे, तो वह तेरे दास (बन्दे) हैं, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही

प्रभावशाली गुणी है।

119. अल्लाह कहेगा: यह वह दिन है, जिस में सच्चों को उन का सच्च ही लाभ देगा। उन्हीं के लिये ऐसे स्वर्ग है जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उन में नित्य सदावासी होंगे, अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया तथा वह अल्लाह से प्रसन्न हो गये और यही सब से बड़ी सफलता है।
120. आकाशों तथा धरती और उन में जो कुछ है, सब का राज्य अल्लाह ही का⁽²⁾ है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

सूरह अनुग्राम - 6

सूरह अनुग्राम के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 165 आयते हैं

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

- सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने आकाशों तथा धरती को बनाया तथा अंधेरे और उजाला बनाया, फिर भी जो काफिर हो गये, वह (दूसरों को) अपने पालनहार के बराबर समझते हैं।
 - वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से उत्पन्न किया फिर (तुम्हारे जीवन की) अवधि निर्धारित कर दी, और एक निर्धारित अवधि (प्रलय का समय) उस के पास है, फिर भी तुम संदेह करते हो।
 - वही अल्लाह पूज्य है आकाशों तथा धरती में। वह तुम्हारे भेदों तथा खुली बातों को जानता है। तथा तुम जो भी
- करते हो उस को जानता है।
 - और उन के पास उन के पालनहार की आयतों (निशानियों) में से कोई आयत (निशानी) नहीं आई, जिस से उन्हीं ने मुँह फेर न लिये हों।
 - उन्हीं ने सत्य को झुठला दिया है, जब भी उन के पास आया। तो शीघ्र ही उन के पास उस के समाचार आ जायेंगे जिस का उपहास कर रहें हैं।
 - क्या वह नहीं जानते कि उन से पहले हम ने कितनी जातियों का नाश कर दिया जिन्हें हम ने धरती में ऐसी शक्ति और अधिकार दिया था जो अधिकार और शक्ति तुम्हें नहीं दिये हैं। और हम ने उन पर धारा प्रवाह वर्षा की, और उन की धरती में नहरें प्रवाहित कर दी, फिर हम ने उन के पापों के कारण उन्हें नाश कर दिया, और उन के पश्चात् दूसरी जातियों को पैदा कर दिया।
 - (हे नबी!) यदि हम आप पर कागज़ में लिखी हुई कोई पुस्तक उतार दें, फिर वह उसे अपने हाथों से छूयें, तब भी जो काफिर हैं, कह देंगे कि यह तो केवल खुला हुआ जादू है।
 - तथा उन्हीं ने कहा: इस (नबी) पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और यदि हम कोई फरिश्ता उतार देते, तो निर्णय ही कर दिया जाता, फिर उन्हें अवसर नहीं दिया जाता।
 - और यदि हम किसी फरिश्ते को नबी बनाते, तो उसे किसी पुरुष ही के में बनाते, और उन को उसी संदेह में डाल देते जो संदेह (अब) कर रहे हैं।

10. हे नबी! आप से पहले भी रसूलों के साथ उपहास किया गया, तो जिन्होंने उन से उपहास किया, उन को उन के उपहास के (दुष्परिणाम ने) घेर लिया।
11. (हे नबी!) उन से कहो कि धरती में फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का दुष्परिणाम क्या हुआ?
12. (हे नबी!) उन से पूछिये कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह किस का है? कहो: अल्लाह का है, उस ने अपने ऊपर दया को अनिवार्य कर लिया है, वह तुम्हें अवश्य प्रलय के दिन एकत्र करेगा जिस में कोई संदेह नहीं, जिन्होंने अपने आप को क्षति में डाल लिया वही ईमान नहीं ला रहे हैं।
13. तथा उसी का है, जो कुछ रात और दिन में बस रहा है, और वह सब कुछ सुनता जानता है।
14. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवा (किसी) को सहायक बना लूँ, जो आकाशों तथा धरती का बनाने वाला है, वह सब को खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता? आप कहिये कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ तथा कदापि मुश्रिकों में से न बनूँ।
15. आप कह दें कि मैं डरता हूँ यदि अपने पालनहार की अवज्ञा करूँ तो एक घोर दिन की यातना से।
16. तथा जिस से उस (यातना) को उस दिन फेर दिया गया, तो अल्लाह ने

- उस पर दया कर दी, और यही खुली सफलता है।
17. यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाये, तो उस के सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर दे और यदि तुम्हें कोई लाभ पहुँचाये, तो वही जो चाहे कर सकता है।
 18. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचित है।
 19. हे नबी! इन (मुश्रिकों) से पूछो कि किस की गवाही सब से बढ़ कर है? आप कह दें कि अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच गवाह है। तथा मेरी ओर यह कुर्आन बह्यी (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है, ताकि मैं तुम्हें सावधान करूँ तथा उसे जिस तक यह पहुँचे। क्या वास्तव में तुम यह साक्ष्य (गवाही) दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी है? आप कह दें कि मैं तो इस की गवाही नहीं दे सकता। आप कह दें कि वह तो केवल एक ही पूज्य है, तथा वास्तव में मैं तुम्हारे शिर्क से विरक्त हूँ।
 20. जिन लोगों को हम ने पुस्तक प्रदान की है, वह आप को उसी प्रकार पहचानते हैं, जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं, परन्तु जिन्होंने स्वयं को क्षति में डाल रखा है, वही ईमान नहीं ला रहे हैं।
 21. तथा उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाये, अथवा उस की आयतों को झूठलाये? निस्संदेह अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

22. जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे, तो जिन्होंने शिर्क किया है, उन से कहेंगे कि तुम्हारे वह साझी कहाँ गये जिन्हें तुम (पूज्य) समझ रहे थे?
23. फिर नहीं होगा उन का उपद्रव इस के सिवा कि: वह कहेंगे कि अल्लाह की शपथ! हम मुशरिक थे ही नहीं!
24. देखो कि कैसे अपने ऊपर ही झूठ बोल गये और उन से वह (मिथ्या पूज्य) जो बना रहे थे खो गये!
25. और उन (मुशिरकों) में से कुछ आप की बात ध्यान से सुनते हैं, और (वास्तव में) हम ने उन के दिलों पर पर्दे (आवरण) डाल रखे हैं कि बात न समझें, और उन के कान भारी कर दिये हैं, यदि वह (सत्य के) प्रत्येक लक्षण देख लें, तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे यहाँ तक कि जब वह आप के पास आ कर झगड़ते हैं, जो काफिर है तो वह कहते हैं कि यह तो पूर्वजों की कथायें हैं!
26. वह उसे (सुनने से) दूसरों को रोकते हैं, तथा स्वयं भी दूर रहते हैं और वह अपना ही विनाश कर रहे हैं। परन्तु समझते नहीं हैं!
27. तथा (हे नबी!) यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे, जब वह नरक के समीप खड़े किये जायेंगे, तो वह कामना कर रहे होंगे कि ऐसा होता कि हम संसार की ओर फेर दिये जाते और अपने पालनहार की आयतों को नहीं झुठलाते, और हम ईमान वालों में हो जाते।
28. बल्कि उन के लिये वह बात खुल जायेगी, जिसे वह इस से पहले छुपा रहे थे, और यदि संसार में फेर दिये जायें, तो फिर वही करेंगे जिस से रोके गये थे। वास्तव में वह हैं ही झूठे!
29. तथा उन्होंने ने कहा कि: जीवन बस हमारा संसारिक जीवन है और हमें फिर जीवित होना नहीं है।
30. तथा यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे जब वह (प्रलय के दिन) अपने पालनहार के समक्ष खड़े किये जायेंगे, उस समय अल्लाह उन से कहेगा: क्या यह (जीवन) सत्य नहीं? वह कहेंगे: क्यों नहीं, हमारे पालनहार की शपथ! इस पर अल्लाह कहेगा: तो अब अपने कुफ़र करने की यातना चखो।
31. निश्चय वह क्षति में पड़ गये, जिन्होंने ने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, यहाँ तक कि जब प्रलय अचानक उन पर आ जायेगी तो कहेंगे: हाय! इस विषय में हम से बड़ी चूक हुई और वह अपने पापों का बोझ अपनी पीठों पर उठाये होंगे। तो कैसा बुरा बोझ है जिसे वह उठा रहे हैं।
32. तथा संसारिक जीवन एक खेल और मनोरंजन है। तथा परलोक का घर ही उत्तम है, उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों, तो क्या तुम समझत नहीं हो?
33. (हे नबी!) हम जानते हैं कि उन की बातें आप को उदासीन कर देती हैं, तो वास्तव में वह आप को नहीं झुठलाते, परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।
34. और आप से पहले भी बहुत से रसूल

झुठलाये गये। तो इसे उन्होंने ने सहन किया, और उन्हें दुःख दिया गया, यहाँ तक कि हमारी सहायता आ गयी। तथा अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं सकता, और आप के पास रसूलों के समाचार आ चुके हैं।

35. और यदि आप को उन की विमुखता भारी लग रही है, तो यदि आप से हो सके, तो धरती में कोई सुरंग खोज लें, अथवा आकाश में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई निशानी (चमत्कार) ला दें, और यदि अल्लाह चाहे तो इन्हें मार्गदर्शन पर एकत्र कर दे। अतः आप कदापि अज्ञानों में न हों।
36. आप की बात वही स्वीकार करेंगे, जो सुनते हों, परन्तु जो मुर्दे हैं उन्हें तो अल्लाह ही जीवित करेगा, फिर उसी की ओर फेरे जायेंगे।
37. तथा उन्होंने ने कहा कि: नबी पर उस के पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है, परन्तु अधिकतर लोग अज्ञान हैं।
38. धरती में विचरते जीव तथा अपने दो पंखों से उड़ते पक्षी तुम्हारी जैसी जातियाँ हैं, हम ने पुस्तक में कुछ कमी नहीं की है, फिर वह अपने पालनहार की ओर ही एकत्र किये जायेंगे।
39. तथा जिन्होंने ने हमारी निशानियों को झुठला दिया, वह गुँगे, बहरे, अंधेरी में हैं। जिसे अल्लाह चाहता है कुपथ

करता है, और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है।

40. (हे नबी!) उन से कहो कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप आ जाये अथवा तुम पर प्रलय आ जाये, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे, यदि तुम सच्चे हो?
41. बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, तो वह दूर करता है उस को जिस के लिये तुम पुकारते हो, यदि वह चाहे, और तुम उसे भूल जाते हो, जिसे साझी बनाते हो।
42. और आप से पहले भी समुदायों की ओर हम ने रसूल भेजे, तो हम ने उन्हें आपदाओं और दुखों में डाला, ताकि वह विनय करें।
43. तो जब उन पर हमारी यातना आई, तो वह हमारे समक्ष झुक क्यों नहीं गये? परन्तु उन के दिल और भी कड़े हो गये, तथा शैतान ने उन के लिये उन के कुकर्मों को सुन्दर बना दिया।
44. तो जब उन्होंने ने उसे भुला दिया जो याद दिलाये गये थे, तो हम ने उन पर प्रत्येक (सुख सुविधा) के द्वार खोल दिये। यहाँ तक कि जब जो कुछ वह दिये गये उस से प्रफुल्ल हो गये, तो हम ने उन्हें अचानक घेर लिया, और वह निराश हो कर रह गये।
45. तो उन की जड़ काट दी गई जिन्होंने अत्याचार किया, और सब प्रशंसा अल्लाह ही के लिये है। जो पूरे विश्व का पालनहार है।
46. (हे नबी!) आप कहें कि क्या तुम ने इस पर भी विचार किया कि यदि

अल्लाह तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति छीन ले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन है जो तुम्हें इसे वापस दिला सके? देखो, हम कैसे बार बार आयतें प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर भी वह मुँह फेर रहे हैं।

47. आप कहें कि कभी तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि तुम पर अल्लाह की यातना अचानक या खुल कर आ जाये, तो अत्याचारियों (मुश्रिकों) के सिवा किस का बिनाश होगा?
48. और हम रसूलों को इसी लिये भेजते हैं कि वह (आज्ञाकारियों को) शुभ सुचना दें तथा (अवैज्ञाकारियों को) डरायें तो जो ईमान लाये तथा अपने कर्म सुधार लिये, उन के लिये कोई भय नहीं, और न वह उदासीन होंगे।
49. और जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें अपनी अवैज्ञा के कारण यातना अवश्य मिलेगी।
50. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पास अल्लाह का कोष नहीं है, और न मैं परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ, तथा न मैं यह कहता कि मैं कोई फरिश्ता हूँ। मैं तो केवल उसी पर चल रहा हूँ जो मेरी ओर वही (प्रकाशना) की जा रही है। आप कहें कि क्या अन्धा तथा आँख वाला बराबर हो जायेंगे? क्या तुम सोच विचार नहीं करते?
51. और इस (वही द्वारा) उन को सचेत करो, जो इस बात से डरते हैं कि वे अपने पालनहार के पास (प्रलय के दिन) एकत्र किये जायेंगे, इस दशा में कि अल्लाह के सिवा कोई सहायक तथा अनुशंसक (सिफारशी) न होगा,

संभवतः वह आज्ञाकारी हो जायें।

52. (हे नबी!) आप उन्हें अपने से दूर न करें जो अपने पालनहार की वंदना प्रातः संध्या करते उस की प्रसन्नता की चाह में लगे रहते हैं। उन के हिसाब का कोई भार आप पर नहीं है और न आप के हिसाब का कोई भार उन पर है, अतः यदि आप उन्हें दूर करेंगे, तो अत्याचारियों में ही जायेंगे।
53. और इसी प्रकार हम ने कुछ लोगों की परीक्षा कुछ लोगों द्वारा की है, ताकि वह कहें कि क्या यही हैं जिन पर हमारे बीच से अल्लाह ने उपकार किया है? तो क्या अल्लाह कृतज्ञों को भली भाँति जानता नहीं है?
54. तथा (हे नबी!) जब आप के पास वह लोग आयें, जो हमारी आयतों (कुरआन) पर ईमान लाये हैं तो आप कहें कि तुम पर सलाम (शान्ति) है। अल्लाह ने अपने ऊपर दया अनिवार्य कर ली है कि तुम में से जो भी अज्ञानता के कारण कोई कुकर्म कर लेगा, फिर उस के पश्चात् तौबा (क्षमा याचना) कर लेगा, और अपना सुधार कर लेगा तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
55. और इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन करते हैं, और इस के लिये ताकि अपराधियों का पथ उजागर हो जाये (और सत्यवादियों का पथ संदिग्ध न हो।)
56. (हे नबी!) आप (मुश्रिकों से) कह दें कि मुझे रोक दिया गया है कि मैं उन की वंदना करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। उन से कह दो कि

मैं तुम्हारी आकांक्षाओं पर नहीं चल सकता। मैं ने ऐसा किया तो मैं सत्य से कुपथ हो गया, और मैं सुपथों में से नहीं रह जाऊँगा।

57. आप कह दें कि मैं अपने पालनहार के खुले तर्क पर स्थित हूँ और तुम ने उसे झुठला दिया है। जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता करते हो, वह मेरे पास नहीं। निर्णय तो केवल अल्लाह के अधिकार में है। वह सत्य को वर्णित कर रहा है। और वह सर्वोत्तम निर्णयकारी है।
58. आप कह दें कि जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता कर रहे हो, मेरे अधिकार में होता तो हमारे और तुम्हारे बीच निर्णय हो गया होता। तथा अल्लाह अत्यचारियों को भलि भाँति जानता है।
59. और उसी (अल्लाह) के पास गैब (परोक्ष) की कुंजियाँ हैं। उन्हें केवल वही जानता है। तथा जो कुछ थल और जल में है, वह सब का ज्ञान रखता है। और कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु उसे वह जानता है। और न कोई अब जो धरती के अंधेरों में हो, और न कोई अर्द्र (भीगा) और शुष्क (सूखा) है परन्तु वह एक खुली पुस्तक में है।
60. वही है जो रात्रि में तुम्हारी आत्माओं को ग्रहण कर लेता है, तथा दिन में जो कुछ किया है उसे जानता है। फिर तुम्हें उस (दिन) में जगा देता है, ताकि निर्धारित अवधि पूरी हो जाये। फिर तुम्हें उसी की ओर प्रत्यागत (वापस) होना है। फिर वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों से सूचित कर देगा।
61. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर

पूरा अधिकार रखता है, और तुम पर रक्षकों को भेजता है। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी के मरण का समय आ जाता है तो हमारे फरिश्ते उस का प्राण ग्रहण कर लेते हैं और वह तनिक भी आलस्य नहीं करते।

62. फिर सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर वापिस लाये जाते हैं। सावधान! उसी को निर्णय करने का अधिकार है। और वह अति शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
63. हे नबी! उन से पूछिये कि थल तथा जल के अंधेरों में तुम्हें कौन बचाता है, जिसे तुम विनय पूर्वक और धीरे धीरे पुकारते हो कि यदि उस ने हमें बचा दिया, तो हम अवश्य कृतज्ञों में हो जायेंगे?
64. आप कह दें कि अल्लाह ही उस से तथा प्रत्येक आपदा से तुम्हें बचाता है। फिर भी तुम उस का साझी बनाते हो।
65. आप उन से कह दें कि वह इस का सामर्थ्य रखता है कि वह कोई यातना तुम्हारे ऊपर (आकाश) से भेज दे। अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे (धरती) से, या तुम्हें सम्प्रदायों में कर के एक को दूसरे के आक्रमण का स्वाद चखा दे। देखिये कि हम किस प्रकार आयतों का वर्णन कर रहे हैं कि संभवतः वह समझ जायें।
66. और (हे नबी!) आप की जाति ने इस (कुर्आन) को झुठला दिया, जब कि वह सत्य है। और आप कह दें कि मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ।
67. प्रत्येक सुचना के पूरे होने का एक निश्चित समय है, और शीघ्र ही तुम

जान लोगे।

68. और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में दोष निकालते हैं तो उन से विमुख हो जायें, यहाँ तक कि वह किसी दूसरी बात में लग जायें। और यदि आप को शैतान भुला दे तो याद आ जाने के पश्चात् अत्याचारी लोगों के साथ न बैठें।
69. तथा उन के हिसाब में से कुछ का भार उन पर नहीं है जो अल्लाह से डरते हैं, परन्तु याद दिला देना उन का कर्तव्य है, ताकि वह भी डरने लगें।
70. तथा आप उन्हें छोड़ें जिन्होंने अपने धर्म को क्रीड़ा और खेल बना लिया है। और संसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और इस (कुर्आन) द्वारा उन्हें शिक्षा दें। ताकि कोई प्राणी अपने कर्तूतों के कारण बंधक न बन जाये, जिस का अल्लाह के सिवा कोई सहायक और अभिस्तावक (सिफ़ारशी) न होगा। और यदि वह सब कुछ बदले में दें तो भी उन से नहीं लिया जायेगा। यही लोग अपने कर्तूतों के कारण बंधक होंगे। उन के लिये उन के कुफ़्र (अविश्वास) के कारण खौलता पेय तथा दुःखदायी यातना होगी।
71. हे नबी! उन से कहिये कि क्या हम अल्लाह के सिवा उन की वंदना करें जो हमें कोई लाभ और हानि नहीं पहुँचा सकते? और हम एड़ियों के बल फिर जायें, इस के पश्चात् जब हमें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है, उस के समान जिसे शैतानों ने धरती में बहका दिया हो, वह आश्चर्य चकित

हो, उस के साथी उस को पुकार रहे हों कि सीधी राह की ओर हमारे पास आ जाओ? आप कह दें कि मार्गदर्शन तो वास्तव में वही है जो अल्लाह का मार्ग दर्शन है। और हमें तो यही आदेश दिया गया कि हम विश्व के पालनहार के आज्ञाकारी हो जायें।

72. और नमाज़ की स्थापना करें, और उस से डरते रहें। तथा वही है जिस के पास तुम एकत्रित किये जाओगे।
73. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की है। और जिस दिन वह कहेगा कि "हो जा" तो वह (प्रलय) हो जायेगी। उस का कथन सत्य है। और जिस दिन नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा उस दिन उसी का राज्य होगा। वह परोक्ष तथा प्रत्यक्ष का ज्ञानी है। और वही गुणी सर्वसूचित है।
74. तथा जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहा: क्या आप मूर्तियों को पूज्य बनाते है? मैं आप को तथा आप की जाति को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।
75. और इब्राहीम को इसी प्रकार हम आकाशों तथा धरती के राज्य की व्यवस्था दिखाते रहे, और ताकि वह विश्वासियों में हो जाये।
76. तो जब उस पर रात छा गयी, तो उस ने एक तारा देखा। कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहा मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता।
77. फिर जब उस ने चाँद को चमकते देखा तो कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया तो कहा: यदि मुझे

मेरे पालनहार ने मार्गदर्शन नहीं दिया तो मैं अवश्य कुपथों में से हो जाऊँगा।

78. फिर जब (प्रातः) सूर्य को चमकते देखा तो कहा यह मेरा पालनहार है। यह सब से बड़ा है। फिर जब वह भी डूब गया तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! निःसंदेह मैं उस से विरक्त हूँ जिसे तुम (अल्लाह का) साझी बनाते हो।
79. मैं ने तो अपना मुख एकाग्र हो कर उस की ओर कर लिया है जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना की है। और मैं मुशिरकों में से नहीं⁽¹⁾ हूँ।
80. और जब उस की जाति ने उस से वाद झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम अल्लाह के विषय में मुझे से झगड़ रहे हो, जब कि उस ने मुझे सुपथ दिखा दिया है। तथा मैं उस से नहीं डरता हूँ जिसे तुम साझी बनाते हो। परन्तु मेरा पालनहार कुछ चाहे (तभी वह मुझे हानि पहुँचा सकता है।) मेरा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है। तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?
81. और मैं उन से कैसे डरूँ जिन को तुम ने उस का साझी बना लिया है, जब तुम उस चीज़ को उस का साझी बनाने से नहीं डरते जिस का अल्लाह ने तुम पर कोई तर्क (प्रमाण) नहीं उतारा है? तो दोनों पक्षों में कौन अधिक शान्त रहने का अधिकारी है, यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो?
82. जो लोग ईमान लाये, और अपने ईमान को अत्याचार (शिरक) से लिप्त नहीं किया, उन्हीं के लिये शान्ति

है, तथा वही मार्ग दर्शन पर है।

83. यह हमारा तर्क था, जो हम ने इब्राहीम को उस की जाति के विरुद्ध प्रदान किया, हम जिस के पदों को चाहते हैं ऊँचा कर देते हैं। वास्तव में आप का पालनहार गुणी तथा जानी है।
84. और हम ने इब्राहीम को (पुत्र) इसहाक तथा (पौत्र) याकूब प्रदान किये। प्रत्येक को हम ने मार्गदर्शन दिया। और उस से पहले हम ने नूह को मार्गदर्शन दिया। और इब्राहीम की संतति में से दावूद तथा सुलैमान और अय्यूब तथा यूसुफ़ और मूसा तथा हारून को। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल प्रदान करते हैं।
85. तथा ज़करिय्या और यहया तथा ईसा और इलयास को। यह सभी सदाचारियों में से थे।
86. तथा इसमाईल और यसम्र तथा यूनस और लूत को। प्रत्येक को हम ने संसार वासियों पर प्रधानता दी।
87. तथा उन के पूर्वजों और उन की संतति तथा उन के भाईयों को और हम ने इन सब को निर्वाचित कर लिया। और उन्हें सुपथ दिखा दिया था।
88. यही अल्लाह का मार्गदर्शन है जिस के द्वारा अपने भक्तों में से जिसे चाहे सुपथ दर्शा देता है। और यदि वह शिरक करते, तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।
89. (हे नबी!) यही वह लोग है जिन्हें हम ने पुस्तक तथा निर्णय शक्ति एवं नुबूवत प्रदान की। फिर यदि यह

(मुश्रिक) इन बातों को नहीं मानते तो हम ने इसे कुछ ऐसे लोगों को सौंप दिया है जो इसका इन्कार नहीं करते।

90. (हे नबी!) यही वह लोग हैं जिन को अल्लाह ने सुपथ दर्शा दिया, तो आप भी उन्हीं के मार्गदर्शन पर चले तथा कह दें कि मैं इस (कार्य) पर तुम से कोई प्रतिदान नहीं माँगता। यह सब संसारवासियों के लिये एक शिक्षा के सिवा कुछ नहीं है।

91. तथा उन्हीं ने अल्लाह का सम्मान जैसे करना चाहिये नहीं किया। जब उन्हीं ने कहा कि अल्लाह ने किसी पुरुष पर कुछ नहीं उतारा, उन से पूछिये कि वह पुस्तक जिसे मूसा लाये, जो लोगों के लिये प्रकाश तथा मार्गदर्शन है, किस ने उतारी है जिसे तुम पन्नों में कर के रखते हो? जिस में से तुम कुछ को लोगों के लिये बयान करते हो और बहुत कुछ छुपा रहे हो। तथा तुम को उस का ज्ञान दिया गया, जिस का तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को ज्ञान न था? आप कह दें कि अल्लाह ने। फिर उन्हें उन के विवादों में खेलते हुये छोड़ दें।

92. तथा यह (कुरआन) एक पुस्तक है जिसे हम ने (तौरात के समान) उतारा है। जो शुभ, अपने से पूर्व (की पुस्तकों) को सच्च बताने वाली है, तथा ताकि आप «उम्मुल कुरा» (मक्का नगर) तथा उस के चतुर्दिक् के निवासियों को सचेत करें। तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही इस पर ईमान लाते हैं। और वही अपनी नमाज़ों का पालन करते हैं।

93. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन

होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और कहे कि मेरी ओर प्रकाशना (वह्नी) की गई है, जब कि उस की ओर वह्नी (प्रकाशना) नहीं की गयी। तथा जो यह कहे कि अल्लाह ने जो उतारा है उस के समान मैं भी उतार दूँगा? और (हे नबी!) आप यदि ऐसे अत्याचारी को मरण की घोर दशा में देखते जब की फरिश्ते उन की ओर हाथ बढ़ाये (कहते हैं): अपने प्राण निकालो! आज तुम्हें इस कारण अपमानकारी यातना दी जायेगी जो अल्लाह पर झूठ बोलते और उस की आयतों (को मानने) से अभिमान कर रहे थे।

94. तथा (अल्लाह) कहेगा: तुम मेरे सामने उसी प्रकार अकेले आ गये जैसे तुम्हें प्रथम बार हम ने पैदा किया था। तथा हम ने जो कुछ दिया था, अपने पीछे (संसार ही में) छोड़ आये। और आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे अभिस्तावकों (सिफारशियों) को नहीं देख रहे हैं। जिन के बारे में तुम्हारा भ्रम था कि तुम्हारे कामों में वह (अल्लाह के) साझी हैं। निश्चय तुम्हारे बीच के संबंध भंग हो गये हैं, और तुम्हारा सब भ्रम खो गया है।

95. वास्तव में अल्लाह ही अब तथा गुठली को (धरती के भीतर) फाड़ने वाला है। वह निर्जीव से जीवित को निकालता है, तथा जीवित से निर्जीव को निकालने वाला। वही अल्लाह (सत्य पूज्य) है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

96. वह प्रभात का तड़काने वाला, और उसी ने सुख के लिये रात्रि बनाई

तथा सूर्य और चंद्र हिसाब के लिये बनाया। यह प्रभावी गुणी का निर्धारित किया हुआ अंकन (माप) है।

97. उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये हैं, ताकि उन की सहायता से थल तथा जल के अंधकारों में रास्ता पाओ। हम ने (अपनी दया के) लक्षणों का उन के लिये विवरण दे दिया है जो लोग ज्ञान रखते हैं।
98. वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया। फिर तुम्हारे लिये (संसार में) रहने का स्थान है। और एक समर्पण (मरण) का स्थान है। हम ने उन्हें अपनी आयतों (लक्षणों) का विवरण दे दिया जो समझ बूझ रखते हैं।
99. वही है जिस ने आकाश से जल की वर्षा की, फिर हम ने उस से प्रत्येक प्रकार की उपज निकाल दी। फिर उस से हरियाली निकाल दी। फिर उस से तह पर तह दाने निकालते हैं। तथा खजूर के गाभ से गुच्छे झुके हुये। और अंगूरों तथा जैतून और अनार के बाग समरूप तथा स्वाद में अलग-अलग। उस के फल को देखो जब फल लाता है, तथा उस के पकने को। निःसंदेह इन में उन लोगों के लिये बड़ी निशानियाँ (लक्षण) हैं जो ईमान लाते हैं।
100. और उन्होंने ने जिन्हों को अल्लाह का साझी बना दिया। जब कि अल्लाह ही ने उन की उत्पत्ति की है। और बिना ज्ञान के उस के लिये पुत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ लीं। वह पवित्र तथा उच्च है उन बातों से जो वह लोग कह रहे हैं।
101. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, उस के संतान कहाँ से हो सकती है, जब कि उस की पत्नी ही नहीं है। तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है। और वह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानता है।
102. वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, उस के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का उत्पत्तिकार है। अतः उस की इबादत (वंदना) करो। तथा वही प्रत्येक चीज़ का अभिरक्षक है।
103. उस का आँख इद्राक नहीं कर सकती, जब कि वह सब कुछ देख रहा है। वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है।
104. तुम्हारे पास निशानियाँ आ चुकी हैं। तो जिस ने समझ बूझ से काम लिया उस का लाभ उसी के लिये है। और जो अन्धा हो गया तो उस की हानि उसी पर है। और मैं तुम पर संरक्षक नहीं हूँ।
105. और इसी प्रकार हम अनेक शैलियों में आयतों का वर्णन कर रहे हैं। और ताकि वह (काफिर) कहें कि आप ने पढ लिया है। और ताकि हम उन लोगों के लिये (तर्कों को) उजागर कर दें जो ज्ञान रखते हैं।
106. आप उस पर चलें जो आप पर आप के पालनहार की ओर से वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है। उस के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। और मुश्रिकों की बातों पर ध्यान न दें।
107. और यदि अल्लाह चाहता तो वह

लोग साझी न बनाते। और हम ने आप को उन पर निरीक्षक नहीं बनाया है। तथा न आप उन पर अधिकारी हैं।

108. और (हे ईमान वालो!) उन्हें बुरा न कहो जिन (मूर्तियों) को वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं। अन्यथा वह लोग अज्ञानता के कारण अति कर के अल्लाह को बुरा कहेंगे। इसी प्रकार हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये उन के कर्म को सुशोभित बना दिया है। फिर उन के पालनहार की ओर ही उन्हें जाना है। तो उन्हें बता देगा जो वे करते रहे।

109. और उन (मुशिरकों) ने बल पूर्वक शपथें ली कि यदि हमारे पास कोई आयत (निशानी) आ जाये तो उस पर वह अवश्य ईमान लायेंगे। आप कह दें: आयतें (निशानियाँ) तो अल्लाह ही के पास हैं। और (हे ईमान वालो!) तुम्हें क्या पता कि वह निशानियाँ जब आ जायेंगी तो वह ईमान नहीं लायेंगे।

110. और हम उन के दिलों और आँखों को ऐसे ही फेर देंगे जैसे वह पहली बार इस (कुर्आन) पर ईमान नहीं लाये। और हम उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते छोड़ देंगे।



111. और यदि हम इन की ओर (आकाश से) फ़रिश्ते उतार देते और इन से मुर्दे बात करते और इन के समक्ष प्रत्येक वस्तु एकत्र कर देते, तब भी यह ईमान नहीं लाते परन्तु जिसे अल्लाह (मार्गदर्शन देना) चाहता और इन में से अधिकतर (तथ्य से) अज्ञान हैं।
112. और (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने मनुष्यों तथा जिनों में से प्रत्येक नबी का शत्रु बना दिया जो धोका देने के लिये एक दूसरे को शोभनीय बात सुझाते रहते हैं। और यदि आप का पालनहार चाहता तो ऐसा नहीं करते। तो आप उन्हें छोड़ दें, और उन की घड़ी हुई बातों को।
113. (वह ऐसा इस लिये करते हैं) ताकि उस की ओर उन लोगों के दिल झुक जायें जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और ताकि वह उस से प्रसन्न हो जायें और ताकि वह भी वही कुकर्म करने लगे जो कुकर्म वह लोग कर रहे हैं।
114. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूँ, जब कि उसी ने तुम्हारी ओर यह खूली पुस्तक (क़ुर्आन) उतारी है? तथा जिन को हम ने पुस्तक प्रदान की है वह जानते हैं कि यह (क़ुर्आन) आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ उतारा है। अतः आप सदिह करने वालों में न हों।
115. आप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है, कोई उस की बात (नियम) बदल नहीं सकता और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
116. और (हे नबी!) यदि आप संसार के अधिकतर लोगों की बात मानेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे। वह केवल अनुमान पर चलत हैं, और आँकलन करते हैं।
117. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है कि कौन उस की राह से बहकता है। तथा वही उन्हें भी जानता है जो सुपथ पर हैं।
118. तो उन पशुवों में से जिस पर बध करते समय अल्लाह का नाम लिया गया हो खाओ, यदि तुम उस की आयतों (आदेशों) पर ईमान (विश्वास) रखते हो।
119. और तुम्हारे उस में से न खाने का क्या कारण है जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, जब कि उस ने तुम्हारे लिये स्पष्ट कर दिया है जिसे तुम पर हराम (अवैध) किया है? परन्तु जिस (वर्जित) के (खाने के लिये) विवश कर दिये जाओ, और वास्तव में बहुत से लोग अपनी मनमानी के लिये लोगों को अपनी अज्ञानता के कारण बहकाते हैं। निश्चय आप का पालनहार उल्लंघनकारियों को भली भाँति जानता है।
120. (हे लोगो!) खुले तथा छुपे पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं वे अपने कुकर्मों का प्रतिकार (बदला) दिये जायेंगे।
121. तथा उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो।

वास्तव में उसे खाना (अल्लाह की) अवैज्ञा है। निःसंदेह शैतान अपने सहायकों के मनों में संशय डालते रहते हैं, ताकि वह तुम से विवाद करें। और यदि तुम ने उन की बात मान ली तो निश्चय तुम मुशर्रिक हो।

और जिसे कुपथ करना चाहता है उस का सीना संकीर्ण (तंग) कर देता है। जैसे वह बड़ी कठिनाई से आकाश पर चढ़ रहा हो। इसी प्रकार अल्लाह उन पर यातना भेज देता है जो ईमान नहीं लाते।

122. तो क्या जो निर्जीव रहा हो फिर हम ने उसे जीवन प्रदान किया हो तथा उस के लिये प्रकाश बना दिया हो जिस के उजाले में वह लोगों के बीच चल रहा हो, उस जैसा हो सकता है जो अधेरो में हो उस से निकल न रहा हो? इसी प्रकार काफ़िरो के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं।
123. और इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती में उस के बड़े अपराधियों को लगा दिया ताकि उस में षडयंत्र रचें तथा वह अपने ही विरुद्ध षडयंत्र रचते हैं परन्तु समझते नहीं हैं।
124. और जब उन के पास कोई निशानी आती है तो कहते हैं कि हम उसे कदापि नहीं मानेंगे, जब तक उसी के समान हमें भी प्रदान न किया जाये जो अल्लाह के रसूलों को प्रदान किया गया है। अल्लाह ही अधिक जानता है कि अपना संदेश पहुँचाने का काम किस से ले। जो अपराधी है शीघ्र ही अल्लाह के पास उन्हें अपमान तथा कड़ी यातना उस षडयंत्र के बदले मिलेगी जो वे कर रहे हैं।
125. तो जिसे अल्लाह मार्ग दिखाना चाहता है, उस का सीना (वक्ष) इस्लाम के लिये खोल देता है
126. और यही (इस्लाम) आप के पालनहार की सीधी राह है। हम ने उन लोगों के लिये आयतों को खोल दिया है जो शिक्षा ग्रहण करते हैं।
127. उन्हीं के लिये आप के पालनहार के पास शान्ति का घर (स्वर्ग) है। और वही उन के सुकर्मों के कारण उन का सहायक होगा।
128. तथा (हे नबी!) याद करो जब वह सब को एकत्र कर के (कहेगा): हे जिन्नो के गिरोह! तुम ने बहुत से मनुष्यों को कुपथ कर दिया और मानव में से उन के मित्र कहेंगे कि हे हमारे पालनहार! हम एक दूसरे से लाभावित होते रहे, और वह समय आ पहुँचा जो तू ने हमारे लिये निर्धारित किया था। (अल्लाह) कहेगा: तुम सब का आवास नरक है जिस में सदावासी रहोगे। परन्तु जिसे अल्लाह (बचाना) चाहे। वास्तव में आप का पालनहार गुणी सर्व ज्ञानी है।
129. और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को उन के कुकर्मों के कारण एक दूसरे का सहायक बना देते हैं।
130. (तथा कहेगा): हे जिन्नो तथा मनुष्यों के (मुशर्रिक) समुदाय! क्या तुम्हारे

पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आये, जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन (के आने) से सावधान करते? वह कहेंगे: हम स्वयं अपने ही विरुद्ध गवाह हैं। तथा उन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में रखा था। और अपने ही विरुद्ध गवाह हो गये कि वास्तव में वही काफिर थे।

131. (हे नबी!) यह (नबियों को भेजना) इस लिये हुआ कि आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि अत्याचार से बस्तियों का विनाश कर दे, जब कि उस के निवासी (सत्य से) अचेत रहे हों।
132. प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार पद हैं। और आप का पालनहार लोगों के कर्मों से अचेत नहीं है।
133. तथा आप का पालनहार निस्सुह दयाशील है। वह चाहे तो तुम्हें ले जाये और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ले आये। जैसे तुम लोगों को दूसरे लोगों की संतति से पैदा किया है।
134. तुम्हें जिस (प्रलय) का वचन दिया जा रहा है उसे अवश्य आना है। और तुम (अल्लाह को) विवश नहीं कर सकते।
135. आप कह दें: हे मेरी जाति के लोगो! (यदि तुम नहीं मानते) तो अपनी दशा पर कर्म करते रहो। मैं भी कर्म कर रहा हूँ। शीघ्र ही तुम्हें यह ज्ञान हो जायेगा कि किस का अन्त (परिणाम) अच्छा है। निःसंदेह अत्याचारी सफल नहीं होंगे।
136. तथा उन लोगों ने उस खेती और

पशुओं में जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया है। उस का एक भाग निश्चित कर दिया, फिर अपने विचार से कहते हैं: यह अल्लाह का है और यह उन (देवताओं) का है जिन को उन्होंने (अल्लाह का) साझी बनाया है। फिर जो उन के बनाये हुये साझियों का है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता परन्तु जो अल्लाह का है वह उन के साझियों को पहुँचता है। वह क्या ही बुरा निर्णय करते हैं!

137. और इसी प्रकार बहुत से मुश्रिकों के लिये अपनी संतान के बध करने को उन के बनाये हुये साझियों ने सुशोभित बना दिया है, ताकि उन का विनाश कर दें। और ताकि उन के धर्म को उन पर संदिग्ध कर दें। और यदि अल्लाह चाहता तो वह यह (कुकर्म) नहीं करते। अतः आप उन्हें छोड़ दें तथा उन की बनाई हुई बातों को।
138. तथा वे कहते हैं कि यह पशु और खेत वर्जित है, इसे वही खा सकता है, जिसे हम अपने विचार से खिलाना चाहें। फिर कुछ पशु है, जिन की पीठ हराम (वर्जित) है, और कुछ पशु है, जिन पर (बध करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते, अल्लाह पर आरोप लगाने के कारण, अल्लाह उन्हें उन के आरोप लगाने का बदला अवश्य देगा।
139. तथा उन्होंने ने कहा कि जो इस पशुओं के गर्भों में है वह हमारे पुरुषों के लिये विशेष है, और हमारी पत्नियों के लिये वर्जित है। और यदि मुर्दा हो तो सभी उस में

- साझी हो सकते हैं। अल्लाह उन के विशेष करने का कुफल उन्हें अवश्य देगा, वास्तव में वह तत्वज्ञ अति ज्ञानी है।
140. वास्तव में वह क्षति में पड़ गये जिन्होंने ने मूर्खता से किसी ज्ञान के बिना अपनी संतान को बध किया और उस जीविका को जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान कि अल्लाह पर आरोप लगा कर, अवैध बना लिया, वह बहक गये और सीधी राह पर नहीं आ सके।
141. अल्लाह वही है जिस ने बेलों वाले तथा बिना बेलों वाले बाग पैदा किये। तथा खजूर और खेत जिन से विभिन्न प्रकार की पैदावार होती है और जैतून तथा अनार समरूप तथा स्वाद में विभिन्न, इस का फल खाओ जब फले, और फल तोड़ने के समय कुछ दान करो, तथा अपव्यय (बेजा खर्च) न करो। निःसंदेह अल्लाह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।
142. तथा चौपायों में कुछ सवारी और बोझ लादने योग्य हैं। और कुछ धरती से लगे हुये, तुम उन में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है। और शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
143. आठ पशु आपस में जोड़े हैं: भेड़ में से दो, तथा बकरी में से दो। आप उन से पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? मुझे ज्ञान के साथ बताओ, यदि तुम सच्चे हो।
144. और ऊँट में से दो, तथा गाय में से दो। आप पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? क्या तुम उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया था, तो बताओ? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो बिना ज्ञान के अल्लाह पर झूठ घड़े? निश्चय अल्लाह अत्याचारियों को संमार्ग नहीं दिखाता।
145. (हे नबी!) आप कह दें कि उस में जो मेरी ओर बह्यी (प्रकाशना) की गयी है इन में से खाने वालों पर कोई चीज़ वर्जित नहीं है, सिवाये उस के जो मरा हुआ हो अथवा बहा हुआ रक्त हो या सूअर का मांस हो। क्योंकि वह अशुद्ध है, अथवा अवैध हो जिसे अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम पर बध किया गया हो। परन्तु जो विवश हो जाये (तो वह खा सकता है) यदि वह द्रोही तथा सीमा लॉघने वाला न हो। तो वास्तव में आप का पालनहार अति क्षमी दयावान् है।
146. तथा हम ने यहूदियों पर नखधारी जीव हराम कर दिये थे और गाय तथा बकरी में से उन पर दोनों की चर्बियाँ हराम (वर्जित) कर दी⁽³⁾ थी। परन्तु जो दोनों की पीठों या आंतों से लगी हों, अथवा जो किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह हम ने उन की अवज्ञा के कारण उन्हें

- प्रतिकार (बदला) दिया था। तथा निश्चय हम सच्चे हैं।
147. फिर (हे नबी!) यदि यह लोग आप को झुठलायें तो कह दें कि तुम्हारा पालनहार विशाल दयाकारी है तथा उस की यातना को अपराधियों से फेरा नहीं जा सकेगा।
148. मिश्रणवादी अवश्य कहेंगे: यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज (अल्लाह का) साझी न बनाते, और न कुछ हराम (वर्जित) करते। इसी प्रकार इन से पूर्व के लोगों ने (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक कि हमारी यातना का स्वाद चख लिया। (हे नबी!) उन से पूछिये कि क्या तुम्हारे पास (इस विषय में) कोई ज्ञान है, जिसे तुम हमारे समक्ष प्रस्तुत कर सको? तुम तो केवल अनुमान पर चलते हो, और केवल आंकलन कर रहे हो।
149. (हे नबी!) आप कह दें कि पूर्ण तर्क अल्लाह ही का है। तो यदि वह चाहता तो तुम सब को सुपथ दिखा देता।
150. आप कहिये कि अपने साक्षियों (गवाहों) को लाओ, जो साक्ष्य दें कि अल्लाह ने इसे हराम (अवैध) कर दिया है। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तब भी आप उन के साथ हो कर इसे न मानें, तथा उन की मनमानी पर न चलें, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया, और परलोक पर ईमान (विश्वास) नहीं रखते, तथा दूसरों को अपने पालनहार के बराबर करते हैं।
151. आप उन से कहें कि आओ मैं तुम्हें (आयतों) पढ़ कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या हराम (अवैध) किया है? वह यह है कि किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ। और माता-पिता के साथ उपकार करो। और अपनी संतानों को निर्धनता के भय से बध न करो। हम तुम्हें जीविका देते हैं और उन्हें भी दोगे और निर्लज्जा की बातों के समीप भी न जाओ, खुली हों अथवा छुपी, और जिस प्राण को अल्लाह ने हराम (अवैध) कर दिया है उसे बध न करो परन्तु उचित कारण^[1] से। अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया है ताकि इसे समझो।
152. और अनाथ के धन के समीप न जाओ परन्तु ऐसे ढंग से जो उचित हो। यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जायें। तथा नाप - तौल न्याय के साथ पूरा करो। हम किसी प्राण पर उस की सक्त से अधिक भार नहीं रखते और जब बोलो तो न्याय करो, यद्यपि समीपवर्ती ही क्यों न हो। और अल्लाह का वचन पूरा करो, उस ने तुम्हें इस का आदेश दिया है, संभवतः तुम शिक्षा ग्रहण करो।
153. तथा (उस ने बताया है कि) यह (इस्लाम ही) अल्लाह की सीधी राह है। अतः इसी पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो अन्यथा वह तुम्हें उस की राह से दूर कर के तित्तर बित्तर कर देंगे। यही है जिस का आदेश उस ने तुम्हें दिया है, ताकि

तुम उस के आज्ञाकारी रहो।

154. फिर हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की थी उस पर पुरस्कार पूरा करने के लिये जो सदाचारी हो, तथा प्रत्येक वस्तु के विवरण के लिये, तथा यह मार्गदर्शन और दया थी, ताकि वह अपने पालनहार से मिलने पर ईमान लायें।
155. तथा (उसी प्रकार) यह पुस्तक (कुर्आन) हम ने अवतरित की है, यह बड़ा शुभकारी है। अतः इस पर चलो और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर दया की जायें।
156. ताकि (हे अरब वासियो!) तुम यह न कहो कि हम से पूर्व दो सुमदाय (यहूद तथा ईसाई) पर पुस्तक उतारी गयी और हम उन के पढ़ने-पढ़ाने से अनजान रह गये।
157. या यह न कहो कि यदि हम पर पुस्तक उतारी जाती तो निश्चय हम उन से अधिक सीधी राह पर होते, तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक खुला तर्क आ गया, मार्ग दर्शन तथा दया आ गई। फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को मिथ्या कह दे, और उन से कतरा जाये? और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उन के कतराने के बदले उन्हें कड़ी यातना देंगे।
158. क्या वह लोग इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आ जायें, या स्वयं

उन का पालनहार आ जाये या आप के पालनहार की कोई आयत (निशानी) आ जाये? जिस दिन आप के पालनहार की कोई निशानी आ जायेगी तो किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा जो पहले ईमान न लाया हो, या अपने ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो। आप कह दें कि तुम प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

159. जिन लोगों ने अपने धर्म में विभेद किया और कई समुदाय हो गये, (हे नबी!) आप का उन से कोई सम्बंध नहीं, उन का निर्णय अल्लाह को करना है, फिर वह उन्हें बतायेगा कि वह क्या कर रहे थे।
160. जो (प्रलय के दिन) एक सत्कर्म ले कर (अल्लाह से) मिलेगा, उसे उस के दस गुना प्रतिफल मिलेगा। और जो कुकर्म लायेगा तो उस को उसी के बराबर कुफल दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
161. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने निश्चय मुझे सीधी राह (सुपथ) दिखा दी है। वही सीधा धर्म जो एकेश्वरवादी इब्राहीम का धर्म था, और वह मुश्रिकों में से न था।
162. आप कह दें कि निश्चय मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।
163. जिस का कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ।

164. आप उन से कह दें कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी ओर पालनहार की खोज करूँ जब कि वह (अल्लाह) प्रत्येक चीज़ का पालनहार है। तथा कोई प्राणी कोई भी कुकर्म करेगा, तो उस का भार उसी पर होगा। और कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा। फिर (अन्ततः) तुम्हें अपने पालनहार के पास ही जाना है। तो जिन बातों में तुम विभेद कर रहे हो वह तुम्हें बता देगा।
165. वही है जिस ने तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम में से कुछ को (धन शक्ति में) दूसरे से कई श्रेणियाँ ऊँचा किया है। ताकि उस में तुम्हारी परीक्षा ले जो तुम्हें दिया है। वास्तव में आप का पालनहार शीघ्र ही दण्ड देने वाला है और वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

सूरह आराफ़ - 7

सूरह आराफ़ के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 206 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़, लाम, मीम, साद।
2. यह पुस्तक है, जो आप की ओर उतारी गई है। अतः (हे नबी!) आप के मन में इस से कोई संकोच न हो, ताकि आप इस के द्वारा सावधान करें, और ईमान वालों के लिये उपदेश है।
3. (हे लोगो!) जो तुम्हारे पालनहार की

ओर से तुम पर उतारा गया है उस पर चलो, और उस के सिवा दूसरे सहायकों के पीछे न चलो। तुम बहुत थोड़ी शिक्षा लेते हो।

4. तथा बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया है, उन पर हमारा प्रकोप अकस्मात् रात्रि में आया या जब वह दोपहर के समय आराम कर रहे थे।
5. और जब उन पर हमारा प्रकोप आ पड़ा तो उन की पुकार यही थी कि वास्तव में हम ही अत्याचारी थे।
6. तो हम उन से अवश्य प्रश्न करेंगे जिन के पास रसूलों को भेजा गया तथा रसूलों से भी अवश्य प्रश्न करेंगे।
7. फिर हम अपने ज्ञान से उन के समक्ष वास्तविकता का वर्णन कर देंगे। तथा हम अनुपस्थित नहीं थे।
8. तथा उस (प्रलय के) दिन (कर्माँ की) तौल न्याय के साथ होगी। फिर जिस के पलड़े भारी होंगे वही सफल होंगे।
9. और जिन के पलड़े हलके होंगे तो वही स्वयं को क्षति में डाल लिये होंगे। क्यों कि वह हमारी आयतों के साथ अत्याचार करते रहे।
10. तथा हम ने तुम्हें धरती में अधिकार दिया और उस में तुम्हारे लिये जीवन के संसाधन बनाये। तुम थोड़े ही कृतज्ञ होते हो।
11. और हम ने ही तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हारा रूप बनाया, फिर हम ने फ़रिश्तों से कहा कि

- आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया। वह सज्दा करने वालों में से न हुआ।
12. अल्लाह ने उस से कहा: किस बात ने तुझे सज्दा करने से रोक दिया जब कि मैं ने तुझे आदेश दिया था? उस ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। मेरी रचना तू ने अग्नि से की, और उस की मिट्टी से।
13. तो अल्लाह ने कहा: इस (स्वर्ग) से उतर जा। तेरे लिये यह योग्य नहीं कि इस में घमंड करो। तू निकल जा वास्तव में तू अपमानितों में है।
14. उस ने कहा: मुझे उस दिन तक के लिये अवसर दे दो जब लोग फिर जीवित किये जायेंगे।
15. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दिया जा रहा है।
16. उस ने कहा: तो जिस प्रकार तू ने मुझे कुपथ किया है मैं भी तेरी सीधी राह पर इन की घात में लगा रहूँगा।
17. फिर उन के पास उन के आगे और पीछे तथा दायें और बायें से आऊँगा। और तू उन में से अधिकतर को (अपना) कृतज्ञ नहीं पायेगा।
18. अल्लाह ने कहा: यहाँ से अपमानित धिक्कारा हुआ निकल जा जो भी उन में से तेरी राह चलेगा तो मैं तुम सभी से नरक को अवश्य भर दूँगा।
19. और हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो और जहाँ से चाहो खाओ। और इस वृक्ष के समीप न जाना अन्यथा अत्याचारियों में हो जाओगे।
20. तो शैतान ने दोनों को संशय में डाल दिया, ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों को खोल दे जो उन से छुपाये गये थे। और कहा: तुम्हारे पालनहार ने तुम दोनों को इस वृक्ष से केवल इसलिये रोक दिया है कि तुम दोनों फ़रिश्ते अथवा सदावासी हो जाओगे।
21. तथा दोनों के लिये शपथ दी कि वास्तव में मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ।
22. तो उन दोनों को धोखे से रिझा लिया। फिर जब दोनों ने उस वृक्ष का स्वाद लिया तो उन के लिये उन के गुप्तांग खुल गये और वे उन पर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे। और उन्हें उन के पालनहार ने आवाज़ दी: क्या मैं ने तुम्हें इस वृक्ष से नहीं रोका था। और तुम दोनों से नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रू है।
23. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हम ने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया और यदि तू हमें क्षमा तथा हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य ही नाश हो जायेंगे।
24. उस ने कहा: तुम सब उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रू हो। और तुम्हारे लिये धरती में रहना और एक निर्धारित समय तक जीवन का साधन है।
25. तथा कहा: तुम उसी में जीवित रहोगे और उसी में मरोगे और उसी से (फिर) निकाले जाओगे।
26. हे आदम के पुत्रो! हम ने तुम पर ऐसा वस्त्र उतार दिया है जो तुम्हारे गुप्तांगों को छुपाता, तथा शोभा

है। और अल्लाह की आज्ञाकारिता का वस्त्र ही सर्वोत्तम है। यह अल्लाह की आयतों में से एक है, ताकि वह शिक्षा लें।

27. हे आदम के पुत्रो! ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें बहका दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकाल दिया, उन के वस्त्र उतरवा दिये ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखा दे। वास्तव में वह तथा उस की जाति तुम्हें ऐसे स्थान से देखती है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते। वास्तव में हम ने शैतानों को उन का सहायक बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।
28. तथा जब वह (मुशर्रिक) कोई निर्लज्जा का काम करते हैं तो कहते हैं कि इसी (रीति) पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। तथा अल्लाह ने हमें इस का आदेश दिया है। (हे नबी!) आप उन से कह दें कि अल्लाह कभी निर्लज्जा का आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात का आरोप धरते हो जिसे तुम नहीं जानते?
29. आप उन से कह दें कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है। (और वह यह है कि) प्रत्येक मस्जिद में नमाज़ के समय अपना ध्यान सीधे उसी की ओर करो और उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के उसी को पुकारो। जिस प्रकार उस ने तुम्हें पहले पैदा किया है उसी प्रकार (प्रलय में) फिर जीवित कर दिये जाओगे।
30. एक समुदाय को उस ने सुपथ दिखा दिया और दूसरा समुदाय कुपथ पर स्थित रह गया। वास्तव में इन लोगों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को सहायक

बना लिया, फिर भी वह समझते हैं कि वास्तव में वही सुपथ पर हैं।

31. हे आदम के पुत्रो! प्रत्येक मस्जिद के पास (नमाज़ के समय) अपनी शोभा धारण करो, तथा खाओ और पीओ और बेजा खर्च न करो। वस्तुतः वह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।
32. (हे नबी!) इन (मिश्रणवादियों) से कहिये कि किस ने अल्लाह की उस शोभा को हराम (वर्जित) किया है जिसे उस ने अपने सेवकों के लिये निकाला है? तथा स्वच्छ जीविकाओं को? आप कह दें: यह संसारिक जीवन में उन के लिये (उचित) है, जो ईमान लाये तथा प्रलय के दिन (उन्हीं के लिये) विशेष हैं। इसी प्रकार हम अपनी आयतों का सविस्तार वर्णन उन के लिये करते हैं जो ज्ञान रखते हों।
33. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने तो केवल खुले तथा लुपे कुकर्म और पाप तथा अवैध विद्रोह को ही हराम (वर्जित) किया है, तथा इस बात को कि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाओ जिस का कोई तर्क उस ने नहीं उतारा है तथा अल्लाह पर ऐसी बात बोलो जिसे तुम नहीं जानते।
34. प्रत्येक समुदाय का एक निर्धारित समय है, फिर जब वह समय आ जायेगा तो क्षण भर देर या सबेर नहीं होगी।
35. हे आदम के पुत्रो! जब तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आ जायें जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो डरेगा और अपना सुधार कर लेगा तो उस

के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

36. और जो हमारी आयतें झुठलायेंगे और उन से घमंड करेंगे वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।
37. फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाये अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? उन को उन के भाग्य में लिखा भाग मिल जायेगा। यहाँ तक कि जिस समय हमारे फ़रिश्ते उन का प्राण निकालने के लिये आयेंगे तो उन से कहेंगे कि वह कहाँ हैं जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह कहेंगे कि वह तो हम से खो गये, तथा अपने ही विरुद्ध साक्षी (गवाह) बन जायेंगे कि वस्तुतः वह काफ़िर थे।
38. अल्लाह का आदेश होगा कि तुम भी प्रवेश कर जाओ उन समुदायों में जो तुम से पहले के जिन्नों और मनुष्यों में से नरक में हैं। जब भी कोई समुदाय (नरक में) प्रवेश करेगा तो अपने समान दूसरे समुदाय को धिक्कार करेगा, यहाँ तक कि जब उस में सब एकत्र हो जायेंगे तो उन का पिछला अपने पहले के लिये कहेगा: हे हमारे पालनहार इन्होंने ही हमें कुपथ किया है। अतः इन्हें दुगनी यातना दे। वह (अल्लाह) कहेगा तुम में से प्रत्येक के लिये दुगनी यातना है, परन्तु तुम्हें ज्ञान नहीं।
39. तथा उन का पहला समुदाय अपने दूसरे समुदाय से कहेगा: (यदि हम दोषी थे) तो हम पर तुम्हारी कोई प्रधानता नहीं हुई, तो तुम अपने

कुकर्मों की यातना का स्वाद लो।

40. वास्तव में जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठला दिया और उन से अभिमान किया उन के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, जब तक ऊँट सूई के नाके से पार न हो जायें और हम इसी प्रकार अपराधियों को बदला देते हैं।
41. उन्हीं के लिये नरक का बिछौना और उन के ऊपर से ओढ़ना होगा। और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिकार (बदला) देते हैं।
42. और जो ईमान लाये और सत्कर्म किये, और हम किसी पर उस की सकत से (अधिक) भार नहीं रखते। वही स्वर्गी हैं और वही उस में सदावासी होंगे।
43. तथा उन के दिलों में जो द्रोष होगा उसे हम निकाल देंगे। उन (स्वर्गी में) नहरें बहती होंगी तथा वह कहेंगे कि उस अल्लाह की प्रशंसा है जिस ने हमें इस की राह दिखाई और यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन न देता तो हमें मार्गदर्शन न मिलता। हमारे पालनहार के रसूल सत्य ले कर आये, तथा उन्हें पुकारा जायेगा कि इस स्वर्ग के अधिकारी तुम अपने सत्कर्मों के कारण हुये हो।
44. तथा स्वर्गवासी नरकवासियों को पुकारेंगे कि हम को हमारे पालनहार ने जो वचन दिया था उसे हम ने सचच पाया, तो क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें जो वचन दिया था उसे तुम ने सचच पाया? वह कहेंगे कि हाँ। फिर उन के बीच एक

पुकारने वाला पुकारेगा कि अल्लाह की धिक्कार है उन अत्याचारियों पर

45. जो लोगों को अल्लाह की राह (सत्धर्म) से रोकते तथा उसे टेढ़ा करना चाहते थे। और वही परलोक के प्रति अविश्वास नहीं रखते थे।
46. और दोनों (नरक तथा स्वर्ग) के बीच एक पर्दा होगा और कुछ लोग आराफ़ (ऊँचाईयों) पर होंगे जो प्रत्येक को उन के लक्षणों से पहचानेंगे और स्वर्ग वासियों को पुकार कर उन्हें सलाम करेंगे। और उन्होंने उस में प्रवेश नहीं किया होगा, परन्तु उस की आशा रखते होंगे।
47. और जब उन की आँखें नरक वासियों की ओर फिरेंगी तो कहेंगे: हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।
48. फिर आराफ़ (ऊँचाईयों) के लोग कुछ लोगों को उन के लक्षणों से पहचान जायेंगे, उन से कहेंगे कि तुम्हारे जत्थे और तुम्हारा घमंड तुम्हारे किसी काम नहीं आया।
49. (और स्वर्गवासियों की ओर संकेत करेंगे कि) क्या यही वह लोग नहीं हैं जिन के सम्बंध में तुम शपथ ले कर कह रहे थे कि अल्लाह इन्हें अपनी दया में से कुछ नहीं देगा? (आज उन से कहा जा रहा है कि) स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ, न तुम पर किसी प्रकार का भय है और न तुम उदासीन होगे।
50. तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे कि हम पर तनिक पानी

डाल दो, अथवा जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उस में से कुछ दे दो। वह कहेंगे कि अल्लाह ने यह दोनों (आज) काफ़िरों के लिये हराम (वर्जित) कर दिया है।

51. (उस का निर्णय है कि) जिन्होंने अपने धर्म को तमाशा और खेल बना लिया था, तथा जिन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा था, तो आज हम उन्हें ऐसे ही भुला देंगे जिस प्रकार उन्होंने आज के दिन के आने को भुला दिया था और इस लिये भी कि वह हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।
52. जब कि हम ने उन के लिये एक ऐसी पुस्तक दी जिसे हम ने ज्ञान के आधार पर सविस्तार वर्णित कर दिया है जो मार्गदर्शन तथा दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।
53. (फिर) क्या वह इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि इस का परिणाम सामने आ जाये? जिस दिन इस का परिणाम आ जायेगा तो वही जो इस से पहले इसे भूले हुये थे कहेंगे कि हमारे पालनहार के रसूल सच्च ले कर आये थे, (परन्तु हम ने नहीं माना) तो क्या हमारे लिये कोई अनुशंसक (सिफ़ारशी) है, जो हमारी अनुशंसा (सिफ़ारिश) करे? अथवा हम संसार में फेर दिये जायें तो जो कर्म हम करते रहे उन के विपरीत कर्म करेंगे! उन्होंने ने स्वयं को क्षति में डाल दिया, तथा उन से जो मिथ्या बातें बना रहे थे खो गईं।
54. तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है

जिस ने आकाशों तथा धरती को छः दिनों में बनाया, फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थित हो गया। वह रात्री से दिन को ढक देता है, दिन उस के पीछे दौड़ता हुआ आ जाता है, सूर्य तथा चाँद और तारे उस की आज्ञा के अधीन हैं। सुन लो! वही उत्पत्तिकार है, और वही शासक है। वही अल्लाह अति शुभ, संसार का पालनहार है।

55. तुम अपने (उसी) पालनहार को रोते हुये तथा धीरे-धीरे पुकारो। निःसंदेह वह सीमा पार करने वालों से प्रेम नहीं करता।
56. तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात् उपद्रव न करो, और उसी से डरते हुये, तथा आशा रखते हुये प्रार्थना करो। वास्तव में अल्लाह की दया सदाचारियों के समीप है।
57. और वही है जो अपनी दया (वर्षा) से पहले वायुओं को (वर्षा) की शुभ सूचना देने के लिये भेजता है। और जब वह भारी बादलों को लिये उड़ती है तो हम उसे किसी निर्जीव धरती को (जीवित) करने के लिये पहुँचा देते हैं, फिर उस से जल वर्षा कर के उस के द्वारा प्रत्येक प्रकार के फल उपजा देते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दा को जीवित करते हैं, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण कर सको।
58. और स्वच्छ भूमि अपनी उपज अल्लाह की अनुमति से भरपूर देती है। तथा खराब भूमि की उपज थोड़ी ही होती है। इसी प्रकार हम अपनी आयतों (निशानियों) उन के लिये दुहराते हैं

जो शुक अदा करते है।

59. हम ने नूह को उस की जाति की ओर (अपना संदेश पहुँचाने के लिये) भेजा था, तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! (केवल) अल्लाह की इबादत (बंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।
60. उस की जाति के प्रमुखों ने कहा: हमें लगता है कि तुम खुले कुपथ में पड़ गये हो।
61. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मैं किसी कुपथ में नहीं हूँ। परन्तु मैं विश्व के पालनहार का रसूल हूँ।
62. तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और अल्लाह की ओर से उन चीज़ों का ज्ञान रखता हूँ जिन का ज्ञान तुम्हें नहीं है।
63. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है, ताकि वह तुम्हें सावधान करे, और ताकि तुम आज्ञाकारी बनो और अल्लाह की दया के योग्य हो जाओ??
64. फिर भी उन्होंने उस को झुठला दिया। तो हम ने उसे और जो नौका में उस के साथ थे उन को बचा लिया। और उन्हें डुबो दिया जो हमारी आयतों को झुठला चुके थे। वास्तव में वह (समझ बूझ के) अंधे थे।
65. (और इसी प्रकार) आद की ओर उन के भाई हूद को (भेजा)। उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की

इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या तुम (उस की अवैजा से) नहीं डरते?

66. (इस पर) उस की जाति में से उन प्रमुखों ने कहा जो काफ़िर हो गये कि हमें ऐसा लग रहा है कि तुम ना समझ हो गये हो। और वास्तव में हम तुम्हें झुठों में समझ रहे हैं।
67. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मुझ में कोई ना समझी की बात नहीं है परन्तु मैं तो संसार के पालनहार का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।
68. मैं तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ और वास्तव में मैं तुम्हारा भरोसा करने योग्य शिक्षक हूँ।
69. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है ताकि वह तुम्हें सावधान करे?। तथा याद करो कि अल्लाह ने नूह की जाति के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है, और तुम्हें अधिक शारीरिक बल दिया है। अतः अल्लाह के पुरस्कारों को याद करो। संभवतः तुम सफल हो जाओगे।
70. उन्होंने ने कहा: क्या तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि हम केवल एक ही अल्लाह की इबादत (वंदना) करें और उन्हें छोड़ दें जिन की पूजा हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं? तो वह बात हमारे पास ला दो जिस से हमें डरा रहे हो, यदि तुम सच्चे हो?
71. उस ने कहा: तुम पर तुम्हारे पालनहार का प्रकोप और क्रोध आ पड़ा है। क्या तुम मुझ से कुछ

(मूर्तियों के) नामों के विषय में विवाद कर रहे हो जिन का तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने (पूज्य) नाम रख दिया है। जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है? तो तुम (प्रकोप की) प्रतीक्षा करो और तुम्हारे साथ मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

72. फिर हम ने उसे और उस के साथियों को बचा लिया। तथा उन की जड़ काट दी जिन्होंने ने हमारी आयतों (आदेशों) को झुठला दिया था। और वह ईमान लाने वाले नहीं थे।
73. और (इसी प्रकार) समूद (जाति) के पास उन के भाई सालैह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण (चमत्कार) आ गया है। यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक चमत्कार है। अतः इसे अल्लाह की धरती में चरने के लिये छोड़ दो और इसे बुरे विचार से हाथ न लगाना, अन्यथा तुम्हें दुःखदायी यातना घेर लेगी।
74. तथा याद करो कि अल्लाह ने आद जाति के ध्वस्त किये जाने के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम्हें धरती में बसाया है, तुम उस के मैदानों में भवन बनाते हो और पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो। अतः अल्लाह के उपकारों को याद करो और धरती में उपद्रव करते न फिरो।
75. उस की जाति के घमंडी प्रमुखों ने उन निर्बलों से कहा जो उन में से ईमान लाये थे: क्या तुम विश्वास

रखते हो कि सालेह अपने पालनहार का भेजा हुआ है? उन्होंने ने कहा: निश्चय जिस (संदेश) के साथ वह भेजा गया है हम उस पर ईमान (विश्वास) रखते हैं।

76. (तो इस पर) घमंडियों ने कहा: हम तो जिस का तुम ने विश्वास किया है उसे नहीं मानते।
77. फिर उन्होंने ने ऊँटनी को बध कर दिया और अपने पालनहार के आदेश का उल्लंघन किया और कहा: हे सालेह! तू हमें जिस (यातना) की धमकी दे रहा था उसे ला दे, यदि तू वास्तव में रसूलों में से है।
78. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया। फिर जब भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।
79. तो सालेह ने उन से मँह फेर लिया और कहा: हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के उपदेश पहुँचा दिये थे और मैं ने तुम्हारा भला चाहा। परन्तु तुम उपकारियों से प्रेम नहीं करते।
80. और हम ने लूत को भेजा। जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम ऐसी निर्लज्जा का काम कर रहे हो जो तुम से पहले संसारवासियों में से किसी ने नहीं किया है?
81. तुम स्त्रियों को छोड़ कर कामवासना की पूर्ति के लिये पुरुषों के पास जाते हो? बल्कि तुम सीमा लांघने वाली जाति हो।
82. और उस की जाति का उत्तर बस यह था कि इन को अपनी बस्ती से

निकाल दो। यह लोग अपने में बड़े पवित्र बन रहे हैं।

83. हम ने उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा बचा लिया, वह पीछे रह जाने वाली थी।
84. और हम ने उन पर (पत्थरों) की वर्षा कर दी। तो देखो कि अपराधियों का परिणाम कैसा रहा?
85. तथा मद्यन की ओर हम ने उस के भाई शुऐब को रसूल बना कर भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार का खुला तर्क (प्रमाण) आ गया है। अतः नाप और तौल पूरी करो और लोगों की चीजों में कमी न करो। तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात् उपद्रव न करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ईमान वाले हो।
86. तथा प्रत्येक मार्ग पर लोगों को धमकाने के लिये न बैठो और उन्हें अल्लाह की राह से न रोको जो उस पर ईमान लाये⁽²⁾ हैं। और उसे टेढ़ा न बनाओ, तथा उस समय को याद करो जब तुम थोड़े थे, तो तुम्हें अल्लाह ने अधिक कर दिया। तथा देखो कि उपद्रवियों का परिणाम क्या हुआ?
87. और यदि तुम्हारा एक समुदाय उस पर ईमान लाया है जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ और दूसरा ईमान नहीं लाया है तो तुम धैर्य रखो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे। और वह उत्तम न्याय करने वाला है।



88. उस की जाति के प्रमुखों ने जिन्हें घमंड था कहा कि है शूऐब! हम तुम को तथा जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं अपने नगर से अवश्य निकाल देंगे। अथवा तुम सब को हमारे धर्म में अवश्य वापिस आना होगा। (शूऐब) ने कहा: क्या यदि हम उसे दिल से न मानें तो?
89. हम ने अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाया है, यदि तुम्हारे धर्म में इस के पश्चात् वापिस आ गये, जब कि हमें अल्लाह ने उस से मुक्त कर दिया है। और हमारे लिये संभव नहीं कि उस में फिर आ जायें, परन्तु यह कि हमारा पालनहार चाहता हो। हमारा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है, अल्लाह ही पर हमारा भरोसा है। हे हमारे पालनहार! हमारे और हमारी जाति के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दे। और तू ही उत्तम निर्णयकारी है।
90. तथा उस की जाति के काफिर प्रमुखों ने कहा कि यदि तुम लोग शूऐब का अनुसरण करोगे तो वस्तुतः तुम लोगों का उस समय नाश हो जायेगा।
91. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया फिर भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।
92. जिन्होंने शूऐब को झुठलाया (उन की यह दशा हुई कि) मानो कभी उस नगर में बसे ही नहीं थे।
93. तो शूऐब उन से विमुख हो गया, तथा कहा: हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के संदेश पहुँचा दिये, तथा तुम्हारा हितकारी रहा। तो

- काफिर जाति (के विनाश) पर कैसे शोक करूँ?
94. तथा हम ने जब किसी नगरी में कोई नबी भेजा, तो उस के निवासियों को आपदा, तथा दुःख में ग्रस्त कर दिया कि संभवतः वह विन्ती करें।
95. फिर हम ने आपदा को सुख सुविधा से बदल दिया, यहाँ तक कि जब वह सुखी हो गये, और उन्होंने ने कहा कि हमारे पूर्वजों को भी दुःख तथा सुख पहुँचता रहा है, तो अकस्मात् हम ने उन्हें पकड़ लिया, और वह समझ नहीं सके।
96. और यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते, और कुकर्मा से बचे रहते, तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पन्नता के द्वार खोल देते। परन्तु उन्होंने ने झुठला दिया। अतः हम ने उन के कर्तूतों के कारण उन्हें (यातना में) घेर लिया।
97. तो क्या नगर वासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर हमारी यातना रातों रात आ जाये, और वह पड़े सो रहे हों?
98. अथवा नगरवासी निश्चिन्त हो गये हैं कि हमारी यातना उन पर दिन के समय आ पड़े, और वह खेल रहे हों?
99. तो क्या वह अल्लाह के गुप्त उपाय से निश्चिन्त हो गये हैं? तो (याद रखो!) अल्लाह के गुप्त उपाय से नाश होने वाली जाति ही निश्चिन्त होती है।
100. तो क्या उन को शिक्षा नहीं मिली जो धरती के वारिस होते हैं उस के अगले वासियों के पश्चात्? कि

- यदि हम चाहें, तो उन के पापों के बदले उन्हें आपदा में ग्रस्त कर दें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दें, फिर वह कोई बात ही न सुन सकें।
101. (हे नबी!) यह वह नगर है जिन की कथा हम आप को सुना रहे हैं। इन सब के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, तो वह ऐसे न थे कि उस (सत्य) पर विश्वास कर लें जिस को वे इस से पूर्व झुठला चुके थे। इसी प्रकार अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता है।
102. और हम ने उन में अधिकतर को वचन पर स्थित नहीं पाया। तथा हम ने उन में अधिकतर को अवज्ञाकारी पाया।
103. फिर हम ने इन रसूलों के पश्चात् मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ फिरऔन और उस के प्रमुखों के पास भेजा, तो उन्होंने ने भी हमारी आयतों के साथ अन्याय किया, तो देखो कि उपद्रवियों का क्या परिणाम हुआ?
104. तथा मूसा ने कहा: हे फिरऔन! मैं वास्तव में विश्व के पालनहार का रसूल (संदेश वाहक) हूँ।
105. मेरे लिये यही योग्य है कि अल्लाह के विषय में सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण लाया हूँ। इस लिये मेरे साथ बनी इस्राईल को जाने दे।
106. उस ने कहा: यदि तुम कोई प्रमाण (चमत्कार) लाये हो तो उसे प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो।
107. फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी, तो अकस्मात् वह एक अजगर बन गई।
108. और अपना हाथ (जैब से) निकाला तो वह देखने वालों के लिये चमक रहा था।
109. फिरऔन की जाति के प्रमुखों ने कहा: वास्तव में यह बड़ा दक्ष जादूगर है।
110. वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकालना चाहता है। तो अब क्या आदेश दे रहे हो?
111. सब ने कहा: उस को और उस के भाई (हारून) को अभी छोड़ दो, और नगरों में एकत्र करने के लिये हरकारे भेजो।
112. जो प्रत्येक दक्ष जादूगरों को तुम्हारे पास लायें।
113. और जादूगर फिरऔन के पास आ गये। उन्होंने ने कहा: हमें निश्चय पुरस्कार मिलेगा, यदि हम ही विजयी हो गये तो?
114. फिरऔन ने कहा: हाँ। और तुम मेरे समीपवर्तियों में से भी हो जाओगे।
115. जादूगरों ने कहा: हे मूसा! तुम (पहले) फेंकोगे, या हमें फेंकना होगा?
116. मूसा ने कहा: तुम्हीं फेंको। तो उन्होंने ने जब (रस्सियाँ) फेंकी, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, और उन्हें भयभीत कर दिया। और बहुत बड़ा जादू कर दिखाया।

117. तो हम ने मूसा को बह्नी की, कि अपनी लाठी फेंको और वह अकस्मात् झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगी।
118. अतः सत्य सिद्ध हो गया, और उन का बनाया मंत्र-तंत्र व्यर्थ हो कर रह गया।
119. अन्ततः वह पराजित कर दिये गये, और तुच्छ तथा अपमानित हो कर रह गये।
120. तथा सभी जादूगर (मूसा का सत्य) देख कर सज्दे में गिर गये।
121. उन्होंने ने कहा: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।
122. जो मूसा तथा हारून का पालनहार है।
123. फिरऔन ने कहा: इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ तुम उस पर ईमान ले आये? वास्तव में यह षड्यंत्र है जिसे तुम ने नगर में रचा है, ताकि उस के निवासियों को उस से निकाल दो! तो शीघ्र ही तुम्हें इस (के परिणाम) का ज्ञान हो जायेगा।
124. मैं अवश्य तुम्हारे हाथ तथा पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा, फिर तुम सभी को फाँसी पर लटका दूँगा।
125. उन्होंने ने कहा: हमें अपने पालनहार ही की ओर प्रत्येक दशा में जाना है।
126. तू हम से इसी बात का तो बदला ले रहा है कि हमारे पास हमारे पालनहार की आयतें (निशानियाँ) आ गईं? तो हम उन पर ईमान ला चुके हैं! हे हमारे पालनहार! हम पर धैर्य (की धारा) उँडेल दे! और हमें इस दशा में (संसार से) उठा
- कि तेरे आज्ञाकारी रहें।
127. और फिरऔन की जाति के प्रमुखों ने (उस से) कहा: क्या तुम मूसा और उस की जाति को छोड़ दोगे कि देश में विद्रोह करें, तथा तुम को और तुम्हारे पूज्यों को छोड़ दें? उस ने कहा: हम उन के पुत्रों को बध कर देंगे, और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देंगे, हम उन पर दबाव रखते हैं।
128. मूसा ने अपनी जाति से कहा: अल्लाह से सहायता माँगो, और सहन करो, वास्तव में धरती अल्लाह की है, वह अपने भक्तों में से जिसे चाहे उस का वारिस (उत्तराधिकारी) बना देता है। और अन्त उन्हीं के लिये है जो आज्ञाकारी हों।
129. उन्होंने ने कहा: हम तुम्हारे आने से पहले भी सताये गये और तुम्हारे आने के पश्चात् भी (सताये जा रहे हैं)! मूसा ने कहा: समीप है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे शत्रु का विनाश कर दे, और तुम्हें देश में अधिकारी बना दे। फिर देखे कि तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं।
130. और हम ने फिरऔन की जाति को अकालों तथा उपज की कमी में ग्रस्त कर दिया ताकि वह सावधान हो जायें।
131. तो जब उन पर सम्पन्नता आती तो कहते कि हम इस के योग्य हैं। और जब अकाल पड़ता, तो मूसा और उस के साथियों से बुरा सगुन लेते। सुन लो! उन का बुरा सगुन तो अल्लाह के

पास था, परन्तु अधिकतर लोग इस का ज्ञान नहीं रखते।

132. और उन्होंने ने कहा: तू हम पर जादू करने के लिये कोई भी आयत (चमत्कार) ले आये तो हम तेरा विश्वास करने वाले नहीं हैं।
133. अन्ततः हम ने उन पर तूफ़ान (उग्र वर्षा) तथा टिड्डी दल और जुओं एवं मेढक और रक्त की वर्षा भेजी। अलग अलग निशानियाँ, फिर भी उन्होंने ने अभिमान किया, और वह थी ही अपराधी जाति।
134. और जब उन पर यातना आ पड़ी तो उन्होंने ने कहा: हे मूसा! तू अपने पालनहार से उस वचन के कारण जो उस ने तुझे दिया है, हमारे लिये प्रार्थना कर। यदि तू ने (अपनी प्रार्थना से) हम से यातना दूर कर दी तो हम अवश्य तेरा विश्वास कर लेंगे, और बनी इस्राईल को तेरे साथ जाने की अनुमति दे देंगे।
135. फिर जब हम ने एक विशेष समय तक के लिये उन से यातना दूर कर दी जिस तक उन्हें पहुँचना था, तो अकस्मात् वह वचन भंग करने लगे।
136. अन्ततः हम ने उन से बदला लिया और उन्हें सागर में डुबो दिया इस कारण कि उन्होंने ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया और उन से निश्चेत हो गये थे। उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फिरौन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलै छप्परों पर चढ़ा रही थी।

137. और हम ने उस जाति (बनी इस्राईल) को जो निर्बल समझे जा रहे थे धरती (शाम देश) के पश्चिमों तथा पूर्वी का जिस में हम ने बरकत दी थी अधिकारी बना दिया। और (इस प्रकार हे नबी!) आप के पालनहार का शुभ वचन बनी इस्राईल के लिये पूरा हो गया, उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फिरौन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलै छप्परों पर चढ़ा रहे थे।
138. और बनी इस्राईल को हम ने सागर पार करा दिया, तो वह एक जाति के पास से हो कर गये जो अपनी मूर्तियों की पूजा कर रही थी, उन्होंने ने कहा: हे मूसा! हमारे लिये वैसा ही एक पूज्य बना दीजिये जैसे उन के पूज्य हैं। मूसा ने कहा: वास्तव में तुम अज्ञान जाति हो।
139. यह लोग जिस रीति में हैं उसे नाश हो जाना है, और वह जो कुछ कर रहे हैं सर्वथा असत्य है।
140. मूसा ने कहा: क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिये कोई दूसरा पूज्य निर्धारित करूँ जब कि उस ने तुम्हें सारे संसारों के वासियों पर प्रधानता दी है।
141. तथा उस समय को याद करो, जब हम ने तुम्हें फिरौन की जाति से बचाया। वह तुम्हें घोर यातना दे रहे थे। तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रख रहे थे। और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से भारी परीक्षा थी।

142. और हम ने मसा को तीस रातों का वचन दिया। और उस की पूर्ति दस रातों से कर दी। तो तेरे पालनहार की निर्धारित अवधि चालीस रात पूरी हो गयी। तथा मूसा ने अपने भाई हारून से कहा: तुम मेरी जाति में मेरा प्रतिनिधि रहना तथा सुधार करते रहना, और उपद्रवकारियों की नीति न अपनाना।

143. और जब मूसा हमारे निर्धारित समय पर आ गया, और उस के पालनहार ने उस से बात की, तो उस ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरे लिये अपने आप को दिखा दे ताकि मैं तेरा दर्शन कर लूँ। अल्लाह ने कहा: तू मेरा दर्शन नहीं कर सकेगा। परन्तु इस पर्वत की ओर देखा। यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह गया तो तू मेरा दर्शन कर सकेगा। फिर जब उस का पालनहार पर्वत की ओर प्रकाशित हुआ तो उसे चूर-चूर कर दिया। और मूसा निश्चेत हो कर गिर गया। और जब चेतना में आया, तो उस ने कहा: तू पवित्र है! मैं तुझ से क्षमा माँगता हूँ। तथा मैं सर्व प्रथम⁽¹⁾ ईमान लाने वालों में से हूँ।

144. अल्लाह ने कहा: हे मूसा! मैं ने तुझे लोगों पर प्रधानता दे कर अपने संदेशों तथा अपने वार्तालाप द्वारा निर्वाचित कर लिया है। अतः जो कुछ तुझे प्रदान किया है उसे ग्रहण कर ले, और कृतज्ञों में हो जा।

145. और हम ने उस के लिये तख्तियों पर (धर्म के) प्रत्येक विषय के लिये निर्देश और प्रत्येक बात का विवरण

लिख दिया। (तथा कहा कि) इसे दृढ़ता से पकड़ लो, और अपनी जाति को आदेश दो कि उस के उत्तम निर्देशों का पालन करें और मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखा दूँगा।

146. मैं उन्हें अपनी आयतों (निशानियों) से फेर दूँगा जो धरती में अवैध अभिमान करते हैं। और यदि वह प्रत्येक आयत (निशानी) देख लें तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे। और यदि वह सुपथ देखेंगे तो उसे नहीं अपनायेंगे। और यदि कुपथ देख लें तो उसे अपना लेंगे। यह इस कारण कि उन्होंने ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, और उन से निश्चेत रहे।

147. और जिन लोगों ने हमारी आयतों, तथा परलोक (में हम से) मिलने को झुठला दिया, उन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और उन्हें उसी का बदला मिलेगा, जो कुकर्म वह कर रहे थे।

148. और मूसा की जाति ने उस के (पर्वत पर जाने के) पश्चात् अपने आभूषणों से एक बछड़े की मूर्ति बना ली, जिस से गाय के डकारने के समान ध्वनि निकलती थी। क्या उन्होंने ने यह नहीं सोचा कि न तो वह उन से बात करता है और न किसी प्रकार का मार्गदर्शन देता है? उन्होंने ने उसे बना लिया, तथा वे अत्याचारी थे।

149. और जब वह (अपने किये पर) लज्जित हुये और समझ गये कि वह कुपथ हो गये हैं, तो कहने लगे: यदि हमारे पालनहार ने हम पर

दया नहीं की, और हमें क्षमा नहीं किया, तो हम अवश्य विनाशों में हो जायेंगे।

150. और जब मूसा अपनी जाति की ओर क्रोध तथा दुःख से भरा हुआ वापिस आया तो उस ने कहा: तुम ने मेरे पश्चात् मेरा बहुत बुरा प्रतिनिधित्व किया। क्या तुम अपने पालनहार की आज्ञा से पहले ही जल्दी कर गये। तथा उस ने लेख तख्तियाँ डाल दीं, तथा अपने भाई (हारून) का सिर पकड़ के अपनी ओर खींचने लगा। उस ने कहा: हे मेरे माँ जाये भाई! लोगों ने मुझे निर्बल समझ लिया तथा समीप था कि वे मुझे मार डालें। अतः तू शत्रुओं को मुझ पर हँसने का अवसर न दे। मुझे अत्याचारियों का साथी न बना।
151. मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे तथा मेरे भाई को क्षमा कर दे। और हमें अपनी दया में प्रवेश दे। और तू ही सब दयाकारियों से अधिक दयाशील है।
152. जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया उन पर उन के पालनहार का प्रकोप आयेगा और वे संसारिक जीवन में अपमानित होंगे। और इसी प्रकार हम झूठ घड़ने वालों को दण्ड देते हैं।
153. और जिन लोगों ने दुष्कर्म किया, फिर उस के पश्चात् क्षमा माँग ली, और ईमान लाये, तो वास्तव में तेरा पालनहार अति क्षमाशील दयावान् है।
154. फिर जब मूसा का क्रोध शान्त हो गया तो उस ने लेख तख्तियाँ उठा

ली, और उस के लिखे आदेशों में मार्गदर्शन तथा दया थी उन लोगों के लिये जो अपने पालनहार से ही डरते हैं।

155. और मूसा ने हमारे निर्धारित समय के लिये अपनी जाति के सत्तर व्यक्तियों को चुन लिया। और जब उन्हें भूकम्प ने घेर लिया तो मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! यदि तू चाहता तो इन सब का इस से पहले ही विनाश कर देता, और मेरा भी। क्या तू हमारा उस कुकर्म के कारण नाश कर देगा जो हम में से कुछ निर्बाध कर गये? यह तेरी ओर से केवल एक परीक्षा थी। तू जिसे चाहे उस के द्वारा कुपथ कर दे, और जिसे चाहे सुपथ दर्शा दे। तू ही हमारा संरक्षक है, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे। और हम पर दया कर, तू सर्वोत्तम क्षमावान् है।
156. और हमारे लिये इस संसार में भलाई लिख दे तथा परलोक में भी, हम तेरी ओर लौट आये। उस (अल्लाह) ने कहा: मैं अपनी यातना जिसे चाहता हूँ देता हूँ। और मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये है। मैं उसे उन लोगों के लिये लिख दूँगा जो अवैज्ञा से बचेंगे, तथा ज़कात देंगे, और जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे।
157. जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी नबी हैं, जिन (के आगमन) का उल्लेख वह अपने पास तौरात तथा इंजील में पाते हैं। जो सदाचार का आदेश देंगे, और दराचार से रोकेंगे। और उन

के लिये स्वच्छ चीजों को हलाल (वैध) तथा मलीन चीजों को हराम (अवैध) करेंगे। और उन से उन के बोझ उतार देंगे, तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे। अतः जो लोग आप पर ईमान लाये और आप का समर्थन किया और आप की सहायता की, तथा उस प्रकाश (कुआन) का अनुसरण किया जो आप के साथ उतारा गया, तो वही सफल होंगे।

158. (हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ जिस के लिये आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ, और उस के उस उम्मी नबी पर जो अल्लाह पर और उस की सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं। और उन का अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग दर्शन पा जाओ।

159. और मूसा की जाति में एक गिरोह ऐसा भी है जो सत्य पर स्थित है, और उसी के अनुसार निर्णय (न्याय) करता है।

160. और हम ने मूसा की जाति के बारह घरानों को बारह समुदायों में विभक्त कर दिया। और हम ने मूसा की ओर बह्यी भेजी, जब उस की जाति ने उस से जल माँगा कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो, तो उस से बारह स्रोत उबल पड़े,

तथा प्रत्येक समुदाय ने अपने पीने का स्थान जान लिया। और उन पर बादलों की छाँव की, और उन पर मन्ब तथा सलवा उतारा। (हम ने कहा): इन स्वच्छ चीजों में से जो हम ने तुम्हें प्रदान की है, खाओ। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं (अवैज्ञा कर के) अपने प्राणों पर अत्याचार कर रहे थे।

161. और जब उन (बनी इस्राईल) से कहा गया कि इस नगर (बैतुल मक़दिस) में बस जाओ, और उस में से जहाँ इच्छा हो खाओ, और कहो कि हमें क्षमा कर दे, तथा द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे, और सत्कर्मियों को और अधिक देंगे।

162. तो उन में से अत्याचारियों ने उस बात को दूसरी बात से बदल दिया जो उन से कही गयी थी। तो हम ने उन पर आकाश से प्रकोप उतार दिया। क्यों कि वह अत्याचार कर रहे थे।

163. तथा (हे नबी!) इन से उस नगरी के सम्बन्ध में प्रश्न करो जो समुद्र (लाल सागर) के समीप थी, जब उस के निवासी सब्त (शनिवार) के दिन के विषय में आज्ञा का उल्लंघन कर रहे थे, जब उन के पास उन की मछलियाँ उन के सब्त के दिन पानी के ऊपर तैर कर आ जाती थीं और सब्त का दिन न हो तो नहीं आती थीं। इसी प्रकार उन की अवैज्ञा के कारण हम उन की परीक्षा ले रहे थे।

164. तथा जब उन में से एक समुदाय ने कहा कि तुम उन्हें क्यों समझा रहे हो जिन्हें अल्लाह (उन की अवज्ञा के कारण) ध्वस्त करने अथवा कड़ा दण्ड देने वाला है? उन्होंने कहा: तुम्हारे पालनहार के समक्ष क्षम्य होने के लिये, और इस आशा में कि वह आज्ञाकारी हो जायें।^[2]
165. फिर जब उन्होंने जो कुछ उन्हें स्मरण कराया गया, उसे भुला दिया तो हम ने उन लोगों को बचा लिया, जो उन को बुराई से रोक रहे थे, और हम ने अत्याचारियों को कड़ी यातना में उन की अवैज्ञा के कारण घेर लिया।
166. फिर जब उन्होंने ने उस का उल्लंघन किया जिस से वे रोके गये थे, तो हम ने उन से कहा कि तुच्छ बंदर हो जाओ।
167. और याद करो जब आप के पालनहार ने घोषणा कर दी कि वह प्रलय के दिन तक उन (यहूदियों) पर उन्हें प्रभुत्व देता रहेगा जो उन को घोर यातना देते रहेंगों निःसंदेह आप का पालनहार शीघ्र दण्ड देने वाला है, और वह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।
168. और हम ने उन्हें धरती में कई सम्प्रदायों में विभक्त कर दिया, उन में कुछ सदाचारी थे, और कुछ इस के विपरीत थे। हम ने अच्छाईयों तथा बुराईयों दोनों के द्वारा उन की परीक्षा ली, ताकि वह (कुकर्मों से) रुक जायें।
169. फिर उन के पीछे कुछ ऐसे लोगों
- ने उन की जगह ली जो पुस्तक के उत्तराधिकारी हो कर भी तुच्छ संसार का लाभ समेटने लगे। और कहने लगे कि हमें क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि उसी के समान उन्हें लाभ हाथ आ जाये तो उसे भी ले लेंगे। क्या उन से पुस्तक का दृढ़ वचन नहीं लिया गया है कि अल्लाह पर सच्च ही बोलेंगे, जब कि पुस्तक में जो कुछ है उस का अध्ययन कर चुके हैं? और परलोक का घर (स्वर्ग) उत्तम है उन के लिये जो अल्लाह से डरते हैं। तो क्या वह इतना भी नहीं समझते?
170. और जो लोग पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ते, और नमाज़ की स्थापना करते हैं तो वास्तव में हम सत्कर्मियों का प्रतिफल अकारत् नहीं करते।
171. और जब हम ने उन के ऊपर पर्वत को इस प्रकार छा दिया जैसे वह कोई छतरी हो, और उन्हें विश्वास हो गया कि वह उन पर गिर पड़ेगा, (तथा यह आदेश दिया कि) जो (पुस्तक) हम ने तुम्हें प्रदान की है उसे दृढ़ता से थाम लो, तथा उस में जो कुछ है उसे याद रखो, ताकि तुम आज्ञाकारी हो जाओ।
172. तथा (वह समय याद करो) जब आप के पालनहार ने आदम के पुत्रों की पीठों से उन की संतति को निकाला, और उन को स्वयं उन पर साक्षी (गवाह) बनाया: क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ? सब ने कहा: क्यों नहीं? हम (इस के) साक्षी हैं। ताकि प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इस से असूचित थे।

173. अथवा यह कहो कि हम से पूर्व हमारे पूर्वजों ने शिर्क (मिश्रण) किया और हम उन के पश्चात् उन की संतान थे। तो क्या तू गुमराहों के कर्म के कारण हमारा विनाश करेगा?
174. और इसी प्रकार हम आयतों को खोल खोल कर बयान करते हैं ताकि लोग (सत्य की ओर) लौट जायें।
175. और उन्हें उस की दशा पढ़ कर सुनायें जिसे हम ने अपनी आयतों (का ज्ञान) दिया, तो वह उस (के खोल से) निकल गया। फिर शैतान उस के पीछे लग गया और वह कुपथों में हो गया।
176. और यदि हम चाहते तो उन (आयतों) द्वारा उस का पद ऊँचा कर देते, परन्तु वह माया मोह में पड़ गया, और अपनी मनमानी करने लगा। तो उस की दशा उस कुत्ते के समान हो गयी जिसे हॉको तब भी जीभ निकाले हॉपता रहे और छोड़ दो तब भी जीभ निकाले हॉपता है। यही उपमा है उन लोगों की जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं। तो आप यह कथायें उन को सुना दें, संभवतः वह सोच विचार करें।
177. उन की उपमा कितनी बुरी है जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया! और वे अपने ही ऊपर अत्याचार कर रहे थे।
178. जिसे अल्लाह सुपथ कर दे वही सीधी राह पा सकता है। और जिसे कुपथ कर दे तो वही लोग असफल हैं।
179. और बहुत से जिन्न और मानव को हम ने नरक के लिये पैदा किया है। उन के पास दिल है जिन से सोच विचार नहीं करते, तथा उन की आँखें हैं जिन से देखते नहीं, और कान हैं जिन से सुनते नहीं। वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ है, यही लोग अचेतना में पड़े हुये हैं।
180. और अल्लाह ही के शुभ नाम है, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो। और उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों में परिवर्तन करते हैं, उन्हें शीघ्र ही उन के कुकर्मों का कुफल दे दिया जायेगा।
181. और उन में से जिन्हें हम ने पैदा किया है, एक समुदाय ऐसा (भी) है, जो सत्य का मार्ग दर्शाता तथा उसी के अनुसार (लोगों के बीच) न्याय करता है।
182. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया, हम उन्हें क्रमशः (विनाश तक) ऐसे पहुँचायेंगे कि उन्हें इस का ज्ञान नहीं होगा।
183. और उन्हें अवसर देंगे, निश्चय मेरा उपाय बड़ा सुदृढ़ है।
184. और क्या उन्होंने यह नहीं सोचा कि उन का साथी तनिक भी पागल नहीं है? वह तो केवल खुले रूप से सचेत करने वाला है।
185. क्या उन्होंने ने आकाशों तथा धरती के राज्य को और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है, उसे नहीं देखा? और (यह भी नहीं सोचा कि) हो सकता है कि उन का (निर्धारित) समय समीप आ गया हो? तो फिर

इस (कुर्आन) के पश्चात् वह किस बात पर ईमान लायेंगे?

186. जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उस का कोई पथदर्शक नहीं और उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये छोड़ देता है।
187. (हे नबी!) वे आप से प्रलय के विषय में प्रश्न करते हैं कि वह कब आयेगी? कह दो कि उस का ज्ञान तो मेरे पालनहार के पास है, उसे उस के समय पर वही प्रकाशित कर देगा। वह आकाशों तथा धरती में भारी होगी, तुम पर अकस्मात आ जायेगी। वह आप से ऐसे प्रश्न कर रहे हैं जैसे कि आप उसी की खोज में लगे हुये हों। आप कह दें कि उस का ज्ञान अल्लाह ही को है। परन्तु^[1] अधिकांश लोग इस (तथ्य) को नहीं जानते।
188. आप कह दें कि मुझे तो अपने लाभ और हानि का अधिकार नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहे (वही होता है)। और यदि मैं रैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता तो मैं बहुत सा लाभ प्राप्त कर लेता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने तथा शुभसूचना देने वाला हूँ जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।
189. वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारी उत्पत्ति एक जीव^[2] से की, और उसी से उस का जोड़ा बनाया, ताकि उस से उसे संतोष मिले। फिर जब किसी^[1] ने उस (अपनी स्त्री) से सहवास किया तो उस (स्त्री) को हल्का सा गर्भ हो गया। जिस के साथ वह चलती फिरती रही, फिर जब बोज़ल हो गयी तो दोनों

(पति-पत्नी) ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: यदि तू हमें एक अच्छा बच्चा प्रदान करेगा तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ (आभारी) होंगे।

190. और जब उन दोनों को (अल्लाह ने) एक स्वस्थ बच्चा प्रदान कर दिया तो अल्लाह ने जो प्रदान किया उस में दूसरों को उस का साझी बनाने लगे। तो अल्लाह इन की शिर्क की बातों से बहुत ऊँचा है।
191. क्या वह अल्लाह का साझी उन्हें बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते, और वह स्वयं पैदा किये हुये हैं?
192. तथा न उन की सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं?
193. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो तुम्हारे पीछे नहीं चल सकते। तुम्हारे लिये बराबर है चाहे उन्हें पुकारो अथवा तुम चुप रहो।
194. वास्तव में अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो वे तुम्हारे जैसे ही (अल्लाह के) दास हैं। अतः तुम उन से प्रार्थना करो फिर वह तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दें, यदि उन के बारे में तुम्हारे विचार सत्य हैं।
195. क्या इन (पत्थर की मूर्तियों) के पाँव हैं जिन से चलती हों? अथवा उन के हाथ हैं जिन से पकड़ती हों? या उन के आँखें हैं जिन से देखती हों? अथवा कान हैं जिन से सुनती हों? आप कह दें कि अपने साक्षियों को पुकार लो, फिर मेरे विरुद्ध उपाय कर लो, और मुझे कोई अवसर न दो।

196. वास्तव में मेरा संरक्षक अल्लाह है। जिस ने यह पुस्तक (कुर्आन) उतारी है। और वही सदाचारियों की रक्षा करता है।
197. और जिन को अल्लाह के सिवा तुम पुकारते हो वह न तो तुम्हारी सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं।
198. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वह सुन नहीं सकते। और (हे नबी!) आप उन्हें देखेंगे कि वे आप की ओर देख रहे हैं, जब कि वास्तव में वह कुछ नहीं देखते।
199. (हे नबी!) आप क्षमा से काम लें, और सदाचार का आदेश दें। तथा अज्ञानियों की ओर ध्यान न दें।
200. और यदि शैतान आप को उकसाये तो अल्लाह से शरण माँगिये। निःसंदेह वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
201. वास्तव में जो आज्ञाकारी होते हैं यदि शैतान की ओर से उन्हें कोई बुरा विचार आ भी जाये तो तत्काल चौक पड़ते हैं और फिर अकस्मात् उन को सूझ आ जाती है।
202. और जो शैतानों के भाई हैं वे उन को कुपथ में खींचते जाते हैं, फिर (उन्हें कुपथ करने में) तनिक भी कमी (आलस्य) नहीं करते।
203. और जब आप इन (मिश्रणवादियों) के पास कोई निशानी न लायेंगे तो कहेंगे कि क्यों (अपनी ओर से) नहीं बना ली? आप कह दें कि मैं केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो

मेरे पालनहार के पास से मेरी ओर बह्यी की जाती है। यह सूझ की बातें हैं तुम्हारे पालनहार की ओर से, (प्रमाण) है, तथा मार्गदर्शन और दया है, उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

204. और जब कुर्आन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो, तथा मौन साध लो। शायद कि तुम पर दया की जाये।
205. और (हे नबी!) अपने पालनहार का स्मरण विनय पूर्वक तथा डरते हुये और धीमे स्वर में प्रातः तथा संध्या करते रहो। और उन में न हो जाओ जो अचेत रहते हैं।
206. वास्तव में जो (फरिश्ते) आप के पालनहार के समीप है वह उस की इबादत (बंदना) से अभिमान नहीं करते। और उस की पवित्रता वर्णन करते रहते हैं, और उसी को सज्दा करते हैं।

सूरह अन्फाल - 8

सूरह अन्फाल के संक्षिप्त विषय यह सूरह मदीनी है. इस में 75 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे नबी! आप से (आप के साथी) युद्ध में प्राप्त धन के विषय में प्रश्न कर रहे हैं। कह दें कि युद्ध में प्राप्त धन अल्लाह और रसूल के है। अतः अल्लाह से डरो और आपस में सुधार रखो, तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो यदि तुम ईमान वाले हो।

2. वास्तव में ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह का वर्णन किया जाये तो उन के दिल कॉप उठते हैं। और जब उन के समक्ष उस की आयतें पढ़ी जायें तो उन का ईमान अधिक हो जाता है। और वह अपने पालनहार पर ही भरोसा रखते हैं।
3. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।
4. वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास श्रेणियाँ तथा क्षमा और उत्तम जीविका है।
5. जिस प्रकार आप को आप के पालनहार ने आप के घर (मदीना) से (मिश्रणवादियों से युद्ध के लिये सत्य के साथ) निकाला। जब कि ईमान वालों का एक समुदाय इस से अप्रसन्न था।
6. वह आप से सच्च (युद्ध) के बारे में झगड़ रहे थे जब कि वह उजागर हो गया था (कि युद्ध होना है) जैसे वह मौत की ओर हाँके जा रहे हों, और वे उसे देख रहे हों।
7. तथा (वह समय याद करो) जब अल्लाह तुम्हें वचन दे रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आयेगा। और तुम चाहते थे कि निर्बल गिरोह तुम्हारे हाथ लगे।^[2] परन्तु अल्लाह चाहता था कि अपने वचन द्वारा सत्य को सिद्ध कर दे, और काफिरों की जड़ काट दे।
8. इस प्रकार सत्य को सत्य, और असत्य को असत्य कर दे। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।
9. जब तुम अपने पालनहार को (बद्र के युद्ध के समय) गुहार रहे थे। तो उस ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। (और कहा:) मैं तुम्हारी सहायता के लिये लगातार एक हज़ार फ़रिश्ते भेज रहा हूँ।
10. और अल्लाह ने यह इस लिये बता दिया ताकि (तुम्हारे लिये) शुभ सूचना हो और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये। अन्यथा सहायता तो अल्लाह ही की ओर से होती है। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।
11. और वह समय याद करो जब अल्लाह अपनी ओर से शान्ति के लिये तुम पर ऊँघ डाल रहा था। और तुम पर आकाश से जल बरसा रहा था, ताकि तुम्हें स्वच्छ कर दे। और तुम से शैतान की मलीनता दूर कर दे। और तुम्हारे दिलों को साहस दे, और (तुम्हारे) पाँव जमा दे।
12. (हे नबी!) यह वह समय था जब आप का पालनहार फ़रिश्तों को संकेत कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम ईमान वालों को स्थिर रखो, मैं काफिरों के दिलों में भय डाल दूँगा। तो (हे मुसलमानो!) तुम उन की गरदनोँ पर तथा पोर पोर पर आघात पहुँचाओ।
13. यह इस लिये कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल का विरोध किया। तथा जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करेगा तो निश्चय अल्लाह उसे कड़ी यातना देने वाला है।
14. यह है (तुम्हारी यातना), तो इस का स्वाद चखो। और (जान लो कि) काफिरों के लिये नरक की यातना

(भी) है।

15. हे ईमान वालो! जब काफिरों की सेना से भिड़ो तो उन्हें पीठ न दिखाओ।
16. और जो कोई उस दिन अपनी पीठ दिखायेगा, परन्तु फिर कर आक्रमण करने अथवा (अपने) किसी गिरोह से मिलने के लिये, तो वह अल्लाह के प्रकोप में घिर जायेगा। और उस का स्थान नरक है। और वह बहुत ही बुरा स्थान है।
17. अतः (रणक्षेत्र में) उन्हें बध तुम ने नहीं किया परन्तु अल्लाह ने उन को बध किया। और हे नबी! आप ने नहीं फेंका जब फेंका, परन्तु अल्लाह ने फेंका। और (यह इस लिये हुआ) ताकि अल्लाह इस के द्वारा ईमान वालों की एक उत्तम परीक्षा ले। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने और जानने वाला है।
18. यह सब तुम्हारे लिये हो गया। और अल्लाह काफिरों की चालों को निर्बल करने वाला है।
19. यदि तुम निर्णय चाहते हो तो तुम्हारे सामने निर्णय आ गया है। और यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि फिर पहले जैसा करोगे तो हम भी वैसा ही करेंगे। और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगा, यद्यपि अधिक हो। और निश्चय अल्लाह ईमान वालों के साथ है।
20. हे ईमान वालो! अल्लाह के आज्ञाकारी रहो तथा उस के रसूल के। और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।
21. तथा उन के समान न हो जाओ

जिन्होंने कहा कि हम ने सुन लिया जब कि वास्तव में वह सुनते नहीं थे।

22. वास्तव में अल्लाह के हाँ सब से बुरे पशु वह (मानव) हैं जो बहरे गूंगे हों, जो कुछ समझते न हों।
23. और यदि अल्लाह उन में कुछ भी भलाई जानता तो उन्हें सुना देता। और यदि उन्हें सुना भी दे तो भी वह मुँह फेर लेंगे। और वह विमुख है ही।
24. हे ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल की पुकार को सुनो, जब तुम्हें उस की ओर बुलाये जो तुम्हारी (आत्मा) को जीवन प्रदान करे। और जान लो कि अल्लाह मानव और उस के दिल के बीच आड़े आ जाता है। और निस्सदेह तुम उसी के पास (अपने कर्मफल के लिये) एकत्र किये जाओगे।
25. तथा उस आपदा से डरो जो तुम में से अत्याचारियों पर ही विशेष रूप से नहीं आयेगी। और विश्वास रखो कि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।
26. तथा वह समय याद करो, जब तुम (मक्का में) बहुत थोड़े निर्बल समझे जाते थे। तुम डर रहे थे कि लोग तुम्हें उचक न लें। तो अल्लाह ने तुम्हें (मदीना में) शरण दी। और अपनी सहायता द्वारा तुम्हें समर्थन दिया। और तुम्हें स्वच्छ जीविका प्रदान की, ताकि तुम कृतज्ञ रहो।
27. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल के साथ विश्वासघात न करो। और न अपनी अमानतों (कर्तव्य) के साथ विश्वासघात करो, जानते हुये।
28. तथा जान लो कि तुम्हारा धन और

तुम्हारी संतान एक परीक्षा है। तथा यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।

29. हे ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरोगे तो तुम्हारे लिये विवेक बना देगा। तथा तुम से तुम्हारी बुराईयाँ दूर कर देगा। और तुम्हें क्षमा कर देगा, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।
30. तथा (हे नबी! वह समय याद करो) जब (मक्का में) काफिर आप के विरुद्ध षडयंत्र रच रहे थे, ताकि आप को कैद कर लें। अथवा आप को वध कर दें, अथवा देश निकाला दे दें। तथा वे षडयंत्र रच रहे थे, और अल्लाह अपनी उपाय कर रहा था। और अल्लाह का उपाय सब से उत्तम है।
31. और जब उन को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहते हैं: हम ने (इसे) सुन लिया है। यदि हम चाहें तो इसी (कुर्आन) जैसी बातें कह दें। यह तो वही प्राचीन लोगों की कथायें हैं।
32. तथा (याद करो) जब उन्होंने ने कहा: हे अल्लाह! यदि यह तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर दे, अथवा हम पर दुःखदायी यातना ला दे।
33. और अल्लाह उन्हें यातना नहीं दे सकता था जब तक आप उन के बीच थे, और न उन्हें यातना देने वाला है जब तक कि वह क्षमा याचना कर रहे हों।
34. और (अब) उन पर क्यों न यातना उतारे जब कि वह सम्मानित मस्जिद (काँबा) से रोक रहे हैं, जब कि

वह उस के संरक्षक नहीं है। उस के संरक्षक तो केवल अल्लाह के आज्ञाकारी हैं, परन्तु अधिकांश लोग (इसे) नहीं जानते।

35. और अल्लाह के घर (काँबा) के पास इन की नमाज़ इस के सिवा क्या थी कि सीटियाँ और तालियाँ बजायें? तो अब अपने कुफ़ (अस्वीकार) के बदले में यातना का स्वाद चखो।
36. जो काफिर हो गये वह अपना धन इस लिये खर्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोक दें। तो वे अपना धन खर्च करते रहेंगे फिर (वह समय आयेगा कि) वह उन के लिये पछतावे का कारण हो जायेगा। फिर पराजित होंगे। तथा जो काफिर हो गये वे नरक की ओर हाँक दिये जायेंगे।
37. ताकि अल्लाह, मलीन को पवित्र से अलग कर दे। तथा मलीनों को एक दूसरे से मिला दे। फिर सब का ढेर बना दे, और उन्हें नरक में फेंक दे, यही क्षतिग्रस्त हैं।
38. (हे नबी!) इन काफिरों से कह दो: यदि वह रुक गये तो जो कुछ हो गया है वह उन से क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि पहले जैसा ही करेंगे तो अगली जातियों की दुर्गंत हो चुकी है।
39. हे ईमान वालो! उन से उस समय तक युद्ध करो कि फित्ना (अत्याचार तथा उपद्रव) समाप्त हो जाये, और धर्म पूरा अल्लाह के लिये हो जाये। तो यदि वह (अत्याचार से) रुक जायें तो अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा है।

40. और यदि वह मुँह फेरें तो जान लो
कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है। और वह

क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही
अच्छा सहायक है?



41. और जान लो कि तुम्हें जो कुछ गुनीमत में मिला है तो उस का पाँचवाँ भाग अल्लाह तथा रसूल और (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। यदि तुम अल्लाह पर तथा उस (सहायता) पर ईमान रखते हो जो हम ने अपने भक्त पर निर्णय के दिन उतारी जिस दिन दो सेनाएँ भिड़ गईं और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
42. तथा उस समय को याद करो जब तुम (रणक्षेत्र में) इधर के किनारे तथा वह (शत्रु) उधर के किनारे पर थे, और काफ़िला तुम से नीचे था। और यदि तुम आपस में (युद्ध का) निश्चय करते तो निश्चित समय से अवश्य कतरा जाते। परन्तु अल्लाह ने (दोनों को भिड़ा दिया) ताकि जो होना था उस का निर्णय कर दे। ताकि जो मरे तो वह खुले प्रमाण के पश्चात् मरे। और जो जीवित रहे तो वह खुले प्रमाण के साथ जीवित रहे। और वस्तुतः अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
43. तथा (हे नबी! वह समय याद करें) जब आप को (अल्लाह) आप के सपने में उन्हें (शत्रु को) थोड़ा दिखा रहा था। और यदि उन्हें आप को अधिक दिखा देता तो तुम साहस खो देते। और इस (युद्ध के) विषय में आपस में झगड़ने लगते। परन्तु अल्लाह ने तुम्हें बचा दिया। वास्तव में वह सीनों (अन्तरात्मा) की बातों से भली भाँती अवगत है।
44. तथा (याद करो उस समय को)

जब अल्लाह उन (शत्रु) को लड़ाई के समय तुम्हारी आँखों में तुम्हारे लिये थोड़ा कर के दिखा रहा था, और उन की आँखों में तुम्हें थोड़ा कर के दिखा रहा था, ताकि जो होना था, अल्लाह उस का निर्णय कर दे। और सभी कर्म अल्लाह ही की ओर फेरे जाते हैं।

45. हे ईमान वालो! जब (आक्रमण कारियों) के किसी गिरोह से भिड़ो तो जम जाओ। तथा अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम सफल रहो।
46. तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, और आपस में विवाद न करो, अन्यथा तुम कमजोर हो जाओगे, और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी। तथा धैर्य से काम लो, वास्तव में अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।
47. और उन के समान न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुये तथा लोगों को दिखाते हुये निकले। और वह अल्लाह की राह (इस्लाम) से लोगों को रोकते हैं। और अल्लाह उन के कर्मों को (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है।
48. जब शैतान ने उन के लिये उन के कूकर्मों को शोभनीय बना दिया था। और उस (शैतान) ने कहा: आज तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता, और मैं तुम्हारा सहायक हूँ। फिर जब दोनों सेनायें सम्मुख हो गईं, तो अपनी एड़ियों के बल फिर गया। और कह दिया कि मैं तुम से अलग हूँ। मैं जो देख रहा हूँ तुम नहीं देखते। वास्तव में मैं अल्लाह से डर रहा हूँ। और अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

49. तथा (वह समय भी याद करो), जब मुनाफ़िक तथा जिन के दिलों में रोग है, वे कह रहे थे कि इन (मुसलमानों) को इन के धर्म ने धोखा दिया है। तथा जो अल्लाह पर निर्भर करे तो वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
50. और क्या ही अच्छा होता यदि आप उस दशा को देखते जब फ़रिश्ते (बधित) काफ़िरों के प्राण निकाल रहे थे तो उन के मुखों और उन की पीठों पर मार रहे थे। तथा (कह रहे थे कि) दहन की यातना चखो।
51. यही तुम्हारे कर्तव्यों का प्रतिफल है। और अल्लाह अपने भक्तों पर अत्याचार करने वाला नहीं है।
52. इन की दशा भी फ़िरऔनियों तथा उन के जैसी हुई जिन्होंने इन से पहले अल्लाह की आयतों को नकार दिया, तो अल्लाह ने उन के पापों के बदले उन्हें पकड़ लिया। वास्तव में अल्लाह बड़ा शक्तिशाली कड़ी यातना देने वाला है।
53. अल्लाह का यह नियम है कि वह उस पुरस्कार में परिवर्तन करने वाला नहीं है जो किसी जाति पर किया हो, जब तक वह स्वयं अपनी दशा में परिवर्तन न कर लें। और वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
54. इन की दशा फ़िरऔनियों तथा उन लोगों जैसी हुई जो इन से पहले थे, उन्होंने ने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया, तो हम ने उन्हें उन के पापों के कारण ध्वस्त कर दिया। तथा फ़िरऔनियों को डुबो दिया। और वह सभी अत्याचारी थे।
55. वास्तव में सब से बुरे जीव अल्लाह के पास वह है जो काफ़िर हो गये, और ईमान नहीं लाते।
56. यह वे लोग हैं जिन से आप ने संधि की। फिर वह प्रत्येक अवसर पर अपना वचन भंग कर देते हैं। और (अल्लाह से) नहीं डरते।
57. तो यदि ऐसे (वचनभंगी) आप को रणक्षेत्र में मिल जायें तो उन को शिक्षाप्रद दण्ड दें, ताकि जो उन के पीछे हैं वह शिक्षा ग्रहण करें।
58. और यदि आप को किसी जाति से विश्वासघात (संधि भंग करने) का भय हो तो बराबरी के आधार पर संधि तोड़ दें। क्यों कि अल्लाह विश्वासघातियों से प्रेम नहीं करता।
59. जो काफ़िर हो गये वे कदापि यह न समझें कि हम से आगे हो जायेंगे। निश्चय वह (हमें) विवश नहीं कर सकेंगे।
60. तथा तुम से जितनी हो सके उन के लिये शक्ति तथा सीमा रक्षा के लिये घोड़े तय्यार रखो। जिस से अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को और इन के सिवा दूसरों को डराओ। जिन को तुम नहीं जानते, उन्हें अल्लाह ही जानता है। और अल्लाह की राह में तुम जो भी व्यय (खर्च) करोगे तो तुम्हें पूरा मिलेगा। और तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
61. और यदि वह (शत्रु) संधि की ओर झुकें तो आप भी उस के लिये झुक जायें। और अल्लाह पर भरोसा करें। निश्चय वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

62. और यदि वह (संधि कर के) आप को धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह आप के लिये काफी है। वही है जिस ने अपनी सहायता तथा ईमान वालों के द्वारा आप को समर्थन दिया है।
63. और उन के दिलों को जोड़ दिया। और यदि आप धरती में जो कुछ है सब व्यय (खर्च) कर देते तो भी उन के दिलों को नहीं जोड़ सकते थे। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ (निपुण) है।
64. हे नबी! आप के लिये तथा आप के ईमान वाले साथियों के लिये अल्लाह काफी है।
65. हे नबी! ईमान वालों को युद्ध की प्रेरणा दो। यदि तुम में से बीस धैर्यवान होंगे तो दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से सौ होंगे तो उन काफ़िरों के एक हज़ार पर विजय प्राप्त कर लेंगे। इस लिये कि वह समझ बूझ नहीं रखते।
66. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया, और जान लिया कि तुम में कुछ निर्बलता है, तो यदि तुम में से सौ सहनशील हों तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से एक हज़ार हों तो अल्लाह की अनुमति से दो हज़ार पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।
67. किसी नबी के लिये यह उचित न था कि उस के पास बंदी हों, जब तक कि धरती (रण क्षेत्र) में अच्छी प्रकार रक्तपात न कर दे। तुम संसारिक लाभ चाहते हो, और अल्लाह (तुम्हारे लिये) आखिरत (परलोक) चाहता है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
68. यदि इस के बारे में पहले से अल्लाह का लेख (निर्णय) न होता, तो जो (अर्थ दण्ड) तुम ने लिया है, उस के लेने में तुम्हें बड़ी यातना दी जाती।
69. तो उस ग़नीमत में से खाओ, वह हलाल (उचित) स्वच्छ है। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमा करने वाला दयावान् है।
70. हे नबी! जो तुम्हारे हाथों में बंदी है, उन से कह दो कि यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में कोई भलाई देखी तो तुम को उस से उत्तम चीज़ (ईमान) प्रदान करेगा जो (अर्थदण्ड) तुम से लिया गया है, और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
71. और यदि वह आप के साथ विश्वासघात करना चाहेंगे तो इस से पूर्व वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। इसी लिये अल्लाह ने उन को (आप के) वश में किया है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी उपाय जानने वाला है।
72. निःसंदेह जो ईमान लाये, तथा हिजरत (प्रस्थान) कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, तथा जिन लोगों ने उन को शरण दिया तथा सहायता की, वही एक दूसरे के सहायक हैं। और जो ईमान नहीं लाये और न हिजरत (प्रस्थान) की, उन से तुम्हारी सहायता का कोई संबन्ध नहीं, यहाँ तक कि हिजरत करके आ जायें।

और यदि वह धर्म के बारे में तुम से सहायता माँगे, तो तुम पर उन की सहायता करना आवश्यक है। परन्तु किसी ऐसी जाति के विरुद्ध नहीं जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

73. और काफिर एक दूसरे के समर्थक हैं। और यदि तुम ऐसा न करोगे तो धरती में उपद्रव तथा बड़ा बिगाड़ उत्पन्न हो जायेगा।
74. तथा जो ईमान लाये, और हिजरत कर गये, और अल्लाह की राह में संघर्ष किया, और जिन लोगों ने (उन को) शरण दी, और (उन की) सहायता की, वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा उन्हीं के लिये उत्तम जीविका है।
75. तथा जो लोग इन के पश्चात् ईमान लाये और हिजरत कर गये, और तुम्हारे साथ मिल कर संघर्ष किया, वही तुम्हारे अपने हैं। और वही परिवारिक समीपवर्ती अल्लाह के लेख (आदेश) में अधिक समीप हैं। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी है।

सूरह तौबा - 9

सूरह तौबा के संक्षिप्त विषय यह सूरह मदनी है. इस में 129 आयतें हैं।

1. अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर से संधि मुक्त होने की घोषणा है उन मिश्रणवादियों के लिये जिन से तुम ने संधि (समझौता) किया था।

2. तो (हे काफ़िरो!) तुम धरती में चार महीने (स्वतंत्र हो कर) फ़िरो। तथा जान लो कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकोगे। और निश्चय अल्लाह, काफ़िरो को अपमानित करने वाला है।
3. तथा अल्लाह और उस के रसूल की ओर से सार्वजनिक सूचना है, महा हज्ज के दिन कि अल्लाह मिश्रणवादियों से अलग है। तथा उस का रसूल भी। फिर यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो वह तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि तुम ने मुँह फेरा तो जान लो कि तुम अल्लाह को विवश करने वाले नहीं हो। और आप उन्हें जो काफ़िर हो गये दुःखदायी यातना का शुभ समाचार सुना दें।
4. सिवाय उन मुशरिकों के जिन से तुम ने संधि की, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता की, तो उन से उन की संधि उन की अवधि तक पूरी करो। निश्चय अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।
5. अतः जब सम्मानित महीने बीत जायें तो मिश्रणवादियों का बंध करो उन्हें जहाँ पाओ, और उन्हें पकड़ो, और घेरो, और उन की घात में रहो। फिर यदि वह तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें तथा ज़कात दें तो उन्हें छोड़ दो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
6. और यदि मुशरिकों में से कोई तुम से शरण माँगे तो उसे शरण दो यहाँ तक कि अल्लाह की बातें सुन लो फिर उसे

पहुँचा दो उस के शान्ती के स्थान तक। यह इसलिये कि वह ज्ञान नहीं रखतो।

7. इन मुशरिकों (मिश्रणवादियों) की कोई संधि अल्लाह और उस के रसूल के पास कैसे हो सकती है? उन के सिवाय जिन से तुम ने सम्मानित मस्जिद (काँबा) के पास संधि की^[1] थी। तो जब तक वह तुम्हारे लिये सीधे रहें तो तुम भी उन के लिये सीधे रहो। वास्तव में अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।
8. और उन की संधि कैसे रह सकती है जब कि वह यदि तुम पर अधिकार पा जायें तो किसी संधि और किसी वचन का पालन नहीं करेंगे। वे तुम्हें अपने मुखों से प्रसन्न करते हैं, जब कि उन के दिल इन्कार करते हैं। और उन में अधिकांश वचनभंगी हैं।
9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तनिक मूल्य खरीद लिया, और (लोगों को) अल्लाह की राह (इस्लाम) से रोक दिया। वास्तव में वे बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।
10. वह किसी ईमान वाले के बारे में किसी संधि और वचन का पालन नहीं करते। और वही उल्लंघनकारी हैं।
11. तो यदि वह (शिरक से) तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें, और ज़कात दें तो तुम्हारे धर्म-बंधु हैं। और हम उन लोगों के लिये आयतों का वर्णन कर रहे हैं जो ज्ञान रखते हों।
12. तो यदि वह अपनी शपथें अपना वचन देने के पश्चात् तोड़ दें, और तुम्हारे धर्म की निन्दा करें तो कुफ़

के प्रमुखों से युद्ध करो। क्योंकि उन की शपथों का कोई विश्वास नहीं, ताकि वह (अत्याचार से) रुक जायें।

13. तुम उन लोगों से युद्ध क्यों नहीं करते जिन्होंने अपने वचन भंग कर दिये? तथा रसूल को निकालने का निश्चय किया? और उन्होंने ही युद्ध का आरंभ किया है। क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह अधिक योग्य है कि तुम उस से डरो, यदि तुम ईमान वाले हो।
14. उन से युद्ध करो, उन्हें अल्लाह तुम्हारे हाथों दण्ड देगा। और उन्हें अपमानित करेगा, और उन के विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा। और ईमान वालों के दिलों का सब दुःख दूर कर देगा।
15. और उन के दिलों की जलन दूर कर देगा, और जिस पर चाहेगा दया कर देगा। और अल्लाह अति ज्ञानी नीतिज्ञ है।
16. क्या तुम ने समझा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे, जब कि (परीक्षा लेकर) अल्लाह ने उन्हें नहीं जाना है जिस ने तुम में से जिहाद किया? तथा अल्लाह और उस के रसूल और ईमान वालों के सिवाय किसी को भेदी मित्र नहीं बनाया। और अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।
17. मुशरिकों (मिश्रणवादियों) के लिये योग्य नहीं है कि वह अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जब कि वह स्वयं अपने विरुद्ध कुफ़ (अधर्म) के साक्षी हैं। इन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और नरक में वही सदावासी होंगे।
18. वास्तव में अल्लाह की मस्जिदों को वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान

लाया, तथा नमाज़ की स्थापना की, और ज़कात दी, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरा। तो आशा है कि वही सीधी राह चलेंगे।

19. क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और सम्मानित मस्जिद (काँबा) की सेवा को उस के (ईमान के) बराबर समझते हो जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाया, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया? अल्लाह के समीप दोनों बराबर नहीं हैं। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सुपथ नहीं दिखाता।
20. जो लोग ईमान लाये तथा हिज़रत कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उन का बहुत बड़ा पद है। और वही सफल होने वाले हैं।
21. उन को उन का पालनहार शुभ सूचना देता है अपनी दया और प्रसन्नता की तथा ऐसे स्वर्गों की जिन में स्थायी सुख के साधन हैं।
22. जिन में वह सदावासी होंगे। वास्तव में अल्लाह के यहाँ (सत्कर्मियों के लिये) बड़ा प्रतिफल है।
23. हे ईमान वालो! अपने बापों और भाईयों को अपना सहायक न बनाओ, यदि वह ईमान की अपेक्षा कुफ़्र से प्रेम करें। और तुम में से जो उन को सहायक बनायेंगे तो वही अत्याचारी होंगे।
24. हे नबी! कह दो कि यदि तुम्हारे बाप और तुम्हारे पुत्र तथा तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियों तथा तुम्हारा परिवार और तुम्हारा धन जो तुम ने कमाया है, और जिस व्यापार के मंद हो जाने

का तुम्हें भय है, तथा वह घर जिन से मोह रखते हो, तुम्हें अल्लाह तथा उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद करने से अधिक प्रिय है तो प्रतिक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ जाये और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

25. अल्लाह बहुत से स्थानों पर तथा हुनैन के दिन तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब तुम को तुम्हारी अधिक्ता पर गर्व था, तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, तथा तुम पर धरती अपने विस्तार के होते संकीर्ण (तंग) हो गई, फिर तुम पीठ दिखा कर भागे।
26. फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर शान्ति उतारी। तथा ऐसी सेनायें उतारीं जिन्हें तुम ने नहीं देखा, और काफ़िरो को यातना दी। और यही काफ़िरो का प्रतिकार (बदला) है।
27. फिर अल्लाह इस के पश्चात् जिसे चाहे क्षमा कर दे और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
28. हे ईमान वालो! मुशरिक (मिश्रणवादी) मलीन हैं। अतः इस वर्ष के पश्चात् वह सम्मानित मस्जिद (काँबा) के समीप भी न आयें। और यदि तुम्हें निर्धनता का भय हो तो अल्लाह तुम्हें अपनी दया से धनी कर देगा, यदि वह चाहे। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।
29. (हे ईमान वालो!) उन से युद्ध करो जो न तो अल्लाह पर (सत्य) ईमान लाते और न अन्तिम दिन (प्रलय) पर। और न जिसे अल्लाह और उस के

रसूल ने हराम (वर्जित) किया है उसे हराम (वर्जित) समझते हैं, न सत्धर्म को अपना धर्म बनाते, उन में से जो पुस्तक दिये गये हैं यहाँ तक कि वह अपने हाथ से जिज्या दें और वह अपमानित हो कर रहें।

30. तथा यहूद ने कहा कि उजैर अल्लाह का पुत्र है। और नसारा (ईसाईयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह का पुत्र है। यह उन के अपने मुँह की बातें हैं। वह उन के जैसी बातें कर रहे हैं जो इन से पहले काफिर हो गये। उन पर अल्लाह की मार! वह कहाँ बहके जा रहे हैं।
31. उन्होंने ने अपने विद्वानों और धर्माचारियों (संतों) को अल्लाह के सिवा पूज्य बना लिया। तथा मर्यम के पुत्र मसीह को, जब कि उन्हें जो आदेश दिया गया था, इस के सिवा कुछ न था कि एक अल्लाह की इबादत (वन्दना) करें। कोई पूज्य नहीं है परन्तु वही। वह उस से पवित्र है जिसे उस का साझी बना रहे है।
32. वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपनी फूँकों से बुझा दें। और अल्लाह अपने प्रकाश को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, यद्यपि काफिरों को बुरा लगे।
33. उसी ने अपने रसूल को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है ताकी उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे, यद्यपि मिश्रणवादियों को बुरा लगे।
34. हे ईमान वालो! बहुत से (अहले किताब के) विद्वान तथा धर्माचारी (संत) लोगों का धन अवैध खाते हैं। और (उन्हें) अल्लाह की राह से रोकते

हैं, तथा जो सोना-चाँदी एकत्र कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में दान नहीं करते, उन्हें दुःखदायी यातना की शुभसूचना सुना दें।

35. जिस (प्रलय के) दिन उसे नरक की अग्नि में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथों तथा पाश्र्वों (पहलू) और पीठों को दागा जायेगा (और कहा जायेगा) यही है, जिसे तुम एकत्र कर रहे थे, तो (अब) अपने संचित किये धनों का स्वाद चखो।
36. वास्तव में महीनों की संख्या बारह महीने है अल्लाह के लेख में जिस दिन से उसने आकाशों तथा धरती की रचना की है। उन में से चार हराम (सम्मानित) महीने हैं। यही सीधा धर्म है। अतः अपने प्राणों पर अत्याचार न करो तथा मिश्रणवादियों से सब मिलकर युद्ध करो। जैसे वह तुम से मिल कर युद्ध करते हैं, और विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।
37. नसी (महीनों को आगे पीछे करना) कुफ़्र (अधर्म) में अधिकता है। इस से काफिर कुपथ किये जाते हैं। एक ही महीने को एक वर्ष हलाल (वैध) कर देते हैं, तथा उसी को दूसरे वर्ष हराम (अवैध) कर देते हैं। ताकि अल्लाह ने सम्मानित महीनों की जो गिनती निश्चित कर दी है उसे अपनी गिनती के अनुसार करके अवैध महीनों को वैध कर लें। उन के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं। और अल्लाह काफिरों को सुपथ नहीं दर्शाता।
38. हे ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है

कि जब तुम से कहा जाये कि अल्लाह की राह में निकलो तो धरती के बोझ बन जाते हो, क्या तुम आखिरत (परलोक) की अपेक्षा संसारिक जीवन से प्रसन्न हो गये हो? जब कि परलोक की अपेक्षा संसारिक जीवन के लाभ बहुत थोड़े हैं।

39. यदि तुम नहीं निकलोगे, तो तुम्हें अल्लाह दुःखदायी यातना देगा, तथा तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लायेगा। और तुम उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
40. यदि तुम उस (नबी) की सहायता नहीं करोगे तो अल्लाह ने उस की सहायता उस समय की है जब काफ़िरों ने उसे (मक्का से) निकाल दिया। वह दो में दूसरे थे। जब दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहे थे: उदासीन न हो, निश्चय अल्लाह हमारे साथ है। तो अल्लाह ने अपनी ओर से शान्ति उतार दी, और आप को ऐसी सेना से समर्थन दिया जिसे तुम ने नहीं देखा। और काफ़िरों की बात नीची कर दी। और अल्लाह की बात ही ऊँची रही। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
41. हल्के⁽³⁾ होकर और बोझिल (जैसे हो) निकल पड़ो। और अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो।
42. (हे नबी!) यदि लाभ समीप और यात्रा सरल होती तो यह (मुनाफ़िक) अवश्य आप के साथ हो जाते। परन्तु उन को मार्ग दूर लगा, और (अब)
- अल्लाह की शपथ लेंगे कि यदि हम निकल सकते, तो अवश्य तुम्हारे साथ निकल पड़ते, वह अपना विनाश स्वयं कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि वे वास्तव में झूठे हैं।
43. (हे नबी!) अल्लाह आप को क्षमा करे। आप ने उन्हें अनुमति क्यों दे दी? यहाँ तक कि आप के लिये जो सच्चे हैं उजागर हो जाते, और झूठों को जान लेते।
44. आप से (पीछे रह जाने की) अनुमति वह नहीं माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हों कि अपने धनों तथा प्राणों से जिहाद करेंगे। और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँती जानता है।
45. आप से अनुमति वही माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, और अपने संदेह में पड़े हुये हैं।
46. यदि वे निकलना चाहते तो अवश्य उस के लिये कुछ तय्यारी करते। परन्तु अल्लाह को उन का जाना अप्रिय था, अतः उन्हें आलसी बना दिया। तथा कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो।
47. और यदि वह तुम में निकलते तो तुम में बिगाड़ ही अधिक करते। और तुम्हारे बीच उपद्रव के लिये दौड़ धूप करते। और तुम में वह भी हैं जो उन की बातों पर ध्यान देते हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँती जानता है।
48. (हे नबी!) वह इस से पहले भी उपद्रव का प्रयास कर चुके हैं, तथा आप के लिये बातों में हेर फेर कर चुके हैं। यहाँ तक कि सत्य आ गया, और

अल्लाह का आदेश प्रभुत्वशाली हो गया, और यह बात उन्हें अप्रिय है।

49. उन में से कोई ऐसा भी है जो कहता है: आप मुझे अनुमति दे दें। और परीक्षा में न डालें। सुन लो! परीक्षा में तो यह पहले ही से पड़े हुए हैं। और वास्तव में नरक काफ़िरों को घेरी हुयी है।
50. (हे नबी!) यदि आप का कुछ भला होता है तो उन (द्विधावादियों) को बुरा लगता है। और यदि आप पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं: हम ने पहले ही अपनी सावधानी बरत ली थी। और प्रसन्न होकर फिर जाते हैं।
51. आप कह दें: हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचेगी परन्तु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दी है। वही हमारा सहायक है। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को निर्भर रहना चाहिये।
52. आप उन से कह दें कि तुम हमारे बारे में जिस की प्रतीक्षा कर रहे हो वह यही है कि हमें दो भलाईयों में से एक मिल जाये। और हम तुम्हारे बारे में इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह तुम्हें अपने पास से यातना देता है या हमारे हाथों से। तो तुम प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।
53. आप (मुनाफ़िकों से) कह दें कि तुम स्वेच्छा दान करो अथवा अनिच्छा, तुम से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा। क्यों कि तुम अवज्ञाकारी हो।
54. और उन के दानों के स्वीकार न किये जाने का कारण इस के सिवाय

कुछ नहीं है कि उन्होंने ने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कफ़र किया है। और वह नमाज़ के लिये आलसी होकर आते हैं, तथा दान भी करते हैं तो अनिच्छा करते हैं।

55. अतः आप को उन के धन तथा उनकी संतान चकित न करो। अल्लाह तो यह चाहता है कि उन्हें इन के द्वारा संसारिक जीवन में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफ़िर हों।
56. वह (मुनाफ़िक) अल्लाह की शपथ लेकर कहते हैं कि वह तुम में से हैं, जब कि वह तुम में से नहीं हैं, परन्तु भयभीत लोग हैं।
57. यदि वह कोई शरणगार अथवा गुफा या प्रवेश स्थान पा जायें तो उस की ओर भागते हुये फिर जायेंगे।
58. (हे नबी!) उन (मुनाफ़िकों) में से कुछ ज़कात के वितरण में आप पर आक्षेप करते हैं। फिर यदि उन्हें उस में से कुछ दे दिया जाये तो प्रसन्न हो जाते हैं, और यदि न दिया जाये तो तुरन्त अप्रसन्न हो जाते हैं।
59. और क्या ही अच्छा होता यदि वह उस से प्रसन्न हो जाते जो उन्हें अल्लाह और उस के रसूल ने दिया है। तथा कहते कि हमारे लिये अल्लाह काफ़ी है। हमें अपने अनुग्रह से (बहुत कुछ) प्रदान करेगा, तथा उस के रसूल भी, हम तो उसी की ओर रुचि रखते हैं।
60. ज़कात (देय, दान) केवल फ़कीरों, मिस्कीनों और कार्य-कर्ताओं के लिये, तथा उन के लिये जिन के

दिलों को जोड़ा जा रहा है। और दास मुक्ति, तथा ऋणियों (की सहायता) के लिये, और अल्लाह की राह में तथा यात्रियों के लिये है। अल्लाह की ओर से अनिवार्य (देय) है। और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

61. तथा उन(मुनाफ़िकों) में से कुछ नबी को दुःख देते हैं, और कहते हैं कि वह बड़े सुनवा है। आप कह दें कि वह तुम्हारी भलाई के लिये ऐसे है। वह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों की बात का विश्वास करते हैं, और उन के लिये दया है जो तुम में से ईमान लाये हैं। और जो अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं उन के लिये दुःखदायी यातना है।
62. वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की शपथ लेते हैं, ताकि तुम्हें प्रसन्न कर लें। जब कि अल्लाह और उस के रसूल इस के अधिक योग्य है कि उन्हें प्रसन्न करें, यदि वह वास्तव में ईमान वाले हैं।
63. क्या वह नहीं जानते कि जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करता है उस के लिये नरक की अग्नि है? जिस में वह सदावासी होंगे? और यह बहुत बड़ा अपमान है।
64. मुनाफ़िक (द्विधावादी) इस से डरते हैं कि उन पर कोई ऐसी सूरह न उतार दी जाये जो उन्हें इन के दिलों की दशा बता दे। आप कह दें कि हँसी उड़ा लो। निश्चय अल्लाह उसे खोल कर रहेगा जिस से तुम डर रहे हो।
65. और यदि आप उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रहे थे।

आप कहिये कि क्या अल्लाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?

66. तुम बहाने न बनाओ, तुम ने अपने इमान के पश्चात् कुफ़ किया है। यदि हम तुम्हारे एक गिरोह को क्षमा कर दें तो भी एक गिरोह को अवश्य यातना देंगे। क्यों कि वही अपराधी है।
67. मुनाफ़िक पुरुष तथा स्त्रियाँ सब एक-दूसरे जैसे हैं। वह बुराई का आदेश देते तथा भलाई से रोकते हैं। और अपने हाथ बंद किये रहते हैं। वे अल्लाह को भूल गये, तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। वास्तव में मुनाफ़िक ही भ्रष्टाचारी है।
68. अल्लाह ने मुनाफ़िक पुरुषों तथा स्त्रियों और काफ़िरों को नरक की अग्नि का वचन दिया है। जिस में वे सदावासी होंगे। वही उन को प्रयाप्त है। और अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।
69. इन की दशा वही हुई जो इन से पहले के लोगों की हुई। वह बल में इन से कड़े और धन तथा संतान में इन से अधिक थे। तो उन्हीं ने अपने (संसारिक) भाग का आनन्द लिया, अतः तुम भी अपने भाग का आनन्द लो, जैसे तुम से पूर्व के लोगों ने आनन्द लिया। और तुम भी उलझते हो जैसे वह उलझते रहे, उन्हीं के कर्म लोक तथा परलोक में व्यर्थ गये, और वही क्षति में हैं।
70. क्या इन को उन के समाचार नहीं पहुँचे जो इन से पहले थे: नूह की जाति

तथा आद और समूद तथा इब्राहीम की जाति के और मद्यन के वासियों के, और उन बस्तियों के जो पलट दी गईं उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ लाये, और ऐसा नहीं हो सकता था कि अल्लाह उन पर अत्याचार करता, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

नहीं सके। और उन को यही बात बुरी लगी कि अल्लाह और उस के रसूल ने उन को अपने अनुग्रह से धनी कर दिया। अब यदि वह क्षमायाचना कर लें तो उन के लिये उत्तम है। और यदि विमुख हों तो अल्लाह उन्हें दुःखदायी यातना लोक तथा प्रलोक में देगा। और उन का धरती में कोई संरक्षक और सहायक न होगा।

71. तथा ईमान वाले पुरुष और स्त्रियाँ एक-दूसरे के सहायक हैं। वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं, और नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं। और अल्लाह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। इन्हीं पर अल्लाह दया करेगा, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
72. अल्लाह ने ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों का वचन दिया है जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह उस में सदावासी होंगे, और स्थाई स्वर्गों में पवित्र आवासों का। और अल्लाह की प्रसन्नता इन सब से बड़ा प्रदान होगी, वही बहुत बड़ी सफलता है।
73. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद करो, और उन पर सख़्ती करो, उन का आवास नरक है। और वह बहुत बुरा स्थान है।
74. वह अल्लाह की शपथ लेते हैं कि उन्होंने ने यह¹¹ बात नहीं कही। जब कि वास्तव में उन्होंने कुफ़्र की बात कही है। और इस्लाम ले आने के पश्चात् काफ़िर हो गए हैं। और उन्होंने ऐसी बात का निश्चय किया था जो वे कर

75. उन में से कुछ ने अल्लाह को वचन दिया था कि यदि वह अपनी दया से हमें (धन-धान्य) प्रदान करेगा तो हम अवश्य दान करेंगे, और सुकर्मियों में हो जायेंगे।
76. फिर जब अल्लाह ने अपनी दया से उन्हें प्रदान कर दिया तो उस से कंजूसी कर गये, और वचन से विमुख हो कर फिर गये।
77. तो इस का परिणाम यह हुआ कि उन के दिलों में द्विधा का रोग उस दिन तक के लिये हो गया कि यह अल्लाह से मिले। क्यों कि उन्होंने ने उस वचन को भंग कर दिया जो अल्लाह से किया था, और इस लिये कि वे झूठ बोलते रहे।
78. क्या उन्हें इस का ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह उन के भेद की बातें तथा सुनगुन को भी जानता है? और वह सभी भेदों का अति ज्ञानी है।
79. जिन की दशा यह है कि वह ईमान वालों में से स्वेच्छा दान करने वालों पर दानों के विषय में आक्षेप करते हैं तथा उन को जो अपने परिश्रम ही से कुछ पाते (और दान करते हैं) यह (मुनाफ़िक) उन से उपहास करते हैं, अल्लाह उन से उपहास करता है।

और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

80. (हे नबी!) आप उन के लिये क्षमा याचना करें अथवा न करें, यदि आप उन के लिये सत्तर बार भी क्षमायाचना करें तो भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, इस कारण कि उन्हीं ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़र कर दिया। और अल्लाह अवैज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।
81. वे प्रसन्न⁽¹⁾ हुये जो पीछे कर दिये गये, अपने बैठे रहने के कारण अल्लाह के रसूल के पीछे। और उन्हें बुरा लगा कि जिहाद करें अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में, और उन्हीं ने कहा कि गर्मी में न निकलो। आप कह दें कि नरक की अग्नि गर्मी में इस से भीषण है, यदि वह समझते (तो ऐसी बात न करते)।
82. तो उन्हें चाहिये कि हँसे कम, और रोयें अधिका जो कुछ वे कर रहे हैं उस का बदला यही है।
83. तो (हे नबी!) यदि आप को अल्लाह इन (द्विधावादियों) के किसी गिरोह के पास (तबूक से) वापस लाये, और वह आप से (किसी दूसरे युद्ध में) निकलने की अनुमति मांगें तो आप कह दें कि तुम मेरे साथ कभी न निकलोगे, और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध कर सकोगे। तुम प्रथम बार बैठे रहने पर प्रसन्न थे तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो।
84. (हे नबी!) आप उन में से कोई मर जाये तो उस के जनाजे की नमाज़ कभी न पढ़ें, और न उस की समाधि (कब्र)

पर खड़े हों। क्योंकि उन्हीं ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़र किया है, और अवज्ञाकारी रहते हुये मरे हैं।

85. आप को उन के धन तथा उन की संतान चकित न करे, अल्लाह तो चाहता है कि इन के द्वारा उन्हें संसार में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफ़िर हों।
86. तथा जब कोई सूरह उतारी गई कि अल्लाह पर ईमान लाओ, तथा उस के रसूल के साथ जिहाद करो तो आप से उन (मुनाफ़िकों) में से समाई वालों ने अनुमति ली। और कहा कि आप हमें छोड़ दें। हम बैठने वालों के साथ रहेंगे।
87. तथा प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रहें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई। अतः वह नहीं समझते।
88. परन्तु रसूल ने और जो आप के साथ ईमान लाये, अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिये भलाईयाँ हैं, और वही सफल होने वाले हैं।
89. अल्लाह ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार कर दिये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, और यही बड़ी सफलता है।
90. और देहातियों में से कुछ बहाना करने वाले आये, ताकि आप उन्हें अनुमति दें। तथा वह बैठे रह गये जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से झूठ बोला। तो इन में से काफ़िरों को दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

91. निर्बलों तथा रोगियों और उन पर जो इतना नहीं पाते कि (तय्यारी के लिये) व्यय कर सकें कोई दोष नहीं, जब अल्लाह और उस के रसूल के भक्त हों, तो उन पर (दोषारोपण) की कोई राह नहीं।
92. और उन पर जो आप के पास जब आयें कि आप उन के लिये सवारी की व्यवस्था कर दें, और आप कहें कि,

मेरे पास इतना नहीं कि तुम्हारे लिये सवारी की व्यवस्था करूँ, तो वह इस दशा में वापिस हुये कि शोक के कारण उन की आँखें आँसू बहा रही थीं।

93. दोष केवल उन पर है जो आप से अनुमति माँगते हैं जब कि वह धनी हैं और वे इस से प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रह जायेंगे। और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, इस लिये वह कुछ नहीं जानते।



94. वह तुम से बहाने बनायेंगे, जब तुम उन के पास (तबूक से) वापिस आओगे। आप कह दें कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। अल्लाह ने हमें तुम्हारी दशा बता दी है। तथा भविष्य में भी अल्लाह और उस के रसूल तुम्हारा कर्म देखेंगे। फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के ज्ञानी (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे। फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कर रहे थे।
95. वह तुम से अल्लाह की शपथ खायेंगे, जब तुम उन की ओर वापिस आओगे ताकि तुम उन से विमुख हो जाओ। तो तुम उन से विमुख हो जाओ। वास्तव में वह मलीन हैं। और उन का आवास नरक है उस के बदले जो वह करते रहे।
96. वह तुम्हारे लिये शपथ खायेंगे, ताकि तुम उन से प्रसन्न हो जाओ, तो यदि तुम उन से प्रसन्न हो गये, तब भी अल्लाह उल्लंघनकारी लोगों से प्रसन्न नहीं होगा।
97. देहाती अविश्वास तथा द्विवधा में अधिक कड़े और अधिक योग्य है कि: उस (धर्म) की सीमाओं को न जानें, जिसे अल्लाह ने उतारा है। और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।
98. देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो अपने दिये हुए दान को अर्धदण्ड समझते हैं और तुम पर काल चक्र की प्रतीक्षा करते हैं। उन्हीं पर काल कुचक्र आ पड़ा है। और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
99. और देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो

अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, और अपने दिये हुये दान को अल्लाह की समीप्ता तथा रसूल के आशीर्वादों का साधन समझते हैं। सुन लो! यह वास्तव में उन के लिये समीप्य का साधन है। शीघ्र ही अल्लाह उन्हें अपनी दया में प्रवेश देगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

100. तथा प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन और अनसारी, और जिन लोगों ने सुकर्म के साथ उन का अनुसरण किया अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया। और वे उस से प्रसन्न हो गये। तथा उस ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार किये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, वही बड़ी सफलता है।
101. और जो तुम्हारे आस पास ग्रामीण हैं उन में से कुछ मुनाफिक (द्विधावादी) हैं। और कुछ मदीना में हैं जो (अपने) निफाक में अभ्यस्त (निपुण) हैं। आप उन्हें नहीं जानते, उन्हें हम जानते हैं। हम उन्हें दो बार यातना देंगे। फिर घोर यातना की ओर फेर दिये जायेंगे।
102. और कुछ दूसरे भी हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कुछ सुकर्म और कुछ दूसरे कुकर्म को मिश्रित कर लिया है। आशा है कि: अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
103. हे नबी! आप उन के धनों से दान

लें, और उस के द्वारा उन (के धनों) को पवित्र और उन (के मनों) को शुद्ध करें। और उन्हें आशीर्वाद दें वास्तव में आप का आशीर्वाद उन के लये संतोष का कारण है। और अल्लाह सब सुनने जानने वाला है।

104. क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता तथा (उन के) दानों को अंगीकार करता है। और वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
105. और (हे नबी!) उन से कहो कि कर्म करते जाओ। अल्लाह तथा उस के रसूल और ईमान वाले तुम्हारा कर्म देखेंगे। (फिर) उस (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे जो परोक्ष तथा प्रत्यक्ष (छुपे तथा खुले) का ज्ञानी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे।
106. और (इन के सिवाय) कुछ दूसरे भी हैं जो अल्लाह के आदेश के लिये विलंबित हैं। वह उन्हें दण्ड दे, अथवा उन को क्षमा कर दे तो अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।
107. तथा (द्विधावादियों में) वह भी है जिन्होंने एक मस्जिद बनाई, इस लिये कि (इस्लाम को) हानि पहुँचायें, तथा कुफ़ करें, और ईमान वालों में विभेद उत्पन्न करें, तथा उस का घात-स्थल बनाने के लिये जो इस से पूर्व अल्लाह और उस के रसूल से युद्ध कर चुका है। और वह अवश्य शपथ लेंगे कि हमारा संकल्प भलाई के सिवा और

कुछ न था। तथा अल्लाह साक्ष्य देता है कि वह निश्चय मिथ्यावादी हैं।

108. (हे नबी!) आप उस में कभी खड़े न हों। वास्तव में वह मस्जिद जिस का शिलान्यास प्रथम दिन से अल्लाह के भय पर किया गया है वह अधिक योग्य है कि आप उस में (नमाज़ के लिये) खड़े हों। उस में ऐसे लोग हैं, जो स्वच्छता से प्रेम करते हैं, और अल्लाह स्वच्छ रहने वालों से प्रेम करता है।
109. तो क्या जिस ने अपने निर्माण का शिलान्यास अल्लाह के भय और प्रसन्नता के आधार पर किया हो, वह उत्तम है, अथवा जिस ने उस का शिलान्यास एक खाई के गिरते हुये किनारे पर किया हो, जो उस के साथ नरक की अग्नि में गिर पड़ा। और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।
110. यह निर्माण जो उन्होंने किया बराबर उन के दिलों में एक संदेह बना रहेगा। परन्तु यह कि उन के दिलों को खण्ड खण्ड कर दिया जाये, और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।
111. निःसन्देह अल्लाह ने ईमान वालों के प्राणों तथा उन के धनों को इस के बदले खरीद लिया है कि उन के लिये स्वर्ग है। वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं, वह मारते तथा मरते हैं। यह अल्लाह पर सत्य वचन है, तौरात तथा इंजील और कुर्आन में। और अल्लाह से बढ़ कर अपना वचन पूरा करने वाला कौन हो सकता है? अतः अपने इस सौदे पर

प्रसन्न हो जाओ जो तुम ने किया।
और यही बड़ी सफलता है।

112. जो क्षमा याचना करने, बंदना करने तथा अल्लाह की स्तुति करने वाले, रोज़ा रखने तथा रुकुअ और सज्दा करने वाले भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने वाले, तथा अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं। और (हे नबी!) आप ऐसे ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दें।
113. किसी नबी तथा उन के लिये जो ईमान लाये हों योग्य नहीं है कि मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये क्षमा की प्रार्थना करें। यद्यपि वह उन के समीपवर्ती हों, जब यह उजागर हो गया कि वास्तव में वह नारकी हैं।
114. और इब्राहीम का अपने बाप के लिये क्षमा की प्रार्थना करना केवल इस लिये हुआ कि उस ने उस को इस का वचन दिया था। और जब उस के लिये उजागर हो गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो उस से विरक्त हो गया। वास्तव में इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय सहनशील था।
115. अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी जाति को मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुपथ कर दे, जब तक उन के लिये जिस से वचना चाहिये उसे उजागर न कर दे। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानने वाला है।
116. वास्तव में अल्लाह ही है, जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है। वही जीवन देता तथा

मारता है। और तुम्हारे लिये उस के सिवा कोई संरक्षक और सहायक नहीं है।

117. अल्लाह ने नबी तथा मुहाजिरीन और अन्सार पर दया की, जिन्होंने ने तंगी के समय आप का साथ दिया, इस के पश्चात् कि उन में से कुछ लोगों के दिल कुटिल होने लगे थे। फिर उन पर दया की। निश्चय वह उन के लिये अति करुणामय दयावान् है।
118. तथा उन तीनों पर जिन का मामला विलंबित कर दिया गया था, जब उन पर धरती अपने विस्तार के होते सिकुड़ गई, और उन पर उन के प्राण संकीर्ण हो गये, और उन्हें विघ्नास था कि अल्लाह के सिवा उन के लिये कोई शरणागार नहीं परन्तु उसी की ओर। फिर उन पर दया की, ताकि तौबा (क्षमा याचना) कर लें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
119. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सच्चों के साथ हो जाओ।
120. मदीना के वासियों तथा उन के आस पास के देहातियों के लिये उचित नहीं था कि अल्लाह के रसूल से पीछे रह जायें, और अपने प्राणों को आप के प्राण से प्रिय समझें। यह इस लिये कि उन्हें अल्लाह की राह में कोई प्यास और थकान तथा भ्रम नहीं पहुँचती है, और न वह किसी ऐसे स्थान को रोंदते हैं जो काफ़िरों को अप्रिय हो, या किसी शत्रु से वह कोई सफलता प्राप्त नहीं करते हैं परन्तु उन के लिये एक सत्कर्म

लिख दिया जाता है। वास्तव में अल्लाह सत्कर्मियों का फल व्यर्थ नहीं करता।

121. और वह (अल्लाह की राह में) थोड़ा या अधिक जो भी व्यय करते हैं, और कोई घाटी पार करते हैं तो उस को उन के लिये लिख दिया जाता है, ताकि वह उन्हें उस से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे जो वह कर रहे थे।
122. ईमान वालों के लिये उचित नहीं कि सब एक साथ निकल पड़ें तो क्यों नहीं प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह निकलता, ताकि धर्म में बोध ग्रहण करे। और ताकि अपनी जाति को सावधान करे, जब उन की ओर वापिस आये, संभवतः वह (कुकर्माँ से) बचें।^[1]
123. हे ईमान वालो! अपने आस-पास के काफिरों से युद्ध करो, और चाहिये कि वह तुम में कूटिलता पायें, तथा विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।
124. और जब (कुर्आन की) कोई आयत उतारी जाती है तो इन (द्विधावादियों में) से कुछ कहते हैं कि तुम में से किस का ईमान (विश्वास) इस ने अधिक किया? तो वास्तव में जो ईमान रखते हैं उन का विश्वास अवश्य अधिक कर दिया, और वह इस पर प्रसन्न हो रहे हैं।
125. परन्तु जिन के दिलों में (द्विधा) का रोग है तो उस ने उन की गन्दगी और अधिक बढ़ा दी। और वह काफिर रहते हुये ही मर गये।
126. क्या वह नहीं देखते कि उन की

परीक्षा प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार ली जाती है? फिर भी वह तौबा (क्षमा याचना) नहीं करते, और न शिक्षा ग्रहण करते हैं।

127. और जब कोई सूरह उतारी जाये, तो वह एक दूसरे की ओर देखते हैं कि तुम्हें कौई देख तो नहीं रहा है? फिर मुँह फेर कर चल देते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को (ईमान से) फेर दिया है। इस कारण कि वह समझ बूझ नहीं रखते।
128. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे पास तुम्हीं में से अल्लाह का एक रसूल आ गया है। उस को वह बात भारी लगती है जिस से तुम्हें दुःख हो। वह तुम्हारी सफलता की लालसा रखते हैं। और ईमान वालों के लिये करुणामय दयावान् है।
129. (हे नबी!) फिर भी यदि वह आप से मुँह फेरते हों तो उन से कह दो कि मेरे लिये अल्लाह (का सहारा) बस है। उस के अतिरिक्त कोई हकीकी पूज्य नहीं। और वही महा सिंहासन का मालिक (स्वामी) है।

सूरह यूनुस - 10

यह सूरह मक्की है, इस में 109 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ, लाम, रा। यह तत्त्वज्ञता से परिपूर्ण पुस्तक (कुर्आन) की आयतें हैं।
2. क्या मानव के लिये आश्चर्य की बात है कि हम ने उन्हीं में से एक पुरुष पर प्रकाशना भेजी है कि आप

मानवगण को सावधान कर दें और जो ईमान लायें उन्हें शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास सत्य सम्मान है। तो काफ़िरो ने कह दिया कि यह खुला जादूगर है।

3. वास्तव में तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस नें आकाशों तथा धरती को छः दिनों में उत्पन्न किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर स्थिर हो गया। वही विघ्न की व्यवस्था कर रहा है। कोई उस के पास अनुशंसा (सिफ़ारिश) नहीं कर सकता, परन्तु उस की अनुमति के पश्चात्। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, अतः उसी की इबादत (बंदना) करो। क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
4. उसी की ओर तुम सब को लौटना है। यह अल्लाह का सत्य वचन है। वही उत्पत्ति का आरंभ करता है। फिर वही पुनः उत्पन्न करेगा ताकि उन्हें न्याय के साथ प्रतिफल प्रदान करे। जो ईमान लाये और सदाचार किये, और जो काफ़िर हो गये उन के लिये खौलता पेय तथा दुःखदायी यातना है। उस अविश्वास के बदले जो कर रहे थे।
5. उसी ने सूर्य को ज्योति तथा चाँद को प्रकाश बनाया है। और उस (चाँद) के गंतव्य स्थान निर्धारित कर दिये, ताकि तुम वर्षों की गिनती तथा हिसाब का ज्ञान कर लो। इन की उत्पत्ति अल्लाह ने नहीं की है परन्तु सत्य के साथ। वह उन लोगों के लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हैं।
6. निःसंदेह रात्रि तथा दिवस के एक

दूसरे के पीछे आने में, और जो कुछ अल्लाह ने आकाशों तथा धरती में उत्पन्न किया है उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अल्लाह से डरते हैं।

7. वास्तव में जो लोग (प्रलय के दिन) हम से मिलने की आशा नहीं रखते और संसारिक जीवन से प्रसन्न हैं तथा उसी से संतुष्ट हैं, तथा जो हमारी निशानियों से असावधान हैं।
8. उन्हीं का आवास नरक है, उस के कारण जो वह करते रहे।
9. वास्तव में जो ईमान लाये और सुकर्म किये उन का पालनहार उन के ईमान के कारण उन्हें (स्वर्ग की) राह दर्शा देगा, जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह सुख के स्वर्गों में होंगे।
10. उन की पुकार उस (स्वर्ग) में यह होगी: "हे अल्लाह! तू पवित्र है।" और एक दूसरे को उस में उन का आशीर्वाद यह होगा: "तुम पर शान्ति हो।" और उन की प्रार्थना का अन्त यह होगा: "सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो सम्पूर्ण विघ्न का पालनहार है।"
11. और यदि अल्लाह लोगों को तुरन्त बुराई का (बदला) दे देता, जैसे वह तुरन्त (संसारिक) भलाई चाहते हैं तो उन का समय कभी पूरा हो चुका होता। अतः जो (मरने के पश्चात्) हम से मिलने की आशा नहीं रखते हम उन्हें उन के कुकर्माँ में बहकते हुये छोड़ देते हैं।
12. और जब मानव को कोई दुःख पहुँचता है, तो हमें लेटे या बैठे या खड़े हो कर पुकारता है। फिर जब हम उस

का दुःख दूर कर देते हैं, तो ऐसे चल देता है जैसे कभी हम को किसी दुःख के समय पुकारा ही न हो। इसी प्रकार उल्लंघनकारियों के लिये उन के कर्तृत शोभित बना दिये गये हैं।

13. और तुम से पहले हम कई जातियों को ध्वस्त कर चुके हैं, जब उन्होंने ने अत्याचार किये, और उन के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, परन्तु वह ऐसे नहीं थे कि: ईमान लाते, इसी प्रकार हम अपराधियों को बदला देते हैं।
14. फिर हम ने धरती में उन के पश्चात् तुम्हें उन का स्थान दिया, ताकि हम देखें कि: तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं?
15. और (हे नबी!) जब हमारी खुली आयतें उन्हें सुनायी जाती हैं तो जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं कि इस के सिवा कोई दूसरा कुआँन लाओ, या इस में परिवर्तन कर दो। उन से कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इस में परिवर्तन कर दूँ। मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है। मैं यदि अपने पालनहार की अवैज्ञा करूँ तो मैं एक घोर दिन की यातना से डरता हूँ।
16. आप कह दें: यदि अल्लाह चाहता तो मैं कुआँन तुम्हें सुनाता ही नहीं, और न वह तुम्हें इस से सूचित करता। फिर मैं इस से पहले तुम्हारे बीच एक आयु व्यतीत कर चुका हूँ। तो क्या तुम समझ बूझ नहीं रखते हो?
17. फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप

लगाये, अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? वास्तव में ऐसे अपराधी सफल नहीं होते।

18. और वह अल्लाह के सिवा उस की इबादत (वंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ। और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफारशी) हैं आप कहिये: क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की सूचना दे रहे हो जिस के होने को न वह आकाशों में जानता है, और न धरती में? वह पवित्र और उच्च है उस शिर्क (मिश्रणवाद) से जो वे कर रहे हैं।
19. लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे, फिर उन्होंने ने विभेद किया। और यदि आप के पालनहार की ओर से पहले ही से एक बात निश्चित न होती, तो उन के बीच उस का (संसार ही में) निर्णय कर दिया जाता जिस में वह विभेद कर रहे हैं।
20. और वह यह भी कहते हैं कि आप पर कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि परोक्ष की बातें तो अल्लाह के अधिकार में हैं। अतः तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
21. और जब हम, लोगों को दुःख पहुँचाने के पश्चात् दया (का स्वाद) चखाते हैं तो तुरन्त हमारी आयतों (निशानियों) के बारे में षडयंत्र रचने लगते हैं। आप कह दें कि अल्लाह का उपाय अधिक तीव्र है। हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी चालें लिख रहे हैं।

22. वही है जो जल तथा धल में तुम्हें फिराता है। फिर जब तुम नौकाओं में होते हो, और उन को ले कर अनुकूल वायु के कारण चलती है, और वह उस से प्रसन्न होते हैं, तो अकस्मात् प्रचण्ड वायु का झोंका आ जाता है, और प्रत्येक स्थान से उन्हें लहरें मारने लगती हैं, और समझते हैं कि उन्हें घेर लिया गया तो अल्लाह से उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के प्रार्थना करते हैं कि यदि तू ने हमें बचा लिया तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ बन कर रहेंगे।
23. फिर जब उन्हें बचा लेता है तो अकस्मात् धरती में अवैध विद्रोह करने लगते हैं। हे लोगो! तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रहा है। यह संसारिक जीवन के कुछ लाभ हैं। फिर तुम्हें हमारी ओर फिर कर आना है। तब हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कर रहे थे?
24. संसारिक जीवन तो ऐसा ही है जैसे हम ने आकाश से जल बरसाया, जिस से धरती की उपज घनी हो गयी, जिस में से लोग और पशु खाते हैं। फिर जब वह समय आया कि धरती ने अपनी शोभा पूरी कर ली और सुसज्जित हो गयी, और उस के स्वामी ने समझा कि वह उस से लाभावित होने पर सामर्थ्य रखते हैं, तो अकस्मात् रात या दिन में हमारा आदेश आ गया, और हम ने उसे इस प्रकार काट कर रख दिया, जैसे कि कल वहाँ थी ही नहीं। इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन
- खोल-खोल कर, करते हैं, ताकि लोग मनन चिंतन करें।
25. और अल्लाह तुम्हें शान्ति के घर (स्वर्ग) की ओर बुला रहा है। और जिसे चाहता है सीधी डगर दर्शा देता है।
26. जिन लोगों ने भलाई की, उन के लिये भलाई ही होगी, और उस से भी अधिक।
27. और जिन लोगों ने बुराईयाँ की तो बुराई का बदला उसी जैसा होगा। तथा उन पर अपमान छाया होगा। और उन के लिये अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। उन के मुखों पर ऐसे कालिमा छापी होगी जैसे अंधेरी रात के काले पर्दे उन पर पड़े हुये हों। वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।
28. जिस दिन हम उन सब को एकत्र करेंगे फिर उन से कहेंगे जिन्होंने साझी बनाया है, कि अपने स्थान पर रुके रहो, और तुम्हारे (बनाये हुये) साझी भी। फिर हम उन के बीच अलगाव कर देंगे। और उन के साझी कहेंगे: तुम तो हमारी वंदना ही नहीं करते थे।
29. हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य बस है, कि तुम्हारी वंदना से हम असूचित थे।
30. वही प्रत्येक व्यक्ति उसे परख लेगा जो पहले किया है। और वह (निर्णय के लिये) अपने सत्य स्वामी की ओर फेर दिये जायेंगे। और जो मिथ्या बातें बना रहे थे उन से खो जायेंगे।
31. (हे नबी!) उन से पूछें कि तुम्हें कौन

आकाश तथा धरती से जीविका प्रदान करता है? सुनने तथा देखने की शक्तियाँ किस के अधिकार में हैं? कौन निर्जीव से जीव को तथा जीव को निर्जीव से निकालता है? वह कौन है जो विष्व की व्यवस्था कर रहा है? वह कह देंगे कि अल्लाह। फिर कहो कि क्या तुम (सत्य के विरोध से) डरते नहीं हो?

32. तो वही अल्लाह तुम्हारा सत्य पालनहार है, फिर सत्य के पश्चात कुपथ (असत्य) के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिराये जा रहे हो?

33. इस प्रकार आप के पालनहार की बातें अवज्ञाकारियों पर सत्य सिद्ध हो गयी कि वह ईमान नहीं लायेंगे।

34. आप उन से कहिये: क्या तुम्हारे साक्षियों में कोई है, जो उत्पत्ति का आरंभ करता फिर उसे दुहराता हो? आप कह दें अल्लाह उत्पत्ति का आरंभ करता, फिर उसे दुहराता है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

35. आप कहिये: क्या तुम्हारे साक्षियों में कोई संमार्ग दर्शाता है? तो क्या जो संमार्ग दर्शाता हो वह अधिक योग्य है कि उस का अनुपालन किया जाये अथवा वह जो स्वयं संमार्ग पर न हो, परन्तु यह कि उसे संमार्ग दर्शा दिया जाये? तो तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

36. और उन (मिश्रणवादियों) में अधिकांश अनुमान का अनुसरण करते हैं। और सत्य को जानने में अनुमान कुछ काम नहीं दे सकता। वास्तव में अल्लाह जो कुछ वे कर रहे

हैं भली भाँति जानता है।

37. और यह कुर्आन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा अपने मन से बना लिया जाये, परन्तु उन की पुष्टि है जो इस से पहले (पुस्तकें) उतरी हैं। और यह पुस्तक (कुर्आन) विवरण है। इस में कोई सदिह नहीं कि यह सम्पूर्ण विष्व के पालनहार की ओर से है।

38. क्या वह कहते हैं कि इस (कुर्आन) को उस (नबी) ने स्वयं बना लिया है? आप कह दें: इसी के समान एक सूरह ला दो। और अल्लाह के सिवा जिसे (अपनी सहायता के लिये) बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम सत्यवादी हो।

39. बल्कि उन्होंने ने उस (कुर्आन) को झुठला दिया जो उन के ज्ञान के घेरे में नहीं आया, और न उस का परिणाम उन के सामने आया। इसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था, जो इन से पहले थे। तो देखो कि अत्याचारियों का क्या परिणाम हुआ?

40. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस (कुर्आन) पर ईमान लाते हैं और कुछ ईमान नहीं लाते। और आप का पालनहार उपद्रवकारियों को अधिक जानता है।

41. और यदि वे आप को झुठलायें तो आप कह दें: मेरे लिये मेरा कर्म है और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म। तुम उस से निर्दोष हो जो मैं करता हूँ। तथा मैं उस से निर्दोष हूँ जो तुम करते हो।

42. इन में से कुछ लोग आप की ओर

कान लगाते हैं। तो क्या आप बहरों को सुना सकते हैं, यद्यपि वह कुछ भी न समझ सकते हों?

43. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो आप की ओर तकते हैं तो क्या आप अन्धे को राह दिखा देंगे? यद्यपि उन्हें कुछ सूझता न हो?
44. वास्तव में अल्लाह, लोगों पर अत्याचार नहीं करता, परन्तु लोग स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।⁽¹⁾
45. और जिस दिन अल्लाह उन्हें एकत्र करेगा तो उन्हें लगेगा कि वह (संसार में) दिन के केवल कुछ क्षण रहे। वह आपस में परिचित होंगे। वास्तव में वह क्षतिग्रस्त हो गये जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, और वह सीधी डगर पाने वाले न हुये।
46. और यदि हम आप को उस (यातना) में से कुछ दिखा दें जिस का वचन उन्हें दे रहे हैं अथवा (उस से पहले) आप का समय पूरा कर दें तो भी उन्हें हमारे पास ही फिर कर आना है। फिर अल्लाह उस पर साक्षी है जो वे कर रहे हैं।
47. और प्रत्येक समुदाय के लिये एक रसूल है। फिर जब उन का रसूल आ गया तो (हमारा नियम यह है कि) उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाता है, और उन पर अत्याचार नहीं किया जाता।
48. और वह कहते हैं कि हम पर यातना का वचन कब पूरा होगा, यदि तुम सत्यवादी हो?
49. आप कह दें कि मैं स्वयं अपने लाभ

तथा हानि का अधिकार नहीं रखता। वही होता है जो अल्लाह चाहता है। प्रत्येक समुदाय का एक समय निर्धारित है। तथा जब उन का समय आ जायेगा तो न एक क्षण पीछे रह सकते हैं, और न आगे बढ़ सकते हैं।

50. (हे नबी!) कह दो कि तुम बताओ यदि अल्लाह की यातना तुम पर रात अथवा दिन में आ जाये (तो तुम क्या कर सकते हो?) ऐसी क्या बात है कि अपराधि उस के लिये जल्दी मचा रहे है?
51. क्या जब वह आ जायेगी उस समय तुम उसे मानोगे? अब जब कि उस के शीघ्र आने की मांग कर रहे थे।
52. फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि सदा की यातना चखो। तुम्हें उसी का प्रतिकार (बदला) दिया जा रहा है जो तुम (संसार में) कमा रहे थे।
53. और वह आप से पूछते हैं कि क्या यह बात वास्तव में सत्य है? आप कह दें कि मेरे पालनहार की शपथ! यह वास्तव में सत्य है। और तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते।
54. और यदि प्रत्येक व्यक्ति के पास जिस ने अत्याचार किया है, जो कुछ धरती में है सब आ जाये, तो वह अवश्य उसे अर्थदण्ड के रूप में देने को तय्यार हो जायेगा। और जब वह उस यातना को देखेंगे तो दिल ही दिल में पछतायेंगे। और उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
55. सुनो! अल्लाह ही का है वह जो कुछ आकाशों तथा धरती में है। सुनो!

उस का बचन सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग इसे नहीं जानते।

56. वही जीवन देता तथा वही मारता है। और उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे।
57. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से शिक्षा (कुर्आन) आ गयी है, जो अन्तरात्मा के सब रोगों का उपचार (स्वास्थ्य कर) तथा मार्ग दर्शन और दया है उन के लिये जो विद्यास रखते हों।
58. आप कह दें कि यह (कुर्आन) अल्लाह का अनुग्रह और उस की दया है। अतः लोगों को इस से प्रसन्न हो जाना चाहिये। और यह उस (धन-धान्य) से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।
59. (हे नबी!) उन से कहो: क्या तुम ने इस पर विचार किया है कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये जो जीविका उतारी है, तुम ने उस में से कुछ को हराम (अवैध) बना दिया है, और कुछ को हलाल (वैध)। तो कहो कि क्या अल्लाह ने तुम को इस की अनुमति दी है? अथवा तुम अल्लाह पर आरोप लगा रहे हो?
60. और जो लोग अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं उन्होंने ने प्रलय के दिन को क्या समझ रखा है? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये दयाशील है। परन्तु उन में अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।
61. (हे नबी!) आप जिस दशा में हों, और कुर्आन में से जो कुछ भी सुनाते हों, तथा तुम लोग भी कोई कर्म नहीं करते हो, परन्तु हम तुम्हें देखते

रहते हैं, जब तुम उसे करते हो। और आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी नहीं रहती और न आकाश में न इस से कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है।

62. सुनो! जो अल्लाह के मित्र हैं, न उन्हें कोई भय होगा, और न वह उदासीन होंगे।
63. जो ईमान लाये, तथा अल्लाह से डरते रहे।
64. उन्हीं के लिये संसारिक जीवन में शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी। अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है।
65. तथा (हे नबी!) आप को उन (काफ़िरो) की बात उदासीन न करो। वास्तव में सभी प्रभुत्व अल्लाह ही के लिये है। और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
66. सुनो! वास्तव में अल्लाह ही के अधिकार में है जो आकाशों में तथा धरती में है। और जो अल्लाह के सिवा दूसरे साक्षियों को पुकारते हैं वह केवल अनुमान के पीछे लगे हुये हैं। और वे केवल आँकलन कर रहे हैं।
67. वही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई है ताकि उस में सुख पाओ। और दिन बनाया, ताकि उस के प्रकाश में देखो। निःसंदेह इस में (अल्लाह के व्यवस्थापक होने की) उन के लिये बड़ी निशानियाँ हैं जो (सत्य को) सुनते हों।
68. और उन्होंने ने कह दिया कि अल्लाह ने

कोई पुत्र बना लिया है। वह पवित्र है! वह निस्पृह है। वही स्वामी है उस का जो आकाशों में तथा धरती में है। क्या तुम्हारे पास इस का कोई प्रमाण है? क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कह रहे हो जिस का तुम ज्ञान नहीं रखते?

69. (हे नबी!) आप कह दें: जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाते हैं वह सफल नहीं होंगे।
70. उन के लिये संसार ही का कुछ आनन्द है, फिर हमारी ओर ही आना है। फिर हम उन्हें उन के कुफ़्र (अविश्वास) करते रहने के कारण घोर यातना चखायेंगे।
71. आप उन्हें नूह की कथा सुनायें, जब उस ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अल्लाह की आयतों (निशानियों) द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अल्लाह ही पर मैं ने भरोसा किया है। तुम मेरे विरुद्ध जो करना चाहो उसे निश्चित कर लो और अपने साझियों (देवी-देवताओं) को भी बुला लो। फिर तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छुपी न रह जाये, फिर जो करना हो उसे कर जाओ और मुझे कोई अवसर न दो।
72. फिर यदि तुम ने मुख फेरा तो मैं ने तुम से किसी पारिश्रमिक की माँग नहीं की है। मेरा पारिश्रमिक तो अल्लाह के सिवा किसी के पास नहीं है। और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में रहूँ।
73. फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हम ने उसे और जो नाव में उस के

साथ (सवार) थे बचा लिया और उन्हीं को उन का उत्तराधिकारी बना दिया। और उन्हें जलमग्न कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया। अतः देख लो कि उन का परिणाम क्या हुआ जो सचेत किये गये थे।

74. फिर हम ने उस (नूह) के पश्चात बहुत से रसूलों को उन की जाति के पास भेजा, वह उन के पास खुली निशानियाँ (तर्क) लाये तो वह ऐसे न थे कि जिसे पहले झुठला दिया था उस पर ईमान लाते, इसी प्रकार हम उल्लंघनकारियों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।
75. फिर हम ने उन के पश्चात मूसा और हारून को फिरौन और उस के प्रमुखों के पास भेजा। तो उन्होंने अभिमान किया। और वह थे ही अपराधीगण।
76. फिर जब उन के पास हमारी ओर से सत्य आ गया तो उन्होंने ने कह दिया कि वास्तव में यह तो खुला जादू है।
77. मूसा ने कहा: क्या तुम सत्य को जब तुम्हारे पास आ गया तो जादू कहने लगे? क्या यह जादू है? जब कि जादूगर (तांत्रिक) सफल नहीं होते।
78. उन्होंने ने कहा: क्या तुम इसलिये हमारे पास आये हो ताकि हमें उस (प्रथा) से फेर दो, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। और देश (मिस्र) में तुम दोनों की महिमा स्थापित हो जाये? हम तुम दोनों का विश्वास करने वाले नहीं हैं।
79. और फिरौन ने कहा: (देश में) जितने दक्ष जादूगर हैं उन्हें मेरे पास लाओ।

80. फिर जब जादूगर आ गये तो मूसा ने कहा: जो कुछ तुम्हें फेंकना है उसे फेंक दो।
81. और जब उन्होंने फेंक दिया तो मूसा ने कहा: तुम जो कुछ लाये हो वह जादू है। निश्चय अल्लाह उसे अभिव्यर्थ कर देगा। वास्तव में अल्लाह उपद्रवकारियों के कर्म को नहीं सुधारता।
82. और अल्लाह सत्य को अपने आदेशों के अनुसार सत्य कर दिखायेगा। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।
83. तो मूसा पर उस की जाति के कुछ नवयुवकों के सिवा कोई ईमान नहीं लाया। फिरऔन और अपने प्रमुखों के भय से कि उन्हें किसी यातना में न डाल दे। और वास्तव में फिरऔन का घरती में बड़ा प्रभुत्व था, और वह वस्तुतः उल्लंघनकारियों में था।
84. और मूसा ने (अपनी जाति बनी इस्राईल से) कहा: हे मेरी जाति! जब तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो उसी पर निर्भर रहो, यदि तुम आज्ञाकारी हो।
85. तो उन्होंने ने कहा: हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों के लिये परीक्षा का साधन न बना।
86. और अपनी दया से हमें काफिरों से बचा ले।
87. और हम ने मूसा तथा उस के भाई (हारून) की ओर प्रकाशना भेजी, कि अपनी जाति के लिये मिस्र में कुछ घर बनाओ। और अपने घरों को किव्ला बना लो। तथा नमाज की स्थापना करो। और ईमान वालों को शुभ सूचना दो।
88. और मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! तू ने फिरऔन और उस के प्रमुखों को संसारिक जीवन में शोभा तथा धन-धान्य प्रदान किया है। तो मेरे पालनहार! क्या इस लिये कि वह तेरी राह से विचलित करते रहे? हे मेरे पालनहार! उन के धनों को निरस्त कर दे, और उन के दिल कड़े कर दे कि वह ईमान न लायें जब तक दुःखदायी यातना न देख लें।
89. अल्लाह ने कहा: तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी। तो तुम दोनों अडिग रहो, और उन की राह का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते।
90. और हम ने बनी इस्राईल को सागर पार करा दिया तो फिरऔन और उस की सेना ने उन का पीछा किया, अत्याचार तथा शत्रुता के ध्येय से। यहाँ तक कि जब वह जलमग्न होने लगा तो बोला: मैं ईमान ले आया, और मान लिया कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं है जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, और मैं आज्ञाकारियों में हूँ।
91. (अल्लाह ने कहा) अब? जब कि इस से पूर्व अवैज्ञा करता रहा, और उपद्रवियों में से था?
92. तो आज हम तेरे शव को बचा लेंगे ताकि तू उन के लिये जो तेरे पश्चात होंगे, एक (शिक्षाप्रद) निशानी बने। और वास्तव में बहुत से लोग हमारी निशानियों से अचेत रहते हैं।
93. और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा निवास स्थान दिया, और स्वच्छ

जीविका प्रदान की। फिर उन्होंने परस्पर विभेद उस समय किया जब उन के पास ज्ञान आ गया। निश्चय अल्लाह उन के बीच प्रलय के दिन उस का निर्णय कर देगा जिस में वह विभेद कर रहे थे।

94. फिर यदि आप को उस में कुछ संदेह हो, जो हम ने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ते हैं। आप के पास आप के पालनहार की ओर से सत्य आ गया है। अतः आप कदापि संदेह करने वालों में न हों।
95. और आप कदापि उन में से न हों जिन्होंने ने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया, अन्यथा क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे।
96. (हे नबी!) जिन पर आप के पालनहार का आदेश सिद्ध हो गया है, वह ईमान नहीं लायेंगे।
97. यद्यपि उन के पास सभी निशानियाँ आ जायें, जब तक दुःखदायी यातना नहीं देख लेंगे।
98. फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाये फिर उस का ईमान उसे लाभ पहुँचाये, यूनस की जाति के सिवा, जब वह ईमान लाये तो हम ने उन से संसारिक जीवन में अपमानकारी यातना दूर कर दी, और उन्हें एक निश्चित अवधि तक लाभान्वित होने का अवसर दे दिया।
99. और यदि आप का पालनहार चाहता तो जो भी धरती में है सब ईमान ले आते तो क्या आप लोगों को बाध्य करेंगे यहाँ तक कि ईमान ले आयें?
100. किसी प्राणी के लिये यह संभव

नहीं है कि अल्लाह की अनुमति के बिना ईमान लाये, और वह मलीनता उन पर डाल देता है, जो बुद्धि का प्रयोग नहीं करते।

101. (हे नबी!) उन से कहो कि उसे देखो जो आकाशों तथा धरती में है। और निशानियाँ तथा चेतावनियाँ उन्हें क्या लाभ दे सकती हैं जो ईमान (विश्वास) न रखते हों।
102. तो क्या वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन पर वैसे ही (बुरे) दिन आयें जैसे उन से पहले लोगों पर आ चुके हैं। आप कहिये: फिर तो तुम प्रतीक्षा करो। मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।
103. फिर हम अपने रसूलों को और जो ईमान लाये, बचा लेते हैं। इसी प्रकार हम ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि ईमान वालों को बचा लेते हैं।
104. आप कह दें: हे लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के बारे में किसी संदेह में हो तो मैं उस की इबादत (वंदना) कभी नहीं करूँगा जिस की इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा तुम करते हो। परन्तु मैं उस अल्लाह की इबादत (वंदना) करता हूँ जो तुम्हें मौत देता है। और मुझे आदेश दिया गया है कि ईमान वालों में रहूँ।
105. और यह कि अपने मुख को धर्म के लिये सीधा रखो एकेश्वरवादी हो कर। और कदापि मिश्रणवादियों में न रहो।
106. और अल्लाह के सिवा उसे न पुकारो जो आप को न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है। फिर यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

107. और यदि अल्लाह आप को कोई दुःख पहुँचाना चाहे तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और यदि आप को कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो कोई उस की भलाई को रोकने वाला नहीं। वह अपनी दया अपने भक्तों में से जिस पर चाहे करता है, तथा वह क्षमाशील दयावान् है।
108. (हे नबी!) कह दो कि हे लोगो! तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ गया है। अब जो सीधी डगर अपनाता हो तो उसी के लिये लाभदायक है। और जो कुपथ हो जाये तो उस का कुपथ उसी के लिये नाशकारी है। और मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ।
109. आप उसी का अनुसरण करें जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है। और धैर्य से काम लें, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और वह सर्वोत्तम निर्णयता है।

सूरह हूद - 11

यह सूरह मक्की है, इस में 123 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़, लाम, रा। यह पुस्तक है

जिस की आयतें सुदृढ़ की गयीं, फिर सविस्तार वर्णित की गयी हैं उस की ओर से जो तत्वज्ञ सर्वसूचित है।

2. कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (बंदना) न करो। वास्तव में, मैं उस की ओर से तुम को सचेत करने वाला तथा शुभसूचना देने वाला हूँ।
3. और यह कि अपने पालनहार से क्षमा याचना करो, फिर उसी की ओर ध्यान मग्न हो जाओ। वह तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अच्छा लाभ पहुँचायेगा। और प्रत्येक श्रेष्ठ को उस की श्रेष्ठता प्रदान करेगा। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।
4. अल्लाह ही की ओर तुम सब को पलटना है, और वह जो चाहे कर सकता है।
5. सुनो! यह लोग अपने सीनों को मोड़ते हैं, ताकि उस से छुप जायें सुनो! जिस समय वे अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँपते हैं, तब भी वह (अल्लाह) उन के छुपे को जानता है। तथा उन के खुले को भी। वास्तव में वह उसे भी भली भाँति जानने वाला है जो सीनों में (भेद) है।



6. और धरती में कोई चलने वाला नहीं है परन्तु उस की जीविका अल्लाह के ऊपर है। तथा वह उस के स्थायी स्थान तथा सौपने के स्थान को जानता है। सब कुछ एक खुली पुस्तक में अंकित है।
7. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति छः दिनों में की। उस समय उस का सिंहासन जल पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में किस का कर्म सब से उत्तम है। और (हे नबी!) यदि आप उन से कहें कि वास्तव में तुम सभी मरण के पश्चात् पुनः जीवित किये जाओगे तो जो काफिर हो गये अवश्य कह देंगे कि यह तो केवल खुला जादू है।
8. और यदि हम उन से यातना में किसी विशेष अवधि तक देर कर दें तो अवश्य कहेंगे कि उसे क्या चीज़ रोक रही है? सुन लो! वह जिस दिन उन पर आ जायेगी तो उन से फिरेगी नहीं। और उन्हें वह (यातना) घेर लेगी जिस की वह हँसी उड़ा रहे थे।
9. और यदि हम मनुष्य को अपनी कुछ दया चखा दें, फिर उस को उस से छीन लें, तो हताशा कृतघ्न हो जाता है।
10. और यदि हम उसे सुख चखा दें, दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कहेगा कि मेरा सब दुःख दूर हो गया। वास्तव में वह प्रफुल्ल हो कर अकड़ने लगता है।
11. परन्तु जिन्होंने धैर्य धारण किया और सुकर्म किये, तो उन के लिये क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।
12. तो (हे नबी!) संभवतः आप उस में कुछ को जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है, त्याग देने वाले हैं और इस के कारण आप का दिल सिकुड़ रहा है कि वह कहते हैं कि इस पर कोई कोष क्यों नहीं उतारा गया, या उस के साथ कोई फरिश्ता क्यों आया?? आप केवल सचेत करने वाले हैं। और अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ पर रक्षक है।
13. क्या वह कहते हैं कि उस ने इस (कुर्आन) को स्वयं बना लिया है? आप कह दें कि इसी के समान दस सूरतें बना लाओ, और अल्लाह के सिवा जिसे हो सके बुला लो, यदि तुम लोग सच्चे हो।
14. फिर यदि वह उत्तर न दें तो विश्वास कर लो कि उसे (कुर्आन को) अल्लाह के ज्ञान के साथ ही उतारा गया है। और यह कि कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही। तो क्या तुम मुस्लिम होते हो?
15. जो व्यक्ति संसारिक जीवन तथा उस की शोभा चाहता हो, हम उन के कर्मों का (फल) उसी में चुका देंगे। और उन के लिये (संसार में) कोई कमी नहीं की जायेगी।
16. यही वह लोग हैं जिन का परलोक में अग्नि के सिवा कोई भाग नहीं होगा। और उन्होंने जो कुछ किया वह व्यर्थ हो जायेगा, और वे जो कुछ कर रहे हैं असत्य सिद्ध होने वाला है।
17. तो क्या जो अपने पालनहार की ओर से स्पष्ट प्रमाण रखता हो, और

उस के साथ ही एक गवाह (साक्षी) भी उस की ओर से आ गया हो, और इस के पहले मूसा की पुस्तक मार्ग दर्शक तथा दया बन कर आ चुकी हो, ऐसे लोग तो इस(कुर्आन) पर ईमान रखते हैं। और संप्रदायों में से जो इसे अस्वीकार करेगा तो नरक ही उस का वचन स्थान है। अतः आप इस के बारे में किसी संदेह में न पड़ें। वास्तव में यह आप के पालनहार की ओर से सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

18. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे? वही लोग अपने पालनहार के समक्ष लाये जायेंगे, और साक्षी (फरिश्ते) कहेंगे कि इन्होंने ही अपने पालनहार पर झूठ बोलीं सुनो! अत्याचारियों पर अल्लाह की धिक्कार है।
19. वही लोग अल्लाह की राह से रोक रहे हैं, और उसे टेढ़ा बनाना चाहते हैं। वही परलोक को न मानने वाले हैं।
20. वह लोग धरती में विवश करने वाले नहीं थे। और न उन का अल्लाह के सिवा कोई सहायक था। उन के लिये दुगनी यातना होगी। वह न सुन सकते थे, न देख सकते थे।
21. उन्होंने ने ही स्वयं अपना विनाश कर लिया, और उन से वह बात खो गयी जो वे बना रहे थे।
22. यह आवश्यक है कि परलोक में यही सर्वाधिक विनाश में होंगे।
23. वास्तव में जो ईमान लाये, और सदाचार किये तथा अपने पालनहार की ओर आकर्षित हुये, वही स्वर्गीय

हैं। और वह उस में सदैव रहेंगे।

24. दोनों समुदाय की दशा ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो, और दूसरा देखने और सुनने वाला हो। तो क्या दोनों की दशा समान हो सकती है? क्या तुम (इस अन्तर को) नहीं समझते?
25. और हम ने नूह को उस की जाति की ओर रसूल बना कर भेजा। उन्होंने कहा वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये खुले रूप से सावधान करने वाला हूँ।
26. कि इबादत (वंदना) केवल अल्लाह ही की करो। मैं तुम्हारे ऊपर दुःख दायी दिन की यातना से डरता हूँ।
27. तो उन प्रमुखों ने जो उन की जाति में से काफिर हो गये, कहा: हम तो तुझे अपने ही जैसा मानव पुरुष देख रहे हैं। और हम देख रहे हैं कि तुम्हारा अनुसरण केवल वही लोग कर रहे हैं जो हम में नीचे हैं। वह भी बिना सोचे-समझे। और हम अपने ऊपर तुम्हारी कोई प्रधानता भी नहीं देखते, बल्कि हम तुम्हें झूठा समझते हैं।
28. उस (अथात् नूह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और मुझे उस ने अपने पास से एक दया प्रदान की हो, फिर वह तुम्हें सुझायी न दे, तो क्या हम उसे तुम से चिपका दें, जब कि तुम उसे नहीं चाहते?
29. और हे मेरी जाति के लोगों! मैं इस (सत्य के प्रचार) पर तुम से कोई धन

नहीं माँगता। मेरा बदला तो अल्लाह के ऊपर है। और मैं उन्हें (अपने यहाँ से) धुतकार नहीं सकता जो ईमान लाये हैं, निश्चय वे अपने पालनहार से मिलने वाले हैं, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम जाहिलों जैसी बातें कर रहे हो।

30. और हे मेरी जाति के लोगों! कौन अल्लाह की पकड़ से मुझे बचायेगा, यदि मैं उन को अपने पास से धुतकार दूँ? क्या तुम सोचते नहीं हो?

31. और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोषागार (खज़ाने) हैं। और न मैं गुप्त बातों का ज्ञान रखता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि मैं फरिश्ता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि जिन को तुम्हारी आँखें घृणा से देखती हैं अल्लाह उन्हें कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह अधिक जानता है जो कुछ उन के दिलों में है। यदि मैं ऐसा कहूँ तो निश्चय अत्याचारियों में हो जाऊँगा।

32. उन्होंने ने कहा: हे नूह! तू ने हम से झगड़ा किया और बहुत झगड़ लिया, अब वह (यातना) ला दो जिस की धमकी हमें देते हो यदि तुम सच्च बोलने वालों में हो।

33. उस ने कहा: उसे तो तुम्हारे पास अल्लाह ही लायेगा, यदि वह चाहेगा। और तुम (उसे) विवश करने वाले नहीं हो।

34. और मेरी शुभ चिन्ता तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती यदि मैं तुम्हारा हित चाहूँ जब कि अल्लाह तुम्हें कुपथ करना चाहता हो। और तुम उसी की ओर लोटाये जाओगे।

35. क्या वह कहते हैं कि उस ने यह बात स्वयं बना ली है? तुम कहो कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है, तो मेरा अपराध मुझी पर है, और मैं निर्दोष हूँ उस अपराध से जो तुम कर रहे हो।

36. और नूह की ओर बह्वी (प्रकाशना) की गयी कि तुम्हारी जाति में से ईमान नहीं लायेंगे, उन के सिवा जो ईमान ला चुके हैं। अतः उस से दुश्खी न बनो जो वह कर रहे हैं।

37. और हमारी आँखों के सामने हमारी बह्वी के अनुसार एक नाव बनाओ, और मुझ से उन के बारे में कुछ न कहना जिन्होंने ने अत्याचार किये हैं। वास्तव में वे डूबने वाले हैं।

38. और वह नाव बनाने लगा, और जब भी उस की जाति के प्रमुख उस के पास से गुज़रते, तो उस की हँसी उड़ाते। नूह ने कहा: यदि तुम हमारी हँसी उड़ाते हो तो हम भी ऐसे ही (एक दिन) तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे।

39. फिर तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर अपमान कारी यातना आयेगी। और स्थाई दुःख किस पर उतरेगा?

40. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया, और तबूब उबलने लगा तो हम ने (नूह से) कहा: उस में प्रत्येक प्रकार के जीवों के दो जोड़े रख लो। और अपने परिजनों को, उन के सिवा जिन के बारे में पहले बता दिया गया है, और जो ईमान लाये हैं। और उस के साथ थोड़े ही ईमान लाये थे।

41. और उस (नूह) ने कहा: इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम ही से इस का चलना तथा इसे रुकना

हैं। वास्तव में मेरा पालनहार बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

42. और वह उन्हें लिये पर्वत जैसी ऊँची लहरों में चलती रही। और नूह ने अपने पुत्र को पुकारा, जब कि वह उन से अलग था: हे मेरे पुत्र! मेरे साथ सवार हो जा, और काफ़िरोँ के साथ न रह।

43. उस ने कहा: मैं किसी पर्वत की ओर शरण ले लूँगा, जो मुझे जल से बचा लेगा। नूह ने कहा: आज अल्लाह के आदेश (यातना) से कोई बचाने वाला नहीं, परन्तु जिस पर वह (अल्लाह) दया कर दे। और दोनों के बीच एक लहर आड़े आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

44. और कहा गया: हे धरती! अपना जल निगल जा। और हे आकाश! तू थम जा। और जल उतर गया, और आदेश पूरा कर दिया गया, और नाव "जूदी" पर ठहर गई। और कहा गया कि अत्याचारियों के लिये (अल्लाह की दया से) दूरी है।

45. तथा नूह ने अपने पालनहार से प्रार्थना की, और कहा: मेरे पालनहार। मेरा पुत्र मेरे परिजनों में से है। निश्चय तेरा वचन सत्य है, तथा तू ही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

46. उस (अल्लाह) ने उत्तर दिया: वह तेरा परिजन नहीं। (क्योंकि) वह कुकर्मि है। अतः मुझ से उस चीज़ का प्रश्न न करो जिस का तुझे कोई ज्ञान नहीं। मैं तुझे बताता हूँ कि अज्ञानों में न हो जा।

47. नूह ने कहा: मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि मैं तुझ से

ऐसी चीज़ की मांग करूँ जिस (की वास्तविकता) का मुझे कोई ज्ञान नहीं है।⁽¹⁾ और यदि तू ने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझ पर दया न की तो मैं क्षतिग्रस्तों में हो जाऊँगा।

48. कहा गया कि हे नूह! उतर जा हमारी ओर से रक्षा और सम्पन्नता के साथ अपने ऊपर तथा तेरे साथ के समुदायों के ऊपर। और कुछ समुदाय ऐसे हैं जिन को हम संसारिक जीवन सामग्री प्रदान करेंगे, फिर उन्हें हमारी दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

49. यह ग़ैब की बातें हैं जिन्हें (हे नबी!) हम आप की ओर प्रकाशना (बह्यी) कर रहे हैं। इस से पूर्व न तो आप इन्हें जानते थे और न आप की जाति। अतः आप सहन करें। वास्तव में अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

50. और "आद" (जाति) की ओर उन के भाई हूद को भेजा उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (बंदना) करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम इस के सिवा कुछ नहीं हो कि झूठी बातें घड़ने वाले हो।

51. हे मेरी जाति के लोगो! मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं चाहता। मेरा पारिश्रमिक बदला उसी (अल्लाह) पर है जिस ने मुझे पैदा किया है। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते।

52. हे मेरी जाति के लोगो! अपने पालनहार से क्षमा माँगो। फिर उस की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वह

- आकाश से तुम पर धारा प्रवाह वर्षा करेगा। और तुम्हारी शक्ति में अधिक शक्ति प्रदान करेगा। और अपराधी हो कर मुँह न फेरो।
53. उन्होंने ने कहा: हे हूद! तुम हमारे पास कोई स्पष्ट (खुला) प्रमाण नहीं लाये। तथा हम तुम्हारी बात के कारण अपने पूज्यों को त्यागने वाले नहीं हैं, और न हम तुम्हारा विश्वास करने वाले हैं।
54. हम तो यही कहेंगे कि तुझे हमारे किसी देवता ने बुराई के साथ पकड़ लिया है। हूद ने कहा: मैं अल्लाह को (गवाह) बनाता हूँ, और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उस शिकं (मिश्रणवाद) से विरक्त हूँ जो तुम कर रहे हो।
55. उस (अल्लाह) के सिवा। तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध षडयंत्र रच लो, फिर मुझे कुछ भी अवसर न दो।
56. वास्तव में, मैं ने अल्लाह पर जो मेरा पालनहार और तुम्हारा पालनहार है, भरोसा किया है। कोई चलने वाला जीव ऐसा नहीं जो उस के अधिकार में न हो, वास्तव में मेरा पालनहार सीधी राह पर है।
57. फिर यदि तुम विमुख रह गये तो मैं ने तुम्हें वह उपदेश पहुँचा दिया है जिस के साथ मुझे भेजा गया है। और मेरा पालनहार तुम्हारा स्थान तुम्हारे सिवा किसी और जाति को दे देगा। और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुँचा सकोगे, वास्तव में मेरा पालनहार प्रत्येक चीज़ का रक्षक है।
58. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उन को जो उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से बचा लिया, और हम ने उन को घोर यातना से बचा लिया।
59. वही (जाति) "आद" है, जिस ने अपने पालनहार की आयतों (निशानियों) का इन्कार किया, और उस के रसूलों की बात नहीं मानी, और प्रत्येक सच्च के विरोधी के पीछे चलते रहे।
60. और इस संसार में धिक्कार उन के साथ लगा दी गई। तथा प्रलय के दिन भी लगी रहेगी। सुनो! आद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुनो! हूद की जाति: आद के लिये दूरी हो।
61. और समूद की ओर उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (बंदना) करो उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। उसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया, और तुम को उस में बसा दिया, अतः उस से क्षमा माँगो और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ, वास्तव में मेरा पालनहार समीप है (और दुआयें) स्वीकार करने वाला है।
62. उन्होंने ने कहा: हे सालेह! हमारे बीच इस से पहले तुझ से बड़ी आशा थी, क्या तू हमें इस बात से रोक रहा है कि हम उस की पूजा करें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? तू जिस चीज़ (एकेश्वरवाद) की ओर बुला रहा है, वास्तव में उस के बारे में हमें संदेह है, जिस में हमें द्विधा है।

63. उस (सालेह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम ने विचार किया कि यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट खुले प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी दया प्रदान की हो, तो कौन है जो अल्लाह के मुकाबले में मेरी सहायता करेगा, यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ? तुम मुझे घाटे में डालने के सिवा कुछ नहीं दे सकते।
64. और हे मेरी जाति के लोगो! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है तो इसे छोड़ दो, अल्लाह की धरती में चरती फिरे। और उसे कोई दुश्ख न पहुँचाओ, अन्यथा तुम्हें तुरन्त यातना पकड़ लेगी।
65. तो उन्होंने उसे मार डाला। तब सालेह ने कहा: तुम अपने नगर में तीन दिन और आनन्द ले लो। यह वचन झूठा नहीं है।
66. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने सालेह को और जो लोग उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से और उस दिन के अपमान से बचा लिया। वास्तव में आप का पालनहार ही शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।
67. और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया, और अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।
68. जैसे वह वहाँ कभी बसे ही नहीं थे। सावधान! समूद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुन लो, समूद के लिये दूरी हो।
69. और हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास

शुभसूचना ले कर आये। उन्होंने सलाम किया तो उस ने उत्तर में सलाम किया। फिर देर न हुई कि वह एक भुना हुआ बछड़ा ले आये।

70. फिर जब देखा कि उन के हाथ उस की ओर नहीं बढ़ते तो उन की ओर से संशय में पड़ गया। और उन से दिल में भय का अनुभव किया। उन्होंने कहा: भय न करो। हम लूत की जाति की ओर भेजे गये हैं।
71. और उस (इब्राहीम) की पत्नी खड़ी हो कर सुन रही थी। तो वह हँस पड़ी, तो उसे हम ने इसहाक (के जन्म) की शुभ सूचना दी। और इसहाक के पश्चात् याकूब की।
72. वह बोली: हाय मेरा दुर्भाग्य! क्या मेरी संतान होगी, जब कि मैं बुढ़िया हूँ, और मेरा यह पति भी बूढ़ा है? वास्तव में यह बड़े आश्चर्य की बात है।
73. फ़रिश्तों ने कहा: क्या तू अल्लाह के आदेश से आश्चर्य करती है? हे घर वालों! तुम सब पर अल्लाह की दया तथा सम्पन्नता है, निःसंदेह वह अति प्रशंसित श्रेष्ठ है।
74. फिर जब इब्राहीम से भय दूर हो गया और उसे शुभ सूचना मिल गयी तो वह लूत की जाति के बारे में हम से आग्रह करने लगा।
75. वास्तव में इब्राहीम बड़ा सहनशील, कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर ध्यानमग्न रहने वाला था।
76. (फ़रिश्तों ने कहा): हे इब्राहीम! इस बात को छोड़ो, वास्तव में तेरे पालनहार का आदेश आ गया है,

तथा उन पर ऐसी यातना आने वाली है जो टलने वाली नहीं है।

77. और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये तो उन का आना उसे बुरा लगा। और उन के कारण व्याकुल हो गया। और कहा: यह तो बड़ी विपत्ता का दिन है।
78. और उस की जाति के लोग दौड़ते हुये उस के पास आ गये और इस से पूर्व वह कुकर्म किया करते थे। लूत ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! यह मेरी पुत्रियाँ हैं, वह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र हैं, अतः अल्लाह से डरो, और मेरे अतिथियों के बारे में मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में कोई भला मनुष्य नहीं है।
79. उन लोगों ने कहा: तुम तो जानते ही हो कि हमारा तेरी पुत्रियों में कोई अधिकार नहीं। तथा वास्तव में तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।
80. उस (लूत) ने कहा: काश मेरे पास बल होता! या कोई दृढ़ सहारा होता जिस की शरण लेता!
81. फ़रिश्तों ने कहा: हे लूत! हम तेरे पालनहार के भेजे हुये (फ़रिश्ते) हैं। वह कदापि तुझ तक नहीं पहुँच सकेंगे, जब कुछ रात रह जाये तो अपने परिवार के साथ निकल जा, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। परन्तु तेरी पत्नी (साथ नहीं जायेगी)। उस पर भी वही बीतने वाला है जो उन पर बीतेगा। उन की यातना का निर्धारित समय प्रातः काल है। क्या प्रातः काल समीप नहीं है?
82. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो

हम ने उस बस्ती को तहस नहस कर दिया। और उन पर पकी हुई कंकरियों की बारिश कर दी।

83. जो तेरे पालनहार के यहाँ चिन्ह लगायी हुयी थीं। और वह (बस्ती) अत्याचारियों से कोई दूर नहीं है।
84. और मदन की ओर उन के भाई शुऐब को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो। उस के सिवा कोई तुम्हारा पूज्य नहीं है। और नाप तौल में कमी न करो। मैं तुम्हें सम्पन्न देख रहा हूँ। इसलिये मुझे डर है कि तुम्हें कही यातना न घेर ले।
85. हे मेरी जाति के लोगो! नाप तौल न्यायपूर्वक पूरा करो, और लोगों को उन की चीज़ें कम न दो, तथा धरती में उपद्रव फैलाते न फिरो।
86. अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिये अच्छी है, यदि तुम ईमान वाले हो। और मैं तुम पर कोई रक्षक नहीं हूँ।
87. उन्होंने ने कहा: हे शुऐब। क्या तेरी नमाज़ (इबादत) तुझे आदेश दे रही है कि हम उसे त्याग दें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? अथवा अपने धनों में जो चाहें करें? वास्तव में तू बड़ा ही सहनशील तथा भला व्यक्ति है!
88. शुऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम बताओ यदि मैं अपने पालनहार की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अच्छी जीविका प्रदान की हो (तो कैसे तुम्हारा साथ दूँ?) मैं नहीं चाहता कि

उस के विरुद्ध करूँ, जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ। मैं जहाँ तक हो सके सुधार ही चाहता हूँ और यह जो कुछ करना चाहता हूँ, अब्राहम के योगदान पर निर्भर करता हूँ। मैं ने उसी पर भरोसा किया है, और उसी की ओर ध्यानमग्न रहता हूँ।

89. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हें मेरा विरोध इस बात पर न उभार दे कि तुम पर वही यातना आ पड़े जो नूह की जाति या हूद की जाति अथवा सालेह की जाति पर आई। और लूत की जाति तुम से कुछ दूर नहीं है।
90. और अपने पालनहार से क्षमा माँगो, फिर उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वास्तव में मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा प्रेम करने वाला है।
91. उन्होंने ने कहा: हे शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बात हम नहीं समझते। और हम तुम्हें अपने बीच निर्बल देख रहे हैं। और यदि भाई बन्धु न होते तो हम तुम को पथराव कर के मार डालते। और तुम हम पर कोई भारी तो नहीं हो।
92. शुऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! क्या मेरे भाई बन्धु तुम पर अब्राहम से अधिक भारी है? कि तुम ने उसे पीठ पीछे डाल दिया है? निश्चय मेरा पालनहार उसे (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है जो तुम कर रहे हो।
93. और हे मेरी जाति के लोगो! तुम अपने स्थान पर काम करो, मैं (अपने स्थान पर) काम कर रहा हूँ। तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर ऐसी यातना आयेगी जो उसे

अपमानित कर दे। तथा कौन झूठा है? तुम प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वाला हूँ।

94. और जब हमारा आदेश आ गया, तो हमने शुऐब को, और जो उस के साथ ईमान लाये थे, अपनी दया से बचा लिया। और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनी ने पकड़ लिया। फिर वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गये।
95. जैसे वह कभी उन में बसे ही न रहे हों। सुन लो! मद्यन वाले भी वैसे ही दूर फेंक दिये गये जैसे समूद दूर फेंक दिये गये।
96. और हम ने मूसा को अपनी निशानियों (चमत्कार), तथा खुले तर्क के साथ भेजा।
97. फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उन्होंने ने फिरऔन की आज्ञा का अनुसरण (पालन) किया। जब कि फिरऔन की आज्ञा सुधरी हुई न थी।
98. वह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा, और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है?
99. और वे धिक्कार के पीछे लगा दिये गये इस संसार में भी और प्रलय के दिन भी। कैसा बुरा पुरस्कार है जो उन्हें दिया जायेगा?
100. हे नबी! यह उन बस्तियों के समाचार है जिन का वर्णन हम आप से कर रहे हैं। उन में से कुछ निर्जन खड़ी और कुछ उजड़ चुकी हैं।
101. और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु उन्होंने स्वयं अपने

ऊपर अत्याचार किया। तो उन के वे पूज्य जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, उन के कुछ काम नहीं आये, जब आप के पालनहार का आदेश आ गया, और उन्होंने ने उन को हानि पहुँचाने के सिवा और कुछ नहीं किया।

102. और इसी प्रकार तेरे पालनहार की पकड़ होती है, जब वह किसी अत्याचार करने वालों की, बस्ती को पकड़ता है। निश्चय उस की पकड़ दुःखदायी और कड़ी होती है।
103. निश्चय इस में एक निशानी है, उस के लिये जो परलोक की यातना से डरे। वह ऐसा दिन होगा जिस के लिये सभी लोग एकत्रित होंगे, तथा उस दिन सब उपस्थित होंगे।
104. और हम उसे केवल एक निर्धारित अवधि के लिये देर कर रहे हैं।
105. जब वह दिन आ जायेगा तो अल्लाह की अनुमति बिना कोई प्राणी बात नहीं करेगा, फिर उन में से कुछ आभागे होंगे और कुछ भाग्यवान होंगे।
106. फिर जो भाग्यहीन होंगे, वही नरक में होंगे, उन्हीं की उस में चीख और पुकार होगी।
107. वे उस में सदावासी होंगे, जब तक आकाश तथा धरती अवस्थित हैं। परन्तु यह कि आप का पालनहार कुछ और चाहे। वास्तव में आप का पालनहार जो चाहे कर देने वाला है।
108. और जो भाग्यवान है, वह स्वर्ग ही में सदैव रहेंगे, जब तक आकाश

तथा धरती स्थित हैं। परन्तु आप का पालनहार कुछ और चाहे, यह प्रदान है अनवरत (निरन्तर)।

109. अतः (हे नबी!) आप उस के बारे में किसी संदेह में न हों जिसे वे पूजते हैं। वे उसी प्रकार पूजते हैं जैसे इस से पहले इन के बाप दादा पूजते रहे हैं। वस्तुतः हम उन्हें उन का बिना किसी कमी के पूरा भाग देने वाले हैं।
110. और हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की। तो उस में विभेद किया गया। और यदि आप के पालनहार ने पहले से एक बात निश्चित न की होती तो उन के बीच निर्णय कर दिया गया होता, और वास्तव में वे उस के बारे में संदेह और शंका में हैं।
111. और प्रत्येक को आप का पालनहार अवश्य उन के कर्मों का पूरा बदला देगा। क्योंकि वह उन के कर्मों से सूचित है।
112. अतः (हे नबी!) जैसे आप को आदेश दिया गया है, उस पर सुदृढ़ रहिये। और वह भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा याचना) कर के हो लिये हैं। और सीमा का उल्लंघन न करो क्योंकि वह (अल्लाह) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।
113. और अत्याचारियों की ओर न झुक पड़ो। अन्यथा तुम्हें भी अग्नि स्पर्श कर लेगी। और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई सहायक नहीं, फिर तुम्हारी सहायता नहीं की जायेगी।

114. तथा आप नमाज़ की स्थापना करें, दिन के सीरों पर और कुछ रात बीतने पर। वास्तव में सदाचार दुराचारों को दूर कर देते हैं। यह एक शिक्षा है, शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।
115. तथा आप धैर्य से काम लें, क्योंकि अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।
116. तो तुम से पहले युगों में ऐसे सदाचारी क्यों नहीं हुये जो धरती में उपद्रव करने से रोकते? परन्तु ऐसा बहुत थोड़े युगों में हुआ, जिन्हें हम ने बचा दिया, और अत्याचारी उस स्वाद के पीछे पड़े रहे, जो धन-धान्य दिये गये थे। और वह अपराधि बन कर रहे।
117. और आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अत्याचार से ध्वस्त कर दे, जब कि उन के वासी सुधारक हों।
118. और यदि आप का पालनहार चाहता तो सब लोगों को एक समुदाय बना देता। और वह सदा विचार विरोधी रहेंगे।
119. परन्तु जिस पर आप का पालनहार दया कर दे, और इसी के लिये उन्हें पैदा किया है। और आप के पालनहार की बात पूरी हो गयी कि मैं नरक को सब जिन्नों तथा मानवों से अवश्य भर दूँगा।
120. और (हे नबी!) यह नबियों की सब कथाएँ हम आप को सुना रहे हैं, जिन के द्वारा आप के दिल को सुदृढ़

कर दें, और इस विषय में आप के पास सत्य आ गया। और ईमान वालों के लिये एक शिक्षा और चेतावनी है।

121. और (हे नबी!) आप उन से कह दें, जो ईमान नहीं लाते कि तुम अपने स्थान पर काम करते रहो। हम अपने स्थान पर काम करते हैं।
122. तथा तुम प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा करने वाले हैं।
123. अल्लाह ही के अधिकार में आकाशों तथा धरती की छिपी हुई चीज़ों का ज्ञान है, और प्रत्येक विषय उसी की ओर लौटाये जाते हैं। अतः आप उसी की इबादत (वंदना) करें, और उसी पर निर्भर रहें। आप का पालनहार उस से अचेत नहीं है जो तुम कर रहे हो।

सूरह यूसुफ़ - 12

सूरह यूसुफ़ के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

- 1 अलिफ़, लाम, रा। यह खुली पुस्तक की आयतें हैं।
2. हम ने इस कुर्आन को अर्बी में उतारा है, ताकि तुम समझो।
3. (हे नबी!) हम बहुत अच्छी शैली में आप की ओर इस कुर्आन की वही द्वारा आप से इस कथा का वर्णन कर रहे हैं। अन्यथा आप (भी) इस से पूर्व (इस से) असूचित थे।

4. जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा: हे मेरे पिता! मैं ने स्वप्न देखा है कि ग्यारह सितारे, सूर्य तथा चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं।
5. उस ने कहा: हे मेरे पुत्र! अपना स्वप्न अपने भाईयों को न बताना अन्यथा वह तेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचेंगे। वास्तव में शैतान मानव को खुला शत्रु है।
6. और ऐसा ही होगा, तेरा पालनहार तुझे चुन लेगा, तथा तुझे बातों का अर्थ सिखायेगा और तुझ पर और याकूब के घराने पर अपना पुरस्कार पूरा करेगा। जैसे इस से पहले तेरे पूर्वजों इब्राहीम और इसहाक़ पर पूरा किया। वास्तव में तेरा पालनहार बड़ा ज्ञानी तथा गुणी है।
7. वास्तव में यूसुफ़ और उस के भाईयों (की कथा) में पूछने वालों के लिये कई निशानियाँ हैं।
8. जब उन (भाईयों) ने कहा: यूसुफ़ और उस का भाई हमारे पिता को हम से अधिक प्रिय है। जब कि हम एक गिरोह हैं। वास्तव में हमारे पिता खुली गुमराही में हैं।
9. यूसुफ़ को बध कर दो, या उसे किसी धरती में फेंक दो। इस से तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी तरफ़ हो जायेगा। और इस के पश्चात् पवित्र बन जाओ।
10. उन में से एक ने कहा: यूसुफ़ को बध न करो, उसे किसी अंधे कुएं में डाल दो, उसे कोई काफ़िला निकाल ले जायेगा, यदि कुछ करने वाले हो।
11. उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! क्या बात है कि यूसुफ़ के विषय में आप हम पर भरोसा नहीं करते? जब कि हम उस के शुभचिन्तक हैं।
12. उसे कल हमारे साथ (बन में) भेज दें। वह खाये पिये और खेले कूदे। और हम उस के रक्षक (प्रहरी) हैं।
13. उस (पिता) ने कहा। मुझे बड़ी चिन्ता इस बात की है कि तुम उसे ले जाओ। और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया न खा जाये। और तुम उस से असावधान रह जाओ।
14. सब (भाईयों) ने कहा: यदि उसे भेड़िया खा गया, जब कि हम एक गिरोह हैं, तो वास्तव में हम बड़े विनाश में हैं।
15. फिर जब वे उसे ले गये, और निश्चय किया कि उसे अंधे कुएं में डाल दें, और हम ने उस (यूसुफ़) की ओर वही की कि तुम अवश्य इन को उन का कर्म बताओगे, और वह कुछ जानते न होंगे।
16. और वह संध्या को रोते हुये अपने पिता के पास आये।
17. सब ने कहा: हे पिता! हम आपस में दौड़ करने लगे। और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया। और उसे भेड़िया खा गया। और आप तो हमारा विश्वास करने वाले नहीं हैं, यद्यपि हम सच्च ही क्यों न बोल रहे हों।
18. और वह यूसुफ़ के कुर्ते पर झूठा रक्त^[1] लगा कर लाया। उस ने कहा: बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिये एक सुन्दर बात बना ली है। तो अब धैर्य धारण करना ही उत्तम है। और उस

- के संबन्ध में जो बात तुम बना रहे हो अल्लाह ही से सहायता माँगनी है।
19. और एक काफ़िला आया। उस ने अपने पानी भरने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल डाला, तो पुकारा: शुभ हो! यह तो एक बालक है। और उसे व्यापारिक सामग्री समझ कर छुपा लिया। और अल्लाह भली भाँति जानने वाला था जो वे कर रहे थे।
20. और उसे तनिक मूल्य कुछ गिनती के दरहमों में बेच दिया। और वे उस के बारे में कुछ अधिक की इच्छा नहीं रखते थे।
21. और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा, उस ने अपनी पत्नी से कहा: उस को आदर-मान से रखो। संभव है यह हमें लाभ पहुँचाये, अथवा हम उसे अपना पुत्र बना लें। इस प्रकार उस को हम ने स्थान दिया। और ताकि उसे बातों का अर्थ सिखायें। और अल्लाह अपना आदेश पूरा कर के रहता है। परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।
22. और जब वह जवानी को पहुँचा, तो हम ने उसे निर्णय करने की शक्ति तथा ज्ञान प्रदान किया। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल (बदला) देते हैं।
23. और वह जिस स्त्री के घर में था, उस ने उस के मन को रिझाया, और द्वार बन्द कर लिये, और बोली: "आ जाओ।" उस ने कहा: अल्लाह की शरण! वह मेरा स्वामी है। उस ने मुझे अच्छा स्थान दिया है। वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होते।
24. और उस स्त्री ने उस की इच्छा की। और वह (यूसुफ़) भी उस की इच्छा करते, यदि अपने पालनहार का प्रमाण न देख लेते। इस प्रकार हम ने (उसे सावधान) किया ताकि उस से बुराई तथा निर्लज्जा को दूर कर दें। वास्तव में वह हमारे शुद्ध भक्तों में था।
25. और दोनों द्वार की ओर दौड़े। और उस स्त्री ने उस का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उस के पति को द्वार के पास पाया। उस (स्त्री) ने कहा: जिस ने तेरी पत्नी के साथ बुराई का निश्चय किया, उस का दण्ड इस के सिवा क्या है कि उसे बंदी बना दिया जाये अथवा उसे दुःखदायी यातना (दी जाये)?
26. उस ने कहा: इसी ने मुझे रिझाना चाहा था। और उस स्त्री के घराने से एक साक्षी ने साक्ष्य दिया कि यदि उस का कुर्ता आगे से फाड़ा गया है तो वह सच्ची है, तथा वह झूठा है।
27. और यदि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो वह झूठी और वह (यूसुफ़) सच्चा है।
28. फिर जब उस (पति) ने देखा कि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो कहा: वास्तव में यह तुम स्त्रियों की चालें हैं और तुम्हारी चालें बड़ी घोर होती हैं।
29. हे यूसुफ़! तुम इस बात को जाने दो। और (हे स्त्री!) तू अपने पाप की क्षमा माँग, वास्तव में तू पापियों में से है।
30. नगर की कुछ स्त्रियों ने कहा: अजीज़ (प्रमुख अधिकारी) की पत्नी अपने दास को रिझा रही है। उसे प्रेम ने

मुग्ध कर दिया है। हमारे विचार में वह खुली गुमराही में है।

31. फिर जब उस ने उन स्त्रियों की मक्कार की बात सुनी तो उन्हें बुला भेजा। और उन के (आतिथ्य) के लिये गाव तकिये लगवाये और प्रत्येक स्त्री को एक छुरी दे दी।^[1] उस ने (यूसुफ से) कहा: इन के समक्ष "निकल आ"। फिर जब उन स्त्रियों ने उसे देखा तो चकित (दंग) हो कर अपने हाथ काट बैठी, तथा पुकार उठी: अल्लाह पवित्र है! यह मनुष्य नहीं, यह तो कोई सम्मानित फरिश्ता है।
32. उस ने कहा: यही वह है, जिस के बारे में तुम ने मेरी निन्दा की है। वास्तव में मैं ने ही उसे रिझाया था। मगर वह बच निकला और यदि वह मेरी बात न मानेगा तो अवश्य बंदी बना दिया जायेगा, और अपमानितों में हो जायेगा।
33. यूसुफ ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे कैद उस से अधिक प्रिय है जिस की ओर यह औरतें मुझे बुला रही हैं। और यदि तू ने मुझ से इन के छल को दूर नहीं किया तो मैं उन की ओर झुक पड़ूँगा। और अज्ञानों में से हो जाऊँगा।
34. तो उस के पालनहार ने उस की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। और उस से उन के छल को दूर कर दिया। वास्तव में वह बड़ा सुनने जानने वाला है।
35. फिर उन लोगों ने उचित समझा, इस के पश्चात् कि निशानियाँ देख लीं, कि उस (यूसुफ) को एक अवधि तक के लिये बंदी बना दें।
36. और उस के साथ कैद में दो युवकों

ने प्रवेश किया। उन में से एक ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि शराब निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि अपने सिर के उपर रोटी उठाये हुये हूँ, जिस में से पक्षी खा रहे हैं। हमें इस का अर्थ (स्वप्नफल) बता दो। हम देख रहे हैं कि तुम सदाचारियों में से हो।

37. यूसुफ ने कहा: तुम्हारे पास तुम्हारा वह भोजन नहीं आयेगा जो तुम दोनों को दिया जाता है परन्तु मैं तुम दोनों को उस का अर्थ (फल) बता दूँगा। यह उन बातों में से है जो मेरे पालनहार ने मुझे सिखायी है। मैं ने उस जाति का धर्म तज दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती। और वही परलोक को नकारने वाले हैं।
38. और अपने पूर्वजों इब्राहीम तथा इसहाक और याकूब के धर्म का अनुसरण किया है। हमारे लिये वैध नहीं कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझी बनायें। यह अल्लाह की दया है हम पर और लोगों पर। परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते।
39. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! क्या विभिन्न पूज्य उत्तम है, या एक प्रभुत्वशाली अल्लाह?।
40. तुम अल्लाह के सिवा जिस की इबादत (वंदना) करते हो वह केवल नाम है, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं। अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण नहीं उतारा है। शासन तो केवल अल्लाह का है। उस ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो। यही सीधा धर्म

हैं। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते हैं।

41. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! रहा तुम में से एक तो वह अपने स्वामी को शराब पिलायेगा। तथा दूसरा, तो उस को फाँसी दी जायेगी, और पक्षी उस के सिर में से खायेंगे। उस का निर्णय कर दिया गया है जिस के संबन्ध में तुम दोनों प्रश्न कर रहे थे।
42. और उस से कहा जिसे समझा कि वह उन दोनों में से मुक्त होने वाला है: मेरी चर्चा अपने स्वामी के पास कर देना। तो शैतान ने उसे अपने स्वामी के पास उस की चर्चा करने को भुला दिया। अतः वह (यूसुफ़) कई वर्ष कैद में रह गया।
43. और (एक दिन) राजा ने कहा: मैं सात मोटी गायों को सपने में देखता हूँ जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सात सूखी हैं। हे प्रमुखो! मुझे मेरे स्वप्न के संबन्ध में बताओ, यदि तुम स्वप्न फल बता सकते हो?
44. सब ने कहा: यह तो उलझे स्वप्न की बातें हैं। और हम ऐसे स्वप्नों का अर्थ (फल) नहीं जानते।
45. और उस ने कहा जो दोनों में से मुक्त हुआ था, और उसे एक अवधि के पश्चात् बात याद आयी: मैं तुम्हें इस का फल (अर्थ) बता दूँगा, तुम मुझे भेज दो।
46. हे यूसुफ़! हे सत्यवादी! हमें सात मोटी गायों के बारे में बताओ, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं, और सात

सूखी, ताकि लोगों के पास वापिस जाऊँ, और ताकि वह जान लें।

47. यूसुफ़ ने कहा: तुम सात वर्ष निरन्तर खेती करते रहोगे। तो जो कुछ काटो उसे उस की बाली में छोड़ दो, परन्तु थोड़ा जिसे खाओगे। (उसे बालों से निकाल लो।)
48. फिर इस के पश्चात् सात कड़े (आकाल के) वर्ष होंगे। जो उसे खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये पहले से रखा है, परन्तु उस में से थोड़ा जिसे तुम सुरक्षित रखोगे।
49. फिर इस के पश्चात् एक ऐसा वर्ष आयेगा जिस में लोगों पर जल बरसाया जायेगा, तथा उसी में (रस) निचोड़ेंगे।
50. और राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ। और जब यूसुफ़ के पास भेजा हुआ आया, तो आप ने उस से कहा कि अपने स्वामी के पास वापिस जाओ, और उस से पछो कि उन स्त्रियों की क्या दशा है जिन्होंने ने अपने हाथ काट लिये थे? वास्तव में मेरा पालनहार उन स्त्रियों के छल से भलि-भाति अवगत है।
51. (राजा) ने उन स्त्रियों से पूछा: तुम्हारा क्या अनुभव है, उस समय का जब तुम ने यूसुफ़ के मन को रिझाया? सब ने कहा: अल्लाह पवित्र है! उस पर हम ने कोई बुराई का प्रभाव नहीं जाना। तब अजीज़ की पत्नी बोल उठी: अब सत्य उजागर हो गया, वास्तव में मैं ने ही उस के मन को रिझाया था, और निःसंदेह वह सत्वादियों में है।

52. यह (यूसुफ़) ने इस लिये किया,
ताकि उसे (अज़ीज़ को) विश्वास हो
जाये कि मैं ने गुप्त रूप से उस के

साथ विश्वास घात नहीं किया। और
वस्तुतः अल्लाह विश्वास घातियों से
प्रेम नहीं करता।



53. और मैं अपने मन को निर्दोष नहीं कहता, मन तो बुराई पर उभारता है। परन्तु जिस पर मेरा पालनहार दया कर दे। मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा दयावान् है।
54. राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ, उसे मैं अपने लिये विशेष कर लूँ। और जब उस (यूसुफ) से बात की, तो कहा: वस्तुतः तू आज हमारे पास आदरणीय भरोसा करने योग्य है।
55. उस (यूसुफ) ने कहा: मुझे देश का कोषाधिकारी बना दीजिये। वास्तव में मैं रखवाला बड़ा ज्ञानी हूँ।
56. और इस प्रकार हम ने यूसुफ को उस धरती (देश) में अधिकार दिया, वह उस में जहाँ चाहे रहे। हम अपनी दया जिसे चाहें प्रदान करते हैं, और सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करते।
57. और निश्चय परलोक का प्रतिफल उन लोगों के लिये उत्तम है, जो ईमान लाये, और अल्लाह से डरते रहे।
58. और यूसुफ के भाई आये, तथा उस के पास उपस्थित हुये, और उस ने उन्हें पहचान लिया, तथा वह उस से अपरिचित रह गये।
59. और जब उन का सामान तय्यार कर दिया तो कहा: अपने सौतीले भाई को लाना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं पूरा माप देता हूँ, तथा उत्तम अतिथि सत्कार करने वाला हूँ।
60. फिर यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाये तो मेरे यहाँ तुम्हारे लिये कोई माप नहीं, और न तुम मेरे समीप होगे।
61. वह बोले: हम उस के पिता को इस की प्रेरणा देंगे, और हम अवश्य ऐसा करने वाले हैं।
62. और यूसुफ ने अपने सेवकों को आदेश दिया: उन का मूलधन उन की बोरियों में रख दो, संभवतः वह उसे पहचान लें जब अपने परिजनों में जायें और संभवतः वापिस आयें।
63. फिर जब अपने पिता के पास लौट कर गये तो कहा: हमारे पिता! हम से भविष्य में (अन्न) रोक दिया गया है। अतः हमारे साथ हमारे भाई को भेजें कि हम सब अन्न (गन्ना) लायें, और हम उस के रक्षक हैं।
64. उस (पिता) ने कहा: क्या मैं उस के लिये तुम पर ऐसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस के पहले उस के भाई (यूसुफ) के बारे में विश्वास कर चुका हूँ तो अल्लाह ही उत्तम रक्षक और वही सर्वाधिक दयावान् है।
65. और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला, तो पाया कि उन का मूलधन उन्हें फेर दिया गया है, उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! हमें और क्या चाहिये? यह हमारा धन हमें फेर दिया गया है? हम अपने घराने के लिये गन्ने (अन्न) लायेंगे, और एक ऊँट का बोझ अधिक लायेंगे, यह माप (अन्न) बहुत थोड़ा है।
66. उस (पिता) ने कहा: मैं कदापि उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा, यहाँ तक कि अल्लाह के नाम पर मुझे दृढ़ वचन दो कि उसे मेरे पास अवश्य लाओगे, परन्तु यह कि तुम को घेर लिया जायें और जब उन्होंने ने अपना दृढ़ वचन दिया तो कहा, अल्लाह ही तुम्हारी

बात (वचन) का निरीक्षक है।

67. और (जब वह जाने लगे) तो उस (पिता) ने कहा: हे मेरे पुत्रों! तुम एक द्वार से (मिस्र में) प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना। और मैं तुम्हें किसी चीज़ से नहीं बचा सकता जो अल्लाह की ओर से हो। और आदेश तो अल्लाह का चलता है, मैं ने उसी पर भरोसा किया, तथा उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिये।
68. और जब उन्होंने (मिस्र में) प्रवेश किया जैसे उन के पिता ने आदेश दिया था तो ऐसा नहीं हुआ कि वह उन्हें अल्लाह से कुछ बचा सके। परन्तु यह याकूब के दिल में एक विचार उत्पन्न हुआ, जिसे उस ने पूरा कर लिया। और वास्तव में वह उस का ज्ञानी था जो ज्ञान हम ने उसे दिया था। परन्तु अधिकांश लोग इस (की वास्तविकता) का ज्ञान नहीं रखते।
69. और जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने भाई को अपनी शरण में ले लिया। (और उस से) कहा: मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ। अतः उस से उदासीन न हो जो (दुर्व्यवहार) वह करते आ रहे हैं।
70. फिर जब उस (यूसुफ़) ने उन का सामान तय्यार करा दिया तो प्याला अपने भाई के सामान में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा: हे क़ाफ़िले वालो! तुम लोग तो चोर हो।
71. उन्होंने फिर कर कहा: तुम क्या खो रहे हो।
72. उन (कर्मचारियों) ने कहा: हमें राजा

का प्याला नहीं मिल रहा है। और जो उसे ला दे उस के लिये एक ऊँट का बोझ है और मैं उस का प्रतिभू¹¹ हूँ।

73. उन्होंने ने कहा: तुम जानते हो कि हम इस देश में उपद्रव करने नहीं आये हैं, और न हम चोर ही हैं।
74. उन लोगों ने कहा। तो यदि तुम झूठे निकले तो उस का दण्ड क्या होगा?
75. उन्होंने ने कहा: उस का दण्ड वही होगा जिस के सामान में पाया जाये, वही उस का दण्ड होगा। इसी प्रकार हम अत्याचारियों को दण्ड देते हैं।
76. फिर उस ने खोज का आरंभ उस (यूसुफ़) के भाई की बोरी से पहले उन की बोरियों से किया। फिर उस को उस (बिन्यामीन) की बोरी से निकाल लिया। इस प्रकार हम ने यूसुफ़ के लिये उपाय किया। वह राजा के नियमानुसार अपने भाई को नहीं रख सकता था, परन्तु यह कि अल्लाह चाहता। हम जिस का चाहें मान सम्मान ऊँचा कर देते हैं। और वह प्रत्येक ज्ञानी से ऊपर एक बड़ा ज्ञानी है।
77. उन भाईयों ने कहा: यदि उस ने चोरी की है तो उस का एक भाई भी इस से पहले चोरी कर चुका है। तो यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में छुपा ली। और उसे उन के लिये प्रकट नहीं किया। (यूसुफ़ ने) कहा: सब से बुरा स्थान तुम्हारा है। और अल्लाह उसे अधिक जानता है जो तुम कह रहे हो।

78. उन्होंने ने कहा: हे अज़ीज़! उस

का पिता बहुत बूढ़ा है। अतः हम में से किसी एक को उस के स्थान पर ले लो। वास्तव में हम आप को परोपकारी देख रहे हैं।

79. उस (यूसुफ़) ने कहा: अल्लाह की शरण कि हम (किसी अन्य को) पकड़ लें, परन्तु उसी को (पकड़ेंगे) जिस के पास अपना सामान पाया है। (यदि ऐसा न करें) तो हम वास्तव में अत्याचारी होंगे।

80. फिर जब उस से निराश हो गये तो एकान्त में हो कर परामर्श करने लगे। उन के बड़े ने कहा: क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह को साक्षी बना कर दृढ़ वचन लिया था? और इस से पहले जो अपराध तुम ने यूसुफ़ के बारे में किया है? तो मैं इस धरती (मिस्र) से नहीं जाऊँगा जब तक मुझे मेरे पिता अनुमति न दे दें। अथवा अल्लाह मेरे लिये निर्णय न कर दे। और वही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

81. तुम अपने पिता की ओर लौट जाओ, और कहो कि हे हमारे पिता! आप के पुत्र ने चोरी की, और हम ने वही साक्ष्य दिया जिसे हम ने जाना, और हम गैब के रखवाले नहीं थे।

82. आप उस बस्ती वालों से पूछ लें, जिस में हम थे, और उस काफ़िले से जिस में हम आये हैं, और वास्तव में हम सच्चे हैं।

83. उस (पिता) ने कहा: ऐसा नहीं, बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है। तो इस लिये अब सहन करना ही उत्तम है, संभव है कि अल्लाह उन सब को मेरे पास वापिस ला दे, वास्तव में

वही जानने वाला तत्त्वदर्शी है।

84. और उन से मुँह फेर लिया, और कहा: हाय यूसुफ़! और उस की दोनों आखें शोक के कारण (रोते-रोते) सफ़ेद हो गयीं, और उस का दिल शोक से भर गया।

85. उन (पुत्रों) ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप बराबर यूसुफ़ को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि (शोक से) घुल जायें, या अपना विनाश कर लें।

86. उस ने कहा: मैं अपनी आपदा तथा शोक की शिकायत अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता। और अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

87. हे मेरे पुत्रो! जाओ, और यूसुफ़ और उस के भाई का पता लगाओ। और अल्लाह की दया से निराश न हो। वास्तव में अल्लाह की दया से वही निराश होते हैं जो काफ़िर हैं।

88. फिर जब उस (यूसुफ़) के पास (मिस्र में) गये तो कहा: हे अजीज़! हम पर और हमारे घराने पर आपदा (अकाल) आ पड़ी है। और हम थोड़ा धन (मूल्य) लाये हैं, अतः हमें (अब का) पूरा माप दें, और हम पर दान करें। वास्तव में अल्लाह दानशीलों को प्रतिफल प्रदान करता है।

89. उस (यूसुफ़) ने कहा: क्या तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ़ तथा उस के भाई के साथ क्या कुछ किया है, जब तुम अज्ञान थे?

90. उन्होंने ने कहा: क्या आप यूसुफ़ हैं? यूसुफ़ ने कहा: मैं यूसुफ़ हूँ और

यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर उपकार किया है। वास्तव में जो (अल्लाह से) डरता तथा सहन करता है तो अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

91. उन्होंने कहा: अल्लाह की शपथ! उस ने आप को हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है। वास्तव में हम दोषी थे।
92. यूसुफ़ ने कहा: आज तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे! वही सर्वाधिक दयावान् है।
93. मेरा यह कुर्ता ले जाओ, और मेरे पिता के मुख पर डाल दो, वह देखने लगेंगे। और अपने पूरे घराने को (मिस्र) ले आओ।
94. और जब काफ़िले ने प्रस्थान किया, तो उन के पिता ने कहा: मुझे यूसुफ़ की सुगन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे बहका हुआ बूढ़ा न समझो।
95. उन लोगों ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप तो अपनी पुरानी सनक में पड़े हुये हैं।
96. फिर जब शुभ-सूचक आ गया, तो उस ने वह (कुर्ता) उन के मुख पर डाल दिया। और वह तुरंत देखने लगे। याकूब ने कहा: क्यों मैं ने तुम से नहीं कहा था कि वास्तव में अल्लाह की ओर से जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।
97. सब (भाईयों) ने कहा: हे हमारे पिता! हमारे लिये हमारे पापों की क्षमा मांगिये, वास्तव में हम ही दोषी थे।
98. याकूब ने कहा: मैं तुम्हारे लिये अपने पालनहार से क्षमा की प्रार्थना

करूँगा, वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

99. फिर जब वह यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने माता-पिता को अपनी शरण में ले लिया। और कहा: नगर (मिस्र) में प्रवेश कर जाओ, यदि अल्लाह ने चाहा तो शान्ति से रहोगे।
100. तथा अपने माता-पिता को उठा कर सिंहासन पर बिठा लिया। और सब उस के समक्ष सज्दे में गिर गये। और यूसुफ़ ने कहा: हे मेरे पिता! यही मेरे स्वप्न का अर्थ है जो मैं ने पहले देखा था। मेरे पालनहार ने उसे सच्च कर दिया है, तथा मेरे साथ उपकार किया, जब उस ने मुझे कारावास से निकाला, और आप लोगों को गाँवों से मेरे पास (नगर में) ले आया, इस के पश्चात् कि शैतान ने मेरे तथा मेरे भाईयों के बीच विरोध डाल दिया। वास्तव में मेरा पालनहार जिस के लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है। निश्चय वही अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।
101. हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे राज्य प्रदान किया, तथा मुझे स्वप्नों का अर्थ सिखाया। हे आकाशों तथा धरती के उत्पत्तिकार! तू लोक तथा परलोक में मेरा रक्षक है। तू मेरा अन्त इस्लाम पर कर, और मुझे सदाचारियों में मिला दे।
102. (हे नबी!) यह (कथा) परोक्ष के समाचारों में से है, जिस की वही हम आप की ओर कर रहे हैं। और

आप उन (भाईयों) के पास नहीं थे, जब वह आपस की सहमति से षड्यंत्र रचते रहे।

103. और अधिकांश लोग आप कितनी ही लालसा करें, ईमान लाने वाले नहीं हैं।
104. और आप इस (धर्मप्रचार) पर उन से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगते। यह (कुर्आन) तो विश्ववासियों के लिये (केवल) एक शिक्षा है।
105. तथा आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) हैं जिन पर से लोग गुज़रते रहते हैं, और उन पर ध्यान नहीं देते।
106. और उन में से अधिकतर अल्लाह को मानते हैं परन्तु (साथ ही) मुश्रिक (मिश्रणवादी) भी हैं।
107. तो क्या वह निर्भय हो गये हैं कि उन पर अल्लाह की यातना छा जाये, अथवा उन पर प्रलय अकस्मात आ जाये, और वह अचेत रह जायें।
108. (हे नबी!) आप कह दें यही मेरी डगर है, मैं अल्लाह की ओर बुला रहा हूँ। मैं पूरे विश्वास और सत्य पर हूँ, और जिस ने मेरा अनुसरण किया। तथा अल्लाह पवित्र है, और मैं मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) में से नहीं हूँ।
109. और हम ने आप से पहले मानव पुरुषों ही को नबी बनाकर भेजा जिन की ओर प्रकाशना भेजते रहे, नगर वासियों में से, क्या वे धरती में चले फिरे नहीं, ताकि देखते कि उन का परिणाम क्या हुआ जो इन

से पहले थे? और निश्चय आखिरत (परलोक) का घर (स्वर्ग) उन के लिये उत्तम है, जो अल्लाह से डरे, तो क्या तुम समझते नहीं हो।

110. (इस से पहले भी रसूलों के साथ यही हुआ)। यहाँ तक कि जब रसूल निराश हो गये, और लोगों को विश्वास हो गया कि उन से झूठ बोला गया है, तो उन के लिये हमारी सहायता आ गई, फिर हम जिसे चाहते हैं बचा लेते हैं, और हमारी यातना अपराधियों से फेरी नहीं जाती।
111. इन कथाओं में बुद्धिमानों के लिये बड़ी शिक्षा है, यह (कुर्आन) ऐसी बातों का संग्रह नहीं है, जिसे स्वयं बना लिया जाता हो, परन्तु इस से पहले की पुस्तकों की सिद्धि और प्रत्येक वस्तु का विवरण (ब्योरा) है। तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

सूरह रअद - 13

सूरह रअद के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 43 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़, लाम, मीम, रा। यह इस पुस्तक (कुर्आन) की आयतें हैं। और (हे नबी!) जो आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है सर्वथा सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग

ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

2. अल्लाह वही है जिस ने आकाशों को ऐसे सहारों के बिना ऊँचा किया है जिन्हें तुम देख सको। फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो गया, तथा सूर्य और चाँद को नियम बढ़ किया। सब एक निर्धारित अवधि के लिये चल रहे हैं। वही इस विश्व की व्यवस्था कर रहा है, वह निशानियों का विवरण (ब्योरा) दे रहा है ताकि तुम अपने पालनहार से मिलने का विश्वास करो।
3. तथा वही है जिस ने धरती को फैलाया। और उस में पर्वत तथा नहरें बनायीं, और प्रत्येक फलों के दो प्रकार बनाये। वह रात्रि से दिन को छुपा देता है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोच विचार करते हैं।
4. और धरती में आपस में मिले हुये कई खण्ड हैं, और उद्यान (बाग) हैं अँगूरों के तथा खेती और खजूर के वृक्ष हैं। कुछ एकहरे और कुछ दोहरे, सब एक ही जल से सींचे जाते हैं, और हम कुछ को स्वाद में कुछ से अधिक कर देते हैं, वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिये जो सूझ-बूझ रखते हैं।
5. तथा यदि आप आश्चर्य करते हैं तो आश्चर्य करने योग्य उन का यह कथन है कि जब हम मिट्टी हो जायेंगे, तो क्या वास्तव में हम नई उत्पत्ति में होंगे? उन्होंने ने ही अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया है, तथा उन्हीं के गलों में तौक पड़े होंगे, और वही नरक वाले हैं, जिस

में वह सदा रहेंगे।

6. और वह आप से बुराई (यातना) की जल्दी मचा रह है भलाई से पहले। जब कि इन से पहले यातनाएँ आ चुकी हैं, और वास्तव में आप का पालनहार लोगों को उन के अत्याचार पर क्षमा करने वाला है। तथा निश्चय आप का पालनहार कड़ी यातना देने वाला (भी) है।
7. तथा जो काफ़िर हो गये वह कहते हैं कि आप पर आप के पालनहार की ओर से कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा गया। आप केवल सावधान करने वाले तथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।
8. अल्लाह ही जानता है जो प्रत्येक स्त्री के गर्भ में है, तथा गर्भाशय जो कम और अधिक करते हैं, प्रत्येक चीज़ की उस के यहाँ एक निश्चित मात्रा है।
9. वह सब छुपे और खुले प्रत्यक्ष को जानने वाला बड़ा महान् सर्वोच्च है।
10. (उस के लिये) बराबर है तुम में से जो बात चुपके बोले, और जो पुकार कर बोले। तथा कोई रात के अँधेरे में छुपा हो या दिन के उजाले में चल रहा हो।
11. उस (अल्लाह) के रखवाले (फ़रिश्ते) हैं। उस के आगे तथा पीछे, जो अल्लाह के आदेश से उस की रक्षा कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह स्वयं अपनी दशा न बदल ले। तथा जब अल्लाह किसी जाति के साथ बुराई का निश्चय कर ले तो उसे फेरा नहीं जा

- सकता, और न उन का उस (अल्लाह) के सिवा कोई सहायक है।
12. वही है जो विद्युत को तुम्हें भय तथा आशा बना कर दिखाता है। और भारी बादलों को पैदा करता है।
13. और कड़क, अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करती है, और फ़रिश्ते उस के भय से काँपते हैं। वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है। तथा वह अल्लाह के बारे में विवाद करते हैं, जब कि उस का उपाय बड़ा प्रबल है।
14. उसी (अल्लाह) को पुकारना सत्य है, और जो उस के सिवा दूसरों को पुकारते हैं, वह उन की प्रार्थना कुछ नहीं सुनते। जैसे कोई अपनी दोनों हथेलियाँ जल की ओर फैलाया हुआ हो, ताकि उस के मुँह में पहुँच जाये, जब कि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं। और काफ़िरों की पुकार व्यर्थ (निष्फल) ही है।
15. और अल्लाह ही को सज्दा करता है, चाहे या न चाहे, वह जो आकाशों तथा धरती में है, और उन की परछाईयाँ भी प्रातः और संध्या।
16. उन से पुछो: आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है? कह दो: अल्लाह है। कहो कि क्या तुम ने अल्लाह के सिवा उन्हें सहायक बना लिया है जो अपने लिये किसी लाभ का अधिकार नहीं रखते, और न किसी हानि का? उन से कहो: क्या अन्धा और देखने वाला बराबर होता है, या अंधेरे और प्रकाश बराबर होते हैं? अथवा उन्होंने अल्लाह का साझी बना लिया है ऐसों को जिन्होंने अल्लाह के उत्पत्ति करने के समान उत्पत्ति की है, अतः उत्पत्ति का विषय उन पर उलझ गया है? आप कह दें कि अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ का उत्पत्ति करने वाला है, और वही अकेला प्रभुत्वशाली है।
17. उस ने आकाश से जल बरसाया, जिस से बादियाँ (उपत्यकाएँ) अपनी समाई के अनुसार बह पड़ीं। फिर (जल की) धारा के ऊपर झाग आ गया। और जिस चीज़ को वे आभूषण अथवा समान बनाने के लिये अग्नि में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही झाग होता है। इसी प्रकार अल्लाह सत्य तथा असत्य का उदाहरण देता है, फिर जो झाग है वह सूख कर ध्वस्त हो जाता है, और जो चीज़ लोगों को लाभ पहुँचाती है, वह धरती में रह जाती है। इसी प्रकार अल्लाह उदाहरण देता है।
18. जिन लोगों ने अपने पालनहार की बात मान ली, उन्हीं के लिये भलाई है। और जिन्होंने नहीं मानी, तो यदि जो कुछ धरती में है, सब उन का हो जाये, और उस के साथ उस के समान और भी, तो वह उसे (अल्लाह के दण्ड से बचने के लिये) अर्धदण्ड के रूप में दे देंगे। उन्हीं से कड़ा हिसाब लिया जायेगा, तथा उन का स्थान नरक है। और वह बुरा रहने का स्थान है।
19. तो क्या जो जानता है कि आप के पालनहार की ओर से जो (कुआन) आप पर उतारा गया है सत्य है, उस

- के समान है, जो अन्धा है? वास्तव में बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।
20. जो अल्लाह से किया वचन पूरा करते हैं, और वचन भंग नहीं करते।
21. और उन (संबंधों) को जोड़ते हैं, जिन के जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है, और अपने पालनहार से डरते हैं, तथा बुरे हिसाब से डरते हैं।
22. तथा जिन लोगों ने अपने पालनहार की प्रसन्नता के लिये धैर्य से काम लिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से छुपे और खुले तरीके से दान करते रहे, तो वही हैं, जिन के लिये परलोक का घर (स्वर्ग) है।
23. ऐसे स्थायी स्वर्ग जिन में वे और उन के बाप दादा तथा उनकी पत्नियों और संतान में से जो सदाचारी हों प्रवेश करेंगे, तथा फरिश्ते उन के पास प्रत्येक द्वार से (स्वागत के लिये) प्रवेश करेंगे।
24. (वे कहेंगे): तुम पर शान्ति हो, उस धैर्य के कारण जो तुम ने किया, तो क्या ही अच्छा है, यह परलोक का घर।
25. और जो लोग अल्लाह से किये वचन को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं, और अल्लाह ने जिस संबन्ध को जोड़ने का आदेश दिया^[1] है उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव फैलाते हैं। वही हैं जिन के लिये धिक्कार है, और जिन के लिये बुरा आवास है।
26. और अल्लाह जिसे चाहे उसे जीविका फैला कर देता है, और जिसे चाहे नाप कर देता है। और वह (काफिर)
- संसारिक जीवन में मग्न है, तथा संसारिक जीवन परलोक की अपेक्षा तनिक लाभ के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है।
27. और जो काफिर हो गये, वह कहते हैं: इस पर इस के पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गयी? (हे नबी!) आप कह दें कि वास्तव में अल्लाह जिसे चाहे कुपथ करता है, और अपनी ओर उसी को राह दिखाता है जो उस की ओर ध्यानमग्न हों।
28. (अर्थात् वह) लोग जो ईमान लाये, तथा जिन के दिल अल्लाह के स्मरण से संतुष्ट होते हैं। सुन लो! अल्लाह के स्मरण ही से दिलों को संतोष होता है।
29. जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, उन के लिये आनन्द, और उत्तम ठिकाना है।
30. इसी प्रकार हम ने आप को एक समुदाय में जिस से पहले बहुत से समुदाय गुजर चुके हैं, रसूल बना कर भेजा है, ताकि आप उन को वह संदेश सुनायें जो हम ने आप की ओर वही द्वारा भेजा है, और वह अत्यंत कृपाशील को अस्वीकार करते हैं? आप कह दें: वही मेरा पालनहार है, कोई पूज्य नहीं परन्तु वही। मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की ओर मुझे जाना है।
31. यदि कोई ऐसा कुर्आन होता जिस से पर्वत खिसका दिये जाते, या धरती खण्ड-खण्ड कर दी जाती, या इस के द्वारा मुर्दा से बात की जाती (तो भी वह ईमान नहीं लाते)। बात

यह है कि सब अधिकार अल्लाह ही को हैं, तो क्या जो ईमान लाये हैं, वह निराश नहीं हुये कि यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को सीधी राह पर कर देता! और काफ़िरों को उन के कर्तव्य के कारण बराबर आपदा पहुँचती रहेगी अथवा उन के घर के समीप उतरती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वचन आ जाये, और अल्लाह, वचन का विरुद्ध नहीं करता।

32. और आप से पहले भी बहुत से रसूलों का परिहास किया गया है, तो हम ने काफ़िरों को अवसर दिया। फिर उन्हें धर लिया, तो मेरी यातना कैसी रही?
33. तो क्या जो प्रत्येक प्राणी के कर्तव्य से अवगत है, और उन्होंने ने (उस) अल्लाह का साझी बना लिया है, आप कहिये कि उन के नाम बताओ। या तुम उसे उस चीज़ से सूचित कर रहे हो जिसे वह धरती में नहीं जानता, या ओछी बात करते हो? बल्कि काफ़िरों के लिये उन के छल सुशोभित बना दिये गये हैं। और सीधी राह से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं।
34. उन्हीं के लिये यातना है संसारिक जीवन में। और निःसंदेह परलोक की यातना अधिक कड़ी है। और उन को अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं।
35. उस स्वर्ग का उदाहरण जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है उस में नहरें बहती हैं, उस के फल सतत हैं, और उस की छाया। यह उन का परिणाम है जो अल्लाह से डरे, और काफ़िरों का परिणाम नरक है।

36. (हे नबी!) जिन को हम ने पुस्तक दी है वह उस (कुर्आन) से प्रसन्न हो रहे हैं जो आप की ओर उतारा गया है। और सम्प्रदायों में कुछ ऐसे भी हैं, जो नहीं मानते। आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि अल्लाह की इबादत (वन्दना) करूँ, और उस का साझी न बनाऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ, और उसी की ओर मुझे जाना है।
37. और इसी प्रकार हम ने इस को अर्बी आदेश के रूप में उतारा है और यदि आप उन की आकांक्षाओं का अनुसरण करेंगे, इसके पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह से आप का कोई सहायक और रक्षक न होगा।
38. और हम ने आप से पहले बहुत से रसूलों को भेजा है, और उन की पत्नियों तथा बाल-बच्चे बनाये। किसी रसूल के बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति बिना कोई निशानी ला दे। और हर वचन के लिये एक निर्धारित समय है।
39. वह जो (आदेश) चाहे मिटा देता है और जो चाहे शेष (साबित) रखता है। उसी के पास मूल पुस्तक है।
40. और (हे नबी!) यदि हम आप को उस में से कुछ दिखा दें जिस की धमकी हम ने उन (काफ़िरों) को दी है, अथवा आप को (पहले ही) मौत दे दें, तो आप का काम उपदेश पहुँचा देना है। और हिसाब लेना हमारा काम है।
41. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को

उस के किनारों से कम करते जा रहे हैं। और अल्लाह ही आदेश देता है कोई उस के आदेश का प्रत्यालोचन करने वाला नहीं, और वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

42. तथा उस से पहले (भी) लोगों ने रसूलों के साथ षडयंत्र रचा, और षडयंत्र (को निष्फल करने) का सब अधिकार तो अल्लाह को है, वह जो कुछ प्रत्येक प्राणी करता है, उसे जानता है। और काफ़िरों को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि परलोक का घर किस के लिये है।
43. (हे नबी!) जो काफ़िर हो गये, वे कहते हैं कि आप अल्लाह के भेजे हुये नहीं हैं। आप कह दें: मेरे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही तथा उन की गवाही जिन्हें किताब का ज्ञान दिया गया काफ़ी है।

सूरह इब्राहीम - 14

सूरह इब्राहीम के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़, लाम, रा। यह (कुर्आन) एक पुस्तक है, जिसे हम ने आप की ओर अवतरित किया है, ताकि आप लोगों को अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें, उन के पालनहार की अनुमति से, उस की राह की ओर जो बड़ा प्रबल सराहा हुआ है।

2. अल्लाह की ओर। जिस के अधिकार में आकाश और धरती का सब कुछ है। तथा काफ़िरों के लिये कड़ी यातना के कारण विनाश है।
3. जो संसारिक जीवन को परलोक पर प्रधानता देते हैं, और अल्लाह की डगर (इस्लाम) से रोकते हैं, और उसे कुटिल बनाना चाहते हैं, वही कुपथ में दूर निकल गये हैं।
4. और हम ने किसी (भी) रसूल को उस की जाति की भाषा ही में भेजा, ताकि वह उन के लिये बात उजागर कर दे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है कुपथ करता है और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और वही प्रभुत्वशाली और हिक्मत वाला है।
5. और हम ने मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ भेजा, ताकि अपनी जाति को अन्धेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें। और उन्हें अल्लाह के दिनों (पुरस्कार और यातना) का स्मरण कराओ। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं, प्रत्येक अति सहनशील कृतज्ञ के लिये।
6. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो, जब उस ने तुम को फिरओनियों से मुक्त किया, जो तुम को घोर यातना दे रहे थे। और तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते थे, और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से एक महान् परीक्षा थी।

7. तथा (याद करो) जब तुम्हारे पालनहार ने घोसणा कर दी कि यदि तुम कृतज्ञ बनोगे तो तुम्हें और अधिक दूंगा तथा यदि अकृतज्ञ रहोगे तो वास्तव में मेरी यातना बहुत कड़ी है।
8. और मूसा ने कहा: यदि तुम और सभी लोग जो धरती में हैं कुफ़्र करें, तो भी अल्लाह निरीह तथा सराहा हुआ है।
9. क्या तुम्हारे पास उन का समाचार नहीं आया, जो तुम से पहले थे: नूह तथा आद और समूद की जाति का और जो उन के पश्चात् हुये जिन को अल्लाह ही जानता है? उन के पास उन के रसूल प्रत्यक्ष प्रमाण लाये, तो उन्होंने अपने हाथ अपने मुखों में दे लिये, और कह दिया कि हम उस संदेश को नहीं मानते, जिस के साथ तुम भेजे गये हो। और वास्तव में उस के बारे में संदेह में है, जिस की ओर हमें बुला रहे हो (तथा) द्विधा में हैं।
10. उन के रसूलों ने कहा: क्या उस अल्लाह के बारे में संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। वह तुम्हें बुला रहा है ताकि तुम्हारे पाप क्षमा कर दे, और तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अवसर दे। उन्होंने ने कहा: तुम तो हमारे ही जैसे एक मानव पुरुष हो, तुम चाहते हो कि हमें उस से रोक दो, जिस की पूजा हमारे बाप-दादा कर रहे थे। तुम हमारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।
11. उन से उन के रसूलों ने कहा: हम तुम्हारे जैसे मानव-पुरुष ही हैं, परन्तु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे उपकार करता है, और हमारे बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई प्रमाण ला दें। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिये।
12. और क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जब कि उस ने हमें हमारी राहें दर्शा दी है? और हम अवश्य उस दुःख को सहन करेंगे, जो तुम हमें दोगे, और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को निर्भर रहना चाहिये।
13. और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा: हम अवश्य तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे, अथवा तुम्हें हमारे पंथ में आना होगा। तो उन के पालनहार ने उन की ओर वही की, कि हम अवश्य अत्याचारियों का विनाश कर देंगे।
14. और तुम्हें उन के पश्चात् धरती में बसा देंगे, यह उस के लिये है, जो मेरे महिमा से खड़े होने से डरा, तथा मेरी चेतावनी से डरा।
15. और उन (रसूलों) ने विजय की प्रार्थना की, तो सभी उद्दंड विरोधी असफल हो गये।
16. उस के आगे नरक है और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा।
17. वह उसे थोड़ा-थोड़ा गले से उतारेगा, मगर उतार नहीं पायेगा। और उस के पास प्रत्येक स्थान से मौत आयेगी जब कि वह मरेगा नहीं। और उस के आगे भीषण यातना होगी।
18. जिन लोगों ने अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया उन के कर्म उस राख के समान हैं, जिसे आँधी के

दिन की प्रचण्ड वायु ने उड़ा दिया हो। यह लोग अपने किये में से कुछ भी नहीं पा सकेंगे, यही (सत्य से) दूर का कुपथ है।

19. क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की है, यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाये, और नयी उत्पत्ति ला दे।
20. और वह अल्लाह पर कठिन नहीं है।
21. और सब अल्लाह के सामने खुल कर आ जायेंगे, तो निर्बल लोग उन से कहेंगे जो बड़े बन रहे थे कि हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातना से बचाने के लिये हमारे कुछ काम आ सकोगे? वे कहेंगे: यदि अल्लाह ने हमें मार्ग दर्शन दिया होता, तो हम अवश्य तुम्हें मार्ग दर्शन दिखा देते। अब तो समान है, चाहे हम अधीर हों, या धैर्य से काम लें, हमारे बचने का कोई उपाय नहीं है।
22. और शैतान कहेगा, जब निर्णय कर दिया जायेगा: वास्तव में अल्लाह ने तुम्हें सत्य वचन दिया था, और मैं ने तुम्हें वचन दिया तो अपना वचन भंग कर दिया, और मेरा तुम पर कोई दबाव नहीं था, परन्तु यह कि मैं ने तुम को (अपनी ओर) बुलाया, और तुम ने मेरी बात स्वीकार कर ली। अतः मेरी निन्दा न करो, स्वयं अपनी निन्दा करो, न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ, और न तुम मेरी सहायता कर सकते हो। वास्तव में मैं ने उसे अस्वीकार कर दिया, जो इस से पहले तुम ने मुझे अल्लाह का साझी बनाया था। निस्सन्देह अत्याचारियों के लिये दुःख दायी यातना है।
23. और जो ईमान लाये, और सदाचार करते रहे, उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दिया जायेगा जिन में नहरें बहती होंगी। वह अपने पालनहार की अनुमति से उस में सदा रहने वाले होंगे, और उस में उन का स्वागत यह होगा: तुम पर शान्ति हो।
24. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ने कलिमा तय्येबा (पवित्र शब्द) का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष से दिया है, जिस की जड़ (भूमि में) सुदृढ़ स्थित है, और उस की शाखा आकाश में है?
25. वह अपने पालनहार की अनुमति से प्रत्येक समय फल दे रहा है। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
26. और बुरी बात का उदाहरण एक बुरे वृक्ष जैसा है, जिसे धरती के ऊपर से उखाड़ दिया गया हो, जिस के लिये कोई स्थिरता नहीं है।
27. अल्लाह ईमान वालों को स्थिर कथन के सहारे लोक तथा परलोक में स्थिरता प्रदान करता है, तथा अत्याचारियों को कुपथ कर देता है, और अल्लाह जो चाहता है, करता है।
28. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अनुग्रह को कुफ़्र से बदल दिया, और अपनी जाति को विनाश के घर में उतार दिया।
29. (अर्थात्) नरक में, जिस में वह झोंके जायेंगे। और वह रहने का बुरा स्थान है।
30. और उन्होंने ने अल्लाह के साझी बना

लिये, ताकि उस की राह (सत्धर्म) से कुपथ कर दें। आप कह दें कि तनिक आनन्द ले लो, फिर तुम्हें नरक की ओर ही जाना है।

31. (हे नबी!) मेरे उन भक्तों से कह दो, जो ईमान लाये हैं, कि नमाज़ की स्थापना करें और उस में से जो हम ने प्रदान किया है, छुपे और खुले तरीके से दान करें, उस दिन के आने से पहले जिस में न कोई क्रय-विक्रय होगा, और न कोई मैत्री।
32. और अल्लाह वही है, जिस ने तुम्हारे लिये आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की, और आकाश से जल बरसाया फिर उस से तुम्हारी जीविका के लिये अनेक प्रकार के फल निकाले। और नौका को तुम्हारे वश में किया, ताकि सागर में उस के आदेश से चले, और नदियों को तुम्हारे लिये वशवर्ती किया।
33. तथा तुम्हारे लिये सूर्य और चाँद को काम में लगाया जो दोनों निरन्तर चल रहे हैं। और तुम्हारे लिये रात्रि और दिवस को वश में कर दिया।
34. और तुम्हें उस सब में से कुछ दिया, जो तुम ने माँगा। और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अत्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है।
35. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस नगर (मक्का) को शान्ति का नगर बना दे, और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।

36. मेरे पालनहार! इन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को कुपथ किया है, अतः जो मेरा अनुयायी हो, वही मेरा है। और जो मेरी अवैज्ञा करे, तो वास्तव में तू अति क्षमाशील दयावान् है।
37. हमारे पालनहार! मैं ने अपनी कुछ संतान मरुस्थल की एक वादी (उपत्यका) में तेरे सम्मानित घर (काबा) के पास बसा दी है, ताकि वह नमाज़ की स्थापना करे। अतः लोगों के दिलों को उन की ओर आकर्षित कर दे, और उन्हें जीविका प्रदान कर, ताकि वह कृतज्ञ हों।
38. हमारे पालनहार! तू जानता है, जो हम छुपाते और जो व्यक्त करते हैं। और अल्लाह से कुछ छुपा नहीं रहता, धरती में और न आकाशों में।
39. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने मुझे बुढ़ापे में (दो पुत्र) इस्माईल और इस्हाक प्रदान किये। वास्तव में मेरा पालनहार प्रार्थना अवश्य सुनने वाला है।
40. मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ की स्थापना करने वाला बना दे, तथा मेरी संतान को। हे मेरे पालनहार! और मेरी प्रार्थना स्वीकार कर।
41. हे हमारे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे, तथा मेरे माता-पिता और ईमान वालों को, जिस दिन हिसाब लिया जायेगा।
42. और तुम कदापि अल्लाह को उस से अचेत न समझो जो अत्याचारी कर रहे हैं। वह तो उन्हें उस दिन के लिये टाल रहा है, जिस दिन आखें खुली रह जायेंगी।

43. वह दौड़ते हुये अपने सिर ऊपर किये हुये होंगे, उन की आँखें उन की ओर नहीं फिरेगी, और उन के दिल गिरे हुये होंगे।
44. (हे नबी!) आप लोगों को उस दिन से डरा दें, जब उन पर यातना आ जायेगी। तो अत्याचारी कहेंगे: हमारे पालनहार! हमें कुछ समय तक अवसर दे, हम तेरी बात (आमंत्रण) स्वीकार कर लेंगे, और रसूलों का अनुसरण करेंगे, क्या तुम वही नहीं हो जो इस से पहले शपथ ले रहे थे कि हमारा पतन होना ही नहीं है?
45. जब कि तुम उन्हीं की बस्तियों में बसे हो, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया, और तुम्हारे लिये उजागर हो गया है कि हम ने उन के साथ क्या किया? और हम ने तुम्हें बहुत से उदाहरण भी दिये हैं।
46. और उन्होंने ने अपना षड्यंत्र रच लिया तथा उन का षड्यंत्र अल्लाह के पास है। और उन का षड्यंत्र ऐसा नहीं था कि उस से पर्वत टल जाये।
47. अतः कदापि यह न समझें कि अल्लाह अपने रसूलों से किया वचन भंग करने वाला है, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।
48. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से, तथा आकाश बदल दिये जायेंगे, और सब अल्लाह के समक्ष उपस्थित होंगे, जो अकेला प्रभुत्वशाली है।
49. और आप उस दिन अपराधियों को जंजीरों में जकड़े हुये देखेंगे।
50. उन के वस्त्र तारकोल के होंगे, और उन के मुखों पर अग्नि छायी होगी।
51. ताकि अल्लाह प्रत्येक प्राणी को उस के किये का बदला दे। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
52. यह मनुष्यों के लिये एक संदेश है, और ताकि इस के द्वारा उन को सावधान किया जाये। और ताकि वे जान लें कि वही एक सत्य पूज्य है और ताकि मतिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।

सूरह हिज्र - 15

सूरह हिज्र के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 99 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़, लाम, रा। वह इस पुस्तक, तथा खुले कुर्आन की आयतें हैं।



2. (एक समय आयेगा), जब काफ़िर यह कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता यदि वे मुसलमान होते?
3. (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें, वह खाते, तथा आनन्द लेते रहें, और उन्हें आशा निश्चेत किये रहे, फिर शीघ्र ही वह जान लेंगे।
4. और हम ने जिस बस्ती को भी ध्वस्त किया उस के लिये एक निश्चित अवधि अंत थी।
5. कोई जाति न अपनी निश्चित अवधि से आगे जा सकती है, और न पीछे रह सकती।
6. तथा उन (काफ़िरों) ने कहा: हे वह व्यक्ति जिस पर यह शिक्षा (कुर्आन) उतारा गया है! वास्तव में तू पागल है।
7. क्यों हमारे पास फ़रिश्तों को नहीं लाता यदि तू सच्चों में से है?
8. जब कि हम फ़रिश्तों को सत्य (निर्णय) के साथ ही उतारते हैं, और उन्हें उस समय कोई अवसर नहीं दिया जाता।
9. वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा (कुर्आन) उतारी है, और हम ही उस के रक्षक हैं।
10. और हम ने आप से पहले भी प्राचीन (विगत) जातियों में रसूल भेजे।
11. और उन के पास जो भी रसूल आया, परन्तु वह उस के साथ परिहास करते रहे।
12. इसी प्रकार हम इसे अपराधियों के

दिलों में पुरो देते हैं।

13. वे उस पर ईमान नहीं लाते, और प्रथम जातियों से यही रीति चली आ रही है।
14. और यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल देते, फिर वह उस में चढ़ने लगते।
15. तब भी वह यही कहते कि हमारी आँखें धोखा खा रही हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।
16. हम ने आकाश में राशि चक्र बनाये हैं, और उसे देखने वालों के लिये सुसिज्जत किया है।
17. और उसे प्रत्येक धिक्कारे हुये शैतान से सुरक्षित किया है।
18. परन्तु जो (शैतान) चोरी से सुनना चाहे, तो एक खुली ज्वाला उस का पीछा करती है।
19. और हम ने धरती को फैलाया, और उस में पर्वत बना दिये, और उस में हम ने प्रत्येक उचित चीज़ें उगायीं।
20. और हम ने उस में तुम्हारे लिये जीवन के संसाधन बना दिये, तथा उन के लिये जिन के जीविका दाता तुम नहीं हो।
21. और कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जिस के कोष हमारे पास न हों, और हम उसे एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं।
22. और हम ने जलभरी वायुओं को भेजा, फिर आकाश से जल बरसाया, और उसे तुम्हें पिलाया, तथा तुम उस के कौषाधिकारी नहीं हो।

23. तथा हम ही जीवन देते, तथा मारते हैं, और हम ही सब के उत्तराधिकारी हैं।
24. तथा तुम में से विगत लोगों को जानते हैं और भविष्य के लोगों को भी जानते हैं।
25. और वास्तव में आप का पालनहार ही उन्हें एकत्र करेगा, निश्चय वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।
26. और हम ने मनुष्य को सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से बनाया।
27. और इस से पहले जिबों को हम ने अग्नि की ज्वाला से पैदा किया।
28. और (याद करो) जब आप के पालनहार ने फरिश्तों से कहा: मैं एक मनुष्य उत्पन्न करने वाला हूँ, सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से।
29. तो जब मैं उसे पूरा बना दूँ, और उस में अपनी आत्मा फूँक दूँ, तो उस के लिये सज्दे में गिर जाना।¹²
30. अतः उन सब फरिश्तों ने सज्दा किया।
31. इब्लीस के सिवा। उस ने सज्दा करने वालों का साथ देने से इन्कार कर दिया।
32. अल्लाह ने पूछा: हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों का साथ नहीं दिया?
33. उस ने कहा: मैं ऐसा नहीं हूँ कि एक मनुष्य को सज्दा करूँ, जिसे तू ने सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से पैदा किया है।
34. अल्लाह ने कहा: यहाँ से निकल जा, वास्तव में तू धिक्कारा हुआ है।
35. और तुझ पर धिक्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन तक।
36. (इब्लीस) ने कहा : मेरे पालनहार! तो फिर मुझे उस दिन तक अवसर दे, जब सभी पुनः जीवित किये जायेंगे।
37. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया है।
38. विद्वित समय के दिन तक के लिये।
39. वह बोला: मेरे पालनहार! तेरे मुझ को कुपथ कर देने के कारण, मैं अवश्य उन के लिये धरती में (तेरी अवज्ञा को) मनोरम बना दूँगा, और उन सभी को कुपथ कर दूँगा।
40. उन में से तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा।
41. अल्लाह ने कहा: यही मुझ तक (पहुँचने की) सीधी राह है।
42. वस्तुतः मेरे भक्तों पर तेरा कोई अधिकार नहीं चलेगा, सिवाये उस के जो कुपथों में से तेरा अनुसरण करे।
43. और वास्तव में उन सब के लिये नरक का वचन है।
44. उस (नरक) के सात द्वार हैं, और उन में से प्रत्येक द्वार के लिये एक विभाजित भाग है।
45. वास्तव में आज्ञाकारी लोग स्वर्गों तथा स्रोतों में होंगे।
46. (उन से कहा जायेगा) इस में प्रवेश कर जाओ, शान्ति के साथ निर्भय हो कर।
47. और हम निकाल देंगे उन के दिलों में जो कुछ बैर होगा। वे भाई भाई होकर एक दूसरे के सम्मुख तख्तों के ऊपर रहेंगे।

48. न उस में उन्हें कोई धकान होगी और न वहाँ से निकाले जायेंगे।
49. (हे नबी!) आप मेरे भक्तों को सूचित कर दें कि वास्तव में, मैं बड़ा क्षमाशील दयावान् हूँ।
50. और मेरी यातना ही दुःखदायी यातना है।
51. और आप उन्हें इब्राहीम के अतिथियों के बारे में सूचित कर दें।
52. जब वह इब्राहीम के पास आये तो सलाम किया। उस ने कहा: वास्तव में हम तुम से डर रहे हैं।
53. उन्होंने ने कहा: डरो नहीं, हम तुम्हें एक ज्ञानी बालक की शुभसूचना दे रहे हैं।
54. उस ने कहा: क्या तुम ने मुझे इस बुढ़ापे में शुभ सूचना दी है, तुम मुझे यह शुभ सूचना कैसे दे रहे हो?
55. उन्होंने ने कहा: हम ने तुम्हें सत्य शुभ सूचना दी है, अतः तुम निराश न हो।
56. (इब्राहीम) ने कहा: अपने पालनहार की दया से निराश केवल कुपथ लोग ही हुआ करते हैं।
57. उस ने कहा: हे अब्राहम के भेजे हुये फरिश्तो! तुम्हारा अभियान क्या है?
58. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम एक अपराधी जाति के पास भेजे गये हैं।
59. लूत के घराने के सिवा, उन सभी को हम बचाने वाले हैं।
60. परन्तु लूत की पत्नी के लिये हम ने निर्णय किया है कि वह पीछे रह जाने वालों में होगी।
61. फिर जब लूत के घर भेजे हुये (फरिश्ते) आये।
62. तो लूत ने कहा: तुम (मेरे लिये) अपरिचित हो।
63. उन्होंने ने कहा: डरो नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वह (यातना) लाये हैं, जिस के बारे में वह संदेह कर रहे थे।
64. हम तुम्हारे पास सत्य लाये हैं, और वास्तव में हम सत्यवादी हैं।
65. अतः कुछ रात रह जाये तो अपने घराने को लेकर निकल जाओ, और तुम उन के पीछे रहो, और तुम में से कोई फिर कर न देखो। तथा चले जाओ, जहाँ आदेश दिया जा रहा है।
66. और हम ने लूत को निर्णय सुना दिया कि भोर होते ही इन का उन्मूलन कर दिया जायेगा।
67. और नगरवासी प्रसन्न हो कर आ गये।
68. लूत ने कहा: यह मेरे अतिथी है, अतः मेरा अपमान न करो।
69. तथा अब्राहम से डरो, और मेरा अनादर न करो।
70. उन्होंने ने कहा: क्या हम ने तुम्हें विश्व वासियों से नहीं रोका था?
71. लूत ने कहा: यह मेरी पुत्रियाँ हैं यदि तुम कुछ करने वाले हो।
72. हे नबी! आप की आयु की शपथ! वास्तव में वे अपने उन्माद में बहक रहे थे।
73. अन्ततः सूर्योदय के समय उन्हें एक कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया।
74. फिर हम ने उस बस्ती के ऊपरी भाग को नीचे कर दिया, और उन पर कंकरीले पत्थर बरसा दिये।

75. वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं प्रतिभाशालियों के लिये।
76. और वह (बस्ती) साधारण मार्ग पर स्थित है।
77. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है, ईमान वालों के लिये।
78. और वास्तव में (ऐय्या) के वासी अत्याचारी थे।
79. तो हम ने उन से बदला ले लिया, और वह दोनों ही साधारण मार्ग पर हैं।
80. और हिज्र के लोगों ने रसूलों को झुठलाया।
81. और उन्हें हम ने अपनी आयतें (निशानियाँ) दी, तो वह उन से विमुख ही रहे।
82. वे शिलाकारी कर के पर्वतों से घर बनाते, और निर्भय होकर रहते थे।
83. अन्ततः उन्हें कड़ी ध्वनि ने भोर के समय पकड़ लिया।
84. और उन की कमाई उन के कुछ काम न आयी।
85. और हम ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है, सत्य के आधार पर ही उत्पन्न किया है, और निश्चय प्रलय आनी है। अतः (हे नबी!) आप (उन को) भली भौति क्षमा कर दें।
86. वास्तव में आप का पालनहार ही सब का स्रष्टा सर्वज्ञ है।
87. तथा (हे नबी!) हम ने आप को सात ऐसी आयतें जो बार बार दुहराई जाती हैं, और महा कुर्आन प्रदान किया है।
88. और आप उस की ओर न देखें, जो संसारिक लाभ का संसाधन हम ने उन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा है, और न उन पर शोक करें, और ईमान वालों के लिये सुशील रहें।
89. और कह दें कि मैं प्रत्यक्ष (खुली) चेतावनी देने वाला हूँ।
90. जैसे हम ने खण्डन कारियों पर (यातना) उतारी।
91. जिन्होंने ने कुर्आन को खण्ड खण्ड कर दिया।
92. तो शपथ है आप के पालनहार की। हम उन से अवश्य पूछेंगे।
93. तुम क्या करते रहे?
94. अतः आप को जो आदेश दिया जा रहा है, उसे खोल कर सुना दें। और मुशरिकों (मिश्रणवादियों) की चिन्ता न करें।
95. हम आप के लिये परिहास करने वालों को काफी हैं।
96. जो अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य बना लेते हैं, तो उन्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा।
97. और हम जानते हैं कि उन की बातों से आप का दिल संकुचित हो रहा है।
98. अतः आप अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करें, तथा सज्दा करने वालों में रहें।
99. और अपने पालनहार की इबादत (बंदना) करते रहें, यहाँ तक कि आप के पास विश्वास आ जाये।

सूरह नहल - 16

सूरह नहल के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 128 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अल्लाह का आदेश आ गया है। अतः (हे काफ़िरो!) उस के शीघ्र आने की माँग न करो। वह (अल्लाह) पवित्र तथा उस शिर्क (मिश्रणवाद) से ऊँचा है, जो वह कर रहे हैं।
2. वह फ़रिश्तों को वही के साथ अपने आदेश से अपने जिस भक्त पर चाहता है उतारता है, कि (लोगों को) सावधान करो, कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है अतः मुझ से ही डरो।
3. उस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति सत्य के साथ की है, वह उन के शिर्क से बहुत ऊँचा है।
4. उस ने मनुष्य की उत्पत्ति वीर्य से की फिर वह अकस्मात् खुला झगड़ालू बन गया।
5. तथा चौपायों की उत्पत्ति की, जिन में तुम्हारे लिये गमी और बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को खाते हो।
6. तथा उन में तुम्हारे लिये एक शोभा है, जिस समय संध्या को चरा कर लाते हो और जब प्रातः चराने ले जाते हो।
7. और वह तुम्हारे बोज़ों को उन नगरों तक लाद कर ले जाते हैं, जिन तक तुम बिना कड़े परिश्रम के नहीं पहुँच सकते। वास्तव में तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।
8. तथा घोड़े, और खच्चर तथा गधे

पैदा किये, ताकि उन पर सवारी करो। और शोभा (बनें)। और ऐसी चीज़ों की उत्पत्ति करेगा, जिन्हें (अभी) तुम नहीं जानते हो।

9. और अल्लाह पर, सीधी राह बताना है, और उन में से कुछ टेढ़े हैं। तथा यदि अल्लाह चाहता तो तुम सभी को सीधी राह दिखा देता।
10. वही है, जिस ने आकाश से जल बरसाया, जिस में से कुछ तुम पीते हो, तथा कुछ से वृक्ष उपजते हैं, जिस में तुम (पशुओं को) चराते हो।
11. और तुम्हारे लिये उस से खेती उपजाता है, और जैतून तथा खजूर और अँगूर और प्रत्येक प्रकार के फल। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है, उन लोगों के लिये जो सोच-विचार करते हैं।
12. और उस ने तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिवस को सेवा में लगा रखा है। तथा सूर्य और चाँद को, और सितारे उस के आदेश के आधीन हैं। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।
13. तथा जो तुम्हारे लिये धरती में विभिन्न रंगों की चीज़ें उत्पन्न की हैं वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो शिक्षा ग्रहण करते हैं।
14. और वही है जिस ने सागर को वश में कर रखा है, ताकि तुम उस से ताज़ा मांस खाओ, और उस से अलंकार निकालो जिसे पहनते हो, तथा तुम नौकाओं को देखते हो कि सागर में (जल को) फाड़ती हुई

चलती हैं, और इस लिये ताकि तुम उस (अल्लाह) के अनुग्रह की खोज करो, और ताकि कृतज्ञ बनो।

15. और उस ने धरती में पर्वत गाड़ दिये, ताकि तुम को लेकर डोलने न लगे, तथा नदियाँ और राहें, ताकि तुम राह पाओ।
16. तथा बहुत से चिन्ह (बना दिये) और वे सितारों से (भी) राह पाते हैं।
17. तो क्या जो उत्पत्ति करता है, उस के समान है, जो उत्पत्ति नहीं करता? क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
18. और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो तो कभी नहीं कर सकते। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा तथा दया करने वाला है।
19. तथा अल्लाह जानता है, जो तुम छुपाते हो, और जो तुम व्यक्त करते हो।
20. और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वे किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते। जब कि वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं।
21. वे निर्जीव प्राणहीन हैं, और (यह भी) नहीं जानते कि कब पुनः जीवित किये जायेंगे।
22. तुम्हारा पूज्य बस एक है, फिर जो लोग परलोक पर ईमान नहीं लाते उन के दिल निवर्ती (विरोधी) हैं, और वे अभिमानी हैं।
23. जो कुछ वे छुपाते तथा व्यक्त करते हैं निश्चय अल्लाह उसे जानता है। वास्तव में वह अभिमानियों से प्रेम नहीं करता।

24. और जब उन से पूछा जाये कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? तो कहते हैं कि पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।
25. ताकि वे अपने (पापों का) पूरा बोझ प्रलय के दिन उठायें, तथा कुछ उन लोगों का बोझ (भी) जिन्हें बिना ज्ञान के कुपथ कर रहे थे, सावधान! वे कितना बुरा बोझ उठायेंगे!
26. इन से पहले के लोग भी षड्यंत्र रचते रहे, तो अल्लाह ने उन के षड्यंत्र के भवन का उन्मूलन कर दिया, फिर ऊपर से उन पर छत गिर पड़ी, और उन पर ऐसी दिशा से यातना आ गई, जिसे वे सोच भी नहीं रहे थे।
27. फिर प्रलय के दिन उन्हें अपमानित करेगा, और कहेगा कि मेरे वह साझी कहाँ हैं, जिन के लिये तुम झगड़ रहे थे? वे कहेंगे: जिन्हें ज्ञान दिया गया है कि वास्तव में आज अपमान तथा बुराई (यातना) काफ़िरों के लिये है।
28. जिन के प्राण फ़रिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वे अपने ऊपर अत्याचार करने वाले हैं, तो वह आज्ञाकारी बन जाते हैं, (कहते हैं कि) हम कोई बुराई (शिकं) नहीं कर रहे थे। क्यों नहीं? वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली भाँति अवगत है।
29. तो नरक के द्वारों में प्रवेश कर जाओ, उस में सदावासी रहोगे, अतः क्या ही बुरा है अभिमानियों का निवास स्थान!

30. और उन से पूछा गया जो अपने पालनहार से डरे कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? तो उन्होंने कहा: अच्छी चीज़ उतारी है। उन के लिये जिन्होंने इस लोक में सदाचार किये बड़ी भलाई है। और वास्तव में परलोक का घर (स्वर्ग) अति उत्तम है। और आज्ञाकारियों का आवास कितना अच्छा है।
31. सदा रहने के स्वर्ग जिस में प्रवेश करेंगे, जिन में नहरे बहती होंगी, उन के लिये उस में जो चाहेंगे (मिलेगा)। इसी प्रकार अल्लाह आज्ञाकारियों को प्रतिफल (बदला) देता है।
32. जिन के प्राण फ़रिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वे स्वच्छ-पवित्र हैं, तो कहते हैं: "तुम पर शान्ति हो।" तुम अपने सुकर्मों के बदले स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।
33. क्या वे इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आ जायें, अथवा आप के पालनहार का आदेश आ पहुँचे? ऐसे ही उन से पूर्व के लोगों ने किया, और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।
34. तो उन के कुकर्मों की बुराईयों उन पर आ पड़ी, और उन्हें उसी (यातना) ने घेर लिया जिस का वे परिहास कर रहे थे।
35. और कहा जिन लोगों ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया: यदि अल्लाह चाहता तो हम उस के सिवा किसी चीज़ की इबादत (बंदना) न करते न हम, और न हमारे बाप-दादा। और न उस के आदेश के बिना किसी चीज़ को हराम (वर्जित) करते। ऐसे ही इन से पूर्व वाले लोगों ने किया। तो रसूलों पर केवल खुले रूप से उपदेश पहुँचा देना है।
36. और हम ने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (बंदना) करो, और तागूत (असुर-अल्लाह के सिवा पूज्यों) से बचो, तो उन में से कुछ को अल्लाह ने सुपथ दिखा दिया और कुछ पर कुपथ सिद्ध हो गया। तो धरती में चलो-फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का अन्त कैसा रहा।
37. (हे नबी!) आप ऐसे लोगों को सुपथ दिखाने पर लोलुप हों, तो भी अल्लाह उसे सुपथ नहीं दिखायेगा जिसे कुपथ कर दो। और न उन का कोई सहायक होगा।
38. और उन (काफ़िरों) ने अल्लाह की भरपूर शपथ ली कि अल्लाह उसे पुनः जीवित नहीं करेगा जो मर जाता है। क्यों नहीं? यह तो अल्लाह का अपने ऊपर सत्य वचन है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।
39. (ऐसा करना इस लिये आवश्यक है) ताकि अल्लाह उस तथ्य को उजागर कर दे जिस में वे विभेद कर रहे थे, और ताकि काफ़िर जान लें कि वही झूठे थे।
40. हमारा कथन, जब हम किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करने का निश्चय करें, तो इस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दें कि "हो जा", और वह हो जाती है।

41. तथा जो लोग अल्लाह के लिये हिजरत (प्रस्थान) कर गये अत्याचार सहने के पश्चात्, तो हम उन्हें संसार में अच्छा निवास-स्थान देंगे, और परलोक का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है, यदि वह जानते।
42. जिन लोगों ने धैर्य धारण किया, तथा अपने पालनहार पर ही वे भरोसा करते हैं।
43. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले जो भी रसूल भेजे, वे सभी मानव-पुरुष थे। जिन की ओर हम बह्यी (प्रकाशना) करते रहे। तो तुम ज्ञानियों से पूछ लो, यदि (स्वयं) नहीं जानते।
44. प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाणों तथा पुस्तकों के साथ (उन्हें भेजा) और आप की ओर यह शिक्षा (कुरआन) अवतरित की, ताकि आप उसे सर्वमानव के लिये उजागर कर दें जो कुछ उन की ओर उतारा गया है ताकि वह सोच-विचार करें।
45. तो क्या वे निर्भय हो गये हैं, जिन्होंने बुरे षडयंत्र रचे हैं, कि अल्लाह उन्हें धरती में धंसा दे अथवा उन पर यातना ऐसी दिशा से आ जाये जिसे वह सोचते भी न हों?
46. या उन्हें चलते-फिरते पकड़ ले, तो वह (अल्लाह को) विवश करने वाले नहीं हैं।
47. अथवा उन्हें भय की दशा में पकड़ ले? निश्चय तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।
48. क्या अल्लाह की उत्पन्न की हुयी किसी चीज़ को उन्होंने नहीं देखा? जिस

की छाया दायें तथा बायें झुकती है, अल्लाह को सज्दा करते हुये? और वे सर्व विनयशील हैं।

49. तथा अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो आकाशों में तथा धरती में चर (जीव) तथा फरिश्ते हैं, और वह अहंकार नहीं करते।
50. वे अपने पालनहार से डरते हैं जो उन के ऊपर है, और वही करते हैं जो आदेश दिये जाते हैं।
51. और अल्लाह ने कहा: दो पूज्य न बनाओ, वही अकेला पूज्य है। अतः तुम मुझी से डरो।
52. और उसी का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और उसी की वंदना स्थायी है, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा दूसरे से डरते हो?
53. तुम्हें जो भी सुख-सुविधा प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें दुःख पहुँचता है, तो उसी को पुकारते हो।
54. फिर जब तुम से दुःख दूर कर देता है तो तुम्हारा एक समुदाय अपने पालनहार का साझी बनाने लगता है।
55. ताकि हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है, उस के प्रति कृतघ्न हों तो आनन्द ले लो, तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।
56. और वे जिन को जानते तक नहीं उन का एक भाग उस में से बनाते हैं जो जीविका हम ने उन्हें दी है। तो अल्लाह की शपथ! तुम से अवश्य पूछा जायेगा उस के

विषय में जो तुम झूठी बातें बना रहे थे?

57. और वह अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बनाते हैं, वह पवित्र है। और उन के लिये वह है, जो वे स्वयं चाहते हों!?
58. और जब उन में से किसी को पुत्री (के जन्म) की शुभसूचना दी जाये, तो उस का मुख काला हो जाता है, और वह शोक पूर्ण हो जाता है।
59. और लोगों से छुपा फिरता है उस दुरी सूचना के कारण जो उसे दी गयी है। (सोचता है कि) क्या उसे अपमान के साथ रोक ले, अथवा भूमि में गाड़ दे? देखो! वह कितना बुरा निर्णय करते हैं।
60. उन्हीं के लिये जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते अवगुण हैं, और अल्लाह के लिये सदगुण हैं। तथा वह प्रभुत्वशाली तत्त्वदर्शी हैं।
61. और यदि अल्लाह, लोगों को उन के अत्याचार पर (तत्क्षण) धरने लगे, तो धरती में किसी जीव को न छोड़े। परन्तु वह एक निर्धारित अवधि तक निलम्बित करता है, और जब उन की अवधि आ जायेगी, तो एक क्षण न पीछे होंगे न पहले।
62. वह अल्लाह के लिये उसे बनाते हैं, जिसे स्वयं अप्रिय समझते हैं। तथा उन की जबानें झूठ बोलती हैं कि उन्हीं के लिये भलाई है। निश्चय उन्हीं के लिये नरक है, और वही सब से पहले (नरक में) झोंके जायेंगे।
63. अल्लाह की शपथ! (हे नबी!) आप से पहले हम ने बहुत से समुदायों की ओर रसूल भेजे। तो उन के

लिये शैतान ने उन के कुकर्मा को सुसिज्जत बना दिया। अतः वही आज उन का सहायक है, और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

64. और हम ने आप पर यह पुस्तक (कुर्आन) इसी लिये उतारी है ताकि आप उन के लिये उसे उजागर कर दें जिस में वह विभेद कर रहे हैं, तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।
65. और अल्लाह ने ही आकाश से जल बरसाया, फिर उस ने निर्जीव धरती को जीवित कर दिया। निश्चय इस में उन लोगों के लिये एक निशानी है जो सुनते हैं।
66. तथा वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है। हम तुम्हें उस से जो उस के भीतर है गोबर तथा रक्त के बीच से शुद्ध दूध पिलाते हैं। जो पीने वालों के लिये रुचिकर होता है।
67. तथा खजूरों और अँगूरों के फलों से जिस से तुम मदिरा बना लेते हो तथा उत्तम जीविका भी, वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।
68. और हम ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि पर्वतों में घर (छत्ते) बना तथा वृक्षों में, और लोगों की बनायी छतों में।
69. फिर प्रत्येक फलों का रस चूस, और अपने पालनहार की सरल राहों पर चलती रहा। उस के भीतर से एक पेय निकलता है, जो विभिन्न रंगों का होता है, जिस में लोगों के लिये आरोग्य है। वास्तव में इस में एक

निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो सोच-विचार करते हैं।

70. और अल्लाह ही ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, फिर तुम्हें मौत देता है और तुम में से कुछ को अबोध आयु तक पहुँचा दिया जाता है, ताकि जानने के पश्चात् कुछ न जाने। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सर्व सामर्थ्यवान है।
71. और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर जीविका में प्रधानता दी है, तो जिन्हें प्रधानता दी गयी है वे अपनी जीविका अपने दासों की ओर फेरने वाले नहीं कि वह उस में बराबर हो जायें तो क्या वह अल्लाह के उपकारों को नहीं मानत है?
72. और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से पत्नियाँ बनायीं। और तुम्हारे लिये तुम्हारी पत्नियों से पुत्र तथा पौत्र बनाये। और तुम्हें स्वच्छ चीज़ों से जीविका प्रदान की। तो क्या वे असत्य पर विश्वास रखते हैं, और अल्लाह के पुरस्कारों के प्रति अविश्वास रखते हैं?
73. और अल्लाह के सिवा उन की बंदना करते हैं। जो उन के लिये आकाशों तथा धरती से कुछ भी जीविका देने का अधिकार नहीं रखते, और न इस का सामर्थ्य रखते हैं।
74. और अल्लाह के लिये उदाहरण न दो। वास्तव में अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।
75. अल्लाह ने एक उदाहरण दिया है: एक पराधीन दास है, जो किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता, और दूसरा (स्वाधीन) व्यक्ति है, जिसे हम ने

अपनी ओर से उत्तम जीविका प्रदान की है। और वह उस में से छुपे और खुले व्यय करता है। क्या वह दोनों समान हो जायेंगे? सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है। बल्कि अधिकतर लोग (यह बात) नहीं जानते।

76. तथा अल्लाह ने दो व्यक्तियों का उदाहरण दिया है। दोनों में से एक गूंगा है। वह किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता। वह अपने स्वामी पर बोज़ है। वह उसे जहाँ भेजता है कोई भलाई नहीं लाता। तो क्या वह, और जो न्याय का आदेश देता हो, और स्वयं सीधी राह पर हो बराबर हो जायेंगे?
77. और अल्लाह ही को आकाशों तथा धरती के परोक्ष का ज्ञान है। और प्रलय (क्यामत) का विषय तो बस पलक झपकने जैसा होगा, अथवा उस से भी अधिक शीघ्र। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
78. और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों से निकाला, इस दशा में कि तुम कुछ नहीं जानते थे। और तुम्हारे कान और आँख तथा दिल बनाये, ताकि तुम (उस का) उपकार मानों।
79. क्या वे पक्षियों को नहीं देखते कि वह अन्तरिक्ष में कैसे बशीभूत हैं? उन्हें अल्लाह ही थामता है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
80. और अल्लाह ही ने तुम्हारे घरों को निवास स्थान बनाया। और पशुओं की खालों से तुम्हारे लिये ऐसे घर बनाये जिन्हें तुम अपनी यात्रा तथा अपने

विराम के दिन हल्का (अल्पभार) पाते हो। और उन की ऊन और रोम तथा बालों से उपकरण और लाभ के समान जीवन की निश्चित अवधि तक के लिये (बनाये)।

81. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये उस चीज में से जो उत्पन्न की है छाया बनायी है। और तुम्हारे लिये पर्वतों में गुफाएं बनायी हैं। और तुम्हारे लिये ऐसे वस्त्र बनाये हैं जो तुम्हें धूप से बचायें। और ऐसे वस्त्र जो तुम्हें तुम्हारे आक्रमण से बचायें। इसी प्रकार वह तुम पर अपने उपकार पूरा करता है ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।
82. फिर यदि वे विमुख हों तो आप पर बस प्रत्यक्ष (खुला) उपदेश पहुँचा देना है।
83. वे अल्लाह के उपकारों को पहचानते हैं फिर उस का इन्कार करते हैं। और उन में अधिकतर कृतघ्न हैं।
84. और जिस⁽²⁾ दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी (गवाह) खड़ा करेंगे, फिर काफ़िरों को बात करने की अनुमति नहीं दी जायेगी और न उन से क्षमा याचना की माँग की जायेगी।
85. और जब अत्याचारी यातना देखेंगे, उन की यातना कुछ कम नहीं की जायेगी, और न उन्हें अवकाश दिया जायेगा।
86. और जब मुशर्रिक अपने (बनाये हुये) साक्षियों को देखेंगे तो कहेंगे: हे हमारे पालनहार! यही हमारे साक्षी हैं जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकार रहे थे। तो वह (पूज्य) बोलेंगे कि निश्चय तुम सब मिथ्यावादी (झुठे) हो।
87. उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जायेंगे, और उन से खो जायेंगी जो मिथ्या बातें वह बनाते थे।
88. जो लोग काफ़िर हो गये और (दूसरों को भी) अल्लाह की डगर (इस्लाम) से रोक दिये, उन्हें हम यातना पर यातना देंगे, उस उपद्रव के बदले जो वे कर रहे थे।
89. और जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी उन के विरुद्ध उन्हीं में से खड़ा कर देंगे। और (हे नबी!) हम आप को उन पर साक्षी (गवाह) बनायेंगे। और हम ने आप पर यह पुस्तक (क़ुर्आन) अवतरित की है जो प्रत्येक विषय का खुला विवरण है। तथा मार्ग दर्शन और दया तथा शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।
90. वस्तुतः अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है। और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा है। और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।
91. और जब अल्लाह से कोई वचन करो तो उसे पूरा करो। और अपनी शपथों को सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग न करो, जब तुम ने अल्लाह को अपने ऊपर गवाह बनाया है। निश्चय अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है।
92. और तुम्हारी दशा उस स्त्री जैसी न हो जाये जिस ने अपना सूत कातने के पश्चात् उधेड़ दिया। तुम अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन बनाते हो ताकि एक

समुदाय दूसरे समुदाय से अधिक लाभ प्राप्त करें। अल्लाह इस (वचन) के द्वारा तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। और प्रलय के दिन तुम्हारे लिये अवश्य उसे उजागर कर देगा जिस में तुम विभेद कर रहे थे।

93. और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक समुदाय बना देता। परन्तु वह जिसे चाहता है कुपथ कर देता है, और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और तुम से उस के बारे में अवश्य पूछा जायेगा जो तुम कर रहे थे।
94. और अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन न बनाओ, ऐसा न हो कि कोई पग अपने स्थिर (दृढ़) होने के पश्चात् (ईमान से) फिसल जाये और तुम उस के बदले बुरा परिणाम चखो कि तुम ने अल्लाह की राह से रोका है। और तुम्हारे लिये बड़ी यातना हो।
95. और अल्लाह से किये हुये वचन को तनिक मूल्य के बदले न बेचो। वास्तव में जो अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम जानो।
96. जो तुम्हारे पास है वह व्यय (खर्च) हो जायेगा। और जो अल्लाह के पास है वह शेष रह जाने वाला है। और हम, जो धैर्य धारण करते हैं उन्हें अवश्य उन का पारिश्रमिक (बदला) उन के उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे।
97. जो भी सदाचार करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान वाला हो तो हम उसे स्वच्छ जीवन

व्यतीत करायेंगे। और उन्हें उन का पारिश्रमिक उन के उत्तम कर्मों के अनुसार अवश्य प्रदान करेंगे।

98. तो (हे नबी!) जब आप कुर्आन का अध्ययन करें तो धिक्कारे हुये शैतान से अल्लाह की शरण माँग लिया करें।
99. वस्तुतः उस का वश उन पर नहीं है जो ईमान लाये हैं, और अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।
100. उस का वश तो केवल उन पर चलता है जो उसे अपना संरक्षक बनाते हैं। और जो मिश्रणवादी (मुश्रिक) हैं।
101. और जब हम किसी आयत (विधान) के स्थान पर कोई आयत बदल देते हैं, और अल्लाह ही अधिक जानता है उसे जिस को वह उतारता है, तो कहते हैं कि आप तो केवल घड़ लेते हैं, बल्कि उन में अधिकतर जानते ही नहीं।
102. आप कह दें कि इसे ((रूहुल कुदुस)) ने आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ क्रमशः उतारा है ताकि उन्हें सुदृढ़ कर दे जो ईमान लाये हैं। तथा मार्ग दर्शन और शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।
103. तथा हम जानते हैं कि वे (काफिर) कहते हैं कि उसे (नबी को) कोई मनुष्य सिखा रहा है। जब कि उस की भाषा जिस की ओर संकेत करते हैं विदेशी है और यह स्पष्ट अर्बी भाषा है।
104. वास्तव में जो अल्लाह की आयतों पर

ईमान नहीं लाते, उन्हें अल्लाह सुपथ नहीं दर्शाता। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

105. झूठ केवल वही घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, और वही मिथ्यावादी (झूठे) हैं।
106. जिस ने अल्लाह के साथ कुफ़ किया अपने ईमान लाने के पश्चात्, परन्तु जो बाध्य कर दिया गया हो इस दशा में कि उस का दिल ईमान से संतुष्ट हो, (उस के लिये क्षमा है)। परन्तु जिस ने कुफ़ के साथ सीना खोल दिया हो, तो उन्हीं पर अल्लाह का प्रकोप है, और उन्हीं के लिये महा यातना है।
107. यह इसलिये कि उन्हीं ने संसारिक जीवन को परलोक पर प्राथमिकता दी है। और वास्तव में अल्लाह, काफ़िरो को सुपथ नहीं दिखाता।
108. वही लोग हैं जिन के दिलों तथा कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है। तथा यही लोग अचेत हैं।
109. निश्चय वही लोग परलोक में क्षतिग्रस्त होने वाले हैं।
110. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन लोगों के लिये जिन्होंने हिजरत (प्रस्थान) की, और उस के पश्चात् परीक्षा में डाले गये, फिर जिहाद किया, और सहन शील रहे, वास्तव में आप का पालनहार इस (परीक्षा) के पश्चात् बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

111. जिस दिन प्रत्येक प्राणी को अपने बचाव की चिन्ता होगी, और प्रत्येक प्राणी को उस के कर्मों का पूरा बदला दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
112. अल्लाह ने एक बस्ती का उदाहरण दिया है, जो शान्त संतुष्ट थी, उस की जीविका प्रत्येक स्थान से प्राचुर्य के साथ पहुँच रही थी, तो उस ने अल्लाह के उपकारों के साथ कुफ़ किया। तब अल्लाह ने उसे भूख और भय का वस्त्र चखा दिया उस के बदले जो वह कर रहे थे।
113. और उन के पास एक रसूल उन्हीं में से आया तो उन्हीं ने उसे झुठला दिया। अतः उन्हीं यातना ने पकड़ लिया, और वह अत्याचारी थे।
114. अतः उस में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें हलाल (वैध) स्वच्छ जीविका प्रदान की है। और अल्लाह का उपकार मानो यदि तुम उसी की इबादत (बंदना) करते हो।
115. जो कुछ उस ने तुम पर हराम (अवैध) किया है वह मुर्दार तथा रक्त और सूअर का मांस है, और जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम लिया गया हो, फिर जो भूख से आतुर हो जाये, इस दशा में कि वह नियम न तोड़ रहा हो, और न आवश्यकता से अधिक खाये, तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
116. और मत कहो -उस झूठ के कारण जो तुम्हारी जुबानों पर आ जाये-

कि यह हलाल (वैध) है, और यह हराम (अवैध) है ताकि अल्लाह पर मिथ्यारोप करो। वास्तव में जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोप करते हैं वह (कभी) सफल नहीं होते।

117. (इस मिथ्यारोपण का) लाभ तो थोड़ा है और उन्हीं के लिये (परलोक में) दुःखदायी यातना है।
118. और उन पर जो यहूदी हो गये, हम ने उसे हराम (अवैध) कर दिया जिस का वर्णन हम ने इस से पहले आप से कर दिया है। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वे स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।
119. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन्हें जो अज्ञानता के कारण बुराई कर बैठे, फिर उस के पश्चात् क्षमायाचना कर ली, और अपना सुधार कर लिया, वास्तव में आप का पालनहार इस के पश्चात् अति क्षमी दयावान् है।
120. वास्तव में इब्राहीम एक समुदाय था, अल्लाह का आज्ञाकारी एकेश्वरवादी था। और मिश्रणवादियों (मुश्रिकों) में से नहीं था।
121. उस के उपकारों को मानता था, उस ने उसे चुन लिया, और उसे सीधी राह दिखा दी।
122. और हम ने उसे संसार में भलाई दी, और वास्तव में वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

123. फिर हम ने (हे नबी!) आप की ओर वही की, कि एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करो, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।
124. सब्त (शनिवार का दिन) तो उन्हीं पर निर्धारित किया गया जिन्होंने उस में विभेद किया। और वस्तुतः आप का पालनहार उन के बीच उस में निर्णय कर देगा जिस में वे विभेद कर रहे थे।
125. (हे नबी!) आप उन्हें अपने पालनहार की राह (इस्लाम) की ओर तत्त्वदर्शिता तथा सदुपदेश के साथ बुलायें। और उन से ऐसे अन्दाज़ में शास्त्रार्थ करें जो उत्तम हो। वास्तव में अल्लाह उसे अधिक जानता है, जो उस की राह से विचलित हो गया, और वही सुपथों को भी अधिक जानता है।
126. और यदि तुम लोग बदला लो, तो उतना ही लो, जितना तुम्हें सताया गया हो। और यदि सहन कर जाओ तो सहनशीलों के लिये यही उत्तम है।
127. और (हे नबी!) आप सहन करें, और आप का सहन करना अल्लाह ही की सहायता से है। और उन के (दुर्व्यवहार) पर शोक न करें, और न उन के षड्यंत्र से तनिक भी संकुचित हों।
128. वास्तव में अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो सदाचारी हैं, और जो उपकार करने वाले हैं।



सुरह बनी इस्राईल - 17

सुरह बनी इस्राईल के संक्षिप्त विषय
यह सुरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. पवित्र है वह जिस ने रात्रि के कुछ क्षण में अपने भक्त को मस्जिदे हराम (मक्का) से मस्जिदे अक्सा तक यात्रा कराई। जिस के चतुर्दिगं हम ने सम्पन्नता रखी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियों का दर्शन करायें। वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
2. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की और उसे बनी इस्राईल के लिये मार्गदर्शन का साधन बनाया कि मेरे सिवा किसी को कार्यसाधक न बनाओ।
3. हे उन की संतति जिन को हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया। वास्तव में वह अति कृतज्ञ भक्त था।
4. और हम ने बनी इस्राईल को उन की पुस्तक में सूचित कर दिया था कि तुम इस धरती में दो बार उपद्रव करोगे, और बड़ा अत्याचार करोगे।
5. तो जब प्रथम उपद्रव का समय आया तो हम ने तुम पर अपने प्रबल योद्धा भक्तों को भेज दिया, जो नगरों में घुस गये, और इस वचन को पूरा होना ही था।
6. फिर हम ने उन पर तुम्हें पुनः प्रभुत्व

दिया, तथा धनों और पुत्रों द्वारा तुम्हारी सहायता की, और तुम्हारी संख्या बहुत अधिक कर दी।

7. यदि तुम भला करोगे तो अपने लिये, और यदि बुरा करोगे तो अपने लिये। फिर जब दूसरे उपद्रव का समय आया ताकि (शत्रु) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और मस्जिद (अक्सा) में वैसे ही प्रवेश कर जायें जैसे प्रथम बार प्रवेश कर गये, और ताकि जो भी उन के हाथ आये उसे पूर्णतः नाश कर दें।
8. संभव है कि तुम्हारा पालनहार तुम पर दया करे। और यदि तुम प्रथम स्थिति पर आ गये, तो हम भी फिर आयेंगे, और हम ने नरक को काफ़िरो के लिये कारावास बना दिया है।
9. वास्तव में यह कुर्आन वह डगर दिखाता है जो सब से सीधी है, और उन ईमान वालों को शुभसूचना देता है जो सदाचार करते हैं, कि उन्हीं के लिये बहुत बड़ा प्रतिफल है।
10. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिये दुःखदायी यातना तय्यार कर रखी है।
11. और मनुष्य (क्षुब्ध हो कर) अभिशाप करने लगता है, जैसे भलाई के लिये प्रार्थना करता है। और मनुष्य बड़ा ही उतावला है।
12. और हम ने रात्रि तथा दिवस को दो प्रतीक बनाया, फिर रात्रि के प्रतीक को हम ने अंधकार बनाया तथा दिवस के प्रतीक को प्रकाशयुक्त, ताकि तुम अपने पालनहार के अनुग्रह

(जीविका) की खोज करो। और वर्षों तथा हिसाब की गिनती जानो, तथा हम ने प्रत्येक चीज़ का सविस्तार वर्णन कर दिया।

13. और प्रत्येक मनुष्य के कर्म पत्र को हम ने उस के गले का हार बना दिया है। और हम उस के लिये प्रलय के दिन एक कर्मलेख निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पायेगा।
14. अपना कर्मलेख पढ़ लो, आज तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिये पर्याप्त है।
15. जिस ने सीधी राह अपनायी, उस ने अपने ही लिये सीधी राह अपनायी। और जो सीधी राह से विचलित हो गया उस का (दुष्परिणाम) उसी पर है। और कोई दूसरे का बोझ (अपने ऊपर) नहीं लादेगा। और हम यातना देने वाले नहीं हैं जब तक कि कोई रसूल न भेजें।
16. और जब हम किसी बस्ती का विनाश करना चाहते हैं तो उस के सम्पन्न लोगों को आदेश देते हैं, फिर वह उस में उपद्रव करने लगते हैं तो उस पर यातना की बात सिद्ध हो जाती है, और हम उस का पूर्णतः उन्मूलन कर देते हैं।
17. और हम ने बहुत सी जातियों का नूह के पश्चात् विनाश किया है। और आप का पालनहार अपने दासों के पापों से सूचित होने-देखने को बहुत है।
18. जो संसार ही चाहता हो हम उसे यही दे देते हैं, जो हम चाहते हैं, जिस के लिये चाहते हैं। फिर हम उस का परिणाम (परलोक में) नरक बना देते हैं, जिस में वह निन्दित-तिरस्कृत

हो कर प्रवेश करेगा।

19. तथा जो परलोक चाहता हो और उस के लिये प्रयास करता हो, और वह एकेश्वरवादी हो, तो वही है जिन के प्रयास का आदर सम्मान किया जायेगा।
20. हम प्रत्येक की सहायता करते हैं, इन की भी और उन की भी, और आप के पालनहार का प्रदान (किसी से) निषेधित (रोका हुआ) नहीं है।
21. आप विचार करें कि कैसे हम ने (संसार में) उन में से कुछ को कुछ पर प्रधानता दी है और निश्चय परलोक के पद और प्रधानता और भी अधिक होगी।
22. (हे मानव!) अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना, अन्यथा बुरा और असहाय हो कर रह जायेगा।
23. और (हे मनुष्य!) तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो, तथा माता - पिता के साथ उपकार करो, यदि तेरे पास दोनों में से एक वृद्धावस्था को पहुँच जाये अथवा दोनों, तो उन्हें उफ तक न कहो, और न झिड़को। और उन से सादर बात बोलो।
24. और उन के लिये विनम्रता का बाजू दया से झुका दो, और प्रार्थना करो: हे मेरे पालनहार! उन दोनों पर दया कर, जैसे उन दोनों ने बाल्यावस्था में मेरा लालन-पालन किया है।
25. तुम्हारा पालनहार अधिक जानता है जो कुछ तुम्हारी अन्तरात्माओं (मन) में है। यदि तुम सदाचारी रहे, तो वह अपनी ओर ध्यानमग्न रहने वालों के

लिये अति क्षमावान् है।

26. और समीपवर्तियों को उन का स्वत्व (हिस्सा) दो, तथा दरिद्र और यात्री को, और अपव्यय न करो।
27. वास्तव में अपव्ययी शैतान के भाई हैं और शैतान अपने पालनहार का अति कृतघ्न है।
28. और यदि आप उन से विमुख हों अपने पालनहार की दया की खोज के लिये जिस की आशा रखते हैं तो उन से सरल बात बोलें।
29. और अपना हाथ अपनी गरदन से न बांध लो, और न उसे पूरा खोल दो कि निन्दित विवश हो कर रह जाओ।
30. वास्तव में आप का पालनहार ही विस्तृत कर देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है, तथा संकीर्ण कर देता है। वास्तव में वही अपने दासों (बंदों) से अति सूचित देखने वाला है।
31. और अपनी संतान को निर्धन हो जाने के भय से बध न करो, हम उन्हें तथा तुम्हें जीविका प्रदान करेंगे, वास्तव में उन्हें बध करना महा पाप है।
32. और व्यभिचार के समीप भी न जाओ, वास्तव में वह निर्लज्जा तथा बुरी रीति है।
33. और किसी प्राण को जिसे अल्लाह ने हराम (अवैध) किया है, बध न करो, परन्तु धर्म विधान के अनुसार। और जो अत्यचार से बध (निहत) किया गया हो हम ने उस के उत्तराधिकारी को अधिकार प्रदान किया है। अतः वह बध करने में अतिक्रमण न करे,

वास्तव में उसे सहायता दी गयी है।

34. और अनाथ के धन के समीप भी न जाओ, परन्तु ऐसी रीति से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये, और वचन पूरा करो, वास्तव में वचन के विषय में प्रश्न किया जायेगा।
35. और पूरा नाप कर दो, जब नापो, और सही तराजू से तौलो। यह अधिक अच्छा और इस का परिणाम उत्तम है।
36. और ऐसी बात के पीछे न पड़ो, जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न हो, निश्चय कान तथा आँख और दिल इन सब के बारे में (प्रलय के दिन) प्रश्न किया जायेगा।
37. और धरती में अकड़ कर न चलो, वास्तव में न तुम धरती को फाड़ सकोगे, और न लम्बाई में पर्वतों तक पहुँच सकोगे।
38. यह सब बातें हैं। इन में बुरी बात आप के पालनहार को अप्रिय है।
39. यह तत्त्वदर्शिता की वह बातें हैं, जिन की बह्नी (प्रकाशना) आप की ओर आप के पालनहार ने की है, और अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना लेना, अन्यथा नरक में निन्दित तिरस्कृत कर के फेंक दिये जाओगे।
40. क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें पुत्र प्रदान करने के लिये विशेष कर लिया है, और स्वयं ने फरिश्तों को पुत्रियाँ बना लिया है? वास्तव में तुम बहुत बड़ी बात कह रहे हो।
41. और हम ने विविध प्रकार से इस

कुर्आन में (तथ्यों का) वर्णन कर दिया है, ताकि लोग शिक्षा ग्रहण करें। परन्तु उस ने उन की घृणा को और अधिक कर दिया।

42. आप कह दें कि यदि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य होते, जैसा कि वह (मिश्रणवादी) कहते हैं, तो वह अर्श (सिंहासन) के स्वामी (अल्लाह) की ओर अवश्य कोई राह खोजते।
43. वह पवित्र और बहुत उच्च है, उन बातों से जिन को वे बनाते हैं।
44. उस की पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है। और नहीं है कोई चीज़ परन्तु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है, किन्तु तुम उन के पवित्रता गान को समझते नहीं हो। वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है।
45. और जब आप कुर्आन पढ़ते हैं, तो हम आप के बीच और उन के बीच जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, एक छुपा हुआ आवरण (पर्दा) बना देते हैं।
46. तथा उन के दिलों पर ऐसे खोल चढ़ा देते हैं कि उस (कुर्आन) को न समझें, और उन के कानों में बोझ। और जब आप अपने अकेले पालनहार की चर्चा कुर्आन में करते हैं तो वह घृणा से मुँह फेर लेते हैं।
47. और हम उन के विचारों से भली भाँति अवगत हैं, जब वे कान लगा कर आप की बात सुनते हैं, और जब वे आपस में कानाफूसी करते हैं। जब वे अत्याचारी करते हैं कि

तुम लोग तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण करते हो।

48. सोचिये कि वह आप के लिये कैसे उदाहरण दे रहे हैं? अतः वे कुपथ हो गये, वह सीधी राह नहीं पा सकेंगे।
49. और उन्होंने ने कहा: क्या हम जब अस्थियों और चूर्ण विचूर्ण हो जायेंगे तो क्या हम वास्तव में नई उत्पत्ति में पुनः जीवित कर दिये जायेंगे?
50. आप कह दें कि पत्थर बन जाओ, या लोहा।
51. अथवा कोई उत्पत्ति जो तुम्हारे मन में इस से बड़ी हो। फिर वे पूछते हैं कि कौन हमें पुनः जीवित करेगा? आप कह दें: वही जिस ने प्रथम चरण में तुम्हारी उत्पत्ति की है। फिर वह आप के आगे सिर हिलायेंगे, और कहेंगे: ऐसा कब होगा? आप कह दें कि संभवतः वह समीप ही है।
52. जिस दिन वे तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की प्रशंसा करते हुये स्वीकार कर लोगे और यह सोचोगे कि तुम (संसार में) थोड़े ही समय रहे हो।
53. और आप मेरे भक्तों से कह दें कि वह बात बोलें जो उत्तम हो, वास्तव में शैतान उन के बीच बिगाड़ उत्पन्न करना चाहता है। निश्चय शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।
54. तुम्हारा पालनहार तुम से भली भाँति अवगत है, यदि चाहे तो तुम पर दया करे, अथवा यदि चाहे तो तुम्हें यातना दे, और हम ने आप को उन पर निरीक्षक बना कर नहीं भेजा है।
55. (हे नबी!) आप का पालनहार भली

भाँति अवगत है उस से जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने प्रधानता दी है कुछ नवियों को कुछ पर, और हम ने दावूद को ज़बूर (पुस्तक) प्रदान की।

56. आप कह दें कि उन को पुकारो, जिन को उस (अल्लाह) के सिवा (पूज्य) समझते हो। न वे तुम से दुख दूर कर सकते, और न (तुम्हारी दशा) बदल सकते हैं।
57. वास्तव में जिन को यह लोग पुकारते हैं वह स्वयं अपने पालनहार का सामिप्य प्राप्त करने का साधन खोजते हैं, कि कौन अधिक समीप है? और उस की दया की आशा रखते हैं। और उस की यातना से डरते हैं। वास्तव में आप के पालनहार की यातना डरने योग्य है।
58. और कोई (अत्याचारी) बस्ती नहीं है, परन्तु हम उसे प्रलय के दिन से पहले ध्वस्त करने वाले या कड़ी यातना देने वाले हैं। यह (अल्लाह के) लेख में अंकित है।
59. और हमें नहीं रोका इस से कि हम निशानियाँ भेजें किन्तु इस बात ने कि विगत लोगों ने उन्हें झुठला दिया। और हम ने समूद को ऊँटनी का खुला चमत्कार दिया, तो उन्होंने ने उस पर अत्याचार किया। और हम चमत्कार डराने के लिये ही भेजते हैं।
60. और (हे नबी!) याद करो जब हम ने आप से कह दिया था कि आप के पालनहार ने लोगों को अपने नियंत्रण में ले रखा है, और यह जो कुछ हम ने आप को दिखाया उस को

और उस वृक्ष को जिस पर कुर्आन में धिक्कार की गयी है, हम ने लोगों के लिये एक परीक्षा बना दिया है, और हम उन्हें चेतावनी पर चेतावनी दे रहे हैं, फिर भी वह उन की अवैज्ञा को ही अधिक करती जा रही है।

61. और (याद करो), जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सजदा किया। उस ने कहा: क्या मैं उसे सजदा करूँ जिसे तू ने गारे से उत्पन्न किया है?
62. (तथा) उस ने कहा: तू बता, क्या यही है जिसे तूने मुझ पर प्रधानता दी है? यदि तू ने मुझे प्रलय के दिन तक अवसर दिया तो मैं उस की संतति को अपने नियंत्रण में कर लूँगा कुछ के सिवा।
63. अल्लाह ने कहा: "चले जाओ", जो उन में से तेरा अनुसरण करेगा तो निश्चय नरक तुम सब का प्रतिकार (बदला) है, भरपूर बदला।
64. तू उन में से जिस को हो सके अपनी ध्वनि^[1] से बहका लो और उन पर अपनी सवार और पैदल (सेना) चढ़ा लो और उन का (उन के) धनों और संतान में साझी बन जा। तथा उन्हें (मिथ्या) वचन दे। और शैतान उन्हें धोखे के सिवा (कोई) वचन नहीं देता।
65. वास्तव में जो मेरे भक्त हैं उन पर तेरा कोई वश नहीं चल सकता। और आप के पालनहार का सहायक होना यह बहुत है।
66. तुम्हारा पालनहार तो वह है जो तुम्हारे लिये सागर में नौका चलाता

है, ताकि तुम उस की जीविका की खोज करो, वास्तव में वह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

67. और जब सागर में तुम पर कोई आपदा आ पड़ती है, तो अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो खो जाते (भूल जाते) हो। और जब तुम्हें बचा कर थल तक पहुँचा देता है तो मुख फेर लेते हो। और मनुष्य है हि अति कृतघ्न।
68. क्या तुम निर्भय हो गये हो कि अल्लाह तुम्हें थल (धरती) ही में धंसा दे? अथवा तुम पर पथरीली आँधी भेज दे? फिर तुम अपना कोई रक्षक न पाओ।
69. या तुम निर्भय हो गये हो कि फिर उस (सागर) में तुम को दूसरी बार ले जाये, फिर तुम पर वायु का प्रचण्ड झोंका भेज दे, फिर तुम को डूबो दे, उस कुफ़्र के बदले जो तुम ने किया है। फिर तुम अपने लिये उसे नहीं पाओगे जो हम पर इस का दोष धरो।
70. और हम ने बनी आदम (मानव) को प्रधानता दी, और उन्हें थल और जल में सवार किया, और उन्हें स्वच्छ चीज़ों से जीविका प्रदान की, और हम ने उन्हें बहुत सी उन चीज़ों पर प्रधानता दी जिन की हम ने उत्पत्ति की है।
71. जिस दिन हम सब लोगों को उन के अग्रणी के साथ बुलायेंगे तो जिन का कर्मलेख उन के सीधे हाथ में दिया जायेगा तो वही अपना कर्मलेख पढ़ेंगे, और उन पर धागे बराबर भी अत्याचार नहीं किया जयेगा।

72. और जो इस (संसार) में अन्धा⁽³⁾ रह गया तो वह आखिरत (परलोक) में भी अन्धा और अधिक कुपथ होगा।
73. और (हे नबी!) वह (काफ़िर) समीप था कि आप को उस वही से फेर दें, जो हम ने आप की ओर भेजी है, ताकि आप हमारे ऊपर अपनी ओर से कोई दूसरी बात घड़ लें, और उस समय वह आप को अवश्य अपना मित्र बना लेते।
74. और यदि हम आप को सुदृढ़ न रखते, तो आप उन की ओर कुछ न कुछ झुक जाते।
75. तब हम आप को जीवन की दुगुनी तथा मरण की दोहरी यातना चखाते। फिर आप अपने लिये हमारे ऊपर कोई सहायक न पाते।
76. और समीप है कि वह आप को इस धरती (मक्का) से विचला दें, ताकि आप को उस से निकाल दें, तब वह आप के पश्चात् कुछ ही दिन रह सकेंगे।
77. यह उस के लिये नियम रहा है जिसे हम ने आप से पहले अपने रसूलों में से भेजा है। और आप हमारे नियम में कोई परिवर्तन नहीं पायेंगे।
78. आप नमाज़ की स्थापना करें सूर्यास्त से रात के अन्धेरे तक, तथा प्रातः (फज़्र के समय) कुर्आन पढ़िये। वास्तव में प्रातः कुर्आन पढ़ना उपस्थिति का समय है।
79. तथा आप रात के कुछ समय जागिये फिर "तहज्जुद" पढ़िये। यह आप के लिये अधिक (नफ़ल) है। संभव है आप का पालनहार आप को (मक़ामे

महमूद) प्रदान कर दे।

80. और प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! मुझे प्रवेश दे सत्य के साथ, और निकाल सत्य के साथ। तथा मेरे लिये अपनी ओर से सहायक प्रभुत्व बना दे।
81. तथा कहिये कि सत्य आ गया, और असत्य ध्वस्त-निरस्त हो गया, वास्तव में असत्य को ध्वस्त-निरस्त होना ही है।
82. और हम कुर्आन में वह चीज़ उतार रहे हैं, जो आरोग्य तथा दया है ईमान वालों के लिये। और वह अत्याचारियों की क्षति को ही अधिक करता है।
83. और जब हम मानव पर उपकार करते हैं, तो मुख फेर लेता है और दूर हो जाता है। तथा जब उसे दुःख पहुँचता है, तो निराश हो जाता है।
84. आप कह दें कि प्रत्येक अपनी आस्था के अनुसार कर्म कर रहा है, तो आप का पालनहार ही भली भाँति जान रहा है कि कौन अधिक सीधी डगर पर है।
85. (हे नबी!) लोग आप से रूह के विषय में पूछते हैं, आप कह दें रूह मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुम्हें जो ज्ञान दिया गया वह बहुत थोड़ा है।
86. और यदि हम चाहें तो वह सब कुच्छ ले जायें जो आप की ओर हम ने बढ़ी किया है, फिर आप हम पर अपना कोई सहायक नहीं पायेंगे।
87. किन्तु आप के पालनहार की दया के कारण (यह आप को प्राप्त है) वास्तव में उस का प्रदान आप पर

बहुत बड़ा है।

88. आप कह दें: यदि सब मनुष्य तथा जिन्न इस पर एकत्र हो जायें कि इस कुर्आन के समान ला देंगे, तो इस के समान नहीं ला सकेंगे, चाहे वह एक दूसरे के समर्थक ही क्यों न हो जायें।
89. और हम ने लोगों के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण विविध शैली में वर्णित किया है, फिर भी अधिकतर लोगों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया है।
90. और उन्होंने ने कहा: हम आप पर कदापि ईमान नहीं लायेंगे, यहाँ तक कि आप हमारे लिये धरती से एक चश्मा प्रवाहित कर दें।
91. अथवा आप के लिये खजूर अथवा अँगूर का कोई बाग़ हो, फिर उस के बीच आप नहरें प्रवाहित कर दें।
92. अथवा हम पर आकाश को जैसा आप का विचार है, खण्ड-खण्ड कर के गिरा दें, या अल्लाह और फ़रिश्तों को साक्षात् हमारे सामने ला दें।
93. अथवा आप के लिये सोने का एक घर हो जाये, अथवा आकाश में चढ़ जायें, और हम आप के चढ़ने का भी कदापि विश्वास नहीं करेंगे, यहाँ तक की हम पर एक पुस्तक उतार लायें जिसे हम पढ़ें। आप कह दें कि मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो बस एक रसूल (संदेशवाहक) मनुष्य हूँ।
94. और नहीं रोका लोगों को कि वह ईमान लायें, जब उन के पास मार्गदर्शन आ गया, परन्तु इस ने

- कि उन्होंने ने कहा: क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है?
95. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि धरती में फ़रिश्ते निश्चिन्त हो कर चलते-फिरते होते, तो हम अवश्य उन पर आकाश से कोई फ़रिश्ता रसूल बना कर उतारते।
96. आप कह दें कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य बहुत है। वास्तव में वह अपने दासों (बंदों) से सूचित, सब को देखने वाला है।
97. जिसे अल्लाह सुपथ दिखा दे, वही सुपथगामी है। और जिसे कुपथ कर दे तो आप कदापि नहीं पायेंगे उन के लिये उस के सिवा कोई सहायक। और हम उन्हें एकत्र करेंगे प्रलय के दिन उन के मुखों के बल अंधे तथा गूंगे और बहरे बना कर। और उन का स्थान नरक है, जब भी वह बुझने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे।
98. यही उन का प्रतिकार (बदला) है, इस लिये कि उन्होंने ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया, और कहा: क्या जब हम अस्थिराँ और चूर-चूर हो जायेंगे तो नई उत्पत्ति में पुनः जीवित किये जायेंगे?
99. क्या वह विचार नहीं करते कि जिस अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की है, वह समर्थ है इस बात पर कि उन के जैसी उत्पत्ति कर दे? तथा उस ने उन के लिये एक निर्धारित अवधि बनायी है, जिस में कोई संदेह नहीं है। फिर भी अत्याचारियों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया।
100. आप कह दें कि यदि तुम ही स्वामी होते अपने पालनहार की दया के कोषों के, तब तो तुम खर्च हो जाने के भय से (अपने ही पास) रोक रखते, और मनुष्य बड़ा ही कंजूस है।
101. और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दी^{थी}, अतः बनी इस्राईल से आप पूछ लें, जब वह (मूसा) उन के पास आया, तो फ़िरऔन ने उस से कहा: हे मूसा! मैं समझता हूँ कि तुझ पर जादू कर दिया गया है।
102. उस (मूसा) ने उत्तर दिया: तूझे विश्वास है कि इन को आकाशों तथा धरती के पालनहार ही ने सोच-विचार करने के लिये उतारा है, और हे फ़िरऔन! मैं तुम्हें निश्चय ध्वस्त समझता हूँ।
103. अन्ततः उस ने निश्चय किया कि उन को धरती से उखाड़ फेंके, तो हम ने उसे और उस के सब साथियों को डुबो दिया।
104. और हम ने उस के पश्चात् बनी इस्राईल से कहा: तुम इस धरती में बस जाओ। और जब आखिरत के वचन का समय आयेगा, तो हम तुम्हें एकत्र कर लायेंगे।
105. और हम ने सत्य के साथ ही इस (कुर्आन) को उतारा है, तथा वह सत्य के साथ ही उतरा है। और हम ने आप को बस शुभ सूचना देने तथा सावधान करने वाला बना कर भेजा है।
106. और इस कुर्आन को हम ने थोड़ा थोड़ा कर के उतारा है, ताकि आप लोगों को इसे रुक रुक कर सुनायें,

और हम ने इसे क्रमशः उतारा है।

107. आप कह दें कि तुम इस पर ईमान लाओ अथवा ईमान न लाओ, वास्तव में जिन को इस से पहले ज्ञान दिया गया है, जब उन्हें यह सुनाया जाता है, तो वह मुँह के बल सज्दे में गिर जाते हैं।
108. और कहते हैं: पवित्र है हमारा पालनहार! निश्चय हमारे पालनहार का वचन पूरा हो के रहा।
109. और वह मुँह के बल रोते हुये गिर जाते हैं। और वह उन की विनय को अधिक कर देता है।
110. हे नबी! आप कह दें कि (अल्लाह) कह कर पुकारो, अथवा (रहमान) कह कर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो, उस के सभी नाम शुभ हैं। और (हे नबी!) नमाज़ में स्वर न तो ऊँचा करो, और न उसे नीचा करो, और इन दोनों के बीच की राह अपनाओ।
111. तथा कहो कि सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस के कोई संतान नहीं, और न राज्य में उस का कोई साझी है। और न अपमान से बचाने के लिये उस का कोई समर्थक है। और आप उस की महिमा का वर्णन करें।

सुरह कहफ़ - 18

सुरह कहफ़ के संक्षिप्त विषय यह सुरह मक्की है, इस में 110 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस ने अपने भक्त पर यह पुस्तक उतारी। और उस में कोई टेढ़ी बात नहीं रखी।
2. अति सीधी (पुस्तक), ताकि वह अपने पास की कड़ी यातना से सावधान कर दे, और ईमान वालों को जो सदाचार करते हों, शुभ सूचना सुना दे कि उन्हीं के लिये अच्छा बदला है।
3. जिस में वे नित्य सदावासी होंगे।
4. और उन को सावधान करे जिन्होंने ने कहा कि अल्लाह ने अपने लिये कोई संतान बना ली है।
5. उन्हें इस का कुछ ज्ञान है, और न उन के पूर्वजों को। बहुत बड़ी बात है जो उन के मुखों से निकल रही है, वह सरासर झूठ ही बोल रहे हैं।
6. तो संभवतः आप इन के पीछे अपना प्राण खो देंगे संताप के कारण, यदि वह इस हदीस (कुर्आन) पर ईमान न लायें।
7. वास्तव में जो कुछ धरती के ऊपर है, उसे हम ने उस के लिये शोभा बनाया है, ताकि उन की परीक्षा लें कि उन में कौन कर्म में सब से अच्छा है।

8. और निश्चय हम कर देने वाले हैं, जो उस (धरती) के ऊपर है उसे (बंजर) धूल।
9. (हे नबी!) क्या आप ने समझा है कि गुफा तथा शिला लेख वाले, हमारे अद्भुत लक्षणों (निशानियों) में से थे?
10. जब नवयुवकों ने गुफा की ओर शरण ली, और प्रार्थना की: हे हमारे पालनहार! हमें अपनी विशेष दया प्रदान कर, और हमारे लिये प्रबंध कर दे हमारे विषय के सुधार का।
11. तो हमने उन्हें गुफा में सुला दिया कई वर्षों तक।
12. फिर हम ने उन्हें जगा दिया ताकि हम यह जान लें कि दो समुदायों में से किस ने उन के ठहरे रहने की अवधि को अधिक याद रखा है?
13. हम आप को उन की सत्य कथा सुना रहे हैं। वास्तव में वे कुछ नवयुवक थे, जो अपने पालनहार पर ईमान लाये, और हम ने उन्हें मार्गदर्शन में अधिक कर दिया।
14. और हम ने उन के दिलों को सुदृढ़ कर दिया जब वे खड़े हुये, फिर कहा: हमारा पालनहार वही है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है। हम उस के सिवा कदापि किसी पूज्य को नहीं पुकारेंगे। (यदि हम ने ऐसा किया) तो (सत्य से) दूर की बात होगी।
15. यह हमारी जाति है, जिस ने अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य बना लिये। क्यों वे उन पर कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या बात बनाये?
16. और जब तुम उन से विलग हो गये तथा अल्लाह के अतिरिक्त उन के पूज्यों से, तो अब अमुक गुफा की ओर शरण लो, अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी दया फैला देगा, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे विषय में जीवन के साधनों का प्रबंध करेगा।
17. और तुम सूर्य को देखोगे, कि जब निकलता है, तो उन की गुफा से दायें झुक जाता है, और जब डूबता है, तो उन से बायें कतरा जाता है। और वह उस (गुफा) के एक विस्तृत स्थान में है। यह अल्लाह की निशानियों में से है, और जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे वही सुपथ पाने वाला है। और जिसे कुपथ कर दे तो तुम कदापि उस के लिये कोई सहायक मार्ग दर्शक नहीं पाओगे।
18. और तुम उन्हें समझोगे कि जाग रहे हैं जब कि वह सोये हुये हैं और हम उन्हें दायें तथा बायें पार्श्व पर फिराते रहते हैं, और उन का कुत्ता गुफा के द्वार पर अपनी दोनों बाँहें फैलाये पड़ा है। यदि तुम झाँक कर देख लेते तो पीठ फेर कर भाग जाते, और उन से भय पूर्ण हो जाते।
19. और इसी प्रकार हम ने उन्हें जगा दिया ताकि वे आपस में प्रश्न करें तो एक ने उन में से कहा: तुम कितने (समय) रहे हो? सब ने कहा: हम एक दिन रहे हैं अथवा एक दिन के

कुछ (समय)। (फिर) सब ने कहा: अल्लाह अधिक जानता है कि तुम कितने (समय) रहे हो, तुम अपने में से किसी को अपना यह सिक्का दे कर नगर में भेजो, फिर देखे कि किस के पास अधिक स्वच्छ (पवित्र) भोजन है, और उस में से कुछ जीविका (भोजन) लाये, और चाहिये कि सावधानी बरतों ऐसा न हो कि तुम्हारा किसी को अनुभव हो जाये।

20. क्यों कि यदि वे तुम्हें जान जायेंगे तो तुम्हें पथराव कर के मार डालेंगे, या तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, और तब तुम कदापि सफल नहीं हो सकोगे।
21. इसी प्रकार हम ने उन से अवगत करा दिया, ताकि उन (नागरिकों) को ज्ञान हो जाये कि अल्लाह का वचन सत्य है, और यह कि प्रलय (होने) में कोई संदेह नहीं। जब वे आपस में विवाद करने लगे, तो कुछ ने कहा: उन पर कोई निर्माण करा दो, अल्लाह ही उन की दशा को भली भाँति जानता है। परन्तु उन्होंने ने कहा जो अपना प्रभुत्व रखते थे, हम अवश्य उन (की गुफा के स्थान) पर एक मस्जिद बनायेंगे।
22. कुछ कहेंगे कि वह तीन है, और चौथा उन का कुत्ता है। और कुछ कहेंगे कि पाँच है, और छठा उन का कुत्ता है। यह अन्धेरे में तीर चलाते हैं। और कहेंगे कि सात है, और आठवाँ उन का कुत्ता है। (हे नबी!) आप कह दें, कि मेरा पालनहार ही उन की संख्या भली भाँति जानता है, जिसे कुछ लोगों के सिवा कोई नहीं जानता। अतः आप उन के संबन्ध

में कोई विवाद न करें सिवाये सरसरी बात के, और न उन के विषय में किसी से कुछ पूछें।

23. और कदापि किसी विषय में न कहें कि मैं इसे कल करने वाला हूँ।
24. परन्तु यह कि अल्लाह चाहे, तथा अपने पालनहार को याद करें, जब भूल जायें। और कहें: संभव है मेरा पालनहार मुझे इस से अधिक समीप सुधार का मार्ग दर्शा दे।
25. और वे गुफा में तीन सौ वर्ष रहे। और नौ वर्ष अधिक और।
26. आप कह दें कि अल्लाह उन के रहने की अवधि से सर्वाधिक अवगत है। आकाशों तथा धरती का परोक्ष वही जानता है। क्या ही खूब है वह देखने वाला और सुनने वाला! नहीं है उन का उस के सिवा कोई सहायक, और न वह अपने शासन में किसी को साझी बनाता है।
27. और आप उसे सुना दें, जो आप की ओर वही (प्रकाशना) की गयी है आप के पालनहार की पुस्तक में से, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं है, और आप कदापि नहीं पायेंगे उस के सिवा कोई शरण स्थान।
28. और आप उन के साथ रहें जो अपने पालनहार की प्रातः-संध्या बंदगी करते हैं। वे उस की प्रसन्नता चाहते हैं और आप की आँखें संसारिक जीवन की शोभा के लिये उन से न फिरने पायें और उस की बात न मानें जिस के दिल को हम ने अपनी याद से निश्चेत कर दिया, और उस

- ने मनमानी की, और जिस का काम ही उल्लंघन (अवैज्ञा करना) है।
29. आप कह दें कि यह सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से तो जो चाहे ईमान लाये, और जो चाहे कुफ़्र करे, निश्चय हम ने अत्याचारियों के लिये ऐसी अग्नि तय्यार कर रखी है जिस की प्राचीर⁽¹⁾ ने उन को घेर लिया है, और यदि वह (जल के लिये) गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा जो मुखों को भून देगा, वह क्या ही बुरा पैय है! और वह क्या ही बुरा विश्राम स्थान है!
30. निश्चय जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तो हम उन का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करेंगे जो सदाचारी हैं।
31. यही है जिन के लिये स्थायी स्वर्ग है, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे। तथा महीन और गाढ़े रेशम के हरे वस्त्र पहनेंगे, उस में सिंहासनों के ऊपर आसीन होंगे। यह क्या ही अच्छा प्रतिफल और क्या ही अच्छा विश्राम स्थान है!
32. और (हे नबी!) आप उन्हें एक उदाहरण दो व्यक्तियों का दें, हम ने जिन में से एक को दो बाग़ दिये अँगूरों के, और घेर दिया दोनों को खजूरों से, और दोनों के बीच खेती बना दी।
33. दोनों बाग़ों ने अपने पुरे फल दिये, और उस में कुछ कमी नहीं की, और हम ने जारी कर दी दोनों के बीच एक नहर।
34. और उसे लाभ प्राप्त हुआ, तो एक दिन उस ने अपने साथी से कहा: और वह उस से बात कर रहा था, मैं तुझ से अधिक धनी हूँ, तथा स्वजनों में भी अधिक हूँ।
35. और उस ने अपने बाग़ में प्रवेश किया अपने ऊपर अत्याचार करते हुये, उस ने कहा: मैं नहीं समझता कि इस का विनाश हो जायेगा कभी।
36. और न यह समझता हूँ कि प्रलय होगी और यदि मुझे अपने पालनहार की ओर पुनः ले जाया गया, तो मैं अवश्य ही इस से उत्तम स्थान पाऊँगा।
37. उस से उस के साथी ने कहा, और वह उस से बात कर रहा था: क्या तू ने उस के साथ कुफ़्र कर दिया, जिस ने तुझे मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर वीर्य से, फिर तुझे बना दिया एक पूरा पुरुष?
38. रहा मैं तो वही अल्लाह मेरा पालनहार है, और मैं साझी नहीं बनाऊँगा अपने पालनहार का किसी को।
39. और क्यों नहीं जब तुम ने अपने बाग़ में प्रवेश किया, तो कहा कि "जो अल्लाह चाहे, अल्लाह की शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता।" यदि तू मुझे देखता है कि मैं तुझ से कम हूँ धन तथा संतान में,
40. तो आशा है कि मेरा पालनहार मुझे प्रदान कर दे तेरे बाग़ से अच्छा, और इस बाग़ पर आकाश से कोई आपदा भेज दे, और वह चिकनी भूमि बन जाये।
41. अथवा उस का जल भीतर उतर

जाये, फिर तू उसे पा न सके।

42. (अन्ततः) उस के फलों को घेर लिया गया, फिर वह अपने दोनों हाथ मलता रह गया उस पर जो उस में खर्च किया था। और वह अपने छप्परों सहित गिरा हुआ था, और कहने लगा: क्या ही अच्छा होता कि मैं किसी को अपने पालनहार का साझी न बनाता।
43. और नहीं रह गया उस के लिये कोई जत्था जो उस की सहायता करता और न स्वयं अपनी सहायता कर सका।
44. यही सिद्ध हो गया कि सब अधिकार सत्य अल्लाह को है, वही अच्छा है प्रतिफल प्रदान करने में, तथा अच्छा है परिणाम लाने में।
45. और (हे नबी!) आप उन्हें संसारिक जीवन का उदाहरण दें उस जल से जिसे हम ने आकाश से बरसाया। फिर उस के कारण मिल गई धरती की उपज, फिर चूर हो गई जिसे वायु उड़ाये फिरती है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है।
46. धन और पुत्र संसारिक जीवन की शोभा हैं। और शेष रह जाने वाले सत्कर्म ही अच्छे हैं आप के पालनहार के यहाँ प्रतिफल में, तथा अच्छे हैं आशा रखने के लिये।
47. तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे, तथा तुम धरती को खुला चटेल देखोगे। और हम उन्हें एकत्र कर देंगे, फिर उन में से किसी को नहीं छोड़ेंगे।
48. और सभी आप के पालनहार के

समक्ष पंक्तियों में प्रस्तुत किये जायेंगे, तुम हमारे पास आ गये जैसे हम ने तुम्हारी उत्पत्ति प्रथम बार की थी, बल्कि तुम ने समझा था कि हम तुम्हारे लिये कोई वचन का समय निर्धारित ही नहीं करेंगे।

49. और कर्म लेख (सामने) रख दिये जायेंगे, तो आप अपराधियों को देखेंगे कि उस से डर रहे हैं जो कुछ उस में (अंकित) है, तथा कहेंगे कि हाय हमारा विनाश! यह कैसी पुस्तक है जिस ने किसी छोटे और बड़े कर्म को नहीं छोड़ा है, परन्तु उसे अंकित कर रखा है? और जो कर्म उन्होंने ने किये हैं उन्हें वह सामने पायेंगे, और आप का पालनहार किसी पर अत्याचार नहीं करेगा।
50. तथा (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा: आदम को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा। वह जिर्बों में से था, अतः उस ने उल्लंघन किया अपने पालनहार की आज्ञा का, तो क्या तुम उस को और उस कि संतति को सहायक मित्र बनाते हो मुझे छोड़ कर जब कि वह तुम्हारे शत्रु है? अत्याचारियों के लिये बुरा बदला है।
51. मैं ने उन को उपस्थित नहीं किया आकाशो तथा धरती की उत्पत्ति के समय और न स्वयं उन की उत्पत्ति के समय, और न मैं कुपथों को सहायक बनाने वाला हूँ।
52. जिस दिन वह (अल्लाह) कहेगा कि मेरे साक्षियों को पुकारो जिन्हें समझ रहे थे।

वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन का कोई उत्तर नहीं देंगे, और हम बना देंगे उन के बीच एक विनाशकारी खाई।

53. और अपराधी नरक को देखेंगे तो उन्हें विश्वास हो जायेगा कि वे उस में गिरने वाले हैं। और उस से फिरने का कोई स्थान नहीं पायेंगे।
54. और हम ने इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण से लोगों को समझाया है। और मनुष्य बड़ा ही झगड़ालू है।
55. और नहीं रोका लोगों को कि ईमान लायें जब उन के पास मार्ग दर्शन आ गया और अपने पालनहार से क्षमा याचना करें, किन्तु इसी ने कि पिछली जातियों की दशा उन की भी हो जाये, अथवा उन के समक्ष यातना आ जाये।
56. तथा हम रसूलों को नहीं भेजते परन्तु शुभ सूचना देने वाले और सावधान करने वाले बना कर। और जो काफिर हैं असत्य (अनृत) के सहारे विवाद करते हैं, ताकि उस के द्वारा वह सत्य को नीचा दिखायें। और उन्होंने ने बना लिया हमारी आयतों को तथा जिस बात की उन्हें चेतावनी दी गई, परिहास।
57. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयतें सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुँह फेर ले और अपने पहले किये हुये कर्तूत भूल जाये? वास्तव में हम ने उन के दिलों पर ऐसे आवरण (पर्दे) बना दिये हैं कि उसे समझ न पायें और उन के कानों में बोझ। और यदि आप उन्हें सीधी राह की ओर बुलायें तब (भी)

कभी सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

58. और आप का पालनहार अति क्षमी दयावान् है। यदि वह उन को उन के कर्तूतों पर पकड़ता तो तुरन्त यातना दे देता। बल्कि उन के लिये एक निश्चित समय का वचन है। और वे उस के सिवा कोई बचाव का स्थान नहीं पायेंगे।
59. तथा यह बस्तियाँ हैं। हम ने उन (के निवासियों) का विनाश कर दिया जब उन्होंने अत्याचार किया। और हम ने उन के विनाश के लिये एक निर्धारित समय बना दिया था।
60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपने सेवक से कहा: मैं बराबर चलता रहूँगा, यहाँ तक कि दोनों सागरों के संगम पर पहुँच जाऊँ, अथवा वर्षों चलता रहूँ।
61. तो जब दोनों उन के संगम पर पहुँचे तो दोनों अपनी मछली भूल गये। और उस ने सागर में अपनी राह बना ली सुरंग के समान।
62. फिर जब दोनों आगे चले गये तो उस (मूसा) ने अपने सेवक से कहा कि हमारा दिन का भोजन लाओ। हम अपनी इस यात्रा से थक गये हैं।
63. उस ने कहा: क्या आप ने देखा? जब हम ने उस शिला खण्ड के पास शरण ली थी तो मैं मछली भूल गया। और मुझे उसे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उस की चर्चा करूँ, और उस ने अपनी राह सागर में अनोखे तरीके से बना ली।
64. मूसा ने कहा: वही है जो हम चाहते थे। फिर दोनों अपने पदचिन्हों को

देखते हुये वापिस हुये।

65. और दोनों ने पाया, हमारे भक्तों में से एक भक्त को, जिसे हम ने अपनी विशेष दया प्रदान की थी। और उसे अपने पास से कुछ विशेष ज्ञान दिया था।
66. मूसा ने उस से कहा: क्या मैं आप का अनुसरण करूँ, ताकि मुझे भी उस भलाई में से कुछ सिखा दें, जो आप को सिखायी गई है?
67. उस ने कहा: तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे।
68. और कैसे धैर्य करोगे उस बात पर जिस का तुम्हें पूरा ज्ञान नहीं?
69. उस ने कहा: यदि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सहनशील पायेंगे। और मैं आप की किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।
70. उस ने कहा: यदि तुम्हें मेरा अनुसरण करना है तो मुझ से किसी चीज़ के संबन्ध में प्रश्न न करना

जब तक मैं स्वयं तुम से उस की चर्चा न करूँ।

71. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब दोनों नौका में सवार हुये तो उस (खिज़्र) ने उस में छेद कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने इस में छेद कर दिया ताकि उस के सवारों को डूबा दें, आप ने अनुचित काम कर दिया।
72. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि तुम मेरे साथ सहन नहीं कर सकोगे?
73. कहा: मुझे आप मेरी भूल पर न पकड़ें, और मेरी बात के कारण मुझे असुविधा में न डालें।
74. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक से मिले तो उस (खिज़्र) ने उसे बध कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने एक निर्दोष प्राण ले लिया, वह भी किसी प्राण के बदले नहीं? आप ने बहुत ही बुरा काम किया।



75. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि वास्तव में तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे?
76. मूसा ने कहा: यदि मैं आप से प्रश्न करूँ, किसी विषय में इस के पश्चात्, तो मुझे अपने साथ न रखें। निश्चय आप मेरी ओर से याचना को पहुँच चुके।
77. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव के वासियों के पास आये तो उन से भोजन माँगा। उन्होंने ने उन का अतिथि सत्कार करने से इन्कार कर दिया। वहाँ उन्होंने एक दीवार पायी जो गिरा चाहती थी। उस ने उसे सीधी कर दिया। कहा: यदि आप चाहते तो इस पर पारिश्रमिक ले लेते।
78. उस ने कहा: यह मेरे तथा तुम्हारे बीच वियोग है। मैं तुम्हें उस की वास्तविकता बताऊँगा, जिस को तुम सहन नहीं कर सकें।
79. रही नाव तो वह कुछ निर्धनों की थी, जो सागर में काम करते थे। तो मैं ने चाहा कि उसे छिद्रित कर दूँ, और उन के आगे एक राजा था जो प्रत्येक (अच्छी), नाव का अपहरण कर लेता था।
80. और रहा बालक तो उस के माता-पिता ईमान वाले थे, अतः हम डरे कि उन्हें अपनी अवैज्ञा और अधर्म से दुःख न पहुँचाये।
81. इसलिये हम ने चाहा कि उन दोनों को उन का पालनहार, इस के बदले उस से अधिक पवित्र और अधिक प्रेमी प्रदान करे।
82. और रही दीवार तो वह दो अनाथ बालकों की थी। और उस के भीतर उन का कोष था। और उन के माता-पिता पुनीत थे तो तेरे पालनहार ने चाहा कि वह दोनों अपनी युवा अवस्था को पहुँचें और अपना कोष निकालें, तेरे पालनहार की दया से। और मैं ने यह अपने विचार तथा अधिकार से नहीं किया यह उस की वास्तविकता है जिसे तुम सहन नहीं कर सकें।
83. और (हे नबी!) वे आप से जुलकरनैन के विषय में प्रश्न करते हैं। आप कह दें कि मैं उन की कुछ दशा तुम्हें पढ़ कर सुना देता हूँ।
84. हम ने उसे धरती में प्रभुत्व प्रदान किया, तथा उसे प्रत्येक प्रकार का साधन दिया।
85. तो वह एक राह के पीछे लगा।
86. यहाँ तक कि जब सूर्यास्त के स्थान तक पहुँचा, तो उस ने पाया कि वह एक काली कीचड़ के स्रोत में डूब रहा है। और वहाँ एक जाति को पाया। हम ने कहा: हे जुलकरनैन! तू उन्हें यातना दे अथवा उन में अच्छा व्यवहार बना।
87. उस ने कहा: जो अत्याचार करेगा, हम उसे दण्ड देंगे। फिर वह अपने पालनहार की ओर फेरा जायेगा, तो वह उसे कड़ी यातना देगा।
88. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार करे तो उसी के लिये अच्छा प्रतिफल (बदला) है। और हम उसे अपना सरल आदेश देंगे।
89. फिर वह एक (अन्य) राह की ओर

लगा।

90. यहाँ तक कि सूर्योदय के स्थान तक पहुँचा। उसे पाया कि ऐसी जाति पर उदय हो रहा है जिस से हम ने उन के लिये कोई आड़ नहीं बनायी है।
91. उन की दशा ऐसी ही थी, और उस (जुलकरनैन) के पास जो कुछ था हम उस से पूर्णतः सूचित हैं।
92. फिर वह एक दूसरी राह की ओर लगा।
93. यहाँ तक कि जब दो पर्वतों के बीच पहुँचा तो उन दोनों के उस ओर एक जाति को पाया, जो नहीं समीप थी कि किसी बात को समझे।
94. उन्होंने ने कहा: हे जुल करनैन! वास्तव में याजुज तथा माजुज उपद्रवी हैं इस देश में तो क्या हम निर्धारित कर दें आप के लिये कुछ धना। इसलिये कि आप हमारे और उन के बीच कोई रोक (बंध) बना दें।
95. उस ने कहा: जो कुछ मुझे मेरे पालनहार ने प्रदान किया है वह उत्तम है। तो तुम मेरी सहायता बल और शक्ति से करो, मैं बना दूँगा तुम्हारे और उन के मध्य एक दृढ़ भीत।
96. मुझे लोहे की चादरें ला दो। और जब दोनों पर्वतों के बीच दीवार तय्यार कर दी, तो कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक कि जब उस दीवार को आग (के समान लाल) कर दिया, तो कहा: मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ ताँबा उँडेल दूँ।
97. फिर वह उस पर चढ़ नहीं सकते थे और न उस में कोई सेंध लगा सकते थे।
98. उस (जुलकरनैन) ने कहा: यह मेरे

पालनहार की दया है। फिर जब मेरे पालनहार का वचन आयेगा तो वह इसे खण्ड-खण्ड कर देगा। और मेरे पालनहार का वचन सत्य है।

99. और हम छोड़ देंगे उस दिन लोगों को एक दूसरे में लहरें लेते हुये। तथा नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, और हम सब को एकत्रित कर देंगे।
100. और हम सामने कर देंगे उस दिन नरक को काफ़िरों के समक्ष।
101. जिन की आँखे मेरी याद से पर्दे में थीं, और कोई बात सुन नहीं सकते थे।
102. तो क्या उन्होंने सोचा है जो काफ़िर हो गये कि वह बना लेंगे मेरे दासों को मेरे सिवा सहायक? वास्तव में हम ने काफ़िरों के आतिथ्य के लिये नरक तैयार कर दी है।
103. आप कह दें कि क्या हम तुम्हें बता दें कि कौन अपने कर्मों में सब से अधिक क्षतिग्रस्त है?
104. वह हैं, जिन के संसारिक जीवन के सभी प्रयास व्यर्थ हो गये, तथा वह समझते रहे कि वे अच्छे कर्म कर रहे हैं।
105. यही वह लोग हैं, जिन्होंने ने नहीं माना अपने पालनहार की आयतों तथा उस से मिलने को, अतः हम प्रलय के दिन उन का कोई भार निर्धारित नहीं करेंगे।
106. उन्हीं का बदला नरक है, इस कारण कि उन्होंने ने कुफ़्र किया, और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया।

107. निश्चय जो ईमान लाये और सदाचार किये, उन्हीं के आतिथ्य के लिये फ़िरदौस के बाग़ होंगे।
108. उस में वे सदावासी होंगे, उसे छोड़ कर जाना नहीं चाहेंगे।
109. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि सागर मेरे पालनहार की बातें लिखने के लिये स्याही बन जायें, तो सागर समाप्त हो जायें, इस से पहले कि मेरे पालनहार की बातें समाप्त हों, यद्यपि उतनी ही स्याही और ले आयें।
110. आप कह दें मैं तो तुम जैसा एक मनुष्य पुरुष हूँ, मेरी ओर प्रकाशना (बह्नी) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य बस एक ही पूज्य है। अतः जो अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो उसे चाहिये कि सदाचार करे। और साझी न बनाये अपने पालनहार की इबादत (बंदना) में किसी को।

सूरह मर्यम - 19

सूरह मर्यम के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 98 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. काफ़, हा, या, ऐन, साद।
2. यह आप के पालनहार की दया की चर्चा है, अपने भक्त ज़करिय्या पर।
3. जब कि उस ने अपने पालनहार से विनय की, गुप्त विनय।
4. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी अस्थियाँ निर्बल हो गयीं और सिर

बुढ़ापे से सफ़ेद हो गया है, तथा मेरे पालनहार! कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुझ से प्रार्थना कर के निष्फल हुआ हूँ।

5. और मुझे अपने भाई बंदों से भय है, अपने (मरण) के पश्चात्, तथा मेरी पत्नी बॉझ है, अतः मुझे अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर दे।
6. वह मेरा उत्तराधिकारी हो, तथा याकूब के वंश का उत्तराधिकारी हो और हे पालनहार! उसे प्रिय बना दे।
7. हे ज़करिय्या! हम तुझे एक बालक की शुभ सूचना दे रहे हैं, जिस का नाम यत्स्या होगा। हम ने नहीं बनाया है इस से पहले उस का कोई समनाम।
8. उस ने (आश्चर्य से) कहा: मेरे पालनहार! कहाँ से मेरे यहाँ कोई बालक होगा, जब कि मेरी पत्नी बॉझ है, और मैं बुढ़ापे की चरम सीमा को जा पहुँचा हूँ।
9. उस ने कहा: ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार ने कहा है, यह मेरे लिये सरल है, इस से पहले मैं ने तेरी उत्पत्ति की है, जब कि तू कुछ नहीं था।
10. उस (ज़करिय्या) ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण (चिन्ह) बना दे। उस ने कहा: तेरा लक्षण यह है कि तू बोल नहीं सकेगा, लोगों से निरंतर तीन रातें।
11. फिर वह मेहराब (चाप) से निकल कर अपनी जाति के पास आया। और उन्हें संकेत द्वारा आदेश दिया कि उस (अल्लाह) की पवित्रता का वर्णन करो, प्रातः तथा संध्या।

12. हे यह्या! इस पुस्तक (तौरात) को थाम ले, और हम ने उसे बचपन ही में ज्ञान (प्रबोध) प्रदान किया।
13. तथा अपनी ओर से प्रेम भाव तथा पवित्रता, और वह बड़ा संयमी (सदाचारी) था।
14. तथा अपनी माता-पिता के साथ सुशील था, वह क्रूर तथा अबज्ञाकारी नहीं था।
15. उस पर शान्ति है, जिस दिन उस ने जन्म लिया और जिस दिन मरेगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जायेगा।
16. तथा आप इस पुस्तक (कुर्आन) में मर्यम की चर्चा करें, जब वह अपने परिजनों से अलग हो कर एक पूर्वी स्थान की ओर आयी।
17. फिर उन की ओर से पर्दा कर लिया, तो हम ने उस की ओर अपनी रूह (आत्मा) को भेजा, तो उस ने उस के लिये एक पूरे मनुष्य का रूप धारण कर लिया।
18. उस ने कहा: मैं शरण माँगती हूँ अत्यंत कृपाशील की तुझ से, यदि तुझे अल्लाह का कुछ भी भय हो।
19. उस ने कहा: मैं तेरे पालनहार का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे एक पुनीत बालक प्रदान कर दूँ।
20. वह बोली: यह कैसे हो सकता है कि मेरे बालक हो, जब कि किसी पुरुष ने मुझे स्पर्श भी नहीं किया है, और न मैं व्यभिचारिणी हूँ?
21. फरिश्ते ने कहा: ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार का वचन है कि वह मेरे लिये अति सरल है, और ताकि

- हम उसे लोगों के लिये एक लक्षण (निशानी) बनायें तथा अपनी विशेष दया से, और यह एक निश्चित बात है।
22. फिर वह गर्भवती हो गई, तथा उस (गर्भ को ले कर) दूर स्थान पर चली गई।
23. फिर प्रसव पीड़ा उसे एक खजूर के तने तक लायी, कहने लगी: क्या ही अच्छा होता, मैं इस से पहले ही मर जाती, और भूली बिसरी हो जाती।
24. तो उस के नीचे से पुकारा कि उदासीन न हो, तेरे पालनहार ने तेरे नीचे एक स्रोत बहा दिया है।
25. और हिला दे अपनी ओर खजूर के तने को तुझ पर गिरायेगा वह ताजी पकी खजूर।
26. अतः खा और पी तथा आँख ठण्डी करा। फिर यदि किसी पुरुष को देखे, तो कह दे: वास्तव में, मैं ने मनौती मान रखी है अत्यंत कृपाशील के लिये व्रत की। अतः मैं आज किसी मनुष्य से बात नहीं करूँगी।
27. फिर उस (शिशु इंसान) को ले कर अपनी जाति में आयी, सब ने कहा: हे मर्यम! तू ने बहुत बुरा किया।
28. हे हारून की बहन! तेरा पिता कोई बुरा व्यक्ति न था। और न तेरी माँ व्यभिचारिणी थी।
29. मर्यम ने उस (शिशु) की ओर संकेत किया। लोगों ने कहा: हम कैसे उस से बात करें जो गोद में पड़ा हुआ एक शिशु है?
30. वह (शिशु) बोल पड़ा: मैं अल्लाह का

भक्त हैं। उस ने मुझे पुस्तक (इंजील) प्रदान की है, तथा मुझे नबी बनाया है।

31. तथा मुझे शुभ बनाया है जहाँ रहूँ और मुझे आदेश दिया है, नमाज़ तथा ज़कात का जब तक जीवित रहूँ।
32. तथा अपनी माँ का सेवक, और उस ने मुझे क्रूर तथा अभागा नहीं बनाया है।
33. तथा शान्ति है मुझ पर, जिस दिन मैं ने जन्म लिया तथा जिस दिन मरूँगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जाऊँगा।
34. यह है ईसा मर्यम का सुत, यही सत्य बात है, जिस के विषय में लोग संदेह कर रहे हैं।
35. अल्लाह का यह काम नहीं कि अपने लिये कोई संतान बनाये, वह पवित्र है! जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है, तो उस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दे कि: "हो जा" और वह हो जाता है।
36. और (ईसा ने कहा): वास्तव में अल्लाह मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, अतः उसी की इबादत (बंदना) करो, यही सुपथ (सीधी राह) है।
37. फिर सम्प्रदायो ने आपस में विभेद किया, तो विनाश है उन के लिये जो काफ़िर हो गये एक बड़े दिन के आ जाने के कारण।
38. वे भली भाँति सुनेंगे और देखेंगे जिस दिन हमारे पास आयेंगे, परन्तु अत्याचारी आज खुले कुपथ में हैं।
39. और (हे नबी!) आप उन्हें संताप के दिन से सावधान कर दें, जब निर्णय

कर दिया जायेगा जब कि वे अचेत हैं तथा ईमान नहीं ला रहे हैं।

40. निश्चय हम ही उत्तराधिकारी होंगे धरती के तथा जो उस के ऊपर है और हमारी ही ओर सब प्रत्यागत किये जायेंगे।
41. तथा आप चर्चा कर दें इस पुस्तक (कुर्आन) में इब्राहीम की वास्तव में वह एक सत्यावादी नबी था।
42. जब उस ने कहा अपने पिता से: हे मेरे प्रिय पिता! क्यों आप उसे पूजते हैं, जो न सुनता है और न देखता है, और न आप के कुछ काम आता।
43. हे मेरे पिता! मेरे पास वह ज्ञान आ गया है जो आप के पास नहीं आया, अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आप को सीधी राह दिखा दूँगा।
44. हे मेरे प्रिय पिता! शैतान की पूजा न करें, वास्तव में शैतान अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) का अवैज्ञाकारी है।
45. हे मेरे पिता! वास्तव में मुझे भय हो रहा है कि आप को अत्यंत कृपाशील की कोई यातना आ लगे तो आप शैतान के मित्र हो जायेंगे।
46. उस ने कहा: क्या तू हमारे पूज्यों से विमुख हो रहा है? हे इब्राहीम! यदि तू (इस से) नहीं रुका तो मैं तुझे पत्थरों से मार दूँगा। और तू मुझ से विलग हो जा सदा के लिये।
47. (इब्राहीम) ने कहा: सलाम है आप को! मैं क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा आप के लिये अपने पालनहार से, मेरा पालनहार मेरे प्रति बड़ा करुणामय है।

48. तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा। और प्रार्थना करता रहूँगा अपने पालनहार से। मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना कर के असफल नहीं हूँगा।
49. फिर जब उन्हें छोड़ दिया तथा जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, तो हम ने उसे प्रदान कर दिया इस्हाक़ तथा याकूब, और हम ने प्रत्येक को नबी बना दिया।
50. तथा हम ने प्रदान की उन सब को अपनी दया में से, और हम ने बना दी उन की शुभ चर्चा सर्वोच्च।
51. और आप इस पुस्तक में मूसा की चर्चा करें। वास्तव में वह चुना हुआ तथा रसूल एवं नबी था।
52. और हम ने उसे पुकारा तूर पर्वत के दायें किनारे से, तथा उसे समीप कर लिया रहस्य की बात करते हुये।
53. और हम ने प्रदान किया उसे अपनी दया में से, उस के भाई हारून को नबी बना कर।
54. तथा इस पुस्तक में इस्माईल की चर्चा करो, वास्तव में वह वचन का पक्का, तथा रसूल -नबी था।
55. और आदेश देता था अपने परिवार को नमाज़ तथा ज़कात का और अपने पालनहार के यहाँ प्रिय था।
56. तथा इस पुस्तक में इद्रीस की चर्चा करो, वास्तव में वह सत्यवादी नबी था।
57. तथा हम ने उसे उठाया उच्च स्थान पर।
58. यही वह लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया नबियों में से आदम की संतति में से तथा उन में से जिन्हें हम ने (नाब पर) सवार किया नूह के साथ तथा इब्राहीम और इसराईल के संतति में से, तथा उन में से जिन्हें हम ने मार्ग दर्शन दिया और चुन लिया, जब इन के समक्ष पढ़ी जाती थी अत्यंत कृपाशील की आयतें तो वे गिर जाया करते थे सज्दा करते हुये तथा रोते हुये।
59. फिर इन के पश्चात् ऐसे कपूत पैदा हुये, जिन्होंने गँवा दिया नमाज़ को तथा अनुसरण किया मनोकांक्षावों का, तो वह शीघ्र ही कुपथ (के परिणाम) का सामना करेंगे।
60. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली, तथा ईमान लाये और सदाचार किये तो वही स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे। और उन पर तनिक अत्याचार नहीं किया जायेगा।
61. स्थायी बिन देखे स्वर्ग, जिन का परोक्षतः वचन अत्यंत कृपाशील ने अपने भक्तों को दिया है, वास्तव में उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।
62. वे नहीं सुनेंगे, उस में कोई बकवास, सलाम के सिवा, तथा उन के लिये उस में जीविका होगी प्रातः और संध्या।
63. यही वह स्वर्ग है, जिस का हम उत्तराधिकारी बना देंगे, अपने भक्तों में से उसे जो आज्ञाकारी हो।
64. और हम नहीं उतरते परन्तु आप के पालनहार के आदेश से, उसी का है जो हमारे आगे तथा पीछे है और

- जो इस के बीच है, और आप का पालनहार भूलने वाला नहीं है।
65. आकाशों तथा धरती का पालनहार तथा जो उन दोनों के बीच है। अतः उसी की इबादत (वंदना) करें, तथा उस की इबादत पर स्थित रहें। क्या आप उस के सम्मुख किसी को जानते हैं?
66. तथा मनुष्य कहता है कि क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर निकाला जाऊँगा जीवित हो कर?
67. क्या मनुष्य याद नहीं रखता कि हम ही ने उसे इस से पूर्व उत्पन्न किया है जब कि वह कुछ (भी) न था?
68. तो आप के पालनहार की शपथ। हम उन्हें अवश्य एकत्र कर देंगे और शैतानों को, फिर उन्हें अवश्य उपस्थित कर देंगे, नरक के किनारे मुँह के बल गिरे हुये।
69. फिर हम अलग कर लेंगे प्रत्येक समुदाय से उन में से जो अत्यंत कृपाशील का अधिक अवैज्ञाकारी था।
70. फिर हम ही भली-भाँति जानते हैं कि कौन अधिक योग्य है उस में शौक दिये जाने को।
71. और नहीं है तुम में से कोई परन्तु वहाँ गुज़रने वाला है, यह आप के पालनहार पर अनिवार्य है जो पूरा हो कर रहेगा।
72. फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे, तथा उस में छोड़ देंगे अत्याचारियों को मुँह के बल गिरे हुये।
73. तथा जब उन के समक्ष हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफिर ईमान वालों से कहते हैं कि (बताओ) दोनों सम्प्रदायों में किस की दशा अच्छी है, और किस की मजलिस (सभा) अधिक भव्य है?
74. जब कि हम ध्वस्त कर चुके हैं इन से पहले बहुत सी जातियों को जो इन में उत्तम थीं संसाधन तथा मान सम्मान में।
75. (हे नबी!) आप कह दें कि जो कुपथ में ग्रस्त होता है, अत्यंत कृपाशील उसे अधिक अवसर देता है। यहाँ तक कि जब उसे देख लें जिस का वचन दिये जाते हैं, या तो यातना को अथवा प्रलय को, उस समय उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि किस की दशा बुरी और किस का जत्था अधिक निर्बल है।
76. और अल्लाह उन्हें जो सुपथ हों मार्गदर्शन में अधिक कर देता है। और शेष रह जाने वाले सदाचार ही उत्तम हैं आप के पालनहार के समीप कर्म-फल में, तथा उत्तम हैं परिणाम के फलस्वरूप।
77. (हे नबी!) क्या आप ने उसे देखा जिस ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) किया तथा कहा: मैं अवश्य धन तथा संतान दिया जाऊँगा?
78. क्या वह अवगत हो गया है परोक्ष से अथवा उस ने अत्यंत दयाशील से कोई वचन ले रखा है?
79. कदापि नहीं, हम लिख लेंगे जो वह कहता है, और हम अधिक करते जायेंगे उस की यातना को अत्यधिक।

80. और हम ले लेंगे जिस की वह बात कर रहा है, और वह हमारे पास अकेला आयेगा।
81. तथा उन्होंने ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, ताकि वह उन के सहायक हों।
82. ऐसा कदापि नहीं होगा, वे सब इन की पूजा (उपासना) का अस्वीकार कर देंगे और उन के विरोधी हो जायेंगे।
83. क्या आप ने नहीं देखा कि हम ने भेज दिया है शैतानों को काफ़िरों पर जो उन्हें बराबर उकसाते रहते हैं?
84. अतः शीघ्रता न करें उन पर, हम तो केवल उन के दिन गिन रहे हैं।
85. जिस दिन हम एकत्रित कर देंगे आज्ञाकारियों को अत्यंत कृपाशील की ओर अतिथि बना कर।
86. तथा हांक देंगे पापियों को नरक की ओर प्यासे पशुओं के समान।
87. वह (काफ़िर) अभिस्तावना का अधिकार नहीं रखेंगे, परन्तु जिस ने बना लिया हो अत्यंत कृपाशील के पास कोई वचन।
88. तथा उन्होंने ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने अपने लिये एक पुत्र।
89. वास्तव में तुम एक भारी बात घड़ लाये हो।
90. समीप है कि इस कथन के कारण आकाश फट पड़े तथा धरती चिर जाये, और गिर जायें पर्वत कण-कण हो कर।

91. कि वह सिद्ध करने लगे अत्यंत कृपाशील के लिये संतान।
92. तथा नहीं योग्य है अत्यंत कृपाशील के लिये कि वह कोई संतान बनाये।
93. प्रत्येक जो आकाशों तथा धरती में हैं आने वाले हैं अत्यंत कृपाशील की सेवा में दास बन कर।
94. उस ने उन को नियंत्रण में ले रखा है, तथा उन को पूर्णतः गिन रखा है।
95. और प्रत्येक उस के समक्ष आने वाला है प्रलय के दिन अकेला।
96. निश्चय जो ईमान लाये हैं तथा सदाचार किये हैं, शीघ्र बना देगा उन के लिये अत्यंत कृपाशील (दिलों में) प्रेम।
97. अतः (हे नबी!) हम ने सरल बना दिया है, इस (कुआन) को आप की भाषा में ताकि आप इस के द्वारा शुभ सूचना दें संयमियों (आज्ञाकारियों) को, तथा सतर्क कर दें विरोधियों को।
98. तथा हम ने ध्वस्त कर दिया है, इन से पहले बहुत सी जातियों को, तो क्या आप देखते हैं, उन में से किसी को? अथवा सुनते हैं, उन की कोई ध्वनि?

सूरह ता-हा - 20

सूरह ता-हा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 135 आयतें हैं

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. ता, हा।

2. हम ने नहीं अवतरित किया है आप पर कुर्आन इस लिये कि आप दुखी हों।
3. परन्तु यह उस की शिक्षा के लिये है जो डरता हो।
4. उतारा जाना उस की ओर से है, जिस ने उत्पत्ति की है धरती तथा उच्च आकाशों की।
5. जो अत्यंत कृपाशील अर्श पर स्थिर है।
6. उसी का है, जो आकाशों तथा जो धरती में और जो दोनों के बीच तथा जो भूमि के नीचे है।
7. यदि तुम उच्च स्वर में बात करो, तो वास्तव में वह जानता है भेद को तथा अत्यधिक छुपे भेद को।
8. वही अल्लाह है, नहीं है कोई बंदनीय (पूज्य) परन्तु वही। उसी के उत्तम नाम है।
9. और (हे नबी!) क्या आप को मूसा की बात पहुँची?
10. जब उस ने देखी एक अग्नि, फिर कहा: अपने परिवार से हको, मैं ने एक अग्नि देखी है, सम्भव है कि मैं तुम्हारे पास उस का कोई अंगार लाऊँ, अथवा पा जाऊँ आग पर मार्ग की कोई सूचना।
11. फिर जब वहाँ पहुँचा, तो पुकारा गया: हे मूसा!
12. वास्तव में मैं ही तेरा पालनहार हूँ, तू उतार दे अपने दोनों जूते, क्योंकि तू पवित्रवादी (उपत्यका) "तुवा" में है।
13. और मैं ने तुझे को चुन लिया है। अतः ध्यान से सुन, जो वही की जा रही है।
14. निःसन्देह मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तो मेरी ही इबादत (बंदना) कर तथा मेरे स्मरण (याद) के लिये नमाज़ की स्थापना कर।
15. निश्चय प्रलय आने वाली है, मैं उसे गुप्त रखना चाहता हूँ, ताकि प्रतिकार (बदला) दिया जाये, प्रत्येक प्राणी को उस के प्रयास के अनुसार।
16. अतः तुम को न रोक दे, उस (के विश्वास) से, जो उस पर ईमान (विश्वास) नहीं रखता, और जिस ने अनुसरण किया हो अपनी इच्छा का। अन्यथा तेरा नाश हो जायेगा।
17. और हे मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है?
18. उत्तर दिया: यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ तथा इस से अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ तथा मेरी इस में दूसरी आवश्यकतायें (भी) हैं।
19. कहा: उसे फेंकिये, हे मूसा!
20. तो उस ने उसे फेंक दिया, और सहसा वह एक सर्प थी, जो दौड़ रहा था।
21. कहा: पकड़ ले इस को, और डर नहीं, हम उसे फेर देंगे उस की प्रथम स्थिति की ओर।
22. और अपना हाथ लगा दे अपनी कांख (बगल) की ओर, वह निकलेगा चमकता हुआ बिना किसी रोग के, यह दूसरा चमत्कार है।
23. ताकि हम तुझे दिखायें, अपनी बड़ी निशानियाँ।

24. तुम फिरऔन के पास जाओ, वह विद्रोही हो गया है।
25. मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! खोल दे, मेरे लिये मेरा सीना।
26. तथा सरल कर दे, मेरे लिये मेरा काम।
27. और खोल दे, मेरी जुबान की गाँठ।
28. ताकि लोग मेरी बात समझें।
29. तथा बना दे, मेरा एक सहायक मेरे परिवार में से।
30. मेरे भाई हारून को।
31. उस के द्वारा दृढ़ कर दे मेरी शक्ति को।
32. और साझी बना दे, उसे मेरे काम में।
33. ताकि हम दोनों तेरी पवित्रता का गान अधिक करें।
34. तथा तुझे अधिक स्मरण (याद) करें।
35. निःसन्देह तू हमें भली प्रकार देखने भालने वाला है।
36. अल्लाह ने कहा: हे मूसा! तेरी सब माँग पूरी कर दी गयी।
37. और हम उपकार कर चुके हैं तुम पर एक बार और (भी)।
38. जब हम ने उतार दिया तेरी माँ के दिल में जिस की वही (प्रकाशना) की जा रही है।
39. कि इसे रख दे ताबूत (सन्दूक) में, फिर उसे नदी में डाल दे, फिर नदी उसे किनारे लगा देगी, जिसे उठा लेगा मेरा शत्रु तथा उस का शत्रु, और मैं ने डाल दिया तुझ पर अपनी ओर से विशेष प्रेम ताकि तेरा

- पालन-पोषण मेरी रक्षा में हो।
40. जब चल रही थी तेरी बहन, फिर कह रही थी: क्या मैं तुम्हें उसे बता दूँ, जो इस का लालन-पालन करे? फिर हम ने पुनः तुम्हें पहुँचा दिया तुम्हारी माँ के पास, ताकि उस की आँख ठण्डी हो, और उदासीन न हो। तथा हे मूसा! तू ने मार दिया एक व्यक्ति को, तो हम ने तुझे मुक्त कर दिया चिन्ता से। और हम ने तेरी भली-भाँति परीक्षा ली। फिर तू रह गया वर्षों मद्यन के लोगों में, फिर तू (मद्यन से) अपने निश्चित समय पर आ गया।
 41. और मैं ने बना लिया है तुझे विशेष अपने लिये।
 42. जा तू और तेरा भाई मेरी निशानियाँ ले कर, और दोनों आलस्य न करना मेरे स्मरण (याद) में।
 43. तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ, वास्तव में वह उल्लंघन कर गया है।
 44. फिर उस से कोमल बोल बोलो, कदाचित वह शिक्षा ग्रहण करे अथवा डरे।
 45. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमें भय है कि वह हम पर अत्याचार अथवा अतिक्रमण कर दे।
 46. उस (अल्लाह) ने कहा: तुम भय न करो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुनता तथा देखता हूँ।
 47. तुम उस के पास जाओ, और कहो कि हम तेरे पालनहार के रसूल हैं। अतः हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें यातना न दे, हम

- तेरे पास तेरे पालनहार की निशानी लाये हैं, और शान्ति उस के लिये है, जो मार्ग दर्शन का अनुसरण करे।
48. वास्तव में हमारी ओर वही (प्रकाशना) की गई है कि यातना उसी के लिये है, जो झुठलाये और मुख फेरे।
49. उस ने कहा: हे मूसा! कौन है तुम दोनों का पालनहार?
50. मूसा ने कहा: हमारा पालनहार वह है जिस ने प्रत्येक वस्तु को उस का विशेष रूप प्रदान किया है, फिर मार्ग दर्शन दिया।
51. उस ने कहा: फिर उन की दशा क्या होनी है जो पूर्व के लोग हैं?
52. मूसा ने कहा: उस का ज्ञान मेरे पालनहार के पास एक लेख्य में सुरक्षित है, मेरा पालनहार न तो चूकता है और न भूलता है।
53. जिस ने तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर बनाया है और तुम्हारे चलने के लिये उस में मार्ग बनाये हैं, और तुम्हारे लिये आकाश से जल बरसाया, फिर उस के द्वारा विभिन्न प्रकार की उपज निकाली।
54. तुम स्वयं खाओ तथा अपने पशुओं को चराओ, वस्तुतः इस में बहुत सी निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।
55. इसी (धरती) से हम ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, और उसी में तुम्हें वापिस ले जायेंगे, और उसी से तुम सब को पुनः निकालेंगे।
56. और हम ने उसे दिखा दी अपनी सभी निशानियाँ, फिर भी उस ने झुठला दिया और नहीं माना।
57. उस ने कहा: क्या तू हमारे पास इस लिये आया है कि हमें हमारी धरती (देश) से अपने जादू (के बल) से निकाल दे, हे मूसा?
58. फिर तो हम तेरे पास अवश्य इसी के समान जादू लायेंगे, अतः हमारे और अपने बीच एक समय निर्धारित कर ले, जिस के विरुद्ध न हम करेंगे और न तुम, एक खुले मैदान में।
59. मूसा ने कहा: तुम्हारा निर्धारित समय शोभा (उत्सव) का दिन है, तथा यह कि लोग दिन चढ़े एकत्रित हो जायें।
60. फिर फिरौन लोट गया, और अपने हथकण्डे एकत्र किये, और फिर आया।
61. मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा: तुम्हारा विनाश हो! अज्ञाह पर मिथ्या आरोप न लगाओ कि वह तुम्हारा किसी यातना द्वारा सर्वनाश कर दे, और वह निष्फल ही रहा है जिस ने मिथ्यारोपण किया।
62. फिर उन के बीच विवाद हो गया, और वे चुपके-चुपके गुप्त मंत्रणा करने लगे।
63. कुछ ने कहा: यह दोनों वास्तव में जादूगर हैं, दोनों चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी धरती से अपने जादू द्वारा निकाल दें, और तुम्हारी आदर्श प्रणाली का अन्त कर दें।
64. अतः अपने सब उपाय एकत्र कर लो, फिर एक पक्षि में हो कर आ जाओ, और आज वही सफल हो गया जो ऊपर रहा।

65. उन्होंने ने कहा: हे मूसा! तू फेंकता है या पहले हम फेंके?
66. मूसा ने कहा: बल्कि तुम्हीं फेंको। फिर उन की रस्सियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थीं कि उन के जादू (के बल) से दौड़ रही हैं।
67. इस से मूसा अपने मन में डर गया।
68. हम ने कहा: मत डर, तू ही ऊपर रहेगा।
69. और फेंक दे जो तेरे दायें हाथ में है, वह निगल जायेगा जो कुछ उन्होंने ने बनाया है। वह केवल जादू का स्वाँग बना कर लाये हैं। तथा जादूगर सफल नहीं होता जहाँ से आये।
70. अन्ततः जादूगर सज्दे में गिर गये, उन्होंने ने कहा कि हम ईमान लाये हारून तथा मूसा के पालनहार पर।
71. फिरऔन बोला: क्या तुम ने उस का विश्वास कर लिया इस से पूर्व कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरु) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है। तो मैं अवश्य कटवा दूँगा तुम्हारे हाथों तथा पावों को विपरीत दिशा से, और तुम्हें सूली दे दूँगा खजूर के तनों पर, तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा कि हम में से किस की यातना अधिक कड़ी तथा स्थायी है।
72. उन्होंने ने कहा: हम तुझे कभी उन खुली निशानियों (तर्कों) पर प्रधानता नहीं देंगे जो हमारे पास आ गयी है, और न उस (अल्लाह) पर जिस ने हमें पैदा किया है, तू जो करना चाहे कर ले, तू बस इसी संसारिक जीवन में आदेश दे सकता है।
73. हम तो अपने पालनहार पर ईमान लाये हैं, ताकि वह क्षमा कर दे हमारे लिये हमारे पापों को तथा जिस जादू पर तू ने हमें बाध्य किया, और अल्लाह सर्वोत्तम तथा अनन्त है।
74. वास्तव में जो जायेगा अपने पालनहार के पास पापी बन कर तो उसी के लिये नरक है, जिस में न वह मरेगा और न जीवित रहेगा।
75. तथा जो उस के पास ईमान ले कर आयेगा, तो उन्हीं के लिये उच्च श्रेणियाँ होंगी।
76. स्थायी स्वर्ग जिन में नहरें बहती होंगी, जिस में सदावासी होंगे, और यही उस का प्रतिफल है जो पवित्र हो गया।
77. और हम ने मूसा की ओर वह्दी की, कि रातों-रात चल पड़ मेरे भक्तों को ले कर, और उन के लिये सागर में सूखा मार्ग बना ले, तुझे पा लिये जाने का कोई भय नहीं होगा और न डरेगा।
78. फिर उन का पीछा किया फिरऔन ने अपनी सेना के साथ, तो उन पर सागर छा गया जैसा कुछ छा गया।
79. और कुपथ कर दिया फिरऔन ने अपनी जाति को और सुपथ नहीं दिखाया।
80. हे इस्राईल के पुत्रो! हम ने तुम्हें मुक्त कर दिया तुम्हारे शत्रु से, और वचन दिया तुम्हें तूर पर्वत से दाहिनी ओर का, तथा तुम पर उतारा "मन्न" तथा "सल्ला"।
81. खाओ उन स्वच्छ चीजों में से जो

- जीविका हम ने तुम्हें दी है, तथा उल्लंघन न करो उस में, अन्यथा उतर जायेगा तुम पर मेरा प्रकोप। तथा जिस पर उतर जायेगा मेरा प्रकोप, तो निःसंदेह वह गिर गया।
82. और मैं निश्चय बड़ा क्षमाशील हूँ उस के लिये जिस ने क्षमा याचना की, तथा ईमान लाया और सदाचार किया फिर सुपथ पर रहा।
83. और हे मूसा! क्या चीज़ तुम्हें ले आई अपनी जाति से पहले?
84. उस ने कहा: वे मेरे पीछे आ ही रहे हैं, और मैं तेरी सेवा में शीघ्र आ गया, हे मेरे पालनहार! ताकि तू प्रसन्न हो जाये।
85. अल्लाह ने कहा: हम ने परीक्षा में डाल दिया तेरी जाति को तेरे (आने के) पश्चात्, और कुपथ कर दिया है उन को सामरी ने।
86. तो मूसा वापिस आया अपनी जाति की ओर अति क्रुद्ध-शोकातुर हो कर। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! क्या तुम्हें वचन नहीं दिया था तुम्हारे पालनहार ने एक अच्छा वचन? तो क्या तुम्हें बहुत दिन लग गये? अथवा तुम ने चाहा कि उतर जाये तुम पर कोई प्रकोप तुम्हारे पालनहार की ओर से? अतः तुम ने मेरे वचन को भंग कर दिया।
87. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम ने नहीं भंग किया है तेरा वचन अपनी इच्छा से, परन्तु हम पर लाद दिया गया था जाति के आभूषणों का बोझ, तो हम ने उसे फेंक दिया, और ऐसे ही फेंक दिया सामरी ने।
88. फिर वह निकाल लाया उन के लिये एक बछड़े की मूर्ति जिस की गाय जैसी ध्वनि (आवाज़) थी, तो सब ने कहा: यह है तुम्हारा पूज्य तथा मूसा का पूज्य, (परन्तु) मूसा इसे भूल गया है।
89. तो क्या वे नहीं देखते कि वह न उन की किसी बात का उत्तर देता है, और न अधिकार रखता है उन के लिये किसी हानि का न किसी लाभ का?
90. और कह दिया था हारून ने इस से पहले ही कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारी परीक्षा की गई है इस के द्वारा, और वास्तव में तुम्हारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है। अतः मेरा अनुसरण करो तथा मेरे आदेश का पालन करो।
91. उन्होंने ने कहा: हम सब उसी के पुजारी रहेंगे जब तक (तूर से) हमारे पास मूसा वापिस न आ जाये।
92. मूसा ने कहा: हे हारून! किस बात ने तुझे रोक दिया जब तू ने उन्हें देखा कि कुपथ हो गये?
93. कि मेरा अनुसरण न करे? क्या तू ने अवैज्ञा कर दी मेरे आदेश की?
94. उस ने कहा: मेरे माँ जाये भाई! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर। वास्तव में मुझे भय हुआ कि आप कहेंगे कि तू ने विभेद उत्पन्न कर दिया बनी इस्राईल में, और प्रतीक्षा नहीं की मेरी बात (आदेश) की।
95. (मूसा ने) पूछा: तेरा समाचार क्या है, हे सामरी?
96. उस ने कहा: मैं ने वह चीज़ देखी

- जिसे उन्होंने ने नहीं देखा, तो मैं ने ले ली एक मुट्ठी रसूल के पदचिन्ह से, फिर उसे फेंक दिया, और इसी प्रकार सुझा दिया मुझे मेरे मन ने।
97. मूसा ने कहा: जा तेरे लिये जीवन में यह होना है कि तू कहता रहे: मुझे स्पर्श न करना। तथा तेरे लिये एक और वचन है जिस के विरुद्ध कदापि न होगा, और अपने पूज्य को देख जिस का पुजारी बना रहा, हम अवश्य उसे जला देंगे, फिर उसे उड़ा देंगे नदी में चूर-चूर कर के।
98. निःसंदेह तुम सभी का पूज्य बस अल्लाह है, कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा। वह समोये हुये है प्रत्येक वस्तु को (अपने) ज्ञान में।
99. इसी प्रकार (हे नबी!) हम आप के समक्ष विगत समाचारों में से कुछ का वर्णन कर रहे हैं, और हम ने आप को प्रदान कर दी है अपने पास से एक शिक्षा (कुरआन)।
100. जो उस से मुँह फेरेगा तो वह निश्चय प्रलय के दिन लादे हुये होगा भारी बोझ।
101. वे सदा रहने वाले होंगे उस में, और प्रलय के दिन उन के लिये बुरा बोझ होगा।
102. जिस दिन फूक दिया जायेगा सूर (नरसिंघा) में, और हम एकत्र कर देंगे पापियों को उस दिन इस दशा में कि उन की आँखें (भय से) नीली होंगी।
103. वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे कि तुम (संसार में) बस दस दिन रहे हो।
104. हम भली-भाँति जानते हैं, जो कुछ वह कहेंगे, जिस समय कहेगा उन में से सब से चतुर कि तुम केवल एक ही दिन रहे हो।
105. वे आप से प्रश्न कर रहे हैं पर्वतों के संबन्ध में। आप कह दें कि उड़ा देगा उन्हें मेरा पालनहार चूर-चूर कर के।
106. फिर धरती को छोड़ देगा समतल मैदान बना कर।
107. तुम नहीं देखोगे उस में कोई टेढ़ापन और न नीच-ऊँच।
108. उस दिन लोग पीछे चलेंगे पुकारने वाले के, कोई उस से कतरायेगा नहीं, और धीमी हो जायेंगी आवाजें अत्यंत कृपाशील के लिये, फिर तुम नहीं सुनोगे कानाफूसी की आवाज़ के सिवा।
109. उस दिन लाभ नहीं देगी सिफारिश परन्तु जिसे आज्ञा दे अत्यंत कृपाशील, और प्रसन्न हो उस के लिये बात करने से।
110. वह जानता है जो कुछ उन के आगे तथा पीछे है, और वे उस का पूरा ज्ञान नहीं रखते।
111. तथा सभी के सिर झुक जायेंगे जीवित नित्य स्थायी (अल्लाह) के लिये। और निश्चय वह निष्फल हो गया जिस ने अत्याचार लाद लिया।
112. तथा जो सदाचार करेगा और वह ईमान वाला भी हो, तो वह नहीं

डरेगा अत्याचार से न अधिकार
हनन से।

113. और इसी प्रकार हम ने इस अर्बी कुर्आन को अवतरित किया है तथा विभिन्न प्रकार से वर्णन कर दिया है उस में चेतावनी का, ताकि लोग आज्ञाकारी हो जायें अथवा वह उन के लिये उत्पन्न कर दे एक शिक्षा।
114. अतः उच्च है अल्लाह वास्तविक स्वामी। और (हे नबी!) आप शीघ्रता न करें कुर्आन के साथ इस से पूर्व कि पूरी कर दी जाये आप की ओर इस की बह्वी (प्रकाशना)। तथा प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर।
115. और हम ने आदेश दिया आदम को इस से पहले, तो वह भूल गया, और हम ने नहीं पाया उस में कोई दृढ़ संकल्प।
116. तथा जब हम ने कहा फरिश्तों से कि सज्दा करो आदम को, तो सब ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा, उस ने इन्कार कर दिया।
117. तब हम ने कहा: हे आदम! वास्तव में यह शत्रु है तेरा तथा तेरी पत्नी का, तो ऐसा न हो कि तुम दोनों को निकलवा दे स्वर्ग से और तू आपदा में पड़ जाये।
118. यहाँ तुझे यह सुविधा है कि न भूखा रहता है और न नग्न रहता है।
119. और न प्यासा होता है और न तुझे धूप सताती है।
120. तो फुसलाया उसे शैतान ने, कहा:

हे आदम! क्या मैं तुझे न बताऊँ शाश्वत जीवन का वृक्ष तथा ऐसा राज्य जो पतनशील न हो?

121. तो दोनों ने उस (वृक्ष) से खा लिया, फिर उन के गुप्तांग उन दोनों के लिये खुल गये और दोनों चिपकाने लगे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते। और आदम अवज्ञा कर गया अपने पालनहार की और कुपथ हो गया।
122. फिर उस (अल्लाह) ने उसे चुन लिया और उसे क्षमा कर दिया और सुपथ दिखा दिया।
123. कहा: तुम दोनों (आदम तथा शैतान) यहाँ से उतर जाओ, तुम एक दूसरे के शत्रु हो। अब यदि आये तुम्हारे पास मेरी ओर से मार्गदर्शन तो जो अनुपालन करेगा मेरे मार्गदर्शन का, वह कुपथ नहीं होगा और न दुर्भाग्य ग्रस्त होगा।
124. तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण से, तो उसी का संसारिक जीवन संकीर्ण (तंग) होगा, तथा हम उसे उठायेंगे प्रलय के दिन अन्धा कर के।
125. वह कहेगा: मेरे पालनहार! मुझे अन्धा क्यों उठाया, मैं तो (संसार में) आँखों वाला था?
126. अल्लाह कहेगा: इसी प्रकार तेरे पास हमारी आयतें आयीं तो तू ने उन्हें भुला दिया। अतः इसी प्रकार आज तू भुला दिया जायेगा।
127. तथा इसी प्रकार हम बदला देते हैं उसे जो सीमा का उल्लंघन करे, और ईमान न लाये अपने पालनहार

की आयतों पर। और निश्चय आखिरत की यातना अति कड़ी तथा अधिक स्थायी है।

128. तो क्या उन्हें मार्ग दर्शन नहीं दिया इस बात ने कि हम ने ध्वस्त कर दिया इन से पहले बहुत सी जातियों को, जो चल फिर-रही थी अपनी बस्तियों में, निःसंदेह इस में निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।
129. और यदि एक बात पहले से निश्चित न होती आप के पालनहार की ओर से, तो यातना आ चुकी होती, और एक निर्धारित समय न होता।
130. अतः आप सहन करें उन की बातों को तथा अपने पालनहार की पवित्रता का वर्णन उस की प्रशंसा के साथ करते रहें सूर्योदय से पहले तथा सूर्यास्त से पहले, तथा रात्रि के क्षणों में और दिन के किनारों में, ताकि आप प्रसन्न हो जायें।
131. और कदापि न देखिये आप उस आनन्द की ओर जो हम ने उन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा है, वह संसारिक जीवन की शोभा है, ताकि हम उन की परीक्षा लें, और आप के पालनहार का प्रदान ही

उत्तम तथा अति स्थायी है।

132. और आप अपने परिवार को नमाज़ का आदेश दें, और स्वयं भी उस पर स्थित रहें, हम आप से कोई जीविका नहीं मांगते, हम ही आप को जीविका प्रदान करते हैं। और अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।
133. तथा उन्होंने कहा: क्यों वह हमारे पास कोई निशानी अपने पालनहार की ओर से नहीं लाता? क्या उन के पास उस का प्रत्यक्ष प्रमाण (कुर्आन) नहीं आ गया जिस में अगली पुस्तकों की (शिक्षायें) हैं?
134. और यदि हम ध्वस्त कर देते उन्हें किसी यातना से इस से पहले, तो वे अवश्य कहते कि हे हमारे पालनहार! तू ने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुपालन करते इस से पहले कि हम अपमानित और हीन होते।
135. आप कह दें कि प्रत्येक, (परिणाम की) प्रतीक्षा में है। अतः तुम भी प्रतीक्षा करो, शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन सीधी राह वाले हैं, और किस ने सीधी राह पाई है।



सूरह अम्बिया - 21

सूरह अम्बिया के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 112 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. समीप आ गया है लोगों के हिसाब का समय, जब कि वे अचेतना में मुँह फेरे हुये हैं।
2. नहीं आती उन के पास उन के पालनहार की ओर से कोई नई शिक्षा, परन्तु उसे सुनते हैं और खेलते रह जाते हैं।
3. निश्चेत है उन के दिल, और उन्होंने ने चुपके-चुपके आपस में बातें की जो अत्याचारी हो गये: यह (नबी) तो बस एक पुरुष है तुम्हारे समान, तो क्या तुम जादू के पास जाते हो जब कि तुम देखते हो?
4. आप कह दें कि मेरा पालनहार जानता है प्रत्येक बात को जो आकाश तथा धरती में हैं। और वह सब सुनने जानने वाला है।
5. बल्कि उन्होंने ने कह दिया कि यह बिखरे स्वप्न हैं। बल्कि उस (नबी) ने इसे स्वयं बना लिया है, बल्कि वह कवि है। अन्यथा उसे चाहिये कि हमारे पास कोई निशानी ला दे जैसे पूर्व के रसूल (निशानियों के साथ) भेजे गये।
6. नहीं ईमान लायी इन से पहले कोई बस्ती जिस का हम ने विनाश किया, तो क्या यह ईमान लायेंगे?

7. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले मनुष्य पुरुषों को ही रसूल बना कर भेजा, जिन की ओर बह्नी भेजते रहे। फिर तुम ज्ञानियों से पूछ लो, यदि तुम (स्वयं) नहीं जानते हो।
8. तथा नहीं बनाये हम ने उन के ऐसे शरीर जो भोजन न करते हों। तथा न वे सदावासी थे।
9. फिर हम ने पूरे कर दिये उन से किये हुये वचन, और हम ने बचा लिया उन्हें, और जिसे हम ने चाहा। और विनाश कर दिया उल्लंघनकारियों का।
10. निःसंदेह हम ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक पुस्तक (कुरआन) जिस में तुम्हारे लिये शिक्षा है। तो क्या तुम समझते नहीं हो?
11. और हम ने तोड़ कर रख दिया बहुत सी बस्तियों को जो अत्याचारी थीं, और हम ने पैदा कर दिया उन के पश्चात् दूसरी जाति को।
12. फिर जब उन्हें संवेदन हो गया हमारे प्रकोप का, तो अकस्मात् वहाँ से भागने लगे।
13. (कहा गया) भागो नहीं। तथा तुम वापिस जाओ जिस सुख-सुविधा में थे, तथा अपने घरों की ओर, ताकि तुम से पूछा जाये।
14. उन्होंने ने कहा: हाय हमारा विनाश! वास्तव में हम अत्याचारी थे।
15. और फिर बराबर यही उन की पुकार रही यहाँ तक कि हम ने बना दिया

- उन्हें कटी खेती के समान बुझे हुये।
16. और हम ने नहीं पैदा किया है आकाश और धरती को तथा जो कुछ दोनों के बीच है खेल के लिये।
17. यदि हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसे अपने पास ही से बना लेते, यदि हमें यह करना होता।
18. बल्कि हम मारते हैं सत्य से असत्य पर, तो वह उस का सिर कुचल देता है, और वह अकस्मात समाप्त हो जाता है, और तुम्हारे लिये विनाश है उन बातों के कारण जो तुम बनाते हो।
19. और उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है, और जो फ़रिश्ते उस के पास हैं वे उस की इबादत (वंदना) से अभिमान नहीं करते, और न थकते हैं।
20. वे रात और दिन उस की पवित्रता का गान करते हैं, तथा आलस्य नहीं करते।
21. क्या इन के बनाये हुये पार्थिव पूज्य ऐसे हैं जो (निर्जीव) को जीवित कर देते हैं?
22. यदि होते उन दोनों में अन्य पूज्य अल्लाह के सिवा तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अतः पवित्र है अल्लाह अर्श (सिंहासन) का स्वामी उन बातों से जो वे बता रहे हैं।
23. वह उत्तर दायी नहीं है अपने कार्य का और सभी (उस के समक्ष) उत्तर दायी हैं।
24. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा अनेक पूज्य? (हे नबी!) आप कहें कि अपना प्रमाण लाओ। यह (कुर्आन) उन के लिये शिक्षा है जो मेरे साथ हैं और यह मुझ से पूर्व के लोगों की शिक्षा है, बल्कि उन में से अधिकतर सत्य का ज्ञान नहीं रखते। इसी कारण वह विमुख हैं।
25. और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वही (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत (वंदना) करो।
26. और उन (मुश्रिकों) ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने संतति। वह पवित्र है। बल्कि वे (फ़रिश्ते) आदरणीय भक्त हैं।
27. वे उस के समक्ष बढ़ कर नहीं बोलते और उस के आदेशानुसार काम करते हैं।
28. वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन से ओझल है। वह किसी की सिफ़ारिश नहीं करेंगे उस के सिवा जिस से वह (अल्लाह) प्रसन्न हो, तथा वह उस के भय से सहमे रहते हैं।
29. और जो कह दे उन में से कि मैं पूज्य हूँ अल्लाह के सिवा तो वही है जिसे हम दण्ड देंगे नरक का, इसी प्रकार हम दण्ड दिया करते हैं अत्याचारियों को।
30. और क्या उन्होंने विचार नहीं किया जो काफ़िर हो गये कि आकाश तथा धरती दोनों मिले हुये थे, तो हम ने दोनों को अलग-अलग किया। तथा हम ने बनाया पानी से प्रत्येक जीवित चीज़ को? फिर क्या वह (इस बात पर) विश्वास नहीं करते?
31. और हम ने बना दिये धरती में पर्वत

- ताकि झुक न जाये उन के साथ,
और बना दिये उन (पर्वतों) में चोड़े
रास्ते ताकि लोग राह पायें।
32. और हम ने बना दिया आकाश को
सुरक्षित छत, फिर भी वह उस के
प्रतीकों (निशानियों) से मुंह फेरे
हुये हैं।
33. तथा वही है जिस ने उत्पत्ति की है
रात्रि तथा दिवस की और सूर्य तथा
चोंद की, प्रत्येक एक मण्डल में तैर
रहे हैं।
34. और (हे नबी!) हम ने नहीं बनायी है
किसी मनुष्य के लिये आप से पहले
नित्यता। तो यदि आप मर जायें,
तो क्या वह नित्य जीवी है?
35. प्रत्येक जीव को मरण का स्वाद
चखना है, और हम तुम्हारी
परीक्षा कर रहे हैं अच्छी तथा बुरी
परिस्थितियों से, तथा तुम्हें हमारी ही
ओर फिर आना है।
36. तथा जब देखते हैं आप को जो
काफिर हो गये तो बना लेते हैं आप
को उपहास, (वे कहते हैं) क्या यही
है जो तुम्हारे पूज्यों की चर्चा किया
करता है? जब कि वे स्वयं रहमान
(अत्यंत कृपाशील) के स्मरण के
निवर्ती हैं।
37. मनुष्य जन्मजात व्यग्र (अधीर) है, मैं
शीघ्र तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा
दूंगा। अतः तुम जल्दी न करो।
38. तथा वह कहते हैं कि कब पूरी
होगी यह धमकी, यदि तुम लोग
सच्चे हो?
39. यदि जान लें जो काफिर हो गये हैं
उस समय को जब वह नहीं बचा
सकेंगे अपने मुखों को अग्नि से और
न अपनी पीठों को, और न उन की
कोई सहायता की जायेगी (तो ऐसी
बातें नहीं करेंगे)।
40. बल्कि वह समय उन पर आ जायेगा
अचानक, और उन्हें आश्चर्य चकित
कर देगा, जिसे वह फेर नहीं सकेंगे
और न उन्हें समय दिया जायेगा।
41. और उपहास किया गया बहुत से
रसूलों का आप से पहले, तो घेर
लिया उन को जिन्होंने उपहास
किया उन में से उस चीज़ ने जिस
का उपहास कर रहे थे।
42. आप पूछिये कि कौन तुम्हारी रक्षा
करेगा रात तथा दिन में अत्यंत
कृपाशील से? बल्कि वह अपने
पालनहार की शिक्षा (कुर्आन) से
विमुख है।
43. क्या उन के पूज्य हैं जो उन्हें बचायेंगे
हम से? वह स्वयं अपनी सहायता नहीं
कर सकेंगे और न हमारी ओर से उन
का साथ दिया जायेगा।
44. बल्कि हम ने जीवन का लाभ
पहुँचाया है उन को तथा उन के
पूर्वजों को यहाँ तक कि (सुखों में)
उन की बड़ी आयु गुज़र गई, तो
क्या वह नहीं देखते कि हम धरती
को कम करते आ रहे हैं उस के
किनारों से, फिर क्या वह विजयी हो
रहे हैं?
45. (हे नबी!) आप कह दें कि मैं तो बल्की
ही के आधार पर तुम्हें सावधान कर
रहा हूँ। (परन्तु) बहरे पुकार नहीं सुनते

- जब उन्हें सावधान किया जाता है।
46. और यदि छू जाये उन को आप के पालनहार की तनिक भी यातना, तो अवश्य पुकारेंगे कि हाये, हमारा विनाश! निश्चय ही हम अत्याचारी थे।
47. और हम रख देंगे न्याय का तराजू प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी पर कुछ भी, तथा यदि होगा राई के दाने के बराबर (किसी का कर्म) तो हम उसे सामने ला देंगे, और हम बस (काफ़ी) हैं हिसाब लेने वाले।
48. और हम दे चुके हैं मूसा तथा हारून को विवेक तथा प्रकाश और शिक्षाप्रद पुस्तक आज्ञाकारियों के लिये।
49. जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे, और वे प्रलय से भयभीत हों।
50. और यह (क़ुर्आन) एक शुभ शिक्षा है जिसे हम ने उतारा है, तो क्या तुम इस के इन्कारी हो?
51. और हम ने प्रदान की थी इब्राहीम को उस की चेतना इस से पहले, और हम उस से भली भाँति अवगत थे।
52. जब उस ने अपने बाप तथा अपनी जाति से कहा: यह प्रतिमायें (मुर्तियाँ) कैसी हैं जिन की पूजा में तुम लगे हुये हो?
53. उन्होंने ने कहा: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को इन की पूजा करते हुये।
54. उस (इब्राहीम) ने कहा: निश्चय तुम और तुम्हारे पूर्वज खुले कुपथ में हो।
55. उन्होंने ने कहा: क्या तुम लाये हो हमारे पास सत्य या तुम उपहास कर रहे हो?
56. उस ने कहा: बल्कि तुम्हारा पालनहार आकाशों तथा धरती का पालनहार है जिस ने उन्हें पैदा किया है, और मैं तो इसी का साक्षी हूँ।
57. तथा अल्लाह की शपथ! मैं अवश्य चाल चलूँगा तुम्हारी मुर्तियों के साथ, इस के पश्चात् कि तुम चले जाओ।
58. फिर उस ने कर दिया उन्हें खण्ड-खण्ड, उन के बड़े के सिवा, ताकि वह उस की ओर फिरें।
59. उन्होंने ने कहा: किस ने यह दशा कर दी है हमारे पूज्यों (देवताओं) की? वास्तव में वह कोई अत्याचारी होगा।
60. लोगों ने कहा: हम ने सुना है एक नवयुवक को उन की चर्चा करते जिसे इब्राहीम कहा जाता है।
61. लोगों ने कहा: उसे लाओ लोगों के सामने ताकि लोग देखें।
62. उन्होंने ने पूछा: क्या तू ने ही यह किया है हमारे पूज्यों के साथ, हे इब्राहीम?
63. उस ने कहा: बल्कि इसे इन के इस बड़े ने किया है, तो उन्हीं से पूछ लो यदि वह बोलते हों।
64. फिर अपने मन में वे सोच में पड़ गये और (अपने मन में) कहा: वास्तव में तुम्हीं अत्याचारी हो।

65. फिर वह ओंधे कर दिये गये अपने सिरों के बल (और बोले): तू जानता है कि यह बोलते नहीं हैं।
66. इब्राहीम ने कहा: तो क्या तुम इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा उस की करते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सकते हैं और न तुम्हें हानि पहुँचा सकते हैं?
67. तुफ़ (धूल) है तुम पर और उस पर जिस की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह को छोड़ कर। तो क्या तुम समझ नहीं रखते हो?
68. उन्होंने ने कहा: इस को जला दो तथा सहायता करो अपने पूज्यों की, यदि तुम्हें कुछ करना है।
69. हम ने कहा: हे अग्नि! तू शीतल तथा शान्ति बन जा इब्राहीम पर।
70. और उन्होंने ने उस के साथ बुराई चाही, तो हम ने उन्हीं को क्षतिग्रस्त कर दिया।
71. और हम उस (इब्राहीम) को बचा कर ले गये तथा लूत को उस भूमि की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता रखी है विश्व वासियों के लिये।
72. और हम ने उसे प्रदान किया (पुत्र) इसहाक और (पौत्र) याकूब उस पर अधिक, और प्रत्येक को हम ने सत्कर्मी बनाया।
73. और हम ने उन्हें अग्रणी (प्रमुख) बना दिया जो हमारे आदेशानुसार (लोगों को) सुपथ दर्शाते हैं। तथा हम ने वहुयी (प्रकाशना) की उन की ओर सत्कर्मी के करने तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने की, तथा वे हमारे ही

उपासक थे।

74. तथा लूत को हम ने निर्णय शक्ति और ज्ञान दिया, और बचा लिया उस बस्ती से जो दुष्कर्म कर रही थी, वास्तव में वे बुरे अवैज्ञाकारी लोग थे।
75. और हम ने प्रवेश दिया उसे अपनी दया में, वास्तव में वह सदाचारियों में से था।
76. तथा नूह को (याद करो) जब उस ने पुकारा इन (नबियों) से पहले। तो हम ने उस की पुकार सुन ली, फिर उसे और उस के घराने को मुक्ति दी महा पीड़ा से।
77. और उस की सहायता की उस जाति के मुकाबले में जिन्होंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, वास्तव में वे बुरे लोग थे। अतः हम ने डुबो दिया उन सभी को।
78. तथा दावूद और सुलैमान को (याद करो) जब वह दोनों निर्णय कर रहे थे खेत के विषय में जब रात्रि में चर गईं उसे दूसरों की बकरियों, और हम उन का निर्णय देख रहे थे।
79. तो हम ने उस का उचित निर्णय समझा दिया सुलैमान को, और प्रत्येक को हम ने प्रदान किया था निर्णय शक्ति तथा ज्ञान, और हम ने आधीन कर दिया था दावूद के साथ पर्वतों को जो (अल्लाह की पवित्रता का) वर्णन करते थे तथा पक्षियों को, और हम ही इस कार्य के करने वाले थे।
80. तथा हम ने उस (दावूद) को सिखाया तुम्हारे लिये कवच बनाना ताकि तुम्हें बचाये तुम्हारे आक्रमण से, तो

- क्या तुम कृतज्ञ हो?
81. और सुलैमान के आधीन कर दिया उग्र वायु को, जो चल रही थी उस के आदेश से उस धरती की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता (विभूतियाँ) रखी है, और हम ही सर्वज्ञ हैं।
82. तथा शैतानों में से उन्हें (उस के आधीन कर दिया) जो उस के लिये डुबकी लगाते तथा इस के सिवा दूसरे कार्य करते थे, और हम ही उन के निरीक्षक थे।
83. तथा अय्यूब (की उस स्थिति) को (याद करो) जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि मुझे रोग लग गया है। और तू सब से अधिक दयावान् है।
84. तो हम ने उस की गुहार सुन ली और दूर कर दिया जो दुःख उसे था, और प्रदान कर दिया उसे उस का परिवार तथा उतने ही और उन के साथ, अपनी विशेष दया से तथा शिक्षा के लिये उपासकों की।
85. तथा इस्माईल और इद्रीस तथा जुल किफल को (याद करो), सभी सहनशीलों में से थे।
86. और हम ने प्रवेश दिया उन को अपनी दया में, वास्तव में वे सदाचारी थे।
87. तथा जुन्नून को जब वह चला गया क्रोधित हो कर और सोचा कि हम उसे पकड़ेंगे नहीं, अन्ततः उस ने पुकारा अधेरो में कि नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी हूँ।
88. तब हम ने उस की पुकार सुन ली, तथा उसे मुक्त कर दिया शोक से, और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं ईमान वालों को।
89. तथा जकरिय्या को (याद करो) जब पुकारा उस ने अपने पालनहार को, हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला, और तू सब से अच्छा उत्तराधिकारी है।
90. तो हम ने सुन ली उस की पुकार तथा प्रदान कर दिया उसे यह्या, और सुधार दिया उस के लिये उस की पत्नी को। वास्तव में वह सभी दौड़-धूप करते थे सत्कर्मों में और हम से प्रार्थना करते थे रुचि तथा भय के साथ, और हमारे आगे झुके हुये थे।
91. तथा जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूंक दी हम ने उस के भीतर अपनी आत्मा से, और उसे तथा उस के पुत्र को बना दिया एक निशानी संसार वासियों के लिये।
92. वास्तव में तुम्हारा धर्म एक ही धर्म⁽²⁾ है, और मैं ही तुम सब का पालनहार (पूज्य) हूँ। अतः मेरी ही इबादत (वंदना) करो।
93. और खण्ड-खण्ड कर दिया लोगों ने अपने धर्म को (विभेद कर के) आपस में, सब को हमारी ओर ही फिर आना है।
94. फिर जो सदाचार करेगा और वह एकेश्वरवादी हो, तो उस के प्रयास की उपेक्षा नहीं की जायेगी, और हम उसे लिख रहे हैं।
95. और असंभव है किसी भी बस्ती पर

जिस का हम ने विनाश कर दिया है कि वह फिर (संसार में) आ जाये।

96. यहाँ तक कि जब खोल दिये जायेंगे याजूज तथा माजूज और वे प्रत्येक ऊँचाई से उतर रहे होंगे।
97. और समीप आ जायेगा सत्य वचन, तो अकस्मात् खुली रह जायेंगी काफिरों की आँखें, (वे कहेंगे): "हाय हमारा विनाश"! हम असावधान रह गये इस से, बल्कि हम अत्याचारी थे।
98. निश्चय तुम सब तथा तुम जिन (मूर्तियों) को पूज रहे हो अल्लाह के अतिरिक्त नरक के ईंधन हैं, तुम सब वहाँ पहुँचने वाले हो।
99. यदि वे वास्तव में पूज्य होते, तो नरक में प्रवेश नहीं करते, और प्रत्येक उस में सदावासी होंगे।
100. उन की उस में चीखें होंगी तथा वे उस में (कुछ) सुन नहीं सकेंगे।
101. (परन्तु) जिन के लिये पहले ही से हमारी ओर से भलाई का निर्णय हो चुका है, वही उस से दूर रखे जायेंगे।
102. वे उस (नरक) की सरसर भी नहीं सुनेंगे, और अपनी मन चाही चीजों में सदा (मग्न) रहेंगे।
103. उन्हें उदासीन नहीं करेगी (प्रलय के दिन की) बड़ी व्यग्रता, तथा फ़रिश्ते उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे (तथा कहेंगे): यही तुम्हारा वह दिन है जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा था।
104. जिस दिन हम लपेट देंगे आकाश को पजिका के पन्नों को लपेट देने के समान, जैसे हम ने आरंभ किया

था प्रथम उत्पत्ति का उसी प्रकार उसे दुहरायेंगे, इस (वचन) को पूरा करना हम पर है, और हम पूरा कर के रहेंगे।

105. तथा हम ने लिख दिया है जबूर में शिक्षा के पश्चात् कि धरती के उत्तराधिकारी मेरे सदाचारी भक्त होंगे।
106. वस्तुतः इस (बात) में एक बड़ा उपदेश है उपासकों के लिये।
107. और (हे नबी!) हम ने आप को नहीं भेजा है किन्तु समस्त संसार के लिये दया बना कर।
108. आप कह दें कि मेरी ओर तो बस यही वही की जा रही है कि तुम सब का पूज्य बस एक ही पूज्य है, फिर क्या तुम उस के आज्ञाकारी हो?
109. फिर यदि वे विमुख हों, तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें समान रूप से सावधान कर दिया, और मैं नहीं जानता कि समीप है अथवा दूर जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।
110. वास्तव में वही जानता है खुली बात को तथा जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो।
111. तथा मुझे यह ज्ञान (भी) नहीं, संभव है यह तुम्हारे लिये कोई परीक्षा हो तथा लाभ हो एक निर्धारित समय तक।
112. उस (नबी) ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! सत्य के साथ निर्णय कर दे। और हमारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है जिस से सहायता माँगी जाये उन बातों पर जो तुम लोग बना रहे हो।

सूरह हज्ज - 22

सूरह हज्ज के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मद्नी है, इस में 78 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे मनुष्यो! अपने पालनहार से डरो, वास्तव में क्यामत (प्रलय) का भूकम्प बड़ा ही घोर विषय है।
2. जिस दिन तुम उसे देखोगे, सुध न होगी प्रत्येक दूध पिलाने वाली को अपने दूध पीते शिशु की, और गिरा देगी प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भ, तथा तुम देखोगे लोगों को मतवाले जब कि वे मतवाले नहीं होंगे, परन्तु अल्लाह की यातना बहुत कड़ी होगी।
3. और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान के, तथा अनुसरण करते हैं प्रत्येक उद्धत शैतान का।
4. जिस के भाग्य में लिख दिया गया है कि जो उसे मित्र बनायेगा वह उसे कुपथ कर देगा और उसे राह दिखायेगा नरक की यातना की ओर।
5. हे लोगो! यदि तुम किसी संदेह में हो पुनः जीवित होने के विषय में, तो (सोचो कि) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर मांस के खण्ड से जो चित्रित तथा चीत्रविहीन होता है, ताकि हम उजागर कर दें तुम्हारे लिये, और स्थिर रखते हैं गर्भाशयों में जब तक चाहें एक निर्धारित

- अवधि तक, फिर तुम्हें निकालते हैं शिशु बना कर, फिर ताकि तुम पहुँचो अपने यौवन को, और तुम में से कुछ (पहले ही) मर जाते हैं और तुम में से कुछ जीर्ण आयु की ओर फेर दिये जाते हैं ताकि उसे कुछ ज्ञान न रह जाये ज्ञान के पश्चात्, तथा तुम देखते हो धरती को सूखी, फिर जब हम उस पर जल-वर्षा करते हैं, तो सहसा लहलहाने और उभरने लगी, तथा उगा देती है प्रत्येक प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियाँ।
6. यह इस लिये है कि अल्लाह ही सत्य है तथा वही जीवित करता है मुर्दा को, तथा वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।
 7. यह इस कारण है कि क्यामत (प्रलय) अवश्य आनी है जिस में कोई संदेह नहीं, और अल्लाह ही उन्हें पुनः जीवित करेगा जो समाधियों (कब्रों) में हैं।
 8. तथा लोगों में वह (भी) है जो विवाद करता है अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान और मार्ग दर्शन एवं बिना किसी ज्योतिमय पुस्तक के।
 9. अपना पहलू फेर कर ताकि अल्लाह की राह से कुपथ कर दो उसी के लिये संसार में अपमान है और हम उसे प्रलय के दिन दहन की यातना चखायेंगे।
 10. यह उन कर्मों का परिणाम है जिसे तेरे हाथों ने आगे भेजा है, और अल्लाह अत्याचारी नहीं है (अपने) भक्तों के लिये।
 11. तथा लोगों में वह (भी) है जो इबादत

(बंदना) करता है अल्लाह की एक किनारे पर हो कर, फिर यदि उसे कोई लाभ पहुँचता है तो वह संतोष हो जाता है और यदि उसे कोई परीक्षा आ लगे तो मुँह के बल फिर जाता है। वह क्षति में पड़ गया लोक तथा परलोक की, और यही खुली क्षति है।

12. वह पुकारता है अल्लाह के अतिरिक्त उसे जो न हानि पहुँचा सके उसे और न लाभ, यही दूर का कुपथ है।
13. वह उसे पुकारता है जिस की हानि अधिक समीप है उस के लाभ से, वास्तव में वह बुरा संरक्षक तथा बुरा साथी है।
14. निश्चय अल्लाह उन्हें प्रवेश देगा जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वास्तव में अल्लाह करता है जो चाहता है।
15. जो सोचता है कि उस की सहायता नहीं करेगा अल्लाह लोक तथा परलोक में, तो उसे चाहिये कि तान ले कोई रस्सी आकाश की ओर फिर फाँसी दे कर मर जाये। फिर देखे कि क्या दूर कर देती है उस का उपाय उस के रोष (क्रोध) को।
16. तथा इसी प्रकार हम ने इस (कुर्आन) को खुली आयतों में अवतरित किया है। और अल्लाह सुपथ दर्शा देता है जिसे चाहता है।
17. जो ईमान लाये तथा जो यहूदी हुये, और जो साबई तथा ईसाई हैं और जो मजसी हैं तथा जिन्होंने शिर्क किया है, अल्लाह निर्णय कर देगा

उन के बीच प्रलय के दिन। निश्चय अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

18. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं तथा सूर्य और चाँद तथा तारे और पर्वत एवं वृक्ष और पशु तथा बहुत से मनुष्य, और बहुत से वह भी हैं जिन पर यातना सिद्ध हो चुकी है। और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं है। निःसंदेह अल्लाह करता है जो चाहता है।
19. यह दो पक्ष हैं जिन्होंने विभेद किया अपने पालनहार के विषय में, तो इन में से काफिरों के लिये ब्योत दिये गये हैं अग्नि के वस्त्र, उन के सिरों पर धारा बहायी जायेगी खौलते हुये पानी की।
20. जिस से गला दी जायेगी उन के पेटों के भीतर की वस्तुयें और उन की खालें।
21. और उन्हीं के लिये लोहे के आँकुश हैं।
22. जब भी उस (अग्नि) से निकलना चाहेंगे व्याकुल हो कर, तो उसी में फेर दिये जायेंगे, तथा (कहा जायेगा कि) दहन की यातना चखो।
23. निश्चय अल्लाह प्रवेश देगा उन्हें जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित होंगी, उन में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे तथा मोती, और उन का वस्त्र उस में रेशम का होगा।
24. तथा उन्हें मार्ग दर्शा दिया गया पवित्र बात का, और उन्हें दर्शा दिया गया प्रशंसित (अल्लाह) का मार्ग।

25. जो काफ़िर हो गये और रोकते हैं अल्लाह की राह से और उस मस्जिदें हराम से जिसे सब के लिये हम ने एक जैसा बना दिया है: उस के वासी हों अथवा प्रवासी। तथा जो उस में अत्याचार से अधर्म का विचार करेगा, हम उसे दुःखदायी यातना चखायेंगे।
26. तथा वह समय याद करो जब हम ने निश्चित कर दिया इब्राहीम के लिये इस घर (काबा) का स्थान (इस प्रतिबंध के साथ) कि साझी न बनाना मेरा किसी चीज़ को, तथा पवित्र रखना मेरे घर को परिक्रमा करने, खड़े होने, रुकूअ (झुकना) और सज्दा करने वालों के लिये।
27. और घोषणा कर दो लोगों में हज्ज की, वे आयेंगे तेरे पास पैदल तथा प्रत्येक दुबली पतली स्वारियों पर, जो प्रत्येक दूरस्थ मार्ग से आयेंगी।
28. ताकि वह उपस्थित हों अपने लाभ प्राप्त करने के लिये, और ताकि अल्लाह का नाम लें निश्चित दिनों में उस पर जो उन्हें प्रदान किया है पालतू चौपायों में से। फिर उस में से स्वयं खाओ तथा भूखे निर्धन को खिलाओ।
29. फिर अपना मैल कुचैल दूर करें तथा अपनी मनौतियाँ पूरी करें, और परिक्रमा करें प्राचीन घर की।
30. यह है (आदेश), और जो अल्लाह के निर्धारित किये प्रतिबंधों का आदर करे, तो यह उस के लिये अच्छा है उस के पालनहार के पास। और हलाल (वैध) कर दिये गये तुम्हारे

लिये चौपाये उन के सिवा जिन का वर्णन तुम्हारे समक्ष कर दिया गया है, अतः मुर्तियों की गन्दगी से बचो, तथा झूठ बोलने से बचो।

31. अल्लाह के लिये एकेश्वरवादी होते हुये उस का साझी न बनाते हुये। और जो साझी बनाता हो अल्लाह का तो मानो वह आकाश से गिर गया फिर उसे पक्षी उचक ले जाये अथवा वायु का झोंका किसी दूर स्थान पर फेंक दे।
32. यह (अल्लाह का आदेश है), और जो आदर करे अल्लाह के प्रतीकों (निशानों) का, तो यह निःसन्देह दिलों के आज्ञाकारी होने की बात है।
33. तुम्हारे लिये उन में बहुत से लाभ हैं एक निर्धारित समय तक, फिर उन के बध करने का स्थान प्राचीन घर के पास है।
34. तथा प्रत्येक समुदाय के लिये हम ने बलि की विधि निर्धारित की है, ताकि वह अल्लाह का नाम लें उस पर जो प्रदान किये हैं उन को पालतू चौपायों में से। अतः तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उसी के आज्ञाकारी रहो। और (हे नबी!) आप शुभ सूचना सुना दें विनीतों को।
35. जिन की दशा यह है कि जब अल्लाह की चर्चा की जाये तो उन के दिल डर जाते हैं तथा धैर्य रखते हैं उस विपदा पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ की स्थापना करने वाले हैं, तथा उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।
36. और ऊँटों को हम ने बनाया है

तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों में, तुम्हारे लिये उन में भलाई है। अतः अल्लाह का नाम लो उन पर (बध करते समय) खड़े कर को और जब धरती से लग जायें उन के पहलू तो स्वयं खाओ उन में से और खिलाओ उस में से संतोषी तथा भिक्षु को, इसी प्रकार हम ने उसे वश में कर दिया है तुम्हारे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

37. नहीं पहुँचते अल्लाह को उन के मौस न उन के रक्त, परन्तु उस को पहुँचता है तुम्हारा आज्ञा पालन। इसी प्रकार उस (अल्लाह) ने उन (पशुओं) को तुम्हारे वश में कर दिया है, ताकि तुम अल्लाह की महिमा का वर्णन करो उस मार्गदर्शन पर जो तुम्हें दिया है। और आप सत्कर्मियों को शुभ सूचना सुना दें।
38. निश्चय ही अल्लाह प्रतिरक्षा करता है उन की ओर से जो ईमान लाये हैं, वास्तव में अल्लाह किसी विश्वासघाती कृतघ्न से प्रेम नहीं करता।
39. उन्हें अनुमति दे दी गई जिन से युद्ध किया जा रहा है क्यों कि उन पर अत्याचार किया गया है, और निश्चय अल्लाह उन की सहायता पर पूर्णतः सामर्थ्यवान है।
40. जिन को इन के घरों से अकारण निकाल दिया गया केवल इस बात पर कि वह कहते थे कि हमारा पालनहार अल्लाह है, और यदि अल्लाह प्रतिरक्षा न कराता कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा तो ध्वस्त कर दिये जाते आश्रम तथा गिरजे और यहूदियों

के धर्म स्थल तथा मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम अधिक लिया जाता है। और अल्लाह अवश्य उस की सहायता करेगा जो उस (के सत्य) की सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

41. यह वह लोग है कि यदि हम इन्हें धरती में अधिपत्य प्रदान कर दें, तो नमाज़ की स्थापना करेंगे और ज़कात देंगे, तथा भलाई का आदेश देंगे, और बुराई से रोकेंगे, और अल्लाह के अधिकार में है सब कर्मों का परिणाम।
42. और (हे नबी!) यदि वह आप को झुठलायें तो इन से पूर्व झुठला चुकी है नूह की जाति और (आद) तथा (समूद)।
43. तथा इब्राहीम की जाति और लूत की (जाति)।
44. तथा मद्यन वाले, और मूसा (भी) झुठलाये गये, तो मैं ने अवसर दिया काफ़िरों को, फिर उन्हें पकड़ लिया, तो मेरा दण्ड कैसा रहा?
45. तो कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया, जो अत्याचारी थीं, वह अपनी छतों के समेत गिरी हुई हैं और बेकार कुएँ तथा पक्के ऊँचे भवन।
46. तो क्या वह धरती में फिरे नहीं? तो उन के ऐसे दिल होते जिन से समझते, अथवा ऐसे कान होते जिन से सुनते, वास्तव में आँखें अन्धी नहीं हो जाती, परन्तु वह दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।
47. तथा वे आप से शीघ्र यातना की माँग कर रहे हैं, और अल्लाह कदापि अपने वचन को भंग नहीं करेगा।

और निश्चय आप के पालनहार के यहाँ एक दिन तुम्हारी गणना से हजार वर्ष के बराबर है।

48. और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने अवसर दिया जब कि वह अत्याचारी थीं, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया। और मेरी ही ओर (सब को) वापिस आना है।
49. (हे नबी!) आप कह दें कि हे लोगो! मैं तो बस तुम्हें खुला सावधान करने वाला हूँ।
50. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये, उन्हीं के लिये क्षमा और सम्मानित जीविका है।
51. और जिन्होंने प्रयास किया हमारी आयतों में विवश करने का, तो वही नारकी है।
52. और (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी रसूल और न किसी नबी को किन्तु जब उस ने (पुस्तक) पढ़ी तो संशय डाल दिया शैतान ने उस के पढ़ने में। फिर निरस्त कर देता है अल्लाह शैतान के संशय को, फिर सुदृढ़ कर देता है अल्लाह अपनी आयतों को और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।
53. यह इस लिये ताकि अल्लाह शैतानी संशय को उन के लिये परीक्षा बना दे जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है और जिन के दिल कड़े हैं। और वास्तव में अत्याचारी विरोध में बहुत दूर चले गये हैं।
54. और इस लिये (भी) ताकि विश्वास हो जाये उन्हें जो ज्ञान दिये गये हैं कि यह (कुआन) सत्य है आप के

पालनहार की ओर से, और इस पर ईमान लायें और इस के लिये झुक जायें उन के दिल, और निःसंदेह अल्लाह ही पथ प्रदर्शक है उन का जो ईमान लायें सुपथ की ओर।

55. तथा जो काफ़िर हो गये तो वह सदा संदेह में रहेंगे इस (कुआन) से, यहाँ तक कि उन के पास सहसा प्रलय आ जाये, अथवा उन के पास बांझ दिन की यातना आ जाये।
56. राज्य उस दिन अल्लाह ही का होगा, वही उन के बीच निर्णय करेगा, तो जो ईमान लाये और सदाचार किये तो वह सुख के स्वर्गों में होंगे।
57. और जो काफ़िर हो गये, और हमारी आयतों को झूठलाया, उन्हीं के लिये अपमानकारी यातना है।
58. तथा जिन लोगों ने हिजरत (प्रस्थान) की अल्लाह की राह में, फिर मारे गये अथवा मर गये तो उन्हें अल्लाह अवश्य उत्तम जीविका प्रदान करेगा। और वास्तव में अल्लाह ही सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।
59. वह उन्हें प्रवेश देगा ऐसे स्थान में जिस से वह प्रसन्न हो जायेंगे, और वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सहनशील है।
60. यह वास्तविकता है, और जिस ने बदला लिया वैसा ही जो उस के साथ किया गया फिर उस के साथ अत्याचार किया जाये, तो अल्लाह उस की अवश्य सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त क्षमाशील है।
61. यह इस लिये कि अल्लाह प्रवेश देता है रात्रि को दिन में, और प्रवेश देता है दिन को रात्रि में। और अल्लाह सब

कुछ सुनने देखने वाला है।

62. यह इस लिये कि अल्लाह ही सत्य है, और जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वही असत्य है, और अल्लाह ही सर्वोच्च महान् है।
63. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से जल बरसाता है तो भूमि हरी हो जाती है, वास्तव में अल्लाह सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है।
64. उसी का है जो आकाशों में तथा जो धरती में है। और वास्तव में अल्लाह ही निस्पृह प्रशंसित है।
65. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने वश में कर दिया⁽¹⁾ है तुम्हारे, जो कुछ धरती में है, तथा नाव को (जो) चलती है सागर में उस के आदेश से, और रोकता है आकाश को धरती पर गिरने से परन्तु उस की अनुमति से? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अति करुणामय दयावान् है।
66. तथा वही है जिस ने तुम्हें जीवित किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें जीवित करेगा, वास्तव में मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।
67. (हे नबी!) हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये (इबादत की) विधि निर्धारित कर दी थी, जिस का वह पालन करते रहे, अतः उन्हें आप से इस (इस्लाम के नियम) के संबंध में विवाद नहीं करना चाहिये। और आप अपने पालनहार की ओर लोगों को बुलायें, वास्तव में आप सीधी राह पर हैं।
68. और यदि वह आप से विवाद करें, तो कह दें कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों से

भली भाँति अवगत है।

69. अल्लाह ही तुम्हारे बीच निर्णय करेगा क्यामत (प्रलय) के दिन जिस में तुम विभेद कर रहे हो।
70. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो आकाश तथा धरती में है, यह सब एक किताब में (अंकित) है। वास्तव में यह अल्लाह के लिये अति सरल है।
71. और वह इबादत (वन्दना) अल्लाह के अतिरिक्त उस की कर रहे हैं जिस का उस ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है, और न उन्हें उस का कोई ज्ञान है। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं होगा।
72. और जब उन को सुनायी जाती है हमारी खुली आयतें तो आप पहचान लेते हैं उन के चेहरों में जो काफिर हो गये बिगाड़ को। और लगता है कि वह आक्रमण कर देंगे उन पर जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं। आप कह दें: क्या मैं तुम्हें इस से बुरी चीज़ बता दूँ? वह अग्नि है जिस का वचन अल्लाह ने काफ़िरों को दिया है, और वह बहुत ही बुरा आवास है।
73. हे लोगो! एक उदाहरण दिया गया है इसे ध्यान से सुनो, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, वह सब एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि सब इस के लिये मिल जायें। और यदि उन से मक्खी कुछ छीन ले तो उस से वापिस नहीं ले सकते। माँगने वाले निर्बल, और जिन से माँगा जाये वह दोनों ही निर्बल हैं।

74. उन्होंने ने अल्लाह का आदर किया ही नहीं जैसे उस का आदर करना चाहिये! वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।
75. अल्लाह ही निर्वाचित करता है फ़रिश्तों में से तथा मनुष्यों में से रसूलों को। वास्तव में वह सुनने तथा देखने वाला है।
76. वह जानता है जो उन के सामने है और जो कुछ उन से ओझल है, और उसी की ओर सब काम फेरे जाते हैं।
77. हे ईमान वाले! रूकूअ करो तथा सज्दा करो, और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करो, और भलाई करो ताकि तुम सफल हो जाओ।
78. तथा अल्लाह के लिये जिहाद करो जैसे जिहाद करना चाहिये। उसी ने तुम्हें निर्वाचित किया है और नहीं बनाई तुम पर धर्म में कोई संकीर्णता (तंगी)। यह तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म है, उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा है इस (कुआन) से पहले तथा इस में भी। ताकि रसूल गवाह हों तुम पर, और तुम गवाह बनो सब लोगों पर। अतः नमाज़ की स्थापना करो तथा ज़कात दो, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़ लो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है।



सूरह मुमिनून - 23

सूरह मुमिनून के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 118 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. सफल हो गये ईमान वाले।
2. जो अपनी नमाज़ों में विनीत रहने वाले हैं।
3. और जो व्यर्थ से विमुख रहने वाले हैं।
4. तथा जो ज़कात देने वाले हैं।
5. और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।
6. परन्तु अपनी पत्नियों तथा अपने स्वामित्व में आयी दासियों से, तो वही निन्दित नहीं हैं।
7. फिर जो इस के अतिरिक्त चाहें, तो वही उल्लंघनकारी हैं।
8. और जो अपनी धरोहरों तथा वचन का पालन करने वाले हैं।
9. तथा जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करने वाले हैं।
10. यही उत्तराधिकारी हैं।
11. जो उत्तराधिकारी होंगे फिर्दौस के, जिस में वे सदावासी होंगे।
12. और हम ने उत्पन्न किया है मनुष्य को मिट्टी के सार से।
13. फिर हम ने उसे वीर्य बना कर रख दिया एक सुरक्षित स्थान में।

14. फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुये रक्त में, फिर हम ने उसे मांस का लोथड़ा बना दिया, फिर हम ने लोथड़े में हड्डियाँ बनायीं, फिर हम ने पहना दिया हड्डियों को मांस, फिर उसे एक अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया। तो शुभ है अल्लाह जो सब से अच्छी उत्पत्ति करने वाला है।
15. फिर तुम सब इस के पश्चात् अवश्य मरने वाले हो।
16. फिर निश्चय तुम सब (प्रलय) के दिन जीवित किये जाओगे।
17. और हम ने बना दिये तुम्हारे ऊपर सात आकाश, और हम उत्पत्ति से अचेत नहीं हैं।
18. और हम ने आकाश से उचित मात्रा में पानी बरसाया, और उसे धरती में रोक दिया तथा हम उसे विलुप्त कर देने पर निश्चय सामर्थ्यवान हैं।
19. फिर हम ने उपजा दिये तुम्हारे लिये उस (पानी) के द्वारा खजूरों तथा अंगूरों के बाग, तुम्हारे लिये उस में बहुत से फल हैं, और उसी में से तुम खाते हो।
20. तथा वृक्ष जो निकलता है सैना पर्वत से जो तेल लिये उगता है। तथा सालन है खाने वालों के लिये।
21. और वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है, हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेटों में है। तथा तुम्हारे लिये उन में अन्य बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को तुम खाते हो।
22. तथा उन पर और नावों पर तुम

सवार किये जाते हो।

23. तथा हम ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (बंदना) अल्लाह की करो, तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?
24. तो उन प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये उस की जाति में से, यह तो एक मनुष्य है, तुम्हारे जैसा, यह तुम पर प्रधानता चाहता है। और यदि अल्लाह चाहता तो किसी फरिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे सुना ही नहीं अपने पूर्वजों में।
25. यह बस एक ऐसा पुरुष है जो पागल हो गया है, तो तुम उस की प्रतीक्षा करो कुछ समय तक।
26. नूह ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उन के मुझे झुठलाने पर।
27. तो हम ने उस की ओर बह्यी की, कि नाव बना हमारी रक्षा में हमारी बह्यी के अनुसार, और जब हमारा आदेश आ जाये तथा तन्नूर उबल पड़े, तो रख ले प्रत्येक (जीव) के एक-एक जोड़े तथा अपने परिवार को, उस के सिवा जिस पर पहले निर्णय हो चुका है उन में से, और मुझे संबोधित न करना उन के विषय में जिन्होंने अत्याचार किये है, निश्चय वे डुबो दिये जायेंगे।
28. और जब स्थिर हो जाये तू और जो तेरे साथी है नाव पर, तो कह: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने हमें मुक्त किया अत्याचारी लोगों से।

29. तथा कह: हे मेरे पालनहार! मुझे शुभ स्थान में उतार, और तू उत्तम स्थान देने वाला है।
30. निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं, तथा निश्चय हम परीक्षा लेने वाले हैं।
31. फिर हम ने पैदा किया उन के पश्चात् दूसरे समुदाय को।
32. फिर हम ने भेजा उन में रसूल उन्हीं में से कि तुम इबादत (बंदना) करो अल्लाह की, तुम्हारा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?
33. और उस की जाति के प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये तथा आखिरत (परलोक) का सामना करने को झुठला दिया, तथा हम ने उन्हें सम्पन्न किया था संसारिक जीवन में: यह तो बस एक मनुष्य है तुम्हारे जैसा, खाता है जो तुम खाते हो और पीता है जो तुम पीते हो।
34. और यदि तुम ने मान लिया अपने जैसे एक मनुज को तो निश्चय तुम क्षतिग्रस्त हो।
35. क्या वह तुम को बचन देता है कि जब तुम मर जाओगे और धूल तथा हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम फिर जीवित निकाले जाओगे?
36. बहुत दूर की बात है जिस का तुम्हें बचन दिया जा रहा है।
37. जीवन तो बस संसारिक जीवन है, हम मरते-जीते हैं, और हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।
38. यह तो बस एक व्यक्ति है जिस ने

अल्लाह पर एक झूठ घड़ लिया है।
और हम उस का विश्वास करने
वाले नहीं हैं।

39. नबी ने प्रार्थना की: मेरे पालनहार!
मेरी सहायता कर उन के झुठलाने
पर मुझे।
40. (अल्लाह ने) कहा: शीघ्र ही वह (अपने
किये पर) पछतायेंगे।
41. अन्ततः पकड़ लिया उन्हें कोलाहल ने
सत्यानुसार, और हम ने उन्हें कचरा
बना दिया, तो दूरी हो अत्याचारियों
के लिये।
42. फिर हम ने पैदा किया उन के
पश्चात् दूसरे युग के लोगों को।
43. नहीं आगे होती है कोई जाति अपने
समय से और न पीछे।
44. फिर हम ने भेजा अपने रसूलों को
निरन्तर, जब जब किसी समुदाय के
पास उस का रसूल आया, उन्होंने ने
उस को झुठला दिया, तो हम ने पीछे
लगा दिया उन के एक को दूसरे के
और उन्हें कहानी बना दिया। तो दूरी
है उन के लिये जो ईमान नहीं लाते।
45. फिर हम ने भेजा मूसा तथा उस के
भाई हारून को अपनी निशानियों
तथा खुले तर्क के साथ।
46. फिर और और उस के प्रमुखों की
और तो उन्होंने ने गर्व किया, तथा वे
थे ही अभिमानी लोग।
47. उन्होंने ने कहा: क्या हम ईमान लायें
अपने जैसे दो व्यक्तियों पर, जब कि
उन दोनों की जाति हमारे आधीन है?
48. तो उन्होंने ने दोनों को झुठला दिया,

तथा हो गये विनाशों में।

49. और हम ने प्रदान की मूसा को
पुस्तक, ताकि वह मार्ग दर्शन पा
जायें।
50. और हम ने बना दिया मर्यम के पुत्र
तथा उस की माँ को एक निशानी,
तथा दोनों को शरण दी एक उच्च
बसने योग्य तथा प्रवाहित स्रोत के
स्थान की ओर।
51. हे रसूलो! खाओ स्वच्छ चीजों में
से तथा अच्छे कर्म करो, वास्तव में,
मैं उस से जो तुम कर रहे हो भली
भाँति अवगत हूँ।
52. और वास्तव में यह तुम्हारा धर्म एक
ही धर्म है और मैं ही तुम सब का
पालनहार हूँ, अतः मुझी से डरो।
53. तो उन्होंने ने खण्ड कर लिया अपने
धर्म का आपस में कई खण्ड, प्रत्येक
सम्प्रदाय उसी में जो उन के पास
है मग्न है।
54. अतः (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें
उन की अचेतना में कुछ समय तक।
55. क्या वे समझते हैं कि हम जो
सहायता कर रहे हैं उन की धन तथा
संतान से।
56. शीघ्रता कर रहे हैं उन के लिये
भलाईयों में? बल्कि वह समझते नहीं हैं।
57. वास्तव में जो अपने पालनहार के
भय से डरने वाले हैं।
58. और जो अपने पालनहार की आयतों
पर ईमान रखते हैं।
59. और जो अपने पालनहार का साझी

नहीं बनाते हैं।

60. और जो करते हैं जो कुछ भी करें, और उन के दिल काँपते रहते हैं कि वे अपने पालनहार की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
61. वही शीघ्रता कर रहे हैं भलाईयों में, तथा वही उन के लिये अग्रसर हैं।
62. और हम बोझ नहीं रखते किसी प्राणी पर परन्तु उस के सामर्थ्य के अनुसार। तथा हमारे पास एक पुस्तक है जो सत्य बोलती है, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
63. बल्कि उन के दिल अचेत हैं इस से, तथा उन के बहुत से कर्म हैं इस के सिवा जिसे वे करने वाले हैं।
64. यहाँ तक कि जब हम पकड़ लेंगे उन के सुखियों को यातना में, तो वे विलाप करने लगेंगे।
65. आज विलाप न करो, निःसंदेह तुम हमारी ओर से सहायता नहीं दिये जाओगे।
66. मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती रहीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिरते रहे।
67. अभिमान करते हुये, उसे कथा बना कर बकवास करते रहे।
68. क्या उन्होंने ने इस कथन (कुर्आन) पर विचार नहीं किया, अथवा इन के पास वह आ गया जो उन के पूर्वजों के पास नहीं आया?
69. अथवा वह अपने रसूल से परिचित नहीं हुये, इस लिये वह उस का इन्कार कर रहे हैं?
70. अथवा वे कहते हैं कि वह पागलपन

है? बल्कि वह तो उन के पास सत्य लाये हैं, और उन में से अधिकतर को सत्य अप्रिय है।

71. और यदि अनुसरण करने लगे सत्य उन की मनमानी का, तो अस्त-व्यस्त हो जाये आकाश तथा धरती और जो उन के बीच है, बल्कि हम ने दे दी है उन को उन की शिक्षा, फिर (भी) वे अपनी शिक्षा से विमुख हो रहे हैं।
72. (हे नबी!) क्या आप उन से कुछ (धन) माँग रहे हैं? आप के लिये तो आप के पालनहार का दिया हुआ ही उत्तम है। और वह सर्वोत्तम जीविका देने वाला है।
73. निश्चय आप तो उन्हें सुपथ की ओर बुला रहे हैं।
74. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते वे सुपथ से कतराने वाले हैं।
75. और यदि हम उन पर दया कर दें और दूर कर दें जो दुःख उन के साथ है⁽¹⁾ तो वह अपने कुकर्मों में और अधिक बहकते जायेंगे।
76. और हम ने उन्हें यातना में ग्रस्त (भी) किया, तो अपने पालनहार के समक्ष नहीं झुके और न विनय करते हैं।
77. यहाँ तक कि जब हम उन पर खोल देंगे कड़ी यातना के द्वार, तो सहसा वह उस समय निराश हो जायेंगे।
78. वही है जिस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये कान तथा आँखें और दिल, (फिर भी) तुम बहुत कम कृतज्ञ होते हो।
79. और उसी ने तुम्हें धरती में फैलाया है, और उसी की ओर एकत्र किये जाओगे।

80. तथा वही है जो जीवन देता और मारता है, और उसी के अधिकार में है रात्रि तथा दिन का फेर बदल, तो क्या तुम समझ नहीं रखते?
81. बल्कि उन्होंने ने वही बात कही जो अगलों ने कही।
82. उन्होंने ने कहा: क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी तथा हड्डियाँ हो जायेंगे, तो क्या हम फिर अवश्य जीवित किये जायेंगे?
83. हम को तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले यही वचन दिया जा चुका है, यह तो बस अगलों की कल्पित कथायें हैं।
84. (हे नबी!) उन से कहो: किस की है धरती और जो उस में है, यदि तुम जानते हो?
85. वे कहेंगे कि अल्लाह की। आप कहिये: फिर तुम क्यों शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
86. आप पूछिये कि कौन है सातों आकाशों का स्वामी तथा महा सिंहासन का स्वामी?
87. वे कहेंगे: अल्लाह है। आप कहिये: फिर तुम उस से डरते क्यों नहीं हो?
88. आप उन से कहिये कि किस के हाथ में है प्रत्येक वस्तु का अधिकार? और वह शरण देता है और उसे कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम ज्ञान रखते हो?
89. वे अवश्य कहेंगे कि (यह सब गुण) अल्लाह ही के हैं। आप कहिये: फिर तुम पर कहाँ से जादू¹¹ हो जाता है?
90. बल्कि हम ने उन्हें सत्य पहुँचा दिया है, और निश्चय यही मिथ्यावादी हैं।
91. अल्लाह ने नहीं बनायी है अपनी कोई संतान, और न उस के साथ कोई अन्य पूज्य है। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य अलग हो जाता अपनी उत्पत्ति को ले कर, और एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ता। पवित्र है अल्लाह उन बातों से जो यह लोग बनाते हैं।
92. वह परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्यक्ष (खुले) का ज्ञानी है, तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे करते हैं।
93. (हे नबी!) आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! यदि तू मुझे वह दिखाये जिस की उन्हें धमकी दी जा रही है।
94. तो मेरे पालनहार! मुझे इन अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।
95. तथा वास्तव में हम आप को उसे दिखाने पर जिस की उन्हें धमकी दे रहे हैं अवश्य सामर्थ्यवान हैं।
96. (हे नबी!) आप दूर करें उस (व्यवहार) से जो उत्तम हो बुराई को। हम भली भाँति अवगत हैं उन बातों से जो वे बनाते हैं।
97. तथा आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ, शैतानों की शंकाओं से।
98. तथा मैं तेरी शरण माँगता हूँ, मेरे पालनहार! कि वह मेरे पास आयें।
99. यहाँ तक कि जब उन में किसी की मौत आने लगे तो कहता है: मेरे पालनहार! मुझे (संसार में) वापिस कर दे।

100. संभवतः मैं अच्छा कर्म करूँगा, उस (संसार में) जिसे छोड़ आया हूँ कदापि ऐसा नहीं होगा। वह केवल एक कथन है जिसे वह कह रहा है। और उन के पीछे एक आड़ है उन के पुनः जीवित किये जाने के दिन तक।
101. तो जब नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, तो कोई संबंध नहीं होगा उन के बीच उस दिन और न वे एक दूसरे को पूछेंगे।
102. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे, वही सफल होने वाले हैं।
103. और जिस के पलड़े हल्के होंगे, तो उन्हीं ने ही स्वयं को क्षतिग्रस्त कर लिया, जो नरक में सदावासी होंगे।
104. झुलस देगी उन के चेहरों को अग्नि तथा उस में उन के जबड़े (झुलस कर) बाहर निकले होंगे।
105. (उन से कहा जायेगा): क्या जब मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती थीं तो तुम उन को झुठलाते नहीं थे?
106. वे कहेंगे: हमारे पालनहार! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया, और वास्तव में हम कुपथ थे।
107. हमारे पालनहार! हमें इस से निकाल दे, यदि अब हम ऐसा करें तो निश्चय हम अत्याचारी होंगे।
108. वह (अल्लाह) कहेगा: इसी में अपमानित हो कर पड़े रहो, और मुझ से बात न करो।
109. मेरे भक्तों में एक समुदाय था जो कहता था कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये। तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, और तू सब दयावानों से उत्तम है।
110. तो तुम ने उन का उपहास किया, यहाँ तक कि तुम को मेरी याद भुला दी, और तुम उन पर हँसते रहे।
111. मैं ने उन को आज बदला (प्रतिफल) दे दिया है उन के धैर्य का, वास्तव में वही सफल है।
112. (अल्लाह) उन से कहेगा: तुम धरती में कितने वर्ष रहे?
113. वे कहेंगे: हम एक दिन या दिन के कुछ भाग रहे। तो गणना करने वालों से पूछ लें।
114. वह कहेगा: तुम नहीं रहे परन्तु बहुत कम। क्या ही अच्छा होता कि तुम ने (पहले ही) जान लिया होता।
115. क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये जाओगे?
116. तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति। नहीं है कोई सच्चा पूज्य परन्तु वही महिमावान अर्श (सिंहासन) का स्वामी।
117. और जो (भी) पुकारेगा अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को जिस के लिये उस के पास कोई प्रमाण नहीं, तो उस का हिसाब केवल उस के पालनहार के पास है, वास्तव में काफ़िर सफल नहीं होंगे।
118. तथा आप प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! तू क्षमा कर तथा दया कर, और तू ही सब दयावानों से उत्तम (दयावान्) है।

सूरह नूर - 24

सूरह नूर के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदनी है, इस में 64 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. यह एक सूरह है जिसे हम ने उतारा तथा अनिवार्य किया है। और उतारी हैं इस में बहुत सी खुली आयतें (निशानियाँ), ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।
2. व्यभिचारिणी तथा व्यभिचारी दोनों में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो, और तुम्हें उन दोनों पर कोई तरस न आये अल्लाह के धर्म के विषय में, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान (विश्वास) रखते हो। और चाहिये कि उन के दण्ड के समय उपस्थित रहे ईमान वालों का एक गिरोह।
3. व्यभिचारी नहीं विवाह करता परन्तु व्यभिचारिणी अथवा मिश्रणवादिनी से, और व्यभिचारिणी नहीं विवाह करती परन्तु व्यभिचारी अथवा मिश्रणवादी से और इसे हराम (अवैध) कर दिया गया है ईमान वालों पर।
4. तथा जो आरोप लगायें व्यभिचार का सतवंती स्त्रियों को, फिर न लायें चार साक्षी तो उन्हें अस्सी कोड़े मारो, और न स्वीकार करो उन का साक्ष्य कभी भी, और वह स्वयं अवैज्ञाकारी हैं।
5. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली इस के पश्चात्, तथा अपना सुधार कर

लिया, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

6. और जो व्यभिचार का आरोप लगाये अपनी पत्नियों पर, और उन के साक्षी न हों परन्तु वह स्वयं, तो चार साक्ष्य अल्लाह की शपथ लेकर देना है कि वास्तव में वह सच्चा है।
7. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार है यदि वह झूठा हो।
8. और स्त्री से दण्ड इस प्रकार दूर होगा कि वह चार बार साक्ष्य दे अल्लाह की शपथ ले कर कि निःसंदेह वह (पति) मिथ्यावादियों में से है।
9. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार हो यदि वह सच्चा हो।
10. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती, और यह कि अल्लाह अति क्षमी तत्त्वज्ञ है (तो समस्या बढ़ जाती)।
11. वास्तव में जो कलंक घड़ लाये हैं तुम्हारे ही भीतर का एक गिरोह है, तुम उसे बुरा न समझो, बल्कि वह तुम्हारे लिये अच्छा है। उन में से प्रत्येक के लिये जितना भाग लिया उतना पाप है और जिस ने भार लिया उस के बड़े भाग का तो उस के लिये बड़ी यातना है।
12. क्यों जब उसे ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों ने सुना तो अपने आप में अच्छा विचार नहीं किया तथा कहा कि यह खुला आरोप है।

13. वे क्यों नहीं लाये इस पर चार साक्षी? (जब साक्षी नहीं लाये) तो निःसंदेह अल्लाह के समीप वही झूठे हैं।
14. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती लोक तथा परलोक में, तो जिन बातों में तुम पड़ गये उन के बदले तुम पर कड़ी यातना आ जाती।
15. जब कि (बिना सोचे) तुम अपनी जुबानों से इसे लेने लगे, और अपने मुखों से वह बात कहने लगे जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न था, तथा तुम इसे सरल समझ रहे थे, जब कि अल्लाह के समीप वह बहुत बड़ी बात थी।
16. और क्यों नहीं जब तुम ने इसे सुना, तो कह दिया कि हमारे लिये योग्य नहीं कि यह बात बोलें? हे अल्लाह! तू पवित्र है! यह तो बहुत बड़ा आरोप है।
17. अल्लाह तुम्हें शिक्षा देता है कि पुनः कभी इस जैसी बात न कहना। यदि तुम ईमान वाले हो।
18. और अल्लाह उजागर कर रहा है तुम्हारे लिये आयतों (आदेशों) को। तथा अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।
19. जो लोग चाहते हैं कि उन में अशलीलता फैले जो ईमान लाये हैं, तो उन के लिये दुःखदायी यातना है लोक तथा परलोक में, तथा अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।
20. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह तथा उस की दया न होती (तो तुम पर यातना आ जाती)। और वास्तव में अल्लाह अति करुणामय दयावान् है।
21. हे ईमान वालो! शैतान के पदचिन्हों

- पर न चलो, और जो उस के पदचिन्हों पर चलेगा, तो वह अशलील कार्य तथा बुराई का ही आदेश देगा, और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उस की दया न होती, तो तुम में से कोई पवित्र कभी नहीं होता। परन्तु अल्लाह पवित्र करता है जिसे चाहे, और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
22. और न शपथ लें तुम में से धनी और सुखी कि नहीं देंगे समीपवर्तियों तथा निर्धनों को और जो हिजरत कर गये अल्लाह की राह में, और चाहिये कि क्षमा कर दें तथा जाने दें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे, और अल्लाह अति क्षमी सहनशील है।
23. जो लोग आरोप लगाते हैं सतवन्ती भोली-भाली ईमान वाली स्त्रियों को, वह धिक्कार दिये गये लोक तथा परलोक में और उन्हीं के लिये बड़ी यातना है।
24. जिस दिन साक्ष्य (गवाही) देंगी उन की जीभें तथा उन के हाथ और उन के पैर उन के कर्मों की।
25. उस दिन अल्लाह उन को उन का पूरा न्यायपूर्वक बदला देगा, तथा वह जान लेंगे कि अल्लाह ही सत्य है, (सच्च को) उजागर करने वाला।
26. अपवित्र स्त्रीयाँ अपवित्र पुरुषों के लिये हैं, तथा अपवित्र पुरुष अपवित्र स्त्रियों के लिये, और पवित्र स्त्रीयाँ पवित्र पुरुषों के लिये हैं, तथा पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के लिये। वही निर्दोष है उन बातों से जो वह कहते हैं। उन्हीं के

- लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।
27. हे ईमान वालो! मत प्रवेश करो किसी घर में अपने घरों के सिवा यहाँ तक कि अनुमति ले लो, और उन के वासियों को सलाम कर लो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है, ताकि तुम याद रखो।
28. और यदि उन में किसी को न पाओ तो उन में प्रवेश न करो, यहाँ तक कि तुम्हें अनुमति दे दी जाये, और यदि तुम से कहा जाये कि वापिस हो जाओ तो वापिस हो जाओ, यह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र है, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो भली-भाँति जानने वाला है।
29. तुम पर कोई दोष नहीं है कि प्रवेश करो निर्जन घरों में जिन में तुम्हारा सामान हो, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम बोलते हो और जो मन में रखते हो।
30. (हे नबी!) आप ईमान वालों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यह उन के लिये अधिक पवित्र है, वास्तव में अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ वह कर रहे हैं।
31. और ईमान वालियों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपनी शोभा का प्रदर्शन न करें सिवाय उस के जो प्रकट हो जाये। तथा अपनी ओढ़नियों अपने वक्षस्थलों (सीनों) पर डाली रहें। और अपनी शोभा का प्रदर्शन न करें, परन्तु अपने पतियों के लिये अथवा अपने पिताओं अथवा अपने ससुरों के लिये अथवा अपने पुत्रों अथवा अपने पति के पुत्रों के लिये अथवा अपने भाईयों अथवा भतीजो अथवा अपने भांजों के लिये अथवा अपनी स्त्रियों अथवा अपने दास-दासियों अथवा ऐसे आधीन पुरुषों के लिये जो किसी और प्रकार का प्रयोजन न रखते हों, अथवा उन बच्चों के लिये जो स्त्रियों की गुप्त बातें न जानते हों और अपने पैर (धरती पर) मारती हुयी न चलें कि उस का ज्ञान हो जाये जो शोभा उन्हीं ने छुपा रखी है। और तुम सब मिल कर अल्लाह से क्षमा माँगो, हे ईमान वालो! ताकि तुम सफल हो जाओ।
32. तथा तुम विवाह कर दो अपनों में से अविवाहित पुरुषों तथा स्त्रियों का, और अपने सदाचारी दासों और अपनी दासियों का, यदि वह निर्धन होंगे तो अल्लाह उन्हें धनी बना देगा अपने अनुग्रह से, और अल्लाह उदार सर्वज्ञ है।
33. और उन को पवित्र रहना चाहिये जो विवाह करने का सामर्थ्य नहीं रखते, यहाँ तक कि उन को धनी कर दे अल्लाह अपने अनुग्रह से। तथा जो स्वाधीनता लेख की माँग करें तुम्हारे दास-दासियों में से, तो तुम उन को लिख दो, यदि तुम उन में कुछ भलाई जानो, और उन्हें अल्लाह के उस माल में से दो जो उस ने तुम्हें प्रदान किया है, तथा बाध्य न करो अपनी दासियों को व्यभिचार पर जब वे पवित्र रहना चाहती हैं ताकि तुम संसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करो। और जो उन्हें बाध्य करेगा, तो

अल्लाह उन के बाध्य किये जाने के पश्चात् अति क्षमी दयावान् है।

34. तथा हम ने तुम्हारी ओर खुली आयतें उतारी हैं और उन का उदाहरण जो तुम से पहले गुजर गये तथा आज्ञाकारियों के लिये शिक्षा।
35. अल्लाह आकाशों तथा धरती का प्रकाश है, उस के प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताखा हो जिस में दीप हो, दीप कांच के झाड़ में हो, झाड़ मोती जैसे चमकते तारे के समान हो, वह ऐसे शुभ जैतून के वृक्ष के तेल से जलाया जाता हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी, उस का तेल समीप (संभव) है कि स्वयं प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसे आग न लगे। प्रकाश पर प्रकाश है, अल्लाह अपने प्रकाश का मार्ग दिखा देता है जिसे चाहे। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।
36. (यह प्रकाश) उन घरों में है अल्लाह ने जिन्हें ऊँचा करने और उन में अपने नाम की चर्चा करने का आदेश दिया है, उस की महिमा का गान करते हैं जिन में प्रातः तथा संध्या।
37. ऐसे लोग जिन्हें अचेत नहीं करता व्यापार तथा सौदा अल्लाह के स्मरण तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने से। वह उस दिन से डरते हैं जिस में दिल तथा आँखें उलट जायेंगी।
38. ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सर्वोत्तम कर्मों का और उन्हें अधिक

प्रदान करे अपने अनुग्रह से। और अल्लाह जिसे चाहे अनगिनत जीविका देता है।

39. तथा जो काफ़िर हो गये उन के कर्म उस चमकते सुराब के समान हैं जो किसी मैदान में हो, जिसे प्यासा पानी समझता हो। परन्तु जब उस के पास आये तो कुछ न पाये, और वहाँ अल्लाह को पाये जो उस का पूरा हिसाब चुका दे, और अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
40. अथवा उन अन्धकारों के समान है जो किसी गहरे सागर में हो और जिस पर तरंग छायी हो जिस के ऊपर तरंग, उस के ऊपर बादल हो, अन्धकार पर अन्धकार हो, जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख सके। और अल्लाह जिसे प्रकाश न दे उस के लिये कोई प्रकाश नहीं।
41. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ही की पवित्रता का गान कर रहे हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं तथा पँख फैलाये हुये पक्षी। प्रत्येक ने अपनी बंदगी तथा पवित्रता गान को जान लिया है, और अल्लाह भली-भाँति जानने वाला है जो वे कर रहे हैं।
42. अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। और अल्लाह ही की ओर फिर कर जाना है।
43. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को चलाता है फिर उसे परस्पर मिला देता है, फिर उसे घंघोर मेघ बना देता है, फिर आप देखते हैं बूंद को उस के मध्य से

निकलती हुयी, और वही पर्वतों जैसे बादल से ओले बरसाता है, फिर जिस पर चाहे आपदा उतारता है और जिस से चाहे फेर देता है। उस की बिजली की चमक संभव होता है कि आँखों को उचक ले।

44. अल्लाह ही रात और दिन को बदलता⁽²⁾ है। बेशक इस में बड़ी शिक्षा है समझ-बूझ वालों के लिये।
45. अल्लाह ही ने प्रत्येक जीव धारी को पानी से पैदा किया है। तो उन में से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं। और कुछ दो पैर पर, तथा कुछ चार पैर पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।
46. हम ने खुली आयतें (कुरआन) अवतरित कर दी है। और अल्लाह जिसे चाहता है सुपथ दिखा देता है।
47. और वे कहते हैं कि हम अल्लाह तथा रसूल पर ईमान लाये, और हम आज्ञाकारी हो गये, फिर मुँह फेर लेता है उन में से एक गिरोह इस के पश्चात्। वास्तव में वे ईमान वाले हैं ही नहीं।
48. और जब बुलाये जाते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर, ताकि (रसूल) निर्णय कर दें उन के बीच (विवाद का), तो अकस्मात् उन में से एक गिरोह मुँह फेर लेता है।
49. और यदि उन्हीं को अधिकार पहुँचता हो, तो आप के पास सिर झुकाये चले आते हैं।
50. क्या उन के दिलों में रोग है अथवा

द्विधा में पड़े हुये हैं, अथवा डर रहे हैं कि अल्लाह अत्याचार कर देगा उन पर और उस के रसूल! बल्कि वही अत्याचारी है।

51. ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाये जायें ताकि आप उन के बीच निर्णय कर दें, तो कहें कि हम ने सुन लिया तथा मान लिया, और वही सफल होने वाले हैं।
52. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह का भय रखें, और उस की (यातना से) डरें, तो वही सफल होने वाले हैं।
53. और इन (द्विधावादियों) ने बल पूर्वक शपथ ली कि यदि आप उन्हें आदेश दें तो अवश्य वह (घरों से) निकल पड़ेंगे। उन से कह दें: शपथ न लो। तुम्हारे आज्ञापालन की दशा जानी पहचानी है। वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।
54. (हे नबी!) आप कह दें कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, और यदि वह विमुख हों, तो आप का कर्तव्य केवल वही है जिस का भार आप पर रखा गया है, और तुम्हारा वह है जिस का भार तुम पर रखा गया है। और रसूल का दायित्व केवल खुला आदेश पहुँचा देना है।
55. अल्लाह ने वचन दिया है उन्हें जो तुम में से ईमान लायें तथा सुकर्म करें कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया जो इन से पहले थे, तथा

अवश्य सुदृढ़ कर देगा उन के उस धर्म को जिसे उन के लिये पसंद किया है, तथा उन (की दशा) को उन के भय के पश्चात् शान्ति में बदल देगा, वह मेरी इबादत (बंदना) करते रहें और किसी चीज़ को मेरा साझी न बनायें और जो क़ुर्र करें इस के पश्चात् तो वही उल्लंघनकारी है।

56. तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो, तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुम पर दया की जाये।
57. और (हे नबी!) कदापि आप न समझें कि जो काफ़िर हो गये, वे (अल्लाह को) धरती में विवश कर देने वाले हैं। और उन का स्थान नरक है और वह बुरा निवास स्थान है।
58. हे ईमान वालो! तुम से अनुमति लेना आवश्यक है तुम्हारे स्वामित्व के दास-दासियों को और जो तुम में से (अभी) युवा अवस्था को न पहुँचे हों तीन समय: फ़ज़्र (भोर) की नमाज़ से पहले, और जिस समय तुम अपने वस्त्र उतारते हो दोपहर में, तथा इशा (रात्रि) की नमाज़ के पश्चात्। यह तीन (एकान्त) पर्दे के समय है तुम्हारे लिये। (फिर) तुम पर और उन पर कोई दोष नहीं है इन के पश्चात्, तुम अधिकतर आने-जाने वाले हो एक दूसरे के पास। अल्लाह तुम्हारे लिये आदेशों का वर्णन कर रहा है। और अल्लाह सर्वज्ञ निपुण है।
59. और जब तुम में से बच्चे युवा अवस्था को पहुँचें, तो वह भी वैसे ही अनुमति लें जैसे उन से पूर्व के (बड़े) अनुमति

माँगते हैं, इसी प्रकार अल्लाह उजागर करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतों को, तथा अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

60. तथा जो बूढ़ी स्त्रियाँ विवाह की आशा न रखती हों, तो उन पर कोई दोष नहीं कि अपनी (पर्दे की) चादरें उतार कर रख दें, प्रतिबंध यह है कि अपनी शोभा का प्रदर्शन करने वाली न हों, और यदि सुरक्षित रहें तो उन के लिये अच्छा है।
61. अन्धे पर कोई दोष नहीं है और न लंगड़े पर कोई दोष है, और न रोगी पर कोई दोष है और न स्वयं तुम पर कि खाओ अपने घरों से अथवा अपने बापों के घरों से अथवा अपनी माँओं के घरों से अथवा अपने भाईयों के घरों से अथवा अपनी बहनों के घरों से अथवा अपने चाचाओं के घरों से अथवा अपनी फूफियों के घरों से अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा जिस की चाबियों के तुम स्वामी हो, अथवा अपने मित्रों के घरों से, तुम पर कोई दोष नहीं एक साथ खाओ या अलग अलग, फिर जब तुम प्रवेश करो घरों में तो अपनों को सलाम किया करो, एक आशीर्वाद है अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ जो शुभ पवित्र है। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन करता है ताकि तुम समझ लो।
62. वास्तव में ईमान वाले वह हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाये और जब आप के साथ किसी सामुहिक कार्य पर होते हैं तो जाते

नहीं जब तक आप से अनुमति न लें, वास्तव में जो आप से अनुमति लेते हैं वही अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, तो जब वह आप से अपने किसी कार्य के लिये अनुमति माँगें, तो आप उन में से जिसे चाहें अनुमति दें। और उन के लिये अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

63. और तुम मत बनाओ रसूल के पुकारने को परस्पर एक-दूसरे को पुकारने जैसा, अल्लाह तुम में से उन को जानता है जो सरक जाते हैं एक-दूसरे की आड़ ले कर। तो उन्हें सावधान रहना चाहिये जो आप के आदेश का विरोध करते हैं कि उन पर कोई आपदा आ पड़े अथवा उन पर कोई दुःखदायी यातना आ जाये।
64. सावधान! अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है, वह जानता है जिस (दशा) पर तुम हो, और जिस दिन वे उस की ओर फेरें जायेंगे तो उन्हें बता देगा जो उन्होंने ने किया है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी है।

सूरह फुर्कान - 25

सूरह फुर्कान के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 77 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शुभ है वह (अल्लाह) जिस ने फुर्कान अवतरित किया अपने भक्त पर, ताकि पूरे संसार वासियों को सावधान करने वाला हो।

2. जिस के लिये आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा उस ने अपने लिये कोई संतान नहीं बनायी। और न उस का कोई साझी है राज्य में, तथा उस ने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की फिर उस को एक निर्धारित रूप दिया।
3. और उन्होंने ने उस के अतिरिक्त अनेक पूज्य बना लिये हैं जो किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते, और वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं, और न वह अधिकार रखते हैं अपने लिये किसी हानि का और न अधिकार रखते हैं किसी लाभ का, तथा न अधिकार रखते हैं मरण और न जीवन और न पुनः जीवित करने का।
4. तथा काफ़िरों ने कहा: यह तो बस एक मन घड़त बात है जिसे इस ने स्वयं घड़ लिया है, और इस पर अन्य लोगों ने उस की सहायता की है। तो वास्तव में वह (काफ़िर) बड़ा अत्याचार और झूठ बना लाये हैं।
5. और कहा कि यह तो पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं जिसे उस ने स्वयं लिख लिया है, और वह पढ़ी जाती हैं उस के समक्ष प्रातः और संध्या।
6. आप कह दें कि इसे उस ने अवतरित किया है जो आकाशों तथा धरती का भेद जानता है। वास्तव में वह अति क्षमाशील दयावान् है।
7. तथा उन्होंने ने कहा: यह कैसा रसूल है जो भोजन करता है तथा बाजारों में चलता है? क्यों नहीं उतार दिया गया उस की ओर कोई फ़रिश्ता, तो वह उस के साथ सावधान करने वाला होता?

8. अथवा उस की ओर कोई कोष उतार दिया जाता अथवा उस का कोई बाग होता जिस में से वह खाता? तथा अत्याचारियों ने कहा: तुम तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो।
9. देखो! आप के संबंध में यह कैसी कैसी बातें कर रहे हैं? अतः वह कुपथ हो गये हैं, वह सुपथ पा ही नहीं सकते।
10. शुभकारी है वह (अल्लाह) जो यदि चाहे तो बना दे आप के लिये इस से उत्तम बहुत से बाग जिन में नहरें प्रवाहित हों, और बना दे आप के लिये बहुत से भवन।
11. वास्तविक बात यह है कि उन्होंने ने झुठला दिया है क्यामत (प्रलय) को, और हम ने तय्यार किया है उस के लिये जो प्रलय को झुठलाये भड़कती हुई अग्नि।
12. जब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी, तो सुन लेंगे उस के क्रोध तथा आवेग की ध्वनि को।
13. और जब वह फेंक दिये जायेंगे उस के किसी संकीर्ण स्थान में बंधे हुये, (तो) वहाँ विनाश को पुकारेंगे।
14. (उन से कहा जायेगा): आज एक विनाश को मत पुकारो, बहुत से विनाश को पुकारो।
15. (हे नबी!) आप उन से कहिये कि क्या यह अच्छा है या स्थायी स्वर्ग जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है, जो उन का प्रतिफल

तथा आवास है?

16. उन्हीं को उस में जो इच्छा वे करेंगे मिलेगा। वे सदावासी होंगे, आप के पालनहार पर (यह) वचन (पूरा करना) अनिवार्य है।
17. तथा जिस दिन वह एकत्र करेगा उन को और जिस की वह इबादत (बंदना) करते थे अल्लाह के सिवाय, तो वह (अल्लाह) कहेगा: क्या तुम्हीं ने मेरे इन भक्तों को कुपथ किया है अथवा वे स्वयं कुपथ हो गये?
18. वे कहेंगे: तू पवित्र है! हमारे लिये यह योग्य नहीं था कि तेरे सिवा कोई संरक्षक⁽²⁾ बनायें, परन्तु तू ने सुखी बना दिया उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि वह शिक्षा को भूल गये, और वह थे ही विनाश के योग्य।
19. उन्हीं ने तो तुम्हें झुठला दिया तुम्हारी बातों में, तो तुम न यातना को फेर सकोगे और न अपनी सहायता कर सकोगे। और जो भी अत्याचार करेगा तुम में से हम उसे घोर यातना चखायेंगे।
20. और नहीं भेजा हम ने आप से पूर्व किसी रसूल को, परन्तु वे भोजन करते और बाजारों में (भी)चलते फिरते थे। तथा हम ने बना दिया तुम में से एक को दूसरे के लिये परीक्षा का साधन, तो क्या तुम धैर्य रखोगे? तथा आप का पालनहार सब कुछ देखने वाला है।



21. तथा उन्होंने ने कहा जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते: हम पर फरिश्ते क्यों नहीं उतारे गये या हम अपने पालनहार को देख लेते? उन्होंने ने अपने में बड़ा अभिमान कर लिया है तथा बड़ी अवैज्ञा की है।
22. जिस दिन वे फरिश्तों को देख लेंगे उस दिन कोई शुभ सूचना नहीं होगी अपराधियों के लिये। तथा वह कहेंगे: बंचित बंचित है।
23. और उनके कर्मों को हम ले कर धूल के समान उड़ा देंगे।
24. स्वर्ग के अधिकारी उस दिन अच्छे स्थान तथा सुखद शयनकक्ष में होंगे।
25. जिस दिन चिर जायेगा आकाश बादल के साथ और फरिश्ते निरन्तर उतार दिये जायेंगे।
26. उस दिन वास्तविक राज्य अति दयावान् का होगा, और काफ़िरों पर एक कड़ा दिन होगा।
27. उस दिन अत्याचारी अपने दोनों हाथ चबायेगा, वह कहेगा: क्या ही अच्छा होता कि मैं ने रसूल का साथ दिया होता।
28. हाये मेरा दुर्भाग्य! काश मैं ने अमुक को मित्र न बनाया होता।
29. उस ने मुझे कुपथ कर दिया शिक्षा (कुर्आन) से इस के पश्चात् कि मेरे पास आयी, और शैतान मनुष्य को (समय पर) धोखा देने वाला है।
30. तथा रसूल कहेगा: हे मेरे पालनहार! मेरी जाति ने इस कुर्आन

को त्याग दिया।

31. और इसी प्रकार हम ने बना दिया प्रत्येक का शत्रु कुछ अपराधियों को। और आप का पालनहार मार्गदर्शन देने तथा सहायता कर ने को बहुत है।
32. तथा काफ़िरों ने कहा: क्यों नहीं उतार दिया गया आप पर कुर्आन पूरा एक ही बार? इसी प्रकार (इस लिये किया गया) ताकि हम आप के दिल को दृढ़ता प्रदान करें, और हम ने इस का क्रमशः प्रस्तुत किया है।
33. (और इस लिये भी कि) वह आप के पास कोई उदाहरण लायें तो हम आप के पास सत्य ला दें और उत्तम व्याख्या।
34. जो अपने मुखों के बल नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे, उन्हीं का सब से बुरा स्थान है तथा सब से अधिक कुपथ है।
35. तथा हम ने ही मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की और उस के साथ उस के भाई हारून को सहायक बनाया।
36. फिर हम ने कहा: तुम दोनों उस जाति की ओर जाओ जिस ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया। अन्ततः हम ने उन को ध्वस्त निरस्त कर दिया।
37. और नूह की जाति ने जब रसूलों को झुठलाया तो हम ने उन को डुबो दिया और लोगों के लिये उन को शिक्षाप्रद प्रतीक बना दिया तथा हम ने तय्यार की है अत्याचारियों के लिये दुःखदायी यातना।
38. तथा आद और समूद एवं कूवें वालों

तथा बहुत से समुदायों को इस के बीच

39. और प्रत्येक को हम ने उदाहरण दिये, तथा प्रत्येक को पूर्णतः नाश कर दिया।
40. तथा यह लोग उस बस्ती पर आये गये हैं जिन पर बुरी वर्षा की गई, तो क्या उन्होंने उसे नहीं देखा? बल्कि यह लोग पुनः जीवित होने का विश्वास नहीं रखते।
41. और (हे नबी!) जब वह आप को देखते हैं, तो आप को उपहास बना लेते हैं कि क्या यही है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?
42. इस ने तो हमें अपने पूज्यों से कुपथ कर दिया होता यदि हम उन पर अडिग न रहते। और वे शीघ्र ही जान लेंगे जिस समय यातना देखेंगे कि कौन अधिक कुपथ है?
43. क्या आप ने उसे देखा जिस ने अपना पूज्य अपनी अभिलाषा को बना लिया है, तो क्या आप उस के संरक्षक हो सकते हैं?
44. क्या आप सझते हैं कि उन में से अधिकतर सुनते और समझते हैं? वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ हैं।
45. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के पालनहार ने कैसे छाया को फैला दिया और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर बना देता फिर हम ने सूर्य को उस पर प्रमाण बना दिया।
46. फिर हम उस (छाया को) समेट लेते हैं अपनी ओर धीरे-धीरे।
47. और वही है जिस ने रात्रि को तुम्हारे

लिये वस्त्र बनाया, तथा निद्रा को शान्ति, तथा दिन को जागने का समय।

48. तथा वही है जिस ने भेजा वायुओं को शुभ सूचना बनाकर अपनी दया (वर्षा) से पूर्व, तथा हम ने आकाश से स्वच्छ जल बरसाया।
49. ताकि जीवित कर दें उस के द्वारा निर्जीव नगर को तथा उसे पिलायें उन में से जिन्हें पैदा किया है बहुत से पशुओं तथा मानव को।
50. तथा हम ने विभिन्न प्रकार से इसे वर्णन कर दिया है, ताकि वे शिक्षाग्रहण करें। परन्तु अधिकतर लोगों ने अस्वीकार करते हुये कुफ्र ग्रहण कर लिया।
51. और यदि हम चाहते तो भेज देते प्रत्येक बस्ती में एक सचेत करने वाला।
52. अतः आप काफिरों की बात न मानें और इस (कुर्आन के) द्वारा उन से भारी जिहाद (संघर्ष) करें।
53. वही है जिस ने मिला दिया दो सागरों को, यह मीठा रुचिकार है, और वह नमकीन खारा, और उस ने बना दिया दोनों के बीच एक पर्दा एवं रोक।
54. तथा वही है जिस ने पानी (वीर्य) से मनुष्य को उत्पन्न किया, फिर उस के वंश तथा ससुराल के संबन्ध बना दिये, आप का पालनहार अति सामर्थ्यवान है।
55. और वे लोग इबादत (बंदना) करते हैं अल्लाह के सिवा उन की जो न उन को लाभ पहुँचा सकते और न हानि पहुँचा सकते हैं, और काफिर अपने पालनहार का विरोधी बन गया है।

56. और हम ने आप को बस शुभसूचना देने, सावधान करने वाला बनाकर भेजा है।
57. आप कह दें: मैं इस पर तुम से कोई बदला नहीं मांगता, परन्तु यह कि जो चाहे अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले।
58. तथा आप भरोसा कीजिये उस नित्य जीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गान कीजिये उसकी प्रशंसा के साथ, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को।
59. जिस ने उत्पन्न कर दिया आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में, फिर (सिंहासन) पर स्थिर हो गया अति दयावान्, उसकी महिमा किसी ज्ञानी से पूछो।
60. और जब उन से कहा जाता है कि रहमान (अति दयावान्) को सज्दा करो, तो कहते हैं कि रहमान क्या है? क्या हम सज्दा करने लगें जिसे आप आदेश दें? और इस (आमंत्रण) ने उन को और अधिक भड़का दिया।
61. शुभ है वह जिसने आकाश में राशि चक्र बनाये तथा उस में सूर्य और प्रकाशित चाँद को बनाया।
62. वही है जिस ने रात्रि तथा दिन को एक दूसरे के पीछे आते-जाते बनाया उस के लिये जो शिक्षा ग्रहण करना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे।
63. और अति दयावान् के भक्त वह हैं जो धरती पर नम्रता से चलते हैं और अशिक्षित (अक्खड़) लोग उन से बात करते हैं तो सलाम करके अलग हो जाते हैं।
64. और जो रात्रि व्यतीत करते हैं अपने पालनहार के लिये सज्दा करते हुये तथा खड़े हो कर।
65. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! फेर दे हम से नरक की यातना को, वास्तव में उस की यातना चिपक जाने वाली है।
66. वास्तव में वह बुरा आवास और स्थान है।
67. तथा जो व्यय (खर्च) करते समय अपव्यय नहीं करते और न कृपण (कंजूसी) करते हैं और वह इस के बीच संतुलित रहता है।
68. और जो नहीं पुकारते हैं अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को और न बध करते हैं उस प्राण को जिसे अल्लाह ने बर्जित किया है परन्तु उचित कारण से, और न व्यभिचार करते हैं। और जो ऐसा करेगा वह पाप का सामना करेगा।
69. दुगनी की जायेगी उस के लिये यातना प्रलय के दिन, तथा सदा उस में अपमानित हो कर रहेगा।
70. उस के सिवा जिस ने क्षमा याचना कर ली, और इमान लाया तथा कर्म किया अच्छा कर्म, तो वही है बदल देगा अल्लाह जिन के पापों को पुण्य से। तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
71. और जिस ने क्षमा याचना कर ली और सदाचार किये तो वास्तव में वही अल्लाह की ओर झुक जाता है।
72. तथा जो मिथ्या साक्ष्य नहीं देते, और

जब व्यर्थ के पास से गुज़रते हैं तो सज्जन बन कर गुज़र जाते हैं।

73. और जब उन्हें शिक्षा दी जाये उनके पालनहार की आयतों द्वारा उन पर नहीं गिरते अन्धे तथा बहरे हो कर।
74. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों तथा संतानों से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें आज्ञाकारियों का अग्रणी बना दे।
75. यही लोग उच्च भवन अपने धैर्य के बदले में पायेंगे, और स्वागत किये जायेंगे उस में आशीर्वाद तथा सलाम के साथ।
76. वे उस में सदावासी होंगे, वह अच्छा निवास तथा स्थान है।
77. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि तुम्हारा उसे पुकारना न हो तो मेरा पालनहार तुम्हारी क्या परवाह करेगा? तुम ने तो झुठला दिया है, तो शीघ्र ही (उसका दण्ड) चिपक जाने वाला होगा।

सूरह शुअरा - 26

सूरह शुअरा के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 227 आयतें हैं

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. ता, सीन, मीम।
2. यह प्रकाशमय पुस्तक की आयतें हैं।
3. संभवतः आप अपना प्राण खो देने वाले हैं कि वे ईमान लाने वाले नहीं

हैं!

4. यदि हम चाहें तो उतार दें उन पर आकाश से ऐसी निशानी कि उन की गर्दनें उस के आगे झुकी कि झुकी रह जायें।
5. और नहीं आती है उन के पालनहार अति दयावान् की ओर से कोई नई शिक्षा परन्तु वे उस से मुख फेरने वाले बन जाते हैं।
6. तो उन्होंने ने झुठला दिया, अब उनके पास शीघ्र ही उस की सूचनायें आ जायेंगी जिस का उपहास वे कर रहे थे।
7. और क्या उन्होंने ने धरती की ओर नहीं देखा कि हम ने उस में उगाई है बहुत सी प्रत्येक प्रकार की अच्छी वनस्पतियाँ?
8. निश्चय ही इस में बड़ी निशानी (लक्षण) है। फिर उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
9. तथा वास्तव में आप का पालनहार ही प्रभुत्वशाली अति दयावान् है।
10. (उन्हें उस समय की कथा सुनाओ) जब पुकारा आप के पालनहार ने मूसा को, कि जाओ अत्याचारी जाति के पास।
11. फिरऔन की जाति के पास, क्या वे डरते नहीं?
12. उस ने कहा: मेरे पालनहार वास्तव में मुझे भय है कि वह मुझे झुठला देंगे।
13. और संकुचित हो रहा है मेरा सीना, और नहीं चल रही है मेरी जुबान, अतः

- वह्नी भेज दे हारून की ओर (भी)।
14. और उन का मुझे पर एक अपराध भी है। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार डालेंगे।
15. अल्लाह ने कहा: कदापि ऐसा नहीं होगा। तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं।
16. तो तुम दोनों जाओ, और कहो कि हम विश्व के पालनहार के भेजे हुये (रसूल) हैं।
17. कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे।
18. (फ़िरऔन ने) कहा: क्या हम ने तेरा पालन नहीं किया है अपने यहाँ बाल्यवस्था में, और तू रहा है हम में अपनी आयु के कई वर्षों।
19. और तू कर गया वह कार्य जो किया, और तू कृतघ्नों में से है।
20. (मूसा ने) कहा: मैं ने ऐसा उस समय कर दिया, जब कि मैं अनजान था।
21. फिर मैं तुम से भाग गया जब तुम से भय हुआ। फिर प्रदान कर दिया मुझे मेरे पालनहार ने तत्त्वदर्शिता और मुझे बना दिया रसूलों में से।
22. और यह कोई उपकार है जो तू मुझे जता रहा है कि तू ने दास बना लिया है इस्राईल के पुत्रों को।
23. फ़िरऔन ने कहा: विश्व का पालनहार क्या है?
24. (मूसा ने) कहा: आकाशों तथा धरती और उसका पालनहार जो कुछ दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो।
25. उस ने उन से कहा जो उस के आस पास थे: क्या तुम सुन नहीं रहे हो?
26. (मूसा ने) कहा: तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे पूर्वजों का पालनहार है।
27. (फ़िरऔन ने) कहा: वास्तव में तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है पागल है।
28. (मूसा ने) कहा: वह, पूर्व तथा पश्चिम, तथा दोनों के मध्य जो कुछ है सब का पालनहार है।
29. (फ़िरऔन ने) कहा। यदि तू ने कोई पूज्य बना लिया मेरे अतिरिक्त, तो तुझे बंदियों में कर दूंगा।
30. (मूसा ने) कहा: क्या यद्यपि मैं ला दूँ तेरे पास एक खुली चीज़?
31. उसने कहा: तू उसे ला दे यदि सच्चा है।
32. फिर उस ने अपनी लाठी को फेंक दिया, तो अकस्मात् वह एक प्रत्यक्ष अजगर बन गयी।
33. तथा अपना हाथ निकाला तो अकस्मात् वह उज्ज्वल था देखने वालों के लिये।
34. उस ने अपने प्रमुखों से कहा जो उस के पास थे: वास्तव में यह तो बड़ा दक्ष जादूगर है।
35. वह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल दे अपने जादू के बल से, तो अब तुम क्या आदेश देते हो?
36. सब ने कहा: अवसर (समय) दो मूसा

- और उसके भाई (के विषय) को, और भेज दो नगरों में एकत्र करने वालों को।
37. वह तुम्हारे पास प्रत्येक बड़े दक्ष जादूगर को लायें।
38. तो एकत्र कर लिये गये जादूगर एक निश्चित दिन के समय के लिये।
39. तथा लोगों से कहा गया कि क्या तुम एकत्र होने वाले हो?
40. ताकि हम पीछे चलें जादूगरों के यदि वही प्रभुत्वशाली (विजयी) हो जायें।
41. और जब जादूगर आये, तो फिरऔन से कहा: क्या हमें कुछ पुरस्कार मिलेगा यदि हम ही प्रभुत्वशाली होंगे?
42. उसने कहा: हाँ, और तुम उस समय (मेरे) समीपवर्तियों में हो जाओगे।
43. मूसा ने उन से कहा: फेंको जो कुछ तुम फेंकने वाले हो।
44. तो उन्होंने ने फेंक दी अपनी रस्सियाँ तथा अपनी लाठियाँ, तथा कहा: फिरऔन के प्रभुत्व की शपथ! हम ही अवश्य प्रभुत्वशाली (विजयी) होंगे।
45. अब मूसा ने फेंक दी अपनी लाठी, तो तत्क्षण वह निगलने लगी जो झूठ वह बना रहे थे।
46. तो गिर गये सभी जादूगर सज्दा करते हुये।
47. और सब ने कह दिया: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।
48. मूसा तथा हारून के पालनहार पर।
49. (फिरऔन ने) कहा: तुम उस का विश्वास कर बैठे इस से पहले कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरू) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, तो तुम्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा, मैं अवश्य तुम्हारे हाथों तथा पैरों को विपरीत दिशा से काट दूँगा तथा तुम सभी को फाँसी दे दूँगा।
50. सब ने कहा: कोई चिन्ता नहीं, हम तो अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
51. हम आशा रखते हैं कि क्षमा कर देगा हमारे लिये हमारा पालन- हार हमारे पापों को क्यों कि हम सब से पहले ईमान लाने वाले हैं।
52. और हम ने मूसा की ओर वही की, कि रातों - रात निकल जा मेरे भक्तों को ले कर, तुम सब का पीछा किया जायेगा।
53. तो फिरऔन ने भेज दिया नगरों में (सेना) एकत्र करने वालों को।
54. कि वह बहुत थोड़े लोग हैं।
55. और (इस पर भी) वह हमें अति क्रोधित कर रहे हैं।
56. और वास्तव में हम एक गिरोह हैं सावधान रहने वाले।
57. अन्ततः हम ने निकाल दिया उन को बागों तथा स्रोतों से।
58. तथा कोषों और उत्तम निवास स्थानों से।
59. इसी प्रकार हुआ, और हम ने उन का उत्तराधिकारी बना दिया इस्राईल की संतान को।
60. तो उन्होंने ने उनका पीछा किया प्रातः

- होते ही
61. और जब दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा: हम तो निश्चय ही पकड़ लिये गये।
 62. (मूसा ने) कहा: कदापि नहीं, निश्चय मेरे साथ मेरा पालनहार है।
 63. तो हम ने मूसा को बह्नी की, कि मार अपनी लाठी से सागर को, अकस्मात् सागर फट गया, तथा प्रत्येक भाग भारी पर्वत के समान हो गया।
 64. तथा हमने समीप कर दिया उसी स्थान के दूसरे गिरोह को।
 65. और मुक्ति प्रदान कर दी मूसा और उसके सब साथियों को।
 66. फिर हमने डुबो दिया दूसरों को।
 67. वास्तव में इस में बड़ी शिक्षा है, और उन में से अधिकतर लोग ईमान वाले नहीं थे।
 68. तथा वास्तव में आप का पालनहार निश्चय अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
 69. तथा आप उन्हें सुना दें इब्राहीम का समाचार (भी)।
 70. जब उस ने कहा: अपने बाप तथा अपनी जाति से कि तुम क्या पूज रहे हो?
 71. उन्होंने ने कहा: हम मूर्तियों की पूजा कर रहे हैं और उन्हीं की सेवा में लगे रहते हैं।
 72. उसने काह: क्या वे तुम्हारी सुनती हैं जब पुकारते हो?
 73. या तुम्हें लाभ पहुँचाती या हानि पहुँचाती है?
 74. उन्हीं ने कहा: बल्कि हम ने अपने पूर्वजों को इसी प्रकार करते हुये पाया है।
 75. उस ने कहा: क्या तुम ने कभी (आँख खोल कर) उसे देखा जिसे तुम पूज रहे हो।
 76. तुम तथा तुम्हारे पहले पूर्वज?
 77. क्यों कि यह सब मेरे शत्रु है पूरे विश्व के पालनहार के सिवा।
 78. जिस ने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझे मार्ग दर्शा रहा है।
 79. और जो मुझे खिलाता और पिलाता है।
 80. और जब रोगी होता हूँ तो वही मुझे स्वस्थ करता है।
 81. तथा वही मुझे मारेगा फिर⁽¹⁾ मुझे जीवित करेगा।
 82. तथा मैं आशा रखता हूँ कि क्षमा कर देगा मेरे लिये मेरे पाप प्रतिकार (प्रलय) के दिन।
 83. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर दे मुझे तत्वदर्शिता और मुझे सम्मिलित कर सदाचारियों में।
 84. और मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर आगामी लोगों में।
 85. और बना दे मुझ को सुख के स्वर्ग का उत्तराधिकारी।
 86. तथा मेरे बाप को क्षमा कर दे वास्तव में वह कुपथों में है।
 87. तथा मुझे निरादर न कर जिस दिन

- सब जीवित किये जायेंगे।
88. जिस दिन लाभ नहीं देगा कोई धन और न संतान।
89. परन्तु जो अल्लाह के पास स्वच्छ दिल ले कर आयेगा।
90. और समीप कर दी जायेगी स्वर्ग आज्ञाकारियों के लिये।
91. तथा खोल दी जायेगी नरक कुपथों के लिये।
92. तथा कहा जायेगा: कहीं है वह जिन्हें तुम पूज रहे थे?
93. अल्लाह के सिवा, क्या वह तुम्हारी सहायता करेंगे अथवा स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं?
94. फिर उस में औघे झोंक दिये जायेंगे वह और सभी कुपथ।
95. और इब्लीस की सेना सभी।
96. और वह उस में आपस में झगड़ते हुये कहेंगे:
97. अल्लाह की शपथ! वास्तव में हम खुले कुपथ में थे।
98. जब हम तुम्हें बराबर समझ रहे थे विश्व के पालनहार के।
99. और हमें कुपथ नहीं किया परन्तु अपराधियों ने।
100. तो हमारा कोई अभिस्तावक (सिफारशी) नहीं रह गया।
101. तथा न कोई प्रेमी मित्र।
102. तो यदि हमें पुनः संसार में जाना होता तो हम ईमान वालों में हो जाते।
103. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है। और उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
104. और वास्तव में आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।
105. नूह की जाति ने भी रसूलों को झुठलाया।
106. जब उन से उन के भाई नूह ने कहा: क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो?
107. वास्तव में मैं तुम्हारे लिये एक रसूल हूँ।
108. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी बात मानो।
109. मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
110. अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।
111. उन्होंने ने कहा: क्या हम तुझे मान लें, जब कि तेरा अनुसरण पतित (नीच) लोग कर रहे हैं।
112. (नूह ने) कहा: मुझे क्या ज्ञान कि वे क्या कर्म करते रहे हैं?
113. उन का हिसाब तो बस मेरे पालनहार के ऊपर है यदि तुम समझो।
114. और मैं धृतकारने वाला नहीं हूँ ईमान वालों को।
115. मैं तो बस खुला सावधान करने वाला हूँ।

116. उन्होंने ने कहा: यदि रुका नहीं, हे नूह! तो तू अवश्य पथराव कर के मारे हुये में होगा।
117. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी जाति ने मुझे झुठला दिया।
118. अतः तू निर्णय कर दे मेरे और उनके बीच, और मुक्त कर दे मुझ को तथा जो मेरे साथ है ईमान वालों में से।
119. तो हम ने उसे मुक्त कर दिया तथा जो उसके साथ भरी नाव में थे।
120. फिर हम ने डुबो दिया उस के पश्चात् शेष लोगों को।
121. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है, तथा उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।
122. और निश्चय आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।
123. झुठला दिया आद (जाति) ने (भी) रसूलों को।
124. जब कहा उन से उनके भाई हूद ने: क्या तुम डरते नहीं हो?
125. वस्तुतः मैं तुम्हारे लिये एक न्यासिक (अमानतदार) रसूल हूँ।
126. अतः अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।
127. और मैं तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
128. क्यों तुम बना लेते हो हर ऊँचे स्थान पर एक यादगार भवन व्यर्थ में।
129. तथा बनाते हो बड़े-बड़े भवन जैसे कि तुम सदा रहोगे।
130. और जब किसी को पकड़ते हो तो पकड़ते हो महा अत्याचारी बन कर।
131. तो अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।
132. तथा उस से भय रखो जिस ने तुम्हारी सहायता की है उस से जो तुम जानते हो।
133. उस ने सहायता की है तुम्हारी चौपायों तथा संतान से।
134. तथा बागों (उद्यानों) तथा जल स्रोतों से।
135. मैं तुम पर डरता हूँ भीषण दिन की यातना से।
136. उन्होंने ने कहा: नसीहत करो या न करो, हम पर सब समान है।
137. यह बात तो बस प्राचीन लोगों की नीति है।
138. और हम उन में से नहीं हैं जिन को यातना दी जायेगी।
139. अन्ततः उन्होंने ने हमें झुठला दिया तो हम ने उन्हें ध्वस्त कर दिया। निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और लोगों में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
140. और वास्तव में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
141. झुठला दिया समूद ने भी रसूलों को।
142. जब कहा, उन से उनके भाई सालेह ने: क्या तुम डरते नहीं हो?
143. वास्तव में, मैं तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूँ।

144. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो।
145. तथा मैं नहीं मॉंगता इस पर तुम से कोई परिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
146. क्या तुम छोड़ दिये जाओगे उस में जो यहाँ है निश्चिन्त रह कर।
147. बागों तथा स्रोतों में।
148. तथा खेतों और खजूरों में जिन के गुच्छे रस भरे हैं।
149. तथा तुम पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो गर्व करते हुये।
150. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।
151. और पालन न करो उल्लंघनकारियों के आदेश का।
152. जो उपद्रव करते हैं धरती में और सुधार नहीं करते।
153. उन्होंने ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।
154. तू तो बस हमारे समान एक मानव है। तो कोई चमत्कार ला दे, यदि तू सच्चा है।
155. कहा: यह ऊँटनी है इस के लिये पानी पीने का एक दिन है और तुम्हारे लिये पानी लेने का निश्चित दिन है।
156. तथा उसे हाथ न लगाना बुराई से, अन्यथा तुम्हें पकड़ लेगी एक भीषण दिन की यातना।
157. तो उन्होंने ने बध कर दिया उसे, अन्ततः पछताने वाले हो गये।
158. और पकड़ लिया उन्हें यातना ने। वस्तुतः इस में बड़ी निशानी है, और नहीं थे उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले।
159. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
160. झुठला दिया लूत की जाति ने (भी) रसूलों को।
161. जब कहा उन से उन के भाई लूत ने: क्या तुम डरते नहीं हो?
162. वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।
163. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।
164. और मैं तुम से प्रश्न नहीं करता इस पर किसी पारिश्रमिक (बदले) का। मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
165. क्या तुम जाते हो पुरुषों के पास संसार वासियों में से?
166. तथा छोड़ देते हो जिसे पैदा किया है तुम्हारे पालनहार ने अर्थात् अपनी पत्नियों को, बल्कि तुम एक जाति हो सीमा का उल्लंघन करने वाली।
167. उन्होंने ने कहा: यदि तू नहीं रुका, हे लूत! तो अवश्य तेरा बहिष्कार कर दिया जायेगा।
168. उस ने कहा: वास्तव में मैं तुम्हारे कर्तृत से बहुत अप्रसन्न हूँ।
169. मेरे पालनहार! मुझे बचा ले तथा मेरे परिवार को उस से जो बह कर रहे हैं।
170. तो हम ने उसे बचा लिया तथा उस के सभी परिवार को।

171. परन्तु एक बुढ़िया को जो पीछे रह जाने वालों में थी।
172. फिर हम ने विनाश कर दिया दूसरों का।
173. और वर्षा की उन पर एक घोर वर्षा। तो बुरी हो गई डराये हुये लोगों की वर्षा।
174. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे।
175. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
176. झुठला दिया ऐंका वालों ने रसूलों को।
177. जब कहा, उन से शुऐब ने: क्या तुम डरते नहीं हो?
178. मैं तुम्हारे लिये एक विश्वासनीय रसूल हूँ।
179. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी आज्ञा का पालन करो।
180. और मैं नहीं माँगता तुम से इस पर कोई पारिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस समस्त विश्व के पालनहार पर है।
181. तुम नाप-तौल पूरा करो, और न बनो कम देने वालों में।
182. और तौलो सीधे तराजू से।
183. और मत कम दो लोगों को उन की चीज़ें, और मत फिरो धरती में उपद्रव फैलाते।
184. और डरो उस से जिस ने पैदा किया है तुम्हें तथा अगले लोगों को।
185. उन्होंने ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।
186. और तू तो बस एक पुरुष है हमारे समान। और हम तो तुझे झूठों में समझते हैं।
187. तो हम पर गिरा दे कोई खण्ड आकाश का यदि तू सच्चा है।
188. उस ने कहा: मेरा पालनहार भली प्रकार जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।
189. तो उन्होंने ने उसे झुठला दिया। अन्ततः पकड़ लिया उन्हें छाया के दिन की यातना ने। वस्तुतः वह एक भीषण दिन की यातना थी।
190. निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और नहीं थे उन में अधिकतर ईमान लाने वाले।
191. और वास्तव में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
192. तथा निःसंदेह यह (कुर्आन) पूरे विश्व के पालनहार का उतारा हुआ है।
193. इसे ले कर रूहुल अमीन उतरा।
194. आप के दिल पर ताकि आप हो जायें सावधान करने वालों में।
195. खुली अर्बी भाषा में।
196. तथा इस की चर्चा अगले रसूलों की पुस्तको में (भी) है।
197. क्या और उन के लिये यह निशानी नहीं है कि इस्राईलियों के विद्वान इसे जानते हैं।

198. और यदि हम इसे उतार देते किसी अजमी पर।
199. और वह इसे उन के समक्ष पढ़ता तो वह उस पर ईमान लाने वाले न होते।
200. इसी प्रकार हम ने घुसा दिया है इस (कुर्आन के इन्कार) को पापियों के दिलों में।
201. वह नहीं ईमान लायेंगे उस पर जब तक देख न लेंगे दुःख दायी यातना।
202. फिर उन पर सहसा आ जायेगी और वह समझ भी नहीं पायेंगे।
203. तो कहेंगे: क्या हमें अवसर दिया जायेगा?
204. तो क्या वह हमारी यातना की जल्दी मचा रहे हैं?
205. (हे नबी!) तो क्या आप ने विचार किया कि यदि हम लाभ पहुँचायें इन्हें वर्षा।
206. फिर आ जाये उन पर जिस की उन्हें धमकी दी जा रही थी।
207. तो क्या काम आयेगा उनके जो उन्हें लाभ पहुँचाया जाता रहा?
208. और हम ने किसी बस्ती का विनाश नहीं किया परन्तु उस के लिये सावधान करने वाले थे।
209. शिक्षा देने के लिये, और हम अत्याचारी नहीं हैं।
210. तथा नहीं उतरे हैं (इस कुर्आन) को ले कर शैतान।
211. और न योग्य है उन के लिये और
- न वह इस की शक्ति रखते हैं।
212. वास्तव में वह तो (इस के) सुनने से भी दूर कर दिये गये हैं।
213. अतः आप न पुकारें अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को अन्यथा आप दण्डितों में हो जायेंगे।
214. और आप सावधान कर दें अपने समीपवर्ती सम्बन्धियों को।
215. और झुका दें अपना बाहु उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।
216. और यदि वह आप की अवज्ञा करें तो आप कह दें कि मैं निर्दोष हूँ उस से जो तुम कर रहे हो।
217. तथा आप भरोसा करें अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् पर।
218. जो देखता है आप को जिस समय (नमाज़ में) खड़े होते हैं।
219. और आप के फिरने को सज्दा करने वालों में।
220. निःसंदेह वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।
221. क्या मैं तुम सब को बताऊँ कि किस पर शैतान उतरते हैं?
222. वे उतरते हैं प्रत्येक झूठे पापी पर।
223. वह पहुँचा देते हैं सूनी-सुनाई बातों को और उन में अधिकतर झूठे हैं।
224. और कवियों का अनुसरण बहके हुये लोग करते हैं।
225. क्या आप नहीं देखते कि वह प्रत्येक

वादी में फिरते हैं।

226. और ऐसी बात कहते हैं जो करते नहीं।

227. परन्तु वह (कवि) जो ईमान लाये तथा सदाचार किये और अल्लाह का बहुत स्मरण किया, तथा बदला लिया इस के पश्चात् कि उन के ऊपर अत्याचार किया गया। तथा शीघ्र ही जान लेंगे जिन्होंने ने अत्याचार किया है कि वह किस दुष्परिणाम की ओर फिरते हैं।

सूरह नम्ल - 27

सूरह नम्ल के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है. इस में 93 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. ता, सीन, मीम। यह कूर्आन तथा प्रत्यक्ष पुस्तक की आयतें हैं।
2. मार्ग दर्शन तथा शुभसूचना है उन ईमान लाने वालों के लिये।
3. जो नमाज़ की स्थापना करते तथा जकात देते हैं और वही हैं जो अन्तिम दिन (परलोक) पर विश्वास रखते हैं।
4. वास्तव में जो विश्वास नहीं करते परलोक पर हम ने शोभनीय बना दिया है उन के कर्मों को, इस लिये वह बहके जा रहे हैं।
5. यही हैं जिन के लिये बुरी यातना है तथा परलोक में वही सर्वाधिक क्षति ग्रस्त रहने वाले हैं।
6. और (हे नबी!) वास्तव में आप को दिया जा रहा है कूर्आन एक तत्वज्ञ सर्वज्ञ की ओर से।

7. (याद करो) जब कहा, ⁽¹⁾ मूसा ने अपने परिजनो मैं ने आग देखी है, मैं तुम्हारे पास कोई सूचना लाऊँगा या लाऊँगा आग का कोई अँगार, ताकि तुम तापो।
8. फिर जब आया वहाँ, तो पुकारा गया: शुभ है वह जो अग्नि में है और जो उस के आस-पास है, और पवित्र है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।
9. हे मूसा यह मैं हूँ अल्लाह अति प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ।
10. और फेंक दे अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा की रंग रही है जैसे वह कोई सर्प हो तो पीठ फेर कर भागा और पीछे फिर कर देखा भी नहीं। (हम ने कहा): हे मूसा भय न कर, वास्तव में नहीं भय करते मेरे पास रसूल।
11. उस के सिवा जिस ने अत्याचार किया हो, फिर जिस ने बदल लिया अपना कर्म भलाई से बुराई के पश्चात्, तो निश्चय मैं अति क्षमी दयावान् हूँ।
12. और डाल दे अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के, नौ निशानियों में से है, फिरऔन तथा उस की जाति की ओर (ले जाने के लिये) वास्तव में वे उल्लंघन कारियों में हैं।
13. फिर जब आयी उन के पास हमारी निशानियाँ आँख खोलने वाली, तो कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
14. तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें, अत्याचार तथा अभिमान के कारण, जब कि उन के दिलों ने उन का विश्वास कर लिया, तो देखो कि

कैसा रहा उपद्रवियों का परिणाम?

15. और हम ने प्रदान किया दावूद तथा सुलैमान को ज्ञान, और दोनों ने कहा: प्रशंसा है उस अल्लाह के लिये जिस ने हमें प्रधानता दी अपने बहुत से ईमान वाले भक्तों पर।
16. और उत्तराधिकारी हुआ सुलैमान दावूद का, तथा उस ने कहा: हे लोगो! हमें सिखाई गई है पक्षियों की बोली, तथा हमें प्रदान की गई है सब चीज़ से कुछ। वास्तव में यह प्रत्यक्ष अनुग्रह है।
17. तथा एकत्र कर दी गयी सुलैमान के लिये उस की सेनायें जिन्नों तथा मानवों और पक्षी की, और वह व्यवस्थित रखे जाते थे।
18. यहाँ तक कि वे (एक बार) जब पहुँचे च्यूटियों की घाटी पर, तो एक च्यूटी ने कहा: हे च्यूटियो! प्रवेश कर जाओ अपने घरों में ऐसा न हो कि तुम्हें कुचल दे सुलैमान तथा उस की सेनायें, और उन्हें ज्ञान न हो।
19. तो वह (सुलैमान) मुस्करा कर हँस पड़ा उस की बात पर, और कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता प्रदान कर कि मैं कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो पुरस्कार तू ने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर किया है। तथा यह कि मैं सदाचार करता रहूँ जिस से तू प्रसन्न रहे और मुझे प्रवेश दे अपनी दया से अपने सदाचारी भक्तों में।
20. और उस ने निरीक्षण किया पक्षियों का तो कहा: क्या बात है कि मैं नहीं देख रहा हूँ हृदहृद को, या वह

अनुपस्थितों में है?

21. मैं उसे कड़ी यातना दूँगा या उसे बध कर दूँगा, या मेरे पास कोई खुला प्रमाण लाये।
22. तो कुछ अधिक समय नहीं बीता कि उस ने (आकर) कहा: मैं ने ऐसी बात का ज्ञान प्राप्त किया है जो आप के ज्ञान में नहीं आयी है, और मैं लाया हूँ आप के पास "सबा" से एक विश्वासनीय सूचना।
23. मैं ने एक स्त्री को पाया जो उन पर राज्य कर रही है, और उसे प्रदान किया गया है कुछ न कुछ प्रत्येक वस्तु से तथा उस के पास एक बड़ा भव्य सिंहासन है।
24. मैं ने उसे तथा उस की जाति को पाया कि सज्दा करते हैं सूर्य को अल्लाह के सिवा, और शोभनीय बना दिया है उन के लिये शैतान ने उन के कर्मों को और उन्हें रोक दिया है सुपथ से, अतः वह सुपथ पर नहीं आते।
25. (शैतान ने शोभनीय बना दिया है उन के लिये) कि उस अल्लाह को सज्दा न करें जो निकालता है गुप्त वस्तु को आकाशों तथा धरती में, तथा जानता वह सब कुछ जिसे तुम छुपाते हो तथा जिसे व्यक्त करते हो।
26. अल्लाह जिस के अतिरिक्त कोई बंदनीय नहीं, जो महा सिंहासन का स्वामी है।
27. (सुलैमान ने) कहा: हम देखेंगे कि तू सत्य वादी है अथवा मिथ्यावादियों में से है।
28. जाओ यह मेरा पत्र लेकर, और उसे

- डाल दो उन की ओर, फिर वापिस आ जाओ उन के पास से, फिर देखो कि वह क्या उत्तर देते हैं।
29. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मेरी ओर एक महत्व पूर्ण पत्र डाला गया है।
30. वह सुलैमान की ओर से है, और वह अल्लाह अत्यंत कृपाशील दयावान् के नाम से (आरंभ) है।
31. कि तुम मुझ पर अभिमान न करो तथा आ जाओ मेरे पास आज्ञाकारी हो कर।
32. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मुझे परामर्श दो मेरे विषय में, मैं कोई निर्णय करने वाली नहीं हूँ जब तक तुम उपस्थित न रहो।
33. सब ने उत्तर दिया कि हम शक्ति शाली तथा बड़े योद्धा हैं, आप स्वयं देख लें कि आप को क्या आदेश देना है।
34. उस ने कहा: राजा जब प्रवेश करते हैं किसी बस्ती में तो उसे उजाड़ देते हैं और उस के आदरणीय वासियों को अपमानित बना देते हैं और वे ऐसा ही करेंगे।
35. और मैं भेजने वाली हूँ उन की ओर एक उपहार फिर देखती हूँ कि क्या लेकर आते हैं दूत?
36. तो जब वह (दूत) आया सुलैमान के पास, तो कहा: क्या तुम मेरी सहायता धन से करते हो? मुझे अल्लाह ने जो दिया है उस से उत्तम है जो तुम्हें दिया है, बल्कि तुम्हीं अपने उपहार से प्रसन्न हो रहे हो।
37. वापिस हो जाओ उन की ओर, हम लायेंगे उनके पास ऐसी सेनायें जिन का वह सामना नहीं कर सकेंगे, और हम अवश्य उन्हें उस (बस्ती) से निकाल देंगे अपमानित कर के और वह तुच्छ (हीन) हो कर रहेंगे।
38. सुलैमान ने कहा: हे प्रमुखो! तुम में से कौन लायेगा उस का सिंहासन इस से पहले कि वह आ जायें आज्ञाकारी हो कर।
39. कहा एक अतिकाय ने जिधों में से: मैं ला दूंगा आप के पास उसे इस से पूर्व कि आप खड़े हों अपने स्थान से, और इस पर मुझे शक्ति है मैं विश्वासनीय हूँ।
40. कहा उस ने जिस के पास पुस्तक का ज्ञान था: मैं ला दूंगा उसे आप के पास इस से पहले कि आप की पलक झपके, और जब देखा उसे अपने पास रखा हुआ, तो कहा: यह मेरे पालनहार का अनुग्रह है, ताकि मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ या कृतघ्नता। और जो कृतज्ञ होता है वह अपने लाभ के लिये होता है तथा जो कृतघ्न हो तो निश्चय मेरा पालनहार निस्पृह महान् है।
41. कहा: परिवर्तन कर दो उस के लिये उसके सिंहासन में, हम देखेंगे कि वह उसे पहचान जाती है या उन में से हो जाती है जो पहचानते न हों।
42. तो जब वह आई, तो कहा गया: क्या ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने कहा: वह तो मानो वही है। और हम तो जान गये थे इस से पहले ही और आज्ञाकारी हो गये थे।
43. और रोक रखा था उसे (ईमान से) उन

(पूज्यों ने) जिस की वह इबादत (वंदना) कर रही थी अल्लाह के सिवा निश्चय वह काफ़िरो की जाति में से थी।

44. उस से कहा गया कि भवन में प्रवेश करा तो जब उसे देखा तो उसे कोई जलाशय (हौद) समझी और खोल दी अपनी दोनों पिंडलियों, (सुलैमान ने) कहा: यह शीशे से निर्मित भवन है। उस ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने अत्याचार किया अपने प्राण पर और (अब) मैं इस्लाम लाई सुलैमान के साथ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये।
45. और हम ने भेजा समूद की ओर उनके भाई सालेह को, कि तुम सब इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तो अकस्मात् वे दो गिरोह होकर लड़ने लगे।
46. उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्यों तुम शीघ्र चाहते हो बुराई को भलाई से पहले? क्यों तुम क्षमा नहीं माँगते अल्लाह से, ताकि तुम पर दया की जाये।
47. उन्होंने ने कहा: हम ने अपशकुन लिया है तुम से तथा उन से जो तेरे साथ हैं। (सालेह ने) कहा: तुम्हारा अपशकुन अल्लाह के पास है, बल्कि तुम लोगों की परीक्षा हो रही है।
48. और उस नगर में नौ व्यक्तियों का एक गिरोह था जो उपद्रव करते थे धरती में, और सुधार नहीं करते थे।
49. उन्होंने ने कहा: आपस में शपथ लो अल्लाह की कि हम अवश्य रात्री में छापा मार देंगे सालेह तथा उसके परिवार पर, फिर कहेंगे उस (सालेह) के उत्तराधिकारी से, हम उपस्थित नहीं थे उस के परिवार के

विनाश के समय, और निःसंदेह हम सत्यवादी (सच्चे) हैं।

50. और उन्होंने ने एक षडयंत्र रचा, और हम ने भी एक उपाय किया, और वे समझ नहीं रहे थे।
51. तो देखो कैसा रहा उन के षडयंत्र का परिणाम? हम ने विनाश कर दिया उन का तथा उन की पूरी जाति का।
52. तो यह उन के घर है उजाड़ पड़े हुये उन के अत्याचार के कारण, निश्चय इस में एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिये जो ज्ञान रखते हैं।
53. तथा हम ने बचा लिया उन्हें जो ईमान लाये, और (अल्लाह से) डर रहे थे।
54. तथा लूत को (भेजा), जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम कुकर्म कर रहे हो जब कि तुम आँखें रखते हो?
55. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो काम वासना की पूर्ति के लिये? तुम लोग बड़े ना समझ हो।
56. तो उस की जाति का उत्तर बस यह था कि उन्होंने ने कहा: लूत के परिजनों को निकाल दो अपने नगर से, वास्तव में यह लोग बड़े पवित्र बन रहे हैं।
57. तो हम ने बचा लिया उसे तथा उस के परिवार को, उस की पत्नी के सिवा, जिसे हम ने नियत कर दिया पीछे रह जाने वालों में।
58. और हम ने उन पर बहुत अधिक वर्षा कर दी। तो बुरी हो गई सावधान किये हुये लोगों की वर्षा।

59. आप कह दें: सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, और सलाम है उस के उन भक्तों पर जिन को उस ने चुन

लिया। क्या अल्लाह उत्तम है या जिसे वह साझी बनाते हैं?



60. या वह है जिस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की और उतारा है तुम्हारे लिये आकाश से जल, फिर हम ने उगा दिया उस के द्वारा भव्य बाग, तुम्हारे बस में न था कि उगा देते उस के वृक्ष, तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि यही लोग (सत्य से) कतरा रहे हैं।
61. या वह है जिस ने धरती को रहने योग्य बनाया तथा उस के बीच नहरें बनायीं, और उस के लिये पर्वत बनाये, और बना दी दो सागरों के बीच एक रोक। तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि उन में से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।
62. या वह है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुःख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।
63. या वह है जो तुम्हें राह दिखाता है सुखे तथा सागर के अँधेरों में, तथा भेजता है वायुओं को शुभ सूचना देने के लिये अपनी दया (वर्षा) से पहले, क्या कोई और पूज्य है अल्लाह के साथ? उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।
64. या वह है जो आरंभ करता है उत्पत्ति को, फिर उसे दुहरायेगा तथा जो तुम्हें जीविका देता है आकाश तथा धरती से, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? आप कह दें कि अपना प्रमाण लाओ यदि तुम सच्चे हो।
65. आप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा, और वे नहीं जानते कि कब फिर जीवित किये जायेंगे।
66. बल्कि समाप्त हो गया है उन का ज्ञान आखिरत (परलोक) के विषय में, बल्कि वे द्विधा में हैं, बल्कि वे उस से अंधे हैं।
67. और कहा काफ़िरों ने: क्या जब हम हो जायेंगे मिट्टी तथा हमारे पूर्वज तो क्या हम अवश्य निकाले जायेंगे।
68. हमें इस का वचन दिया जा चुका है तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले, यह तो बस अगलों की बनायी हुई कथायें हैं।
69. (हे नबी!) आप कह दें कि चलो-फिरो धरती में फिर देखो कि कैसा हुआ अपराधियों का परिणाम।
70. और आप शोक न करें उन पर और न किसी संकीर्णता में रहें उस से जो चालें वह चल रहें हैं।
71. तथा वह कहते हैं: कब यह धमकी पूरी होगी यदि तुम सच्चे हो?
72. आप कह दें: संभव है कि तुम्हारे समीप हो उस में से कुछ जिसे तुम शीघ्र चाहते हो।
73. तथा निःसंदेह आप का पालनहार बड़ा दयालु है लोगों पर, परन्तु उन में से अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।
74. और वास्तव में आप का पालनहार जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।

75. और कोई छुपी चीज़ नहीं है आकाश तथा धरती में परन्तु वह खुली पुस्तक में है।
76. निःसंदेह यह कुर्आन वर्णन कर रहा है इस्राईल के संतान की समक्ष उन अधिकतर बातों को जिस में वह विभेद कर रहे हैं।
77. और वास्तव में वह मार्ग दर्शन तथा दया है ईमान वालों के लिये।
78. निःसंदेह आप का पालनहार निर्णय कर देगा उन के बीच अपने आदेश से, तथा वही प्रबल सब कुछ जानने वाला है।
79. अतः आप भरोसा करें अल्लाह पर, वस्तुतः आप खुले सत्य पर हैं।
80. वास्तव में आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दा को। और न सुना सकेंगे बहरों को अपनी पुकार, जब वह भागे जा रहे हों पीठ फेर कर।
81. तथा आप अंधे को मार्ग दर्शन नहीं दे सकते उन के कुपथ से, आप तो बस उसी को सुना सकते हैं जो ईमान रखता हो हमारी आयतों पर फिर वह आज्ञाकारी हो।
82. और जब आ जायेगा बात पूरी होने का समय उन के ऊपर, तो हम निकालेंगे उन के लिये एक पशु धरती से जो बात करेगा उन से कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे।
83. तथा जिस दिन हम घेर लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह उन का जो झुठलाते रहे हमारी आयतों को, फिर वह सब (एकत्र किये जाने के लिये) रोक दिये जायेंगे।
84. यहाँ तक कि जब सब आ जायेंगे तो अल्लाह उन से कहेगा: क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया जब कि तुम ने उन का पूरा ज्ञान नहीं किया, अन्यथा तुम और क्या कर रहे थे?
85. और सिध्द हो जायेगा यातना का वचन उन के ऊपर उन के अत्याचार के कारण। तब वह बात नहीं कर सकेंगे।
86. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने रात बनाई ताकि वह शान्त रहें उस में, तथा दिन को दिखाने वाला वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ (लक्षण) हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
87. और जिस दिन फूँका जायेगा सूर (नरसिंघा) में, तो घबरा जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु वह जिसे अल्लाह चाहे, तथा सब उस (अल्लाह) के समक्ष आ जायेंगे विवश हो कर।
88. और तुम देखते हो पर्वतों को तो उन्हें समझते हो स्थिर (अचल) हैं, जब कि वह (उस दिन) उड़ेंगे बादल के समान, यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज़ को, निश्चय वह भली-भाँति सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।
89. जो भलाई लायेगा, तो उस के लिये उस से उत्तम (प्रतिफल) है और वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय रहने वाले होंगे।
90. और जो बुराई लायेगा, तो वही झोंक

दिये जायेंगे औधे मुँह नरक में (तथा कहा जायेगा): तुम्हें वही बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे हो।

91. मुझे तो बस यही आदेश दिया गया है कि इस नगर (मक्का) के पालनहार की इबादत (वंदना) करूँ जिस ने उसे आदरणीय बनाया है, तथा उसी के अधिकार में है प्रत्येक चीज़, और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में से रहूँ।
92. तथा कुआन पढ़ता रहूँ, तो जिस ने सुपथ अपनाया तो वह अपने ही लाभ के लिये सुपथ अपनायेगा। और जो कुपथ हो जाये तो आप कह दें कि वास्तव में मैं तो बस सावधान करने वालों में से हूँ।
93. तथा आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, वह शीघ्र तुम्हें दिखा देगा अपनी निशानियाँ जिन्हें तुम पहचान लोगे और तुम्हारा पालनहार उस से अचेत नहीं है जो कुछ तुम कर रहे हो।

सूरह क़सस - 28

सूरह क़सस के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. ता, सीन, मीम।
2. यह इस खुली पुस्तक की आयतें हैं।
3. हम आप के समक्ष सुना रहें हैं मूसा तथा फिरऔन के कुछ समाचार

सत्य के साथ उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।

4. वास्तव में फिरऔन ने उपद्रव किया धरती में और कर दिया उस के निवासियों को कई गिरोह। वह निर्बल बना रहा था एक गिरोह को उन में से, बध कर रहा था उन के पुत्रों को और जीवित रहने देता था उन की स्त्रियों को। निश्चय वह उपद्रवियों में से था।
5. तथा हम चाहते थे कि उन पर दया करें जो निर्बल बना दिये गये धरती में तथा बना दें उन्हीं को प्रमुख और बना दें उन्हीं को उत्तराधिकारी।
6. तथा उन्हें शक्ति प्रदान कर दें धरती में और दिखा दें फिरऔन तथा हामान और उन की सेनाओं को उन की ओर से वह जिस से वह डर रहे थे।
7. और हम ने बह्वी की मूसा की माता की ओर कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस पर भय हो तो उसे सागर में डाल दे, और भय न कर और न चिन्ता कर, निःसंदेह हम बीपस लायेंगे उसे तेरी ओर, और बना देंगे उसे रसूलों में से।
8. तो ले लिया उसे फिरऔन के कर्मचारियों ने ताकि वह बने उन के लिये शत्रु तथा दुःख का कारण। वास्तव में फिरऔन तथा हामान और उन की सेनायें दोषी थीं।
9. और फिरऔन की पत्नी ने कहा: यह मेरी तथा आप की आँखों की ठण्डक है। इसे बध न करो, संभव है हमें लाभ पहुँचाये या उसे हम पुत्र बना लें। और वह समझ नहीं रहे थे।

10. और हो गया मूसा की माँ का दिल व्याकुल, समीप था कि वह उस का भेद खोल देती यदि हम आश्वासन न देते उस के दिल को, ताकि वह हो जाये विश्वास करने वालों में।
11. तथा (मूसा की माँ ने) कहा: उस की बहन से कि तू इस के पीछे-पीछे जा। तो उस ने उसे दूर ही दूर से देखा और उन्हें इस का आभास तक न हुआ।
12. और हम ने अवैध (निषेध) कर दिया उस (मूसा) पर दाईयों को इस से पूर्वा तो उस (की बहन) ने कहा: क्या मैं तुम्हें न बताऊँ ऐसा घराना जो पालनपोषण करे इस का तुम्हारे लिये तथा वह उस के शुभचिन्तक हों?
13. तो हम ने फेर दिया उसे उस की माँ की ओर ताकि ठण्डी हो उस की आँख और चिन्ता न करे, और ताकि उसे विश्वास हो जाये कि अल्लाह का वचन सच्च है, परन्तु अधिकतर लोग विश्वास नहीं रखते।
14. और जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और उस का विकास पूरा हो गया तो हम ने उसे प्रबोध तथा ज्ञान दिया। और इसी प्रकार हम बदला देते हैं सदाचारियों को।
15. और उस ने प्रवेश किया नगर में उस के वासियों की अचेतना के समय, और उस में दो व्यक्तियों को लड़ते हुये पाया, यह उस के गिरोह से था और दूसरा उस के शत्रु में से। तो उसे पुकारा उस ने जो उस के गिरोह से था उस के विरुद्ध जो उस के शत्रु में से था। जिस पर मूसा ने उसे घूँसा मारा और वह मर गया। मूसा ने कहा: यह शैतानी कर्म है। वास्तव में वह शत्रु है खुला कुपथ करने वाला।
16. उस ने कहा: हे मेरे पालनहार! मैं ने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया, तू मुझे क्षमा कर दे। फिर अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। वास्तव में वह क्षमाशील अति दयावान् है।
17. उस ने कहा: उस के कारण जो तू ने मुझ पर पुरस्कार किया है अब मैं कदापि अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा।
18. फिर प्रातः वह नगर में डरता हुआ समाचार लेने गया तो सहसा वही जिस ने उस से कल सहायता माँगी थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उस से कहा: वास्तव में तू ही खुला कुपथ है।
19. फिर जब पकड़ना चाहा उसे जो उन दोनों का शत्रु था, तो उस ने कहा: हे मूसा! क्या तू मुझे मार देना चाहता है जैसे मार दिया एक व्यक्ति को कल? तू तो चाहता है कि बड़ा उपद्रवी बन कर रहे इस धरती में और तू नहीं चाहता कि सुधार करने वालों में से हो।
20. और आया एक पुरुष नगर के किनारे से दौड़ता हुआ, उस ने कहा: हे मूसा! (राज्य के) प्रमुख परामर्श कर रहे हैं तेरे विषय में कि तुझे बंध कर दें, अतः तू निकल जा। वास्तव में मैं तेरे शुभचिन्तकों में से हूँ।
21. तो वह निकल गया उस (नगर) से डरा सहमा हुआ। उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे बचा ले अत्याचारी जाति से।

22. और जब वह जाने लगा मद्यन की ओर, तो उस ने कहा: मुझे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे दिखायेगा सीधा मार्ग।
23. और जब उतरा मद्यन के पानी पर तो पाया उस पर लोगों का एक समूह जो (अपने पशुओं को) पानी पिला रहा था। तथा पाया उस के पीछे दो स्त्रियों को (अपने पशुओं को) रोकती हुई। उस ने कहा: तुम्हारी समस्या क्या है? दोनों ने कहा: हम पानी नहीं पिलाती जब तक चरवाहे चले न जायें, और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।
24. तो उस ने पिला दिया दोनों के लिये। फिर चल दिया छाया की ओर, और कहने लगा: हे मेरे पालनहार! तू जो भी भलाई मुझ पर उतार दे मैं उस का आकांक्षी हूँ।
25. तो आई उस के पास दोनों में से एक स्त्री चलती हुयी लज्जा के साथ, उस ने कहा: मेरे पिता आप को बुला रहे हैं। ताकि आप को उस का पारिश्रमिक दें जो आप ने पानी पिलाया है हमारे लिये। फिर जब (मूसा) उस के पास पहुँचा और पूरी कथा उसे सुनाई तो उस ने कहा: भय न करा। तू मुक्त हो गया अत्याचारी जाति से।
26. कहा उन दोनों में से एक ने: हे पिता! आप इन को सेवक रख लें, सब से उत्तम जिसे आप सेवक बनायें वही हो सकता है जो प्रबल विश्वासनीय हो।
27. उस ने कहा: मैं चाहता हूँ कि विवाह दूँ तुम्हें अपनी इन दो पुत्रियों में से एक से, इस पर कि मेरी सेवा करोगे
- आठ वर्ष, फिर यदि तुम पूरा कर दो दस (वर्ष) तो यह तुम्हारी इच्छा है। मैं नहीं चाहता कि तुम पर बोझ डालूँ, और तुम मुझे पाओगे यदि अल्लाह ने चाहा तो सदाचारियों में से।
28. मूसा ने कहा: यह मेरे और आप के बीच (निश्चित) है। मैं दो में से जो भी अवधि पूरी कर दूँ, मुझ पर कोई अत्याचार न हो। और अल्लाह उस पर जो हम कह रहे हैं निरीक्षक है।
29. फिर जब पूरी कर ली मूसा ने अवधि और चला अपने परिवार के साथ तो उस ने देखी तूर (पर्वत) की ओर एक अग्नि। उस ने अपने परिवार से कहा: रुको मैं ने देखी है एक अग्नि, संभव है तुम्हारे पास लाऊँ वहाँ से कोई समाचार अथवा कोई अंगार अग्नि का ताकि तुम ताप लो।
30. फिर जब वह वहाँ आया तो पुकारा गया वादी के दायें किनारे से, शुभ क्षेत्र में वृक्ष से: हे मूसा! निःसंदेह मैं ही अल्लाह हूँ सर्वलोक का पालनहार।
31. और फेंक दो अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा कि रेंग रही मानो वह कोई सर्प हो तो भागने लगा पीठ फेर कर और पीछे फिर कर नहीं देखा। हे मूसा! आगे आ तथा भय न कर, वास्तव में तू सुरक्षितों में से है।
32. डाल अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के। और चिमटा ले अपनी ओर अपनी भुजा, भय दूर करने के लिये तो यह दो खुली निशानियाँ हैं तेरे पालनहार की ओर से फिरऔन

- तथा उस के प्रमुखों के लिये, वास्तव में वह उल्लंघनकारी जाति है।
33. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने बध किया है उन के एक व्यक्ति को। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार देंगे।
34. और मेरा भाई हारून मुझे से अधिक सुभाषी है, तू उसे भी भेज दे मेरे साथ सहायक बना कर ताकि वह मेरा समर्थन करे, मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठला देंगे।
35. उस ने कहा: हम तुझे बाहुबल प्रदान करेंगे तेरे भाई द्वारा, और बनायेंगे तुम दोनों के लिये ऐसा प्रभाव कि वह तुम दोनों तक नहीं पहुँच सकेंगे अपनी निशानियों द्वारा, तुम दोनों तथा तुम्हारे अनुयायी ही ऊपर रहेंगे।
36. फिर जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियाँ लाया, तो उन्होंने ने कह दिया कि यह तो केवल घड़ा हुआ जादू है और हम ने कभी नहीं सुनी यह बात अपने पूर्वजों के युग में।
37. तथा मूसा ने कहा: मेरा पालनहार अधिक जानता है उसे जो मार्ग दर्शन लाया है उस के पास से और किस का अन्त अच्छा होना है? वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होंगे।
38. तथा फिरऔन ने कहा: हे प्रमुखो! मैं नहीं जानता तुम्हारा कोई पूज्य अपने सिवा। तो हे हामान! ईटें पकवा कर मेरे लिये एक ऊँचा भवन बना दे। संभव है मैं झाँक कर देख लूँ मूसा के पूज्य को, और निश्चय मैं उसे समझता हूँ झूठों में से।
39. तथा घमंड किया उस ने तथा उस की सेनाओं ने धरती में अवैध, और उन्होंने ने समझा कि वह हमारी ओर वापिस नहीं लाये जायेंगे।
40. तो हम ने पकड़ लिया उसे और उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया हम ने उन्हें सागर में, तो देखो कि कैसा रहा अत्याचारियों का अन्त (परिणाम)।
41. और हम ने उन्हें बना दिया ऐसा अगुवा जो बुलाते हों नरक की ओर तथा प्रलय के दिन उन की सहायता नहीं की जायेगी।
42. और हम ने पीछे लगा दिया उन के संसार में धिक्कार को और प्रलय के दिन वह बड़ी दुर्दशा में होंगे।
43. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की इस के पश्चात् कि हम ने विनाश कर दिया प्रथम समुदायों का, ज्ञान का साधन बना कर लोगों के लिये तथा मार्गदर्शन और दया ताकि वे शिक्षा लें।
44. और (हे नबी!) आप नहीं थे पश्चिमी दिशा में जब हम ने पहुँचाया मूसा की ओर यह आदेश और आप नहीं थे उपस्थितों में।
45. परन्तु (आप के समय तक) हम ने बहुत से समुदायों को पैदा किया फिर उन पर लम्बी अवधि बीत गई तथा आप उपस्थित न थे मद्दन के वासियों में कि सुनाते उन्हें हमारी आयतें और परन्तु हम ही रसूलों को भेजने वाले हैं।
46. तथा नहीं थे आप तूर के अंचल में जब हम ने उसे पुकारा, परन्तु आप

के पालनहार की दया है, ताकि आप सतर्क करें जिन के पास नहीं आया कोई सचेत करने वाला आप से पूर्व, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

47. तथा यदि यह बात न होती कि उन पर कोई आपदा आ जाती उन के कर्तुओं के कारण, तो कहते कि हमारे पालनहार तू ने क्यों नहीं भेजा हमारी ओर कोई रसूल कि हम पालन करते तेरी आयतों का, और हो जाते ईमान वालों में से।
48. फिर जब आ गया उन के पास सत्य हमारे पास से तो कह दिया कि क्यों नहीं दिया गया उसे वही जो मूसा को (चमत्कार) दिया गया, तो क्या उन्होंने ने कुफ़्र (इन्कार) नहीं किया उस का जो मूसा दिये गये इस से पूर्व? उन्होंने ने कहा: दो जादूगर हैं दोनों एक-दूसरे के सहायक हैं। और कहा: हम किसी को नहीं मानते।
49. (हे नबी!) आप कह दें: तब तुम्हीं ला दो कोई पुस्तक अल्लाह की ओर से जो अधिक मार्ग दर्शक हो इन दोनों से, मैं चलूंगा उस पर यदि तुम सच्चे हो।
50. फिर भी यदि वे पूरी न करें आप की माँग, तो आप जान लें कि वे अपनी मनमानी कर रहे हैं, और उस से अधिक कुपथ कौन है जो मनमानी करे अपनी अल्लाह की ओर से बिना किसी मार्गदर्शन के? वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अत्याचारी लोगों को।
51. और (हे नबी!) हम ने निरन्तर पहुँचा दिया है उन को अपनी बात,

(कुर्आन) ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

52. जिन को हम ने प्रदान की है पुस्तक इस (कुर्आन) से पहले वह इस पर ईमान लाते हैं।
53. तथा जब उन्हें सुनाया जाता है तो कहते हैं: हम इस (कुर्आन) पर ईमान लाये, वास्तव में वह सत्य है हमारे पालनहार की ओर से, हम तो इस के (उतारने के) पहले ही से मुस्लिम हैं।
54. यही दिये जायेंगे अपना बदला दुहरा अपने धैर्य के कारण, और वह दूर करते हैं अच्छाई के द्वारा बुराई को। और उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।
55. और जब वह सुनते हैं व्यर्थ बात तो विमुख हो जाते हैं उस से। तथा कहते हैं: हमारे लिये हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। सलाम है तुम पर हम (उलझना) नहीं चाहते आज्ञानों से।
56. (हे नबी!) आप सुपथ नहीं दर्शा सकते जिसे चाहें, परन्तु अल्लाह सुपथ दर्शाता है जिसे चाहे, और वह भली - भाँति जानता है सुपथ प्राप्त करने वालों को।
57. तथा उन्होंने ने कहा: यदि हम अनुसरण करें मार्ग दर्शन का आप के साथ, तो अपनी धरती से उच्चक लिये जायेंगे। क्या हम ने निवास स्थान नहीं बनाया है उन के लिये भयरहित ((हरम)) को उन के लिये, खिंचे चले आ रहे हैं जिस की ओर प्रत्येक प्रकार के फल जीविका स्वरूप हमारे पास से? और परन्तु उन में से अधिकतर लोग नहीं जानते।

58. और हम ने विनाश कर दिया बहुत सी बस्तियों का इतराने लगी जिन की जीविका। तो यह है उन के घर जो आबाद नहीं किये गये उन के पश्चात् परन्तु बहुत थोड़े और हम ही उत्तराधिकारी रह गये।
59. और नहीं है आप का पालन- हार विनाश करने वाला बस्तियों को जब तक उन के केन्द्र में कोई रसूल नहीं भेजता जो पढ़ कर सुनाये उन के समक्ष हामरी आयतें, और हम बस्तियों का विनाश करने वाले नहीं परन्तु जब उस के निवासी अत्याचारी हों।
60. तथा जो कुछ तुम दिये गये हो वह संसारिक जीवन का सामान तथा उस की शोभा है। और जो अल्लाह के पास है उत्तम तथा स्थायी है, तो क्या तुम समझते नहीं हो?
61. तो क्या जिसे हम ने बचन दिया है एक अच्छा बचन और वह पाने वाला हो उसे, उस के जैसा हो सकता है जिसे हम ने दे रखा है संसारिक जीवन का सामान फिर वह प्रलय के दिन उपस्थित किये लोगों में से होगा?
62. और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, तो कहेगा: कहां हैं मेरे साझी जिन्हें तुम समझ रहे थे?
63. कहेंगे वह जिन पर सिद्ध हो चुकी है यह बात : हे हमारे पालनहार! यही है जिन्हें हम ने बहका दिया, और हम ने इन को बहकाया जैसे हम बहके, हम उन से अलग हो रहे हैं तेरे समक्ष, यह हमारी पूजा नहीं कर रहे थे।
64. तथा कहा जायेगा: पुकारो अपने साझियों को। तो वे पुकारेंगे, और वह उन्हें उत्तर तक नहीं देंगे, तथा वह यातना देख लेंगे तो कामना करेंगे कि उन्होंने सुपथ अपनाया होता!
65. और वह (अल्लाह) उस दिन उन को पुकारेगा, फिर कहेगा: तुम ने क्या उत्तर दिया रसूलों को?
66. तो नहीं सूझेगा उन्हें कोई उत्तर उस दिन और न वह एक-दूसरे से प्रश्न कर सकेंगे।
67. फिर जिस ने क्षमा मांग ली तथा ईमान लाया और सदाचार किया, तो आशा कर सकता है कि वह सफल होने वालों में से होगा।
68. और आप का पालनहार उत्पन्न करता है जो चाहे, तथा निर्वाचित करता है। नहीं है उन के लिये कोई अधिकार, पवित्र है अल्लाह तथा उच्च है उन के साझी बनाने से।
69. और आप का पालनहार ही जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।
70. तथा वही अल्लाह है कोई वन्दनीय (सत्य पूज्य) नहीं है उस के सिवा, उसी के लिये सब प्रशंसा है लोक तथा परलोक में तथा उसी के लिये शासन है और तुम उसी की ओर फेरे जाओगे।
71. (हे नबी!) आप कहिये: तुम बताओ कि यदि बना दे तुम पर रात्रि को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास प्रकाश? तो क्या तुम सुनते नहीं हो?
72. आप कहिये: तुम बताओ, यदि अल्लाह

- कर दे तुम पर दिन को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास रात्रि जिस में तुम शान्ति प्राप्त करो, तो क्या तुम देखते नहीं हो?
73. तथा अपनी दया ही से उस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिन ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उस में और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह(जीविका) की, और ताकि तुम उस के कृतज्ञ बनो।
74. और अल्लाह जिस दिन उन्हें पुकारेगा, तो कहेगा: कहाँ हैं वे जिन को तुम मेरा साझी समझ रहे थे?
75. और हम निकाल लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गवाह, फिर कहेंगे: लाओ अपने तर्क? तो उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि सत्य अल्लाह ही की ओर है, और उन से खो जायेंगी जो बातें वे घड़ रहे थे।
76. कारून था मूसा की जाति में से। फिर उस ने अत्याचार किया उन पर, और हम ने उसे प्रदान किया इतने कोष कि उस की कुंजियाँ भारी थीं एक शक्तिशाली समुदाय पर। जब कहा उस से उस की जाति ने: मत इतरा, वास्तव में अल्लाह प्रेम नहीं करता है इतराने वालों से।
77. तथा खोज कर उस से जो दिया है अल्लाह ने तुझे आखिरत (परलोक) का घर, और मत भूल अपना संसारिक भाग और उपकार कर जैसे अल्लाह ने तुझ पर उपकार किया है। तथा मत खोज कर धरती में उपद्रव की, निश्चय अल्लाह प्रेम नहीं करता है उपद्रवियों से।
78. उस ने कहा: मैं तो उसे दिया गया हूँ बस अपने ज्ञान के कारण। क्या उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह ने बिनाश किया है उस से पहले बहुत से समुदायों को जो उस से अधिक थे धन तथा समूह में, और प्रश्न नहीं किया जाता अपने पापों के सम्बंध में अपराधियों से।
79. एक दिन वह निकला अपनी जाति पर अपनी शोभा में, तो कहा उन लोगों ने जो चाहते थे संसारिक जीवन: क्या ही अच्छा होता कि हमारे लिये (भी) उसी के समान (धन- धान्य) होता जो दिया गया है कारून को! वास्तव में वह बड़ा शौभाग्यशाली है।
80. तथा उन्होंने ने कहा जिन को ज्ञान दिया गया: तुम्हारा बुरा हो! अल्लाह का प्रतिकार उस के लिये उत्तम है जो ईमान लाये तथा सदाचार करे, और यह सोच धैर्यवानों ही को मिलती है।
81. अन्ततः हम ने धंसा दिया उस के तथा उस के घर सहित धरती को, तो नहीं रह गया उस का कोई समुदाय जो सहायता करे उस की अल्लाह के आगे, और न वह स्वयं अपनी सहायता कर सका।
82. और जो कामना कर रहे थे उस के स्थान की कल, कहने लगे: क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह अधिक कर देता है जीविका जिस के लिये चाहता हो अपने दासों में से और नाप कर देता है (जिसे चाहता है)। यदि हम पर उपकार न होता अल्लाह का, तो हमें भी धंसा देता। क्या तुम देखते

नहीं कि काफ़िर (कृतघ्न) सफल नहीं होते।

83. यह परलोक का घर (स्वर्ग) है हम उसे विशेष कर देंगे उन के लिये जो नहीं चाहते बड़ाई करना धरती में और न उपद्रव करना, और अच्छा परिणाम आज्ञा-कारियों के लिये है।
84. जो भलाई लायेगा उस के लिये उस से उत्तम (भलाई) है। और जो बुराई लायेगा तो नहीं बदला दिया जायेगा उन को जिन्होंने बुराईयाँ की हैं परन्तु वही जो वे करते रहे।
85. और (हे नबी!) जिस ने आप पर कुर्आन उतारा है वह आप को लौटाने वाला है आप के नगर (मक्का) की ओर। आप कह दें कि मेरा पालनहार भली-भाँति जानने वाला है कि कौन मार्गदर्शन लाया है, और कौन खुले कुपथ में है।
86. और आप आशा नहीं रखते थे कि अवतरित की जायेगी आप की ओर यह पुस्तक, परन्तु यह दया है आप के पालनहार की ओर से अतः आप कदापि न हों सहायक काफ़िरों के।
87. और वह आप को न रोकें अल्लाह की आयतों से इस के पश्चात् जब उतार दी गई आप की ओर, और बुलाते रहें अपने पालनहार की ओर। और कदापि आप न हों मुश्रिकों में से।
88. और आप न पुकारें किसी अन्य पूज्य को अल्लाह के साथ, नहीं है कोई वंदनीय (सत्य पूज्य) उस (अल्लाह) के सिवा। प्रत्येक वस्तु नाशवान है

सिवाय उस के स्वरूप को उसी का शासन है और उसी की ओर तुम सब फेरे जाओगे।

सूरह अन्कबूत - 29

सूरह अन्कबूत के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 69 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़, लाम, मीम।
2. क्या लोगों ने समझ रखा है कि वह छोड़ दिये जायेंगे कि वह कहते हैं, हम ईमान लाये और उन की परीक्षा नहीं ली जायेगी?
3. और हम ने परीक्षा ली है उन से पूर्व के लोगों की, तो अल्लाह अवश्य जानेगा उन को जो सच्चे हैं, तथा अवश्य जानेगा झूठों को।
4. क्या समझ रखा है उन लोगों ने जो कुकर्म कर रहे हैं कि हम से अग्रसर हो जायेंगे? क्या ही बुरा निर्णय कर रहे हैं!
5. जो आशा रखता हो अल्लाह से मिलने की, तो अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ समय अवश्य आने वाला है। और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
6. और जो प्रयास करता है तो वह प्रयास करता है अपने ही भले के लिये, निश्चय अल्लाह निस्पृह है संसार वासियों से।
7. तथा जो लोग ईमान लाये और

- सदाचार किये, हम अवश्य दूर कर देंगे उन से उन की बुराईयाँ, तथा उन्हें प्रतिफल देंगे उन के उत्तम कर्मों का।
8. और हम ने निर्देश दिया मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ उपकार करने का, और यदि दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरे साथ उस चीज़ को जिस का तुम को ज्ञान नहीं, तो उन दोनों की बात न मानो मेरी ओर ही तुम्हें फिर कर आना है, फिर मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा उस कर्म से जो तुम करते रहे हो।
9. और जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हम उन्हें अवश्य सम्मिलित कर देंगे सदाचारियों में।
10. और लोगों में वे (भी) हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाये अल्लाह पर। फिर जब सताये गये अल्लाह के बारे में तो समझ लिया लोगों की परीक्षा को अल्लाह की यातना के समान। और यदि आ जाये कोई सहायता आप के पालनहार की ओर से, तो अवश्य कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ थे। तो क्या अल्लाह भली-भाँति अवगत नहीं है उस से जो संसारवासियों के दिलों में है?
11. और अल्लाह अवश्य जान लेगा उन को जो ईमान लाये हैं, तथा अवश्य जान लेगा द्विधावादियों को।
12. और कहा काफ़िरोँ ने उन से जो ईमान लाये हैं: अनुसरण करो हमारे पथ का, और हम भार ले लेंगे तुम्हारे पापों का, जब की वह भार लेने वाले नहीं हैं उन के पापों का कुछ भी, वास्तव में वह झूठे हैं।
13. और वह अवश्य प्रभारी होंगे अपने बोझों के और कुछ बोझों के अपने बोझों के साथ, और उन से अवश्य प्रश्न किया जायेगा प्रलय के दिन उस झूठ के बारे में जो घड़ते रहे।
14. तथा हम ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, तो वह रहा उन में हजार वर्ष किन्तु पचास वर्ष, फिर उन्हें पकड़ लिया तूफ़ान ने, तथा वे अत्याचारी थे।
15. तो हम ने बचा लिया उस को और नाव वालों को, और बना दिया उसे एक निशानी (शिक्षा) विश्व वासियों के लिये।
16. तथा इब्राहीम को जब उस ने अपनी जाति से कहा: इबादत (बंदना) करो अल्लाह की तथा उस से डरो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।
17. तुम तो अल्लाह के सिवा बस उन की बंदना कर रहे हो जो मूर्तियाँ हैं, तथा तुम झूठ घड़ रहे हो, वास्तव में जिन ईमान लाये हैं: अनुसरण करो हमारे पथ का, और हम भार ले लेंगे तुम्हारे पापों का, जब की वह भार लेने वाले नहीं हैं उन के पापों का कुछ भी, वास्तव में वह झूठे हैं।
18. और यदि तुम झुठलाओ तो झुठलाया है बहुत से समुदायों ने तुम से पहले, और नहीं है रसूल का दायित्व परन्तु खुला उपदेश पहुँचा देना।
19. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभ करता है फिर उसे दुहरायेगा, निश्चय यह अल्लाह पर अति सरल है।

20. (हे नबी!) कह दें कि चलो- फिरो धरती में फिर देखो कि उस ने कैसे उत्पत्ति का आरंभ किया है, फिर अल्लाह दूसरी बार भी उत्पन्न करेगा, वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
21. वह यातना देगा जिसे चाहेगा तथा दया करेगा जिस पर चाहेगा, और उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।
22. तुम उसे विवश करने वाले नहीं हो, न धरती में न आकाश में, तथा नहीं है तुम्हारा उस के सिवा कोई संरक्षक और न सहायक।
23. तथा जिन लोगों ने इन्कार किया अल्लाह की आयतों और उस से मिलने का, वही निराश हो गये हैं मेरी दया से और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।
24. तो उस (इब्राहीम) की जाति का उत्तर बस यही था कि उन्हीं ने कहा: इसे बध कर दो या इसे जला दो, तो अल्लाह ने उसे बचा लिया अग्नि से। वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो ईमान रखते हैं।
25. और कहा: तुम ने तो अल्लाह को छोड़ कर मूर्तियों को प्रेम का साधन बना लिया है अपने बीच संसारिक जीवन में, फिर प्रलय के दिन तुम एक-दूसरे का इन्कार करोगे तथा धिक्कारोगे एक-दूसरे को, और तुम्हारा आवास नरक होगा, और नहीं होगा तुम्हारा कोई सहायक।
26. तो मान लिया उस को लूत ने, और इब्राहीम ने कहा: मैं हिजरत कर रहा हूँ अपने पालनहार की ओर। निश्चय वही प्रबल तथा गुणी है।
27. और हम ने प्रदान किया उसे इसहाक तथा याकूब तथा हम ने रख दी उस की संतान में नबूवत तथा पुस्तक, और हम ने प्रदान किया उसे उस का प्रतिफल संसार में, और निश्चय वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।
28. तथा लूत को (भेजा)। जब उस ने अपनी जाति से कहा: तुम तो वह निर्लज्जा कर रहे हो जो तुम से पहले नहीं किया है किसी ने संसार वासियों में से।
29. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो, और डकैती करते हो तथा अपनी सभाओं में निर्लज्जा के कार्य करते हो? तो नहीं था उस की जाति का उत्तर इस के अतिरिक्त कि उन्हीं ने कहा: तू ला दे हमारे पास अल्लाह की यातना, यदि तू सच्चों में से है।
30. लूत ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उपद्रवी जाति पर।
31. और जब आये हमारे भेजे हुये (फरिश्ते) इब्राहीम के पास शुभ सूचना ले कर, तो उन्हीं ने कहा: हम विनाश करने वाले हैं इस बस्ती के वासियों का। वस्तुतः इस के वासी अत्याचारी हैं।
32. इब्राहीम ने कहा: उस में तो लूत है। उन्हीं ने कहा: हम भली-भाँति जानने वाले हैं जो उस में है। हम अवश्य बचा लेंगे उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा, वह पीछे रह जाने वालों में थी।

33. और जब आ गये हमारे भेजे हुये लूत के पास तो उसे बुरा लगा और वह उदासीन हो गया उन के आने पर। और उन्होंने ने कहा: भय न कर और न उदासीन हो, हम तुझे बचा लेने वाले हैं तथा तेरे परिवार को, परन्तु तेरी पत्नी को, वह पीछे रह जाने वालों में है।
34. वास्तव में हम उतारने वाले हैं इस बस्ती के वासियों पर आकाश से यातना इस कारण कि वह उल्लंघन कर रहे हैं।
35. तथा हम ने छोड़ दी है उस में एक खुली निशानी उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।
36. तथा मदन की ओर उन के भाई शुऐब को (भेजा) तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तथा आशा रखो प्रलय के दिन की और मत फिरो धरती में उपद्रव करते हुये।
37. किन्तु उन्होंने ने उसे झुठला दिया तो पकड़ लिया उन्हें भूकम्प ने और वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।
38. तथा आद और समूद का (विनाश किया)। और उजागर हैं तुम्हारे लिये उन के घरों के कुछ अवशेष, और शोभनीय बना दिया शैतान ने उन के कर्मा को और रोक दिया उन्हें सुपथ से, जब कि वह समझ-बूझ रखते थे।
39. और कारून तथा फिरऔन और

हामान का, और लाये उन के पास मूसा खुली निशानियाँ, तो उन्होंने ने अभिमान किया और वह हम से आगे होने वाले न थे।

40. तो प्रत्येक को हम ने पकड़ लिया उस के पाप के कारण, तो इन में से कुछ पर पत्थर बरसाये और उन में से कुछ को पकड़ा कड़ी ध्वनि ने तथा कुछ को धंसा दिया धरती में, और कुछ को डुबो दिया। तथा नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।
41. उन का उदाहरण जिन्होंने बना लिये अल्लाह को छोड़ कर संरक्षक, मकड़ी जैसा है जिस ने एक घर बनाया, और वास्तव में घरों में सब से अधिक निर्बल घर मकड़ी का है यदि वह जानते।
42. वास्तव में अल्लाह जानता है कि वे जिसे पुकारते हैं अल्लाह को छोड़ कर वह कुछ नहीं हैं। और वही प्रबल गुणी (प्रवीण) है।
43. और यह उदाहरण हम लोगों के लिये दे रहे हैं और इसे नहीं समझेंगे परन्तु ज्ञानी लोग (ही)।
44. उत्पत्ति की है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की सत्य के साथ। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है ईमान लाने वालों के लिये।



45. आप उस पुस्तक को पढ़ें जो वही (प्रकाशना) की गई है आप की ओर, तथा स्थापना करें नमाज़ की। वास्तव में नमाज़ रोकती है निर्लज्जा तथा दुराचार से और अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान् है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।
46. और तुम वाद-विवाद न करो अहले किताब से परन्तु ऐसी विधि से जो सर्वोत्तम हो, उन के सिवा जिन्होंने न अत्याचार किया है उन में से। तथा तुम कहो कि हम ईमान लाये उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और उतारा गया तुम्हारी ओर, तथा हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य एक ही है। और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।
47. और इसी प्रकार हम ने उतारी है आप की ओर यह पुस्तक, तो जिन को हम ने पुस्तक प्रदान की है वह इस (कुर्आन) पर ईमान लाते हैं और इन में से (भी) कुछ इस (कुर्आन) पर ईमान ला रहे हैं। और हमारी आयतों को काफ़िर ही नहीं मानते हैं।
48. और आप इस से पूर्व न कोई पुस्तक पढ़ सकते थे और न अपने हाथ से लिख सकते थे। यदि ऐसा होता तो झूठे लोग संदेह में पड़ सकते थे।
49. बल्कि यह खुली आयतें हैं जो उन के दिलों में सुरक्षित हैं जिन को ज्ञान दिया गया है। तथा हमारी आयतों (कुर्आन) का इन्कार अत्याचारी ही करते हैं।
50. तथा (अत्याचारियों) ने कहा: क्यों नहीं उतारी गयी आप पर निशानियाँ आप के पालनहार की ओर से? आप कह दें कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं। और मैं तो खुला सावधान करने वाला हूँ।
51. क्या उन्हें पर्याप्त नहीं कि हम ने उतारी है आप पर यह पुस्तक (कुर्आन) जो पढ़ी जा रही है उन पर। वास्तव में इस में दया और शिक्षा है उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
52. आप कह दें: पर्याप्त है अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच साक्षी। वह जानता है जो आकाशों तथा धरती में है। और जिन लोगों ने मान लिया है असत्य को और अल्लाह से कुफ़्र किया है वही विनाश होने वाले हैं।
53. और वे आप से शीघ्र माँग कर रहे हैं यातना की। और यदि एक निर्धारित समय न होता तो आजाती उन के पास यातना, और अवश्य आयेगी उन के पास अचानक और उन्हें ज्ञान (भी) न होगा।
54. वे शीघ्र माँग कर रहे हैं आप से यातना की। और निश्चय नरक घेरने वाली है काफ़िरों को।
55. जिस दिन छा जायेगी उन पर यातना उन के ऊपर से तथा उन के पैरों के नीचे से। और अल्लाह कहेगा: चखो जो कुछ तुम कर रहे थे।
56. हे मेरे भक्तों जो ईमान लाये हो! वास्तव में मेरी धरती विशाल है, अतः तुम मेरी ही इबादत (बंदना) करो।
57. प्रत्येक प्राणी मौत का स्वाद चखने वाला है फिर तुम हमारी ही ओर फेरे जाओगे।
58. तथा जो ईमान लाये, और सदा चार

- किये तो हम अवश्य उन्हें स्थान देंगे स्वर्ग के उच्च भवनों में, प्रवाहित होंगी जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में, तो क्या ही उत्तम है कर्म करने वालों का प्रतिफल।
59. जिन लोगों ने सहन किया तथा वह अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।
60. कितने ही जीव हैं जो नहीं लादे फिरते अपनी जीविका, अल्लाह ही उन्हें जीविका प्रदान करता है तथा तुम को, और वह सब कुछ सुनने-जानने वाला है।
61. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की, और (किस ने) वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो फिर वह कहाँ बहके जा रहे हैं?
62. अल्लाह ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से और नाप कर देता है उस के लिये। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।
63. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उतारा है आकाश से जल, फिर उस के द्वारा जीवित किया है धरती को उस के मरण के पश्चात्? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं। किन्तु उन में से अधिकतर लोग समझते नहीं।
64. और नहीं है यह संसारिक जीवन किन्तु मनोरंजन और खेल और परलोक का घर ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।
65. और जब वह नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिये धर्म को शुद्ध कर के उसे पुकारते हैं। फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल तक, तो फिर शिर्क करने लगते हैं।
66. ताकि वह कुफ़र करें उस के साथ जो हम ने उन्हें प्रदान किया है, और ताकि आनन्द लेते रहें, तो शीघ्र ही इन्हें ज्ञान हो जायेगा।
67. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने बना दिया है हरम (मक्का) को शान्ति स्थल, जब कि उचक लिये जाते हैं लोग उन के आस- पास से? तो क्या वह असत्य ही को मानते हैं और अल्लाह के पुरस्कार को नहीं मानते?
68. तथा कौन अधिक अत्याचारी होगा उस से जो अल्लाह पर झूठ घड़े या झूठ कहे सच्च को जब उस के पास आ जाये, तो क्या नहीं होगा नरक में आवास काफ़िरों का?
69. तथा जिन्होंने ने हमारी राह में प्रयास किया तो हम अवश्य दिखा देंगे उन को अपनी राह। और निश्चय अल्लाह सदाचारियों के साथ है।

सूरह रूम - 30

सूरह रूम के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 60 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़ लाम मीम।
2. पराजित हो गये रूमि।
3. समीप की धरती में, और वह अपने

पराजित होने के पश्चात् जल्द ही विजयी हो जायेंगे।

4. कुछ वर्षों में, अल्लाह ही का अधिकार है पहले (भी) और बाद में (भी)। और उस दिन प्रशन्न होंगे ईमान वाले।
5. अल्लाह की सहायता से, तथा वही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।
6. यह अल्लाह का वचन है, नहीं विरुद्ध करेगा अल्लाह अपने वचन के, और परन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।
7. वह तो जानते हैं बस ऊपरी संसारिक जीवन को। तथा वह परलोक से अचेत हैं।
8. क्या और उन्होंने ने अपने में सोच-विचार नहीं किया कि नहीं उत्पन्न किया है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है परन्तु सत्यानुसार और एक निश्चित अवधि के लिये। और बहुत से लोग अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करने वाले हैं।
9. क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में, फिर देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पहले थे। वह इन से अधिक थे शक्ति में। उन्होंने ने जोता-बोया धरती को और उसे आबाद किया, उस से अधिक जितना इन्होंने ने आबाद किया, और आये उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ (प्रमाण) ले कर। तो नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता, और परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।
10. फिर हो गया उन का बुरा अन्त जिन्होंने

ने बुराई की, इस लिये कि उन्होंने ने झूठ कहा अल्लाह की आयतों को, और वह उन का उपहास कर रहे थे।

11. अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभकरता है फिर उसे दुहरायेगा, तथा उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।
12. और जब स्थापित होगी प्रलय, तो निराश हो जायेंगे अपराधी।
13. और नहीं होगा उन के साक्षियों में उन का अभिस्तावक (सिफारशी) और वह अपने साक्षियों का इन्कार करने वाले होंगे।
14. और जिस दिन स्थापित होगी प्रलय, तो उस दिन सब अलग अलग हो जायेंगे।
15. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये वही स्वर्ग में प्रसन्न किये जायेंगे।
16. और जिन्होंने कफ़ किया और झुठलाया हमारी आयतों को और परलोक के मिलन को, तो वही यातना में उपस्थित किये हुये होंगे।
17. अतः तुम अल्लाह की पवित्रता का वर्णन संध्या तथा सवेरे किया करो।
18. तथा उसी की प्रशंसा है आकाशों तथा धरती में तीसरे पहर तथा जब दोपहर हो।
19. वह निकालता है जीवित से निर्जीव को, तथा निकालता है निर्जीव से जीव को, और जीवित कर देता है धरती को उस के मरण (सूखने) के पश्चात् और इसी प्रकार तुम (भी) निकाले जाओगे।
20. और उस की (शक्ति) के लक्षणों में से यह (भी) है कि तुम्हें उत्पन्न किया

मिट्टी से, फिर अब तुम मनुष्य हो (कि धरती में) फैलते जा रहे हो।

21. तथा उस की निशानियों (लक्षणों) में से यह (भी) है कि उतपन्न किया तुम्हारे लिये तुम्हीं में से जोड़े, ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उन के पास तथा उतपन्न कर दिया तुम्हारे बीच प्रेम तथा दया, वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगो के लिये जो सोच-विचार करते हैं।
22. तथा उस की निशानियों में से है आकाशों और धरती को पैदा करना, तथा तुम्हारी बोलियों और रंगों का विभिन्न होना। निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं ज्ञानियों के लिये।
23. तथा उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात्री में तथा दिन में, और तुम्हारा खोज करना उस के अनुग्रह (जीविका) का। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगो के लिये जो सुनते हैं।
24. और उस की निशानियों में से (यह भी) है कि वह दिखाता है तुम्हें बिजली को भय तथा आशा बना कर और उतारता है आकाश से जल, फिर जीवित करता है उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्, वस्तुतः इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगो के लिये जो सोचते हैं।
25. और उस की निशानियों में से है कि स्थापित है आकाश तथा धरती उस के आदेश से। फिर जब तुम्हें पुकारेगा एक बार धरती से तो सहसा तुम निकल पड़ोगे।
26. और उसी का है जो आकाशों तथा

धरती में है, सब उसी के आधीन हैं।

27. तथा वही है जो आरंभ करता है उत्पत्ति को, फिर वह उसे दुहरायेगा। और वह अति सरल है उस पर। और उसी का सर्वोच्च गुण है आकाशों तथा धरती में, और वही प्रभुत्व शाली तत्वज्ञ है।
28. उस ने एक उदाहरण दिया है स्वयं तुम्हारा: क्या तुम्हारे दासों में से तुम्हारा कोई साझी है उस में जो जीविका प्रदान की है हम ने तुम को, तो तुम उस में उस के बराबर हो, उन से डरते हो जैसे अपनों से डरते हो। इसी प्रकार हम वर्णन करते हैं आयतों का उन लोगो के लिये जो समझ रखते हैं।
29. बल्कि चले हैं अत्याचारी अपनी मनमानी पर बिना समझे, तो कौन राह दिखाये उसे जिस को अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो। और नहीं है उन का कोई सहायक।
30. तो (हे नबी!) आप सीधा रखें अपना मुख इस धर्म की दिशा में एक ओर हो कर उस स्वभाव पर पैदा किया है अल्लाह ने मनुष्यों को जिस पर। बदलना नहीं है अल्लाह के धर्म को, यही स्वभाविक धर्म है किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।
31. ध्यान कर के अल्लाह की ओर, और डरो उस से तथा स्थापना करो नमाज़ की, और न हो जाओ मुश्रिकों में से।
32. उन में से जिन्होंने ने अलग बना लिया अपना धर्म। और हो गये कई गिरोह, प्रत्येक गिरोह उसी में जो उस के पास है मग्न है।

33. और जब पहुँचता है मनुष्यों को कोई दुख तो वह पुकारते हैं अपने पालनहार को ध्यान लगा कर उस की ओर। फिर जब वह चखाता है उन को अपनी ओर से कोई दया, तो सहसा एक गिरोह उन में से अपने पालनहार के साथ शिर्क करने लगता है।
34. ताकि वह उस के कृतघ्न हो जायें जो हम ने प्रदान किया है उन को। तो तुम आनन्द ले लो, तुम को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।
35. क्या हम ने उतारा है उन पर कोई प्रमाण जो वर्णन करता है उस का जिसे वह अल्लाह का साझी बना रहे हैं।
36. और जब हम चखाते हैं लोगों को कुछ दया तो वह उस पर इतराने लगते हैं। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुख उन के करतूतों के कारण तो वह सहसा निराश हो जाते हैं।
37. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहता है और नाप कर देता है? निश्चय इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
38. तो दो समीपवर्तियों को उस का अधिकार तथा निर्धनों और यात्रियों को। यह उत्तम है उन लोगों के लिये जो चाहते हैं अल्लाह की प्रसन्नता, और वही सफल होने वाले हैं।
39. और जो तुम व्याज देते हो ताकि अधिक हो जाये लोगों के धनों में मिलकर तो वह अधिक नहीं होता अल्लाह के यहाँ। तथा तुम जो ज़कात देते हो चाहते हुये अल्लाह की प्रसन्नता

- तो वही लोग सफल होने वाले हैं।
40. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, फिर तुम्हें जीविका प्रदान की फिर तुम्हें मारेगा, फिर जीवित करेगा, तो क्या तुम्हारे साझियों में से कोई है जो इस में से कुछ कर सके? वह पवित्र है और उच्च है उन के साझी बनाने से।
41. फैल गया उपद्रव जल तथा थल में लोगों के करतूतों के कारण, ताकि वह चखाये उन को उन का कुछ कर्म, संभवतः वह रुक जायें।
42. आप कह दें चलो-फिरो धरती में फिर देखो कि कैसा रहा उन का अन्त जो इन से पहले थे। उन में अधिकतर मुश्रिक थे।
43. अतः आप सीधा रखें अपना मुख सत्धर्म की दिशा में इस से पहले कि आ जाये वह दिन जिसे फिरना नहीं है अल्लाह की ओर से, उस दिन लोग अलग-अलग हो जायेंगे।
44. जिस ने कुफ़ किया तो उसी पर उस का कुफ़ है और जिस ने सदाचार किया तो वे अपने ही लिये (सफलता का मार्ग) बना रहे हैं।
45. ताकि अल्लाह बदला दे उन को जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये अपने अनुग्रह से। निश्चय वह प्रेम नहीं करता काफ़िरों से।
46. और उस की निशानियों में से है कि भेजता है वायु को शुभसूचना देने के लिये और ताकि चखाये तुम्हें अपनी दया (वर्षा) में से, और ताकि नाव

चलें उस के आदेश से, और ताकि तुम खोजो उस जीविका और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

47. और हम ने भेजा आप से पहले रसूलों को उन की जातियों की ओर। तो वह लाये उन के पास खुली निशानियाँ, अन्ततः हम ने बदला ले लिया उन से जिन्होंने अपराध किया। और अनिवार्य था हम पर ईमान वालों की सहायता करना।
48. अल्लाह ही है जो वायुओं को भेजता है, फिर वह उसे फैलाता है आकाश में जैसे चाहता है, और उसे घंघोर बना देता है। तो तुम देखते हो बूंदों को निकलते उस के बीच से, फिर जब उसे पहुँचाता है जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से तो सहसा वह प्रफुल्ल हो जाते हैं।
49. यद्यपि वह थे इस से पहले कि उन पर उतारी जाये, अति निराशा।
50. तो देखो अल्लाह की दया के लक्षणों को, वह कैसे जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात्, निश्चय वही जीवित करने वाला है मुर्दों को तथा वह सब कुछ कर सकता है।
51. और यदि हम भेज दें उग्र वायु फिर वह देख लें उस (खेती) को पीली तो इस के पश्चात् कुफ़र करने लगते हैं।
52. तो (हे नबी) आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों को और नहीं सुना सकेंगे बहरों को पुकार जब वह भाग रहे हों पीठ फेर कर।
53. तथा नहीं है आप मार्ग दर्शाने वाले अर्धों

को उन के कुपथ से, आप सुना सकेंगे उन्हीं को जो ईमान लाते हैं हमारी आयतों पर फिर वही मुस्लिम हैं।

54. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया तुम्हें निर्बल दशा से फिर प्रदान किया निर्बलता के पश्चात् बल फिर कर दिया बल के पश्चात् निर्बल तथा बूढ़ा, वह उत्पन्न करता है जो चाहता है और वही सर्वज्ञ सब सामर्थ्य रखने वाला है।
55. और जिस दिन व्याप्त होगी प्रलय तो शपथ लेंगे अपराधी कि वह नहीं रहे क्षणभर के सिवा। और इसी प्रकार वह बहकते रहे।
56. तथा कहेंगे जो ज्ञान दिये गये तथा ईमान, कि तुम रहे हो अल्लाह के लेख में प्रलय के दिन तक, तो अब यह प्रलय का दिन है। और परन्तु तुम विश्वास नहीं रखते थे।
57. तो उस दिन नहीं काम देगा अत्याचारियों को उन का तर्क और न उन से क्षमायाचना कराई जायेगी।
58. और हम ने वर्णन कर दिया है लोगों के लिये इस कुआँन में प्रत्येक उदाहरण का, और यदि आप ला दें उन के पास कोई निशानी तब भी अवश्य कह देंगे जो काफ़िर हो गये कि तुम तो केवल झूठ बनाते हो।
59. इसी प्रकार मुहर लगा देता है अल्लाह उन के दिलों पर जो समझ नहीं रखते।
60. तो आप सहन करें, वास्तव में

अल्लाह का वचन सत्य है, और कदापि वह आप को हलका न समझे जो विश्वास नहीं रखते।

सूरह लुकमान - 31

सूरह लुकमान के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 34 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़ लाम मीम।
2. यह आयतें हैं ज्ञानपूर्ण पुस्तक की।
3. मार्ग दर्शन तथा दया है सदाचारियों के लिये।
4. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं तथा ज़कात देते हैं और परलोक पर (पूरा) विश्वास रखते हैं।
5. वही लोग अपने पालनहार के शुपथों पर हैं। तथा वही लोग सफल होने वाले हैं।
6. तथा लोगों में वह (भी) है जो खरीदता है खेल की बात ताकि कुपथ करे अल्लाह की राह (इस्लाम) से बिना किसी ज्ञान के और उसे उपहास बनाये। यही है जिन के लिये अपमानकारी यातना है।
7. और जब पढ़ी जायें उस के समक्ष हमारी आयतें तो वह मुख फेर लेता है घमंड करते हुये जैसे उस के दोनों कान बहरे हों, तो आप उसे शुभसूचना सुना दें दुःखदायी यातना की।
8. वस्तुतः जो ईमान लाये तथा सदाचार किये तो उन्ही के लिये सुख के बाग़ हैं।
9. वह सदावासी होंगे उन में, अल्लाह का सत्य वचन है, और वही प्रभुत्वशाली सर्व ज्ञानी है।
10. उस ने उत्पन्न किया है आकाशों को बिना किसी स्तम्भ के जिन्हें तुम देख रहे हो, और बना दिये धरती में पर्वत ताकि डोल न जाये तुम्हें लेकर, और फैला दिये उन में हर प्रकार के जीव, तथा हम ने उतारा आकाश से जल, फिर हम ने उगाये उस में प्रत्येक प्रकार के सुन्दर जोड़े।
11. यह अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ, क्या उत्पन्न किया है उन्हीं ने जो उस के अतिरिक्त हैं? बल्कि अत्याचारी खुले कुपथ में हैं।
12. और हमने लुकमान को प्रबोध प्रदान किया कि कृतज्ञ बनो अल्लाह के, तथा जो (अल्लाह का) आभारी हो वह आभारी है अपने ही (लाभ) के लिये। और जो आभारी न हो तो अल्लाह निःस्वार्थ सराहनीय है।
13. तथा (याद करो) जब लुकमान ने कहा अपने पुत्र से जब वह समझा रहा था उसे: हे मेरे पुत्र! साझी मत बना अल्लाह का, वास्तव में शिर्क (मिश्रण वाद) बड़ा घोर अत्याचार है।
14. और हम ने आदेश दिया है मनुष्यों को अपने माता-पिता के संबन्ध में, अपने गर्भ में रखा उसे उस की माता नें दुःख पर दुःख झेल कर, और उस का दूध छुड़ाया दो वर्ष में कि तुम कृतज्ञ रहो मेरे और अपनी माता-पिता के, और मेरी ही ओर (तुम्हें) फिर आना है।
15. और यदि वह दोनों दबाव डालें

- तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरा उसे जिस का तुम को कोई ज्ञान नहीं, तो न मानो उन दोनों की बात। और उन के साथ रहो संसार में सुचारू रूप से, तथा राह चलो उस की जो ध्यान मग्न हो मेरी ओर, फिर मेरी ही ओर तुम्हें फिर कर आना है तो मैं तुम्हें सूचित कर दूंगा उस से जो तुम कर रहे थे।
16. हे मेरे पुत्र! यदि हो (कोई कर्म) राई के दाने के बराबर, फिर वह यदि हो किसी पत्थर के भीतर या आकाशों में या धरती में, तो उसे भी उपस्थित करेगा अल्लाह! वास्तव में वह सब महीन बातों से सूचित है।
17. हे मेरे पुत्र! स्थापना कर नमाज़ की और आदेश दे भलाई का तथा रोक बुराई से और सहन कर उस (दुख) पर जो तुझे पहुँचे, वास्तव में यह बड़े साहस की बात है।
18. और मत बल दे अपने माथे पर लोगों के लिये तथा मत चल धरती में अकड़ कर। निःसंदेह अल्लाह प्रेम नहीं करता किसी अहंकारी गर्व करने वाले से।
19. और संतुलन रख अपनी चाल में तथा धीमी रख अपनी आवाज़, वास्तव में सब से बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।
20. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने वश में कर दिया है तुम्हारे लिये जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, तथा पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा? और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के

विषय में बिना किसी ज्ञान तथा बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी दिव्य (रोशन) पुस्तक के।

21. और जब कहा जाता है उन से कि पालन करो उस (कुआन) का जिसे उतारा है अल्लाह ने, तो कहते हैं: बल्कि हम तो उसी का पालन करेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यद्यपि शैतान उन्हें बुला रहा हो नरक की यातना की ओर?
22. और समर्पित कर देगा स्वयं को अल्लाह के तथा वह एकेश्वर वादी हो तो उस ने पकड़ लिया सुदृढ़ कड़ा तथा अल्लाह ही की ओर कर्मों का परिणाम है।
23. तथा जो काफ़िर हो गया तो आप को उदासीन न करे उस का कुफ़्र। हमारी ओर ही उन्हें लौटना है, फिर हम सूचित कर देंगे उन को उन के कर्मों से। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी है दिलों के भेदों का।
24. हम उन्हें लाभ पहुँचायेंगे बहुत, थोड़ा फिर हम विवश कर देंगे उन्हें घोर यातना की ओर।
25. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, तो अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने, आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये⁽²⁾ है, बल्कि उन में अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।
26. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वास्तव में अल्लाह निस्पृह सराहनीय है।
27. और यदि जो भी धरती में वृक्ष है सब लेखनियाँ बन जायें तथा उस के

पश्चात् सागर स्याही हो जायें सात सागरों तक, तो भी समाप्त नहीं होंगे अल्लाह (कि प्रशंसा) के शब्द, वास्तव में अल्लाह प्रभाव शाली गुणी है।

28. और तुम्हें उत्पन्न करना और पुनः जीवित करना केवल एक प्राण के समान है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
29. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह मिला देता है रात्री को दिन में और मिला देता है दिन को रात्री में, तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को, प्रत्येक चल रहा है एक निर्धारित समय तक, और अल्लाह उस से जो तुम कर रहे हो भली भाँती अवगत है।
30. यह सब इस कारण है कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा असत्य है, तथा अल्लाह ही सब से ऊँचा, सब से बड़ा है।
31. क्या तुम ने नहीं देखा कि नाव चलती है सागर में अल्लाह के अनुग्रह के साथ, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं प्रत्येक सहनशील कृतज्ञ के लिये।
32. और जब छा जाती है उन पर लहर छत्रों के समान, तो पुकारने लगते हैं अल्लाह को उस के लिये शुद्ध कर के धर्म को, और जब उन्हें सुरक्षित पहुँचा देता है थल तक तो उन में से कुछ संतुलित रहने वाले होते हैं। और हमारी निशानियों को प्रत्येक वचनभंगी अति कृतघ्न ही नकारते हैं।
33. हे लोगों! डरो अपने पालनहार से

तथा भय करो उस दिन का जिस दिन नहीं काम आयेगा कोई पिता अपनी संतान के और न कोई पुत्र काम आने वाला होगा अपने पिता के कुछ भी। निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें कदापि धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से प्रवंचक (शैतान)।

34. निःसंदेह अल्लाह ही के पास है प्रलय का ज्ञान, और वही उतारता है वर्षा, और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में है, और नहीं जानता कोई प्राणी कि वह क्या कमायेगा कल, और नहीं जानता कोई प्राणी कि किस धरती में मरेगा, वास्तव में अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला सब से सूचित है।

सूरह सज्दा - 32

सूरह सज्दा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अलिफ़ लाम मीमा।
2. इस पुस्तक का उतारना जिस में कोई संदेह नहीं पूरे संसार के पालनहार की ओर से है।
3. क्या वे कहते हैं कि इसे इस ने घड़ लिया है? बल्कि यह सत्य है आप के पालनहार कि ओर से ताकि आप सावधान करें उन लोगों को जिन के पास नहीं आया है कोई सावधान करने वाला आप से पहले। संभव है

वह सीधी राह पर आ जायें।

4. अल्लाह वही है जिस ने पैदा किया आकाशों तथा धरती को और जो दोनों के मध्य है छः दिनों में। फिर स्थित हो गया अर्श पर। नहीं है उस के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक और न कोई अभिस्तावक (सिफारशी) तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?
5. वह उपाय करता है प्रत्येक कार्य की आकाश से धरती तक, फिर प्रत्येक कार्य ऊपर उस के पास जाता है एक दिन में जिस का माप एक हज़ार वर्ष है तुम्हारी गणना से।
6. वही है ज्ञानी छुपे तथा खुले का अति प्रभुत्वशाली दयावान्।
7. जिस ने सुन्दर बनाई प्रत्येक चीज़ जो उत्पन्न की, और आरंभ की मनुष्य की उत्पत्ति मिट्टी से।
8. फिर बनाया उस का वंश एक तुच्छजल के निचोड़ (वीर्य) से।
9. फिर बराबर किया उस को और फूंक दिया उस में अपनी आत्मा (प्राण)। तथा बनाये तुम्हारे लिये कान और आँख तथा दिल। तुम कम ही कृतज्ञ हाँते हाँ।
10. तथा उन्होंने ने कहा: क्या जब हम खो जायेंगे धरती में तो क्या हम नई उत्पत्ति में होंगे? बल्कि वह अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करने वाले हैं।
11. आप कह दें कि तुम्हारा प्राण निकाल लेगा मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है फिर अपने पालनहार की ओर फेर दिये जाओगे।

12. और यदि आप देखते जब अपराधी अपने सिर झुकाये होंगे अपने पालनहार के समक्ष (वह कह रहे होंगे): हे हमारे पालनहार! हम ने देख लिया और सुन लिया, अतः हमें फेर दे (संसार में) हम सदाचार करेंगे। हमें पुरा विश्वास हो गया।
13. और यदि हम चाहते तो प्रदान कर देते प्रत्येक प्राणी को उस का मार्गदर्शन। परन्तु मेरी यह बात सत्य हो कर रही कि मैं अवश्य भरूँगा नरक को जिन्नों तथा मानव से।
14. तो चखो अपने भूल जाने के कारण अपने इस दिन के मिलने को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया है। चखो सदा की यातना उस के बदले जो तुम कर रहे थे।
15. हमारी आयतों पर बस वही ईमान लाते हैं जिन को जब समझाया जाये उन से तो गिर जाते हैं सज्दा करते हुये और पवित्रता का गान करते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ और अभिमान नहीं करते।
16. अलग रहते हैं उन के पार्श्व (पहलु) बिस्तारों से, वह प्रार्थना करते रहते हैं अपने पालनहार से भय तथा आशा रखते हुये, तथा उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है दान करते रहते हैं।
17. तो नहीं जानता कोई प्राणी उसे जो छुपा रखा है हम ने उन के लिये आँखों की ठंडक उस के प्रतिफल में जो वह कर रहे थे।
18. फिर क्या जो ईमान वाला हो उस के समान है जो अवज्ञाकारी हो? वह सब समान नहीं हो सकेंगे।

19. जो ईमान लाये तथा सदाचार किये तो उन्हीं के लिये स्थायी स्वर्ग है, अतिथि सत्कार के लिये उस के बदले जो वह करते रहे।
20. और जो अवज्ञा कर गये, उन का आवास नरक है। जब जब वह निकलना चाहेंगे उस में से तो फेर दिये जायेंगे उस में, तथा कहा जायेगा उन से कि चखो उस अग्नि की यातना जिसे तुम झुठला रहे थे।
21. और हम अवश्य चखायेंगे उन को संसारिक यातना, बड़ी यातना से पूर्व ताकि वह फिर आयें।
22. और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा, फिर विमुख हो जाये उन से? वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।
23. तथा हम ने मूसा को प्रदान की (तौरात) तो आप न हों किसी संदेह में उस से मिलने में। तथा बनाया हम ने उसे (तौरात को) मार्गदर्शन इस्राईल की संतान के लिये।
24. तथा हम ने उन में से अग्रणी बनाये जो मार्गदर्शन देते रहे हमारे आदेश द्वारा जब उन्होंने ने सहन किया तथा हमारी आयतों पर विश्वास करते रहे।
25. वस्तुतः आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस में वह विभेद करते रहे।
26. तो क्या मार्गदर्शन नहीं कराया उन्हें कि हम ने ध्वस्त कर दिया इस से पूर्व बहुत से युग के लोगों को जो चल-फिर

रहे थे अपने घरों में वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ (शिक्षायें) हैं, तो क्या वह सुनते नहीं हैं?

27. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम बहा ले जाते हैं जल को सूखी भूमि की ओर फिर उपजाते हैं उस के द्वारा खेतियाँ, खाते हैं जिस में से उन के चौपाये तथा वह स्वयं। तो क्या वह गौर नहीं करते?
28. तथा कहते हैं कि कब होगा वह निर्णय यदि तुम सच्चे हो?
29. आप कह दें निर्णय के दिन लाभ नहीं देगा काफ़िरों को उन का ईमान लाना और न उन्हें अवसर दिया जायेगा।
30. अतः आप विमुख हो जायें उन से तथा प्रतीक्षा करें, यह भी प्रतीक्षा करने वाले हैं।

सूरह अहज़ाब - 33

सूरह अहज़ाब के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदनी है, इस में 73 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे नबी! अल्लाह से डरो, और काफ़िरों तथा मुनाफ़िकों की आज्ञापालन न करो। वास्तव में अल्लाह हिकमत वाला सब कुछ जानने वाला है।
2. तथा पालन करो उस का जो वही (प्रकाशना) की जा रही है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से। निश्चय अल्लाह जो तुम कर रहे हो उस से सूचित है।

3. और आप भरोसा करें अल्लाह पर, तथा अल्लाह पर्याप्त है रक्षा करने वाला।
4. और नहीं रखे हैं अल्लाह ने किसी के दो दिल उस के भीतर और नहीं बनाया है तुम्हारी पत्नियों को जिन से तुम जिहार करते हो उन में से तुम्हारी मातायें तथा नहीं बनाया है तुम्हारे मुँह बोले पुत्रों को तुम्हारा पुत्र। यह तुम्हारी मौखिक बातें हैं। और अल्लाह सच्च कहता है तथा वही सुपथ दिखाता है।
5. उन्हें पुकारो उन के बापों से संबन्धित कर के, यह अधिक न्याय की बात है अल्लाह के समीप। और यदि तुम नहीं जानते उन के बापों को तो वह तुम्हारे धर्म बन्धु तथा मित्र हैं। और तुम्हारे ऊपर कोई दोष नहीं है उस में जो तुम से चूक हुई है, परन्तु (उस में है) जिस का निश्चय तुम्हारे दिल करें। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
6. नबी अधिक समीप (प्रिय) है ईमान वालों से उन के प्राणों से, और आप की पत्नियों उन की मातायें हैं। और समीपवर्ती संबन्धी एक दूसरे से अधिक समीप हैं, अल्लाह के लेख में ईमान वालों और मुहाजिरों से। परन्तु यह कि करते रहो अपने मित्रों के साथ भलाई, और यह पुस्तक में लिखा हुआ है।
7. तथा (याद करो) जब हम ने नबियों से उन का वचन लिया तथा आप से और नूह तथा इब्राहीम और मूसा तथा मरयम के पुत्र ईसा से, और हम ने लिया उन से दृढ़ वचन।
8. ताकि वह प्रश्न करे सच्चों से उन के सच्च के संबंध में तथा तय्यार की है काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना।
9. हे ईमान वालो! याद करो अल्लाह के पुरस्कार को अपने ऊपर जब आ गई तुम्हारे पास जत्थे, तो भेजी हम ने उन पर आँधी और ऐसी सेनायें जिन को तुम ने नहीं देखा, और अल्लाह जो तुम कर रहे थे उसे देख रहा था।
10. जब वह तुम्हारे पास आ गये तुम्हारे ऊपर से तथा तुम्हारे नीचे से और जब पत्थरा गई आँखें, तथा आने लगे दिल मुँह को तथा तुम विचारने लगे अल्लाह के संबंध में विभिन्न विचार।
11. यही परीक्षा ली गई ईमान वालों की और वह झंझोड़ दिये गये पूर्ण रूप से।
12. और जब कहने लगे मुशरिक और जिन के दिलों में कुछ रोग था कि अल्लाह तथा उस के रसूल ने नहीं वचन दिया हमें परन्तु धोखे का।
13. और जब कहा उन के एक गिरोह ने: हे यस्रिब वालो! कोई स्थान नहीं है तुम्हारे लिये, अतः लौट चलो। तथा अनुमति माँगने लगा उन में से एक गिरोह नबी से, कहने लगा: हमारे घर खाली है, जब कि वह खाली न थे। वह तो बस निश्चय कर रहे थे भाग जाने का।
14. और यदि प्रवेश कर जाती उन पर मदीने के चारों ओर से (सेनायें) फिर उन से माँग की जाती उपद्रव की तो अवश्य उपद्रव कर देते। और उस में तनिक भी देर नहीं करते।
15. जब कि उन्होंने ने वचन दिया था

- अल्लाह को इस से पूर्व कि पीछा नहीं दिखायेंगे और अल्लाह के वचन का प्रश्न अवश्य किया जायेगा।
16. आप कह दें: कदापि लाभ नहीं पहुँचायेगा तुम्हें भागना यदि तुम भाग जाओ मरण से या मारे जाने से। और तब तुम थोड़ा ही लाभ प्राप्त कर सकोगे।
17. आप पूछिये कि वह कौन है जो तुम्हें बचा सके अल्लाह से यदि वह तुम्हारे साथ बुराई चाहे अथवा तुम्हारे साथ भलाई चाहे? और वह अपने लिये नहीं पायेंगे अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक और न कोई सहायक।
18. जानता है अल्लाह जो रोकने वाले है तुम में से तथा कहने वाले है अपने भाईयों से कि हमारे पास चले आओ, तथा नहीं आते है युद्ध में परन्तु कभी कभी।
19. वह बड़े कंजूस है तुम पर। फिर जब आजाये भय का समय, तो आप उन्हें देखेंगे कि आप की ओर तक रहे हैं फिर रही है उन की आँखें, उस के समान जो मरणासन्न दशा में हो, और जब दूर हो जाये भय तो वह मिलेंगे तुम से तेज़ जुबानों से बड़े लोभी हो कर धन को। वह ईमान नहीं लाये हैं। अतः व्यर्थ कर दिये अल्लाह ने उन के सभी कर्म, तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।
20. वह समझते है कि जत्थे नहीं गये और यदि आ जायें सेनायें तो वह चाहेंगे कि वह गाँव में हों, गाँव वालों के बीच तथा पूछते रहें तुम्हारे समाचार, और यदि तुम में होते भी तो वह युद्ध में कम ही भाग लेते।
21. तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है, उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) की, तथा याद करे अल्लाह को अत्यधिक।
22. और जब ईमान वालों ने सेनायें देखीं तो कहा: यही है जिस का वचन दिया था हमें अल्लाह और उस के रसूल ने। और सच्च कहा अल्लाह तथा उस के रसूल ने और इस ने नहीं अधिक किया परन्तु (उन के) ईमान तथा स्वीकार को।
23. ईमान वालों में कुछ वह भी है जिन्होंने सच्च कर दिखाया अल्लाह से किये हुये अपने वचन को। तो उन में कुछ ने अपना वचन पूरा कर दिया, और उन में से कुछ प्रतीक्षा कर रहे हैं। और उन्होंने तनिक भी परिवर्तन नहीं किया।
24. ताकि अल्लाह प्रतिफल प्रदान करे सच्चों को उन के सच्च का। तथा यातना दे मुनाफ़िकों को अथवा उन को क्षमा कर दे। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील और दयावान् है।
25. तथा फेर दिया अल्लाह ने काफ़िरों को (मदीना से) उन के क्रोध के साथ। वह नहीं प्राप्त कर सके कोई भलाई। और पर्याप्त हो गया अल्लाह ईमान वालों के लिये युद्ध में। और अल्लाह अति शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली है।
26. और उतार दिया अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने सहायता की उन (सेनाओं) की उन के दुर्गों से। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय। उन के एक गिरोह को तुम बध कर

रहे थे तथा बंदी बना रहे थे एक दूसरे गिरोह को।

27. और तुम्हारे अधिकार में दे दी उन की भूमी, तथा उन के घरों और धनों को, और ऐसी धरती को जिस पर तुम ने पग नहीं रखे थे। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
28. हे नबी! आप अपनी पत्नियों से कह दें कि यदि तुम चाहती हो संसारिक जीवन तथा उस की शोभा तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दूँ तथा विदा कर दूँ

अच्छाई के साथ।

29. और यदि तुम चाहती हो अल्लाह और उस के रसूल तथा आखिरत के घर को तो अल्लाह ने तय्यार कर रखा है तुम में से सदाचारिणियों के लिये भारी प्रतिफल
30. हे नबी की पत्नियों! जो तुम में से खुला दुराचार करेगी उस के लिये दुगनी कर दी जायेगी यातना और यह अल्लाह पर अति सरल है।



31. तथा जो मानेंगे तुम में से अल्लाह तथा उस के रसूल की बात और सदाचार करेंगी हम उन्हें प्रदान करेंगे उन का प्रतिफल दोहरा। और हम ने तय्यार की है उन के लिये उत्तम जीविका।
32. हे नबी की पत्नियों! तुम नहीं हो अन्य स्त्रियों के समान। यदि तुम अल्लाह से डरती हो तो कोमल भाव से बात न करो, कि लोभ करने लगे वह जिस के दिल में रोग हो और सभ्य बात बोलो।
33. और रहो अपने घरों में, और सौन्दर्य का प्रदर्शन न करो प्रथम अज्ञान युग के प्रदर्शन के समान। तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो तथा आज्ञा पालन करो अल्लाह और उस के रसूल की। अल्लाह चाहता है कि मलिनता को दूर कर दे तुम से, हे नबी के घर वालियों! तथा तुम्हें पवित्र कर दे अति पवित्र।
34. तथा याद रखो उसे जो पढ़ी जाती है तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें तथा हिक्मत। वास्तव में अल्लाह सूक्ष्मदर्शी सर्व सूचित है।
35. निःसंदेह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ तथा ईमान वाली स्त्रियाँ तथा आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ, तथा सच्चे पुरुष तथा सच्ची स्त्रियाँ तथा सहनशील पुरुष और सहनशील स्त्रियाँ तथा विनीत पुरुष और विनीत स्त्रियाँ तथा दानशील पुरुष और दानशील स्त्रियाँ तथा रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियाँ तथा अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले पुरुष तथा रक्षा करने वाली स्त्रियाँ, तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करने वाले पुरुष और याद करने वाली स्त्रियाँ, तय्यार कर रखा है अल्लाह ने इन्हीं के लिये क्षमा तथा महान् प्रतिफल।
36. तथा किसी ईमान वाले पुरुष और किसी ईमान वाली स्त्री के लिये योग्य नहीं है कि जब निर्णय कर दे अल्लाह तथा उस के रसूल किसी बात का तो उन के लिये अधिकार रह जाये अपने विषय में। और जो अवैज्ञा करेगा अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह खुले कुपथ में पड़ गया।
37. तथा (हे नबी!) आप वह समय याद करें जब आप उस से कह रहे थे उपकार किया अल्लाह ने जिस पर तथा आप ने उपकार किया जिस पर, रोक ले अपनी पत्नी को तथा अल्लाह से डर, और आप छुपा रहे थे अपने मन में जिसे अल्लाह उजागर करने वाला था, तथा डर रहे थे तुम लोगों से, जब कि अल्लाह अधिक योग्य था कि उस से डरते, तो जब ज़ैद ने पूरी कर ली उस (स्त्री) से अपनी अवश्यक्ता तो हम ने विवाह दिया उस को आप से, ताकि ईमान वालों पर कोई दोष न रहे अपने मुँह बोले पुत्रों की पत्नियों के विषय में जब वह पूरी कर लें उन से अपनी आवश्यकता। तथा अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।
38. नहीं है नबी पर कोई तंगी उस में जिस का आदेश दिया है अल्लाह ने उन के लिये। अल्लाह का यही नियम रहा है उन नबियों में जो हुये हैं आप से पहले। तथा अल्लाह का निश्चित

किया आदेश पूरा होना ही है।

39. जो पहुँचाते हैं अल्लाह के आदेश तथा उस से डरते हैं, वह नहीं डरते हैं किसी से उस के सिवा। और पर्याप्त है अल्लाह हिसाब लेने के लिये।
40. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं। किन्तु वह अल्लाह के रसूल और सब नबियों में अन्तिम हैं। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।
41. हे ईमान वालो! याद करते रहो अल्लाह को अत्यधिक।
42. तथा पवित्रता बयान करते रहो उस की प्रातः तथा संध्या।
43. वही है जो दया कर रहा है तुम पर तथा प्रार्थना कर रहे हैं (तुम्हारे लिये) उस के फरिश्ते। ताकि वह निकाल दे तुम को अंधेरो से प्रकाश की ओर। तथा ईमान वालों पर अत्यंत दयावान् है।
44. उन का स्वागत जिस दिन उस से मिलेंगे सलाम से होगा। और उस ने तय्यार कर रखा है उन के लिये सम्मानित प्रतिफल।
45. हे नबी! हम ने भेजा है आप को साक्षी तथा शुभसूचक और सचेत कर्ता बना कर।
46. तथा बुलाने वाला बना कर अल्लाह की ओर उस की अनुमति से, तथा प्रकाशित प्रदीप बना कर।
47. तथा आप शुभसूचना सुना दें ईमान वालों को कि उन के लिये अल्लाह की ओर से बड़ा अनुग्रह है।

48. तथा न बात मानें काफ़िरोँ और मुनाफ़िकों की, तथा न चिन्ता करें उन के दुःख पहुँचाने की और भरोसा करें अल्लाह पर। तथा पर्याप्त है अल्लाह काम बनाने के लिये।
49. हे ईमान वालो! जब तुम विवाह करो ईमान वालियों से फिर तलाक़ दो उन्हें इस से पूर्व कि हाथ लगाओ उन को तो नहीं है तुम्हारे लिये उन पर कोई इद्दत जिस की तुम गणना करो। तो तुम उन्हें कुछ लाभ पहुँचाओ, और उन्हें विदा करो भलाई के साथ।
50. हे नबी! हम ने हलाल (वैध) कर दिया है आप के लिये आप की पत्नियों को जिन्हें चुका दिया हो आप ने उन का महर (विवाह उपहार), तथा जो आप के स्वामित्व में हों उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने आप को, तथा आप के चाचा की पुत्रियों और आप की फूफी की पुत्रियों तथा आप के मामा की पुत्रियों तथा मौसी की पुत्रियों को, जिन्होंने हिजरत की है आप के साथ, तथा किसी भी ईमान वाली नारी को यदि वह स्वयं को दान कर दे नबी के लिये, यदि नबी चाहें कि उस से विवाह कर लें। यह विशेष है आप के लिये अन्य ईमान वालों को छोड़ कर। हमें ज्ञान है उस का जो हम ने अनिवार्य किया है उन पर उन की पत्नियों तथा उन के स्वामित्व में आयी दासियों के संबंध में। ताकि तुम पर कोई संकीर्णता (तंगी) न हो। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

51. (आप को अधिकार है कि) जिसे आप चाहें अलग रखें अपनी पत्नियों में से, और अपने साथ रखें जिसे चाहें और

जिसे आप चाहें बुला लें उन में से जिसे अलग किया है। आप पर कोई दोष नहीं है। इस प्रकार अधिक आशा है कि उन की आँखें शीतल हों, और वह उदासीन न हों तथा प्रसन्न रहें उस से जो आप उन सब को दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील है।

52. (हे नबी!) नहीं हलाल (वैध) है आप के लिये पत्नियों इस के पश्चात्, और न यह कि आप बदलें उन को दूसरी पत्नियों से यद्यपि आप को भाये उन का सौन्दर्य। परन्तु जो दासी आप के स्वामित्व में आ जाये तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु का (पूर्ण) रक्षक है।
53. हे ईमान वालो! मत प्रवेश करो नबी के घरों में परन्तु यह कि अनुमति दी जाये तुम को भोज के लिये। परन्तु भोजन पकने की प्रतिक्षा न करते रहो। किन्तु जब तुम बुलाये जाओ तो प्रवेश करो, फिर जब भोजन कर लो तो निकल जाओ। लीन न रहो बातों में। वास्तव में इस से नबी को दुःख होता है, अतः वह तुम से लजाते हैं। और अल्लाह नहीं लजाता है सत्य से तथा जब तुम नबी की पत्नियों से कुछ माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो, यह अधिक पवित्रता का कारण है तुम्हारे दिलों तथा उन के दिलों के लिये। और तुम्हारे लिये उचित नहीं है कि नबी को दुःख दो, न यह कि विवाह करो उन की पत्नियों से आप के पश्चात् कभी भी। वास्तव में यह अल्लाह के समीप महा (पाप) है।

54. यदि तुम कुछ बोलो अथवा उसे मन

में रखो तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अत्यंत ज्ञानी है।

55. कोई दोष नहीं है उन (स्त्रियों) पर अपने पिताओं, न अपने पुत्रों एवं भाईयों और न भतीजों तथा न अपनी (मेल-जोल की) स्त्रियों और न अपने स्वामित्व (दासी तथा दास) के सामने होने में, यदि वह अल्लाह से डरती रहें। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।
56. अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर। हे ईमान वालो! उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
57. जो लोग दुःख देते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल को तो अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है लोक तथा परलोक में। और तय्यार की है उन के लिये अपमानकारी यातना।
58. और जो दुःख देते हैं ईमान वालों तथा ईमान वालियों को बिना किसी दोष के जो उन्होंने न किया हो, तो उन्होंने न लाद लिया आरोप तथा खुले पाप को।
59. हे नबी! कह दो अपनी पत्नियों से तथा अपनी पुत्रियों एवं ईमान वालों की स्त्रियों से कि डाल लिया करें अपने ऊपर अपनी चादरें। यह अधिक समीप है कि वह पहचान ली जायें। फिर उन्हें दुःख न दिया जाये। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
60. यदि न रुके मुनाफिक तथा जिन के दिलों में रोग है और मदीना में अफ्वाह फैलाने वाले तो हम आप को भड़का देंगे उन पर। फिर वह आप के साथ नहीं रह सकेंगे उस में परन्तु कुछ ही दिन।

61. धिक्कारे हुये। वे जहाँ पाये जायें पकड़ लिये जायेंगे तथा जान से मार दिये जायेंगे।
62. यही अल्लाह का नियम रहा है उन में जो इन से पूर्व रहे। तथा आप कदापि नहीं पायेंगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।
63. प्रश्न करते हैं आप से लोग प्रलय के विषय में। तो आप कह दें कि उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। संभव है कि प्रलय समीप हो।
64. अल्लाह ने धिक्कार दिया है काफ़िरों को। और तय्यार कर रखी है उन के लिये दहकती अग्नि।
65. वे सदावासी होंगे उस में। नहीं पायेंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक।
66. जिस दिन उलट पलट किये जायेंगे उन के मुख अग्नि में, वे कहेंगे: हमारे लिये क्या ही अच्छा होता की हम कहा मानते अल्लाह का तथा कहा मानते रसूल का।
67. तथा कहेंगे: हमारे पालनहार! हम ने कहा माना अपने प्रमुखों एवं बड़ों का। तो उन्होंने हमें कुपथ कर दिया सुपथ से।
68. हमारे पालनहार! उन्हें दुगुनी यातना दे। तथा उन्हें धिक्कार दे बड़ी धिक्कार।
69. हे ईमान वालो! न हो जाओ उन के समान जिन्होंने ने मूसा को दुःख दिया, तो अल्लाह ने निर्दोष कर दिया उसे उन की बनाई बातों से। और वह था अल्लाह के समक्ष सम्मानित।

70. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सहीह और सीधी बात बोलो।
71. वह सुधार देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्मों को, तथा क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और जो अनुपालन करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल का तो उस ने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।
72. हम ने प्रस्तुत किया अमानत को आकाशों तथा धरती एवं पर्वतों पर तो उन सब ने इन्कार कर दिया उन का भार उठाने से। तथा डर गये उस से। किन्तु उस का भार ले लिया मनुष्य ने। वास्तव में वह बड़ा अत्याचारी अज्ञान है।
73. (यह अमानत का भार इस लिये लिया है) ताकि अल्लाह दण्ड दे मुनाफ़िक पुरुष तथा मुनाफ़िक स्त्रियों को, और मुश्रिक पुरुष तथा स्त्रियों को। तथा क्षमा कर दे अल्लाह ईमान वालों तथा ईमान वालियों को और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

सूरह सबा - 34

सूरह सबा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 54 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस के अधिकार में है जो आकाशों तथा धरती में है। और उसी की प्रशंसा है आखिरत (परलोक) में। और वही उपाय जानने वाला सब से सूचित है।
2. वह जानता है जो कुछ घुसता है धरती के भीतर तथा जो निकलता

- है उस से, तथा जो उतरता है आकाश से और चढ़ता है उस में तथा वह अति दयावान् क्षमी है।
3. तथा कहा काफ़िरोँ ने कि हम पर प्रलय नहीं आयेगी। आप कह दें: क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! वह तुम पर अवश्य आयेगी जो परोक्ष का ज्ञानी है। नहीं छुपा रह सकता उस से कण बराबर (भी) आकाशों तथा धरती में, न उस से छोटी कोई चीज़ और न बड़ी किन्तु वह खुली पुस्तक में (अंकित) है।
 4. ताकि वह बदला दे उन को जो ईमान लाये तथा सुकर्म किये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।
 5. तथा जिन्होंने प्रयत्न किये हमारी आयतों में विवश करने का तो यही है जिन के लिये यातना है अति घोर दुःखदायी।
 6. तथा (साक्षात्) देख लेंगे जिन को उस का ज्ञान दिया गया है जो अवतरित किया गया है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से। वही सत्य है, तथा सुपथ दर्शाता है, अति प्रभुत्वशाली प्रशंसित का सुपथ।
 7. तथा काफ़िरोँ ने कहा: क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति को बतायें जो तुम्हें सूचना देता है कि जब तुम पूर्णतः चूर-चूर हो जाओगे तो अवश्य तुम एक नई उतपत्ति में होगे?
 8. उस ने बना ली है अल्लाह पर एक मिथ्या बात, अथवा वह पागल हो गया है। बल्कि जो विश्वास (ईमान) नहीं रखते आखिरत (परलोक) पर, वह यातना तथा दूर के कुपथ में है।
 9. क्या उन्हीं ने नहीं देखा उस की ओर जो उन के आगे तथा उन के पीछे आकाश और धरती है। यदि हम चाहें तो धंसा दें उन के सहित धरती को अथवा गिरा दें उन पर कोई खण्ड आकाश से। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है प्रत्येक भक्त के लिये जो ध्यानमग्न हो।
 10. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को अपना कुछ अनुग्रह। हे पर्वतों! सरसि महिमा गान करो उस के साथ, तथा हे पक्षियों! तथा हम ने कोमल कर दिया उस के लिये लोहा को।
 11. कि बनाओ भरपूर कवचें तथा अनुमति रखो उस की कड़ियों को, तथा सदाचार करो। जो कुछ तुम कर रहे हो उसे मैं देख रहा हूँ।
 12. तथा (हम ने वश में कर दिया) सुलैमान के लिये वायु को। उस का प्रातः चलना एक महीने का तथा संध्या का चलना एक महीने का होता था। तथा हम ने बहा दिये उस के लिये तांबे के स्रोत। तथा कुछ जिब्र कार्यारत थे उस के समक्ष उस के पालनहार की अनुमति से। तथा उन में से जो फिरेगा हमारे आदेश से तो हम चखायेंगे उसे भड़कती अग्नि की यातना।
 13. वह बनाते थे उस के लिये जो वह चाहता था भवन (मस्जिदें) और चित्र तथा बड़े लगन जलाशयों (तालाबों) के समान तथा भारी देगें जो हिल न सकें। हे दावूद के परिजनो! कर्म करो कृतज्ञ हो कर, और मेरे भक्तों में थोड़े ही कृतज्ञ होते हैं।

14. फिर जब हम ने उस (सुलैमान) पर मौत का निर्णय कर दिया तो जिब्रों को उन के मरण पर एक घुन के सिवा किसी ने सूचित नहीं किया जो उस की छड़ी खा रहा था। फिर जब वह गिर गया तो जिब्रों पर यह बात खुली कि यदि वे परोक्ष का ज्ञान रखते तो इस अपमान कारी यातना में नहीं पड़े रहते।
15. सब्रा की जाति के लिये उन की बस्तियों में एक निशानी थी: बाग़ थे दायें और बायें। खाओ अपने पालनहार का दिया हुआ, और उस के कृतज्ञ रहो। स्वच्छ नगर है तथा अति क्षमी पालनहार।
16. परन्तु उन्होंने मुँह फेर लिया तो भेज दी हम ने उन पर बांध तोड़ बाढ़। तथा बदल दिया हम ने उन के दो बागों को दो कड़वे फलों के बागों और झाऊ तथा कुछ बैरी से।
17. यह कुफल दिया हम ने उन के कृतघ्न होने के कारण। तथा हम कृतघ्नों ही को कुफल दिया करते हैं।
18. और हम ने बना दी थी उन के बीच तथा उन की बस्तियों के बीच जिस में हम ने समपन्नता प्रदान की थी खुली बस्तियाँ तथा नियत कर दिया था उन में चलने का स्थान (कि) चलो उस में रात्रि तथा दिनों के समय शान्त हो कर।
19. तो उन्होंने कहा: हे हमारे पालनहार! दूरी कर दे हमारी यात्राओं के बीच। तथा उन्होंने अत्याचार किया अपने ऊपर। अंततः हम ने उन्हें कहानियाँ बना दिया, और तित्तर
- बित्तर कर दिया। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (शिक्षायें) हैं प्रत्येक अति धैर्यवान कृतज्ञ के लिये।
20. तथा सच्च कर दिया इब्लीस ने उन पर अपना अंकलन। तो उन्होंने अनुसरण किया उस का एक समुदाय को छोड़ कर ईमान वालों के।
21. और नहीं था उस का उन पर कुछ अधिकार (दबाव) किन्तु ताकि हम जान लें कि कौन ईमान रखता है आखिरत (परलोक) पर उन में से जो उस के विषय में किसी संदेह में है। तथा आप का पालनहार प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।
22. आप कह दें: उन (पूज्यों) को पुकारो जिन को तुम समझते हो अल्लाह के सिवा। वह नहीं अधिकार रखते कण बराबर भी आकाशों में न धरती में। तथा नहीं है उन का उन दोनों में कोई भाग। और नहीं है उस अल्लाह का उन में से कोई सहायक।
23. तथा नहीं लाभ देगी अभिस्तावना (सिफ़ारिश) अल्लाह के पास परन्तु जिस के लिये अनुमति देगा। यहाँ तक कि जब दूर कर दिया जाता है उद्वेग उन के दिलों से तो वह (फरिश्ते) कहते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा? वे कहते हैं कि सत्य कहा। तथा वह अति उच्च महान् है।
24. आप (मुश्रिकों) से प्रश्न करें कि कौन जीविका प्रदान करता है तुम्हें आकाशों तथा धरती से? आप कह दें कि अल्लाह। तथा हम अथवा तुम अवश्य सुपथ पर हैं अथवा खुले

कुपथ में है।

25. आप कह दें: तुम से नहीं प्रश्न किया जायेगा हमारे अपराधों के विषय में, और न हम से प्रश्न किया जायेगा तुम्हारे कर्मों के संबंध में।
26. आप कह दें कि एकत्रित कर देगा हमें हमारा पालनहार। फिर निर्णय कर देगा हमारे बीच सत्य के साथ। तथा वही अति निर्णय कारी सर्वज्ञ है।
27. आप कह दें कि तनिक मुझे उन को दिखा दो जिन को तुम ने मिला दिया है अल्लाह के साथ साझी बना कर? ऐसा कदापि नहीं। बल्कि वही अल्लाह है अत्यंत प्रभावशाली तथा गुणी।
28. तथा नहीं भेजा है हम ने आप को परन्तु सब मनुष्यों के लिये शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला बनाकर। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।
29. तथा वह कहते हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो।
30. आप उन से कह दें कि एक दिन वचन का निश्चित है। वे नहीं पीछे होंगे उस से क्षण भर और न आगे होंगे।
31. तथा काफिरों ने कहा कि हम कदापि ईमान नहीं लायेंगे इस कुर्आन पर और न उस पर जो इस से पूर्व की पुस्तक है। और यदि आप देखेंगे इन अत्याचारियों को खड़े हुये अपने पालनहार के समक्ष तो वे दोषारोपण कर रहे होंगे एक दूसरे पर। जो निर्बल समझे जा रहे थे वे कहेंगे उन से जो बड़े बन रहे थे: यदि तुम न होते तो हम अवश्य ईमान लाने

वालों में होते।

32. वह कहेंगे जो बड़े बने हुये थे उन से जो निर्बल समझे जा रहे थे: क्या हम ने तुम्हें रोका सुपथ से जब वह तुम्हारे पास आया? बल्कि तुम ही अपराधी थे।
33. तथा कहेंगे जो निर्बल होंगे उन से जो बड़े (अहंकारी) होंगे: बल्कि रात-दिन के षडयंत्र ने, जब तुम हमें आदेश दे रहे थे कि हम कुफ़र करें अल्लाह के साथ तथा बनायें उस के साक्षी, तथा अपने मन में पछतायेंगे जब यातना देखेंगे। और हम तौक डाल देंगे उन के गलों में जो काफिर हो गये, वह नहीं बदला दिये जायेंगे परन्तु उसी का जो वह कर रहे थे।
34. और नहीं भेजा हम ने किसी बस्ती में कोई सचेतकर्ता (नबी) परन्तु कहा उस के सम्पन्न लोगों ने: हम जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो उसे नहीं मानते हैं।
35. तथा कहा कि हम अधिक हैं तुम से धन और संतान में। तथा हम यातना ग्रस्त होने वाले नहीं हैं।
36. आप कह दें कि वास्तव में मेरा पालनहार फैला देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है। और नाप कर देता है। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।
37. और तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान ऐसी नहीं है कि तुम्हें हमारे कुछ समीप कर दो। परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार करे तो यही है जिन

- के लिये दोहरा प्रतिफल हैं। और यही ऊँचे भवनों में शान्त रहने वाले हैं।
38. तथा जो प्रयास करते हैं हमारी आयतों में विवश करने के लिये तो वही यातना में ग्रस्त होंगे।
39. आप कह दें: मेरा पालनहार ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से। और तंग करता है उस के लिये। और जो भी तुम दान करोगे तो वह उस का पूरा बदला देगा। और वही उत्तम जीविका देने वाला है।
40. तथा जिस दिन एकत्र करेगा उन सब को, फिर कहेगा फ़रिश्तों से: क्या यही तुम्हारी इबादत (वंदना) कर रहे थे।
41. वह कहेंगे: तू पवित्र है! तू ही हमारा संरक्षक है न कि यहाँ बल्कि यह इबादत करते रहे जिन्नों की। इन में अधिकतर उन्हीं पर ईमान लाने वाले हैं।
42. तो आज तुम में से कोई एक-दूसरे को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का अधिकार नहीं रखेगा। तथा हम कह देंगे अत्याचारियों से कि तुम अग्नि की यातना चखो जिसे तुम झुठला रहे थे।
43. और जब सुनाई जाती हैं उन के समक्ष हमारी खुली आयतें तो कहते हैं: यह तो एक पुरुष है जो चाहता है कि तुम्हें रोक दे उन पुज्यों से जिन की इबादत करते रहे हैं तुम्हारे पूर्वज। तथा उन्होंने कहा कि यह तो बस एक झूठी बनायी हुयी बात है। तथा कहा काफ़िरों ने इस सत्य को कि यह तो बस एक प्रत्यक्ष (खुला) जादू है।
44. जब कि हम ने नहीं प्रदान की है इन (मक्का वासियों) को कोई पुस्तक जिसे वे पढ़ते हों। तथा न हम ने भेजा है इन की ओर आप से पहले कोई सचेत करने वाला।
45. तथा झुठलाया था इन से पूर्व के लोगों ने और नहीं पहुँचे यह उस के दसवें भाग को भी जो हम ने प्रदान किया था उन को। तो उन्होंने झुठला दिया मेरे रसूलों को अन्ततः मेरा इन्कार कैसा रहा?
46. आप कह दें कि मैं बस तुम्हें एक बात की नसीहत कर रहा हूँ कि तुम अल्लाह के लिये दो-दो तथा अकेले-अकेले खड़े हो जाओ। फिर सोचो! तुम्हारे साथी को कोई पागलपन नहीं है। वह तो बस सचेत करने वाले हैं तुम्हें आगामी कड़ी यातना से।
47. आप कह दें: मैं ने तुम से कोई बदला माँगा है तो वह तुम्हारे ही लिये है। मेरा बदला तो बस अल्लाह पर है। और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।
48. आप कह दें कि मेरा पालनहार वही करता है सत्य की। वह परोक्षों का अति ज्ञानी है।
49. आप कह दें कि सत्य आ गया। और असत्य न (कुछ का) आरंभ कर सकता है और न (उसे) पुनः ला सकता है।
50. आप कह दें कि यदि मैं कुपथ हो गया तो मेरे कुपथ होने का (भार) मुझ पर है। और यदि मैं सुपथ पर हूँ तो उस वही के कारण जिसे मेरी ओर मेरा पालनहार उतार रहा है। वह सब कुछ सुनने वाला, समीप है।

51. तथा यदि आप देखेंगे जब वह घबराये हुये होंगे तो उन के खो जाने का कोई उपाय न होगा। तथा पकड़ लिये जायेंगे समीप स्थान से।
52. और कहेंगे: हम उस पर ईमान लाये। तथा कहाँ हाथ आ सकता है उन के (ईमान) इतने दूर स्थान से?
53. जब कि उन्होंने कुफ़र कर दिया पहले उस के साथ। और तीर मारते रहे बिन देखे दूर से।
54. और रोक बना दी जायेगी उन के तथा उस के बीच जिस की वे कामना करेंगे जैसे किया गया इन के जैसों के साथ इस से पहले। वास्तव में वे संदेह में पड़े थे।

सूरह फातिर - 35

सूरह फातिर के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो उत्पन्न करने वाला है आकाशों तथा धरती का, (और) बनाने वाला है संदेशवाहक फरिश्तों को दो-दो तीन-तीन चार-चार परों वाला। वह अधिक करता है उत्पत्ति में जो चाहता है, निःसंदेह अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
2. जो खोल दे अल्लाह लोगों के लिये अपनी दया तो उसे कोई रोकने वाला नहीं। तथा जिसे रोक दे तो कोई खोलने वाला नहीं उस का उस

के पश्चात्। तथा वही प्रभावशाली चतुर है।

3. हे मनुष्यो! याद करो अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को, क्या कोई उत्पत्तिकर्ता है अल्लाह के सिवा जो तुम्हें जीविका प्रदान करता हो आकाश तथा धरती से? नहीं है कोई बंदनीय परन्तु वही। फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो।
4. और यदि वह आप को झुठलाते है, तो झुठलाये जा चुके हैं बहुत से रसूल आप से पहले। और अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे सब विषय।
5. हे लोगो! निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से अति प्रवंचक (शैतान)।
6. वास्तव में शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः तुम उसे अपना शत्रु ही समझो। वह बुलाता है अपने गिरोह को इसी लिये ताकि वह नारकियों में हो जायें।
7. जो काफिर हो गये उन्हीं के लिये कड़ी यातना है। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तो उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।
8. तथा क्या शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का कुकर्म, और वह उसे अच्छा समझता हो। तो अल्लाह की कुपथ करता है जिसे चाहे और सुपथ दिखाता है जिसे चाहे। अतः न खोयें आप अपना प्राण इन पर संताप के कारण। वास्तव में अल्लाह जानता है जो कुछ वे कर रहे हैं।
9. तथा अल्लाह वही है जो वायु को

भेजता है। जो बादलों को उठाती है, फिर हम हॉक देते हैं उसे निर्जीव नगर की ओर। फिर जीवित कर देते हैं उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्। इसी प्रकार फिर जीना (भी) होगा।

10. जो सम्मान चाहता हो तो अल्लाह ही के लिये है सब सम्मान। और उसी की ओर चढ़ते हैं पवित्र वाक्य। तथा सत्कर्म ही उन को ऊपर ले जाता है, तथा जो दाव घात में लगे रहते हैं बुराईयों की, तो उन्हीं के लिये कड़ी यातना है और उन्हीं के षड्यंत्र नाश हो जायेंगे।
11. अल्लाह ने उत्पन्न किया तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य से, फिर बनाये तुम को जोड़े। और नहीं गर्भ धारण करती कोई नारी और न जन्म देती परन्तु उस के ज्ञान से। और नहीं आयु दिया जाता कोई अधिक और न कम की जाती है उस की आयु परन्तु वह एक लेख में है। वास्तव में यह अल्लाह पर अति सरल है।
12. तथा बराबर नहीं होते दो सागर, यह मधुर प्यास बुझाने वाला है, रुचिकर है जिस का पीना। और वह (दूसरा) खारी कड़वा है, तथा प्रत्येक में से तुम खाते हो ताज़ा माँस, तथा निकालते हो आभूषण जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो नाव को उस में पानी फाड़ती हुई, ताकि तुम खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की। और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।
13. वह प्रवेश करता है रात को दिन में, तथा प्रवेश करता है दिन को रात्रि

में। तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चन्द्रा को, प्रत्येक चलते रहेंगे एक निश्चित समय तक। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है। उसी का राज्य है। तथा जिन को तुम पुकारते हो उस के सिवा वह स्वामी नहीं है एक तिनके के भी।

14. यदि तुम उन्हें पुकारते हो तो वह नहीं सुनते तुम्हारी पुकार को। और यदि सुन भी लें तो नहीं उत्तर दे सकते तुम्हें। और प्रलय के दिन वह नकार देंगे तुम्हारे शिर्क (साझी बनाने) को। और आप को कोई सूचना नहीं देगा सर्वसूचित जैसी।
15. हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह को तथा अल्लाह ही निश्चार्थ प्रशंसित है।
16. यदि वह चाहे तो तुम्हें ध्वस्त कर दे, और नई उत्पत्ति ला दे।
17. और यह नहीं है अल्लाह पर कुछ कठिन।
18. तथा नहीं लादेगा कोई लादने वाला दूसरे का बोझ अपने ऊपर। और यदि पुकारेगा कोई बोझल उसे लादने के लिये तो वह नहीं लादेगा उस में से कुछ. चाहे वह उस का समीपवर्ती ही क्यों न हो। आप तो बस उन्हीं को सचेत कर रहे हैं जो डरते हैं अपने पालनहार से बिन देखे। तथा जो स्थापना करते हैं नमाज़ की। तथा जो पवित्र हुआ तो वह पवित्र होगा अपने ही लाभ के लिये। और अल्लाह ही की ओर (सब को) जाना है।
19. तथा समान नहीं हो सकता अंधा तथा आँख वाला।
20. और न अंधकार तथा प्रकाश।

21. और न छाया तथा न धूप।
22. तथा समान नहीं हो सकते जीवित तथा निर्जीव। वास्तव में अल्लाह ही सुनाता है जिसे चाहता है। और आप नहीं सुना सकते जो कब्रों में हों।
23. आप तो बस सचेत कर्ता है।
24. वास्तव में हम ने आप को सत्य के साथ शुभसूचक तथा सचेतकर्ता बना कर भेजा है। और कोई ऐसा समुदाय नहीं जिस में कोई सचेत कर्ता न आया हो।
25. और यदि ये आप को झुठलायें तो इन से पूर्व लोगों ने भी झुठलाया है, जिन के पास हमारे रसूल खुले प्रमाण तथा ग्रंथ और प्रकाशित पुस्तकें लाये।
26. फिर मैं ने पकड़ लिया उन्हें जो काफिर हो गये। तो कैसा रहा मेरा इन्कार।
27. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने उतारा आकाश से जल, फिर हम ने निकाल दिये उस के द्वारा बहुत से फल विभिन्न रंगों के। तथा पर्वतों के विभिन्न भाग है श्वेत तथा लाल विभिन्न रंगों के तथा गहरे काले।
28. तथा मनुष्य एवं जीवों तथा पशुओं में भी विभिन्न रंगों के है इसी प्रकार। वास्तव में डरते है अल्लाह से उस के भक्तों में से वही जो ज्ञानी हों। निस्सदिह अल्लाह अति प्रभुत्वशाली क्षमी है।
29. वास्तव में जो पढ़ते है अल्लाह की पुस्तक (कुरआन), तथा उन्होंने स्थापना की नमाज़ की, एवं दान किया उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है खुले तथा छुपे तो वही

- आशा रखते है ऐसे व्यापार की जो कदापि हानिकर नहीं होगा।
30. ताकि अल्लाह प्रदान करे उन्हें भरपूर उन का प्रतिफल। तथा उन्हें अधिक दे अपने अनुग्रह से। वास्तव में वह अति क्षमी आदर करने वाला है।
31. तथा जो हम ने प्रकाशना की है आप की ओर यह पुस्तक। वही सर्वथा सच्च है, और सच्च बताती है अपने पूर्व की पुस्तकों को। वास्तव में अल्लाह अपने भक्तों से सूचित भली-भाँति देखने वाला है।
32. फिर हम ने उत्तरधिकारी बनाया इस पुस्तक का उन को जिन्हें हम ने चुन लिया अपने भक्तों में से। तो उन में कुछ अत्याचारी है अपने ही लिये तथा उन में से कुछ मध्यवर्ती है और कुछ अग्रसर है भलाईयों में अल्लाह की अनुमति से, तथा यही महान् अनुग्रह है।
33. सदावास के स्वर्ग है, वे प्रवेश करेंगे उन में और पहनाये जायेंगे उन में सोने के कंगन तथा मोती। और उन के वस्त्र उस में रेशम के होंगे।
34. तथा वे कहेंगे: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने दूर कर दिया हम से शोक। वास्तव में हमारा पालनहार अति क्षमी गुणग्राही है।
35. जिस ने हमें उतार दिया स्थायी घर में अपने अनुग्रह से। नहीं छूयेगी उस में हमें कोई आपदा और न छूयेगी उस में कोई थकान।
36. तथा जो काफिर है उन्हीं के लिये नरक की अग्नि है। न तो उन की मौत ही आयेगी कि वह मर जायें,

- और न हलकी की जायेगी उन से उस की कुछ यातना। इसी प्रकार हम बदला देते हैं प्रत्येक नाशुक्रे को।
37. और वह उस में चिल्लायेगे: हे हमारे पालनहार! हमें निकाल दे, हम सदाचार करेंगे उस के अतिरिक्त जो कर रहे थे। क्या हम ने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी जिस में शिक्षा ग्रहण कर ले जो शिक्षा ग्रहण करो। तथा आया तुम्हारे पास सचेतकर्ता (नबी)? अतः तुम चखो। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं है।
38. वास्तव में अल्लाह ही ज्ञानी है आकाशों तथा धरती के भेद का। वास्तव में वही भली-भौति जानने वाला है सीनों की बातों का।
39. वही है जिस ने तुम्हें एक दूसरे के पश्चात् बसाया है धरती में तो जो कुफ़्र करेगा तो उस के लिये है उस का कुफ़्र, और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरो के लिये उन का कुफ़्र उन के पालनहार के यहाँ परन्तु क्रोध ही, और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरो के लिये उन का कुफ़्र परन्तु क्षति ही।
40. (हे नबी!) उन से कहो: क्या तुम ने देखा है अपने साक्षियों को जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के अतिरिक्त? मुझे भी दिखाओ कि उन्होंने कितना भाग बनाया है धरती में से? या उन का आकाशों में कुछ साझा है? या हम ने प्रदान की है उन्हें कोई पुस्तक, तो यह उस के खुले प्रमाणों पर है? बल्कि (बात यह है कि) अत्याचारी एक-दूसरे को केवल धोखे का वचन दे रहे हैं।
41. अल्लाह ही रोकता है आकाशों तथा धरती को खिसक जाने से। और यदि खिसक जायें वे दोनों तो नहीं रोक सकेगा उन को कोई उस (अल्लाह) के पश्चात्। वास्तव में वह अत्यंत सहनशील क्षमाशील है।
42. और उन काफ़िरो ने शपथ ली थी अल्लाह की पक्की शपथ! कि यदि आ गया उन के पास कोई सचेतकर्ता (नबी) तो वह अवश्य हो जायेंगे सर्वाधिक संमार्ग पर समुदायों में से किसी एक से। फिर जब आ गये उन के पास एक रसूल तो उन की दूरी ही अधिक हुई।
43. अभिमान के कारण धरती में तथा बुरे षडयंत्र के कारण। और नहीं घेरता है बुरा षडयंत्र परन्तु अपने करने वाले ही को। तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं पूर्व के लोगों की नीति की? तो नहीं पायेंगे आप अल्लाह के नियम में कोई अन्तर।
44. और क्या वह नहीं चले-फिरे धरती में, तो देख लेते कि कैसा रहा उन का दुष्परिणाम जो इन से पूर्व रहे जब कि वह इन से कड़े थे बल में? तथा अल्लाह ऐसा नहीं, वास्तव में वह सर्वज्ञ अति सामर्थ्यवान है।
45. और यदि पकड़ने लगता अल्लाह लोगों को उन के कर्मों के कारण, तो नहीं छोड़ता धरती के ऊपर कोई जीव। किन्तु अवसर दे रहा है उन्हें एक निश्चित अवधि तक, फिर जब आजायेगा उन का निश्चित समय तो निश्चय अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा है।

सूरह यासीन - 36

सूरह यासीन के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 83 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. या सीन।
2. शपथ है सुदृढ़ कुर्आन की।
3. वस्तुतः आप रसूलों में से हैं।
4. सुपथ पर हैं।
5. (यह कुर्आन) प्रभुत्वशाली अति दयावान् का अवतरित किया हुआ है।
6. ताकि आप सावधान करें उस जाति को, नहीं सावधान किये गये हैं जिन के पूर्वज! इसलिये वह अचेत हैं।
7. सिद्ध हो चुका है वचन उन में से अधिकतर लोगों पर। अतः वह ईमान नहीं लायेंगे।
8. तथा हम ने डाल दिये हैं तौक उन के गलों में, जो हड्डियों तक हैं। इसलिये वह सिर ऊपर किये हुये हैं।
9. तथा हम ने बना दी है उन के आगे एक आड़ और उन के पीछे एक आड़। फिर ढाँक दिया है उन को, तो⁽³⁾ वह देख नहीं रहे हैं।
10. तथा समान है उन पर कि आप उन्हें सावधान करें अथवा सावधान न करें वह ईमान नहीं लायेंगे।
11. आप तो बस उसे सचेत कर सकेंगे जो माने इस शिक्षा (कुर्आन) को, तथा डरे अत्यंत कृपाशील से बिन देखें तो आप शुभसूचना सुना दें उसे क्षमा की तथा सम्मानित प्रतिफल की।
12. निश्चय हम ही जीवित करेंगे मुर्दा को, तथा लिख रहे हैं जो कर्म उन्होंने किया है और उन के पद चिन्हों को, तथा प्रत्येक वस्तु को हम ने गिन रखा है खुली पुस्तक में।
13. तथा आप उन को एक उदाहरण दीजिये नगर वासियों का। जब आये उस में कई रसूल।
14. जब हम ने भेजा उन की ओर दो को। तो उन्होंने ने झूठला दिया उन दोनों को। फिर हम ने समर्थन दिया तीसरे के द्वारा। तो तीनों ने कहा: हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।
15. उन्होंने कहा: तुम सब तो मनुष्य ही हो हमारे समान। और नहीं अवतरित किया है अत्यंत कृपाशील ने कुछ भी। तुम सब तो बस झूठ बोल रहे हो।
16. उन रसूलों ने कहा: हमारा पालनहार जानता है कि वास्तव में हम तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजे गये हैं।
17. तथा हमारा दायित्व नहीं है खुला उपदेश पहुँचा देने के सिवा।
18. उन्होंने कहा: हम तुम्हें अशुभ समझ रहे हैं। यदि तुम रुके नहीं तो हम तुम्हें अवश्य पथराव कर के मार डालेंगे। और तुम्हें अवश्य हमारी ओर से पहुँचेगी दुःखदायी यातना।
19. उन्होंने कहा: तुम्हारा अशुभ तुम्हारे साथ है। क्या यदि तुम्हें शिक्षा दी जाये (तो अशुभ समझते हो)? बल्कि

तुम उल्लंघन कारी जाति हो।

20. तथा आया नगर के अन्तिम किनारे
से एक पुरुष दौड़ता हुआ। उस
ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो!

अनुसरण करो रसूलों का।

21. अनुसरण करो उन का जो तुम से
नहीं माँगते कोई पारिश्रमिक (बदला)
तथा वह सुपथ पर हैं।



22. तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उस की इबादत (बंदना) न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया है? और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।
23. क्या मैं बना लूँ उस को छोड़ कर बहुत से पूज्य? यदि अत्यंत कृपाशील मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो नहीं लाभ पहुँचायेगी मुझे उन की अनुशंसा (सिफारिश) कुछ, और न वह मुझे बचा सकेंगे।
24. वास्तव में तब तो मैं खुले कुपथ में हूँ।
25. निश्चय मैं ईमान लाया तुम्हारे पालनहार पर, अतः मेरी सुनो।
26. (उस से) कहा गया: तुम प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में। उस ने कहा: काश मेरी जाति जानती।
27. जिस कारण क्षमा कर दिया मुझ को मेरे पालनहार ने और मुझे सम्मिलित कर दिया सम्मानितों में।
28. तथा हम ने नहीं उतारी उस की जाति पर उस के पश्चात् कोई सेना आकाश से। और न हमें उतारने की आवश्यकता थी।
29. वह तो बस एक कड़ी ध्वनि थी। फिर सहसा सब के सब बुझ गये।
30. हाये संताप है भक्तों पर! नहीं आया उन के पास रसूल परन्तु वे उस का उपहास करते रहे।
31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले विनाश कर दिया बहुत से समुदायों का वे उन की ओर दौबारा फिर कर नहीं आयेंगे।
32. तथा सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित किये जायेंगे।
33. तथा उन के लिये एक निशानी है निर्जीव (सूखी) धरती। जिसे हम ने जीवित कर दिया, और हम ने निकाले उस से अब, तो तुम उसी में से खाते हो।
34. तथा पैदा कर दिये उस में बाग खजूरों तथा अँगूरों के, और फाड़ दिये उस में जल स्रोत।
35. ताकि वह खाये उस के फल। और नहीं बनाया है उसे उन के हाथों ने। तो क्या वह कृतज्ञ नहीं होते?
36. पवित्र हे वह जिस ने पैदा किये प्रत्येक जोड़े उस के जिसे उगाती है धरती, तथा स्वयं उन कि अपनी जाति को और उस के जिसे तुम नहीं जानते हो।
37. तथा एक निशानी (चिन्ह) है उन के लिये रात्रि। खींच लेते हैं हम जिस से दिन को तो सहसा वह अँधेरो में हो जाते हैं।
38. तथा सूर्य चला जा रहा है अपने निर्धारित स्थान कि ओर। यह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञ का निर्धारित किया हुआ है।
39. तथा चन्द्रमा के हम ने निर्धारित कर दिये हैं गंतव्य स्थान। यहाँ तक की फिर वह हो जाता है पुरानी खजूर की सूखी शाखा के समान।
40. न तो सूर्य के लिये ही उचित है कि चन्द्रमा को पा जाये। और न रात अग्रगामी हो सकती है दिन से। सब एक मण्डल में तैर रहे हैं।

41. तथा उन के लिये एक निशानी (लक्षण) (यह भी) है कि हम ने सवार किया उन की संतान को भरी हुई नाव में।
42. तथा हम ने पैदा किया उन के लिये उस के समान वह चिज़ जिस पर वह सवार होते हैं।
43. और यदि हम चाहें तो उन्हें जलमग्न कर दें। तो न कोई सहायक होगा उन का, और न वह निकाले (बचाये) जायेंगे।
44. परन्तु हमारी दया से तथा लाभ देने के लिये एक समय तक।
45. और जब उन से कहा जाता है कि डरो उस (यातना) से जो तुम्हारे आगे तथा तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर दया की जाये।
46. तथा नहीं आती उन के पास कोई निशानी उन के पालनहार की निशानियों में से परन्तु वह उस से मंह फेर लेते हैं।
47. तथा जब उन से कहा जाता है कि दान करो उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने तुम को, तो कहते हैं जो काफ़िर हो गये उन से जो ईमान लाये हैं: क्या हम उसे खाना खिलायें जिसे यदि अल्लाह चाहे तो खिला सकता है? तुम तो खुले कुपथ में हो।
48. और वे कहते हैं कि कब यह (प्रलय) का वचन पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?
49. वह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु एक कड़ी ध्वनि की जो उन्हें पकड़ लेगी और वह झगड़ रहे होंगे।
50. तो न वह कोई वसियत कर सकेंगे, और न अपने परिजनों में वापिस आ सकेंगे।
51. तथा फूँका जायेगा सूर (नरसिंघा) में, तो वह सहसा समाधियों से अपने पालनहार की ओर भागते हुये चलने लगेंगे।
52. वह कहेंगे: हाय हमारा बिनाश! किस ने हमें जगा दिया हमारी विश्रामगृह से? यह वह है जिस का वचन दिया था अत्यंत कृपाशील ने, तथा सच्च कहा था रसूलों ने।
53. नहीं होगी वह परन्तु एक कड़ी ध्वनि। फिर सहसा वह सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित कर दिये जायेंगे।
54. तो आज नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी प्राणी पर कुछाँ और तुम्हें उसी का प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा जो तुम कर रहे थे।
55. वास्तव में स्वर्गीय आज अपने आनन्द में लगे हुये हैं।
56. वे तथा उन की पत्नियाँ सायों में हैं, मसूनों पर तकिये लगाये हुये।
57. उन के लिये उस में प्रत्येक प्रकार के फल हैं तथा उन के लिये वह है जिस की वह माँग करें।
58. (उन को) सलाम कहा गया है अति दयावान् पालनहार की ओर से।
59. तथा तुम अलग हो जाओ आज, हे

अपराधियो।

60. हे आदम की संतान! क्या मैं ने तुम से बल दे कर नहीं कहा था कि इबादत (बंदना) न करना शैतान की? वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
61. तथा इबादत (बंदना) करना मेरी ही, यही सीधी डगर है।
62. तथा वह कुपथ कर चुका है तुम में से बहुत से समुदायों को, तो क्या तुम समझते नहीं हो?
63. यही नरक है जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा था।
64. आज प्रवेश कर जाओ उस में उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।
65. आज हम मुहर (मुद्रा) लगा देंगे उन के मुखों पर। और हम से बात करेंगे उन के हाथ, तथा साक्ष्य (गवाही) देंगे उन के पैर उन के कर्मों की जो वे कर रहे थे।
66. और यदि हम चाहते तो उन की आँखें अँधी कर देते। फिर वे दोड़ते संमार्ग की ओर, परन्तु कहाँ से देखते?
67. और यदि हम चाहते तो विकृत कर देते उन को उन के स्थान पर, तो न वह आगे जा सकते थे न पीछे फिर सकते थे।
68. तथा जिसे हम अधिक आयु देते हैं, तो उसे उत्पत्ति में प्रथम दशा की ओर फेर देते हैं। तो क्या वह समझते नहीं हैं?
69. और हम ने नहीं सिखाया नबी को काव्य और न यह उन के लिये

योग्य है। यह तो मात्र एक शिक्षा तथा खुला कुर्आन है।

70. ताकि वह सचेत करें उसे जो जीवित हो तथा सिद्ध हो जाये यातना की बात काफ़िरों पर।
71. क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हम ने पैदा किये हैं उन के लिये उस में से जिसे बनाया है हमारे हाथों ने चौपायों। तो वह उन के स्वामी है?
72. तथा हम ने वश में कर दिया उन्हें उन के, तो उन में से कुछ उन की सवारी हैं। तथा उन में से कुछ को वे खाते हैं।
73. तथा उन के लिये उन में बहुत से लाभ तथा पेय हैं। तो क्या (फिर भी) वह कृतज्ञ नहीं होते?
74. और उन्होंने बना लिया अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, कि संभवतः वे उन की सहायता करेंगे।
75. वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे। तथा वे उन की सेना हैं, (यातना) में उपस्थित।
76. अतः आप को उदासीन न करे उन की बाता। वस्तुतः हम जानते हैं जो वह मन में रखते हैं तथा जो बोलते हैं।
77. और क्या नहीं देखा मनुष्य ने कि पैदा किया हम ने उसे वीर्य से? फिर भी वह खुला झगड़ालू है।
78. और उस ने वर्णन किया हमारे लिये एक उदाहरण, और अपनी उत्पत्ति को भूल गया। उस ने कहा: कौन जीवित करेगा इन अस्थियों को जब कि वह जीर्ण हो चुकी होंगी?
79. आप कह दें: वही जिस ने पैदा किया

- है प्रथम बार! और वह प्रत्येक उत्पत्ति को भली-भाँति जानने वाला है।
80. जिस ने बना दी तुम्हारे लिये हरे वृक्ष से अग्नि, तो तुम उस से आग सुलगाते हो।
81. तथा क्या जिस ने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है वह सामर्थ्य नहीं रखता इस पर कि पैदा करे उस के समान? क्यों नहीं? और वह रचयिता अति ज्ञाता है।
82. उस का आदेश जब वह किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करना चाहे तो बस यह कह देना है: हो जा। तत्क्षण वह हो जाती है।
83. तो पवित्र है वह जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है, और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।

सूरह साफ़ात - 37

सूरह साफ़ात के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 182 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है पंक्तिवद्ध (फरिश्तों) की!
2. फिर झिड़कियाँ देने वालों की।
3. फिर स्मरण करके पढ़ने वालों की।
4. निश्चय तुम्हारा पूज्य एक ही है।
5. आकाशों तथा धरती का पालनहार, तथा जो कुछ उन के मध्य है, और सूर्योदय होने के स्थानों का रब।
6. हम ने अलंकृत किया है संसार (समीप)

- के आकाश को तारों की शोभा से।
7. तथा रक्षा करने के लिये प्रत्येक उध्दत शैतान से।
 8. वह नहीं सुन सकते (जा कर) उच्च सभा तक फरिश्तों की बात, तथा मारे जाते हैं प्रत्येक दिशा से।
 9. रॉदने के लिये, तथा उन के लिये स्थायी यातना है।
 10. परन्तु जो ले उड़े कुछ तो पीछा करती है उस का दहकती ज्वाला।
 11. तो आप इन (काफिरों) से प्रश्न करें कि क्या उन को पैदा करना अधिक कठिन है या जिन को हम ने पैदा किया है? हम ने उन को पैदा किया है लेसदार मिट्टी से।
 12. बल्कि आप ने आश्चर्य किया (उन के अस्वीकार पर) तथा वह उपहास करते हैं।
 13. और जब शिक्षा दी जाये तो शिक्षा ग्रहण नहीं करते।
 14. और जब देखते हैं कोई निशानी तो उपहास करने लगते हैं।
 15. तथा कहते हैं कि यह तो मात्र खुला जादू है।
 16. (कहते हैं कि) क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और हड्डियाँ हो जायेंगे, तो हम निश्चय पुनः जीवित किये जायेंगे?
 17. और क्या हमारे पहले पूर्वज भी (जीवित किये जायेंगे)?
 18. आप कह दें कि हाँ, तथा तुम अपमानित (भी) होगे।

19. वह तो बस एक झिड़की होगी, फिर सहसा वह देख रहे होंगे।
20. तथा कहेंगे: हाय हमारा विनाश! यह तो बदले (प्रलय) का दिन है।
21. यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठला रहे थे।
22. (आदेश होगा कि) घेर लाओ सब अत्याचारियों को तथा उन के साथियों को और जिस की वे इबादत (बंदना) कर रहे थे।
23. अल्लाह के सिवा। फिर दिखा दो उन को नरक की राह।
24. और उन्हें रोक लो। उन से प्रश्न किया जाये।
25. क्या हो गया है तुम्हें कि एक-दूसरे की सहायता नहीं करते?
26. बल्कि वह उस दिन सिर झुकाये खड़े होंगे।
27. और एक-दूसरे के सम्मुख हो कर परस्पर प्रश्न करेंगे:
28. कहेंगे कि तुम हमारे पास आया करते थे दार्ये से।
29. वह कहेंगे: बल्कि तुम स्वयं ईमान वाले न थे।
30. तथा नहीं था हमारा तुम पर कोई अधिकार, बल्कि तुम स्वयं अवैज्ञाकारी थे।
31. तो सिद्ध हो गया हम पर हमारे पालनहार का कथन कि हम (यातना) चखने वाले हैं।
32. तो हम ने तुम्हें कुपथ कर दिया। हम तो स्वयं कुपथ थे।
33. फिर वह सभी उस दिन यातना में साझी होंगे।
34. हम इसी प्रकार किया करते हैं अपराधियों के साथ।
35. यह वह है कि जब कहा जाता था उन से कि कोई पूज्य (बंदनीय) नहीं अल्लाह के अतिरिक्त तो वह अभिमान करते थे।
36. तथा कह रहे थे: क्या हम त्याग देने वाले हैं अपने पूज्यों को एक उन्मत्त कवि के कारण?
37. बल्कि वह (नबी) सच्च लाये हैं तथा पुष्टि की है सब रसूलों की।
38. निश्चय तुम दुःखदायी यातना चखने वाले हो।
39. तथा तुम उस का प्रतिकार (बदला) दिये जाओगे जो तुम कर रहे थे।
40. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्ता।
41. यही है जिन के लिये विदित जीविका है।
42. प्रत्येक प्रकार के फल तथा वही आदरणीय होंगे।
43. सुख के स्वर्गों में।
44. आसनों पर एक-दूसरे के सम्मुख असीन होंगे।
45. फिराये जायेंगे उन पर प्याले प्रवाहित पेय के।
46. श्वेत आस्वाद पीने वालों के लिये।
47. नहीं होगी उस में शारिरिक पीड़ा और न वह उस से बहकेंगे।

48. तथा उन के पास आँखें झुकाये (सति) बड़ी आँखों वाली (नारियाँ) होंगी।
49. वह छुपाये हुये अन्डों के मानिन्द होंगी।
50. वह एक - दूसरे से सम्मुख हो कर प्रश्न करेंगे।
51. तो कहेगा एक कहने वाला उन में से: मेरा एक साथी था।
52. जो कहता था कि क्या तुम (प्रलय का) विश्वास करने वालों में से हो?
53. क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और अस्थियाँ हो जायेंगे तो क्या हमें (कर्माँ का) प्रतिफल दिया जायेगा।
54. वह कहेगा: क्या तुम झाँक कर देखने वाले हो?
55. फिर झाँकते ही उसे देख लेगा नरक के बीच।
56. उस से कहेगा: अल्लाह की शपथ! तुम तो मेरा बिनाश कर देने के समीप थे।
57. और यदि मेरे पालनहार का अनुग्रह न होता तो मैं (नरक के) उपस्थितों में होता।
58. फिर वह कहेगा: क्या (यह सहीह नहीं है कि) हम मरने वाले नहीं हैं?
59. सिवाये अपनी प्रथम मौत के और न हम को यातना दी जायेगी।
60. वास्तव में यही बड़ी सफलता है।
61. इसी (जैसी सफलता) के लिये चाहिये कि कर्म करें कर्म करने वाले।
62. क्या यह आतिथ्य उत्तम है अथवा थोहड़ का वृक्ष?
63. हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।
64. वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़ (तह) से निकलता है।
65. उस के गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।
66. तो वह (नरकवासी) खाने वाले हैं उस से। फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।
67. फिर उन के लिये उस के ऊपर से खौलता गरम पानी है।
68. फिर उन्हें प्रत्यागत होना है नरक की ओर।
69. वास्तव में उन्होंने पाया अपने पूर्वजों को कुपथ।
70. फिर वह उन्हीं के पदचिन्हों पर दौड़े चले जा रहे हैं।
71. और कुपथ हो चुके हैं इन से पूर्व अगले लोगों में से अधिकतर।
72. तथा हम भेज चुके हैं उन में सचेत (सावधान) करने वाले।
73. तो देखो कि कैसा रहा सावधान किये हुये लोगों का परिणाम?
74. हमारे शुद्ध भक्तों के सिवा।
75. तथा हमें पुकारा नूह ने तो हम क्या ही अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं।
76. और हम ने बचा लिया उस को और उस के परिजनों को घोर आपदा से।
77. तथा कर दिया हम ने उस की संतति को शेष रह जाने वालों में।
78. तथा शेष रखा हम ने उस की

- सराहना तथा प्रशंसा को पिछलों में।
79. सलाम (सुरक्षा) है नूह के लिये समस्त विश्ववासियों में।
80. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
81. वास्तव में वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।
82. फिर हम ने जलमग्न कर दिया दूसरों को।
83. और उस के अनुयायियों में निश्चय इब्राहीम है।
84. जब लाया वह अपने पालनहार के पास स्वच्छ दिल।
85. जब कहा उस ने अपने पिता तथा अपनी जाती से: तुम किस की इबादत (वंदना) कर रहे हो?
86. क्या अपने बनाये पूज्यों को अल्लाह के सिवा चाहते हो?
87. तो तुम्हारा क्या विचार है विश्व के पालनहार के विषय में?
88. फिर उस ने देखा तारों की ओर।
89. तथा उन से कहा: मैं रोगी हूँ।
90. तो उसे छोड़ कर चले गये।
91. फिर वह जा पहुँचा उन के उपास्यों (पूज्यों) की ओर। कहा कि (वह प्रसाद) क्यों नहीं खाते?
92. तुम्हें क्या हुआ है कि बोलते नहीं?
93. फिर पिल पड़ा उन पर मारते हुये दायें हाथ से।
94. तो वह आये उस की ओर दौड़ते हुये।
95. इब्राहीम ने कहा: क्या तुम इबादत (वंदना) करते हो उस की जिसे पत्थरों से तराशते हो?
96. जब कि अल्लाह ने पैदा किया है तुम को तथा जो तुम करते हो।
97. उन्होंने कहा: इस के लिये एक (अग्निशाला का) निर्माण करो। और उसे झोंक दो दहकती अग्नि में।
98. तो उन्होंने उस के साथ षड्यंत्र रचा, तो हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।
99. तथा उस ने कहा: मैं जाने वाला हूँ अपने पालन हार की⁽¹⁾ ओर। वह मुझे सुपथ दर्शायेगा।
100. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर मुझे एक सदाचारी (पूनीत) पुत्र।
101. तो हम ने शुभ सूचना दी उसे एक सहनशील पुत्र की।
102. फिर जब वह पहुँचा उस के साथ चलने-फिरने की आयु को, तो इब्राहीम ने कहा: हे मेरे प्रिय पुत्र! मैं देख रहा हूँ स्वपन में कि मैं तुझे बध कर रहा हूँ। अब तू बता कि तेरा क्या विचार है? उस ने कहा: हे पिता! पालन करें जिस का अदेश आप को दिया जा रहा है। आप पायेंगे मुझे सहनशीलों में से यदि अल्लाह की इच्छा हुई।
103. अन्ततः जब दोनों ने स्वयं को अर्पित कर दिया, और उस (पिता) ने उसे गिरा दिया माथे के बल।
104. तब हम ने उसे आवाज़ दी कि हे इब्राहीम!
105. तू ने सच्च कर दिया अपना स्वप्न।

- इसी प्रकार हम प्रति फल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
106. वास्तव में यह खुली परीक्षा थी।
107. और हम ने उस के मुक्ति- प्रतिदान के रूप में प्रदान कर दी एक महान् बलि।
108. तथा हम ने शेष रखी उस की शुभ चर्चा पिछलों में।
109. सलाम है इब्राहीम पर।
110. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
111. निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।
112. तथा हम ने उसे शुभसूचना दी इसहाक नबी की, जो सदा- चारियों में⁽²⁾ होगा।
113. तथा हम ने बरकत (विभूति) अवतरित की उस पर तथा इसहाक पर। और उन दोनों की संतति में से कोई सदाचारी है और कोई अपने लिये खुला अत्याचारी।
114. तथा हम ने उपकार किया मूसा और हारून पर।
115. तथा मुक्त किया दोनों को और उन कि जाति को घोर व्यग्रता से।
116. तथा हम ने सहायता की उन की तो वही प्रभावशाली हो गये।
117. तथा हम ने प्रदान की दोनों को प्रकाशमय पुस्तक (तौरात)।
118. और हम ने दर्शाई दोनों को सीधी डगर।
119. तथा शेष रखी दोनों की शुभ चर्चा पिछलों में।
120. सलाम है मूसा तथा हारून पर।
121. हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
122. वस्तुतः वह दोनों हमारे ईमान वाले भक्तों में थे।
123. तथा निश्चय इल्यास नबियों में से था।
124. जब कहा उस ने अपनी जाति से: क्या तुम डरते नहीं हो?
125. क्या तुम बअ्ल (नामक मुर्ति) को पुकारते हो? तथा त्याग रहे हो सर्वोत्तम उत्पत्ति कर्ता को?
126. अल्लाह ही तुम्हारा पालनहार है, तथा तुम्हारे प्रथम पूर्वजों का पालनहार है।
127. अन्ततः उन्होंने झुठला दिया उस को। तो निश्चय वही (नरक में) उपस्थित होंगे।
128. किन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्ता।
129. तथा शेष रखी हम ने उसकी शुभ चर्चा पिछलों में।
130. सलाम है इल्यासीन पर।
131. वास्तव में हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
132. वस्तुतः वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।
133. तथा निश्चय लूत नबियों में से था।

134. जब हम ने मुक्त किया उस को तथा उस के सब परिजनों को।
135. एक बुढ़िया के सिवा, जो पीछे रह जाने वालों में थी।
136. फिर हम ने अन्यों को तहस नहस कर दिया।
137. तथा तुम गुज़रते हो उन (की निर्जन बस्तियों) पर प्रातः के समय।
138. तथा रात्रि में। तो क्या तुम समझते नहीं हो?
139. तथा निश्चय यूनस नबियों में से था।
140. जब वह भाग गया भरी नाव की ओर।
141. फिर नाम निकाला गया तो वह हो गया फेंके हुआँ में से।
142. तो निगल लिया उसे मछली ने, और वह निन्दित था।
143. तो यदि न होता अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करने वालों में।
144. तो वह रह जाता उस के उदर में उस दिन तक जब सब पुनः जीवित किये जायेंगे।
145. तो हम ने फेंक दिया उसे खुले मैदान में और वह रोगी था।
146. और उगा दिया उस पर लताओं का एक वृक्षा।
147. तथा हम ने उसे रसूल बना कर भेजा एक लाख बल्कि अधिक की ओर।
148. तो वह ईमान लाये। फिर हम ने उन्हें सुख - सुविधा प्रदान की एक समय तक।
149. तो (हे नबी!) आप उन से प्रश्न करें कि क्या आप के पालनहार के लिये तो पुत्रियाँ हों और उन के लिये पुत्र।
150. अथवा क्या हम ने पैदा किया है फ़रिश्तों को नारियाँ। और वह उस समय उपस्थित थे।
151. सावधान! वास्तव में वह अपने मन से बना कर यह बात कह रहे हैं।
152. कि अल्लाह ने संतान बनाई है। और निश्चय वह मिथ्या भाषी हैं।
153. क्या अल्लाह ने प्राथमिकता दी है पुत्रियों को पुत्रों पर।
154. तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय दे रहे हो?
155. तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
156. अथवा तुम्हारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण है?
157. तो अपनी पुस्तक लाओ यदि तुम सत्यवादी हो।
158. और उन्होंने बना दिया अल्लाह तथा जिन्नों के मध्य वंश-संबंध। जब कि जिन्न स्वयं जानते हैं कि वह अल्लाह के समक्ष निश्चय उपस्थित किये जायेंगे।
159. अल्लाह पवित्र है उन गुणों से जिस का वह वर्णन कर रहे हैं।
160. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।
161. तो निश्चय तुम तथा तुम्हारे पूज्या।

162. तुम सब किसी एक को भी कुपथ नहीं कर सकते।
163. उस के सिवा जो नरक में झोंका जाने वाला है।
164. और नहीं है हम (फ़रिश्तों) में से कोई परन्तु उस का एक नियमित स्थान है।
165. तथा हम ही (आज्ञापालन के लिये) पंक्तिबद्ध हैं।
166. और हम ही तस्बीह (पवित्रता गान) करने वाले हैं।
167. तथा वह (मुश्रिक) तो कहा करते थे कि:
168. यदि हमारे पास कोई स्मृति (पुस्तक) होती जो पहले लोगों में आई...।
169. तो हम अवश्य अल्लाह के शुद्ध भक्तों में से हो जाते।
170. (फिर जब आ गयी) तो उन्होंने कुर्आन के साथ कुफ़र कर दिया अतः शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।
171. और पहले ही हमारा बचन हो चुका है अपने भजे हुये भक्तों के लिये।
172. कि निश्चय उन्हीं की सहायता की जायेगी।
173. तथा वास्तव में हमारी सेना ही प्रभावशाली (विजयी) होने वाली है।
174. तो आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।
175. तथा उन्हें देखते रहें। वह भी शीघ्र ही देख लेंगे।

176. तो क्या वह हमारी यातना की शीघ्र माँग कर रहे हैं।
177. तो जब वह उतर आयेगी उन के मैदानों में तो बुरा हो जायेगा सावधान किये हुआँ का सवेरा।
178. और आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।
179. तथा देखते रहें, अन्ततः वह (भी) देख लेंगे।
180. पबित्र है आप का पालनहार गौरव का स्वामी उस बात से जो वह बना रहे हैं।
181. तथा सलाम है रसूलों पर।
182. तथा सभी प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है।

सूरह साद - 38

सूरह साद के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. साद। शपथ है शिक्षा प्रद कुर्आन की।
2. बल्कि जो काफ़िर हो गये वह एक गर्व तथा विरोध में ग्रस्त है।
3. हम ने विनाश किया है इन से पूर्व बहुत से समुदायों का। तो वह पुकारने लगे और नहीं होता वह बचने का समय।
4. तथा उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास उन्हीं में से एक सचेत करने वाला! और कह दिया काफ़िरों ने कि यह तो बड़ा झूठा

जादूगर है।

5. क्या उस ने बना दिया है सब पूज्यों को एक पूज्य? यह तो बड़े आश्चर्य का विषय है।
6. तथा चल दिये उन के प्रमुख (यह) कहते हुये कि चलो दृढ़ रहो अपने पूज्यों पर। इस बात का कुछ और ही लक्ष्य है।
7. हम ने नहीं सुनी यह बात प्राचीन धर्मों में, यह तो बस मन- घड़त बात है।
8. क्या उसी पर उतारी गई है यह शिक्षा (कुर्आन) हमारे बीच में से? बल्कि वह संदेह में है मेरी शिक्षा से। बल्कि उन्होंने अभी यातना नहीं चखी है।
9. अथवा उन के पास है आप के अत्यंत प्रभुत्वशाली प्रदाता पालनहार की दया के कोष।
10. अथवा उन्हीं का है राज्य आकाशों तथा धरती का। और जो कुछ उन दोनों के मध्य है? तो उन्हें चाहिये कि चढ़ जायें (आकाशों में) रस्सियाँ तान कर।
11. यह एक तुच्छ सेना है यहाँ पराजित सेनाओं में से।
12. झुठलाया इन से पहले नूह तथा आद और शक्तिवान फिरऔन की जाति ने।
13. तथा समूद और लूत की जाति एवं बन के वासियों ने। यही सेनायें हैं।
14. इन सभी ने झुठलाया रसूलों को, तो

मेरी यातना सिद्ध हो गई।

15. और यह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु एक कर्कश ध्वनि की जिस के लिये कुछ भी देर नहीं होगी।
16. तथा उन्होंने कहा कि हे हमारे पालनहार। शीघ्र प्रदान कर दे हमारे लिये हमारी (यातना का) भाग हिसाब के दिन से पहले।
17. आप सहन करें उस पर जो वे कह रहे हैं। तथा याद करें हमारे भक्त दावूद को जो अत्यंत शक्तिशाली था निश्चय वह ध्यान मग्न था।
18. हम ने बश्वर्ती कर दिया था पर्वतों को जो उसके साथ पवित्रता गान करते थे संध्या तथा प्रातः।
19. तथा पक्षियों को एकत्रित किये हुये, प्रत्येक उस के आधीन ध्यान मग्न रहते थे।
20. और हम ने दृढ़ किया उस के राज्य को और हम ने प्रदान की उसे नबूवत तथा निर्णय शक्ति।
21. तथा क्या आया आप के पास दो पक्षों का समाचार जब वह दीवार फांद कर मेहराब (बंदना स्थल) में आ गये?
22. जब उन्होंने प्रवेश किया दावूद पर तो वह घबरा गया उन से। उन्होंने कहा: डरिये नहीं। हम दो पक्ष हैं अत्याचार किया है हम में से एक ने दूसरे पर। तो आप निर्णय कर दें हमारे बीच सत्य (न्याय) के साथ। तथा अन्याय न करें तथा हमें दर्शा दें सीधी राह।
23. यह मेरा भाई है उस के पास निष्ठावे

- भेड़ हैं और मेरे एक भेड़ हैं तो यह कहता है कि वह (भी) मुझे दे दो। और यह प्रभावशाली हो गया मुझ पर बात करने में।
24. दावूद ने कहा: उस ने तुम पर अवश्य अत्याचार किया तुम्हारी भेड़ को (मिलाने की) मॉंग कर के अपनी भेड़ों में तथा बहुत से साझी एक दूसरे पर अत्याचार करते हैं उन के सिवा जो ईमान लाये तथा सदाचार किये और बहुत थोड़े हैं ऐसे लोग। और दावूद ने भौंप लिया की हम ने उस की परीक्षा ली है तो सहसा उस ने क्षमायाचना कर ली। और गिर गया सजूदे में तथा ध्यान मग्न हो गया।
25. तो हम ने क्षमा कर दिया उस के लिये वहाँ तथा उस के लिये हमारे पास निश्चय सामिप्य है तथा अच्छा स्थान।
26. हे दावूद! हम ने तुझे राज्य दिया है धरती में अतः निर्णय कर लोगों के बीच सत्य (न्याय) के साथ तथा अनुसरण न कर आकांक्षा का। अन्यथा वह कुपथ कर देगी तुझे अल्लाह की राह से। निःसंदेह जो कुपथ हो जायेंगे अल्लाह की राह से तो उन्हीं के लिये घोर यातना है, इस कारण कि वह भूल गये हिसाब का दिन।
27. तथा नहीं पैदा किया है हम ने आकाश और धरती को तथा जो कुछ उन के बीच है व्यर्थ। यह तो उन का विचार है जो काफिर हो गये। तो विनाश है उन के लिये जो काफिर हो गये अग्नि से।
28. क्या हम कर देंगे उन्हें जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के
- समान जो उपद्रवी हैं धरती में या कर देंगे आज्ञाकारियों को उल्लंघनकारियों के समान?
29. यह (कुर्आन) एक शुभ पुस्तक है जिसे हम ने अवतरित किया है आप की ओर, ताकि लोग विचार करें उस की आयतों पर। और ताकि शिक्षा ग्रहण करें मतिमान।
30. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को सुलैमान (नामक पुत्र)। वह अति ध्यान मग्न था।
31. जब प्रस्तुत किये गये उस के समक्ष संध्या के समय सधे हुये वेग गामी घोड़े।
32. तो कहा: मैं ने प्राथमिकता दी इन घोड़ों के प्रेम को अपने पालनहार के स्मरण पर। यहाँ तक कि वह ओझल हो गये।
33. उन्हें वापिस लाओ मेरे पास। फिर हाथ फेरने लगे उन की पिंडलियों तथा गर्दनो पर।
34. और हम ने परीक्षा ली सुलैमान कि तथा डाल दिया उस के सिंहासन पर एक धड़ा फिर वह ध्यान मग्न हो गया।
35. उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझ को क्षमा कर दो तथा मुझे प्रदान कर ऐसा राज्य जो उचित न हो किसी के लिये मेरे पश्चात्। वास्तव में तू ही अति प्रदाता है।
36. तो हम ने वश में कर दिया उस के लिये वायु को जो चल रही थी धीमी गति से उस के आदेश से वह जहाँ चाहता।
37. तथा शैतानों को प्रत्येक प्रकार के निर्माता, तथा ग़ोता ख़ोर को।

38. तथा दूसरों को बंधे हुये बेड़ियों में
39. यह हमारा प्रदान है तो उपकार करो
अथवा रोक लो, कोई हिसाब नहीं।
40. और वास्तव में उस के लिये हमारे
पास सामिप्य तथा उत्तम स्थान है।
41. तथा याद करो हमारे भक्त अय्यूब
को। जब उस ने पुकारा अपने
पालनहार को कि शैतान ने मुझ को
पहुँचाया है दुःख, तथा यातना।
42. अपना पाँव (धरती पर) मार। यह है
शीतल स्नान तथा पीने का जल।
43. और हम ने प्रदान किया उसे उस
का परिवार तथा उनके साथ और
उन के समान। अपनी दया से, और
मतिमानों की शिक्षा के लिये।
44. तथा ले अपने हाथ में तीलियों की
एक झाड़, तथा उस से मार और
अपनी शपथ भंग न कर। वास्तव
में हम ने उसे पाया धीर्य वान।
निश्चय वह बड़ा ध्यान मग्न था।
45. तथा याद करो, हमारे भक्त इब्राहीम
तथा इसहाक एवं याकूब को, जो कर्म
शक्ति तथा ज्ञानचक्षू वाले थे।
46. हम ने उन्हें विशेष कर लिया बड़ी
विशेषता परलोक (आखिरत) की
याद के साथ।
47. वास्तव में वह हमारे यहाँ उत्तम
निर्वाचितों में से थे।
48. तथा आप चर्चा करें इसमाईल तथा
यसअ एवं जुलकिफ्ल की। और यह
सभी निर्वाचितों में से थे।
49. यह (कुर्आन) एक शिक्षा है तथा
निश्चय आज्ञाकारियों के लिये उत्तम
स्थान है।
50. स्थायी स्वर्ग खुले हुये हैं उन के लिये
(उन के) द्वारा।
51. वे तकिये लगाये होंगे उन में। मार्गेंगे
उन में बहुत से फल तथा पेय पदार्थ।
52. तथा उन के पास आँखें सीमित रखने
वाली समायु पत्नियाँ होंगी।
53. यह है जिस का वचन दिया जा रहा
था तुम्हें हिसाब के दिन।
54. यह है हमारी जीविका जिस का कोई
अन्त नहीं है।
55. यह है। और अवैज्ञाकारियों के लिये
निश्चय बुरा स्थान है।
56. नरक है, जिस में वे जायेंगे, क्या ही
बुरा आवास है।
57. यह है। तो तुम चखो खौलता पानी
तथा पीपा।
58. तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की
विभिन्न यातनायें।
59. यह एक और जत्था है जो घुसा
आ रहा है तुम्हारे साथ। कोई स्वागत
नहीं है उन का। वास्तव में वह नरक
में प्रवेश करने वाले हैं।
60. वह उत्तर देंगे: बल्कि तुम। तुम्हारा
कोई स्वागत नहीं। तुम्हीं आगे लाये
हो इस (यातना) को हमारे। तो यह
बुरा निवास है।
61. (फिर) वह कहेंगे: हमारे पालनहार!
जो हमारे आगे लाया है इसे, उस को

- दुगनी यातना दे नरक में।
62. तथा (नारकी) कहेंगे: हमें क्या हुआ है कि हम कुछ लोगों को नहीं देख रहे हैं जिन की गणना हम बुरे लोगों में कर रहे थे।
63. क्या हम ने उन्हें उपहास बना रखा था अथवा चूक रही है उन से हमारी आँखें।
64. निश्चय सत्य है नारकियों का आपस में झगड़ना।
65. हे नबी! आप कह दें: मैं तो मात्र सचेत करने वाला हूँ। तथा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है अकेले प्रभावशाली अल्लाह के सिवा।
66. वह आकाशों तथा धरती का और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सब का पालनहार अति प्रभाव शाली क्षमी है।
67. आप कह दें कि यह बहुत बड़ी सूचना है।
68. और तुम हो कि उस से मुँह फेर रहे हो।
69. मुझे कोई ज्ञान नहीं है उच्च सभा वाले (फ़रिश्ते) जब वाद- विवाद कर रहे थे।
70. मेरी ओर तो मात्र इस लिये बह्नी (प्रकाशना) की जा रही है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूँ।
71. जब कि कहा आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से: मैं पैदा करने वाला हूँ एक मनुष्य मिट्टी से।
72. तो जब मैं उसे बराबर कर दूँ तथा फूँक दूँ उस में अपनी ओर से रूह (प्राण) तो गिर जाओ उस के लिये

सज्दा करते हुये।

73. तो सज्दा किया सभी फ़रिश्तों ने एक साथ।
74. इब्लीस के सिवा, उस ने अभिमान किया और हो गया काफ़िरों में से।
75. अल्लाह ने कहा: हे इब्लीस! किस चिज़ ने तुझे रोक दिया सज्दा करने से उस के लिये जिस को मैं ने पैदा किया अपने हाथ से? क्या तू अभिमान कर गया अथवा वास्तव में तू ऊँचे लोगों में से है?
76. उस ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। तू ने मुझे पैदा किया है अग्नि से तथा उसे पैदा किया है मिट्टी से।
77. अल्लाह ने कहा: तू निकल जा यहाँ से, तू वास्तव में धिक्कृत है।
78. तथा तुझ पर मेरी दया से दूरी है प्रलय के दिन तक।
79. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मुझे अवसर दे उस दिन तक जब लोग पूनः जीवित किये जायेंगे।
80. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया।
81. निर्धारित समय के दिन तक।
82. उस ने कहा: तो तेरे प्रताप की शपथ! मैं आवश्यक कुपथ कर के रहूँगा सब को।
83. तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा उन में से।
84. अल्लाह ने कहा: तो यह सत्य है और मैं सत्य ही कहा करता हूँ:
85. कि मैं अवश्य भर दूँगा नरक को

तुझ से तथा जो तेरा अनुसरण करेंगे उन सब से।

86. (हे नबी!) कह दें कि मैं नहीं माँग करता हूँ तुम से इस पर किसी पारिश्रमिक की, तथा मैं नहीं हूँ अपनी ओर से कुछ बनाने वाला।
87. नहीं है यह (कुर्आन) परन्तु एक शिक्षा सर्वलोक वासियों के लिये।
88. तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा उस के समाचार (तथ्य) का एक समय के पश्चात्।

सूरह जुमर - 39

सूरह जुमर के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 75 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. इस पुस्तक का अवतरित होना अल्लाह अति प्रभावशाली तत्त्वज्ञ की ओर से है।
2. हम ने आप की ओर यह पुस्तक सत्य के साथ अवतरित की है। अतः इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध करते हुये उस के लिये धर्म को।
3. सुन लो! शुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिये (योग्य) है। तथा जिन्होंने बना रखा है अल्लाह के सिवा संरक्षक वे कहते हैं कि हम तो उन की वंदना इस लिये करते हैं कि वह समीप कर देंगे हमें अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह ही निर्णय करेगा उन के बीच जिस में वे विभेद कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह उसे सुपथ नहीं दर्शाता जो बड़ा मिथ्यावादी कृतघ्न हो।

4. यदि अल्लाह चाहता कि अपने लिये संतान बनाये तो चुन लेता उस में से जिसे पैदा करता है जिसे चाहता वह पवित्र है। वही अल्लाह अकेला सब पर प्रभावशाली है।
5. उस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को सत्य के आधार पर। वह लपेट देता है रात्रि को दिन पर तथा दिन को रात्रि पर तथा वशवर्ती किया है सूर्य और चन्द्रमा को। प्रत्येक चल रहा है अपनी निर्धारित अवधि के लिये। सावधान! वही अत्यंत प्रभावशाली क्षमी है।
6. उस ने तुम को पैदा किया एक प्राण से फिर बनाया उसी से उस का जोड़ा। तथा अवतरित किये तुम्हारे लिये पशुओं में से आठ जोड़े। वह पैदा करता है तुम को तुम्हारी माताओं के गर्भाशयों में एक रूप में, एक रूप के पश्चात् तीन अंधेरों में, यही अल्लाह है तुम्हारा पालनहार, उसी का राज्य है। कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं उस के सिवा। तो तुम कहाँ फिराये जा रहे हो?
7. यदि तुम कृतघ्न बनो तो अल्लाह निस्पृह है तुम से। और वह प्रसन्न नहीं होता अपने भक्तों की कृतघ्नता से और यदि कृतज्ञता करो तो वह प्रसन्न हो जायेगा तुम से। और नहीं बोझ उठायेगा कोई उठाने वाला दूसरों का बोझ। फिर तुम्हारे पालनहार ही की ओर तुम्हारा फिरना है। तो वह तुम्हें सूचित कर देगा तुम्हारे कर्मों से। वास्तव में वह भली-भाँति जानने वाला है दिलों के भेदों को।

8. तथा जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुःख तो पुकारता है अपने पालनहार को ध्यानमग्न हो कर उस की ओर। फिर जब हम उसे प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से तो भूल जाता है जिस के लिये वह पुकार रहा था इस से पूर्वी तथा बना लेता है अल्लाह का साझी ताकि कुपथ करे उस की डगर से। आप कह दें कि आनन्द ले लो अपने कुफ़ का थोड़ा सा। वास्तव में तू नारकियों में से है।
9. तो क्या जो आज्ञाकारी रहा हो रात्रि के क्षणों में सजदा करते हुये, तथा खड़ा रह कर, (और) डर रहा हो परलोक से, तथा आशा रखता हो अल्लाह की दया की, आप कहें कि क्या समान हो जायेंगे जो ज्ञान रखते हों तथा जो ज्ञान नहीं रखते? वास्तव में शिक्षा ग्रहण करते हैं मतिमान लोग ही।
10. आप कह दें उन भक्तों से जो ईमान लाये तथा डरे अपने पालनहार से कि उन्हीं के लिये जिन्होंने सदाचार किये इस संसार में बड़ी भलाई है। तथा अल्लाह की धरती विस्तृत है। और धैर्यवान ही अपना पूरा प्रतिफल अर्पित दिये जायेंगे।
11. आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि इबादत (वंदना) करूँ अल्लाह की शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को।
12. तथा मुझे आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ।
13. आप कह दें: मैं डरता हूँ यदि मैं अवैज्ञा करूँ अपने पालनहार की, एक बड़े दिन की यातना से।
14. आप कह दें: अल्लाह ही की इबादत (वंदना) मैं कर रहा हूँ शुद्ध कर के उस के लिये अपने धर्म को।
15. अतः तुम इबादत (वंदना) करो जिस की चाहो उस के सिवा। आप कह दें: वास्तव में क्षतिग्रस्त वही है जिन्होंने क्षतिग्रस्त कर लिया स्वयं को तथा अपने परिवार को प्रलय के दिन। सावधान! यही खुली क्षति है।
16. उन्हीं के लिये छत्र होंगे अग्नि के, उन के ऊपर से तथा उन के नीचे से छत्र होंगे। यही है डरा रहा है अल्लाह जिस से अपने भक्तों को। हे मेरे भक्तो! मुझी से डरो।
17. जो बचे रहे तागूत (असुर) की पूजा से तथा ध्यान मग्न हो गये अल्लाह की ओर तो उन्हीं के लिये शुभसूचना है। अतः आप शुभ सूचना सुना दें मेरे भक्तों को।
18. जो ध्यान से सुनते हैं इस बात को फिर अनुसरण करते हैं इस सर्वोत्तम बात का तो वही है जिन्हें सुपथ दर्शन दिया है अल्लाह ने, तथा वही मतिमान हैं।
19. तो क्या जिस पर यातना की बात सिद्ध हो गई, क्या आप निकाल सकेंगे उसे जो नरक में है?
20. किन्तु जो अपने पालनहार से डरे उन्हीं के लिये उच्च भवन हैं। जिन के ऊपर निर्मित भवन हैं। प्रवाहित है जिन में नहरें, यह अल्लाह का वचन है। और अल्लाह वचन भंग नहीं करता।
21. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने उतारा आकाश से जल? फिर प्रवाहित कर दिये उस के स्रोत धरती में। फिर निकालता है उस से खेतियाँ विभिन्न

- रंगों की। फिर सूख जाती है, तो तुम देखते हो उन्हें पीली, फिर उसे चूर-चूर कर देता है। निश्चय इस में बड़ी शिक्षा है मतिमानों के लिये।
22. तो क्या खोल दिया हो अल्लाह ने जिस का सीना इस्लाम के लिये तो वह एक प्रकाश पर हो अपने पालनहार की ओर से। तो विनाश है जिन के दिल कड़े हो गये अल्लाह के स्मरण से वही खुले कुपथ में है।
23. अल्लाह ही है जिस ने सर्वोत्तम हदीस (कुर्आन) को अवतरित किया है। ऐसी पुस्तक जिस की आयतें मिलती जुलती बार-बार दुहराई जाने वाली हैं। जिसे (सुन कर) खड़े हो जाते हैं उन के रूंगटे जो डरते हैं अपने पालनहार से। फिर कोमल हो जाते हैं उन के अंग तथा दिल अल्लाह के स्मरण कि ओर। यही है अल्लाह का मार्गदर्शन जिस के द्वारा वह संमार्ग पर लगा देता जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ दर्शक नहीं है।
24. तो क्या जो अपनी रक्षा करेगा अपने मुख से बुरी यातना से प्रलय के दिन? तथा कहा जायेगा अत्याचारियों से: चखो जो तुम कर रहे थे।
25. झुठला दिया उन्होंने जो इन से पूर्व थे। तो आ गई यातना उन के पास जहाँ से उन्हें अनुमान (भी) न था।
26. तो चखा दिया अल्लाह ने उन को अपमान संसारिक जीवन में और आखिरत (परलोक) की यातना निश्चय अत्यधिक बड़ी है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।
27. और हम ने मनुष्य के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण दिये हैं ताकि वह शिक्षा ग्रहण करे।
28. अर्बी भाषा में कुर्आन जिस में कोई टेढ़ापन नहीं है, ताकि वह अल्लाह से डरे।
29. अल्लाह ने एक उदाहरण दिया है एक व्यक्ति का जिस में बहुत से परस्पर विरोधी साझी हैं। तथा एक व्यक्ति पूरा एक व्यक्ति का (दास) है। तो क्या दशा में दोनों समान हो जायेंगे? सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, बल्कि उन में से अधिकतर नहीं जानते।
30. (हे नबी!) निश्चय आप को मरना है तथा उन्हें भी मरना है।
31. फिर तुम सभी प्रलय के दिन अल्लाह के समक्ष झगड़ोगे।



32. तो उस से बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ बोले तथा सच्च को झूठलाये जब उस के पास आ गया? तो क्या नरक में नहीं है ऐसे काफ़ि़रों का स्थान?
33. तथा जो सत्य लाये और जिस ने उसे सच्च माना तो वही (यातना से) सुरक्षित रहने वाले है।
34. उन्हीं के लिये है जो वह चाहेंगे उन के पालनहार के यहाँ और यही सदाचारियों का प्रतिफल है।
35. ताकि अल्लाह क्षमा कर दे जो कुकर्म उन्होंने किये हैं। तथा उन्हें प्रदान करे उन का प्रतिफल उन के उत्तम कर्मों के बदले जो वे कर रहे थे।
36. क्या अल्लाह पर्याप्त नहीं है अपने भक्त के लिये? तथा वह डराते है आप को उन से जो उस के सिवा है। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो नहीं है उसे कोई सुपथ दर्शाने वाला।
37. और जिसे अल्लाह सुपथ दर्शा दे तो नहीं है उसे कोई कुपथ करने वाला। क्या नहीं है अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला?
38. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कहिये कि तुम बताओ जिसे तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो: यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो क्या यह उस की हानि को दूर कर सकता है? अथवा मेरे साथ दया करना चाहे, तो क्या वह रोक सकता है उस की दया को? आप कह दें कि मुझे पर्याप्त है

अल्लाह। और उसी पर भरोसा करते है भरोसा करने वाले।

39. आप कह दें कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम काम करो अपने स्थान पर, मैं भी काम कर रहा हूँ। तो शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।
40. कि किस के पास आती है ऐसी यातना जो उसे अपमानित कर दे। तथा उतरती है किस के ऊपर स्थायी यातना?
41. वास्तव में हम ने ही अवतरित की है आप पर यह पुस्तक लोगों के लिये सत्य के साथ। तो जिस ने मार्गदर्शन प्राप्त कर लिया तो उस के अपने (लाभ के) लिये है। तथा जो कुपथ हो गया तो वह कुपथ होता है अपने ऊपर। तथा आप उन पर संरक्षक नहीं है।
42. अल्लाह ही खींचता है प्राणों को उन के मरण के समय, तथा जिस के मरण का समय नहीं आया उस की निद्रा में। फिर रोक लेता है जिस पर निर्णय कर दिया हो मरण का। तथा भेज देता है अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ है उन के लिये जो मनन-चिन्तन करते हों।
43. क्या उन्होंने बना लिये है अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से अभिस्तावक (सिफ़ारशी)? आप कह दें: क्या (यह सिफ़ारिश करेंगे) यदि वह अधिकार न रखते हों किसी चीज़ का और न ही समझ रखते हों?
44. आप कह दें कि अनुशंसा (सिफ़ारिश) तो सब अल्लाह के अधिकार में है। उसी के लिये है आकाशों तथा धरती

- का राज्या फिर उसी की ओर तुम फिराये जाओगे।
45. तथा जब वर्णन किया जाता है अकेले अल्लाह का तो संकीर्ण होने लगते हैं उन के दिल जो ईमान नहीं रखते आखिरत पर। तथा जब वर्णन किया जाता है उन का जो उस के सिवा है तो वह सहसा प्रसन्न हो जाते हैं।
46. (हे नबी!) आप कहें: हे अल्लाह आकाशों तथा धरती के पैदा करने वाले, परोक्ष तथा प्रत्यक्ष के ज्ञानी! तू ही निर्णय करेगा अपने भक्तों के बीच, जिस बात में वह झगड़ रहे थे।
47. और यदि उन का जिन्होंने अत्याचार किया है जो कुछ धरती में है सब हो जाये तथा उस के समान उस के साथ और आ जाये तो वह उसे दण्ड में दे देंगे घोर यातना के बदले प्रलय के दिन। तथा खुल जायेगी उन के लिये अल्लाह की ओर से वह बात जिसे वह समझ नहीं रहे थे।
48. तथा खुल जायेगी उन के लिये उन के करतूतों की बुराईयाँ। और उन्हें घेर लेगा जिस का वह उपहास कर रहे थे।
49. और जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुःख तो हमें पुकारता है। फिर जब हम प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से, तो कहता है: यह तो मुझे प्रदान किया गया है ज्ञान के कारण। बल्कि यह एक परीक्षा है। किन्तु लोगों में से अधिकतर (इसे) नहीं जानते।
50. यही बात उन लोगों ने भी कही थी जो इन से पूर्व थे। तो नहीं काम आया उन के जो कुछ वह कमा रहे थे।
51. फिर आ पड़े उन पर उन के सब कुकर्म, और जो अत्याचार किये हैं इन में से आ पड़ेंगे उन पर (भी) उन के कुकर्म। तथा वह (हमें) विवश करने वाले नहीं हैं।
52. क्या उन्हें ज्ञान नहीं कि अल्लाह फैलाता है जीविका जिस के लिये चाहता है, तथा नाप कर देता है (जिस के लिये चाहता है)? निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।
53. आप कह दें मेरे उन भक्तों से जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम निराश न हो अल्लाह की दया से। वास्तव में अल्लाह क्षमा कर देता है सब पापों को। निश्चय वह अति क्षमी दयावान् है।
54. तथा झुक पड़ो अपने पालनहार की ओर, और आज्ञाकारी हो जाओ उस के इस से पूर्व कि तुम पर यातना आ जाये, फिर तुम्हारी सहायता न की जाये।
55. तथा पालन करो उस सर्वोत्तम (कुर्आन) का जो अवतरित किया गया है तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से इस से पूर्व कि आ पड़े तुम पर यातना और तुम्हें ज्ञान न हो।
56. (ऐसा न हो कि) कोई व्यक्ति कहे कि हाय संताप! इस बात पर कि मैं ने आलस्य किया अल्लाह के पक्ष में, तथा मैं उपहास करने वालों में रह गया।
57. अथवा कहे कि यदि अल्लाह मुझे सुपथ दिखाता तो मैं डरने वालों में से हो जाता।

58. अथवा कहे जब देख ले यातना को, कि यदि मुझे (संसार में) फिर कर जाने का अवसर हो जाये तो मैं अवश्य सदाचारियों में से हो जाऊँगा।
59. हाँ, आई तुम्हारे पास मेरी निशानियाँ तो तुम ने उन्हें झुठला दिया और अभिमान किया तथा तुम थे ही काफ़िरोँ में से।
60. और प्रलय के दिन आप उन्हें देखेंगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोले कि उन के मुख काले होंगे। तो क्या नरक में नहीं है अभिमानियों का स्थान?
61. तथा बचा लेगा अल्लाह जो आज्ञाकारी रहे उन को उन की सफलता के साथ। नहीं लगेगा उन को कोई दुख और न वह उदासीन होंगे।
62. अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला तथा वही प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।
63. उसी के अधिकार में हैं आकाशों तथा धरती की कुँजियाँ तथा जिन्होंने नकार दिया अल्लाह की आयतों को वही क्षति में हैं।
64. आप कह दें: तो क्या अल्लाह से अन्य की तुम मुझे इबादत (बंदना) करने का आदेश देते हो, हे अज्ञानो?
65. तथा वही की गई है आप की ओर तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्माँ तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।
66. बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (बंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।
67. तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान नहीं किया जैसे उस का सम्मान करना चाहिये था। और धरती पूरी उस की एक मुठ्ठी में होगी प्रलय के दिन। तथा आकाश लपेटे हुये होंगे उस के हाथ में। वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।
68. तथा सूर (नरसिंघा) फूँका जायेगा तो निश्चेत हो कर गिर जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु जिसे अल्लाह चाहे, फिर उसे पुनः फूँका जायेगा तो सहसा सब खड़े देख रहे होंगे।
69. तथा जगमगाने लगेगी धरती अपने पालनहार की ज्योती से। और परस्तुत किये जायेंगे कर्म लेख तथा लाया जायेगा नबियों और साक्षियों को। तथा निर्णय किया जायेगा उन के बीच सत्य (न्याय) के साथ, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
70. तथा पूरा-पूरा दिया जायेगा प्रत्येक जीव को उस का कर्मफल तथा वह भली-भाँति जानने वाला है उस को जो वह कर रहे हैं।
71. तथा हॉके जायेंगे जो काफ़िर हो गये नरक की ओर झुण्ड बना कर। यहाँ तक कि जब वह उस के पास आयेंगे तो खोल दिये जायेंगे उस के द्वार। तथा उन से कहेंगे उस के रक्षक (फ़रिश्ते): क्या नहीं आये तुम्हारे पास रसूल तुम में से जो तुम्हें सुनाते तुम्हारे पालनहार की आयतें तथा सचेत करते तुम्हें इस दिन का सामना करने से? वह कहेंगे: क्यों

नहीं। परन्तु सिद्ध हो गया यातना का शब्द काफ़िरों पर।

72. कहा जायेगा कि प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों में सदावासी हो कर उस में। तो बुरा है घमड़ियों का निवास स्थान।
73. तथा भेज दिये जायेंगे जो लोग डरते रहे अपने पालनहार से स्वर्ग की ओर झुण्ड बना कर। यहाँ तक कि जब वे आ जायेंगे उस के पास तथा खोल दिये जायेंगे उस के द्वार और कहेंगे उन से उस के रक्षक: सलाम है तुम पर, तुम प्रसन्न रहो। तुम प्रवेश कर जाओ उस में सदावासी हो कर।
74. तथा वह कहेंगे: सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस ने सच्च कर दिया हम से अपना वचन। तथा हमें उत्तराधिकारी बना दिया इस धरती का हम रहें स्वर्ग में जहाँ चाहें क्या ही अच्छा है कार्य कर्ताओं का प्रतिफल।
75. तथा आप देखेंगे फ़रिश्तों को घेरे हुये अर्श (सिंहासन) के चतुर्दिक वह पवित्रतागान कर रहे होंगे अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ। तथा निर्णय कर दिया जायेगा लोगों के बीच सत्य के साथ। तथा कह दिया जायेगा कि सब प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है।

सूरह मुमिन - 40

सूरह मुमिन के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 85 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीमा।
2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह की ओर से है जो सब चीज़ों और गुणों को जानने वाला है।
3. पाप क्षमा करने, तौबा स्वीकार करने, क्षमायाचना का स्वीकारी, कड़ी यातना देने वाला, समाई वाला जिस के सिवा कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं। उसी की ओर (सब को) जाना है।
4. नहीं झगड़ते है अल्लाह की आयतों में उन के सिवा जो काफ़िर हो गये। अतः धोखे में न डाल दे आप को उन की यातायात देशों में।
5. झुठलाया इन से पूर्व नूह की जाति ने तथा बहुत से समुदायों ने उन के पश्चात्, तथा विचार किया प्रत्येक समुदाय ने अपने रसूल को बंदी बना लेने का। तथा विवाद किया असत्य के सहारे, ताकि असत्य बना दें सत्य को। तो हम ने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी रही हमारी यातना?
6. और इसी प्रकार सिद्ध हो गई आप के पालनहार की बात उन पर जो काफ़िर हो गये कि वही नारकी हैं।
7. वह (फ़रिश्ते) जो अपने ऊपर उठाये हुये हैं अर्श (सिंहासन) को तथा जो उस के आस पास हैं वह पवित्रतागान

करते रहते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ। तथा उस पर ईमान रखते हैं और क्षमा याचना करते रहते हैं उन के लिये जो ईमान लाये हैं। हे हमारे पालनहार! तू ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को (अपनी) दया तथा ज्ञान से। अतः क्षमा कर दे उन को जो क्षमा माँगे, तथा चले तेरे मार्ग पर तथा बचा ले उन्हें नरक की यातना से।

8. हे हमारे पालनहार! तथा प्रवेश कर दे उन्हें उन स्थाई स्वर्गों में जिन का तू ने उन को वचन दिया है। तथा जो सदाचारी हैं उन के पूर्वजों तथा पत्नियों और उन की संतानों में से। निश्चय तू सब चीजों और गुणों को जानने वाला है।

9. तथा उन्हें सुरक्षित रख दुष्कर्मों से, तथा तू ने जिसे बचा दिया दुष्कर्मों से उस दिन, तो दया कर दी उस पर। और यही बड़ी सफलता है।

10. जिन लोगों ने कुफ़्र किया है उन्हें (प्रलय के दिन) पुकारा जायेगा कि अल्लाह का क्रोध तुम पर उस से अधिक था जितना तुम्हें (आज) अपने ऊपर क्रोध आ रहा है जब तुम (संसार में) ईमान की ओर बुलाये जा रहे थे।

11. वे कहेंगे: हे हमारे पालनहार! तू ने हमें दो बार मारा। तथा जीवित (भी) दो बार किया। अतः हम ने मान लिया अपने पापों को। तो क्या (यातना से) निकलने की कोई राह (उपाय) है?

12. (यह यातना) इस कारण है कि जब तुम्हें (संसार में) बुलाया गया अकेले

अल्लाह की ओर तो तुम ने कुफ़्र कर दिया। और यदि शिकं किया जाता उस के साथ तो तुम मान लेते थे। तो आदेश देने का अधिकार अल्लाह को है जो सर्वोच्च सर्वमहान् है।

13. वही दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ तथा उतारता है तुम्हारे लिये आकाश से जीविका और शिक्षा ग्रहण नहीं करता परन्तु वही जो (उस की ओर) ध्यान करता है।

14. तो तुम पुकारो अल्लाह को शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को यद्यपि बुरा लगे काफ़िरों को।

15. वह उच्च श्रेणियों वाला अर्श का स्वामी है। वह उतारता है अपने आदेश से रूह (बह्नी) को जिस पर चाहता है अपने भक्तों में से। ताकि वह सचेत करे मिलने के दिन से।

16. जिस दिन सब लोग (जीवित हो कर) निकल पड़ेंगे। नहीं छुपी होगी अल्लाह पर उन की कोई चीज़। किस का राज्य है आज? अकेले प्रभुत्वशाली अल्लाह का।

17. आज प्रतिकार दिया जायेगा प्रत्येक प्राणी को उस के करतूत का। कोई अत्याचार नहीं है आज। वास्तव में अल्लाह अतिशीघ्र हिसाब लेने वाला है।

18. तथा आप सावधान कर दें उन को आगामी समीप दिन से जब दिल मुँह को आ रहे होंगे। लोग शोक से भरे होंगे। नहीं होगा अत्याचारियों का कोई मित्र न कोई सिफ़ारशी जिस की बात मानी जाये।

19. वह जानता है आँखों की चोरी तथा जो (भेद) सीने छुपाते हैं।

20. अल्लाह ही निर्णय करेगा सत्य के साथ। तथा जिन को वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त वह कोई निर्णय नहीं कर सकते। निश्चय अल्लाह ही भली-भाँति सुनने-देखने वाला है।
21. क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पूर्व थे? वह इन से अधिक थे बल में तथा अधिक चिन्ह छोड़ गये धरती में तो पकड़ लिया अल्लाह ने उन को उन के पापों के कारण, और नहीं था उन के लिये अल्लाह से कोई बचाने वाला।
22. यह इस कारण हुआ कि उन के पास लाते थे हमारे रसूल खुली निशानियाँ, तो उन्होंने कुफ़्र किया। अन्ततः पकड़ लिया उन्हें अल्लाह ने। वस्तुतः वह अति शक्तिशाली घोर यातना देने वाला है।
23. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों और हर प्रकार के प्रामाण के साथ।
24. फिरऔन और (उस के मंत्री) हामान तथा कारून के पास। तो उन्होंने ने कहा: यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।
25. तो जब वह उन के पास सत्य लाया हमारी ओर से तो सब ने कहा: बध कर दो उन के पुत्रों को जो ईमान लाये हैं उस के साथ, तथा जीवित रहने दो उन की स्त्रियों को। और काफ़िरो का षड्यंत्र निष्फल (व्यर्थ) ही हुआ।
26. और कहा फिरऔन ने (अपने प्रमुखों से): मुझे छोड़ो, मैं बध कर दूँ मूसा को। और उसे चाहिये कि पुकारे अपने पालनहार को। वास्तव में मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारे धर्म को अथवा पैदा कर देगा इस धरती (मिस्र) में उपद्रव।
27. तथा मूसा ने कहा: मैं ने शरण ली है अपने पालनहार तथा तुम्हारे पालनहार की प्रत्येक अहंकारी से जो ईमान नहीं रखता हिसाब के दिन पर।
28. तथा कहा एक ईमान वाले व्यक्ति ने फिरऔन के घराने के, जो छुपा रहा था अपना ईमान: क्या तुम बध कर दोगे एक व्यक्ति को कि वह कह रहा है: मेरा पालनहार अल्लाह है? जब कि वह तुम्हारे पास लाया है खुली निशानियाँ तुम्हारे पालनहार की ओर से? और यदि वह झूठा हो तो उसी के ऊपर है उन का झूठा। और यदि सच्चा हो तो आ पड़ेगा वह कुछ जिसकी तुम्हें धमकी दे रहा है। वास्तव में अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता उसे जो उल्लंघनकारी बहुत झूठा हो।
29. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारा राज्य है आज, तुम प्रभावशाली हो धरती में, तो कौन हमारी रक्षा करेगा अल्लाह की यातना से यदि वह हम पर आ जाये? फिरऔन ने कहा: मैं तुम सब को वही समझा रहा हूँ जिसे मैं उचित समझता हूँ और तुम्हें सीधी ही राह दिखा रहा हूँ।
30. तथा उस ने कहा जो ईमान लाया: हे मेरी जाति! मैं तुम पर डरता हूँ (अगले) समुदायों के दिन जैसे (दिन) से।
31. नूह की जाति की जैसी दशा से, तथा आद और समूद की एवं जो उन के

- पश्चात् हुये। तथा अल्लाह नहीं चाहता कोई अत्याचार भक्तों के लिये।
32. तथा हे मेरी जाति! मैं डर रहा हूँ तुम पर एक - दूसरे को पुकारने के दिन से।
33. जिस दिन तुम पीछे फिर कर भागोगे, नहीं होगा तुम्हें अल्लाह से कोई बचाने वाला। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ प्रदर्शक नहीं।
34. तथा आये यूसुफ़ तुम्हारे पास इस से पूर्व खुले प्रमाणों के साथ, तो तुम बराबर संदेह में रहे उस से जो तुम्हारे पास लाये। यहाँ तक कि जब वह मर गये तो तुम ने कहा कि कदापि नहीं भेजेगा अल्लाह उन के पश्चात् कोई रसूल। इसी प्रकार अल्लाह कुपथ कर देता है। उसे जो उल्लंघनकारी डाँवाडोल हो।
35. जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उन के पास आया हो। तो यह बड़े क्रोध की बात है अल्लाह के समीप तथा उन के समीप जो ईमान लाये हैं। इसी प्रकार अल्लाह मुहर लगा देता है प्रत्येक अहंकारी अत्याचारी के दिल पर।
36. तथा कहा फिरऔन ने कि हे हामान! मेरे लिये बना दो एक उच्च भवन, संभवतः मैं उन मार्गों तक पहुँच सकूँ।
37. आकाश के मार्गों तक ताकि मैं देखूँ मुसा के पूज्य (उपास्य) को। और निश्चय मैं उसे झूठा समझ रहा हूँ। और इसी प्रकार शोभनीय बना दिया गया फिरऔन के लिये उस का
- दुष्कर्म तथा रोक दिया गया संमार्ग से। और फिरऔन का षड्यंत्र विनाश ही में रहा।
38. तथा उस ने कहा जो ईमान लाया: हे मेरी जाति! मेरी बात मानो, मैं तुम्हें सीधी राह बता रहा हूँ।
39. हे मेरी जाति! यह संसारिक जीवन कुछ साम्यिक लाभ है। तथा वास्तव में प्रलोक ही स्थायी निवास है।
40. जिस ने दुष्कर्म किया तो उस को उसी के समान प्रतिकार दिया जायेगा। तथा जो सुकर्म करेगा नर अथवा नारी में से और वह ईमान वाला (एकेश्वरवादी) हो तो वही प्रवेश करेंगे स्वर्ग में। जीविका दिये जायेंगे उस में अगणित।
41. तथा हे मेरी जाति! क्या बात है कि मैं बुला रहा हूँ तुम्हें मुक्ति की ओर तथा तुम बुला रहे हो मुझे नरक की ओर।
42. तुम मुझे बुला रहे हो ताकि मैं कुफ़र करूँ अल्लाह के साथ और साझी बनाऊँ उस का उसे जिस का मुझे कोई ज्ञान नहीं है। तथा मैं बुला रहा हूँ तुम्हें प्रभावशाली अति क्षमी की ओर।
43. निश्चित है कि तुम जिस की ओर मुझे बुला रहे हो वह पुकारने योग्य नहीं है न लोक में न परलोक में। तथा हमें जाना है अल्लाह ही की ओर, तथा वास्तव में अतिक्रमी ही नारकी है।
44. तो तुम याद करोगे जो मैं कह रहा हूँ, तथा मैं समर्पित करता हूँ अपना मामला अल्लाह को। वास्तव में अल्लाह देख रहा है भक्तों को।

45. तो अल्लाह ने उसे सुरक्षित कर दिया उन के षड्यंत्र की बुराईयों से और घेर लिया फिरऔनियों को बुरी यातना ने।
46. वे प्रस्तुत किये जाते हैं अग्नि पर प्रातः तथा संध्या। तथा जिस दिन प्रलय स्थापित होगी (यह आदेश होगा) कि डाल दो फिरऔनियों को कड़ी यातना में।
47. तथा जब वह झगड़ेंगे अग्नि में, तो कहेंगे निर्बल उन से जो बड़े बन कर रहे: हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम दूर करोगे हम से अग्नि का कुछ भाग?
48. वे कहेंगे जो बड़े बन कर रहे: हम सब इसी में हैं। अल्लाह निर्णय कर चुका है भक्तों (बंदों) के बीच।
49. तथा कहेंगे जो अग्नि में हैं नरक के रक्षकों से: अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हम से हल्की कर दे किसी दिन कुछ यातना।
50. वह कहेंगे: क्या नहीं आये तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण ले कर? वे कहेंगे क्यों नहीं। वह कहेंगे तो तुम ही प्रार्थना करो। और काफ़िरों की प्रार्थना व्यर्थ ही होगी।
51. निश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लायें, संसारिक जीवन में, तथा जिस दिन साक्षी खड़े होंगे।
52. जिस दिन नहीं लाभ पहुँचायेगी अत्याचारियों को उन की क्षमा याचना। तथा उन्हीं के लिये धिक्कार

और उन्हीं के लिये बुरा घर है।

53. तथा हम ने प्रदान किया मूसा को मार्ग दर्शन और हम ने उत्तराधिकारी बनाया ईसाईल की संतान को पुस्तक (तौरात) का।
54. जो मार्ग दर्शन तथा शिक्षा थी समझ वालों के लिये।
55. तो (हे नबी!) आप धैर्य रखें। वास्तव में अल्लाह का वचन सत्य है। तथा क्षमा माँगें अपने पाप की। तथा पवित्रता का वर्णन करते रहें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ संध्या और प्रातः।
56. वास्तव में जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में बिना किसी प्रमाण के जो आया⁽²⁾ हो उन के पास, तो उन के दिलों में बड़ाई के सिवा कुछ नहीं है, जिस तक वह पहुँचने वाले नहीं हैं। अतः आप अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।
57. निश्चय आकाशों तथा धरती को पैदा करना अधिक बड़ा है मनुष्य को पैदा करने से। परन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।
58. तथा समान नहीं होता अंधा तथा आँख वाला। और न जो ईमान लाये और सत्कर्म किये हैं और दुष्कर्मी। तुम (बहुत) कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।
59. निश्चय प्रलय आनी ही है। जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।
60. तथा कहा है तुम्हारे पालनहार ने कि

- मुझी से प्रार्थना करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा। वास्तव में जो अभिमान (अहंकार) करेंगे मेरी इबादत (बंदना-प्रार्थना) से तो वह प्रवेश करेंगे नरक में अपमानित हो कर।
61. अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये रात्रि बनाई ताकि तुम विश्राम करो उस में, तथा दिन को प्रकाशमान बनाया। वस्तुतः अल्लाह बड़ा उपकारी है लोगों के लिये। किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते।
62. यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, प्रत्येक वस्तु का रचयिता, उत्पत्तिकार। नहीं है कोई (सच्चा) बंदनीय उस के सिवा, फिर तुम कहाँ बहके जाते हो?
63. इसी प्रकार बहका दिये जाते हैं वह जो अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।
64. अल्लाह ही है जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को निवास स्थान तथा आकाश को छत, और तुम्हारा रूप बनाया तो सुन्दर रूप बनाया। तथा तुम्हें जीविका प्रदान की स्वच्छ चीजों से। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, तो शुभ है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।
65. वह जीवित है, कोई (सच्चा) बंदनीय नहीं है उस के सिवा। अतः विशेष रूप से उस की इबादत करते हुये उसी को पुकारो। सब प्रशंसा सर्वलोक के पालनहार अल्लाह के लिये है।
66. आप कह दें निश्चय मुझे रोक दिया गया है कि इबादत करूँ उन की जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा जब आ गये मेरे पास खुले प्रमाण। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सर्वलोक के पालनहार का आज्ञाकारी रहूँ।
67. वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर वीर्य से, फिर बंधे रक्त से, फिर तुम्हें निकालता है (गर्भाशयों से) शिशु बना कर। फिर बड़ा करता है ताकि तुम अपनी पूरी शक्ति को पहुँचो। फिर बूढ़े हो जाओ तथा तुम में कुछ इस से पहले ही मर जाते हैं और यह इसलिये होता है ताकि तुम अपनी निश्चित आयु को पहुँच जाओ, तथा ताकि तुम समझो।⁽¹⁾
68. वही है जो तुम्हें जीवन देता तथा मारता है फिर जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो कहता है: ((हो जा)) तो वह हो जाता है।
69. क्या आप ने नहीं देखा कि जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में, वह कहाँ बहकाये जा रहे हैं?
70. जिन्होंने ने झूठला दिया पुस्तक को और उसे जिस के साथ हम ने भेजा अपने रसूलों को, तो शीघ्र ही वह जान लेंगे।
71. जब तौक होंगे उन के गलों में तथा बेड़ियाँ, वह खींचे जायेंगे।
72. खौलते पानी में फिर अग्नि में झोंक दिये जायेंगे।
73. फिर कहा जायेगा उन से: कहाँ है वह जिन्हें तुम साझी बना रहे थे।
74. अल्लाह के सिवा? वह कहेंगे कि वह खो गये हम से, बल्कि हम नहीं पुकारते थे इस से पूर्व किसी चीज को, इसी प्रकार अल्लाह कुपथ कर देता है काफ़िरों को।

75. यह यातना इसलिये है कि तुम धरती में अवैध इतराते थे, तथा इस कारण कि तुम अकड़ते थे।
76. प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों में सदावासी हो कर उस में। तो बुरा स्थान है अभिमानियों का।
77. तो आप धैर्य रखें निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। फिर यदि आप को दिखा दें उस (यातना) में से जिस का उन्हें वचन दे रहे हैं, या आप का निधन कर दें तो वह हमारी ओर ही फेरे जायेंगे।
78. तथा (हे नबी!) हम भेज चुके हैं बहुत से रसूलों को आप से पूर्व जिन में से कुछ का वर्णन हम आप से कर चुके हैं तथा कुछ का वर्णन आप से नहीं किया है तथा किसी रसूल के (वश) में यह नहीं था कि वह कोई आयत (चमत्कार) ला दे परन्तु अल्लाह की अनुमति से। फिर जब आ जायेगा अल्लाह का आदेश तो निर्णय कर दिया जायेगा सत्य के साथ और क्षति में पड़ जायेंगे वहाँ झूठे लोग।
79. अल्लाह ही है जिस ने बनाये तुम्हारे लिये चौपाये ताकि सवारी करो कुछ पर और कुछ को खाओ।
80. तथा तुम्हारे लिये उन में बहुत लाभ हैं और ताकि तुम उन पर पहुँचो उस आवश्यकता को जो तुम्हारे दिलों में है तथा उन पर और नावों पर तुम्हें सवार किया जाता है।
81. तथा वह दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ। तो तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे?

82. तो क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो उन से पूर्व थे? वह उन से अधिक कड़े थे शक्ति में और धरती में अधिक चिन्ह छोड़ गये। तो नहीं आया उन के काम जो वे कर रहे थे।
83. जब आये उन के पास हमारे रसूल निशानियाँ लेकर तो वे इतराने लगे उस ज्ञान पर जो उन के पास था। और घेर लिया उन को उस ने जिस का वे उपहास कर रहे थे।
84. तो जब उन्होंने देखा हमारी यातना को तो कहने लगे: हम ईमान लाये अकेले अल्लाह पर तथा नकार दिया उसे जिसे उस का साझी बना रहे थे।
85. तो ऐसा नहीं हुआ कि उन्हें लाभ पहुँचाता उन का ईमान जब उन्होंने देख लिया हमारी यातना को। यही अल्लाह का नियम है जो उसके भक्तों में चला आ रहा है। और क्षति में पड़ गये यही काफ़िर।

सूरह हा मीम सज्दा - 41

सूरह हा मीम सज्दा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है. इस में 54 आयते हैं।
अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीम।
2. अवतरित है अत्यन्त कृपाशील दयावान् की ओर से।
3. (यह ऐसी) पुस्तक है सविस्तार वर्णित की गई है जिस की आयतों कुर्आन अर्बी (भाषा में) है उन के लिये जो ज्ञान रखते हों।

4. वह शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला है। फिर भी मुँह फेर लिया है उन में से अधिकतर ने, और सुन नहीं रहे हैं।
5. तथा उन्होंने कहा: हमारे दिल आवरण (पर्दे) में है उस से आप हमें जिस की ओर बुला रहे हैं। तथा हमारे कानों में बौझ है तथा हमारे और आप के बीच एक आड़ है। तो आप अपना काम करें और हम अपना काम कर रहे हैं।
6. आप कह दें कि मैं तो एक मनुष्य हूँ तुम्हारे जैसा। मेरी ओर वही की जा रही है कि तुम्हारा वंदनीय (पूज्य) केवल एक ही है। अतः सीधे ही जाओ उसी की ओर तथा क्षमा माँगो उस से। और विनाश है मुश्रिकों के लिये।
7. जो ज़कात नहीं देते तथा आखिरत को (भी) नहीं मानते।
8. निःसदिह जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन्हीं के लिये अनन्त प्रतिफल है।
9. आप कहें कि क्या तुम उसे नकारते हो जिस ने पैदा किया धरती को दो दिन में, और बनाते हो उस के साझी? वही है सर्वलोक का पालनहार।
10. तथा बनाये उस (धरती) में पर्वत उस के ऊपर तथा बरकत रख दी उस में। और अंकन किया उस में उस के वासियों के आहारों का चार दिनों में समान रूप से प्रश्न करने वालों के लिये।
11. फिर आकर्षित हुआ आकाश की ओर तथा वह धुवाँ था। तो उसे तथा धरती को आदेश दिया कि तुम दोनों आ जाओ प्रसन्न होकर अथवा दबाव से। तो

- दोनों ने कहा हम प्रसन्न होकर आ गये।
12. तथा बना दिया उन को सात आकाश दो दिन में। तथा वही कर दिया प्रत्येक आकाश में उस का आदेश। तथा हम ने सुसज्जित किया समीप (संसार) के आकाश को दीपों (तारों) से तथा सुरक्षा के लिये। यह अति प्रभावशाली सर्वज्ञ की योजना है।
13. फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर दिया कड़ी यातना से जो आद तथा समूद की कड़ी यातना जैसी होगी।
14. जब आये उन के पास उन के रसूल उन के आगे तथा उन के पीछे से कि न इबादत (वंदना) करो अल्लाह के सिवा की। तो उन्होंने कहा: यदि हमारा पालनहार चाहता तो किसी फरिश्ते को उतार देता। अतः तुम जिस बात के साथ भेजे गये हो हम उसे नहीं मानते।
15. रहे आद तो उन्होंने अभिमान किया धरती में अवैध। तथा कहा कि कौन हम से अधिक है बल में? क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिस ने उन को पैदा किया है उन से अधिक है बल में, तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।
16. अन्ततः हम ने भेज दी उन पर प्रचण्ड वायु कुछ अशुभ दिनों में। ताकि चखायें उन्हें अपमानकारी यातना संसारिक जीवन में। और आखिरत (परलोक) की यातना अधिक अपमानकारी है। तथा उन्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी।
17. और रही समूद तो हम ने उन्हें

- मार्ग दिखाया फिर भी उन्होंने अंधे बने रहने को मार्ग दर्शन से प्रिय समझा। अन्ततः पकड़ लिया उन को अपमानकारी यातना की कड़क ने उस के कारण जो वह कर रहे थे।
18. तथा हम ने बचा लिया उन को जो ईमान लाये तथा (अवैज्ञा से) डरते रहे।
19. और जिस दिन अल्लाह के शत्रु नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे तो वह रोक लिये जायेंगे।
20. यहाँ तक की जब आजायेंगे उस (नरक) के पास तो साक्ष्य देंगे उन पर उन के कान तथा उन की आँखें और उन की खालें उस कर्म का जो वह किया करते थे।
21. और वे कहेंगे अपनी खालों से: क्यों साक्ष्य दिया तुम ने हमारे विरुद्ध? वह उत्तर दैगी कि हमें बोलने की शक्ति प्रदान की है उस ने जिस ने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति दी है। तथा उसी ने तुम्हें पैदा किया प्रथम बार और उसी की ओर तुम सब फेरे जा रहे हो।
22. तथा तुम (पाप करते समय छुपते नहीं थे कि कहीं साक्ष्य न दें तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँख एवं तुम्हारी खालें। परन्तु तुम समझते रहे कि अल्लाह नहीं जानता उस में से अधिकतर बातों को जो तुम करते हो।
23. इसी कुविचार ने जो तुम ने किया अपने पालनहार के विषय में तुम्हें नाश कर दिया। और तुम विनाशों में हो गये।
24. तो यदि वे धैर्य रखें तब भी नरक ही उन का आवास है। और यदि वे क्षमा माँगे तब भी वे क्षमा नहीं किये जायेंगे।
25. और हम ने बना दिये उन के लिये ऐसे साथी जो शोभनीय बना रहे थे उन के लिये उन के अगले तथा पिछले दुष्कर्माँ को। तथा सिद्ध हो गया उन पर अल्लाह (की यातना) का वचन उन समुदायों में जो गुज़र गये इन से पूर्व जिन्हों तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षतिग्रस्त थे।
26. तथा काफ़िरों ने कहा कि इस कुर्आन को न सुनो। और कोलाहल (शोर) करो उस (के सुनाने) के समय। सम्भवतः तुम प्रभुत्वशाली हो जाओ।
27. तो हम अवश्य चखायेंगे उन को जो काफ़िर हो गये कड़ी यातना और अवश्य उन को कुफल देंगे उस दुष्कर्म का जो वे करते रहे।
28. यह अल्लाह के शत्रुओं का प्रतिकार नरक है। उन के लिये उस में स्थायी घर होंगे उस के बदले जो हमारी आयतों को नकार रहे हैं।
29. तथा वह कहेंगे जो काफ़िर हो गये कि हे हमारे पालनहार! हमें दिखा दे उन को जिन्होंने हमें कुपथ किया है जिन्हों तथा मनुष्यों में से। ताकि हम रोंद दें उन दोनों को अपने पैरों से। ताकि वह दोनों अधिक नीचे हो जायें।
30. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर इसी पर स्थित रह गये तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि भय न करो, और न उदासीन रहो, तथा उस स्वर्ग से प्रसन्न हो जाओ जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।

31. हम तुम्हारे सहायक है संसारिक जीवन में तथा परलोक में, और तुम्हारे लिये उस (स्वर्ग) में वह चीज है जो तुम्हारा मन चाहे तथा उस में तुम्हारे लिये वह है जिस की तुम माँग करोगे।
32. अतिथि-सत्कार स्वरूप अति क्षमी दयावान् की ओर से।
33. और किस की बात उस से अच्छी होगी जो अल्लाह की ओर बुलाये तथा सदाचार करो। और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ।
34. और समान नहीं होते पुण्य तथा पाप, आप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो। तो सहसा आप के तथा जिस के बीच बैर हो मानो वह हार्दिक मित्र हो गया।
35. और यह गुण उन्हीं को प्राप्त होता है जो सहन करें, तथा उन्हीं को होता है जो बड़े भाग्यशाली हों।
36. और यदि आप को शैतान की ओर से कोई संशय हो तो अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।
37. तथा उस की निशानियों में से है रात्रि तथा दिवस तथा सूर्य तथा चन्द्रमा, तुम सज्दा न करो सूर्य तथा चन्द्रमा को। और सज्दा करो उस अल्लाह को जिस ने पैदा किया है उन को, यदि तुम उसी (अल्लाह) की इबादत (वंदना) करते हो।
38. तथा यदि वह अभिमान करें तो जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के पास हैं वह उस की पवित्रता का वर्णन करते रहते हैं रात्रि तथा दिवस में,

और वह थकते नहीं हैं।

39. तथा उस की निशानियों में से है कि आप देखते हैं धरती को सहमी हुई। फिर जैसे ही हम ने उस पर जल बरसाया तो वह लहलहाने लगी तथा उभर गई। निश्चय जिस ने जीवित किया है उसे अवश्य वही जीवित करने वाला है मुर्दा को। वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।
40. जो टेढ़ निकालते हैं हमारी आयतों में वह हम पर छुपे नहीं रहते। तो क्या जो फेंक दिया जायेगा अग्नि में उत्तम है अथवा जो निर्भय हो कर आयेगा प्रलय के दिन? करो जो चाहो, वास्तव में वह जो तुम करते हो उसे देख रहा है।
41. निश्चय जिन्होंने कुफ़र कर दिया इस शिक्षा (कुआन) के साथ जब आ गई उन के पास। और सच्च यह है कि यह एक अति सम्मानित पुस्तक है।
42. नहीं आ सकता झूठ इस के आगे से और न इस के पीछे से। उतरा है तत्वज्ञ प्रशंसित (अल्लाह) की ओर से।
43. आप से वही कहा जा रहा है जो आप से पूर्व रसूलों से कहा गया। वास्तव में आप का पालनहार क्षमा करने (तथा) दुःखदायी यातना देने वाला है।
44. और यदि हम इसे बनाते अर्बी (के अतिरिक्त किसी) अन्य भाषा में तो वह अवश्य कहते कि क्यों नहीं खोल दी गई उस की आयतें? यह क्या कि (पुस्तक) ग़ैर अर्बी और (नबी) अर्बी? आप कह दें कि वह उन के लिये जो ईमान लाये मार्गदर्शन तथा आरोग्यकर है। और जो ईमान न

लायें उन के कानों में बोझ है और वह उन पर अंधापन है। और वही पुकारे जा रहे हैं दूर स्थान से।

45. तथा हम प्रदान कर चुके हैं मूसा को पुस्तक (तौरात)। तो उस में भी विभेद किया गया, और यदि एक बात पहले ही से निर्धारित न होती आप के पालनहार की ओर से, तो निर्णय कर

दिया जाता उन के बीच। निस्संदेह वह उस के विषय में संदेह में डूँवाडोल हैं।

46. जो सदाचार करेगा तो वह अपने ही लाभ के लिये करेगा। और जो दुराचार करेगा तो उस का दुष्परिणाम उसी पर होगा। और आप का पालनहार तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है भक्तों पर।



47. उसी की ओर फेरा जाता है प्रलय का ज्ञान। तथा नहीं निकलते कोई फल अपने गाँधों से और नहीं गर्भ धारण करती कोई मादा, और न जन्म देती है, परन्तु उस के ज्ञान से। और जिस दिन वह पुकारेगा उन को कि कहीं है मेरे साझी? तो वह कहेंगे कि हम ने तुझे बता दिया था कि हम में से कोई उस का गवाह नहीं है।
48. और खो जायेंगे उन से वे जिन्हें पुकारते थे इस से पूर्वा तथा वह विश्वास कर लेंगे कि नहीं है उन के लिये कोई शरण का स्थान।
49. नहीं थकता मनुष्य भलाई (सुख) की प्रार्थना से और यदि उसे पहुँच जाये बुराई (दुःख) तो (हताश) निराश हो जाता है।
50. और यदि हम उसे चखा दें अपनी दया दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कह देता है कि मैं तो इस के योग्य ही था। और मैं नहीं समझता कि प्रलय होनी है। और यदि मैं पुनः अपने पालनहार की ओर गया तो निश्चय ही मेरे लिये उस के पास भलाई होगी। तो हम अवश्य अवगत कर देंगे काफ़िरो को उन के कर्मों से तथा उन्हें अवश्य घोर यातना चखायेंगे।
51. तथा जब हम उपकार करते हैं मनुष्य पर तो वह विमुख हो जाता है तथा अकड़ जाता है। और जब उसे दुःख पहुँचे तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करने लगता है।
52. आप कह दें: भला तुम यह तो बताओ कि यदि यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर

से हो फिर तुम कुफ़र कर जाओ उस के साथ, तो कौन उस से अधिक कुपथ होगा जो उस के विरोध में दूर तक चला जाये?

53. हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर। यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सचच है। और क्या यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी (गवाह) है?
54. सावधान! वही संदेह में हैं अपने पालनहार से मिलने के विषय से। सावधान! वही (अल्लाह) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है।

सूरह शूरा - 42

सूरह शूरा के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 53 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीम।
2. ऐन, सीन, काफ़।
3. इसी प्रकार (अल्लाह) ने प्रकाशना भेजी है आप, तथा उन (रसूलों) की ओर जो आप से पूर्व हुये हैं। अल्लाह सब से प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।
4. उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है और वह बड़ा उच्च- महान् है।
5. समीप है कि आकाश फट पड़े

अपने ऊपर से, जब कि फ़रिश्ते पवित्रता का गान करते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ, तथा क्षमायाचना करते हैं उन के लिये जो धरती में हैं। सुनो! वास्तव में अल्लाह ही अत्यंत क्षमा करने तथा दया करने वाला है।

6. तथा जिन लोगों ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा संरक्षक, अल्लाह ही उन पर निरीक्षक (निगर्त) है और आप उन के उत्तर दायी नहीं हैं।
7. तथा इसी प्रकार हम ने बह्यी (प्रकाशना) की है आप की ओर अबी कुर्आन की। ताकि आप सावधान कर दें मक्का वासियों को, और जो उस के आस-पास हैं। तथा सावधान कर दें एकत्र होने के दिन से जिस दिन के होने में कोई संशय नहीं। एक पक्ष स्वर्ग में तथा एक पक्ष नरक में होगा।
8. और यदि अल्लाह चाहता तो सभी को एक समुदाय बना देता। परन्तु वह प्रवेश कराता है जिसे चाहे अपनी दया में। तथा अत्याचारियों का कोई संरक्षक तथा सहायक न होगा।
9. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा संरक्षक? तो अल्लाह ही संरक्षक है और जीवित करेगा मुर्दों को। और वही जो चाहे कर सकता है।
10. और जिस बात में भी तुम ने विभेद किया है उस का निर्णय अल्लाह ही को करना है। वही अल्लाह मेरा पालनहार है, उसी पर मैं ने भरोसा किया है तथा उसी की ओर ध्यान मग्न होता हूँ।

11. वह आकाशों तथा धरती का रचयिता है। उस ने बनाये हैं तुम्हारी जाति में से तुम्हारे जोड़े तथा पशुओं के जोड़े। वह फैला रहा है तुम को इस प्रकार। उस की कोई प्रतिमा नहीं। और वह सब कुछ सुनने-जानने वाला है।
12. उसी के अधिकार में है आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ। वह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहे तथा नाप कर देता है। वास्तव में वही प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।
13. उस ने नियत किया है तुम्हारे लिये वही धर्म जिस का आदेश दिया था नूह को, और जिसे बह्यी किया है आप की ओर, तथा जिस का आदेश दिया था इब्राहीम तथा मूसा और ईसा को। कि इस धर्म की स्थापना करो और इस में भेद भाव न करो। यही बात अप्रिय लगी है मुश्रिकों को जिस की ओर आप बुला रहे हैं। अल्लाह ही चुनता है इस के लिये जिसे चाहे, और सीधी राह उसी को दिखाता है जो उसी की ओर ध्यान मग्न हो।
14. और उन्होंने इस के पश्चात् ही विभेद किया जब उन के पास ज्ञान आ गया आपस के विरोध के कारण, तथा यदि एक बात पहले से निश्चित न होती आप के पालनहार की ओर से तो अवश्य निर्णय कर दिया गया होता उन के बीच। और जो पुस्तक के उत्तराधिकारी बनाये गये उन के पश्चात् उस की ओर से संदेह में उलझे हुये हैं।

15. तो आप लोगों को इसी (धर्म) की ओर बुलाते रहें तथा जैसे आप को आदेश दिया गया है उस पर स्थित रहें। और उन की इच्छाओं पर न चलें। तथा कह दें कि मैं ईमान लाया उन सभी पुस्तकों पर जो अल्लाह ने उतारी हैं। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है। हमारे लिये हमारे कर्म हैं तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह ही हमें एकत्र करेगा तथा उसी की ओर सब को जाना है।
16. तथा जो लोग झगड़ते हैं अल्लाह (के धर्म के बारे) में जब कि उसे मान लिया गया है। उन का विवाद (कुतर्क) असत्य है अल्लाह के समीप, तथा उन्हीं पर क्रोध है और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।
17. अल्लाह ही ने उतारी है सब पुस्तकें सत्य के साथ तथा तराजू को। और आप को क्या पता शायद प्रलय का समय समीप हो।
18. शीघ्र माँग कर रहे हैं उस (प्रलय) की जो ईमान नहीं रखते उस पर। और जो ईमान लाये हैं वह उस से डर रहे हैं तथा विश्वास रखते हैं कि वह सच्च है। सुनो! निश्चय जो विवाद कर रहे हैं प्रलय के विषय में वह कुपथ में बहुत दूर चले गये हैं।
19. अल्लाह बड़ा दयालु है अपने भक्तों पर। वह जीविका प्रदान करता है जिसे चाहे। तथा वह बड़ा प्रबल प्रभावशाली है।
20. जो आखिरत (परलोक) की खेती चाहता हो तो हम उस के लिये उस की खेती बढ़ा देते हैं। और जो संसार की खेती चाहता हो तो हम उसे उस में से कुछ दे देते हैं। और उस के लिये परलोक में कोई भाग नहीं।
21. क्या इन (मुशरिकों) के कुछ ऐसे साझी हैं जिन्होंने उन के लिये कोई ऐसा धार्मिक नियम बना दिया है जिस की अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है? और यदि निर्णय की बात निश्चित न होती तो (अभी) इन के बीच निर्णय कर दिया जाता। तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये ही दुःखदायी यातना है।
22. तुम अत्याचारियों को डरते हुये देखोगे उन दुष्कर्मों के कारण जो उन्होंने किये हैं। और वह उन पर आ कर रहेगा। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये वे स्वर्ग के बागों में होंगे। वह जिस की इच्छा करेंगे उन के पालनहार के यहाँ मिलेगा। यही बड़ी दया है।
23. यही वह (दया) है जिस की शुभसूचना देता है अल्लाह अपने भक्तों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये। आप कह दें कि मैं नहीं माँगता हूँ इस पर तुम से कोई बदला उस प्रेम के सिवा जो संबन्धियों में (होता) है। तथा जो व्यक्ति कोई पुण्य करेगा हम उस के पुण्य को अधिक कर देंगे। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला गुणग्राही है।
24. क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है? तो यदि अल्लाह चाहे तो आप के दिल पर मुहर लगा दे। और अल्लाह मिटा देता है झूठ को और सच्च को अपने आदेशों

- द्वारा सच्च कर दिखाता है। वह सीनों (दिलों) के भेदों का जानने वाला है।
25. वही है जो स्वीकार करता है अपने भक्तों की तौबा। तथा क्षमा करता है दोषों को और जानता है जो कुछ तुम करते हो।
26. और उन की प्रार्थना स्वीकार करता है जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उन्हें अधिक प्रदान करता है अपनी दया से। और काफ़िरोँ ही के लिये कड़ी यातना है।
27. और यदि फैला देता अल्लाह जीविका अपने भक्तों के लिये तो वह विद्रोह कर देते धरती में। परन्तु वह उतारता है एक अनुमान से जैसे वह चाहता है। वास्तव में वह अपने भक्तों से भली-भाँति सूचित है। (तथा) उन्हें देख रहा है।
28. तथा वही है जो वर्षा करता है इस के पश्चात् की लोग निराश हो जायें। तथा फैला देता है अपनी दया। और वही संरक्षक सराहनीय है।
29. तथा उस की निशानियों में से है आकाशों और धरती की उत्पत्ति, तथा जो फैलाये हैं उन दोनों में जीव। और वह उन्हें एकत्र करने पर जब चाहे सामर्थ्य रखने वाला है।
30. और जो भी दुःख तुम को पहुँचता है वह तुम्हारे अपने कर्तूत से पहुँचता है। तथा वह क्षमा कर देता है तुम्हारे बहुत से पापों को।
31. और तुम विवश करने वाले नहीं हो धरती में, और न तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक और न सहायक है।
32. तथा उस के (सामर्थ्य) की निशानियों में से है चलती हुई नाव सागरों में पर्वतों के समान।
33. यदि वह चाहे तो रोक दे वायु को और वह खड़ी रह जायें उस के ऊपर। निश्चय इस में बड़ी निशानियाँ हैं प्रत्येक बड़े धैर्यवान कृतज्ञ के लिये।
34. अथवा विनाश कर दे उन (नावों) का उन के कर्तूतों के बदले। और वह क्षमा करता है बहुत कुछ।
35. तथा वह जानता है उन को जो झगड़ते हैं हमारी आयतों में। उन्हीं के लिये कोई भागने का स्थान नहीं है।
36. तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह संसारिक जीवन का संसाधन है तथा जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और स्थायी है उन के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये तथा अपने पालनहार ही पर भरोसा रखते हैं।
37. तथा जो बचते हैं बड़े पापों तथा निर्लज्जा के कर्मों से। और जब क्रोध आ जाये तो क्षमा कर देते हैं।
38. तथा जिन्होंने अपने पालनहार के आदेश को मान लिया तथा स्थापना की नमाज़ की और उन के प्रत्येक कार्य आपस के विचार-विमर्श से होते हैं। और जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।
39. और यदि उन पर अत्याचार किया जाये तो वह बराबरी का बदला लेते हैं।
40. और बुराई का प्रतिकार (बदला) बुराई है उसी जैसी। फिर जो क्षमा कर दे तथा सुधार कर ले तो उस

का प्रतिफल अल्लाह के ऊपर है। वास्तव में वह प्रेम नहीं करता है अत्याचारियों से।

41. तथा जो बदला लें अपने ऊपर अत्याचार होने के पश्चात् तो उन पर कोई दोष नहीं है।
42. दोष केवल उन पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं। और नाहक ज़मीन में उपद्रव करते हैं। उन्हीं के लिये दर्दनाक यातना है।
43. और जो सहन करे तथा क्षमा कर दे तो यह निश्चय बड़े साहस का कार्य है।
44. तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तो उस का कोई रक्षक नहीं है उस के पश्चात्। तथा आप देखेंगे अत्याचारियों को जब वह देखेंगे यातना को, वह कह रहे होंगे: क्या बापसी की कोई राह है?
45. तथा आप उन्हें देखेंगे कि वह प्रस्तुत किये जा रहे हैं नरक पर सिर झुकाये अपमान के कारण। वे देख रहे होंगे कन्धियों से। तथा कहेंगे जो ईमान लाये कि वास्तव में घाटे में वही है जिन्होंने घाटे में डाल दिया स्वयं को तथा अपने परिवार को प्रलय के दिन। सुनो! अत्याचारी ही स्थाई यातना में होंगे।
46. तथा नहीं होंगे उन के कोई सहायक जो अल्लाह के मुक़ाबले में उन की सहायता करें और जिसे कुपथ कर दे अल्लाह, तो उस के लिये कोई मार्ग नहीं।
47. मान लो अपने पालनहार की बात इस से पूर्व कि आ जाये वह दिन जिसे टलना नहीं है अल्लाह की ओर से। नहीं होगा तुम्हारे लिये कोई

शरण का स्थान उस दिन और न छिप कर अन जान बन जाने का।

48. फिर भी यदि वह विमुख हों तो (हि नबी!) हम ने नहीं भेजा है आप को उन पर रक्षक बना कर। आप का दायित्व केवल सदिश पहुँचा देना है। और वास्तव में जब हम चखा देते हैं मनुष्य को अपनी दया तो वह इतराने लगता है उस पर। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुख उन के कर्तूत के कारण तो मनुष्य बड़ा कृतघ्न बन जाता है।
49. अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह पैदा करता है जो चाहता है। जिसे चाहे पुत्रियाँ प्रदान करता है तथा जिसे चाहे पुत्र प्रदान करता है।
50. अथवा उन्हें पुत्र और पुत्रियाँ मिला कर देता है। और जिसे चाहे बाँझ बना देता है। वास्तव में वह सब कुछ जानने वाला (तथा) सामर्थ्य रखने वाला है।
51. और नहीं संभव है किसी मनुष्य के लिये कि बात करे अल्लाह उस से परन्तु बह्वी द्वारा, अथवा पर्दे के पीछे से अथवा भेज दे कोई रसूल (फ़रिश्ता) जो बह्वी करे उस की अनुमति से जो कुछ वह चाहता हो। वास्तव में वह सब से ऊँचा (तथा) सभी गुण जानने वाला है।
52. और इसी प्रकार हम ने बह्वी (प्रकाशना) की है आप की ओर अपने आदेश की रूह (कुर्आन)। आप नहीं जानते थे कि पुस्तक क्या है तथा और ईमान क्या है। परन्तु हम ने इसे बना दिया एक ज्योति। हम मार्ग दिखाते हैं इस के द्वारा जिसे चाहते हैं अपने भक्तों में से। और वस्तुतः आप

सीधी राह दिखा रहे हैं।

53. अल्लाह की राह जिस के अधिकार में है जो कुछ आकाशों में तथा जो कुछ धरती में है। सावधान! अल्लाह ही की ओर फिरते हैं सभी कार्य।

सूरह जुळरुफ - 43

सूरह जुळरुफ के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 89 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीमा।
2. शपथ है प्रत्यक्ष (खुली) पुस्तक का।
3. इसे हम ने बनाया है अर्बी कुर्आन ताकि वह इसे समझ सकें।
4. तथा वह मूल पुस्तक में है हमारे पास, बड़ा उच्च तथा ज्ञान से परिपूर्ण है।
5. तो क्या हम फेर दें इस शिक्षा को तुम से इसलिये कि तुम उल्लंघनकारी लोग हो?
6. तथा हम ने भेजे हैं बहुत से नबी (गुज़री हुयी) जातियों में।
7. और नहीं आता रहा उन के पास कोई नबी परन्तु वह उस के साथ उपहास करते रहे।
8. तो हम ने विनाश कर दिया इन से अधिक शक्तिवानों का तथा गुज़र चुका है अगलों का उदाहरण।
9. और यदि आप प्रश्न करें उन से कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा

धरती को? तो अवश्य कहेंगे: उन्हें पैदा किया है बड़े प्रभावशाली सब कुछ जानने वाले ने।

10. जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को पालना। और बनाये उस में तुम्हारे लिये मार्ग ताकि तुम मार्ग पा सको।
11. तथा जिस ने उतारा आकाश से जल एक विशेष मात्रा में फिर जीवित कर दिया उस के द्वारा मुर्दा भूमी को। इसी प्रकार तुम (धरती से) निकाले जाओगे।
12. तथा जिस ने पैदा किये सब प्रकार के जोड़े, तथा बनाई तुम्हारे लिये नवकायें तथा पशु जिन पर तुम सवार होते हो।
13. ताकि तुम सवार हो उन के ऊपर, फिर याद करो अपने पालनहार के प्रदान को जब सवार हो जाओ उस पर और यह कहो: पवित्र है वह जिस ने वश में कर दिया हमारे लिये इस को। अन्यथा हम इसे वश में नहीं कर सकते थे।
14. तथा हम अवश्य ही अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
15. और बना लिया उन्होंने उस के भक्तों में से कुछ को उस का अंश। वास्तव में मनुष्य खुला कृतघ्न है।
16. क्या अल्लाह ने उस में से जो पैदा करता है, पुत्रियाँ बना ली हैं तथा तुम्हें विशेष कर दिया है पुत्रों के साथ?
17. जब कि उन में से किसी को शुभसूचना दी जाये उस (के जन्म लेने) की जिस का उस ने उदाहरण दिया है अत्यन्त कृपाशील के लिये तो उस का मुख काला हो जाता है। और शोक से भर जाता है।

18. क्या (अब्राहम के लिये) वह है जिस का पालन-पोषण अभूषण में किया जाता है। तथा वह विवाद में खुल कर बात नहीं कर सकती।
19. और उन्होंने बना दिया फरिश्तों को जो अत्यंत कृपाशील के भक्त है पुत्रियाँ। क्या वह उपस्थित थे उन की उत्पत्ति के समय? लिख ली जायेगी उन की गवाही और उन से पूछ होगी।
20. तथा उन्होंने कहा कि यदि अत्यंत कृपाशील चाहता तो हम उन की इबादत नहीं करते। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वह केवल तीर तुम्हें चला रहे हैं।
21. क्या हम ने उन्हें प्रदान की है कोई पुस्तक इस से पहले, जिसे वह दृढ़ता से पकड़े हुये है।
22. बल्कि यह कहते हैं कि हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।
23. तथा (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी बस्ती में कोई सावधान करने वाला परन्तु कहा उस के सुखी लोगों ने: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम निश्चय उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।
24. नबी ने कहा: क्या (तुम उन्हीं का अनुगमन करोगे) यद्यपि मैं लाया हूँ तुम्हारे पास उस से अधिक सीधा मार्ग जिस पर तुम ने पाया है अपने पूर्वजों को? तो उन्होंने कहा: हम जिस (धर्म) के साथ तुम भेजे गये हो उसे मानने वाले नहीं हैं।
25. अन्ततः हम ने बदला चुका लिया उन से। तो देखो कि कैसा रहा झुठलाने वालों का दुष्परिणाम।
26. तथा याद करो, जब कहा इबराहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति से: निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की वंदना तुम करते हो।
27. उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है। वही मुझे राह दिखायेगा।
28. तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को अपनी संतान में ताकि वह (शिरक से) बचते रहें।
29. बल्कि मैं ने इन को तथा इन के बाप दादा को जीवन का सामान दिया। यहाँ तक कि आ गया उन के पास सत्य (कुआन) और एक खुला रसूल।
30. तथा जब आ गया उन के पास सत्य तो उन्होंने कह दिया कि यह जादू है तथा हम इसे मानने वाले नहीं हैं।
31. तथा उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारा गया यह कुआन दो बस्तियों में से किसी बड़े व्यक्ति पर।
32. क्या वही बाँटते हैं आप के पालनहार की दया? हम ने बाँटा है उन के बीच उन की जीविका को संसारिक जीवन में। तथा हम ने उच्च किया है उन में से एक को दूसरे पर कई श्रेणियाँ। ताकि एक-दूसरे से सेवा कार्य लें, तथा आप के पालनहार की दया उस से उत्तम है जिसे वह इकट्ठा कर रहे हैं।
33. और यदि यह बात न होती कि सभी लोग एक ही नीति पर हो जाते तो हम अवश्य बना देते उन के लिये जो कुफ़ करते हैं अत्यंत कृपाशील के साथ उन के घरों की छतें चाँदी की

- तथा सीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते हैं।
34. तथा उन के घरों के द्वार, और तख्त जिन पर वह तकिये लगाये रहते हैं।
35. तथा बना देते शोभा। नहीं है यह सब कुछ परन्तु संसारिक जीवन के सामाना। तथा आखिरत (परलोक) आप के पालनहार के यहाँ केवल आज्ञाकारियों के लिये है।
36. और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) के स्मरण से अर्धा हो जाता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उस का साथी हो जाता है।
37. और वह (शैतान) उन को रोकते हैं सीधी राह से। तथा वह समझते हैं कि वे सीधी राह पर हैं।
38. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो यह कामना करेगा कि मेरे तथा तेरे (शैतान के) बीच पश्चिम तथा पूर्व की दूरी होती। तू बुरा साथी है।
39. (उन से कहा जायेगा): और तुम्हें कदापि कोई लाभ नहीं होगा आज, जब कि तुम ने अत्याचार कर लिया है। वास्तव में तुम सब यातना में साझी रहोगे।
40. तो (हे नबी!) क्या आप सुना लेंगे बहरों को या सीधी राह दिखा देंगे अर्धों को तथा जो खुले कुपथ में हों।
41. फिर यदि हम आप को (संसार से) ले जायें तो भी हम उन से बदला लेने वाले हैं।
42. अथवा आप को दिखा दें जिस (यातना) का हम ने उन को वचन

दिया है तो निश्चय हम उन पर सामर्थ्य रखने वाले हैं।

43. तो (हे नबी!) आप दृढ़ता से पकड़े रहें उसे जो हम आप की ओर वही कर रहे हैं। वास्तव में आप सीधी राह पर हैं।
44. निश्चय यह (कुर्आन) आप के लिये तथा आप की जाति के लिये एक शिक्षा है। और जल्द ही तुम से प्रश्न किया जायेगा।
45. तथा हे नबी! आप पूछ लें उन से जिन्हें हम ने भेजा है आप से पहले अपने रसूलों में से कि क्या हम ने बनाये हैं अत्यंत कृपाशील के अतिरिक्त वंदनीय जिन की वंदना की जाये।
46. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उस ने कहा: वास्तव में, मैं सर्वलोक के पालनहार का रसूल हूँ।
47. और जब वह उन के पास लाया हमारी निशानियाँ तो सहसा वह उन की हँसी उड़ाने लगे।
48. तथा हम उन को एक से बढ़ कर एक निशानी दिखाते रहे। और हम ने पकड़ लिया उन्हें यातना में ताकि वह (ठट्टा) से रुक जायें।
49. और उन्होंने कहा: हे जादूगर! प्रार्थना कर हमारे लिये अपने पालनहार से उस वचन के आधार पर जो तुझ से किया है। वास्तव में हम सीधी राह पर आ जायेंगे।
50. तो जैसे ही हम ने दूर किया उन से यातना को, तो वह सहसा वचन तोड़ने लगे।

51. तथा पुकारा फिरऔन ने अपनी जाति में। उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्या नहीं है मेरे लिये मिस्र का राज्य तथा यह नहरें जो बह रही हैं मेरे नीचे से? तो क्या तुम देख नहीं रहे हो।
52. मैं अच्छा हूँ या वह जो अपमानित (हीन) है और खुल कर बोल भी नहीं सकता?
53. क्यों नहीं उतारे गये उस पर सोने के कंगन अथवा आये फिरिश्ते उस के साथ पवित्र बाँधे हुये?
54. तो उस ने झाँसा दे दिया अपनी जाति को और सब ने उस की बात मान ली। वास्तव में वह थे ही अवज्ञाकारी लोग।
55. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित कर दिया तो हम ने उन से बदला ले लिया और सब को डुबो दिया।
56. और बना दिया हम ने उन को गया गुज़रा और एक उदाहरण पश्चात के लोगों के लिये।
57. तथा जब दिया गया मर्यम के पुत्र का उदाहरण तो सहसा आप की जाति उस से प्रसन्न हो कर शोर मचाने लगी।
58. तथा मुश्रिकों ने कहा कि हमारे देवता अच्छे हैं या वे? उन्होंने नहीं दिया यह (उदाहरण) आप को परन्तु कुतर्क (झगड़ने) के लिये। बल्कि वह हैं ही बड़े झगड़ालू लोग।
59. नहीं है वह (ईसा) परन्तु एक भक्त (दास) जिस पर हम ने उपकार किया। तथा उसे इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बनाया।
60. और यदि हम चाहते तो बना देते तुम्हारे बदले फिरिश्ते धरती में, जो एक-दूसरे का स्थान लेते।
61. तथा वास्तव में वह (ईसा) एक बड़ा लक्षण है प्रलय का। अतः कदापि सिद्धि न करो प्रलय के विषय में। और मेरी ही बात मानो। यही सीधी राह है।
62. तथा तुम्हें कदापि न रोक दे शैतान। निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।
63. और जब आ गया ईसा खुली निशानियाँ ले कर तो कहा: मैं लाया हूँ तुम्हारे पास ज्ञान और ताकि उजागर कर दूँ तुम्हारे लिये कुछ वह बातें जिन में तुम विभेद कर रहे हो। अतः अल्लाह से डरो और मेरा ही कहा मानो।
64. वास्तव में अल्लाह ही मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है। अतः उसी की बंदना (इबादत) करो यही सीधी राह है।
65. फिर विभेद कर लिया गिरोहों ने आपस में। तो विनाश है उन के लिये जिन्होंने अत्याचार किया दुःखदायी दिन की यातना से।
66. क्या वह बस इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रलय उन पर सहसा आ पड़े और उन्हें (उस का) संवेदन (भी) न हो?
67. सभी मित्र उस दिन एक-दूसरे के शत्रु हो जायेंगे आज्ञाकारियों के सिवा।
68. हे मेरे भक्तो! कोई भय नहीं है तुम पर आज। और न तुम उदासीन होगे।
69. जो ईमान लाये हमारी आयतों पर तथा आज्ञाकारी बन के रहे।

70. प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में तुम तथा तुम्हारी पत्नियाँ। तुम्हें प्रसन्न रखा जायेगा।
71. फिरायी जायेंगी उन पर सोने की धालें तथा प्यालों और उस में वह सब कुछ होगा जिसे उन का मन चाहेगा और जिसे उन की आँखें देख कर आनन्द लेंगी। और तुम सब उस में सदैव रहोगे।
72. और यह स्वर्ग है जिस के तुम उत्तराधिकारी बनाये गये हैं अपने कर्मों के बदले जो तुम कर रहे थे।
73. तुम्हारे लिये इस में बहुत से मेवे हैं जिन में से तुम खाते रहोगे।
74. निःसन्देह अपराधी नरक की यातना में सदावासी होंगे।
75. उन से (यातना) हल्की नहीं की जायेगी तथा वे उस में निराश होंगे।
76. और हम ने अत्याचार नहीं किया उन पर, परन्तु वही अत्याचारी थे।
77. तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक! हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार! वह कहेगा: तुम्हें इसी दशा में रहना है।
78. (अल्लाह कहेगा): हम तुम्हारे पास सत्य लाये किन्तु तुम में से अधिकतर को सत्य अप्रिय था।
79. क्या उन्होंने किसी बात का निर्णय कर लिया है? तो हम भी निर्णय कर देंगे।
80. क्या वह समझते हैं की हम नहीं सुनते हैं उन की गुप्त बातों तथा प्रामर्श को? क्यों नहीं, बल्कि

हमारे फरिश्ते उन के पास ही लिख रहे हैं।

81. (हे नबी!) आप उन से कह दें कि यदि अत्यंत कृपाशील (अल्लाह)की कोई संतान होती तो सब से पहले मैं उस का पुजारी होता।
82. पवित्र है आकाशों तथा धरती का पालनहार सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो वह कहते हैं।
83. तो आप उन्हें छोड़ दें, वह वाद-विवाद तथा खेल-कूद करते रहें, यहाँ तक की अपने उस दिन से मिल जायें जिस से उन्हें डराया जा रहा है।
84. वही है जो आकाश में बंदनीय और धरती में बंदनीय है। और वही हिक्मत और ज्ञान वाला है।
85. शुभ है वह जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा जो कुछ दोनों के मध्य है। तथा उसी के पास प्रलय का ज्ञान है। और उसी की ओर तुम सब प्रत्यागत किये जाओगे।
86. तथा नहीं अधिकार रखते हैं जिन्हें वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त सिफ़ारिश का। हाँ (सिफ़ारिश के योग्य वे हैं) जो सत्य की गवाही दें, और (उसे) जानते भी हों।
87. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है उन को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो फिर वह कहाँ फिरे जा रहे हैं?
88. तथा रसूल की यह बात कि, हे मेरे पालनहार! यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

89. तो आप उन से विमुख हो जायें, तथा कह दें कि सलाम है। शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

सूरह दुखान - 44

सूरह दुखान के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 59 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीमा।
2. शपथ है इस खुली पुस्तक की।
3. हम ने ही उतारा है इस को एक शुभ रात्री में। वास्तव में हम सावधान करने वाले हैं।
4. उसी (रात्रि) में निर्णय किया जाता है प्रत्येक सुदृढ़ कर्म का।
5. यह (आदेश) हमारे पास से है। हम ही भेजने वाले हैं रसूलों को।
6. आप के पालनहार की दया से, वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
7. जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है तथा जो कुछ उन दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास करने वाले हो।
8. नहीं है कोई बंदनीय परन्तु वही जो जीवन देता तथा मारता है। तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे गुज़रे हुये पूर्वजों का पालनहार।
9. बल्कि वह (मुश्रिक) संदेह में खेल रहे हैं।

10. तो आप प्रतीक्षा करें उस दिन जब आकाश खुला धुवाँ लायेगा।
11. जो छा जायेगा सब लोगों पर। यही दुःखदायी यातना है।
12. (वे कहेंगे): हमारे पालनहार हम से यातना दूर कर दे। निश्चय हम ईमान लाने वाले हैं।
13. और उन के लिये शिक्षा का समय कहाँ रह गया? जब कि उन के पास आ गये एक रसूल (सत्य को) उजागर करने वाले।
14. फिर भी वह आप से मुँह फेर गये तथा कह दिया कि एक सिखाया हुआ पागल है।
15. हम दूर कर देने वाले हैं कुछ यातना, वास्तव में तुम फिर अपनी प्रथम स्थिति पर आ जाने वाले हो।
16. जिस दिन हम अत्यंत कड़ी पकड़ में ले लेंगे। तो हम निश्चय बदला लेने वाले हैं।
17. तथा हम ने परीक्षा ली इन से पूर्व फिरऔन की जाति की। तथा उन के पास एक आदरणीय रसूल आया।
18. कि मुझे सौंप दो अल्लाह के भक्तों को। निश्चय मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।
19. तथा अल्लाह के विपरीत घमंड न करो। मैं तुम्हारे सामने खुला प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ।
20. तथा मैं ने शरण ली है अपने पालनहार की तथा तुम्हारे पालनहार की इस से कि तुम मुझ पर पथराव कर दो।

21. और यदि तुम मेरा विश्वास न करो तो मुझ से परे हो जाओ।
22. अन्ततः मूसा ने पुकारा अपने पालनहार को, कि वास्तव में यह लोग अपराधी हैं।
23. (हम ने आदेश दिया) कि निकल जा रातों-रात मेरे भक्तों को लेकर। निश्चय तुम्हारा पीछा किया जायेगा।
24. तथा छोड़ दे सागर को उस की दशा पर खुला। वास्तव में यह डूब जाने वाली सेना है।
25. वह छोड़ गये बहुत से बाग़ तथा जल स्रोत।
26. तथा खेतियाँ और सुखदायी स्थान।
27. तथा सुख के साधन जिन में वह आनन्द ले रहे थे।
28. इसी प्रकार हुआ। और हम ने उन का उत्तरधिकारी बना दिया दूसरे लोगों को।
29. तो नहीं रोया उन पर आकाश और न धरती, और न उन्हें अवसर (समय) दिया गया।
30. तथा हम ने बचा लिया इस्राईल की संतान को अपमानकारी यातना से।
31. फिरऔन से। वास्तव में वह चढ़ा हुआ उल्लघनकारियों में से था।
32. तथा हम ने प्रधानता दी उन को जानते हुये संसारवासियों पर।
33. तथा हम ने उन्हें प्रदान की ऐसी निशानियाँ जिन में खुली परीक्षा थी।
34. वास्तव में यह कहते हैं कि
35. हमें तो बस प्रथम बार मरना है तथा हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।
36. फिर यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को (जीवित कर के) ला दो।
37. यह अच्छे हैं अथवा तुम्हारे की जाति, तथा जो उन से पूर्व रहे हैं। हम ने उन का विनाश कर दिया। निश्चय वह अपराधी थे।
38. तथा हम ने आकाशों और धरती को एवं जो कुछ उन दोनों के बीच है खेल नहीं बनाया है।
39. हम ने नहीं पैदा किया है उन दोनों को परन्तु सत्य के आधार पर। किन्तु अधिकतर लोग इसे नहीं जानते हैं।
40. निःसंदेह निर्णय का दिन उन सब का निश्चित समय है।
41. जिस दिन कोई साथी किसी साथी के कुछ काम नहीं आयेगा और न उन की सहायता की जायेगी।
42. परन्तु जिस पर अल्लाह की दया हो जाये तो वास्तव में वह बड़ा प्रभावशाली दयावान है।
43. निःसंदेह ज़कूम (थोहड़) का वृक्षा।
44. पापियों का भोजन है।
45. पिघले हुये ताँबे जैसा, जो खौलेगा पेटों में।
46. गर्म पानी के खौलने के समान।
47. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो, तथा धक्का देते नरक के बीच तक पहुँचा दो।
48. फिर बहाओ उस के सिर के ऊपर

अत्यंत गर्म जल की यातना।

49. (तथा कहा जायेगा कि) चख, क्योंकि तू बड़ा आदरणीय सम्मानित था।
50. यही वह चीज़ है जिस में तुम संदेह कर रहे थे।
51. निःसंदेह आज्ञाकारी शान्ति के स्थान में होंगे।
52. बागों तथा जल स्रोतों में।
53. वस्त्र धारण किये हुये महीन तथा कोमल रेशम के एक-दूसरे के सामने (आसीन) होंगे।
54. इसी प्रकार होगा। तथा हम विवाह देंगे उन को हूरों से।
55. वह माँग करेंगे उस में प्रत्येक प्रकार के मेवों की निश्चिन्त हो कर।
56. वह उस स्वर्ग में मौत नहीं चखेंगे प्रथम (संसारिक) मौत के सिवा। तथा (अल्लाह) बचा देगा उन्हें नरक की यातना से।
57. आप के पालनहार की दया से, वही बड़ी सफलता है।
58. तो हम ने सरल कर दिया इस (कुआन) को आप की भाषा में ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
59. अतः आप प्रतीक्षा करें वह भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सूरह जासियह - 45

सूरह जासियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 37 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीमा।
2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह, सब चीज़ों और गुणों को जानने वाले की ओर से है।
3. वास्तव में आकाशों तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) हैं ईमान लाने वालों के लिये।
4. तथा तुम्हारी उत्पत्ति में तथा जो फैला दिये हैं उस ने जीव, बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हों।
5. तथा रात और दिन के आने- जाने में, तथा अल्लाह ने आकाश से जो जीविका उतारी है, फिर जीवित किया है उस के द्वारा धरती को उस के मरने के पश्चात् तथा हवाओं के फेरने में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो समझ-बूझ रखते हों।
6. यह अल्लाह की आयतें हैं जो वास्तव में हम तुम्हें सुना रहे हैं। फिर कौन सी बात रह गई है अल्लाह तथा उस के आयतों के पश्चात् जिस पर वह ईमान लायेंगे।
7. विनाश है प्रत्येक झूठे पापी के लिये।
8. जो अल्लाह की उन आयतों को जो उस के सामने पढ़ी जायें सुने, फिर

- भी वह अकड़ता हुआ (कुफ़र पर) अड़ा रहे, जैसे कि उन को सुना ही न हो। तो आप उसे दुःखदायी यातना की सूचना पहुँचा दें।
9. और जब उसे ज्ञान हो हमारी किसी आयत का तो उसे उपहास बना ले। यही है जिन के लिये अपमानकारी यातना है।
10. तथा उन के आगे नरक है। और नहीं काम आयेगा उन के जो कुछ उन्होंने कमाया है और न जिसे उन्होंने अल्लाह के सिवा संरक्षक बनाया है। और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।
11. यह (कुर्आन) मार्गदर्शन है। तथा जिन्होंने कुफ़र किया अपने पालनहार की आयतों के साथ तो उन्हीं के लिये यातना है दुःखदायी यातना।
12. अल्लाह ही ने बश में किया है तुम्हारे लिये सागर को ताकि नाव चले उस में उस के आदेश से। और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह (दया) की। और ताकि तुम उस के कृतज्ञ (आभारी) बनो।
13. तथा उस ने तुम्हारी सेवा में लगा रखा है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है सब को अपनी ओर से। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन के लिये जो सोच-विचार करें।
14. (हे नबी!) आप उन से कह दें जो ईमान लाये हैं कि क्षमा कर दें उन को जो आशा नहीं रखते हैं अल्लाह के दिनों की, ताकि वह बदला दे एक समुदाय को उन की कमाई का।
15. जिस ने सदाचार किया तो अपने भले के लिये किया। तथा जिस ने दुराचार किया तो अपने ऊपर किया। फिर तुम (प्रतिफल के लिये) अपने पालनहार की ओर ही फेरे जाओगे।
16. तथा हम ने प्रदान की इसाईल की संतान को पुस्तक, तथा राज्य और नबूवत (दूतत्व), और जीविका दी उन को स्वच्छ चीजों से तथा प्रधानता दी उन्हें (उन के युग के) संसारवासियों पर।
17. तथा दिये हम ने उन को खुले आदेश। तो उन्होंने विभेद नहीं किया परन्तु अपने पास ज्ञान आ जाने के पश्चात् आपस के द्वेष के कारण। निःसंदेह आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस बात में वह विभेद कर रहे हैं।
18. फिर (हे नबी!) हम ने कर दिया आप को एक खुले धर्म विधान पर, तो आप अनुसरण करें इस का, तथा न चले उन की आकांक्षाओं पर जो ज्ञान नहीं रखते।
19. वास्तव में वह आप के काम न आयेंगे अल्लाह के सामने कुछ। यह अत्याचारी एक-दूसरे के मित्र हैं। और अल्लाह आज्ञाकारियों का साथी है।
20. यह (कुर्आन) सूझ की बातें हैं सब मनुष्यों के लिये तथा मार्ग दर्शन एवं दया है उन के लिये जो विश्वास करें।
21. क्या समझ रखा है जिन्होंने दुष्कर्म किया है कि हम कर देंगे उन को उन के समान जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हैं कि उन का जीवन तथा मरण समान हो जाये। वह बुरा निर्णय कर रहे हैं।

22. तथा पैदा किया है अल्लाह ने आकाशों एवं धरती को न्याय के साथ और ताकि बदला दिया जाये प्रत्येक प्राणी को उस के कर्म का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
23. क्या आप ने उसे देखा जिस ने बना लिया अपना पूज्य अपनी इच्छा को। तथा कुपथ कर दिया अल्लाह ने उसे जानते हुये, और मुहर लगा दी उस के कान तथा दिल पर, और बना दिया उस की आँख पर आवरण (पर्दा)? फिर कौन है जो सीधी राह दिखायेगा उसे अल्लाह के पश्चात्? तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
24. तथा उन्होंने कहा कि हमारा यही संसारिक जीवन है। हम यहीं मरते और जीते हैं। और हमारा विनाश युग (काल) ही करता है। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वे केवल अनुमान की बात कर रहे हैं।
25. और जब पढ़ कर सुनाई जाती है उन्हें हमारी खुली आयतें तो उन का तर्क केवल यह होता है कि ला दो हमारे पूर्वजों को यदि तुम सच्चे हो।
26. आप कह दें: अल्लाह ही तुम्हें जीवन देता तथा मारता है, फिर एकत्र करेगा तुम्हें प्रलय के दिन जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिकतर लोग (इस तथ्य को) नहीं जानते।
27. तथा अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य और जिस दिन स्थापना होगी प्रलय की तो उस दिन क्षति में पड़ जायेंगे झूठे।
28. तथा देखेंगे आप प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ। प्रत्येक

समुदाय पुकारा जायेगा अपने कर्म-पत्र की ओर। आज बदला दिया जायेगा तुम लोगों को तुम्हारे कर्मों का।

29. यह हमारा कर्म-पत्र है जो बोल रहा है तुम पर सहीह बात। वास्तव में हम लिखवा रहे थे जो कुछ तुम कर रहे थे।
30. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन्हें प्रवेश देगा उन का पालनहार अपनी दया में यही प्रत्यक्ष (खुली) सफलता है।
31. परन्तु जिन्होंने कुफ्र किया (उन से कहा जायेगा): क्या मेरी आयतें तुम्हें पढ़ कर नहीं सुनाई जा रही थी? तो तुम ने घमंड किया, तथा तुम अपराधी बन कर रहे?।
32. तथा जब कहा जाता था कि निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है तथा प्रलय होने में तनिक भी संदेह नहीं तो तुम कहते थे कि प्रलय क्या है? हम तो केवल एक अनुमान रखते हैं तथा हम विश्वास करने वाले नहीं हैं।
33. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के दुष्कर्मों की बुराईयाँ और घेर लेगा उन को जिस का वह उपहास कर रहे थे।
34. और कहा जायेगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जैसे तुम ने इस दिन से मिलने को भुला दिया। और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है।
35. यह (यातना) इस कारण है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयतों को उपहास, तथा धोखे में रखा तुम्हें संसारिक जीवन ने। तो आज वे नहीं निकाले जायेंगे (यातना से)। और न उन्हें क्षमा माँगने का अवसर दिया जायेगा।

36. तो अल्लाह के लिये सब प्रशंसा है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार एवं सर्वलोक का पालनहार है।

37. और उसी की महिमा है आकाशों तथा धरती में और वही प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।



सूरह अहकाफ़ - 46

सूरह अहकाफ़ के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 35 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हा, मीमा।
2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी की ओर से है।
3. हम ने नहीं उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन के बीच है परन्तु सत्य के साथ एक निश्चित अवधि तक के लिये। तथा जो काफिर है उन्हें जिस बात से सावधान किया जाता है वे उस से मुँह मोड़े हुये हैं।
4. आप कहें कि भला देखो कि जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, तनिक मुझे दिखा दो कि उन्होंने क्या उत्पन्न किया है धरती में से? अथवा उन का कोई साझा है आकाशों में? मेरे पास कोई पुस्तक प्रस्तुत करो इस से पूर्व की, अथवा बचा हुआ कुछ ज्ञान यदि तुम सच्चे हो।
5. तथा उस से अधिक बहका हुआ कौन हो सकता है जो अल्लाह के सिवा उसे पुकारता हो जो उस की प्रार्थना स्वीकार न कर सके प्रलय तक। और वह उस की प्रार्थना से निश्चेत (अनजान) हों।
6. तथा जब लोग एकत्र किये जायेंगे तो वह उन के शत्रु हो जायेंगे और उन की इबादत का इन्कार कर देंगे।
7. और जब पढ़ कर सुनाई गई उन को हमारी खुली आयतें तो काफिरों ने उस सत्य को जो उन के पास आ चुका है, कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
8. क्या वह कहते हैं कि आप ने इसे स्वयं बना लिया है? आप कह दें कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह की पकड़ से बचाने का कोई अधिकार नहीं रखते। वही अधिक ज्ञानी है उन बातों का जो तुम बना रहे हो। वही पर्याप्त है गवाह के लिये मेरे तथा तुम्हारे बीच और वह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।
9. आप कह दें कि मैं कोई नया रसूल नहीं हूँ, और न मैं जानता कि मेरे साथ क्या होगा और न तुम्हारे साथ। मैं तो केवल अनुसरण कर रहा हूँ उस का जो मेरी ओर वही (प्रकाशना) की जा रही है। मैं तो केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।
10. आप कह दें: तुम बताओ यदि यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर से हो और तुम उसे न मानो जब कि गवाही दे चुका है एक गवाह, इस्राईल की संतान में से इसी जैसी बात पर, फिर वह ईमान लाया तथा तुम घमंड कर गये? तो वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता अत्याचारी जाति को।
11. और काफिरों ने कहा, उन से जो ईमान लाये यदि यह (धर्म) उत्तम होता तो वह पहले नहीं आते हम से उस की ओर। और जब नहीं पाया मार्ग दर्शन

उन्होंने ने इस (कुर्आन) से तो अब यही कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है।

12. जब कि इस से पूर्व मूसा की पुस्तक मार्गदर्शक तथा दया बन कर आ चुकी। और यह पुस्तक (कुर्आन) सच्च बताने वाली है अर्बी भाषा में। ताकि वह सावधान कर दे अत्याचारियों को और शुभसूचना हो सदाचारियों के लिये।
13. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है। फिर उस पर स्थित रह गये तो कोई भय नहीं होगा उन पर, और न वह उदासीन होंगे।
14. यही स्वर्गीय है जो सदावासी होंगे उस में उन कर्मों के प्रतिफल (बदले) में जो वे करते रहे।
15. और हम ने निर्देश दिया है मनुष्य को अपने माता पिता के साथ उपकार करने का। उसे गर्भ में रखा है उस की माँ ने दुःख झेल कर। तथा जन्म दिया उस को दुःख झेल कर। तथा उस के गर्भ में रखने तथा दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने रही। यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति को पहुँचा तथा चालीस वर्ष का हुआ, तो कहने लगा: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता दे कि कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो तूने प्रदान किया है मुझे को तथा मेरे माता-पिता को। तथा ऐसा सत्कर्म करूँ जिस से तू प्रसन्न हो जाये। तथा सुधार दे मेरे लिये मेरी संतान को, मैं ध्यानमग्न हो गया तेरी ओर। तथा मैं निश्चय मुस्लिमों में से हूँ।
16. वही है स्वीकार कर लेंगे हम जिन से

उन के सर्वोत्तम कर्मों को, तथा क्षमा कर देंगे उन के दुष्कर्मों को। (वह) स्वर्ग वासियों में है उस सत्य वचन के अनुसार जो उन से किया जाता था।

17. तथा जिस ने कहा अपने माता-पिता से: धिक् है तुम दोनों पर! क्या मुझे डरा रहे हो कि मैं (धरती से) निकाला जाऊँगा जब कि बहुत से युग बीत गये^[2] इस से पूर्व। और वह दोनों दुहाई दे रहे थे अल्लाह की: तेरा विनाश हो! तू ईमान ला! निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है। तो वह कह रहा था कि यह अगलों की कहानियाँ हैं।
18. यही वह लोग है जिन पर अल्लाह की यातना का वचन सिद्ध हो गया उन समुदायों में जो गुज़र चुके इन से पूर्व जिन्न तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षति में थे।
19. तथा प्रत्येक के लिये श्रेणियाँ हैं उन के कर्मनुसार। और उन्हें भरपूर बदला दिया जायेगा उन के कर्मों का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
20. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफिर हो गये अग्नि को। (उन से कहा जायेगा): तुम ले चुके अपना आनन्द अपने संसारिक जीवन में और लाभान्वित हो चुके उन से। तो आज तुम को अपमान की यातना दी जायेगी उस के बदले जो तुम घमंड करते रहे धरती में अनुचित तथा उस के बदले जो उल्लंघन करते रहे।
21. तथा याद करो आद के भाई (हूद) को। जब उस ने अपनी जाति को सावधान किया, अहकाफ में जब

- कि गुज़र चुके सावधान करने वाले (रसूल) उस के पहले और उस के पश्चात्, कि इबादत (वंदना) न करो अल्लाह के अतिरिक्त की। मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन की यातना से।
22. तो उन्होंने कहा कि क्या तुम हमें फेरने आये हो हमारे पूज्यों से? तो ला दो हमारे पास जिस की हमें धमकी दे रहे हो यदि तुम सच्चे हो।
23. हूद ने कहा: उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। और मैं तुम्हें वही उपदेश पहुँचा रहा हूँ जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ। परन्तु मैं देख रहा हूँ तुम को कि तुम अज्ञानता की बातें कर रहे हो।
24. फिर जब उन्होंने देखा एक बादल आते हुये अपनी वादियों की ओर तो कहा: यह एक बादल है हम पर बरसने वाला। बल्कि यह वही है जिस की तुम ने जल्दी मचाई है। यह आँधी है जिस में दुःखदायी यातना है।
25. वह विनाश कर देगी प्रत्येक वस्तु को अपने पालनहार के आदेश से, तो वे हो गये ऐसे कि नहीं दिखाई देता था कुछ उन के घरों के अतिरिक्त। इसी प्रकार हम बदला दिया करते हैं अपराधि लोगों को।
26. तथा हम ने उन को वह शक्ति दी थी जो इन को नहीं दी है। हम ने बनाये थे उन के कान तथा आँखें और दिल, तो नहीं काम आये उन के कान और उन की आँखें तथा न उन के दिल कुछ भी। क्योंकि वे इन्कार करते थे अल्लाह की आयतों का तथा घेर लिया उन को उस ने जिस का

वह उपहास कर रहे थे।

27. तथा हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे आस पास की बस्तियों को। तथा हम ने उन्हें अनेक प्रकार से आयतें सुना दीं ताकि वह वापिस आ जायें।
28. तो क्यों नहीं सहायता की उन की उन्होंने जिन को बनाया था अल्लाह के अतिरिक्त (अल्लाह के) समिप्य के लिये पूज्य (उपास्य)? बल्कि वह खो गये उन से, और यह उन का झूठ था, तथा जिसे स्वयं वे घड़ रहे थे।
29. तथा याद करें जब हम ने फेर दिया आप की ओर जिबों के एक गिरोह को ताकि वह कुर्आन सुनें तो जब वह उपस्थित हुये आप के पास तो उन्होंने कहा कि चुप रहो। और जब पढ़ लिया गया तो वे फिर गये अपनी जाति की ओर सावधान करने वाले हो कर।
30. उन्होंने कहा: हे हमारी जाति! हम ने सुनी है एक पुस्तक जो उतारी गई है मूसा के पश्चात्। वह अपने से पूर्व की किताबों की पुष्टि करती है। और सत्य तथा सीधी राह दिखाती है।
31. हे हमारी जाति! मान लो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात को। तथा ईमान लाओ उस पर, वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को तथा बचा देगा तुम्हें दुःखदायी यातना से।
32. तथा जो मानेगा नहीं अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात तो नहीं है वह विवश करने वाला धरती में। और नहीं है उस के लिये अल्लाह के अतिरिक्त कोई सहायक। यही लोग खुले कुपथ में हैं।

33. और क्या उन लोगों ने नहीं समझा कि अल्लाह, जिस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, और नहीं थका उन को बनाने से, वह सामर्थ्यवान है कि जीवित कर दे मुर्दों को? क्यों नहीं? वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।
34. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफिर हो गये नरक के, (और उन से कहा जायेगा): क्या यह सचच नहीं है? वे कहेंगे: क्यों नहीं? हमारे पालनहार की शपथ! वह कहेगा: तब चखो यातना उस कुफ़ के बदले जो तुम कर रहे थे।
35. तो (हे नबी!) आप सहन करें जैसे साहसी रसूलों ने सहन किया। तथा जल्दी न करें उन (की यातना) के लिये। जिस दिन वह देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है तो समझेंगे कि जैसे वह नहीं रहे हैं परन्तु दिन के कुछ क्षण। बात पहुँचा दी गई है, तो अब उन्हीं का विनाश होगा जो अवैज्ञाकारी हैं।

सूरह मुहम्मद - 47

सूरह मुहम्मद के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मद्नी है, इस में 38 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. जिन लोगों ने कुफ़ (अविश्वास) किया तथा अल्लाह की राह से रोक, (अल्लाह ने) व्यर्थ (निष्फल) कर दिया उन के कर्मों को।
2. तथा जो ईमान लाये और सदाचार

किये तथा उस (कुर्आन) पर ईमान लाये जो उतारा गया है मुहम्मद पर, और वह सचच है उन के पालनहार की ओर से, तो दूर कर दिया उन से उन के पापों को तथा सुधार दिया उन की दशा को।

3. यह इस कारण कि जिन्होंने कुफ़ किया और चले असत्य पर तथा जो ईमान लाये वह चले सत्य पर अपने पालनहार की ओर से (आये हुये) इसी प्रकार बता देता है अल्लाह लोगों को उन की सहीह दशायें।
4. तो जब (युद्ध में) भिड़ जाओ काफिरों से तो गर्दन उड़ाओ, यहाँ तक की जब कुचल दो उन को तो उन्हें दृढ़ता से बाँधो। फिर उस के बाद या तो उपकार कर के छोड़ दो या अर्थदण्ड ले कर। यहाँ तक कि युद्ध अपने हथियार रख दो। यह आदेश है। और यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं उन से बदला ले लेता। किन्तु (यह आदेश इस लिये दिया) ताकि तुम्हारी एक-दूसरे द्वारा परीक्षा लो। और जो मार दिये गये अल्लाह की राह में तो वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा उन के कर्मों को।
5. वह उन्हें मार्गदर्शन देगा तथा सुधार देगा उन की दशा।
6. और प्रवेश करायेगा उन्हें स्वर्ग में जिस की पहचान दे चुका है उन को।
7. हे ईमान वालो! यदि तुम सहायता करोगे अल्लाह (के धर्म) की तो वह सहायता करेगा तुम्हारी। तथा दृढ़ (स्थिर) कर देगा तुम्हारे पैरों को।
8. और जो काफिर हो गये तो विनाश है उन्हीं के लिये और उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को।

9. यह इसलिये कि उन्होंने बुरा माना उसे जो अल्लाह ने उतारा और उस ने उन के कर्म व्यर्थ कर दिये।
10. तो क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में कि देखते उन लोगों का परिणाम जो इन से पहले गुज़रे? विनाश कर दिया अल्लाह ने उन का तथा काफ़ि़रों के लिये इसी के समान (यातनायें) हैं।
11. यह इसलिये कि अल्लाह संरक्षक (सहायक) है उन का जो ईमान लाये और काफ़ि़रों का कोई संरक्षक (सहायक) नहीं।
12. निःसंदेह अल्लाह प्रवेश देगा उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें बहती होंगी। तथा जो काफ़ि़र हो गये वह आनन्द लेते तथा खाते हैं जैसे पशु खाते हैं। और अग्नि उन का आवास (स्थान) है।
13. तथा बहुत सी बस्तियों को जो अधिक शक्तिशाली थीं आप की बस्ती से, जिस ने आप को निकाल दिया, हम ने ध्वस्त कर दिया, तो कोई सहायक न हुआ उन का।
14. तो क्या जो अपने पालनहार के खुले प्रमाण पर हो वह उस के समान हो सकता है शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का दुष्कर्म तथा चलता हो अपनी मनमानी पर।
15. उस स्वर्ग की विशेषता जिस का वचन दिया गया है आज्ञाकरियों को, उस में नहरें हैं निर्मल जल की, तथा नहरें हैं दूध की, नहीं बदलेगा जिस का स्वाद, तथा नहरें हैं मदिरा की पीने वालों के स्वाद के लिये, तथा नहरें हैं मधु की

स्वच्छा तथा उन्हीं के लिये उन में प्रत्येक प्रकार के फल हैं, तथा उन के पालनहार की ओर से क्षमा। (क्या यह) उस के समान होंगे जो सदावासी होंगे नरक में तथा पिलाये जायेंगे ख़ौलता जल जो खण्ड-खण्ड कर देगा उन की आँतों को?

16. तथा उन में से कुछ वह हैं जो कान धरते हैं आप की ओर यहाँ तक कि जब निकलते हैं आप के पास से तो कहते हैं उन से जिन को ज्ञान दिया गया है कि अभी क्या कहा है? यही वह है कि मुहर लगा दी है अल्लाह ने उन के दिलों पर और वही चल रहे हैं अपनी मनोकांक्षाओं पर।
17. और जो सीधी राह पर है अल्लाह ने अधिक कर दिया है उन को मार्ग दर्शन में। और प्रदान किया है उन को उन का सदाचार।
18. तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रलय ही की, कि आ जाये उन के पास सहसा? तो आ चुके हैं उस के लक्षण। फिर कहाँ होगा उन के शिक्षा लेने का समय, जब वह (क्यामत) आ जायेगी उन के पास?
19. तो (हे नबी!) आप विश्वास रखिये कि नहीं है कोई बंदनीय अल्लाह के सिवा तथा क्षमा माँगिये अपने पाप के लिये, तथा ईमान वाले पुरुषों और स्त्रियों के लिये। और अल्लाह जानता है तुम्हारे फिरने तथा रहने के स्थान को।
20. तथा जो ईमान लाये उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारी जाती कोई सूरह (जिस में युद्ध का आदेश हो)? तो जब एक दृढ़ सूरह उतार दी गई तथा

उस में वर्णन कर दिया गया युद्ध का तो आप ने उन्हें देख लिया जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है कि वह आप की ओर उस के समान देख रहे हैं जो मौत के समय अचेत पड़ा हुआ हो। तो उन के लिये उत्तम है।

21. आज्ञा पालन तथा उचित बात बोलना। तो जब (युद्ध का) आदेश निर्धारित हो गया तो यदि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें तो उन के लिये उत्तम है।
22. फिर यदि तुम विमुख हो गये तो दूर नहीं कि तुम उपद्रव करोगे धरती में तथा तोड़ोगे अपने रिश्तों (संबंधों) को।
23. यही है जिन को अपनी दया से दूर कर दिया है अल्लाह ने, और उन्हें बहरा, तथा उन की आँखें अंधी कर दी हैं।
24. तो क्या लोग सोच-विचार नहीं करते या उन के दिलों पर ताले लगे हुये हैं?
25. वास्तव में जो फिर गये पीछे इस के पश्चात् कि उजागर हो गया उन के लिये मार्ग दर्शन तो शैतान ने सुन्दर बना दिया (पापों को) उन के लिये, तथा उन को बड़ी आशा दिलाई है।
26. यह इस कारण हुआ कि उन्होंने कहा उन से जिन्होंने बुरा माना उस (कुर्आन) को जिसे उतारा अल्लाह ने कि हम तुम्हारी बात मानेंगे कुछ कार्य में। तथा अल्लाह जानता है उन की गुप्त बातों को।
27. तो कैसी दुर्गत होगी उन की जब प्राण निकाल रहे होंगे फ़रिश्ते मारते हुये उन के मुखों तथा उन की पीठों पर।
28. यह इसलिये कि वे चले उस राह पर

जिस ने अप्रसन्न कर दिया अल्लाह को, तथा बुरा माना उस की प्रसन्नता को तो उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को।

29. क्या समझ रखा है उन्होंने जिन के दिलों में रोग है कि नहीं खोलेंगा अल्लाह उन के द्वेषों को?
30. और (हे नबी!) यदि हम चाहें तो दिखा दें आप को उन्हें, तो पहचान लेंगे आप उन को उन के मुख से। और आप अवश्य पहचान लेंगे उन को (उन की) बात के ढंग से। तथा अल्लाह जानता है उन के कर्मों को।
31. और हम अवश्य परीक्षा लेंगे तुम्हारी, ताकि जाँच लें तुम में से मुजाहिदों तथा धैर्यवानों को तथा जाँच लें तुम्हारी दशाओं को।
32. जिन लोगों ने कुफ़ किया और रोका अल्लाह की राह (धर्म) से तथा विरोध किया रसूल का इस के पश्चात् कि उजागर हो गया उनके लिये मार्गदर्शन, वह कदापि हानि नहीं पहुँचा सकेंगे अल्लाह को कुछ। तथा वह व्यर्थ कर देगा उन के कर्मों को।
33. हे लोगो जो ईमान लाये हो! आज्ञा मानो अल्लाह की, तथा आज्ञा मानो रसूल की तथा व्यर्थ न करो अपने कर्मों को।
34. जिन लोगों ने कुफ़ किया तथा रोका अल्लाह की राह से, फिर वे मर गये कुफ़ की स्थिति में तो कदापि क्षमा नहीं करेगा अल्लाह उन को।
35. अतः तुम निर्बल न बनो और न (शत्रु को) संधि की ओर पुकारो।

तथा तुम्हीं उच्च रहने वाले हो और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा तुम्हारे कर्मों को।

36. यह संसारिक जीवन तो एक खेल कूद है और यदि तुम ईमान लाओ तथा अल्लाह से डरते रहो तो वह प्रदान करेगा तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल। और नहीं माँग करेगा तुम से तुम्हारे धनों की।
37. और यदि वह तुम से माँगे और तुम्हारा पूरा धन माँगे तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और वह खोल देगा तुम्हारे द्वेषों को।
38. सुनो! तुम लोग हो जिन को बुलाया जा रहा है ताकि दान करो अल्लाह की राह में, तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं। और जो कंजूसी करता है तो वह अपने आप ही से कंजूसी करता है। और अल्लाह धनी है तथा तुम निर्धन हो। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ला देगा, फिर वे नहीं होंगे तुम्हारे जैसे।

सूरह फ़तह - 48

सूरह फ़तह के संक्षिप्त विषय यह सूरह मदनी है, इस में 29 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे नबी! हम ने विजय प्रदान कर दी आप को खुली विजय।
2. ताकि क्षमा कर दे अल्लाह आप के लिये आप के अगले तथा पिछले दोषों को तथा पूरा करे अपना पुरस्कार

आप के ऊपर और दिखाये आप को सीधी राह।

3. तथा अल्लाह आप की सहायता करे भरपूर सहायता।
4. वही है जिस ने उतारी शान्ति ईमान वालों के दिलों में ताकि अधिक हो जाये उन का ईमान अपने ईमान के साथ। तथा अल्लाह ही की है आकाशों तथा धरती की सेनायें, तथा अल्लाह सब कुछ और सब गुणों को जानने वाला है।
5. ताकि वह प्रवेश कराये ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में बह रही है जिन में नहरों और वे सदैव रहेंगे उन में। और ताकि दूर कर दे उन से उन की बुराईयों को। और अल्लाह के यहाँ यही बहुत बड़ी सफलता है।
6. तथा यातना दे मुनाफिक पुरुषों तथा स्त्रियों और मुशरिक पुरुषों तथा स्त्रियों को जो बुरा विचार रखने वाले हैं अल्लाह के संबन्ध में। उन्हीं पर बुरी आपदा आ पड़ी। तथा अल्लाह का प्रकोप हुआ उन पर, और उस ने धिक्कार दिया उन को। तथा तय्यार कर दी उन के लिये नरक, और वह बुरा जाने का स्थान है।
7. तथा अल्लाह ही की है आकाशों तथा धरती की सेनायें और अल्लाह प्रबल तथा सब गुणों को जानने वाला है।
8. (हे नबी!) हम ने भेजा है आप को गवाह बनाकर तथा शुभ सूचना देने एवं सावधान करने वाला बना कर।
9. ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह एवं उस के रसूल पर। और सहायता करो आप की, तथा आदर करो आप का,

- और अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते रहो प्रातः तथा संध्या।
10. (हे नबी!) जो बैअत कर रहे हैं आप से, वह वास्तव में बैअत कर रहे हैं अल्लाह से। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। फिर जिस ने वचन तोड़ा तो वह अपने ऊपर ही वचन तोड़ेगा। तथा जिस ने पूरा किया जो वचन अल्लाह से किया है तो वह उसे बड़ा प्रतिफल (बदला) प्रदान करेगा।
11. (हे नबी!) वह शीघ्र ही आप से कहेंगे, जो पीछे छोड़ दिये गये बद्दुओं में से कि हम लगे रह गये अपने धनों तथा परिवार में अतः आप क्षमा की प्रार्थना कर दें हमारे लिये। वह अपने मुखों से ऐसी बात कहेंगे जो उन के दिलों में नहीं है। आप उन से कहिये कि कौन है जो अधिकार रखता हो तुम्हारे लिये अल्लाह के सामने किसी चीज़ का यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाना चाहे या कोई लाभ पहुँचाना चाहे? बल्कि अल्लाह सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।
12. बल्कि तुम ने सोचा था कि कदापि वापिस नहीं आयेंगे रसूल, और न ईमान वाले अपने परिजनों की ओर कभी भी। और भली लगी यह बात तुम्हारे दिलों को, और तुम ने बुरी सोच सोची। और थे ही तुम विनाश होने वाले लोग।
13. और जो ईमान नहीं लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, तो हम ने तय्यार कर रखी है काफ़िरों के लिये दहकती अग्नि।
14. अल्लाह के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्या वह क्षमा कर दे जिसे चाहे और यातना दे जिसे चाहे। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
15. वह लोग जो पीछे छोड़ दिये गये कहेंगे, जब तुम चलोगे गनीमतों की ओर ताकि उन्हें प्राप्त करो कि हमें (भी) अपने साथ चलने दो। वह चाहते हैं कि बदल दें अल्लाह के आदेश को। आप कह दें कि कदापि हमारे साथ न चला इसी प्रकार कहा है अल्लाह ने इस से पहले। फिर वह कहेंगे कि बल्कि तुम द्वेष (जलन) रखते हो हम से। बल्कि वह कम ही बात समझते हैं।
16. आप कह दें पीछे छोड़ दिये गये बद्दुओं से कि शीघ्र तुम बुलाये जाओगे एक अति योद्धा जाति (से युद्ध) की ओर। जिन से तुम युद्ध करोगे अथवा वह इस्लाम ले आयें। तो यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो प्रदान करेगा अल्लाह तुम्हें उत्तम बदला तथा यदि तुम विमुख हो गये जैसे इस से पूर्व (मक्का जाने से) विमुख हो गये तो तुम्हें यातना देगा दुःखदायी यातना।
17. नहीं है अंधे पर कोई दोष और न लंगड़े पर कोई दोष और न रोगी पर कोई दोष। तथा जो आज्ञा का पालन करेगा अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती है जिन में नहरें, तथा जो मुख फेंरेगा तो वह यातना देगा उसे दुःखदायी यातना।
18. अल्लाह प्रसन्न हो गया ईमान वालों से जब वह आप (नबी) से बैअत कर रहे

थे वृक्ष के नीचे। उस ने जान लिया जो कुछ उन के दिलों में था इसलिये उतार दी शान्ति उन पर, तथा उन्हें बदले में दी समीप की विजया।

19. तथा बहुत से गनीमत के धन (परिहार) जिन को वह प्राप्त करेंगे, और अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।
20. अल्लाह ने वचन दिया है तुम्हें बहुत से परिहार (गनीमतों) का जिसे तुम प्राप्त करोगे। तो शीघ्र प्रदान कर दी तुम्हें यह (खैबर की गनीमत)। तथा रोक दिया लोगों के हाथों को तुम से ताकि⁽²⁾ वह एक निशानी बन जाये ईमान वालों के लिये, और तुम्हें सीधी राह चलाये।
21. और दूसरी गनीमतें भी जिन को तुम प्राप्त नहीं कर सके हो, अल्लाह ने उन को नियन्त्रण में कर रखा है, तथा अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है।
22. और यदि तुम से युद्ध करते जो काफिर हैं तो अवश्य पीछा दिखा देते, फिर नहीं पाते कोई संरक्षक और न कोई सहायक।
23. यह अल्लाह का नियम है उन में जो चला आ रहा है पहले से। और तुम कदापि नहीं पाओगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।
24. तथा वही है जिस ने रोक दिया उन के हाथों को तुम से तथा तुम्हारे हाथों को उन से मक्का की वादी⁽¹⁾ में, इस के पश्चात् कि तुम्हें विजय प्रदान कर की उन पर। तथा अल्लाह देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।
25. यह वे लोग हैं जिन्होंने कुफ्र किया और रोक दिया तुम्हें मस्जिदे हराम से। तथा

बलि के पशु को उन के स्थान तक पहुँचने से रोक दिया। और यदि यह भय न होता कि तुम कुछ मुसलमान पुरुषों तथा कुछ मुसलमान स्त्रियों को जिन्हें तुम नहीं जानते थे रौद दोगे जिस से तुम पर दोष आ जायेगा (तो युद्ध से न रोका जाता) ताकि प्रवेश कराये अल्लाह जिसे चाहे अपनी दया में। यदि वह (मुसलमान) अलग होते तो हम अवश्य यातना देते उन को जो काफिर हो गये उन में से दुखदायी यातना।

26. जब काफिरों ने अपने दिलों में पक्षपात को स्थान दे दिया जो वास्तव में जाहिलाना पक्षपात है तो अल्लाह ने अपने रसूल पर तथा ईमान वालों पर शान्ति उतार दी, तथा उन को पाबन्द रखा सदाचार की बात का, तथा वह उस के अधिक योग्य और पात्र थे। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।
27. निश्चय अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा सपना दिखाया सच्च के अनुसार। तुम अवश्य प्रवेश करोगे मस्जिदे हराम में यदि अल्लाह ने चाहा निर्भय हो कर, अपने सिर मुंडाते तथा बाल कतरवाते हुये तुम को किसी प्रकार का भय नहीं होगा, वह जानता है जिस को तुम नहीं जानते। इसलिये प्रदान कर दी तुम्हें इस (मस्जिदे हराम में प्रवेश) से पहले एक समीप (जल्दी) की विजया।
28. वही है जिस ने भेजा अपने रसूल को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म के साथ, ताकि उसे प्रभुत्व प्रदान कर दे प्रत्येक धर्म पर। तथा पर्याप्त है (इस

पर) अल्लाह का गवाह होना।

29. मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, तथा जो लोग आप के साथ हैं वह काफिरों के लिये कड़े, और आपस में दयालु हैं। तुम देखोगे उन्हें रूकूअ-सज्दा करते हुये वह खोज कर रहे होंगे अल्लाह की दया तथा प्रसन्नता की। उन के लक्षण उन के चेहरों पर सज्दों के चिन्ह होंगे। यह उन की विशेषता तौरात में है। तथा उन के गुण इंजील में उस खेती के समान बताये गये हैं जिस ने निकाला अपना अंकुर, फिर उसे बल दिया, फिर वह कड़ा हो गया फिर वह (खेती) खड़ी हो गई अपने तने पर। प्रसन्न करने लगी किसानों को, ताकि काफिर उन से जलों वचन दे रखा है अल्लाह ने उन लोगों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन में से क्षमा तथा बड़े प्रतिफल का।

सूरह हुजुरात - 49

सूरह हुजुरात के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मद्नी है, इस में 18 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे लोगो! जो ईमान लाये हो आगे न बढ़ो अल्लाह तथा उस के रसूल से। और डरो अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
2. हे लोगो जो ईमान लाये हो। अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो। और न आप से ऊँची आवाज़

में बात करो जैसे एक दूसरे से ऊँची आवाज़ में बात करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायें और तुम्हें पता (भी) न हो।

3. निःसंदेह जो धीमी रखते हैं अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल के सामने, वही लोग हैं जाँच लिया है अल्लाह ने जिन के दिलों को सदाचार के लिये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।
4. वास्तव में जो आप को पुकारते हैं कमरों के पीछे से उन में से अधिकतर निर्बाध हैं।
5. और यदि वह सहन करते यहाँ तक कि आप निकल कर आते उन की ओर तो यह उत्तम होता उन के लिये। तथा अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला दयावान् है।
6. हे ईमान वालो! यदि तुम्हारे पास कोई दुराचारी कोई सूचना लाये तो भली-भाँति उस का अनुसंधान (छान बीन) कर लिया करो। ऐसा न हो कि तुम हानि पहुँचा दो किसी समुदाय को आज्ञानता के कारण, फिर अपने किये पर पछताओ।
7. तथा जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं। यदि वह तुम्हारी बात मानते रहे बहुत से विषय में तो तुम आपदा में पड़ जाओगे। परन्तु अल्लाह ने प्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये ईमान को तथा सुशोभित कर दिया है उसे तुम्हारे दिलों में और अप्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये कुफ्र तथा उल्लंघन और अवैज्ञा को, और यही लोग संमार्ग पर हैं।

8. अल्लाह की दया तथा उपकार से, और अल्लाह सब कुछ तथा सब गुणों को जानने वाला है।
9. और यदि ईमान वालों के दो गिरोह लड़ पड़े तो संधि करा दो उन के बीच। फिर दोनों में से एक दूसरे पर अत्याचार करे तो उस से लड़ो जो अत्याचार कर रहा है यहाँ तक कि फिर जाये अल्लाह के आदेश की ओर। फिर यदि वह फिर आये तो उन के बीच संधि करा दो न्याय के साथ। तथा न्याय करो, वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय करने वालों से।
10. वास्तव में सब ईमान वाले भाई भाई हैं। अतः संधि (मेल) करा दो अपने दो भाईयों के बीच तथा अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर दया की जाये।
11. हे लोगो जो ईमान लाये हो। हँसी न उड़ाये कोई जाति किसी अन्य जाति की। हो सकता है वह उन से अच्छी हो। और न नारी अन्य नारियों की। हो सकता है कि वह उन से अच्छी हों। तथा आक्षेप न लगाओ एक-दूसरे को और न किसी को बुरी उपाधि दो। बुरा नाम है अपशब्द ईमान के पश्चात्। और जो क्षमा न माँगे तो वही लोग अत्याचारी हैं।
12. हे लोगो जो ईमान लाये हो। बचो अधिकांश गुमानों से। वास्तव में कुछ गुमान पाप है। और किसी का भेद न लो। और न एक-दूसरे की गीबत करो। क्या चाहेगा तुम में से कोई अपने मरे भाई का मांस खाना? अतः तुम्हें इस से घृणा होगी। तथा अल्लाह से डरते रहो। वास्तव में अल्लाह अति

क्षमावान् दयावान् है।

13. हे मनुष्यो! हम ने तुम्हें पैदा किया है एक नर-नारी से। तथा बना दी है तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ ताकि एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में तुम में अल्लाह के समीप सब से अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सब से अधिक डरता हो। वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला सब से सूचित है।
14. कहा कुछ बद्दुओं (देहातियों) ने कि हम ईमान लाये। आप कह दें कि तुम ईमान नहीं लाये। परन्तु कहो कि हम इस्लाम लाये। और ईमान अभी तक तुम्हारे दिलों में प्रवेश नहीं किया। तथा यदि तुम आज्ञा का पालन करते रहे अल्लाह तथा उस के रसूल की, तो नहीं कम करेगा वह (अल्लाह) तुम्हारे कर्मों में से कुछ। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
15. वास्तव में ईमान वाले वही हैं जो ईमान लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, फिर संदेह नहीं किया और जिहाद किया अपने प्राणों तथा धनों से अल्लाह की राह में, यही सच्चे हैं।
16. आप कह दें कि क्या तुम अवगत करा रहे हो अल्लाह को अपने धर्म से? जब कि अल्लाह जानता है जो कुछ (भी) आकाशों तथा धरती में है तथा वह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।
17. वे उपकार जता रहे हैं आप के ऊपर कि वह इस्लाम लाये हैं। आप कह दें कि उपकार न जताओ मुझ पर अपने इस्लाम का। बल्कि अल्लाह का उपकार

है तुम पर कि उस ने राह दिखायी है तुम्हें ईमान की, यदि तुम सच्चे हो।

18. निःसंदेह अल्लाह ही जानता है आकाशों तथा धरती के ग़ैब (छुपी बात) को, तथा अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम कर रहे हो।

सूरह काफ़ - 50

सूरह काफ़ के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. काफ़ा शपथ है आदरणीय कुर्आन की।
2. बल्कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास एक सवधान करने वाला उन्हीं में से। तो कहा काफ़िरो ने यह तो बड़े आश्चर्य की बात है।
3. क्या जब हम मर जायेंगे और धूल हो जायेंगे? तो यह वापसी दूर की बात (असंभव) है।
4. हमें ज्ञान है जो कम करती है धरती उन का अंश, तथा हमारे पास एक सुरक्षित पुस्तक है।
5. बल्कि उन्होंने झुठला दिया सत्य को जब आ गया उन के पास। इसलिये उलझन में पड़े हुये हैं।
6. क्या उन्होंने नहीं देखा आकाश की ओर अपने ऊपर कि कैसा बनाया है हम ने उसे और सजाया है उस को और नहीं है उस में कोई दराड़?
7. तथा हम ने धरती को फैलाया,

और डाल दिये उस में पर्वत। तथा उपजायी उस में प्रत्येक प्रकार की सुन्दर वनस्पतियाँ।

8. आँख खोलने तथा शिक्षा देने के लिये प्रत्येक अल्लाह की ओर ध्यानमग्न भक्त के लिये।
9. तथा हम ने उतारा आकाश से शुभ जल, फिर उगाये उस के द्वारा बाग़ तथा अब जो काटे जायें।
10. तथा खजूर के ऊँचे वृक्ष जिन के गुच्छे गुथे हुये हैं।
11. जीविका के लिये भक्तों की, तथा हम ने जीवित कर दिया निर्जीव नगर को। इसी प्रकार (तुम्हें भी) निकलना है।
12. झुठलाया इस से पहले नूह की जाति तथा कूबे के वासियों एवं समूद ने।
13. तथा आद और फिरऔन एवं लूत के भाईयों ने।
14. तथा ऐका के वासियों ने, और तुब्बअ की जाति ने। प्रत्येक ने झुठलाया रसूलों को। अन्ततः सच्च हो गई (उन पर) हमारी धमकी।
15. तो क्या हम थक गये हैं प्रथम बार पैदा कर के? बल्कि यह लोग संदेह में पड़े हुये हैं नये जीवन के बारे में।
16. जब कि हम ने ही पैदा किया है मनुष्य को और हम जानते हैं जो विचार आते हैं उस के मन में। तथा हम अधिक समीप हैं उस से (उस

- की) प्राणनाड़ी से
17. जब कि (उस के) दायें-बायें बैठे दो फरिश्ते लिख रहे हैं।
 18. वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।
 19. आ पहुँची मौत की अचेतना (बे होशी) सत्य ले कर। यह वही है जिस से तू भाग रहा था।
 20. और फूँक दिया गया सूर (नरसिंघा) में। यही यातना के बचन का दिन है।
 21. तथा आयेगा प्रत्येक प्राणी इस दशा में कि उस के साथ एक हॉकने वाला और एक गवाह होगा।
 22. तू इसी से अचेत था, तो हम ने दूर कर दिया तेरे पर्दे को, तो तेरी आँख आज खूब देख रही है।
 23. तथा कहा उस के साथी ने: यह है जो मेरे पास तय्यार है।
 24. दोनों (फरिश्तों को आदेश होगा कि) फेंक दो नरक में प्रत्येक काफ़िर (सत्य के) विरोधी को।
 25. भलाई के रोकने वाले, अधर्मी, संदेह करने वाले को।
 26. जिस ने बना लिये अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य, तो दोनों को फेंक दो कड़ी यातना में।
 27. उस के साथी (शैतान) ने कहा: हे हमारे पालनहार! मैं ने इसे कुपथ नहीं किया, परन्तु वह स्वयं दूर के कुपथ में था।
 28. अल्लाह ने कहा: झगड़ा न करो मेरे

- पास। मैं ने तो पहले ही (संसार में) तुम्हारी ओर चेतावनी भेज दी थी।
29. नहीं बदली जाती बात मेरे पास, और न मैं तनिक भी अत्याचारी हूँ भक्तों के लिये।
 30. जिस दिन हम कहेंगे नरक से कि तू भर गई। और वह कहेगी क्या कुछ और है।
 31. तथा समीप कर दी जायेगी स्वर्ग, वह सदाचारियों से कुछ दूर न होगी।
 32. यह है जिस का तुम को वचन दिया जाता था, प्रत्येक ध्यानमग्न रक्षक के लिये।
 33. जो डरा अत्यंत कृपाशील से बिन देखे तथा ले कर आया ध्यान मग्न दिला।
 34. प्रवेश कर जाओ इस में शान्ति के साथ। यह सदैव रहने का दिन है।
 35. उन्हीं के लिये जो वे इच्छा करेंगे उस में मिलेगा। तथा हमारे पास (इस से भी) अधिक है।
 36. तथा हम विनाश कर चुके हैं इन से पूर्व बहुत से समुदायों का जो इन से अधिक थे शक्ति में। तो वह फिरते रहे नगरों में, तो क्या कहीं कोई भागने की जगह पा सके।
 37. वास्तव में इस में निश्चय शिक्षा है उस के लिये जिस के दिल हो, अथवा कान धरे और वह उपस्थित हो।
 38. तथा निश्चय हम ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छः दिनों में, और हमें कोई थकान नहीं हुई।
 39. तो आप सहन करें उन की बातों को तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने

पालनहार की प्रशंसा के साथ सूर्य के निकलने से पहले तथा डूबने से पहले।

40. तथा रात के कुछ भाग में उस की पवित्रता का वर्णन करें और सज्दों (नमाज़ों) के पश्चात् (भी)।
41. तथा ध्यान से सुनो, जिस दिन पुकारने वाला⁽¹⁾ पुकारेगा समीप स्थान से।
42. जिस दिन सब सुनेंगे कड़ी आवाज़ सत्य के साथ, वही निकलने का दिन होगा।
43. वास्तव में हम ही जीवन देते तथा मारते हैं और हमारी ओर ही फिर कर आना है।
44. जिस दिन फट जायेगी धरती उन से, वह दौड़ते हुये (निकलेंगे) यह एकत्र करना हम पर बहुत सरल है।
45. तथा हम भली-भाँति जानते हैं उसे जो कुछ वे कह रहे हैं। और आप उन्हें बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं हैं। तो आप शिक्षा दें कुर्आन द्वारा उसे जो डरता हो मेरी यातना से।

सूरह ज़ारियात - 51

सूरह ज़ारियात के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 60 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है (बादलों को) बिखरने वालियों की।
2. फिर (बादलों का) बोझ लादने वालियों की।
3. फिर धीमी गति से चलने वालियों की।

4. फिर (अल्लाह का) आदेश बॉटने वाले (फरिश्तों की)।
5. निश्चय जिस (प्रलय) से तुम्हें डराया जा रहा है वह सच्ची है।
6. तथा कर्मों का फल अवश्य मिलने वाला है।
7. शपथ है रास्तों वाले आकाश की।
8. वास्तव में तुम विभिन्न बातों में हो।
9. उस से वही फेर दिया जाता है जो (सत्य से) फिरा हुआ हो।
10. नाश कर दिये गये अनुमान लगाने वाले।
11. जो अपनी अचेतना में भूले हुये हैं।
12. वह प्रश्न करते हैं कि प्रतिकार का दिन कब है।
13. (उस दिन है) जिस दिन वह अग्नि पर तपाये जायेंगे।
14. (उन से कहा जायेगा): स्वाद चखो अपने उपद्रव का। यही वह है जिस की तुम शीघ्र माँग कर रहे थे।
15. वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे।
16. लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उन को उन के पालनहार ने। वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे।
17. वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे।
18. तथा भोरों में क्षमा माँगते थे।
19. और उन के धनों में माँगने वाले तथा न पाने वाले का भाग था।

20. तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिये।
21. तथा स्वयं तुम्हारे भीतर (भी)। फिर क्या तुम देखते नहीं?
22. और आकाश में तुम्हारी जीविका है, तथा जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा है।
23. तो शपथ है आकाश एवं धरती के पालनहार की यह (बात) ऐसे ही सच्च है जैसे तुम बोल रहे हो।
24. (हे नबी!) क्या आई आप के पास इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों की सूचना?
25. जब वे आये उस के पास तो सलाम किया। इब्राहीम ने (भी) सलाम किया (तथा कहा): अपरिचित लोग हैं।
26. फिर चुपके से अपने परिजनों की ओर गया। और एक मोटा (भुना हुआ) बछड़ा लाया।
27. फिर रख दिया उन के पास, उस ने कहा: तुम क्यों नहीं खाते हो?
28. फिर अपने दिल में उन से कुछ डरा, उन्होंने कहा: डरो नहीं। और उसे शुभसूचना दी एक ज्ञानी पुत्र की।
29. तो सामने आई उस की पत्नी, और उस ने मार लिया (आश्चर्य से) अपने मुँह पर हाथ। तथा कहा: मैं बॉझ बुढ़िया हूँ।
30. उन्होंने कहा: इसी प्रकार तेरे पालनहार ने कहा है। वास्तव में वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।



31. उस (इब्राहीम) ने कहा: तो तुम्हारा क्या अभियान है, हे भेजे हुये (फरिश्तो!)?
32. उन्होंने कहा: वास्तव में हम भेजे गये हैं एक अपराधी जाति की ओर।
33. ताकि हम बरसायें उन पर पत्थर की कंकरी।
34. नामांकित तुम्हारे पालनहार की ओर से उल्लंघनकारियों के लिये।
35. फिर हम ने निकाल दिया जो भी उस (बस्ती) में ईमान वाले थे।
36. और हम ने उस में मुमिनों का केवल एक ही घर⁽²⁾ पाया।
37. तथा छोड़ दी हम ने उस (बस्ती) में एक निशानी उन के लिये जो डरते हों दुःखदायी यातना से।
38. तथा मूसा (की कथा) में, जब हम ने भेजा उसे फिरऔन की ओर प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाण के साथ।
39. तो वह विमुख हो गया अपने बल-बूते के कारण, और कह दिया की जादूगर अथवा पागल है।
40. अन्ततः हम ने पकड़ लिया उस को तथा उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया उन को सागर में और वह निन्दित हो कर रह गया।
41. तथा आद में (शिक्षाप्रद निशानी है)। जब हम ने भेज दी उन पर बाँझ आँधी।
42. वह नहीं छोड़ती थी किसी वस्तु को जिस पर गुज़रती परन्तु उसे बना देती

थी जीर्ण चूर-चूर हड्डी के समान।

43. तथा समूद में जब उन से कहा गया कि लाभान्वित हो लो एक निश्चित समय तक।
44. तो उन्होंने अवैज्ञा की अपने पालनहार के आदेश की तो सहसा पकड़ लिया उन्हें कड़क ने, और वह देखते रह गये।
45. तो वे न खड़े हो सके और न (हम से) बदला ले सके।
46. तथा नूह की जाति को इस से पहले (याद करो)। वास्तव में वह अवैज्ञाकारी जाति थे।
47. तथा आकाश को हम ने बनाया है हाथों से और हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं।
48. तथा धरती को हम ने बिछाया है तो हम क्या ही अच्छे बिछाने वाले हैं।
49. तथा प्रत्येक वस्तु का हम ने उत्पन्न किया है जोड़ा, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।
50. तो तुम दौड़ो अल्लाह की ओर, वास्तव में मैं तुम्हें उस की ओर से प्रत्यक्ष रूप से (खुला) सावधान करने वाला हूँ।
51. और मत बनाओ अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य। वास्तव में मैं तुम्हें इस से खुला सावधान करने वाला हूँ।
52. इसी प्रकार नहीं आया उन के पास जो इन (मक्का वासियों) से पूर्व रहे कोई रसूल परन्तु उन्होंने ने कहा कि जादूगर या पागल है।
53. क्या वह एक दूसरे को वसिय्यत

कर चुके हैं इस की? बल्कि वे उल्लंघनकारी लोग हैं।

54. तो आप मुख फेर लें उन से। आप की कोई निन्दा नहीं है।
55. और आप शिक्षा देते रहें। इसलिये कि शिक्षा लाभप्रद है ईमान वालों के लिये।
56. और नहीं उत्पन्न किया है मैं ने जिन्न तथा मनुष्य को परन्तु ताकि मेरी ही इबादत करें।
57. मैं नहीं चाहता हूँ उन से कोई जीविका, और न चाहता हूँ कि वह मुझे खिलायें।
58. अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान् है।
59. तो इन अत्याचारियों के पाप हैं इन के साथियों के पापों के समान अतः वह उतावले न बनें।
60. अन्ततः विनाश है काफ़िरों के लिये उन के उस दिन से जिस से वह डराये जा रहे हैं।

सूरह तूर - 52

सूरह तूर के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 49 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है तूर (पर्वत) की।
2. और लिखी हुई पुस्तक की।
3. जो झिल्ली के खुले पक्षों में लिखी हुई है।
4. तथा बैतुल मअमूर (आबाद घर) की।

5. तथा ऊँची छत (आकाश) की।
6. और भड़काये हुये सागर की।
7. वस्तुतः आप के पालनहार की यातना हो कर रहेगी।
8. नहीं है उसे कोई रोकने वाला।
9. जिस दिन आकाश डगमगायेगा।
10. तथा पर्वत चलेंगे।
11. तो विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
12. जो विवाद में खेल रहे हैं।
13. जिस दिन वे धक्का दिये जायेंगे नरक की अग्नि की ओर।
14. (उन से कहा जायेगा): यही वह नरक है जिसे तुम झुठला रहे थे।
15. तो क्या यह जादू है या तुम्हें सुझाई नहीं देता?
16. इस में प्रवेश कर जाओ फिर सहन करो या सहन न करो तुम पर समान है। तुम उसी का बदला दिये जा रहे हो जो तुम कर रहे थे।
17. निश्चय, आज्ञाकारी बागों तथा सुखों में होंगे।
18. प्रसन्न हो कर उस से जो प्रदान किया होगा उन को उन के पालनहार ने, तथा बचा लेगा उन को उन का पालनहार नरक की यातना से।
19. (उन से कहा जायेगा): खाओ और पीओ मनमानी उस के बदले में जो तुम कर रहे थे।
20. तकिये लगाये हुये होंगे तख्तों पर

- बराबर बिछे हुये तथा हम विवाह देंगे उन को बड़ी आँखों वाली स्त्रियों से।
21. और जो लोग ईमान लाये और अनुसरण किया उन का उन की संतान ने ईमान के साथ तो हम मिला देंगे उन की संतान को उन के साथ तथा नहीं कम करेंगे उन के कर्मों में से कुछ, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का बंधक है।
 22. तथा हम अधिक देंगे उन को मेवे तथा मांस जिस की वह रुचि रखेंगे।
 23. वे एक-दूसरे से उस में लेते रहेंगे मदिरा के प्याले जिस में न कोई व्यर्थ बात होगी, न कोई पाप की बाता।
 24. और फिरते रहेंगे उन की सेवा में (सुन्दर) बालक जैसे वह छुपाये हुये मोती हों।
 25. और वह (स्वर्ग वासी) सम्मुख होंगे एक-दूसरे के प्रश्न करते हुये।
 26. वह कहेंगे: इस से पूर्व हम अपने परिजनों में डरते थे।
 27. तो अल्लाह ने उपकार किया हम पर, तथा हमें सुरक्षित कर दिया तापलहरी की यातना से।
 28. इस से पूर्व हम वंदना किया करते थे उस की। निश्चय वह अति परोपकारी दयावान् है।
 29. तो आप शिक्षा देते रहें। क्योंकि आप के पालनहार के अनुग्रह से न आप काहिन (ज्योतिषी) हैं, और न पागल।
 30. क्या वह कहते हैं कि यह कवि है हम प्रतीक्षा कर रहे हैं उस के साथ

कालचक्र की?

31. आप कह दें कि तुम प्रतीक्षा करते रहो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
32. क्या उन्हें सिखाती है उन की समझ यह बातें, अथवा वह उल्लंघनकारी लोग हैं?
33. क्या वह कहते हैं कि इस (नबी) ने इस (कुआन) को स्वयं बना लिया है? वास्तव में वह ईमान नहीं लाना चाहते।
34. तो वे ला दें इस (कुआन) के समान कोई एक बात यदि वह सच्चे हैं।
35. क्या वह पैदा हो गये हैं बिना किसी के पैदा किये, अथवा वह स्वयं पैदा करने वाले हैं?
36. या उन्होंने ही उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की? वास्तव में वह विश्वास ही नहीं रखते।
37. अथवा उन के पास आप के पालनहार के कोषागार हैं या वही (उस के) अधिकारी हैं?
38. अथवा उन के पास कोई सीढ़ी है जिसे लगा कर सुनते हैं? तो उन का सुनने वाला कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत करें।
39. क्या अल्लाह के लिये पुत्रियाँ हों तुम्हारे लिये पुत्र हों।
40. या आप माँग कर रहे हैं उन से किसी पारिश्रमिक की तो वे उस के बोझ से दबे जा रहे हैं?
41. अथवा उन के पास परोक्ष (का ज्ञान) है जिसे वे लिख रहे हैं?
42. या वे चाहते हैं कोई चाल चलना?

तो जो काफिर हो गये वे उस चाल में ग्रस्त होंगे।

43. अथवा उन का कोई और उपास्य (पूज्य) है अल्लाह के सिवा? अल्लाह पवित्र है उन के शिर्क से।
44. यदि वे देख लें कोई खण्ड आकाश से गिरता हुआ तो कहेंगे कि तह पर तह बादल है।
45. अतः आप छोड़ दें उन को यहाँ तक कि मिल जायें अपने उस दिन से जिस में इन्हें अपनी सुध नहीं होगी।
46. उस दिन नहीं काम आयेगी उन के उन की चाल कुछ, और न उन की सहायता की जायेगी।
47. तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये एक यातना है इस के अतिरिक्त (भी)। परन्तु उन में से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते हैं।
48. और (हे नबी!) आप सहन करें अपने पालनहार का आदेश आने तक। वास्तव में आप हमारी रक्षा में हैं। तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ जब जागते हों।
49. तथा रात्री में (भी) उस की पवित्रता का वर्णन करें और तारों के डूबने के पश्चात् (भी)।

सूरह नज्म - 53

सूरह नज्म के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है। इस में 62 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है तारे की, जब वह डूबने लगे।
2. नहीं कुपथ हुआ है तुम्हारा साथी और न कुमार्ग हुआ है।
3. और वह नहीं बोलते अपनी इच्छा से।
4. वह तो बस वह्नी (प्रकाशना) है। जो (उन की ओर) की जाती है।
5. सिखाया है जिसे उन को शक्तिवान ने।
6. बड़े बलशाली ने, फिर वह सीधा खड़ा हो गया।
7. तथा वह आकाश के ऊपरी किनारे पर था।
8. फिर समीप हुआ, और फिर लटक गया।
9. फिर हो गया दो कमान के बराबर अथवा उस से भी समीप।
10. फिर उस ने वह्नी की उस (अल्लाह) के भक्त की ओर जो भी वह्नी की।
11. नहीं झुठलाया उन के दिल ने जो कुछ उन्होंने देखा।
12. तो क्या तुम उन से झगड़ते हो उस पर जिसे वह (आँखों से) देखते हैं।
13. निःसंदेह उन्होंने उसे एक बार और भी उतरते देखा।

14. सिद्रतुल मुन्तहा के पास।
15. जिस के पास जश्तुल मावा है।
16. जब सिद्रह पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था।
17. न तो निगाह चुँधियाई और न सीमा से आगे हुई।
18. निश्चय आप ने अपने पालनहार की बड़ी निशानिया देखीं।
19. तो (हे मुश्रिकों!) क्या तुम ने देख लिया लान्त तथा उज्जा को।
20. तथा एक तीसरे मनात को?
21. क्या तुम्हारे लिये पुत्र है और उस अल्लाह के लिये पुत्रियाँ?
22. यह तो बड़ा भोंडा विभाजन है।
23. वास्तव में यह कुछ केवल नाम है जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं। नहीं उतारा है अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण। वह केवल अनुमान पर चल रहे हैं। तथा अपनी मनमानी पर। जब कि आ चुका है उन के पालनहार की ओर से मार्गदर्शन।
24. क्या मनुष्य को वही मिल जायेगा जिस की वह कामना करे?
25. (नहीं, यह बात नहीं है) क्यों कि अल्लाह के अधिकार में है आखिरत (प्रलोक) तथा संसार।
26. और आकाशों में बहुत से फरिश्ते हैं जिन की अनुशंसा कुछ लाभ नहीं देती, परन्तु इस के पश्चात् कि अनुमति दे अल्लाह जिस के लिये चाहे तथा उस से प्रसन्न हो।
27. वास्तव में जो ईमान नहीं लाते परलोक पर, वे नाम देते हैं फरिश्तों को स्त्रियों के नाम।
28. उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं वह अनुसरण कर रहे हैं मात्र गुमान का और वस्तुतः गुमान नहीं लाभप्रद होता सत्य के सामने कुछ भी।
29. अतः आप विमुख हो जायें उस से जिस ने मुँह फेर लिया है हमारी शिक्षा से। तथा वह संसारिक जीवन ही चाहता है।
30. यही उन के ज्ञान की पहुँच है। वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस के मार्ग से, तथा उसे जिस ने संमार्ग अपना लिया।
31. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है ताकि वह बदला दे जिस ने बुराई की उस के कुकर्म का, और बदला दे जिस ने सुकर्म किया अच्छा बदला।
32. उन लोगों को जो बचते हैं, महा पापों तथा निर्लज्जा से, कुछ चूक के सिवा। वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है। वह भली-भाँति जानता है तुम को, जब कि उस ने पैदा किया तुम को धरती से तथा जब तुम भ्रूण थे अपनी माताओं के गर्भ में। अतः अपने में पवित्र न बनो। वही भली- भाँति जानता है उसे जिस ने सदाचार किया है।
33. तो क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुँह फेर लिया?
34. और तनिक दान किया फिर रुक गया।

35. क्या उस के पास परोक्ष का ज्ञान है कि वह (सब कुछ) देख रहा है?
36. क्या उसे सूचना नहीं हुई उन बातों की जो मूसा के ग्रन्थों में है?
37. और इब्राहीम की जिस ने (अपना वचन) पूरा कर दिया।
38. कि कोई दूसरे का भार नहीं लादेगा।
39. और यह कि मनुष्य के लिये वही है जो उस ने प्रयास किया।
40. और यह कि उस का प्रयास शीघ्र देखा जायेगा।
41. फिर प्रतिफल दिया जायेगा उसे पूरा प्रतिफल।
42. और यह कि आप के पालनहार की ओर ही (सब को) पहुँचना है।
43. तथा वही है जिस ने (संसार में) हँसाया तथा रुलाया।
44. तथा उसी ने मारा और जिवाया।
45. तथा उसी ने दोनों प्रकार उत्पन्न किये: नर और नारी।
46. वीर्य से जब (गर्भाशय में) गिरा।
47. तथा उसी के ऊपर दूसरी बार उत्पन्न करना है।
48. तथा उसी ने धनी बनाया और धन दिया।
49. और वही शेअ्रा का स्वामी है।
50. तथा उसी ने ध्वस्त किया प्रथम आद को।
51. तथा समुद्र को। किसी को शेष नहीं रखा।

52. तथा नूह की जाति को इस से पहले, वस्तुतः वह बड़े अत्याचारी अवैज्ञाकारी थे।
53. तथा औधी की हुई बस्ती को उस ने गिरा दिया।
54. फिर उस पर छा दिया जो छा दिया।
55. तो (हे मनुष्य!) तू अपने पालनहार के किन किन पुरस्कारों में संदेह करता रहेगा।
56. यह सचेतकर्ता है प्रथम सचेतकर्ताओं में से।
57. समीप आ लगी समीप आने वाली।
58. नहीं है अल्लाह के सिवा उसे कोई दूर करने वाला।
59. तो क्या तुम इस कुर्आन पर आश्चर्य करते हो?
60. तथा हँसते हो, और रोते नहीं।
61. तथा विमुख हो रहे हो।
62. अतः सज्दा करो अल्लाह के लिये तथा उसी की बंदना करो।

सूरह क़मर - 54

सूरह क़मर के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है। इस में 55 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. समीप आ गई प्रलय, तथा दो खण्ड हो गया चाँद।
2. और यदि वह देखते हैं कोई निशानी तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं: यह तो जादू है जो होता रहा है।

3. और उन्होंने झुठलाया और अनुसरण किया अपनी आकांक्षाओं का और प्रत्येक कार्य का एक निश्चित समय है।
4. और निश्चय आ चुके हैं उन के पास कुछ ऐसे समाचार जिन में चेतवानी है।
5. यह (कुर्आन) पूर्णतः तत्त्वदर्शिता (ज्ञान) है फिर भी नहीं काम आई उन के चेतावनियाँ।
6. तो आप विमुख हो जायें उन से, जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा एक अप्रिय चीज़ की ओर।
7. झुकी होंगी उन की आँख। वह निकल रहे होंगे समाधियों से जैसे कि वह टिङ्की दल हों बिखरे हुये।
8. दौड़ रहे होंगे पुकारने वाले की ओर। काफिर कहेंगे: यह तो बड़ा भीषण दिन है।
9. झुठलाया इन से पहले नूह की जाति ने। तो झुठलाया उन्होंने हमारे भक्त को और कहा कि (पागल) है। और (उसे) झड़का गया।
10. तो उस ने प्रार्थना की अपने पालनहार से कि मैं विवश हूँ, अतः मेरा बदला ले ले।
11. तो हम ने खोल दिये आकाश के द्वार धारा प्रवाह जल के साथ।
12. तथा फाड़ दिये धरती के स्रोत, तो मिल गया (आकाश और धरती का) जल उस कार्य के अनुसार जो निश्चित किया गया।
13. और सवार कर दिया हम ने उस (नूह) को तख्तों तथा कीलों वाली (नाव) पर।
14. जो चल रही थी हमारी रक्षा में उस का बदला लेने के लिये जिस के साथ कुफ़ किया गया था।
15. और हम ने छोड़ दिया इसे एक शिक्षा बना कर। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
16. फिर (देख लो!) कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
17. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
18. झुठलाया आद ने तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।
19. हम ने भेज दी उन पर कड़ी आँधी एक निरन्तर अशुभ दिन में।
20. जो उखाड़ रही थी लोगों को जैसे वह खजूर के खोखले तने हों।
21. तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
22. और हम ने सरल बना दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
23. झुठला दिया समूद ने चेतावनियों को।
24. और कहा: क्या अपने ही में से एक मनुष्य का हम अनुसरण करें? वास्तव में तब तो हम निश्चय बड़े कुपथ तथा पागलपन में हैं।
25. क्या उतारी गई है शिक्षा उसी पर हमारे बीच में से? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूठा अहंकारी है।
26. उन्हें कल ही ज्ञान हो जायेगा कि

कौन बड़ा झूठा अहंकारी है?

27. वास्तव में हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उन की परीक्षा के लिये। अतः (हे सालेह!) तुम उन के (परिणाम की) प्रतीक्षा करो तथा धैर्य रखो।
28. और उन्हें सूचित कर दो कि जल विभाजित होगा उन के बीच, और प्रत्येक अपनी बारी के दिन उपस्थित होगा।
29. तो उन्होंने पुकारा अपने साथी को। तो उस ने आक्रमण किया और उसे बध कर दिया।
30. फिर कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
31. हम ने भेज दी उन पर कर्कश ध्वनी, तो वे हो गये बाड़ा बनाने वाले की रौदी हुई बाढ़ के समान (चूर-चूर)।
32. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
33. झूठला दिया लूत की जाति ने चेतावनियों को।
34. तो हम ने भेज दिये उन पर, पत्थर लूत के परिजनों के सिवा, हम ने उन्हें बचा लिया रात्री के पिछले पहर।
35. अपने विशेष अनुग्रह से। इसी प्रकार हम बदला देते हैं उस को जो कृतज्ञ हो।
36. और निःसदेह (लूत) ने सावधान किया उन को हमारी पकड़ से। परन्तु उन्होंने सदेह किया चेतावनियों के विषय में।
37. और बहलाना चाहा उस (लूत) को उस के अतिथियों से तो हम ने अंधी कर दी उन की आँखों कि चखो

मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियों (का परिणाम)।

38. और उन पर आ पहुँची प्रातः भोर ही में स्थायी यातना।
39. तो चखो मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियों।
40. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
41. तथा फिर औनियों के पास भी चेतावनियों आईं।
42. उन्होंने झूठलाया हमारी प्रत्येक निशानियों को तो हम ने पकड़ लिया उन को अति प्रभावी आधिपति के पकड़ने के समान।
43. (हे मक्कावासियों!) क्या तुम्हारे काफिर उत्तम हैं उन से अथवा तुम्हारी मुक्ति लिखी हुई है आकाशीय पुस्तकों में?
44. अथवा वह कहते हैं कि हम विजेता समूह हैं।
45. शीघ्र ही पराजित कर दिया जायेगा यह समूह, और वह पीठ दिखा देंगे।
46. बल्कि प्रलय उन के वचन का समय है तथा प्रलय अधिक कड़ी और तीखी है।
47. वस्तुतः यह पापी कुपथ तथा अग्नि में हैं।
48. जिस दिन वे घसीटे जायेंगे यातना में अपने मुखों के बल (उन से कहा जायेगा कि) चखो नरक की यातना का स्वाद।
49. निश्चय हम ने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से।

50. और हमारा आदेश बस एक ही बार होता है आँख झपकने के समान।
51. और हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे जैसे बहुत से समुदायों को।
52. जो कुछ उन्होंने किया है कर्मपत्र में है।
53. और प्रत्येक तुच्छ तथा बड़ी बात अंकित है।
54. वस्तुतः सदाचारी लोग स्वर्गों तथा नहरों में होंगे।
55. सत्य के स्थान में अति सामर्थ्यवान् स्वामी के पास।

सूरह रहमान - 55

सूरह रहमान के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है इस में 78 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अत्यन्त कृपाशील ने।
2. शिक्षा दी कुर्आन की।
3. उसी ने उत्पन्न किया मनुष्य को।
4. सिखाया उसे साफ साफ बोलना।
5. सूर्य तथा चन्द्रमा एक (नियमित) हिसाब से हैं।
6. तथा तारे और वृक्ष दोनों (उसे) सज्दा करते हैं।
7. और आकाश को ऊँचा किया और रख दी तराजू।
8. ताकि तुम उल्लंघन न करो तराजू (न्याय) में।
9. तथा सीधी रखो तराजू न्याय के साथ

- और कम न तौलो।
10. धरती को उस ने (रहने योग्य) बनाया पूरी उत्पत्ति के लिये।
11. जिस में मेवे तथा गुच्छे वाले खजूर हैं।
12. और भूसे वाले अब तथा सुगन्धित (पुष्प) फूल हैं।
13. तो (हे मनुष्य तथा जिब्र!) तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
14. उस ने उत्पन्न किया मनुष्य को खनखनाते ठीकरी जैसे सूखे गारे से।
15. तथा उत्पन्न किया जिब्रों को अग्नि की ज्वाला से।
16. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
17. वह दोनों सूर्योदय के स्थानों तथा दोनों सूर्यास्त के स्थानों का स्वामी है।
18. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?
19. उस ने दो सागर बहा दिये जिन का संगम होता है।
20. उन दोनों के बीच एक आड़ है। वह एक-दूसरे से मिल नहीं सकते।
21. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
22. निकलता है उन दोनों से मोती तथा मूँगा।

23. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
24. तथा उसी के अधिकार में हैं जहाज़ खड़े किये हुये सागर में पर्वतों जैसे।
25. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
26. प्रत्येक जो धरती पर है नाशवान है।
27. तथा शेष रह जायेगा आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का मुख (अस्तित्व)।
28. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
29. उसी से माँगते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं। प्रत्येक दिन वह एक नये कार्य में हैं।
30. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
31. और शीघ्र ही हम पूर्णतः आकर्षित हो जायेंगे तुम्हारी ओर, हे (धरती के) दोनों बोझ (जिश्मों और मनुष्यों)।
32. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
33. हे जिश्म तथा मनुष्य के समूह! यदि निकल सकते हो आकाशों तथा धरती के किनारों से तो निकल भागो। और तुम निकल नहीं सकोगे बिना बड़ी शक्ति के।
34. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
35. तुम दोनों पर अग्नि की ज्वाला तथा धुँवाँ छोड़ा जायेगा। तो तुम अपनी

सहायता नहीं कर सकोगे।

36. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
37. जब आकाश (प्रलय के दिन) फट जायेगा तो लाल हो जायेगा लाल चमड़े के समान।
38. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
39. तो उस दिन नहीं प्रश्न किया जायेगा अपने पाप का किसी मनुष्य से न जिश्म से।
40. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
41. पहचान लिये जायेंगे अपराधी अपने मुखों से, तो पकड़ा जायेगा उन के माथे के बालों और पैरों को।
42. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
43. यही वह नरक है जिसे झूठ कह रहे थे अपराधी।
44. वह फिरते रहेंगे उस के बीच तथा खौलते पानी के बीच।
45. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
46. और उस के लिये जो डरा अपने पालनहार के समक्ष खड़े होने से दो बाग़ हैं।
47. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
48. दो बाग़ हरी भरी शाखाओं वाले।

49. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
50. उन दोनों में दो जल स्रोत बहते होंगे।
51. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?
52. उन में प्रत्येक फल के दो प्रकार होंगे।
53. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
54. वह ऐसे बिस्तरों पर तकिये लगाये हुये होंगे जिन के अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे और दोनों बागों (की शाखायें) फलों से झुकी हुई होंगी।
55. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
56. उन में लजीली आँखों वाली स्त्रियाँ होंगी जिन को हाथ नहीं लगाया होगा किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन्न ने।
57. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
58. जैसे वह हीरे और मूँगे हों।
59. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
60. उपकार का बदला उपकार ही है।
61. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
62. तथा उन दोनों के सिवा दो बाग होंगे।
63. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
64. दोनों हरे-भरे होंगे।
65. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
66. उन दोनों में दो जल स्रोत होंगे उबलते हुये।
67. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
68. उन में फल तथा खजूर और अनार होंगे।
69. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
70. उन में सुचरिता सुन्दरियाँ होंगी।
71. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
72. गोरियाँ सुरक्षित होंगी खेमों में।
73. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
74. नहीं हाथ लगाया होगा उन्हें किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन्न ने।
75. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
76. वे तकिये लगाये हुये होंगे हरे गलीचों तथा सुन्दर बिस्तरों पर।
77. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
78. शुभ है आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का नाम।

सूरह वाक़िआ - 56

सूरह वाक़िआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 96 आयत है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. जब होने वाली हो जायेगी।
2. उस का होना कोई झूठ नहीं है।
3. नीचा-ऊँचा करने वाली।
4. जब धरती तेज़ी से डोलने लगेगी।
5. और चूर-चूर कर दिये जायेंगे पर्वत।
6. फिर हो जायेंगे बिखरी हुई धूल।
7. तथा तुम हो जाओगे तीन समूह।
8. तो दायें वाले, तो क्या है दायें वाले!
9. और बायें वाले, तो क्या है बायें वाले।
10. और आग्रगामी तो आग्रगामी ही है।
11. वही समीप किये हुये है।
12. वह सुखों के स्वर्गों में होंगे।
13. बहुत से अगले लोगों में से।
14. तथा कुछ पिछले लोगों में से होंगे।
15. स्वर्ण से बुने हुये तख़्तों पर।
16. तकिये लगाये उन पर एक-दूसरे के सम्मुख (आसीन) होंगे।
17. फिरते होंगे उन की सेवा के लिये बालक जो सदा (बालक) रहेंगे।
18. प्याले तथा सुराहियाँ लेकर तथा मदिरा के छलकते प्याले।

19. न तो सिर चकरायेगा उन से न वह निर्बाध होंगी।
20. तथा जो फल वह चाहेंगे।
21. तथा पक्षी का जो मांस वे चाहेंगे।
22. और गोरियाँ बड़े नैनों वाली।
23. छुपा कर रखी हुई मोतियों के समान।
24. उस के बदले जो वह (संसार में) करते रहे।
25. नहीं सुनैंगे उन में व्यर्थ बात और न पाप की बात।
26. केवल सलाम ही सलाम की ध्वनी होगी।
27. और दायें वाले, (क्या ही भाग्य शाली) है दायें वाले।
28. बिन काँटे की बैरी में होंगे।
29. तथा तह पर तह केलों में।
30. फैली हुई छाया में।
31. और प्रवाहित जल में।
32. तथा बहुत से फलों में।
33. जो न समाप्त होंगे, न रोके जायेंगे।
34. और ऊँचे बिस्तर पर।
35. हम ने बनाया है (उन की) पत्नियों को एक विशेष रूप से।
36. हम ने बनाया है उन्हें कुमारियाँ।
37. प्रेमिकायें समायु।
38. दाहिने वालों के लिये।
39. बहुत से अगलों में से होंगे।

40. तथा बहुत से पिछलों में से।
41. और बायें वाले, क्या है बायें वाले।
42. वह गर्म वायु तथा खौलते जल में (होंगे)।
43. तथा काले धूबें की छाया में।
44. जो न शीतल होगा और न सुखदा।
45. वास्तव में वह इस से पहले (संसार में) सम्पन्न (सुखी) थे।
46. तथा दुराग्रह करते थे महा पापों पर।
47. तथा कहा करते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे तथा हो जायेंगे धूल और अस्थियाँ तो क्या हम अवश्य पुनः जीवित होंगे?
48. और क्या हमारे पूर्वज (भी)?
49. आप कह दें कि निःसंदेह सब अगले तथा पिछले।
50. अवश्य एकत्रित किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय।
51. फिर तुम, हे कुपथो! झुठलाने वालो!!
52. अवश्य खाने वाले हो जक़कूम (थोहड़) के वृक्ष से।
53. तथा भरने वाले हो उस से (अपने) उदर।
54. तथा पीने वाले हो उस पर से खौलता जल।
55. फिर पीने वाले हो प्यासे ऊँट के समान।
56. यही उन का अतिथि-सत्कार है

प्रतिकार (प्रलय) के दिन।

57. हम ने ही उत्पन्न किया है तुम को फिर तुम विश्वास क्यों नहीं करते?
58. क्या तुम ने यह विचार किया की जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो।
59. क्या तुम उसे शिशु बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।
60. हम ने निर्धारित किया है तुम्हारे बीच मरण को तथा हम विवश होने वाले नहीं हैं।
61. कि बदल दें तुम्हारे रूप, और तुम्हें बना दें उस रूप में जिसे तुम नहीं जानते।
62. तथा तुम ने तो जान लिया है प्रथम उत्पत्ति को फिर तुम शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करते?
63. फिर क्या तुम ने विचार किया कि उस में जो तुम बोते हो?
64. क्या तुम उसे उगाते हो या हम उसे उगाने वाले हैं?
65. यदि हम चाहें तो उसे भुस बना दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ।
66. वस्तुतः हम दण्डित कर दिये गये।
67. बल्कि हम (जीविका से) वंचित कर दिये गये।
68. फिर तुम ने विचार किया उस पानी में जो तुम पीते हो।
69. क्या तुम ने उसे बरसाया है उसे बादल से अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं।
70. यदि हम चाहें तो उसे खारी कर दें फिर

तुम आभारी (कृतज्ञ) क्यों नहीं होते?

71. क्या तुम ने उस अग्नि को देखा जिसे तुम सुलगाते हो।
72. क्या तुम ने उत्पन्न किया है उस के वृक्ष को या हम उत्पन्न करने वाले हैं?
73. हम ने ही बनाया उस को शिक्षाप्रद तथा यात्रियों के लाभदायक।
74. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।
75. मैं शपथ लेता हूँ सितारों के स्थानों की।
76. और यह निश्चय एक बड़ी शपथ है यदि तुम समझो।
77. वास्तव में यह आदरणीय कुर्आन है।
78. सुरक्षित पुस्तक में है।
79. इसे पवित्र लोग ही छूते हैं।
80. अवतरित किया गया है सर्वलोक के पालनहार की ओर से।
81. फिर क्या तुम इस वाणी (कुर्आन) की अपेक्षा करते हो?
82. तथा बनाते हो अपना भाग कि इसे तुम झुठलाते हो?
83. फिर क्यों नहीं जब प्राण गले को पहुँचते हैं।
84. और तुम उस समय देखते रहते हो।
85. तथा हम अधिक समीप होते हैं उस के तुम से, परन्तु तुम नहीं देख सकते।
86. तो यदि तुम किसी के आधीन नहीं हो।
87. तो उस (प्राण) को फेर क्यों नहीं

लाते, यदि तुम सच्चे हो?

88. फिर यदि वह (प्राणी) समीपवर्तियों में है।
89. तो उस के लिये सुख तथा उत्तम जीविका तथा सुख भरी स्वर्ग है।
90. और यदि वह दायें वालों में से है।
91. तो सलाम है तेरे लिये दायें वालों में होने के कारण।
92. और यदि वह है झुठलाने वाले कुपथों में से।
93. तो अतिथि सत्कार है खौलते पानी से।
94. तथा नरक में प्रवेश।
95. वास्तव में यही निश्चय सत्य है।
96. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।

सूरह हदीद - 57

सूरह हदीद के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मद्नी है, इस में 29 आयत हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अल्लाह की पवित्रता का गान करता है जो भी आकाशों तथा धरती में है और वह प्रबल गुणी है।
2. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जीवन देता है तथा मारता है और वह जो चाहे कर सकता है।
3. वही प्रथम तथा वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है। और वह प्रत्येक

वस्तु का जानने वाला है।

4. उसी ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को छः दिनों में फिर स्थित हो गया अर्श (सिंहासन) पर। वह जानता है जो प्रवेश करता है धरती में तथा जो निकलता है उस से। और जो उतरता है आकाश से तथा चढ़ता है उस में। और वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम रहो, और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।
5. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य और उसी की ओर फेरे जाते हैं सब मामले (निर्णय के लिये)।
6. वह प्रवेश करता है रात्रि को दिन में और प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा वह सीनों के भेदों से पूर्णतः अवगत है।
7. तुम सभी ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और व्यय करो उस में से जिस में उस ने अधिकार दिया है तुम को। तो जो लोग ईमान लायेंगे तुम में से तथा दान करेंगे तो उन्हीं के लिये बड़ा प्रतिफल है।
8. और तुम्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते अल्लाह पर जब कि रसूल तुम्हें पुकार रहा है ताकि तुम ईमान लाओ अपने पालनहार पर, जब कि अल्लाह ले चुका है तुम से वचन, यदि तुम ईमान वाले हो।
9. वही है जो उतार रहा है अपने भक्त पर खुली आयतें ताकि वह तुम्हें निकाले अंधेरों से प्रकाश की ओर। तथा वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये

अवश्य करुणामय दयावान् है।

10. और क्या कारण है कि तुम व्यय नहीं करते अल्लाह की राह में, जब अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का उत्तराधिकार। नहीं बराबर हो सकते तुम में से वे जिन्होंने दान किया (मक्का) की विजय से पहले तथा धर्मयुद्ध किया। वही लोग पद में अधिक ऊँचे हैं उन से जिन्होंने दान किया उस के पश्चात् तथा धर्मयुद्ध किया। तथा प्रत्येक को अल्लाह ने वचन दिया है भलाई का, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से पूर्णतः सूचित है।
11. कौन है जो ऋण दे अल्लाह को अच्छा ऋण? जिसे वह दुगुना कर दे उस के लिये और उसी के लिये अच्छा प्रतिदान है।
12. जिस दिन तुम देखोगे ईमान वालों तथा ईमान वालियों को, कि दौड़ रहा होगा उन का प्रकाश उन के आगे तथा उन के दायें। तुम्हें शुभसूचना है ऐसे स्वर्गों की बहती है जिन में नहरें, जिन में तुम सदावासी होगे, वही बड़ी सफलता है।
13. जिस दिन कहेंगे मुनाफिक पुरुष तथा मुनाफिक स्त्रियाँ उन से जो ईमान लाये कि हमारी प्रतीक्षा करो हम प्राप्त कर लें तुम्हारे प्रकाश में से कुछ। उन से कहा जायेगा: तुम अपने पीछे वापिस जाओ, और प्रकाश की खोज करो। फिर बना दी जायेगी उन के बीच एक दीवार जिस में एक द्वार होगा। उस के भीतर दया होगी

तथा उस के बाहर यातना होगी।

14. वह उन को पुकारेंगे: क्या हम (संसार में) तुम्हारे साथ नहीं थे? (वह कहेंगे): परन्तु तुम ने उपद्रव में डाल लिया अपने आप को, और प्रतीक्षा में रहे तथा संदेह किया और धोखे में रखा तुम्हें तुम्हारी मिथ्या कामनाओं ने। यहाँ तक की आ पहुँचा अल्लाह का आदेश। और धोखे ही में रखा तुम्हें बड़े वंचक (शैतान) ने।
15. तो आज तुम से कोई अर्थ-दण्ड नहीं लिया जायेगा और न काफ़िरों से। तुम्हारा आवास नरक है, वही तुम्हारे योग्य है, और वह बुरा निवास है।
16. क्या समय नहीं आया ईमान वालों के लिये कि झुक जायें उन के दिल अल्लाह के स्मरण (याद) के लिये, तथा जो उतरा है सत्य, और न हो जायें उन के समान जिन को प्रदान की गई पुस्तकें इस से पूर्व, फिर लम्बी अवधि व्यतीत हो गई उन पर, तो कठोर हो गये उन के दिल। तथा उन में अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।
17. जान लो कि अल्लाह ही जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात, हम ने उजागर कर दी है तुम्हारे लिये निशानियाँ ताकि तुम समझो।
18. वस्तुतः दान करने वाले पुरुष तथा दान करने वाली स्त्रियों तथा जिन्होंने ऋण दिया है अल्लाह को अच्छा ऋण, उसे बढ़ाया जायेगा उन के लिये, और उन्हीं के लिये अच्छा प्रतिदान है।

19. तथा जो ईमान लाये अल्लाह और उस के रसूलों पर वही सिद्दीक तथा शहीद है अपने पालनहार के समीप। उन्हीं के लिये उन का प्रतिफल तथा उन की दिव्य ज्योति है। और जो काफ़िर हो गये और झुठलाया हमारी आयतों को तो वही नारकीय है।
20. जान लो कि संसारिक जीवन एक खेल तथा मनोरंजन और शोभा एवं आपस में गर्व तथा एक-दूसरे से बढ़ जाने का प्रयास है धनों तथा संतान में। उस वर्षा के समान भा गई किसानों को जिस की उपज, फिर वह पक गई तो तुम उसे देखने लगे पीली, फिर वह हो जाती है चुर-चुरा और परलोक में कड़ी यातना है, तथा अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता है। और संसारिक जीवन तो बस धोखे का संसाधन है।
21. एक-दूसरे से आगे बढ़ो अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर जिस का विस्तार आकाश तथा धरती के विस्तार के समान है। जो तैयार की गई है उन के लिये जो ईमान लायें अल्लाह और उस के रसूलों पर। यह अल्लाह का अनुग्रह है वह प्रदान करता है उसे जिस को चाहता है और अल्लाह बड़ा उदार (दयाशील) है।
22. नहीं पहुँचती कोई आपदा धरती में और न तुम्हारे प्राणों में परन्तु वह एक पुस्तक में लिखी है इस से पूर्व कि हम उसे उत्पन्न करें, और यह अल्लाह के लिये अति सरल है।
23. ताकि तुम शोक न करो उस पर जो

तुम से खो जाये और न इतराओ उस पर जो तुम्हें प्रदान किया है। और अल्लाह प्रेम नहीं करता किसी इतराने गर्व करने वाले से।

24. जो कंजूसी करते हैं और आदेश देते हैं लोगों को कंजूसी करने का। तथा जो विमुख होगा तो निश्चय अल्लाह निस्पृह सराहनीय है।
25. निःसदिह हम ने भेजा है अपने रसूलों को खुले प्रमाणों के साथ, तथा उतारी है उन के साथ पुस्तक, तथा तुला (न्याय का नियम), ताकि लोग स्थित रहें न्याय पर। तथा हम ने उतारा लोहा जिस में बड़ा बल है तथा लोगों के लिये बहुत से लाभ और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उस की सहायता करता है तथा उस के रसूलों की बिना देखे। वस्तुतः अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।
26. हम ने (रसूल बना कर) भेजा नूह को तथा इब्राहीम को और रख दी उन की संतति में नबूवत (दुतत्व) तथा पुस्तक। तो उन में से कुछ ने मार्गदर्शन अपनाया और उन में से बहुत से अवैज्ञाकारी हैं।
27. फिर हम ने निरन्तर उन के पश्चात्

अपने रसूल भेजे और उन के पश्चात् भेजा मर्यम के पुत्र ईसा को तथा प्रदान की उसे इंजील, और कर दिया उस का अनुसरण करने वालों के दिलों में करुणा तथा दया, और संसार त्याग को उन्होंने स्वयं बना लिया, हम ने नहीं अनिवार्य किया उसे उन के ऊपर। परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता के लिये (उन्होंने ऐसा किया) तो उन्होंने नहीं किया उस का पूर्ण पालन। फिर (भी) हम ने प्रदान किया उन को जो ईमान लाये उन में से उन का बदला। और उन में से अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

28. हे लोगों जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो और ईमान लाओ उस के रसूल पर वह तुम्हें प्रदान करेगा दोहरा प्रतिफल अपनी दया से, तथा प्रदान करेगा तुम्हें ऐसा प्रकाश जिस के साथ तुम चलोगे, तथा क्षमा कर देगा तुम्हें, और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
29. ताकि ज्ञान हो जाये (इन बातों से) अहले किताब को कि वह कुछ शक्ति नहीं रखते अल्लाह के अनुग्रह पर। और यह कि अनुग्रह अल्लाह ही के हाथ में है। वह प्रदान करता है जिसे चाहे, और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।



सूरह मुजादला - 58

सूरह मुजादला के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदनी है, इस में 22 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे नबी!) अल्लाह ने सुन ली है उस स्त्री की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने पति के विषय में तथा गुहार रही थी अल्लाह को। और अल्लाह सुन रहा था तुम दोनों की वार्तालाप, वास्तव में वह सब कुछ सुनने-देखने वाला है।
2. जो ज़िहार करते हैं तुम में से अपनी पत्नियों से तो वे उन की माँ नहीं हैं। उन की माँ तो वे हैं जिन्होंने उन को जन्म दिया है। और वह बोलते हैं अप्रिय तथा झूठी बात। और वास्तव में अल्लाह माफ़ करने वाला क्षमाशील है।
3. और जो ज़िहार कर लेते हैं अपनी पत्नियों से, फिर वापिस लेना चाहते हों अपनी बात तो (उस का दण्ड) एक दास मुक्त करना है, इस से पूर्व कि एक-दूसरे को हाथ लगायें। इसी की तुम्हें शिक्षा दी जा रही है। और अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।
4. फिर जो (दास) न पाये तो दो महीने निरन्तर रोज़ा (ब्रत) रखना है इस से पूर्व कि एक-दूसरे को हाथ लगायें। फिर जो सकत न रखे तो साठ निर्घनों को भोजन कराना है। यह आदेश इस लिये है ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर।

और यह अल्लाह की सीमायें हैं। तथा काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना है।

5. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल का, वे अपमानित कर दिये जायेंगे जैसे अपमानित कर दिये गये जो इन से पूर्व हुये। और हम ने उतार दी है खुली आयतें और काफ़िरों के लिये अपमान कारी यातना है।
6. जिस दिन जीवित करेगा उन सब को अल्लाह तो उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से। गिन रखा है उसे अल्लाह ने और वह भूल गये हैं उसे। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर गवाह है।
7. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है? नहीं होती किसी तीन की काना फूसी परन्तु वह उन का चौथा होता है। और न पाँच की परन्तु वह उन का छठा होता है। और न इस से कम की और न इस से अधिक की परन्तु वह उन के साथ होता है, वे जहाँ भी हों। फिर वह उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से प्रलय के दिन। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।
8. क्या आप ने नहीं देखा उन्हें जो रोके गये हैं काना फूसी से? फिर (भी) वही करते हैं जिस से रोके गये हैं। तथा काना फूसी करते हैं पाप और अत्याचार, तथा रसूल की अवैज्ञा की। और जब वे आप के पास आते हैं तो आप को ऐसे (शब्द से) सलाम करते हैं जिस से आप पर सलाम नहीं भेजा अल्लाह ने। तथा कहते हैं अपने मनों में: क्यों अल्लाह हमें यातना

नहीं देता उस पर जो हम कहते हैं? पर्याप्त है उन को नरक जिस में वह प्रवेश करेंगे, तो बुरा है उन का ठिकाना।

9. हे लोगो जो ईमान लाये हो! जब तुम काना फूसी करो तो काना फूसी न करो पाप तथा अत्याचार एवं रसूल की अवैज्ञा की। और काना फूसी करो पुण्य तथा सदाचार की। और डरते रहो अल्लाह से जिस की ओर ही तुम एकत्र किये जाओगे।
10. वास्तव में काना फूसी शैतानी काम है ताकि वह उदासीन हों जो ईमान लाये। जब कि नहीं है वह हानिकर उन को कुछ, परन्तु अल्लाह की अनुमति से। और अल्लाह ही पर चाहिये कि भरोसा करें ईमान वाले।
11. हे ईमान वाले! जब तुम से कहा जाये कि विस्तार कर दो अपनी सभाओं में तो विस्तार कर दो, विस्तार कर देगा अल्लाह तुम्हारे लिये। तथा जब कहा जाये कि सुकड़ जाओ तो सुकड़ जाओ। ऊँचा कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है कई श्रेणियों। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति अवगत है।
12. हे ईमान वाले! जब तुम अकेले बात करो रसूल से तो बात करने से पहले कुछ दान करो। यह तुम्हारे लिये उत्तम तथा अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम (दान के लिये कुछ) न पाओ तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
13. क्या तुम (इस आदेश से) डर गये कि एकान्त में बात करने से पहले

कुछ दान कर दो? फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया तो स्थापना करो नमाज़ की तथा ज़कात दो और आज्ञा पालन करो अल्लाह तथा उस के रसूल की। और अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

14. क्या आप ने उन्हें देखा जिन्होंने मित्र बना लिया उस समुदाय को जिस पर क्रोधित हो गया अल्लाह? न वह तुम्हारे हैं और न उन के। और वह शपथ लेते हैं झूठी बात पर जान बूझ कर।
15. तय्यार की है अल्लाह ने उन के लिये कड़ी यातना, वास्तव में वह बुरा है जो वे कर रहे हैं।
16. उन्होंने बना लिया अपनी शपथों को एक ढाल। फिर रोक दिया (लोगों को) अल्लाह की राह से, तो उन्हीं के लिये अपमान कारी यातना है।
17. कदापि नहीं काम आयेंगे उन के धन और न उन की संतान अल्लाह के समक्ष कुछ। वही नारकी है, वह उस में सदावासी होंगे।
18. जिस दिन खड़ा करेगा उन को अल्लाह तो वह शपथ लेंगे अल्लाह के समक्ष जैसे वह शपथ ले रहे हैं तुम्हारे समक्ष। और वह समझ रहे हैं कि वह कुछ (तर्क) पर हैं। सुन लो! वास्तव में वही झूठे हैं।
19. छा गया है उन पर शैतान और भुला दी है उन को अल्लाह की याद। यही शैतान की सेना है। सुन लो! शैतान की सेना ही क्षतिग्रस्त होने वाली है।
20. वास्तव में जो विरोध करते हैं

अल्लाह तथा उस के रसूल का, वही अपमानितों में से है।

21. लिख रखा है अल्लाह ने कि अवश्य मैं प्रभावशाली (विजयी) रहूँगा तथा मेरे रसूल। वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।
22. आप नहीं पायेंगे उन को जो ईमान रखते हों अल्लाह तथा अन्त- दिवस (प्रलय) पर कि वह मैत्री करते हों उन से जिन्होंने विरोध किया अल्लाह और उस के रसूल का, चाहे वह उन के पिता हों अथवा उन के पुत्र अथवा उन के भाई अथवा उन के परिजन हों। वही है लिख दिया है (अल्लाह ने) जिन के दिलों में ईमान और समर्थन दिया है जिन को अपनी ओर से रूह (आत्मा) द्वारा। तथा प्रवेश देगा उन को ऐसे स्वर्गों में बहती है जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे जिन में प्रसन्न हो गया अल्लाह उन से तथा वह प्रसन्न हो गये उस से। वह अल्लाह का समूह है। सुन लो अल्लाह का समूह ही सफल होने वाला है।

सूरह हथ - 59

सूरह हथ के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मद्नी है, इस में 24 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अल्लाह की पवित्रता का गान किया है उस ने जो भी आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।
2. वही है जिस ने अहले किताब में से काफिरों को उन के घरों से पहले ही आक्रमण में निकाल दिया। तुम ने नहीं समझा था कि वे निकल जायेंगे, और

उन्होंने समझा था कि रक्षक होंगे उन के दुर्गा अल्लाह से। तो आ गया उन के पास अल्लाह (का निर्णय)। ऐसा उन्होंने सोचा भी न था। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय। वह उजाड़ रहे थे अपने घरों को अपने हाथों से तथा ईमान वालों के हाथों से। तो शिक्षा लो, हे आँख वालो!

3. और यदि अल्लाह ने न लिख दिया होता उन (के भाग्य में) देश निकाला, तो उन्हें यातना दे देता संसार (ही) में। तथा उन के लिये आखिरत (परलोक) में नरक की यातना है।
4. यह इसलिये कि उन्होंने विरोध किया अल्लाह तथा उस के रसूल का, और जो विरोध करेगा अल्लाह का तो निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।
5. (हे मुसलमानो!) तुम ने नहीं काटा कोई खजूर का वृक्ष और न छोड़ा उसे खड़ा अपने तने पर, तो यह सब अल्लाह के आदेश से हुआ। और ताकि वह अपमानित करे पथभ्रष्टों को।
6. और जो धन दिला दिया अल्लाह ने अपने रसूल को उन से, तो नहीं दौड़ाये तुम ने उस के लिये छोड़े और न ऊँट। परन्तु अल्लाह प्रभुत्व प्रदान कर देता है अपने रसूल को जिस पर चाहता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
7. अल्लाह ने जो धन दिलाया है अपने रसूल को इस बस्ती वालों से, वह अल्लाह तथा रसूल, तथा (आप

के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। ताकि वह फिरता न रह जाये तुम्हारे धनवानों के बीच और जो प्रदान कर दें रसूल, तुम उसे ले लो और रोक दें तुम को जिस से तो तुम रुक जाओ। तथा अल्लाह से डरते रहो, निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

8. उन निर्धन मुहाजिरों के लिये है जो निकाल दिये गये अपने घरों तथा धनों से। वह चाहते हैं अल्लाह का अनुग्रह तथा प्रसन्नता, और सहायता करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की, यही सच्चे हैं।
9. तथा उन लोगों के लिये (भी) जिन्होंने आवास बना लिया इस घर (मदीना) को तथा उन (मुहाजिरों के आने) से पहले ईमान लाये, वह प्रेम करते हैं उन से जो हिजरत कर के आ गये उन के यहाँ। और वे नहीं पाते अपने दिलों में कोई आवश्यकता उस की जो उन्हें दिया जाये। और प्रथामिकता देते हैं (दूसरों को) अपने ऊपर चाहे स्वयं भूखे हों। और जो बचा लिये गये अपने मन की तंगी से, तो वही सफल होने वाले हैं।
10. और जो आये उन के पश्चात् वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयों को जो हम से पहले ईमान लाये। और न रख हमारे दिलों में कोई बैर उन के लिये जो ईमान लाये। हे हमारे पालनहार! तू अति करुणामय दयावान् है।

11. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो मुनाफिक (अवसरवादी) हो गये, और कहते हैं अपने अहले किताब भाईयों से कि यदि तुम्हें देश निकाला दिया गया तो हम अवश्य निकल जायेंगे तुम्हारे साथ। और नहीं मानेंगे तुम्हारे बारे में किसी की (बात) कभी। और यदि तुम से युद्ध हुआ तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे। तथा अल्लाह गवाह है कि वह झूठे हैं।
12. यदि वे निकाले गये तो यह उन के साथ नहीं निकालेंगे। और यदि उन से युद्ध हो तो वे उन की सहायता नहीं करेंगे। और यदि उन की सहायता की (भी) तो अवश्य पीठ दिखा देंगे, फिर (कहीं से) कोई सहायता नहीं पायेंगे।
13. निश्चय अधिक भय है तुम्हारा उन के दिलों में अल्लाह (के भय) से। यह इसलिये कि वे समझ-बूझ नहीं रखते।
14. वह नहीं युद्ध करेंगे तुम से एकत्र हो कर परन्तु यह कि दुर्ग बंद बस्तियों में हों, अथवा किसी दीवार की आड़ से। उन का युद्ध आपस में बहुत कड़ा है। आप उन्हें एकत्र समझते हैं जब कि उन के दिलों में अलग अलग हैं। यह इसलिये कि वह निर्बाध होते हैं।
15. उन के समान जो उन से कुछ ही पूर्व चख चुके हैं अपने किये का स्वादा। और इन के लिये दुःखदायी यातना है।
16. (उन का उदाहरण) शैतान जैसा है कि वह कहता है मनुष्य से कि कुफ़र कर, फिर जब वह काफिर हो गया तो कह दिया कि मैं तुझ से विरक्त (अलग) हूँ। मैं तो डरता हूँ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार से।

17. तो हो गया उन दोनों का दुष्परिणाम यह कि वे दोनों नरक में सदावासी रहेंगे। और यही है अत्याचारियों का कुफल।
18. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो, और देखना चाहिये प्रत्येक को कि उस ने क्या भेजा है कल के लिये। तथा डरते रहो अल्लाह से, निश्चय अल्लाह सूचित है उस से जो तुम करते हो।
19. और न हो जाओ उन के समान जो भूल गये अल्लाह को तो भुला दिया (अल्लाह ने) उन्हें अपने आप से, यही अवैज्ञकारी है।
20. नहीं बराबर हो सकते नारकी तथा स्वर्गी। स्वर्गी ही वास्तव में सफल होने वाले हैं।
21. यदि हम अवतरित करते इस कुर्आन को किसी पर्वत पर तो आप उसे देखते कि झुका जा रहा है तथा कण-कण होता जा रहा है अल्लाह के भय से। और इन उदाहरणों का वर्णन हम लोगों के लिये कर रहे हैं ताकि वह सोच-विचार करें। वह खुले तथा छुपे का जानने वाला है। वही अत्यंत कृपाशील दयावान् है।
22. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त कोई (सत्य) पूज्य नहीं है।
23. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त नहीं है कोई सच्चा बंदनीया। वह सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र, सर्वथा शान्ति प्रदान करने वाला, रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला, बड़ाई वाला है। पवित्र है अल्लाह उस

से जिसे वे (उस का) साझी बनाते हैं।

24. वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप देने वाला। उसी के लिये शुभनाम है, उस की पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है, और वह प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

सूरह मुम्तहिना - 60

सूरह मुम्तहिना के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदीनी है, इस में 13 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे लोगो जो ईमान लाये हो। मेरे शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ। तुम संदेश भेजते हो उन की ओर मैत्री का, जब कि उन्होंने ने कुफ्र किया है उस का जो तुम्हारे पास सत्य आया है। वह देश निकाला देते हैं रसूल को तथा तुम को इस कारण कि तुम ईमान लाये हो अल्लाह अपने पालनहार पर। यदि तुम निकले हो जिहाद के लिये मेरी राह में और मेरी प्रसन्नता की खोज के लिये तो गुप्त रूप से उन को मैत्री का संदेश भेजते हो? जब कि मैं भली-भाँति जानता हूँ उसे जो तुम छुपाते हो और जो खुल कर करते हो? तथा जो करेगा ऐसा, तो निश्चय वह कुपथ हो गया सीधी राह से।
2. और यदि वश में पा जायें तुम को तो तुम्हारे शत्रु बन जायें तथा तुम्हें अपने हाथों और जुबानों से दुःख पहुँचायें और चाहने लगेंगे कि तुम

(फिर) काफिर हो जाओ।

3. तुम्हें लाभ नहीं देंगे तुम्हारे सम्बन्धी और न तुम्हारी संतान प्रलय के दिन। वह (अल्लाह) अलगाव कर देगा तुम्हारे बीच। और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।
4. तुम्हारे लिये इब्राहीम तथा उस के साथियों में एक अच्छा आदर्श है। जब कि उन्होंने अपनी जाति से कहा: निश्चय हम विरक्त हैं तुम से तथा उन से जिन की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह के अतिरिक्त। हम ने तुम से कुफ़ किया। खुल चुका है बैर हमारे तथा तुम्हारे बीच और क्रोध सदा के लिये। जब तक तुम ईमान न लाओ अकेले अल्लाह पर, परन्तु इब्राहीम का (यह) कथन अपने पिता से कि मैं अवश्य तेरे लिये क्षमा की प्रार्थना करूँगा। और मैं नहीं अधिकार रखता हूँ अल्लाह के समक्ष कुछ। हे हमारे पालनहार! हम ने तेरे ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर ध्यान किया है और तेरी ही ओर फिर आना है।
5. हे हमारे पालनहार! हमें न बना परीक्षा (का साधन) काफिरों के लिये और हमें क्षमा कर दे, हे हमारे पालनहार! वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली गुणी है।
6. निःसंदेह तुम्हारे लिये उन में एक अच्छा आदर्श है उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (प्रलय) की। और जो विमुख हो तो निश्चय अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।
7. कुछ दूर नहीं कि अल्लाह बना दे तुम्हारे बीच तथा उन के बीच जिन से तुम बैर रखते हो प्रेम। और अल्लाह बड़ा सामर्थ्यवान है, और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
8. अल्लाह तुम को नहीं रोकता उन से जिन्होंने तुम से युद्ध न किया हो धर्म के विषय में, और न बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे देश से, इस से कि तुम उन से अच्छा व्यवहार करो और न्याय करो उन से। वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय कारियों से।
9. तुम्हें अल्लाह बस उन से रोकता है जिन्होंने युद्ध किया हो तुम से धर्म के विषय में तथा बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे घरों से, और सहायता की हो तुम्हारा बहिष्कार कराने में, कि तुम मैत्री रखो उन से। और जो मैत्री करेंगे उन से तो वही अत्याचारी है।
10. हे ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान स्त्रियों हिज्रत कर के आयें तो उन की परीक्षा ले लिया करो। अल्लाह अधिक जानता है उन के ईमान को, फिर यदि तुम्हें यह ज्ञान हो जाये कि वह ईमान वालियाँ हैं तो उन्हें वापिस न करो काफिरों की ओर। न वे औरतें हलाल (वैध) हैं उन के लिये और न वे काफिर हलाल (वैध) हैं उन औरतों के लिये। और चुका दो उन काफिरों को जो उन्होंने खर्च किया हो। तथा तुम पर कोई दोष नहीं है कि विवाह कर लो उन से जब दे दो उन को उन का महर (स्त्री उपहार)। तथा न रखो काफिर स्त्रियों को अपने विवाह में,

तथा माँग लो जो तुम ने खर्च किया हो। और चाहिये कि वह काफ़िर माँग लें जो उन्होंने खर्च किया हो। यह अल्लाह का आदेश है, वह निर्णय कर रहा है तुम्हारे बीच, तथा अल्लाह सब जानने वाला गुणी है।

सूरह सफ़ - 61

सूरह सफ़ के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मद्नी है, इस में 14 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

11. और यदि तुम्हारे हाथ से निकल जाये तुम्हारी कोई पत्नी काफ़िरों की ओर और तुम को बदले का अवसर मिल जाये तो चुका दो उन को जिन की पत्नियाँ चली गई हैं उस के बराबर जो उन्होंने खर्च किया है। तथा डरते रहो उस अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो।

12. हे नबी! जब आयें आप के पास ईमान वालियाँ ताकि वचन दें आप को इस पर कि वह साझी नहीं बनायेंगी अल्लाह का किसी को और न चोरी करेंगी और व्यभिचार करेंगी और न बध करेंगी अपनी संतान को और न कोई ऐसा आरोप (कलंक) लगायेंगी जिसे उन्होंने घड़ लिया हो आपने हाथों तथा पैरों के आगे और नहीं अवैज्ञा करेंगी आप की किसी भले काम में तो आप वचन ले लिया करें उन से तथा क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

13. हे ईमान वालो! तुम उन लोगों को मित्र न बनाओ क्रोधित हो गया है अल्लाह जिन पर। वह निराश हो चुके हैं आखिरत (परलोक) से उसी प्रकार जैसे काफ़िर समाधियों में पड़े हुये लोगों (के जीवित होने) से निराश हैं।

1. अल्लाह की पवित्रता का गान करती है जो वस्तु आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।

2. हे ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं।

3. अत्यंत अप्रिय है अल्लाह को तुम्हारी वह बात कहना जिसे तुम (स्वयं) करते नहीं।

4. निःसंदेह अल्लाह प्रेम करता है उन से जो युद्ध करते हैं उस की राह में पंक्तिबंद हो कर जैसे कि वह सीसा पिलायी दीवार हों।

5. तथा याद करो जब कहा मूसा ने अपनी जाति से: हे मेरे समुदाय! तुम क्यों दुःख देते हो मुझ को जब कि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी ओर। फिर जब वह टेढ़े ही रह गये तो टेढ़े कर दिये अल्लाह ने उन के दिल। और अल्लाह संमार्ग नहीं दिखाता उल्लंघनकारियों को।

6. तथा याद करो जब कहा, मर्यम के पुत्र ईसा ने: हे इस्राईल की संतान! मैं तुम्हारी अरि रसूल हूँ, और पुष्टि करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से पूर्व आयी है। तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ एक रसूल की जो आयेगा मेरे पश्चात्, जिस का नाम अहमद है। फिर जब

वह आ गये उन के पास खुले प्रमाणों को ले कर तो उन्होंने कह दिया कि यह तो खुला जादू है।

7. और उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो झूठ घड़े अल्लाह पर जब कि वह बुलाया जा रहा हो इस्लाम की ओर। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारी जाति को।
8. वह चाहते हैं कि बुद्धा दें अल्लाह के प्रकाश को अपने मुखों से। तथा अल्लाह पूरा करने वाला है अपने प्रकाश को, यद्यपि बुरा लगे काफ़िरों को।
9. वही है जिस ने भेजा है अपने रसूल को संमार्ग तथा सत्धर्म के साथ ताकि प्रभावित कर दे उसे प्रत्येक धर्म पर चाहे बुरा लगे मुश्रिकों को।
10. हे ईमान वालो! क्या मैं बता दूँ तुम्हें ऐसा व्यापार जो बचा ले तुम को दुःखदायी यातना से?
11. तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से यही तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।
12. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और प्रवेश देगा तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें तथा स्वच्छ घरों में स्थायी स्वर्गों में। यही बड़ी सफलता है।
13. और एक अन्य (प्रदान) जिस से तुम प्रेम करते हो। वह अल्लाह की सहायता तथा शीघ्र विजय है। तथा शुभसूचना सुना दो ईमान वालों को।
14. हे ईमान वालो! तुम बन जाओ अल्लाह (के धर्म) के सहायक जैसे

मर्यम के पुत्र ईसा ने हवारियों से कहा था कि कौन मेरा सहायक है अल्लाह (के धर्म के प्रचार में)? तो हवारियों ने कहा: हम हैं अल्लाह के (धर्म के) सहायक। तो ईमान लाया ईसाईलियों का एक समूह और कुफ़्र किया दूसरे समूह ने। तो हम ने समर्थन दिया उन को जो ईमान लाये उन के शत्रु के विरुद्ध, तो वही विजयी रहे।

सूरह जुमुआ - 62

सूरह जुमुआ के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मद्नी है, इस में 11 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती हैं वह सब चीज़ें जो आकाशों तथा धरती में हैं। जो अधिपति, अति पवित्र, प्रभावशाली गुणी (दक्ष) हैं।
2. वही है जिस ने निरक्षरों में एक रसूल भेजा उन्हीं में से। जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतें और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक (कुर्आन) तथा तत्वदर्शिता (सुबत) की। यद्यपि वह इस से पूर्व खुले कुपथ में थे।
3. तथा दूसरों के लिये भी उन में से जो अभी उन से नहीं मिले हैं। वह अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।
4. यह अल्लाह का अनुग्रह है जिसे वह प्रदान करता है उस के लिये जिस के लिये वह चाहता है। और अल्लाह बड़े

अनुग्रह वाला है।

5. उन की दशा जिन पर तौरात का भार रखा गया फिर तदानुसार कर्म नहीं किया उस गधे के समान है जिस के ऊपर पुस्तकें लदी हुई हों। बुरा है उस जाति का उदाहरण जिन्होंने झुठला दिया अल्लाह की आयतों को। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारियों को।
6. आप कह दें कि हे यहूदियों! यदि तुम समझते हो कि तुम्हीं अल्लाह के मित्र हो अन्य लोगों के अतिरिक्त, तो कामना करो मरण की यदि तुम सच्चे हो।
7. तथा वह अपने किये हुये कर्तूतों के कारण कदापि उस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह भली-भाँति अवगत है अत्याचारियों से।
8. आप कह दें कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह अवश्य तुम से मिल कर रहेगी। फिर तुम अवश्य फेर दिये जाओगे परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्येक (खुले) के ज्ञानी की ओर। फिर वह तुम को सूचित कर देगा उस से जो तुम करते रहे।
9. हे ईमान वालो! जब अज्ञान दी जाये नमाज़ के लिये जुमुआ के दिन तो दौड़ जाओ अल्लाह की याद की ओर तथा त्याग दो क्रय-विक्रय। यह उत्तम है तुम्हारे लिये यदि तुम जानो।
10. फिर जब नमाज़ हो जाये तो फ़ैल जाओ धरती में। तथा खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की तथा वर्णन करते रहो अल्लाह का अत्यधिक ताकि तुम सफल हो जाओ।

11. और जब वह देख लेते हैं कोई व्यापार अथवा खेल तो उस की ओर दौड़ पड़ते हैं। तथा आप को छोड़ देते हैं खड़े। आप कह दें कि जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम है खेल तथा व्यापार से। और अल्लाह सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।

सूरह मुनाफिकून - 63

सूरह मुनाफिकून के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदीनी है, इस में 11 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. जब आते हैं आप के पास मुनाफिक तो कहते हैं कि हम साक्ष्य (गवाही) देते हैं कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। तथा अल्लाह जानता है कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफिक निश्चय झूठे हैं।
2. उन्होंने बना रखा है अपनी शपथों को एक ढाल और रुक गये अल्लाह की राह से। वास्तव में वह बड़ा दुष्कर्म कर रहे हैं।
3. यह सब कुछ इस कारण है कि वे ईमान लाये फिर कुफ़र कर गये तो मुहर लगा दी अल्लाह ने उन के दिलों पर, अतः वह समझते नहीं।
4. और यदि आप उन्हें देखें तो आप को भा जायें उन के शरीर। और यदि वह बात करें तो आप सुनने लगे उन की बात, जैसे कि वह लकड़ियाँ हों दीवार के सहारे लगाई हुई। वह

प्रत्येक कड़ी ध्वनी को अपने विरुद्ध समझते हैं। वही शत्रु है, आप उन से सावधान रहें। अल्लाह उन को नाश करे, वह किधर फिरे जा रहे हैं।

5. जब उन से कहा जाता है कि आओ, ताकि क्षमा की प्रार्थना करें तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल, तो मोड़ लेते हैं अपने सिर। तथा आप उन्हें देखते हैं कि वह रुक जाते हैं अभिमान (घमंड) करते हुये।
6. हे नबी! उन के समीप समान है कि आप क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अथवा क्षमा की प्रार्थना न करें उन के लिये। कदापि नहीं क्षमा करेगा अल्लाह उन को। वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अवैज्ञाकारियों को।
7. यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि मत खर्च करो उन पर जो अल्लाह के रसूल के पास रहते हैं ताकि वह बिखर जायें। जब कि अल्लाह ही के अधिकार में है आकाशों तथा धरती के सभी कोष (खजाने)। परन्तु मुनाफिक समझते नहीं हैं।
8. वे कहते हैं कि यदि हम वापिस पहुँच गये मदीना तक तो निकाल देगा सम्मानित उस से अपमानित को। जब कि अल्लाह ही के लिये सम्मान है एवं उस के रसूल तथा ईमान वालों के लिये। परन्तु मुनाफिक जानते नहीं।
9. हे ईमान वालो! तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण (याद) से। और जो ऐसा करेंगे वही क्षति ग्रस्त हैं।
10. तथा दान करो उस में से जो प्रदान किया है हम ने तुम को, इस से

पूर्व कि आ जाये तुम में से किसी के मरण का समय, तो कहे कि मेरे पालनहार! क्यों नहीं अवसर दे दिया मुझ को कुछ समय का। ताकि मैं दान करता तथा सदाचारियों में हो जाता।

11. और कदापि अवसर नहीं देता अल्लाह किसी प्राणी को जब आ जाये उस का निर्धारित समय। और अल्लाह भली-भाँति सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

सूरह तगाबुन - 64

सूरह तगाबुन के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदीनी है, इस में 18 आयते हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अल्लाह की पवित्रता वर्णन करती है प्रत्येक चीज़ जो आकाशों में है तथा जो धरती में है। उसी का राज्य है, और उसी के लिये प्रशंसा है। तथा वह जो चाहे कर सकता है।
2. वही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, तो तुम में से कुछ काफिर हैं, और तुम में से कोई ईमान वाला है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे देख रहा है।
3. उस ने उत्पन्न किया आकाशों तथा धरती को सत्य के साथ, तथा रूप बनाया तुम्हारा तो सुन्दर बनाया तुम्हारा रूप, और उसी की ओर फिर कर जाना है।
4. वह जानता है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और जानता है जो तुम

मन में रखते हो और जो बोलते हो।
तथा अल्लाह भली-भाँति अवगत है
दिलों के भेदों से।

5. क्या नहीं आई तुम्हारे पास उन की
सूचना जिन्होंने कुफ़ किया इस से
पूर्व? तो उन्होंने चख लिया अपने
कर्म का दुष्परिणाम। और उन्हीं के
लिये दुःखदायी यातना है।
6. यह इस लिये कि आते रहे उन के पास
उन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर।
तो उन्होंने कहा: क्या कोई मनुष्य हमें
मार्ग दर्शन देगा? अतः उन्होंने कुफ़
किया। तथा मुँह फेर लिया और अल्लाह
(भी उन से) निश्चिन्त हो गया तथा
अल्लाह निस्पृह प्रशासित है।
7. समझ रखा है काफ़िरो ने कि वह
कदापि फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।
आप कह दें कि क्यों नहीं? मेरे
पालनहार की शपथ। तुम अवश्य
जीवित किये जाओगे। फिर तुम्हें
बताया जायेगा कि तुम ने (संसार में)
क्या किया है। तथा यह अल्लाह पर
अति सरल है।
8. अतः तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा
उस के रसूल पर। तथा उस नूर
(ज्योति) पर जिसे हम ने उतारा
है। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते
हो भली-भाँति सूचित है।
9. जिस दिन वह तुम को एकत्र करेगा
एकत्र किये जाने वाले दिन। तो वह
क्षति (हानि) के खुल जाने का
दिन होगा। और जो ईमान लाया
अल्लाह पर तथा सदाचार करता है
तो वह क्षमा कर देगा उस के दोषों
को, और प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों

में बहती होंगी जिन में नहरें वह
सदावासी होंगे उन में। यही बड़ी
सफलता है।

10. और जिन लोगों ने कुफ़ किया और
झूठलाया हमारी आयतों (निशानियों)
को तो वही नारकी है जो सदावासी
होंगे उस (नरक) में। तथा वह बुरा
ठिकाना है।
11. जो आपदा आती है वह अल्लाह ही की
अनुमति से आती है। तथा जो अल्लाह
पर ईमान लाये तो वह मार्ग दर्शन
देता है उस के दिल को। तथा
अल्लाह प्रत्येक चीज़ को जानता है।
12. तथा आज्ञा का पालन करो अल्लाह की
तथा आज्ञा का पालन करो उस के
रसूल की। फिर यदि तुम विमुख हुये
तो हमारे रसूल का दायित्व केवल
खुले रूप से (उपदेश) पहुँचा देना है।
13. अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई
बंदनीय (सच्चा पूज्य) नहीं है। अतः
अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये
ईमान वालों को।
14. हे लोगो जो ईमान लाये हो। वास्तव
में तुम्हारी कुछ पत्नियाँ तथा संतान
तुम्हारी शत्रु हैं। अतः उन से
सावधान रहो। और यदि तुम क्षमा से
काम लो तथा सुधार करो और क्षमा
कर दो तो वास्तव में अल्लाह अति
क्षमाशील दयावान् है।
15. तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान
तो तुम्हारे लिये एक परीक्षा है।
तथा अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल
(बदला) है।

16. तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके तथा सुनो और आज्ञा पालन करो और दान करो। यह उत्तम है तुम्हारे लिये। और जो बचा लिया गया अपने मन की कंजूसी से तो वही सफल होने वाले हैं।
17. यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण दोगे तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ा कर देगा, और क्षमा कर देगा तुम्हें। और अल्लाह बड़ा गुणग्राही सहनशील है।
18. वह परोक्ष और हाज़िर का ज्ञान रखने वाला है। वह अति प्रभावी तथा गुणी है।

सूरह तलाक़ - 65

सूरह तलाक़ के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदनी है, इस में 12 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे नबी! जब तुम लोग तलाक़ दो अपनी पत्नियों को तो उन्हें तलाक़ दो उन की 'इद्दत' के लिये, और गणना करो 'इद्दत' की। तथा डरो अपने पालनहार, अल्लाह से। और न निकालो उन को उन के घरों से, और न वह स्वयं निकलें परन्तु यह कि वह कोई खुली बुराई कर जायें। तथा यह अल्लाह की सीमायें हैं। और जो उल्लंघन करेगा अल्लाह की सीमाओं का तो उस ने अत्याचार कर लिया अपने ऊपर। तुम नहीं जानते संभवतः अल्लाह कोई नई बात उत्पन्न कर दे इस के पश्चात्।

2. फिर जब पहुँचने लगे अपने निर्धारित अवधि को तो उन्हें रोक लो नियमानुसार अथवा अलग कर दो नियमानुसार। और गवाह (साक्षी) बनालो अपने में से दो न्यायकारियों को। तथा सीधी गवाही दो अल्लाह के लिये। इस की शिक्षा दी जा रही है उसे जो ईमान रखता हो अल्लाह तथा अन्त-दिवस (प्रलय) पर। और जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उस के लिये कोई निकलने का उपाय।
3. और उस को जीविका प्रदान करेगा उस स्थान से जिस का उसे अनुमान (भी) न हो। तथा जो अल्लाह पर निर्भर रहेगा तो वही उसे पर्याप्त है। निश्चय अल्लाह अपना कार्य पूरा कर के रहेगा। अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है।
4. तथा जो निराश हो जाती है मासिक धर्म से तुम्हारी स्त्रियों में से यदि तुम्हें संदेह हो तो उन की निर्धारित अवधि तीन मास है। तथा उन की जिन्हें मासिक धर्म न आता हो। और गर्भवती स्त्रियों की निर्धारित अवधि यह है कि प्रसव हो जायें। तथा जो अल्लाह से डरेगा वह उस के लिये उस का कार्य सरल कर देगा।
5. यह अल्लाह का आदेश है जिसे उतारा है तुम्हारी ओर, अतः जो अल्लाह से डरेगा⁽³⁾ वह क्षमा कर देगा उस से उस के दोषों को तथा प्रदान करेगा उसे बड़ा प्रतिफल।
6. और उन को (निर्धारित अवधि में) रखो जहाँ तुम रहते हो अपनी शक्ति

अनुसार। और उन्हें हानि न पहुँचाओ उन्हें तंग करने के लिये। और यदि वह गर्भवती हों तो उन पर खर्च करो यहाँ तक की प्रसव हो जाये। फिर यदि दूध पिलायें तुम्हारे (शिशु) लिये तो उन्हें उन का परिश्रामिक दो। और विचार-विमर्श कर लो आपस में उचित रूप से। और यदि तुम दोनों में तनाव हो जाये तो दूध पिलायेगी उस को कोई दूसरी स्त्री।

7. चाहिये की सम्पन्न (सुखी) खर्च दे अपनी कमाई के अनुसार, और तंग हो जिस पर उस की जीविका तो चाहिये कि खर्च दे उस में से जो दिया है उस को अल्लाह ने। अल्लाह भार नहीं रखता किसी प्राणी पर परन्तु उतना ही जो उसे दिया है। शीघ्र ही कर देगा अल्लाह तंगी के पश्चात् सुविधा।
8. कितनी बस्तियों⁽²⁾ थी जिन के वासियों ने अवैज्ञा की अपने पालनहार और उस के रसूलों के आदेश की, तो हम ने हिसाब ले लिया उन का कड़ा हिसाब, और उन्हें यातना दी बुरी यातना।
9. तो उस ने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम और उन का कार्य-परिणाम विनाश ही रहा।
10. तय्यार कर रखी है अल्लाह ने उन के लिये भीषण यातना। अतः अल्लाह से डरो, हे समझ वालो, जो ईमान लाये हो! निःसंदेह अल्लाह ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक शिक्षा।
11. (अर्थात्) एक रसूल जो पढ़ कर सुनाते हैं तुम को अल्लाह की खुली आयतें ताकि वह निकाले उन को

जो ईमान लाये तथा सदाचार किये अन्धकारों से प्रकाश की ओर। और जो ईमान लाये तथा सदाचार करेगा वह उसे प्रवेश देगा ऐसे स्वर्ग में प्रवाहित है जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में। अल्लाह ने उस के लिये उत्तम जीविका तैयार कर रखी है।

12. अल्लाह वह है जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश तथा धरती में से उन्हीं के समान। वह उतारता है आदेश उन के बीच, ताकि तुम विश्वास करो कि अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है। और यह की अल्लाह ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की पतिधि में।

सूरह तहरीम - 66

सूरह तहरीम के संक्षिप्त विषय यह सूरह मद्नी है, इस में 12 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे नबी! क्यों हराम (अवैध) करते हैं उसे जो हलाल (वैध) किया है अल्लाह ने आप के लिये? आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता चाहते हैं? तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
2. नियम बना दिया है अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी शपथों से निकलने का। तथा अल्लाह संरक्षक है तुम्हारा, और वही सर्व ज्ञानी गुणी है।
3. और जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक बात कही, तो उस ने उसे बता दिया, और अल्लाह ने उसे खोल दिया नबी पर, तो नबी ने कुछ से

सूचित किया और कुछ को छोड़ दिया। फिर जब सूचित किया आप ने पत्नी को उस से तो उस ने कहा: किस ने सूचित किया आप को इस बात से? आप ने कहा: मुझे सूचित किया है सब जानने और सब से सूचित रहने वाले ने।

4. यदि तुम दोनों (हे नबी की पत्नियों!) क्षमा माँग लो अल्लाह से (तो तुम्हारे लिये उत्तम है), क्योंकि तुम दोनों के दिल कुछ झुक गये हैं। और यदि तुम दोनों एक-दूसरे की सहायता करोगी आप के विरुद्ध तो निःसंदेह अल्लाह आप का सहायक है तथा जिब्रिल और सदाचारी ईमान वाले और फरिश्ते (भी) इन के अतिरिक्त सहायक हैं।
5. कुछ दूर नहीं कि आप का पालनहार यदि आप तलाक़ दे दें तुम सभी को तो बदले में दे आप को पत्नियाँ तुम से उत्तम, इस्लाम वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, आज्ञा पालन करने वालियाँ, क्षमा माँगने वालियाँ, व्रत रखने वालियाँ, विधवायें तथा कुमारियाँ।
6. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचाओ अपने आप को तथा अपने परिजनों को उस अग्नि से जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर होंगे। जिस पर फरिश्ते नियुक्त हैं कड़े दिल, कड़े स्वभाव वाले। वह अवैज्ञा नहीं करते अल्लाह के आदेश की तथा वही करते हैं जिस का आदेश उन्हें दिया जाये।
7. हे काफ़िरो! बहाना न बनाओ आज, तुम्हें उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।

8. हे ईमान वालो! अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। संभव है कि तुम्हारा पालनहार दूर कर दे तुम्हारी बुराईयाँ तुम से, तथा प्रवेश करा दे तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरों जिस दिन वह अपमानित नहीं करेगा नबी को और न उन को जो ईमान लाये हैं उन के साथ। उन का प्रकाश दौड़ रहा होगा उन के आगे तथा उन के दायें, वह प्रार्थना कर रहे होंगे: हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को। वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है।
9. हे नबी! आप जिहाद करें काफ़िरो और मुनाफ़िकों से और उन पर कड़ाई करें। उन का स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है।
10. अल्लाह ने उदाहरण दिया है उन के लिये जो काफ़िर हो गये नूह की पत्नी तथा लूत की पत्नी का। जो दोनों विवाह में थी दो भक्तों के हमारे सदाचारी भक्तों में से। फिर दोनों ने विश्वासघात किया उन से। तो दोनों उन के, अल्लाह के यहाँ कुछ काम नहीं आये। तथा (दोनों स्त्रियों से) कहा गया कि प्रवेश कर जाओ नरक में प्रवेश करने वालों के साथ।
11. तथा उदाहरण दिया है अल्लाह ने उन के लिये जो ईमान लाये फिरऔन की पत्नी का। जब उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! बना दे मेरे लिये अपने पास एक घर स्वर्ग में, तथा मुझे मुक्त कर दे फिरऔन तथा उस के कर्म से, और मुझे मुक्त कर दे अत्याचारी जाति से।

12. तथा मर्यम, इम्रान की पुत्री का, जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूँक दी हम ने उस में अपनी ओर से रूह (आत्मा)। तथा उस

(मर्यम) ने सच्च माना अपने पालनहार की बातों और उस की पुस्तकों को। और वह इबादत करने वालों में से थी।



सूरह मुल्क - 67

सूरह मुल्क के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शुभ है वह अल्लाह जिस के हाथ में राज्य है। तथा वह जो कुछ चाहे कर सकता है।
2. जिस ने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में किस का कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली अति क्षमावान् है।
3. जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश ऊपर तले। तो क्या तुम देखते हो अत्यन्त कृपाशील की उत्पत्ति में कोई असंगति? फिर पुनः देखो, क्या तुम देखते हो कोई दराड़?
4. फिर बार-बार देखो, वापिस आयेगी तुम्हारी ओर निगाह थक-हार कर।
5. और हम ने सजाया है संसार के आकाशों को प्रदीपों (ग्रहों) से। तथा बनाया है उन्हें (तारों को) मार भगाने का साधन शैतानों को, और तय्यार की है हम ने उन के लिये दहकती अग्नि की यातना।
6. और जिन्होंने कुफ़ किया अपने पालनहार के साथ तो उनके लिये नरक की यातना है। और वह बुरा स्थान है।
7. जब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।

8. प्रतीत होगा की फट पड़ेगी रोष (क्रोध) से, जब-जब फेंका जायेगा उस में कोई समूह तो प्रश्न करेंगे उन से उस के प्रहरी: क्या नहीं आया तुम्हारे पास कोई सावधान करने वाला (रसूल)?
9. वह कहेंगे: हाँ हमारे पास आया सावधान करने वाला। पर हम ने झुठला दिया, और कहा कि नहीं उतारा है अल्लाह ने कुछ। तुम ही बड़े कुपथ में हो।
10. तथा वह कहेंगे: यदि हम ने सुना और समझा होता तो नरक के वासियों में न होते।
11. ऐसे वह स्वीकार कर लेंगे अपने पापों को। तो दूरी है नरक वासियों के लिये।
12. निःसंदेह जो डरते हैं अपने पालनहार से बिन देखे उन्हीं के लिये क्षमा है तथा बड़ा प्रतिफल है।
13. तुम चुपके बोलो अपनी बात अथवा ऊँचे स्वर में। वास्तव में वह भली-भाँति जानता है सीनों के भेदों को।
14. क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया? और वह सूक्ष्मदर्शक सर्व सूचित है?
15. वही है जिस ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती, तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका। और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।
16. क्या तुम निर्भय हो गये हो उस से जो आकाश में है कि वह धँसा दे धरती में फिर वह अचानक काँपने लगे।

17. अथवा निर्भय हो गये उस से जो आकाश में है कि वह भेज दे तुम पर पथरीली वायु तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कैसा रहा मेरा सावधान करना?
18. झुठला चुके हैं इन से पूर्व के लोग तो कैसी रही मेरी पकड़?
19. क्या उन्होंने नहीं देखा पक्षियों की ओर अपने ऊपर पंख फैलाते तथा सिकोड़ते। उन को अत्यंत कृपाशील ही धामता है। निःसंदेह वह प्रत्येक वस्तु को देख रहा है।
20. कौन है वह तुम्हारी सेना जो तुम्हारी सहायता कर सकेगी अल्लाह के मुक़ाबले में? काफ़िर तो बस धोखे ही में हैं।
21. या कौन है जो तुम्हें जीविका प्रदान कर सके यदि रोक ले वह अपनी जीविका? बल्कि वह घुस गये हैं अवैज्ञा तथा घृणा में।
22. तो क्या जो चल रहा हो औंधा हो कर अपने मुँह के बल वह अधिक मार्गदर्शन पर है या जो सीधा हो कर चल रहा हो सीधी राह पर।
23. हे नबी! आप कह दें कि वही है जिस ने पैदा किया है तुम्हें और बनाये है तुम्हारे कान तथा आँख और दिला बहुत ही कम आभारी (कृतज्ञ) होते हो।
24. आप कह दें: उसी ने फैलाया है तुम्हें धरती में और उसी की ओर एकत्रित किये जाओगे।
25. तथा वह कहते हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सच्चे हो?
26. आप कह दें: उस का ज्ञान बस

अल्लाह ही को है। और मैं केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।

27. फिर जब वह देखेंगे उसे समीप, तो बिगड़ जायेंगे उन के चेहरे जो काफ़िर हो गये। तथा कहा जायेगा: यह वही है जिस की तुम माँग कर रहे थे।
28. आप कह दें: देखो यदि अल्लाह नाश कर दे मुझ को तथा मेरे साथियों को अथवा दया करे हम पर, तो (बताओ कि) कौन है जो शरण देगा काफ़िरों को दुःखदायी यातना से?
29. आप कह दें: वह अत्यंत कृपाशील है। हम उस पर ईमान लाये तथा उसी पर भरोसा किया, तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन खुले कुपथ में है।
30. आप कह दें भला देखो यदि तुम्हारा पानी गहराई में चला जाये, तो कौन है जो तुम्हें ला कर देगा बहता हुआ जल?

सूरह कलम - 68

सूरह कलम के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है. इस में 52 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. नूना और शपथ है लेखनी (कलम) की तथा उस की जिसे वह लिखते हैं।
2. नहीं है आप अपने पालनहार के अनुग्रह से पागल।
3. तथा निश्चय प्रतिफल (बदला) है आप के लिये अनन्त।

4. तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।
5. तो शीघ्र आप देख लेंगे, तथा वह (काफ़िर भी) देख लेंगे।
6. कि पागल कौन है।
7. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस की राह से। और वही अधिक जानता है उन्हें जो सीधी राह पर हैं।
8. तो आप बात न माने झुठलाने वालों की।
9. वह चाहते हैं कि आप ढीले हो जायें तो वह भी ढीले हो जायें।
10. और बात न मानें आप किसी अधिक शपथ लेने वाले हीन व्यक्ति की।
11. जो व्यंग करने वाला, चुगलियाँ खाता फिरता है।
12. भलाई से रोकने वाला, अत्याचारी, बड़ा पापी है।
13. घमंडी है और इस के पश्चात् कुवंश (वर्णन संकर) है।
14. इस लिये कि वह धन तथा पुत्रों वाला है।
15. जब पढ़ी जाती है उस पर हमारी आयतें तो कहता है: यह पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।
16. शीघ्र ही हम दाग़ लगा देंगे उस के सूंड पर।
17. निःसंदेह हम ने उन को परीक्षा में डाला है जिस प्रकार बाग़ वालों को परीक्षा में डाला था। जब उन्होंने शपथ ली कि अवश्य तोड़ लेंगे उस के फल भोर होते ही।
18. और इन्शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) नहीं कहा।
19. तो फिर गया उस (बाग़) पर एक कुचक्र आप के पालनहार की ओर से, और वह सोये हुये थे।
20. तो वह हो गया जैसे उजाड़ खेती हो।
21. अब वे एक-दूसरे को पुकारने लगे भोर होते ही:
22. कि तड़के चलो अपनी खेती पर यदि फल तोड़ने हैं।
23. फिर वह चल दिये आपस में चुपके-चुपके बातें करते हुये।
24. कि कदापि न आने पाये उस (बाग़) के भीतर आज तुम्हारे पास कोई निर्धन।
25. और प्रातः ही पहुँच गये कि वह फल तोड़ सकेंगे।
26. फिर जब उसे देखा तो कहा: निश्चय हम राह भूल गये।
27. बल्कि हम वंचित हो गये।
28. तो उन में से बिचले भाई ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम (अल्लाह की) पवित्रता का वर्णन क्यों नहीं करते?
29. वह कहने लगे: पवित्र है हमारा पालनहार! वास्तव में हम ही अत्याचारी थे।
30. फिर सम्मुख हो गया एक-दूसरे की निन्दा करते हुये।
31. कहने लगे हाय अप्सोस! हम ही विद्रोही थे।

32. संभव है हमारा पालनहार हमें बदले में प्रदान करे इस से उत्तम (बाग)। हम अपने पालनहार ही की ओर रुचि रखते हैं।
33. ऐसे ही यातना होती है और आखिरत (परलोक) की यातना इस से भी बड़ी है। काश वह जानते।
34. निःसदिह सदाचारियों के लिये उन के पालनहार के पास सुखों वाले स्वर्ग है।
35. क्या हम आज्ञाकारियों को पापियों के समान कर देंगे?
36. तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?
37. क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिस में तुम पढ़ते हो?
38. कि तुम्हें वही मिलेगा जो तुम चाहोगे?
39. या तुम ने हम से शपथें ले रखी हैं जो प्रलय तक चली जायेंगी कि तुम्हें वही मिलेगा जिस का तुम निर्णय करोगे?
40. आप उन से पूछिये कि उन में कौन इस की ज़मानत लेता है?
41. क्या उन के कुछ साझी हैं? फिर तो वह अपने साझियों को लायें यदि वह सच्चे हैं।
42. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और वह बुलाये जायेंगे सज़्दा करने के लिये तो (सज़्दा) नहीं कर सकेंगे।
43. उन की आँखें झुकी होंगी, और उन पर अपमान छाया होगा। वह (संसार में) सज़्दा करने के लिये बुलाये जाते रहे और वह स्वस्थ थे।
44. अतः आप छोड़ दें मुझे तथा उसे जो झुठला रहा है इस बात (कुर्आन) को, हम उन्हें धीरे-धीरे खींच लायेंगे इस प्रकार कि उन्हें ज्ञान भी नहीं होगा।
45. तथा हम उन्हें अवसर दे रहे हैं। वस्तुतः हमारा उपाय सुदृढ़ है।
46. तो क्या आप माँग कर रहे हैं किसी परिश्रामिक की, तो वह बोझ से दबे जा रहे हैं?
47. या उन के पास ग़ैब का ज्ञान है जिसे वह लिख रहे हैं?
48. तो आप धैर्य रखें अपने पालनहार के निर्णय तक और न हो जायें मछली वाले के समान। जब उस ने पुकारा और वह शोक पूर्ण था।
49. और यदि न पा लेती उसे उस के पालनहार की दया तो वह फेंक दिया जाता बंजर में, और वह बुरी दशा में होता।
50. फिर चुन लिया उसे उस के पालनहार ने और बना दिया उसे सदाचारियों में से।
51. और ऐसा लगता है कि जो काफ़िर हो गये वह अवश्य फिसला देंगे आप को अपनी आँखों से (घूर कर) जब वह सुनते हों कुर्आन को। तथा कहते हैं कि वह अवश्य पागल हैं।
52. जब कि यह (कुर्आन) तो बस एक शिक्षा है पूरे संसार वासियों के लिये।

सूरह हाक्का - 69

सूरह हाक्का के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. जिस का होना सच्च है।
2. वह क्या है जिस का होना सच्च है?
3. तथा आप क्या जानें कि क्या है जिस का होना सच्च है?
4. झुठलाया समूद तथा आद (जाति) ने अचानक आ पड़ने वाली (प्रलत)को।
5. फिर समूद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये अति कड़ी ध्वनी से।
6. तथा आद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये एक तेज़ शीतल औंधी से।
7. लगाये रखा उसे उन पर सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर, तो आप देखते कि वह जाति उस में ऐसे पछाड़ी हुई है जैसे खजूर के खोकले तने।
8. तो क्या आप देखते हैं कि उन में से कोई शेष रह गया है?
9. और किया यही पाप फिरऔन ने और जो उस के पूर्व थे, तथा जिन की बस्तियाँ औंधी कर दी गईं।
10. उन्होंने नहीं माना अपने पालनहार के रसूल को। अन्ततः उस ने पकड़ लिया उन्हें, कड़ी पकड़।
11. हम ने, जब सीमा पार कर गया जल, तो तुम्हें सवार कर दिया नाब में।

12. ताकि हम बना दें उसे तुम्हारे लिये एक शिक्षा प्रद यादगार। और ताकि सुरक्षित रख लें इसे सुनने वाले कान।
13. फिर जब फूँक दी जायेगी सूर नरसिंघा) में एक फूँक।
14. और उठाया जायेगा धरती तथा पर्वतों को तो दोनों चूर-चूर कर दिये जायेंगे एक ही बार में।
15. तो उसी दिन होनी हो जायेगी।
16. तथा फट जायेगा आकाश, तो वह उस दिन क्षीण निर्बल हो जायेगा।
17. और फरिश्ते उस के किनारों पर होंगे तथा उठाये होंगे आप के पालनहार के अर्श (सिंहासन) को अपने ऊपर उस दिन आठ फरिश्ते।
18. उस दिन तुम (अल्लाह के पास) उपस्थित किये जाओगे, नहीं छुपा रह जायेगा तुम में से कोई।
19. फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगा: यह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।
20. मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।
21. तो वह अपने मन चाहे सुख में होगा।
22. उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।
23. जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।
24. (उन से कहा जायेगा): खाओ तथा पियो आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों (संसार) में।

25. और जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगा: हाय! मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता।
26. तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?
27. काश मेरी मौत ही निर्णायक होती।
28. नहीं काम आया मेरा धन।
29. मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्व।
30. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो और उस के गले में तौक डाल दो।
31. फिर नरक में उसे झोंक दो।
32. फिर उसे एक जंजीर, जिस की लम्बाई सत्तर गज़ है में जकड़ दो।
33. वह ईमान नहीं रखता था महिमाशाली अल्लाह पर।
34. और न प्रेरणा देता था दरिद्र को भोजन कराने की।
35. अतः नहीं है उस का आज यहाँ कोई मित्र।
36. और न कोई भोजन, पीप के सिवा।
37. जिसे पापी ही खायेंगे।
38. तो मैं शपथ लेता हूँ उस की जो तुम देखते हो।
39. तथा जो तुम नहीं देखते हो।
40. निःसंदेह यह (क़र्आन) अदरणीय रसूल का कथन है।
41. और वह किसी कवि का कथन नहीं है। तुम लोग कम ही विश्वास करते हो।

42. और न यह किसी ज्योतिषी का कथन है, तुम कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।
43. सर्वलोक के पालनहार का उतारा हुआ है।
44. और यदि इस (नबी) ने हम पर कोई बात बनाई होती।
45. तो अवश्य हम पकड़ लेते उस का सीधा हाथ।
46. फिर अवश्य काट देते उस के गले की रग।
47. फिर तुम से कोई (मुझे) उस से रोकने वाला न होता।
48. निःसंदेह यह एक शिक्षा है सदाचारियों के लिये।
49. तथा वास्तव में हम जानते हैं कि तुम में कुछ झुठलाने वाले हैं।
50. और निश्चय यह पछतावे का कारण होगा काफ़िरों के लिये।
51. वस्तुतः यह विश्वासनीय सत्य है।
52. अतः आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महिमावान पालनहार के नाम की।

सूरह मआरिज - 70

सूरह मआरिज के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 44 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. प्रश्न किया एक प्रश्न करने वाले ने उस यातना के बारे में जो आने वाली है।

2. काफ़िरोँ पर। नहीं है जिसे कोई दूर करने वाला।
3. अल्लाह ऊँचाईयों वाले की ओर से।
4. चढ़ते है फ़रिश्ते तथा रूह जिस की ओर, एक दिन में जिस का माप पचास हज़ार वर्ष है।
5. अतः (हे नबी!) आप सहन करें अच्छे प्रकार से।
6. वह समझते है उस को दूर।
7. और हम देख रहे है उसे समीप।
8. जिस दिन हो जायेगा आकाश पिघली हुई धात के समान।
9. तथा हो जायेंगे पर्वत रंगा-रंग धुने हुये ऊन के समान।
10. और नहीं पूछेगा कोई मित्र किसी मित्र को।
11. (जब कि) वह उन्हें दिखाये जायेंगे। कामना करेगा पापी कि दण्ड के रूप में दे दे उस दिन की यातना के अपने पुत्रों को।
12. तथा अपनी पत्नी और अपने भाई को।
13. तथा अपने समीपवर्ती परिवार को जो उसे शरण देता था।
14. और जो धरती में है सभी को फिर वह उसे यातना से बचा दे।
15. कदापि (ऐसा) नहीं (होगा)।
16. वह अग्नि की ज्वाला होगी।
17. खाल उधेड़ने वाली।
18. वह पुकारेगी उसे जिस ने पीछा दिखाया तथा मुँह फेरा।
19. तथा (धन) एकत्र किया फिर सौत कर रखा।
20. वास्तव में मनुष्य अत्यंत कच्चे दिल का पैदा किया गया है।
21. जब उसे पहुँचता है दुःख तो उद्विग्न हो जाता है।
22. और जब उसे धन मिलता है तो कंजूसी करने लगता है।
23. परन्तु जो नमाज़ी है।
24. जो अपनी नमाज़ का सदा पालन करते है।
25. और जिन के धनों में निश्चित भाग है याचक (माँगने वाला), तथा वंचित का।
26. तथा जो सत्य मानते है प्रतिकार (प्रलय) के दिन को।
27. तथा जो अपने पालनहार की यातना से डरते है।
28. वास्तव में आप के पालनहार की यातना निर्भय रहने योग्य नहीं है।
29. तथा जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले है।
30. सिवाये अपनी पत्नियों और अपने स्वामित्व में आई दासियों के तो वही निन्दित नहीं है।
31. और जो चाहे इस के अतिरिक्त तो वही सीमा का उल्लंघन करने वाले है।
32. और जो अपनी अमानतों तथा अपने वचन का पालन करते है।
33. और जो अपने साक्ष्यों (गवाहियों) पर

स्थित रहने वाले हैं।

34. तथा जो अपनी नमाजों की रक्षा करते हैं।
35. वही स्वर्गों में सम्मानित होंगे।
36. तो क्या हो गया है उन काफ़िरो को, कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं।
37. दायें तथा बायें से समूहों में हो कर।
38. क्या उन में से प्रत्येक व्यक्ति लोभ (लालच) रखता है कि उसे प्रवेश दे दिया जायेगा सुख के स्वर्गों में?
39. कदापि ऐसा न होगा, हम ने उन की उत्पत्ति उस चीज़ से की है जिसे वे जानते हैं।
40. तो मैं शपथ लेता हूँ पूर्वों (सूर्यादय के स्थानों) तथा पश्चिमों (सूर्यास्त के स्थानों) की, वास्तव में हम अवश्य सामर्थ्यवान हैं।
41. इस बात पर कि बदल दें उन से उत्तम (उत्पत्ति) को तथा हम विवश नहीं हैं।
42. अतः आप उन्हें झगड़ते तथा खेलते छोड़ दें यहाँ तक कि वह मिल जायें अपने उस दिन से जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है।
43. जिस दिन वह निकलेंगे कब्रों (और समाधियों) से दौड़ते हुये जैसे वह अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ रहे हों।
44. झुकी होंगी उन की आँखें, छाया होगा उन पर अपमान, यही वह दिन है जिस का वचन उन्हें दिया जा रहा था।

सूरह नूह - 71

सूरह नूह के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. निःसंदेह हम ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, कि सावधान कर अपनी जाति को इस से पूर्व कि आये उन के पास दुःखदायी यातना।
2. उस ने कहा: हे मेरी जाति! वास्तव में मैं खुला सावधान करने वाला हूँ तुम्हें।
3. कि इबादत (बंदना) करो अल्लाह की तथा डरो उस से और बात मानो मेरी।
4. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को, तथा अबसर देगा तुम्हें निर्धारित समय तक। वास्तव में जब अल्लाह का निर्धारित समय आ जायेगा तो उस में देर न होगी। काश तुम जानते।
5. नूह ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने बुलाया अपनी जाति को (तेरी ओर) रात और दिन।
6. तो मेरे बुलावे ने उन के भागने ही को अधिक किया।
7. और मैं ने जब-जब उन्हें बुलाया तो उन्होंने दे ली अपनी ऊँगलियाँ अपने कानों में, तथा ओढ़ लिये अपने कपड़े, तथा अड़े रह गये और बड़ा घमंड किया।
8. फिर मैं ने उन्हें उच्च स्वर से बुलाया।

9. फिर मैं ने उन से खुल कर कहा और उन से धीरे-धीरे (भी) कहा।
10. मैं ने कहा: क्षमा माँगो अपने पालनहार से, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील है।
11. वह वर्षा करेगा आकाश से तुम पर धाराप्रवाह वर्षा।
12. तथा अधिक देगा तुम्हें पुत्र तथा धन और बना देगा तुम्हारे लिये बाग़ तथा नहरें।
13. क्या हो गया है तुम्हें कि नहीं डरते हो अल्लाह की महिमा से?
14. जब कि उस ने पैदा किया है तुम्हें विभिन्न प्रकार से।
15. क्या तुम ने नहीं देखा कि कैसे पैदा किये हैं अल्लाह ने सात आकाश ऊपर-तले?
16. और बनाया है चन्द्रमा को उन में प्रकाश, और बनाया है सूर्य को प्रदीप।
17. और अल्लाह ही ने उगाया है तुम्हें धरती से अद्भुत रूप से।
18. फिर वह वापिस ले जायेगा तुम्हें उस में और निकालेगा तुम को उस से।
19. और अल्लाह ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर।
20. ताकि तुम चलो उस की खुली राहों में।
21. नूह ने निवेदन किया: मेरे पालनहार! उन्होंने मेरी अवैज्ञा की, और अनुसरण किया उस का जिस के धन और संतान ने उस की क्षति ही को बढ़ाया।
22. और उन्होंने बड़ी चाल चली।
23. और उन्होंने कहा: तुम कदापि न छोड़ना अपने पूज्यों को, और कदापि न छोड़ना वद्द को, न सुबाअ को और न यगूस को और यऊक को तथा न नस को।
24. और कुपथ (गुमराह) कर दिया है उन्होंने बहुतों को, और अधिक कर दे तु (भी) अत्याचारियों के कुपथ (कुमार्ग) को।
25. वह अपने पापों के कारण डुबो दिये गये फिर पहुँचा दिये गये नरक में। और नहीं पाया उन्होंने अपने लिये अल्लाह के मुक़ाबिले में कोई सहायक।
26. तथा कहा नूह ने: मेरे पालनहार! न छोड़ धरती पर काफ़िरों का कोई घराना।
27. (क्यों कि) यदि तू उन्हें छोड़ेगा तो वह कुपथ करेंगे तेरे भक्तों को, और नहीं जन्म देंगे परन्तु दुष्कर्मी बड़े काफ़िर को।
28. मेरे पालनहार! क्षमा कर दे मुझ को तथा मेरे माता-पिता को और उसे जो प्रवेश करे मेरे घर में ईमान ला कर, तथा ईमान वालों और ईमान वालियों को। तथा काफ़िरों के विनाश ही को अधिक कर।

सूरह जिब्र - 72

सूरह जिब्र के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे नबी!) कहो: मेरी ओर वही (प्रकाशना) की गई है कि ध्यान से

सुना जिब्रों के एक समूह ने। फिर कहा कि हम ने सुना है एक विचित्र कुर्आन।

2. जो दिखाता है सीधी राह, तो हम ईमान लाये उस पर। और हम कदापि साझी नहीं बनायेंगे अपने पालनहार के साथ किसी को।
3. तथा निरुद्धिह महान है हमारे पालनहार की महिमा, नहीं बनाई है उस ने कोई संगीनी (पत्नी) और न कोई संतान।
4. तथा निश्चय हम अज्ञान में कह रहे थे अल्लाह के संबंध में झूठी बातों।
5. और यह कि हम ने समझा कि मनुष्य तथा जिब्र नहीं बोल सकते अल्लाह पर कोई झूठ बात।
6. और वास्तविकता यह है कि मनुष्य में से कुछ लोग शरण माँगते थे जिब्रों में से कुछ लोगों की तो उन्होंने ने अधिक कर दिया उन के गर्व को।
7. और यह कि मनुष्यों ने भी वही समझा जो तुम ने अनुमान लगाया कि कभी अल्लाह फिर जीवित नहीं करेगा किसी को।
8. तथा हम ने स्पर्श किया आकाश को तो पाया कि भर दिया गया है प्रहरियों तथा उल्कावों से।
9. और यह कि हम बैठते थे उस (आकाश) में सुन गुन लेने के स्थानों में, और जो अब सुनने का प्रयास करेगा वह पायेगा अपने लिये एक उल्का घात में लगा हुआ।
10. और यह कि हम नहीं समझ पाते कि क्या किसी बुराई का इरादा

किया गया धरती वालों के साथ या इरादा किया है उन के साथ उन के पालनहार ने सीधी राह पर लाने का।

11. और हम में से कुछ सदाचारी हैं और हम में से कुछ इस के विपरीत हैं। हम विभिन्न प्रकारों में विभाजित हैं।
12. तथा हमें विश्वास हो गया है कि हम कदापि विवश नहीं कर सकते अल्लाह को धरती में और न विवश कर सकते हैं उसे भाग कर।
13. तथा जब हम ने सुनी मार्ग दर्शन की बात तो उस पर ईमान ला आये, अब जो भी ईमान लायेगा अपने पालनहार पर तो नहीं भय होगा उसे अधिकार हनन का और न किसी अत्याचार का।
14. और यह कि हम में से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और कुछ अत्याचारी हैं। तो जो आज्ञाकारी हो गये तो उन्होंने खोज ली सीधी राह।
15. तथा जो अत्याचारी हैं तो वह नरक का ईंधन हो गये।
16. और यह कि यदि वह स्थित रहते सीधी राह (अर्थात् इस्लाम) पर तो हम सींचते उन्हें भरपूर जल से।
17. ताकि उन की परीक्षा लें इस में, और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से, तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।
18. और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिये हैं। अतः मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी को।
19. और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का

भक्त उसे पुकारता हुआ तो समीप था कि वह लोग उस पर पिल पड़ते।

20. आप कह दें कि मैं तो केवल अपने पालनहार को पुकारता हूँ और साझी नहीं बनाता उस का किसी अन्य को।
21. आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं रखता तुम्हारे लिये किसी हानि का न सीधी राह पर लगा देने का।
22. आप कह दें कि मुझे कदापि नहीं बचा सकेगा अल्लाह से कोई। और न मैं पा सकूँगा उस के सिवा कोई शरणागार (बचने का स्थान)।
23. परन्तु पहुँचा सकता हूँ अल्लाह का आदेश तथा उस का उपदेश। और जो अवैज्ञा करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल की तो वास्तव में उसी के लिये नरक की अग्नि है जिस में वह नित्य सदावासी होगा।
24. यहाँ तक कि जब देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जाता है तो उन्हें विश्वास हो जायेगा कि किस के सहायक निर्बल और किस की संख्या कम है।
25. आप कह दें कि मैं नहीं जानता कि समीप है जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है अथवा बनायेगा मेरा पालनहार उस के लिये कोई अवधि?
26. वह ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञानी है अतः वह अवगत नहीं कराता है अपने परोक्ष पर किसी को।
27. सिवाये रसूल के जिसे उस ने प्रिय बना लिया है फिर वह लगा देता है उस वही के आगे तथा उस के पीछे रक्षक।

28. ताकि वह देख ले कि उन्होंने पहुँचा दिये हैं अपने पालनहार के उपदेश। और उस ने घेर रखा है जो कुछ उन के पास है और प्रत्येक वस्तु को गिन रखा है।

सूरह मुज़्ज़िमिल - 73

सूरह मुज़्ज़िमिल के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे चादर ओढ़ने वाले!
2. खड़े रहो (नमाज़ में) रात्री के समय परन्तु कुछ समय।
3. (अर्थात्) आधी रात अथवा उस से कुछ कम।
4. या उस से कुछ अधिक, और पढ़ो कुर्आन रुक-रुक कर।
5. हम उतारेंगे (हे नबी!) आप पर एक भारी बात (कुर्आन)।
6. वास्तव में रात में जो इबादत होती है वह अधिक प्रभावी है (मन को) एकाग्र करने में। तथा अधिक उचित है बात (प्रार्थना) के लिये।
7. आप के लिये दिन में बहुत से कार्य हैं।
8. और स्मरण (याद) करें अपने पालनहार के नाम की, और सब से अलग हो कर उसी के हो जायें।
9. वह पूर्व तथा पश्चिम का पालनहार है। नहीं है कोई पूज्य (वंदनीय) उस के सिवा, अतः उसी को अपना करता धरता बना लें।

10. और सहन करें उन बातों को जो वे बना रहे हैं। और अलग हो जायें उन से सुशीलता के साथ।
11. तथा छोड़ दें मुझे तथा झुठलाने वाले सुखी (सम्पन्न) लोगों को। और उन्हें अवसर दें कुछ देर।
12. वस्तुतः हमारे पास (उनके लिये) बहुत सी बेड़ियाँ तथा दहकती अग्नि है।
13. और भोजन जो गले में फंस जाये और दुःखदायी यातना है।
14. जिस दिन काँपेगी धरती और पर्वत, तथा हो जायेंगे पर्वत भुरभुरी रेत के ढेर।
15. हम ने भेजा है तुम्हारी ओर एक रसूल तुम पर गवाह (साक्षी) बना कर जैसे भेजा फिरऔन की ओर एक रसूल (मूसा) को।
16. तो अवैज्ञा की फिरऔन ने उस रसूल की और हम ने पकड़ लिया उस को कड़ी पकड़।
17. तो कैसे बचोगे यदि कुफ़्र किया तुम ने उस दिन से जो बना देगा बच्चों को (शोक के कारण) बूढ़ा?
18. आकाश फट जायेगा उस दिन। उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।
19. वास्तव में यह (आयतें) एक शिक्षा हैं। तो जो चाहे अपने पालनहार की ओर राह बना ले।
20. निःसंदेह आप का पालनहार जानता है कि आप खड़े होते हैं (तहज्जुद की नमाज़ के लिये) दो तिहाई रात्री के लग-भग, तथा आधी रात और तिहाई रात, तथा एक समूह उन

लोगों का जो आप के साथ है और अल्लाह ही हिसाब रखता है रात तथा दिन का। वह जानता है कि तुम पूरी रात नमाज़ के लिये खड़े नहीं हो सकोगे। अतः उस ने दया कर दी तुम पर। तो पढ़ो जितना सरल हो कुआन में से। वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी होंगे और कुछ दूसरे यात्रा करेंगे धरती में खोज करते हुये अल्लाह के अनुग्रह (जीविका) की, और कुछ दूसरे युद्ध करेंगे अल्लाह की राह में, अतः पढ़ो जितना सरल हो उस में से। तथा स्थापना करो नमाज़ की, और ज़कात देते रहो, और ऋण दो अल्लाह को अच्छा ऋण। तथा जो भी आगे भेजोगे भलाई में से तो उसे अल्लाह के पास पाओगे। वही उत्तम और उस का बहुत बड़ा प्रतिफल होगा। और क्षमा मांगते रहो अल्लाह से, वास्तव में वह अति क्षमाशील दयावान् है।

सूरह मुद्स्सिर - 74

सूरह मुद्स्सिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है . इस में 56 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे चादर ओढ़ने वाले!
2. खड़े हो जाओ, फिर सावधान करो।
3. तथा अपने पालनहार की महिमा का वर्णन करो।
4. तथा अपने कपड़ों को पवित्र रखो।
5. और मलीनता को त्याग दो।

6. तथा उपकार न करो इसलिये कि उस के द्वारा अधिक लो।
7. और अपने पालनहार ही के लिये सहन करो।
8. फिर जब फूँका जायेगा नरसिंघा में।
9. तो उस दिन अति भीषण दिन होगा।
10. काफ़िरोँ पर सरल न होगा।
11. आप छोड़ दें मुझे और उसे जिस को मैं ने पैदा किया अकेला।
12. फिर दे दिया उसे अत्यधिक धन।
13. और पुत्र उपस्थित रहने वाले।
14. और दिया मैं ने उसे प्रत्येक प्रकार का संसाधन।
15. फिर भी वह लोभ रखता है कि उसे और अधिक दूँ।
16. कदापि नहीं। वह हमारी आयतों का विरोधी है।
17. मैं उसे चढ़ाऊँगा कड़ी चढ़ाई।
18. उस ने विचार किया और अनुमान लगाया।
19. वह मारा जाये। फिर उस ने कैसा अनुमान लगाया?
20. फिर (उस पर अल्लाह की) मार। उस ने कैसा अनुमान लगाया?
21. फिर पुनः विचार किया।
22. फिर माथे पर बल दिया और मुँह बिदोरा।
23. फिर (सत्य से) पीछे फिरा और घमंड किया।
24. और बोला कि यह तो पहले से चला आ रहा एक जादू है।
25. यह तो बस मनुष्य का कथन है।
26. मैं उसे शीघ्र ही नरक में झाँक दूँगा।
27. और आप क्या जानें कि नरक क्या है।
28. न शेष रखेगी, और न छोड़ेगी।
29. वह खाल झुलसा देने वाली।
30. नियुक्त है उन पर उबीस (रक्षक फ़रिश्ते)।
31. और हम ने नरक के रक्षक फ़रिश्ते ही बनाये हैं। और उन की संख्या को काफ़िरोँ के लिये परीक्षा बना दिया गया है। ताकि विश्वास कर लें अहले किताब, और बढ़ जायें जो ईमान लाये हैं ईमान में। और संदेह न करें जो पुस्तक दिये गये हैं और ईमान वाले। और ताकि कहें वे जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है तथा काफ़िर कि क्या तात्पर्य है अल्लाह का इस उदाहरण से? ऐसे ही कुपथ करता है अल्लाह जिसे चाहता है, और संमार्ग दर्शाता है जिसे चाहता है। और नहीं जानता है आप के पालनहार की सेनाओं को उस के सिवा कोई और। तथा नहीं है यह (नरक की चर्चा) किन्तु मनुष्य की शिक्षा के लिये।
32. ऐसी बात नहीं, शपथ है चाँद की।
33. तथा रात्री की जब व्यतीत होने लगे।
34. और प्रातः की जब प्रकाशित हो जाये।
35. वास्तव में (नरक) एक बहुत बड़ी चीज़ है।
36. डराने के लिये लोगों को।

37. उस के लिये तुम में से जो चाहे आगे होना अथवा पीछे रहना।
38. प्रत्येक प्राणी अपने कर्मों के बदले में बंधक है।
39. दाहिने वालों के सिवा।
40. वह स्वर्गों में होंगे, वह प्रश्न करेंगे।
41. अपराधियों से।
42. तुम्हें क्या चीज़ ले गई नरक में।
43. वह कहेंगे: हम नहीं थे नमाज़ियों में से।
44. और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को।
45. तथा कुरेद करते थे कुरेद करने वालों के साथ।
46. और हम झुठलाया करते थे प्रतिफल के दिन (प्रलय) को।
47. यहाँ तक की हमारी मौत आ गई।
48. तो उन्हें लाभ नहीं देगी सिफारिशियों (अभिस्तावकों) की सिफारिश।
49. तो उन्हें क्या हो गया है कि इस शिक्षा (कुर्आन) से मुँह फेर रहे है?
50. मानो वह (जंगली) गधे है बिदकाये हुये।
51. जो शिकारी से भागे है।
52. बल्कि चाहता है प्रत्येक व्यक्ति उन में से कि उसे खुली पुस्तक दी जाये।
53. कदापि यह नहीं (हो सकता) बल्कि वह आखिरत (परलोक) से नहीं डरते है।
54. निश्चय यह (कुर्आन) तो एक शिक्षा है।
55. अब जो चाहे शिक्षा ग्रहण करे।
56. और वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर

सकते, परन्तु यह कि अल्लाह चाह ले। वही योग्य है कि उस से डरा जाये और योग्य है कि क्षमा कर दे।

सूरह कियामा - 75

सूरह कियामा के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है. इस में 40 आयतें है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. मैं शपथ लेता हूँ क़्यामत (प्रलय) के दिन की!
2. तथा शपथ लेता हूँ निन्दा करने वाली अन्तरात्मा की।
3. क्या मनुष्य समझता है कि हम एकत्र नहीं कर सकेंगे दोबारा उस की अस्थियों को?
4. क्यों नहीं? हम सामर्थ्यवान हैं इस बात पर कि सीधी कर दें उस की ऊंगलियों की पोर-पोर।
5. बल्कि मनुष्य चाहता है कि वह कुकर्म करता रहे अपने आगे भी।
6. वह प्रश्न करता है कि कब आना है प्रलय का दिन?
7. तो जब चुंधिया जायेगी आँख।
8. और गहना जायेगा चाँद।
9. और एकत्र कर दिये जायेंगे सूर्य और चाँद।
10. कहेगा मनुष्य उस दिन कि कहाँ है भागने का स्थान?
11. कदापि नहीं, कोई शरणगार नहीं।
12. तेरे पालनहार की ओर ही उस दिन

जा कर रुकना है।

13. सूचित कर दिया जायेगा मनुष्य को उस दिन उस से जो उस ने आगे भेजा, तथा जो पीछे छोड़ा।
14. बल्कि मनुष्य स्वयं अपने विरुद्ध एक खुला प्रमाण है।
15. चाहे वह कितने ही बहाने बनाये।
16. हे नबी! आप न हिलायें अपनी जुबान, ताकि शीघ्र याद कर लें इस कुर्आन को।
17. निश्चय हम पर है उसे याद कराना और उस को पढ़ाना।
18. अतः जब हम उसे पढ़ लें तो आप उस के पीछे पढ़ें।
19. फिर हमारे ही ऊपर है उस का अर्थ बताना।
20. कदापि नहीं, बल्कि तुम प्रेम करते हो शीघ्र प्राप्त होने वाली चीज़ (संसार) से।
21. और छोड़ देते हो परलोक को।
22. बहुत से मुख उस दिन प्रफुल्ल होंगे।
23. अपने पालनहार की ओर देख रहे होंगे।
24. और बहुत से मुख उदास होंगे।
25. वह समझ रहे होंगे कि उन के साथ कड़ा व्यवहार किया जायेगा।
26. कदापि नहीं, जब पहुँचेगी प्राण हंसलियों (गलों) तक।
27. और कहा जायेगा: कौन झाड़-फूँक करने वाला है?
28. और विश्वास हो जायेगा कि यह

(संसार से) जुदाई का समय है।

29. और मिल जायेगी पिंडली- पिंडली से।
30. तेरे पालनहार की ओर उसी दिन जाना है।
31. तो न उस ने सत्य को माना और न नमाज़ पढ़ी।
32. किन्तु झुठलाया और मुँह फेर लिया।
33. फिर गया अपने परिजनों की ओर अकड़ता हुआ।
34. शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।
35. फिर शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।
36. क्या मनुष्य समझता है कि वह छोड़ दिया जायेगा वयर्थ?
37. क्या वह नहीं था वीर्य की बंद जो (गर्भाशय में) बूद-बूद गिराई जाती है?
38. फिर वह बंधा रक्त हुआ, फिर अल्लाह ने उसे पैदा किया और उसे बराबर बनाया।
39. फिर उस का जोड़ा: नर और नारी बनाया।
40. तो क्या वह सामर्थ्यवान नहीं कि मुर्दों को जीवित करे दे?

सूरह दहर - 76

सूरह दहर के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 31 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर युग का एक समय जब वह कोई विचर्चित वस्तु न था?

2. हम ने ही पैदा किया मनुष्य को मिश्रित (मिले हुये) वीर्य से, ताकि उस की परीक्षा लें। और बनाया उसे सुनने तथा देखने वाला।
3. हम ने उसे राह दर्शा दी। (अब) वह चाहे तो कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न।
4. निःसदिह हम ने तय्यार की है काफिरों (कृतघ्नों) के लिये जंजीर तथा तौक और दहकती अग्नि।
5. निश्चय सदाचारी (कृतज्ञ) पियेंगे ऐसे प्याले से जिस में कपूर मिश्रित होगा।
6. यह एक स्रोत होगा जिस से अल्लाह के भक्त पियेंगे। उसे बहा ले जायेंगे (जहाँ चाहेंगे)।
7. जो (संसार में) पूरी करते रहे मनौतियों और डरते रहे उस दिन से जिस की आपदा चारों ओर फैली हुयी होगी।
8. और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद, निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।
9. (अपने मन में यह सोच कर) हम तुम्हें भोजन कराते हैं केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिये। तुम से नहीं चाहते हैं कोई बदला और न कोई कृतज्ञता।
10. हम डरते हैं अपने पालनहार से, उस दिन से जो अति भीषण तथा घोर होगा।
11. तो बचा लिया अल्लाह ने उन्हें उस दिन की आपदा से और प्रदान कर दिया प्रफुल्लता तथा प्रसन्नता।
12. और उन्हें प्रतिफल दिया उन के धैर्य के बदले स्वर्ग तथा रेशमी वस्त्र।
13. वह तकिये लगाये उस में तख्तों पर बैठे होंगे। न उस में धूप देखेंगे न कड़ा शीता।
14. और झुके होंगे उन पर उस (स्वर्ग) के साये। और बस में किये होंगे उस के फलों के गुच्छे पूर्णतः।
15. तथा फिराये जायेंगे उन पर चाँदी के बर्तन तथा प्याले जो शीशों के होंगे।
16. चाँदी के शीशों के जो एक अनुमान से भरेंगे।
17. और पिलाये जायेंगे उस में ऐसे भरे प्याले जिस में सोंठ मिली होगी।
18. यह एक स्रोत है उस (स्वर्ग) में जिस का नाम सलसबील है।
19. और (सेवा के लिये) फिर रहे होंगे उन पर सदावासी बालक, जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि विखरे हुये मोती हैं।
20. तथा जब तुम वहाँ देखोगे तो देखोगे बड़ा सुख तथा भारी राज्य।
21. उन के ऊपर रेशमी हरे महीन तथा दबीज़ वस्त्र होंगे। और पहनाये जायेंगे उन्हें चाँदी के कंगन, और पिलायेगा उन्हें उन का पालनहार पवित्र पेया।
22. (तथा कहा जायेगा): यही है तुम्हारे लिये प्रतिफल और तुम्हारे प्रयास का आदर किया गया।
23. वास्तव में हम ने ही उतारा है आप पर कुर्आन थोड़ा - थोड़ा कर के।
24. अतः आप धैर्य से काम लें अपने पालनहार के आदेशानुसार और बात न मानें उन में से किसी पापी तथा कृतघ्न की।

25. तथा स्मरण करें अपने पालनहार के नाम का प्रातः तथा संध्या (के समय)।
26. तथा रात्री में सज्दा करें उस के समक्ष और उस की पवित्रता का वर्णन करें रात्री के लम्बे समय तक।
27. वास्तव में यह लोग मोह रखते हैं संसार से, और छोड़ रहे हैं अपने पीछे एक भारी दिन को।
28. हम ने ही उन्हें पैदा किया है और सुदृढ़ किये हैं उन के जोड़-बंदा तथा जब हम चाहें बदला दें उन के जैसे (दूसरों को)।
29. निश्चय यह (सूरह) एक शिक्षा है। अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने की) राह बना ले।
30. और तुम अल्लाह की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं चाह सकते। वास्तव में अल्लाह सब चीज़ों और गुणों को जानने वाला है।
31. वह प्रवेश देता है जिसे चाहे अपनी दया में और अत्याचारियों के लिये उस ने तय्यार की है दुःखदायी यातना।

सूरह मुर्सलात - 77

सूरह मुर्सलात के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 50 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयानान् है।

1. शपथ है भेजी हुई निरन्तर धीमी वायुओं की।
2. फिर झकड़ वाली हवाओं की।

3. और बादलों को फैलाने वालियों की।
4. फिर अन्तर करने वालों की।
5. फिर पहुँचाने वालों की वह्नी (प्रकाशना) को।
6. क्षमा के लिये अथवा चेतावनी के लिये।
7. निश्चय जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है वह अवश्य आनी है।
8. फिर जब तारे धुमिल हो जायेंगे।
9. तथा जब आकाश खोल दिया जायेगा।
10. तथा जब पर्वत चूर-चूर कर के उड़ा दिये जायेंगे।
11. और जब रसूलों का एक समय निर्धारित किया जायेगा।
12. किस दिन के लिये इस को निलम्बित रखा गया है।
13. निर्णय के दिन के लिये।
14. आप क्या जानें कि क्या है वह निर्णय का दिन।
15. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
16. क्या हम ने विनाश नहीं कर दिया (अवैज्ञा के कारण) अगली जातियों का।
17. फिर पीछे लगा देंो उन के पिछ्लों को।
18. इसी प्रकार हम करते हैं अपराधियों के साथ।
19. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
20. क्या हम ने पैदा नहीं किया है तुम्हें तुच्छ जल (वीर्य) से।

21. फिर हम ने रख दिया उसे एक सुदृढ़ स्थान (गर्भाशय) में।
22. एक निश्चित अवधि तक।
23. तो हम ने सामर्थ्य रखा, अतः हम अच्छा सामर्थ्य रखने वाले हैं।
24. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
25. क्या हम ने नहीं बनाया धरती को समेट कर रखने वाली।
26. जीवित तथा मुर्दों को।
27. तथा बना दिये हम ने उस में बहुत से ऊँचे पर्वत। और पिलाया हम ने तुम्हें मीठा जल।
28. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
29. (कहा जायेगा): चलो उस (नरक) की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे।
30. चलो ऐसी छाया की ओर जो तीन शाखाओं वाली है।
31. जो न छाया देगी और न ज्वाला से बचायेगी।
32. वह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियाँ भवन के समान।
33. जैसे वह पीले जूँट हों।
34. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
35. यह वह दिन है कि वह बोल नहीं सकेंगे।
36. और न उन्हें अनुमति दी जायेगी कि

- वह बहाने बना सकें।
37. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
38. यह निर्णय का दिन है, हम ने एकत्र कर लिया है तुम को तथा पूर्व के लोगों को।
39. तो यदि तुम्हारे पास कोई चाल हो तो चल लो।
40. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
41. निःसंदेह आज्ञाकारी उस दिन छाँव तथा जल स्रोतों में होंगे।
42. तथा मन चाहे फलों में।
43. खाओ तथा पिओ मनमानी उन कर्मों के बदले जो तुम करते रहे।
44. हम इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।
45. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
46. (हे झुठलाने वालो!) तुम खा लो तथा आनन्द ले लो कुछ दिन। वास्तव में तुम अपराधी हो।
47. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
48. जब उन से कहा जाता है कि (अल्लाह के समक्ष) झुको तो झुकते नहीं।
49. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
50. तो (अब) वह किस बात पर इस (कुर्आन) के पश्चात् ईमान लायेंगे?



सूरह नबा - 78

सूरह नबा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. वे आपस में किस विषय में प्रश्न कर रहे हैं।
2. बहुत बड़ी सूचना के विषय में।
3. जिस में मतभेद कर रहे हैं।
4. निश्चय वे जान लेंगे।
5. फिर निश्चय वे जान लेंगे।
6. क्या हम ने धरती को पालना नहीं बनाया।
7. और पर्वतों को मेख।
8. तथा तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया।
9. तथा तुम्हारी निद्रा को स्थिरता (आराम) बनाया।
10. और रात को वस्त्र बनाया।
11. और दिन को कमाने के लिये बनाया।
12. तथा हम ने तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ आकाश बनाये।
13. और एक दमकता दीप (सूर्य) बनाया।
14. और बादलों से मूसलाधार वर्षा की।
15. ताकि उस से अन्न और वनस्पति उपजायें।
16. और घने घने बाग।
17. निश्चय निर्णय (फैसले) का दिन

निश्चित है।

18. जिस दिन सूर में फूँका जायेगा। फिर तुम दलों ही दलों में चले आओगे।
19. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उसमें द्वार ही द्वार हो जायेंगे।
20. और पर्वत चला दिये जायेंगे तो वे मरीचिका बन जायेंगे।
21. वास्तव में नरक घात में है।
22. जो दुराचारियों का स्थान है।
23. जिस में वे असंख्य वर्षों तक रहेंगे।
24. उस में ठंडी तथा पेय (पीने की चीज़) नहीं चखेंगे।
25. केवल गर्म पानी और पीप रक्त के।
26. यह पूरा पूरा प्रतिफल है।
27. निःसंदेह वे हिसाब की आशा नहीं रखते थे।
28. तथा वे हमारी आयतों को झुठलाते थे।
29. और हम ने सब विषय लिख कर सुरक्षित कर लिये हैं।
30. तो चखो, हम तुम्हारी यातना अधिक ही करते रहेंगे।
31. वास्तव में जो डरते हैं उन्हीं के लिये सफलता है।
32. बाग तथा अँगूर है।
33. और नवयुवति कुमारियाँ।
34. और छलकते प्याले।
35. उस में बकवाद और मिथ्या बातें नहीं सुनेंगे।

36. यह तुम्हारे पालनहार की ओर से भरपूर पुरस्कार है।
37. जो आकाश, धरती तथा जो उन के बीच है का अति करुणामय पालनहार है। जिस से बात करने का वे साहस नहीं कर सकेंगे।
38. जिस दिन रूह (जिब्रिल) तथा फ़रिश्ते पंक्तियों में खड़े होंगे, वही बात कर सकेगा जिसे रहमान (अल्लाह) आज्ञा देगा, और सहीह बात करेगा।
39. वह दिन निःसंदेह होना ही है। अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने का) ठिकाना बना ले।
40. हम ने तुम को समीप यातना से सावधान कर दिया जिस दिन इन्सान अपना करतूत देखेगा, और काफ़िर (विश्वास हीन) कहेगा कि काश मैं मिट्टी हो जाता!

सूरह नाज़िआत - 79

सूरह नाज़िआत के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 46 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है उन फ़रिश्तों की जो डूब कर (प्राण) निकालते हैं।
2. और जो सरलता से (प्राण) निकालते हैं।
3. और जो तैरते रहते हैं।
4. फिर जो आगे निकल जाते हैं।

5. फिर जो कार्य की व्यवस्था करते हैं।
6. जिस दिन धरती काँपेगी।
7. जिस के पीछे ही दूसरी कम्प आ जायेगी।
8. उस दिन बहुत से दिल धड़क रहे होंगे।
9. उन की आंखें झुकी होंगी।
10. वे कहते हैं कि क्या हम फिर पहली स्थिति में लाये जायेंगे?
11. जब हम (भुरभुरी) (खोखली) स्थियाँ (हड्डियाँ) हो जायेंगे।
12. उन्होंने ने कहा: तब तो इस वापसी में क्षति है।
13. बस वह एक झिड़की होगी।
14. तब वे अकस्मात धरती के ऊपर होंगे।
15. (हे नबी) क्या तुम को मूसा का समाचार पहुँचा?
16. जब पवित्र वादी "तुवा" में उसे उसके पालनहार ने पुकारा।
17. फिरऔन के पास जाओ वह विद्रोही हो गया है।
18. तथा उस से कहो कि क्या तुम पवित्र होना चाहोगे?
19. और मैं तुम्हें तुम्हारे पालनहार की सीधी राह दिखाऊँ तो तुम डरोगे?
20. फिर उस को सब से बड़ा चिन्ह (चमत्कार) दिखाया।
21. तो उस ने उसे झुठला दिया और बात न मानी।
22. फिर प्रयास करने लगा।

23. फिर लोगों को एकत्र किया फिर पुकारा।
24. और कहा: मैं तुम्हारा परम पालनहार हूँ।
25. तो अल्लाह ने उसे संसार तथा परलोक की यातना में घेर लिया।
26. वास्तव में इस में उस के लिये शिक्षा है जो डरता है।
27. क्या तुम को पैदा करना कठिन है अथवा आकाश को, जिसे उस ने बनाया।
28. उस की छत ऊँची की और चौरस किया।
29. और उस की रात को अंधेरी, तथा दिन को उजाला किया।
30. और इस के बाद धरती को फैलाया।
31. और उस से पानी और चारा निकाला।
32. और पर्वतों को गाड़ दिया।
33. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिये।
34. तो जब प्रलय आयेगी।
35. उस दिन इन्सान अपना करतूत याद करेगा।
36. और देखने वाले के लिये नरक सामने कर दी जायेगी।
37. तो जिस ने विद्रोह किया।
38. और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी।
39. तो नरक ही उस का आवास होगी।
40. परन्तु जो अपने पालनहार की

महानता से डरा तथा अपने आप को मनमानी करने से रोका।

41. तो निश्चय ही उस का आवास स्वर्ग है।
42. वे आप से प्रश्न करते हैं कि वह समय कब आयेगा?
43. तुम उस की चर्चा में क्यों पड़े हो?
44. उस के होने के समय का ज्ञान तुम्हारे पालनहार के पास है।
45. तुम तो उसे सावधान करने के लिये हो जो उस से डरता है।
46. वह जिस दिन उस का दर्शन करेंगे उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में एक संध्या या उस के सवेरे से अधिक नहीं ठहरे।

सूरह अबस - 80

सूरह अबस के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 42 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (नबी ने) त्योरी चढ़ाई तथा मुँह फेर लिया।
2. इस कारण कि उस के पास एक अँधा आया।
3. और तुम क्या जानो शायद वह पवित्रता प्राप्त करे।
4. या नसीहत ग्रहण करे जो उस को लाभ देती।
5. परन्तु जो विमुख (निश्चन्त) है।
6. तुम उन की ओर ध्यान दे रहे हो।

7. जब कि तुम पर कोई दोष नहीं यदि वह पवित्रता ग्रहण न करे।
8. तथा जो तुम्हारे पास दौड़ता आया।
9. और वह डर भी रहा है।
10. तुम उस की ओर ध्यान नहीं देते।
11. कदापि यह न करो, यह (अर्थात् कुआँन) एक स्मृति (याद दहानी) है।
12. अतः जो चाहे स्मरण (याद) करो।
13. माननीय शास्त्रों में है।
14. जो ऊँचे तथा पवित्र है।
15. ऐसे लेखकों (फरिश्तों) के हाथों में है।
16. जो सम्मानित और आदरणीय है।
17. इन्सान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है।
18. उसे किस वस्तु से (अल्लाह) ने पैदा किया?
19. उसे वीर्य से पैदा किया, फिर उस का भाग्य बनाया।
20. फिर उस के लिये मार्ग सरल किया।
21. फिर मौत दी फिर समाधि में डाल दिया।
22. फिर जब चाहेगा उसे जीवित कर लेगा।
23. वस्तुतः उस ने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया।
24. इन्सान अपने भोजन की ओर ध्यान दे।
25. हम ने मूसलाधार वर्षा की।
26. फिर धरती को चीरा फाड़ा।

27. फिर उस से अब उगाया।
28. तथा अंगूर और तरकारियाँ।
29. तथा जैतून एवं खजूर।
30. तथा घने बाग।
31. एवं फल तथा वनस्पतियाँ।
32. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लिये।
33. तो जब कान फाड़ देने वाली (प्रलय) आ जायेगी।
34. उस दिन इन्सान अपने भाई से भागेगा।
35. तथा अपने माता और पिता से।
36. एवं अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रों से।
37. प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन अपनी पड़ी होगी।
38. उस दिन बहुत से चेहरे उज्ज्वल होंगे।
39. हंसते एवं प्रसन्न होंगे।
40. तथा बहुत से चेहरों पर धूल पड़ी होगी।
41. उन पर कालिमा छाई होगी।
42. वही काफिर और कुकर्मी लोग हैं।

सूरह तक्वीर - 81

सूरह तक्वीर के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 29 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. जब सूर्य लपेट दिया जायेगा।
2. और जब तारे धुमिल हो जायेंगे।

3. जब पर्वत चलाये जायेंगे।
4. और जब दस महीने की गाभिन ऊंटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।
5. और जब वन् पशु एकत्र कर दिये जायेंगे
6. और जब सागर भड़काये जायेंगे।
7. और जब प्राण जोड़ दिये जायेंगे।
8. और जब जीवित गाड़ी गई कन्या से प्रश्न किया जायेगा:
9. कि वह किस अपराध के कारण बध की गई।
10. तथा जब कर्म पत्र फैला दिये जायेंगे।
11. और जब आकाश की खाल उतार दी जायेगी।
12. और जब नरक धहकाई जायेगी।
13. और जब स्वर्ग समीप लाई जायेगी।
14. तो प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।
15. मैं शपथ लेता हूँ उन तारों की जो पीछे हट जाते हैं।
16. जो चलते चलते छुप जाते हैं।
17. और रात की (शपथ), जब समाप्त होने लगती है।
18. तथा भोर की जब उजाला होने लगता है।
19. यह (कुर्आन) एक मान्यवर स्वर्ग दूत का लाया हुआ कथन है।
20. जो शक्ति शाली है। अर्श (सिंहासन) के मालिक के पास उच्च पद वाला है।

21. जिस की बात मानी जाती है और बड़ा अमानतदार है।
22. और तुम्हारा साथी उन्मत्त नहीं है।
23. उस ने उस को आकाश में खुले रूप से देखा है।
24. वह परोक्ष (गैब) की बात बताने में प्रलोभी नहीं है।
25. यह धिक्कारी शैतान का कथन नहीं है।
26. फिर तुम कहीं जा रहे हो।
27. यह संसार वासियों के लिये एक स्मृति (शास्त्र) है।
28. तुम में से उस के लिये जो सुधरना चाहता हो।
29. तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे बिना कुछ नहीं कर सकते।

सूरह इन्फितार - 82

सूरह इन्फितार के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. तथा जब तारे झड़ जायेंगे।
3. और जब सागर उबल पड़ेंगे।
4. और जब समाधियाँ (कबरें) खोल दी जायेंगी।
5. तब प्रत्येक प्राणी को ज्ञान हो जायेगा जो उस ने किया है और नहीं किया है।
6. हे इन्सान! तुझे किस वस्तु ने तेरे

उदार पालनहार से बहका दिया।

7. जिस ने तेरी रचना की फिर तुझे संतुलित बनाया।
8. जिस रूप में चाहा बना दिया।
9. वास्तव में तुम प्रतिफल (प्रलय) के दिन को नहीं मानते।
10. जब कि तुम पर निरीक्षक (पासबान) हैं।
11. जो माननीय लेखक हैं।
12. वे जो कुछ तुम करते हो जानते हैं।
13. निःसदेह सदाचारी सुखों में होंगे।
14. और दुराचारी नरक में।
15. प्रतिकार (बदले) के दिन उस में झोंक दिये जायेंगे।
16. और वे उस से बच रहने वाले नहीं।
17. और तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है।
18. फिर तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है।
19. जिस दिन किसी का किसी के लिये कोई अधिकार नहीं होगा, और उस दिन सब अधिकार अल्लाह का होगा।

सूरह मुतफ़िफ़ीन - 83

सूरह मुतफ़िफ़ीन के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 36 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. विनाश है डंडी मारने वालों का।
2. जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लेते हैं।
3. और जब उन को नाप या तोल कर देते

हैं तो कम देते हैं।

4. क्या वे नहीं सोचते कि फिर जीवित किये जायेंगे?
5. एक भीषण दिन के लिये।
6. जिस दिन सभी विश्व के पालनहार के सामने खड़े होंगे।
7. कदापि ऐसा न करो, निश्चय बुरों का कर्म पत्र "सिज्जीन" में है।
8. और तुम क्या जानो कि "सिज्जीन" क्या है?
9. वह लिखित महान् पुस्तक है।
10. उस दिन झुठलाने वालों के लिये विनाश है।
11. जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाते हैं।
12. तथा उसे वही झुठलाता है जो महा अत्याचारी और पापी है।
13. जब उन के सामने हमारी आयतों का अध्ययन किया जाता है तो कहते हैं: पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।
14. सुनो! उन के दिलों पर कुकर्मा के कारण लोहमल लग गया है।
15. निश्चय वे उस दिन अपने पालनहार (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे।
16. फिर वे नरक में जायेंगे।
17. फिर कहा जायेगा कि यही है जिसे तुम मिथ्या मानते थे।
18. सच्च यह है कि सदाचारियों के कर्म पत्र "इल्लिय्यीन" में है।
19. और तुम क्या जानो कि "इल्लिय्यीन"

क्या है?

20. एक अकित पुस्तक है।
21. जिस के पास समीपवर्ती (फ़रिश्ते) उपस्थित रहते हैं।
22. निश्चय सदाचारी आनंद में होंगे।
23. सिंहासनों के ऊपर बैठ कर सब कुछ देख रहे होंगे।
24. तुम उन के मुखों से आनंद के चिह्न अनुभव करोगे।
25. उन्हें मुहर लगी शुद्ध मदिरा पिलायी जायेगी।
26. यह मुहर कस्तूरी की होगी। तो इस की अभिलाषा करने वालों को इस की अभिलाषा करनी चाहिये।
27. उस में तसनीम मिली होगी।
28. वह एक स्रोत है जिस से (अल्लाह के) समीप वर्ती पियेंगे।
29. पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।
30. और जब उन के पास से गुज़रते तो आँखें मिचकाते थे।
31. और जब अपने परिवार में वापिस जाते तो आनंद लेते हुये वापिस होते थे।
32. और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे: यही भटके हुये लोग हैं।
33. जब कि वे उन के निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गये थे।
34. तो जो ईमान लाये आज काफ़िरोँ पर हंस रहे हैं।
35. सिंहासनों के ऊपर से उन्हें देख रहे हैं।

36. क्या काफ़िरोँ (विश्वास हीनों) को उन का बदला दे दिया गया?

सूरह इन्शिकाक - 84

सूरह इन्शिकाक के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 25 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. और अपने पालनहार की सुनेगा और यही उसे करना भी चाहिये।
3. तथा जब धरती फैला दी जायेगी।
4. और जो उसके भीतर है फैंक देगी तथा ख़ाली हो जायेगी।
5. और अपने पालनहार की सुनेगी और यही उसे करना भी चाहिये।
6. हे इन्सान! वस्तुतः तू अपने पालनहार से मिलने के लिये परिश्रम कर रहा है, और तू उस से अवश्य मिलेगा।
7. फिर जिस किसी को उस का कर्म पत्र दाहिने हाथ में दिया जायेगा।
8. तो उस का सरल हिसाब लिया जायेगा।
9. तथा वह अपनों में प्रसन्न होकर वापस जायेगा।
10. और जिन को उन का कर्म पत्र बायें हाथ में दिया जायेगा।
11. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा।
12. तथा नरक में जायेगा।
13. वह अपनों में प्रसन्न रहता था।

14. उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।
15. क्यों नहीं? निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था।
16. मैं सांध्य लालिमा की शपथ लेता हूँ।
17. तथा रात की, और जिसे वह ऐकत्र करे!
18. तथा चाँद की जब पूरा हो जाये।
19. फिर तुम अवश्य एक दशा से दूसरी दशा पर सवार होगे।
20. फिर क्यों वे विश्वास नहीं करते।
21. और जब उन के पास कुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते।
22. बल्कि काफ़िर तो उसे झुठलाते हैं।
23. और अल्लाह उन के विचारों को भलि भाँति जानता है।
24. अतः उन्हें दुख दायी यातना की शुभ सूचना सुना दो।
25. परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के लिये समाप्त न होने वाला बदला है।

सूरह बुरूज - 85

सूरह बुरूज के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 22 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है बुर्जाँ वाले आकाश की।
2. शपथ है उस दिन की जिस का वचन दिया गया।

3. शपथ है साक्षी की और जिस पर साक्षय देगा।
4. खार्इयों वालों का नाश हो गया।
5. जिन में भड़कते हुये ईंधन की अग्नि थी।
6. जब कि वे उन पर बैठे हुये थे।
7. और वे ईमान वालों के साथ जो कर रहे थे उसे देख रहे थे।
8. और उन का दोष केवल यही था कि वे प्रभावी प्रशंसा किये अल्लाह के प्रति विश्वास किये हुये थे।
9. जो आकाशों तथा धरती के राज्य का स्वामी है। और अल्लाह सब कुछ देख रहा है।
10. जिन्होंने ने ईमान लाने वाले नर नारियों को परिक्षा में डाला, फिर क्षमा याचना न की उन के लिये नरक का दण्ड तथा भड़कती आग की यातना है।
11. वास्तव में जो ईमान लाये और सदाचारी बने, उन के लिये ऐसे स्वर्ग है जिन के तले नहरें बह रही है और यही बड़ी सफलता है।
12. निश्चय तेरे पालनहार की पकड़ बहुत कड़ी है।
13. वही पहले पैदा करता है और फिर दूसरी बार पैदा करेगा।
14. और वह अति क्षमा तथा प्रेम करने वाला है।
15. वह सिंहासन का महान स्वामी है।
16. वह जो चाहे करता है।
17. हे नबी! क्या तुम को सेनाओं की सूचना मिली?

18. फिरऔन तथा समूद की।
19. बल्कि काफिर (विश्वासहीन) झुठलाने में लगे हुये हैं।
20. और अल्लाह उन को हर ओर से घेरे हुये हैं।
21. बल्कि वह गौरव वाला कुर्आन है।
22. जो लेख पत्र (लौहे महफूज़) में सुरक्षित है।

सूरह तारिक - 86

सूरह तारिक के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 17 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है आकाश तथा रात के "प्रकाश प्रदान करने वाले" की।
2. और तुम क्या जानो कि वह "रात में प्रकाश प्रदान करने वाला" क्या है?
3. वह ज्योतिमय सितारा है।
4. प्रत्येक प्राणी पर एक रक्षक है।
5. इन्सान यह तो विचार करे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया?
6. उछलते पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है।
7. जो पीठ तथा सीने के पंजरों के मध्य से निकलता है।
8. निश्चय वह उसे लौटाने की शक्ति रखता है।
9. जिस दिन मन के भेद परखे जायेंगे।
10. तो उसे न कोई बल होगा और न

उस का कोई सहायक।

11. शपथ है आकाश की जो बरसता है।
12. तथा फटने वाली धरती की।
13. वास्तव में यह (कुर्आन) दो टुक निर्णय (फ़ैसला) करने वाला है।
14. हँसी की बात नहीं।
15. वह चाल बाज़ी करते हैं।
16. मैं भी चाल बाज़ी कर रहा हूँ।
17. अतः काफ़िरों को कुछ थोड़ा अवसर दे दो।

सूरह ऑला - 87

सूरह ऑला के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो।
2. जिस ने पैदा किया और ठीक ठीक बनाया।
3. और जिस ने अनुमान लगाकर निर्धारित किया, फिर सीधी राह दिखाई।
4. और जिस ने चारा उपजाया।
5. फिर उसे (सुखा कर) कूड़ा बना दिया।
6. (हे नबी!) हम तुम्हें ऐसा पढ़ायेंगे कि भूलोगे नहीं।
7. परन्तु जिसे अल्लाह चाहे। निश्चय ही वह सभी खुली तथा छिपी बातों को जानता है।
8. और हम तुम्हें सरल मार्ग का

साहस देंगे।

9. तो आप धर्म की शिक्षा देते रहें। अगर शिक्षा लाभदायक हो।
10. डरने वाला ही शिक्षा ग्रहण करेगा।
11. और दुर्भाग्य उस से दूर रहेगा।
12. जो भीषण अग्नि में जायेगा।
13. फिर उस में न मरेगा न जीवित रहेगा।
14. वह सफल हो गया जिस ने अपना शुद्धिकरण किया।
15. तथा अपने पालनहार के नाम का स्मरण किया, और नमाज़ पढ़ी।
16. बल्कि तुम लोग तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो।
17. जबकि आखिरत (परलोक) का जीवन ही उत्तम और स्थाई है।
18. यही बात प्रथम ग्रन्थों में है।
19. (अर्थात्) इब्राहीम तथा मूसा के ग्रन्थों में।

सूरह गाशियह - 88

सूरह गाशियह के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 26 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. क्या तेरे पास पूरी सृष्टि पर छा जाने वाली (क्यामत) का समाचार आया?
2. उस दिन कितने मुँह सहमे होंगे।
3. परिश्रम करते थके जा रहे होंगे।

4. पर वे धहकती आग में जायेंगे।
5. उन्हें खोलते सोते का जल पिलाया जायेगा।
6. उनके लिये कटीली झाड़ू के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी।
7. जो न मोटा करेगी, और न भूख दूर करेगी।
8. कितने मुख उस दिन निर्मल होंगे।
9. अपने प्रयास से प्रसन्न होंगे।
10. ऊँचे स्वर्ग में होंगे।
11. उस में कोई बकवास नहीं सुनेंगे।
12. उस में बहता जल स्रोत होगा।
13. और उस में ऊँचे ऊँचे सिंहासन होंगे।
14. उस में बहुत सारे प्याले रखे होंगे।
15. पक्तियों में गलीचे लगे होंगे।
16. और मखमली कालीनें बिछी होंगी।
17. क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं?
18. और आकाश को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया?
19. और पर्वतों को कि कैसे गाड़े गये?
20. तथा धरती को, कि कैसे पसारी गई?
21. अतः आप शिक्षा (नसीहत) दें, कि आप शिक्षा देने वाले हैं।
22. आप उन पर अधिकारी नहीं हैं।
23. परन्तु जो मुँह फेरेगा और नहीं मानेगा,
24. तो अल्लाह उसे भारी यातना देगा।
25. उन्हें हमारी ओर ही वापस आना है।
26. फिर हमें ही उन का हिसाब लेना है।

सूरह फ़ज़ - 89

सूरह फ़ज़ के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है भोर की!
2. तथा दस रात्रियों की!
3. और जोड़े तथा अकेले की!
4. और रात्री की जब जाने लगे।
5. क्या उस में किसी मतिमान
(समझदार) के लिये कोई शपथ है?
6. क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे
पालनहार ने "आद" के साथ क्या किया?
7. स्तम्भों वाले "इरम" के साथ?
8. जिन के समान देशों में लोग नहीं
पैदा किये गये।
9. तथा "समूद" के साथ जिन्होंने घाटियों
में चट्टानों को काट रखा था।
10. और मेखों वाले फिरऔन के साथ।
11. जिन्होंने नगरों में उपद्रव कर रखा था।
12. और नगरों में बड़ा उपद्रव फैला रखा
था।
13. फिर तेरे पालनहार ने उन पर दण्ड
का कोड़ा बरसा दिया।
14. वास्तव में तेरा पालनहार घात में है।
15. परन्तु जब इन्सान की उस का
पालनहार परीक्षा लेता है और उसे
सम्मान और धन देता है तो कहता

है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान
किया।

16. परन्तु जब उस की परीक्षा लेने के
लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम)
कर देता है तो कहता है कि मेरे
पालनहार ने मेरा अपमान किया।
17. ऐसा नहीं, बल्कि तुम अनाथ का
आदर नहीं करते।
18. तथा गरीब को खाना खिलाने के लिये
एक दूसरे को नहीं उभारते।
19. और मीरास (मृतक सम्पत्ति) के धन
को समेट समेट कर खा जाते हो।
20. और धन से बड़ा मोह रखते हो।⁽¹⁾
21. सावधान! जब धरती खण्ड खण्ड कर
दी जायेगी।
22. और तेरा पालनहार स्वयं पदार्पण
करेगा, और फ़रिश्ते पंक्तियों में होंगे।
23. और उस दिन नरक लाई जायेगी,
उस दिन इन्सान सावधान हो जायेगा,
किन्तु सावधानी लाभ- दायक न होगी।
24. वह कामना करेगा कि काश! अपने
सदा के जीवन के लिये कर्म किये होते।
25. उस दिन (अल्लाह) के दण्ड के समान
कोई दण्ड नहीं देगा।
26. और न उसके जैसी जकड़ कोई
जकड़ेगा।
27. हे शान्त आत्मा!
28. अपने पालनहार की ओर चल, तू उस
से प्रसन्न, और वह तुझ से प्रसन्ना।
29. तू मेरे भक्तों में प्रवेश कर जा।
30. और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर जा।

सूरह बलद - 90

सूरह बलद के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. मैं इस नगर (मक्का) की शपथ लेता हूँ!
2. तथा तुम इस नगर में प्रवेश करने वाले हो।
3. तथा सौगन्ध है पिता एवं उस की संतान की।
4. हम ने इन्सान को कष्ट में घिरा हुआ पैदा किया है।
5. क्या वह समझता है कि उस पर किसी का बश नहीं चलेगा?
6. वह कहता है कि मैं ने बहुत धन खर्च कर दिया।
7. क्या वह समझता है कि उसे किसी ने देखा नहीं?
8. क्या हम ने उसे दो आँखें नहीं दीं।
9. और एक ज़बान तथा दो होंट नहीं दिये?
10. और उसे दोनों मार्ग दिखा दिये?
11. तो वह घाटी में घुसा ही नहीं।
12. और तुम क्या जानो कि घाटी क्या है?
13. किसी दास को मुक्त करना।
14. अथवा भूक के दिन (अकाल) में

खाना खिलाना।

15. किसी अनाथ संबंधी को।
16. अथवा मिट्टी में पड़े निर्धन को।
17. फिर वह उन लोगों में होता है जो ईमान लाये, और जिन्होंने धैर्य (सहनशीलता) एवं उपकार के उपदेश दिये।
18. यही लोग सौभाग्यशाली (दायें हाथ वाले) हैं।
19. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को नहीं माना यही लोग दुर्भाग्य (बायें हाथ वाले) हैं।
20. ऐसे लोग हर ओर से आग में घिरे होंगे।

सूरह शम्स - 91

सूरह शम्स के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 15 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. सूर्य तथा उस की धूप की शपथ है।
2. और चाँद की शपथ जब उस के पीछे निकले।
3. और दिन की शपथ जब उसे (अर्थात् सूर्य को) प्रकट कर दे।
4. और रात्री की सौगन्ध जब उसे (सूर्य को) छुपा ले।
5. और आकाश की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे बनाया।
6. तथा धरती की सौगन्ध और जिस ने उसे फैलाया।

7. और जीव की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे ठीक ठीक सुधारा।
8. फिर उसे दुराचार तथा सदाचार का विवेक दिया है।
9. वह सफल हो गया जिस ने अपने जीव का सुद्धिकरण किया।
10. तथा वह क्षति में पड़ गया जिस ने उसे (पाप में) धंसा दिया।
11. "समूद" जाति ने अपने दुराचार के कारण (ईश दूत) को झुठलाया।
12. जब उन में से एक हत्भाग तैयार हुआ।
13. (ईश दूत: सालेह ने) उन से कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उस के पीने की बारी की रक्षा करो।
14. किन्तु उन्होंने नहीं माना, और उसे बध कर दिया जिस के कारण उन के पालनहार ने यातना भेज दी और उन को चौरस कर दिया।
15. और वह इस के परिणाम से नहीं डरता।

सूरह लैल - 92

सूरह लैल के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 21 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. रात्री की शपथ जब छा जाये।
2. तथा दिन की शपथ जब उजाला हो जाये।

3. और उस की शपथ जिस ने नर और मादा पैदा किये।
4. वास्तव में तुम्हारे प्रयास अलग अलग हैं।
5. फिर जिस ने दान दिया, और भक्ति का मार्ग अपनाया,
6. और भली बात की पुष्टि करता रहा,
7. तो हम उस के लिये सरलता पैदा कर देंगे।
8. परन्तु जिस ने कंजूसी की, और ध्यान नहीं दिया,
9. और भली बात को झुठला दिया।
10. तो हम उस के लिये कठिनाई को प्राप्त करना सरल कर देंगे।
11. और जब वह गढ़े में गिरेगा तो उसका धन उसके काम नहीं आयेगा।
12. हमारा कर्त्तव्य इतना ही है कि हम सीधा मार्ग दिखा दें।
13. जब कि आलोक परलोक हमारे ही हाथ में है।
14. मैं ने तुम को भड़कती आग से सावधान कर दिया है।
15. जिस में केवल बड़ा हत्भाग ही जायेगा।
16. जिस ने झुठला दिया, तथा (सत्य से) मुँह फेर लिया।
17. परन्तु संयमी (सदाचारी) उस से बचा लिया जायेगा।

18. जो अपना धन दान करता है ताकि पवित्र हो जाये।
19. उस पर किसी का कोई उपकार नहीं जिसे उतारा जा रहा है।
20. वह तो केवल अपने परम पालनहार की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये है।
21. निःसंदेह वह प्रसन्न हो जायेगा।

सूरह जुहा - 93

सूरह जुहा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. शपथ है दिन चढ़े की!
2. और शपथ है रात्री की जब उस का सन्नाटा छा जाये।
3. (हे नबी) तेरे पालनहार ने तुझे न तो छोड़ा और न ही विमुख हुआ।
4. और निश्चय ही आगामी युग तेरे लिये प्रथम युग से उत्तम है।
5. और तेरा पालनहार तुम्हें इतना देगा कि तू प्रसन्न हो जायेगा।
6. क्या उस ने तुम्हें अनाथ पा कर शरण नहीं दी?
7. और तुझे पथ भूला हुआ पाया तो सीधा मार्ग नहीं दिखाया?
8. और निर्धन पाया तो धनी नहीं कर दिया?

9. तो तुम अनाथ पर क्रोध न करना।
10. और माँगने वाले को न झिड़कना।
11. और अपने पालनहार के उपकार का वर्णन करना।

सूरह शर्ह - 94

सूरह शर्ह के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे नबी) क्या हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा वक्ष (सीना) नहीं खोल दिया?
2. और तुम्हारा बोझ नहीं उतार दिया?
3. जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ दी थी।
4. और तुम्हारी चर्चा को ऊँचा कर दिया।
5. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।
6. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।
7. अतः जब अवसर मिले तो आराधना में प्रयास करो।
8. और अपने पालनहार की ओर ध्यान मग्न हो जाओ।

सुरह तीन - 95

सुरह तीन के संक्षिप्त विषय
यह सुरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. इंजीर तथा जैतून की शपथ।
2. एंव "तूरे सीनीन" की शपथ।
3. और इस शान्ति के नगर की शपथ।
4. हम ने इन्सान को मनोहर रूप में पैदा किया है।
5. फिर उसे सब से नीचे गिरा दिया।
6. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये उन के लिये ऐसा बदला है जो कभी समाप्त नहीं होगा।
7. फिर तुम (मानव जाति) प्रतिफल (बदले) के दिन को क्यों झुठलाते हो?
8. क्या अल्लाह सब अधिकारियों से बड़ कर अधिकारी नहीं?

सुरह अलक - 96

सुरह अलक के संक्षिप्त विषय
यह सुरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अपने उस पालनहार के नाम से पढ़ जिस ने पैदा किया।
2. जिस ने मनुष्य को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।
3. पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दया

वाला है।

4. जिस ने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया।
5. इन्सान को उस का ज्ञान दिया जिस को वह नहीं जानता था।
6. वास्तव में इन्सान सरकशी करता है।
7. इसलिये कि वह स्वयं को निश्चन्त (धनवान) समझता है।
8. निःसदिह फिर तेरे पालनहार की ओर पलट कर जाना है।
9. क्या तुम ने उस को देखा जो रोकता है।
10. एक भक्त को जब वह नमाज़ अदा करे।
11. भला देखो तो, यदि वह सीधे मार्ग पर हो।
12. या अल्लाह से डरने का आदेश देता हो।
13. और देखो तो, यदि उस ने झुठलाया तथा मुँह फेरा हो।
14. क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह उसे देख रहा है?
15. निश्चय यदि वह नहीं रुकता तो हम उसे माथे के बल घसीटेंगे।
16. झूठे और पापी माथे के बल।
17. तो वह अपनी सभा को बुला ले।
18. हम भी नरक के फरिश्तों को बुलायेंगे।
19. (हे भक्त) कदापि उस की बात न सुनो तथा सज्दा करो और मेरे समीप हो जाओ।

सूरह क़द्र - 97

सूरह क़द्र के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. निःसंदेह हम ने उस (कुर्आन) को "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) में उतारा।
2. और तुम क्या जानो कि वह "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) क्या है?
3. लैलतुल क़द्र (सम्मानित रात्रि) हज़ार मास से उत्तम है।
4. उस में (हर काम को पूर्ण करने के लिये) फ़रिश्ते तथा रूह (जिबरील) अपने पालनहार की आज्ञा से उतरते हैं।
5. वह शान्ति की रात्री है, जो भोर होने तक रहती है।

सूरह बय्यिनह - 98

सूरह बय्यिनह के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अहले किताब के काफ़िर, और मुशिरक लोग ईमान लाने वाले नहीं थे जब तक कि उन के पास खुला प्रमाण न आ जाये।
2. अर्थात: अल्लाह का एक रसूल, जो पवित्र ग्रन्थ पढ़ कर सुनाये।

3. जिस में उचित आदेश है।
4. और जिन लोगों को ग्रन्थ दिये गये उन्होंने इस खुले प्रमाण के आ जाने के पश्चात ही मतभेद किया।
5. और उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे धर्म को शुद्ध कर रखें, और सब को तज कर केवल अल्लाह की उपासना करें, नमाज़ अदा करें, और ज़कात दें। और यही शाश्वत धर्म है।
6. निःसंदेह जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हो गये, तथा मुशिरक (मिश्रणवादी) तो वे सदा नरक की आग में रहेंगे। और वही सब से दुष्टतम जन हैं।
7. जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार करते रहे तो वही सब से सर्वश्रेष्ठ जन हैं।
8. उन का प्रतिफल उन के पालनहार की ओर से सदा रहने वाले बाग़ है। जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में सदा निवास करेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ, और वे अल्लाह से प्रसन्न हुये। यह उस के लिये है जो अपने पालनहार से डरे।

सूरह ज़िलज़ाल - 99

सूरह ज़िलज़ाल के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. जब धरती को पूरी तरह झंझोड़

दिया जायेगा।

2. तथा भूमी अपने बोझ बाहर निकाल देगी।
3. और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया?
4. उस दिन वह अपनी सभी सुचनायें वर्णन कर देगी।
5. क्योंकि तेरे पालनहार ने उसे यही आदेश दिया है।
6. उस दिन लोग तितर बितर होकर आयेंगे ताकि वह अपने कर्मों को देख लें।
7. तो जिस ने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा।
8. और जिस ने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा।

सूरह आदियात - 100

सूरह आदियात के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. उन घोड़ों की शपथ जो दौड़ कर हॉफ जाते हैं।
2. फिर पत्थरों पर टाप मार कर चिंगारियाँ निकालने वालों की शपथ।
3. फिर प्रातः काल में धावा बोलने वालों की शपथ।
4. जो धूल उड़ाते हैं।

5. फिर सेना के बीच घुस जाते हैं।
6. वास्तव में इन्सान अपने पालनहार का बड़ा कृतघ्न (नाशुकरा) है।
7. निश्चय रूप से वह इस पर स्वयं साक्षी (गवाह) है।
8. वह धन का बड़ा प्रेमी है।
9. क्या वह उस समय को नहीं जानता जब क़त्लों में जो कुछ है निकल लिया जायेगा।
10. और सीनों के भेद प्रकाश में लाये जायेंगे।
11. निश्चय उनका पालनहार उस दिन उन से पूर्ण रूप सूचित होगा।

सूरह कारिअह - 101

सूरह कारिअह के संक्षिप्त विषय यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. वह खड़खड़ा देने वाली।
2. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?
3. और तुम क्या जानो कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?
4. जिस दिन लोग बिखरे पतितों के समान (व्याकुल) होंगे।
5. और पर्वत धुनी हुई ऊन के समान उड़ेंगे।
6. तो जिस के पलड़े भारी हुये
7. तो वह मन चाहे सुख में होगा।
8. तथा जिस के पलड़े हल्के हुये
9. तो उस का स्थान "हाविया" है।

10. और तुम क्या जानो कि वह (हाविया) क्या है?

11. वह दहक्ती आग है।

सूरह तकासुर - 102

सूरह तकासुर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. तुम्हें अधिक (धन) के लोभ ने मग्न कर दिया।
2. यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचो।
3. निश्चय तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।
4. फिर निश्चय ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।
5. वास्तव में यदि तुम को विश्वास होता (तो ऐसा न करते)।
6. तुम नरक को अवश्य देखोगे।
7. फिर उसे विश्वास की आँख से देखोगे।
8. फिर उस दिन तुम से सुख सम्पदा के विषय में अवश्य पूछ ग़छ होगी।

सूरह अस - 103

सूरह अस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. निचड़ते दिन की शपथ।

2. निःसदेह इन्सान क्षति में है।

3. अतिरिक्त उन के जो ईमान लाये। तथा सदाचार किये, एंव एक दूसरे को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का उपदेश देते रहे।

सूरह हुमज़ह - 104

सूरह हुमज़ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 9 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. विनाश हो उस व्यक्ति का जो कचोके लगाता रहता है और चौंटे करता रहता है।
2. जिस ने धन एकत्र किया और उसे गिन गिन कर रखा।
3. क्या वह समझता है कि उस का धन उसे संसार में सदा रखेगा?
4. कदापि ऐसा नहीं होगा। वह अवश्य ही "हुतमा" में फँका जायेगा।
5. और तुम क्या जानो कि "हुतमा" क्या है?
6. वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि है।
7. जो दिलों तक जा पहुँचेगी।
8. वह उस में बन्द कर दिये जायेंगे।
9. लंबे लंबे स्तम्भों में।

सूरह फील - 105

सूरह फील के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या किया?
2. क्या उस ने उन की चाल को विफल नहीं कर दिया?
3. और उन पर पक्षियों के दल भेजे?
4. जो उन पर पकी कंकरी के पत्थर फेंक रहे थे।
5. तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाने का भूसा।

सूरह कुरैश - 106

सूरह कुरैश के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. कुरैश के स्वभाव बनाने के कारण।
2. उन के जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का स्वभाव बनाने के कारण।
3. उन्हें चाहिये कि इस घर (कॉबा) के प्रभु की पूजा करें।
4. जिस नें उन्हें भूख में खिलाया तथा डर से निडर कर दिया।

सूरह माऊन - 107

सूरह माऊन के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे नबी) क्या तुम ने उसे देखा जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाता है?
2. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्का देता है।
3. और गरीब के लिये भोजन देने पर नहीं उभारता।
4. विनाश है उन नमाज़ियों के लिये
5. जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं।
6. और जो दिखावे (आडंबर) के लिये करते हैं।
7. तथा माऊन (प्रयोग में आने वाली मामूली चीज़) भी माँगने से नहीं देते।

सूरह कौसर - 108

सूरह कौसर के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे नबी!) हम ने तुम को कौसर प्रदान किया है।
2. तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।

3. निःसंदेह तुम्हारा शत्रु ही बे नाम निशान है।

सूरह काफिरून - 109

सूरह काफिरून के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे नबी) कह दो: हे काफ़िरो!
2. मैं उन (मूर्तियों) को नहीं पूजता जिन्हें तुम पूजते हो।
3. और न तुम उसे पूजते हो जिसे मैं पूजता हूँ।
4. और न मैं उसे पूजुंगा जिसे तुम पूजते हो।
5. और न तुम उसे पूजोगे जिसे मैं पूजता हूँ।
6. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म, तथा मेरे लिये मेरा धर्म है।

सूरह नस्र - 110

सूरह नस्र के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदीनी है, इस में 3 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे नबी!) जब अल्लाह की सहायता एवं विजय आ जाये।
2. और तुम लोगों को अल्लाह के धर्म में दल के दल प्रवेश करते देख लो।

3. तो अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करो। और उस से क्षमा माँगो, निःसंदेह वह बड़ा क्षमी है।

सूरह तब्वत - 111

सूरह तब्वत के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. अबु लहब के दोनों हाथ नाश हो गये, और वह स्वयं भी नाश हो गया।
2. उस का धन तथा जो उस ने कमाया उस के काम नहीं आया।
3. वह शीघ्र लावा फेंकती आग में जायेगा।
4. तथा उस की पत्नी भी, जो ईधन लिये फिरती है।
5. उस की गर्दन में मूँज की रस्सी होगी।

सूरह इख्लास - 112

सूरह इख्लास के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे ईश दूत!) कह दो: अल्लाह अकेला है।
2. अल्लाह निःछिद्र है।
3. न उस की कोई संतान है, और न

वह किसी की संतान है।

4. और न उस के बराबर कोई है।

सूरह फलक - 113

सूरह फलक के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे नबी!) कहो कि मैं भोर के पालनहार की शरण लेता हूँ।
2. हर उस की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया।
3. तथा रात्री की बुराई से जब उस का अधेरा छा जाये।
4. तथा गांठ लगा कर उन में फूँकने वालियों की बुराई से।
5. तथा द्वेष करने वाले की बुराई से जब वह द्वेष करे।

सूरह नास - 114

सूरह नास के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानों के पालनहार की शरण में आता हूँ।
2. जो सारे इन्सानों का स्वामी है।
3. जो सारे इन्सानों का पूज्य है।
4. भ्रम डालने वाले और छुप जाने वाले (राक्षस) की बुराई से।
5. जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।
6. जो जिन्नों में से है, और मनुष्यों में से भी।



सूरतों की सूची

क्रमः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं.
1	फ़ातिहा	2
2	बकरह	2
3	आले इमरान	34
4	निसा	53
5	माइदा	73
6	अन्आम	87
7	आराफ़	104
8	अन्फ़ाल	122
9	तौबा	130
10	यूनस	143
11	हूद	153
12	यूसुफ़	163
13	रअद	173
14	इब्राहीम	178
15	हिब	182
16	नहल	187
17	बनी इस्राईल	197
18	कहफ़	205
19	मर्यम	214
20	ता-हा	219
21	अम्बिया	228
22	हज्ज	235
23	मुमिनून	242
24	नूर	248
25	फ़ुर्कान	254
26	शुअरा	259
27	नमल	268

क्रमः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं.
28	कसस	275
29	अन्कबूत	282
30	रूम	287
31	लुकमान	292
32	सज्दा	294
33	अहज़ाब	296
34	सबा	303
35	फ़ातिर	308
36	यासीन	312
37	सापफ़ात	317
38	साद	323
39	जुमर	328
40	मुमिन	334
41	हा मीम सज्दा	340
42	शूरा	345
43	जुशुफ़	350
44	दुख़ान	355
45	जासियह	357
46	अहकाफ़	361
47	मुहम्मद	364
48	फ़त्ह	367
49	हुजुरात	370
50	काफ़	372
51	ज़ारियात	374
52	तूर	377
53	नज्म	379
54	कमर	381
55	रहमान	384
56	वाकिआ	387

सुरतों की सूची

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं०
57	हदीद	389
58	मुजादला	393
59	हथ	395
60	मुन्तहिना	397
61	सफ़फ़	399
62	जुमुआ	400
63	मुनाफ़िकून	401
64	तगाबुन	402
65	तलाक़	404
66	तहरीम	405
67	मुल्क	408
68	कलम	409
69	हाक्का	412
70	मआरिज	413
71	नूह	415
72	जिन्न	416
73	मुज्जम्मिल	418
74	मुद्स्सिर	419
75	कियामा	421
76	दहर	422
77	मुसलात	424
78	नबा	426
79	नाज़िआत	427
80	अबस	428
81	तक्वीर	429
82	इन्फ़ितार	430
83	मुतफ़िफ़ीन	431
84	इन्शिकाक़	432
85	बुरुज	433

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं०
86	तारिक	434
87	आला	434
88	ग़शियह	435
89	फ़ज्र	436
90	बलद	437
91	शम्स	437
92	लैल	438
93	जुहा	439
94	शह	439
95	तीन	440
96	अलक	440
97	कद्र	441
98	बथिनह	441
99	ज़िलज़ाल	441
100	आदियात	442
101	कारिअह	442
102	तकासुर	443
103	अस्र	443
104	हुमज़ह	443
105	फ़ील	444
106	कुरैश	444
107	माऊन	444
108	कौसर	444
109	काफ़िरून	445
110	नस्र	445
111	तब़त	445
112	इल्लास	445
113	फलक़	446
114	नास	446